अजायब बानी

अमृतवेला

हुज़ूर स्वामी जी महाराज, हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज, परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज और परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

सन्त बानी आश्रम
16 पी. एस. रायसिंह नगर–335039
जिला– श्री गंगानगर (राजस्थान)

अजायब बानी

अमृतवेला

हुज़ूर स्वामी जी महाराज, बाबा सावन सिंह जी महाराज, परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज और परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

सन्त बानी आश्रम
16 पी. एस. रायसिंह नगर–335039
जिला– श्री गंगानगर (राजस्थान)

सम्पादक

सुबोध दामोदर सिनकर

सम्पादन सहयोग

प्रेम प्रकाश छाबड़ा — सुखपाल कौर मेहता

नंदिनी — सुखवीर कौर

विशेष सलाहकार

गुरमेल सिंह नौरिया

मुद्रण एवं डिजाईन

प्रेम कुमार नारायण सिनकर

कार्य सहयोग

मनिष पुजारा   अमरदेव नन्दकिशोर प्रजापति   वि. न. सन्स

विशेष सहयोग

सन्त बानी आश्रम, अमेरिका के प्रेमी जराई और रॉबर्टा विगिन्स, एमी और जेरिनिमो का धन्यवाद जिन्होंने इस किताब के लिए परम सन्त अजायब सिंह जी के आडियो और फोटो उपलब्ध करवाए।

प्रकाशन दिनांक : 8 जनवरी 2017 — निजी प्रसारण हेतू

अमृतवेला

सन्त–महात्माओं ने प्रात:काल तीन बजे से छह बजे तक के समय को **अमृतवेला** कहकर इसकी महानता का वर्णन किया है। **अमृतवेला** सिमरन के लिए उत्तम समय होता है, इस समय किया गया थोड़ा सा सिमरन भी कारगर होता है। सुबह प्रात:काल गुरु–परमात्मा अपनी दयारुपी कस्तूरी बाँटते हैं। जो जागते है वे अपने गुरु–परमात्मा से दया प्राप्त करते हैं; जो सोते रहते हैं वे उस दया से वंचित रह जाते हैं।

इन्सान का जामा भी एक **अमृतवेला** है। इस जामें में परमात्मा ने हमें अपनी भक्ति करने का एक मौका दिया है। हम इन्सान की योनि का फायदा तभी उठा सकते हैं अगर हम इसमें बैठकर प्रभु की भक्ति करें।

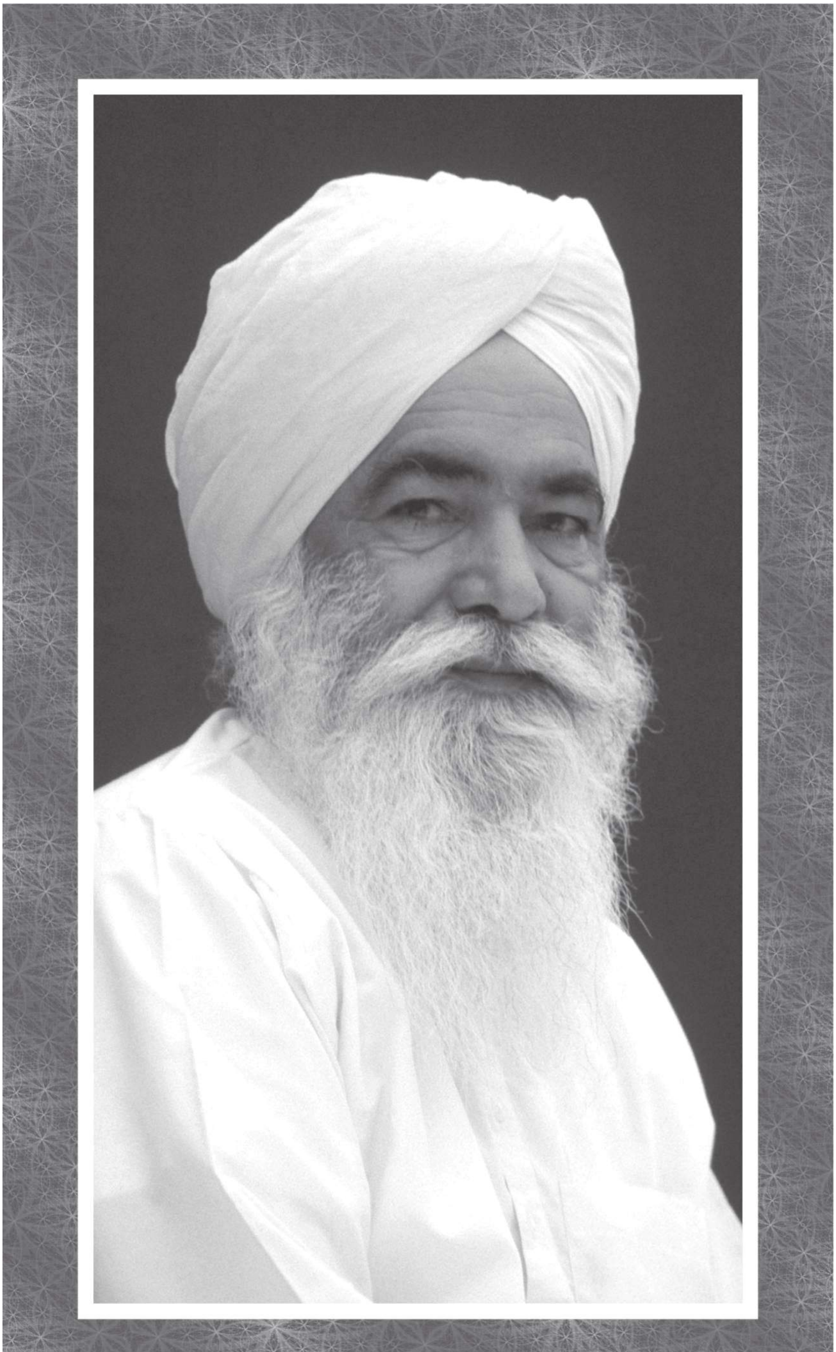

जीवन परिचय–परम सन्त अजायब सिंह जी

कुदरत का कानून है कि जीव जब परमात्मा से प्रार्थना करता है तो परमात्मा सन्त–रूप में मनुष्य का चोला धारण करके इस दुनिया में हमारी मदद के लिए आते हैं। सन्तों की महिमा को समझना हम जीवों के बस की बात नहीं। सन्त शारीरिक तौर पर तो दुनिया में रहते हैं, लेकिन उनकी लिव सदा उस परमात्मा के साथ लगी रहती है। हम दुनियावी लोग ज़्यादा से ज़्यादा उनके जीवन की कुछ असाधारण घटनाओं को ही बयान कर सकते हैं।

सन्त अजायब सिंह जी का जन्म 11 सितम्बर सन् 1926 को मेहना गांव जिला बठिंडा (पंजाब) के एक सिख परिवार में हुआ। आपके माता–पिता ने आपका नाम सरदारा सिंह रखा लेकिन आपके पहले गुरु बाबा बिशनदास ने, जो बहुत पढ़े लिखे थे, शाही परिवार को छोड़कर फ़क़ीर बने थे और ब्रह्म के ज्ञाता थे, उन्होंने आपका नाम बदलकर अजायब सिंह रख दिया।

बचपन में ही आपके माता–पिता का देहान्त हो गया। आपका पालन–पोषण आपके मामा–मामी द्वारा हुआ। आप उन्हें ही अपना माँ–बाप कहते थे। आपकी स्कूली शिक्षा बहुत कम थी। आपने धार्मिक ग्रन्थों का बहुत अध्ययन किया। आप में प्रभु से मिलने की बहुत लगन थी, जिसे आप उस परमात्मा की कृपा मानते हैं।

बचपन में आपके बुजुर्गों ने आपको बताया की गुरुग्रन्थ साहब ही आपके गुरु हैं। भोलेपन के कारण आप दिन–रात गुरुग्रन्थ साहब का पाठ करते रहते यहाँ तक कि आपको सपनों में भी गुरुग्रन्थ साहब ही नजर आते मगर शान्ति न मिली। गुरुग्रन्थ साहब को पढ़कर परमात्मा से मिलने की तड़प बढ़ती चली गई। आप परमात्मा को तलाशने की कोशिश में लग गए।

आपने ऐशो–आराम, धन–दौलत से मुँह मोड़ लिया। परमात्मा से मिलने का रास्ता बहुत कठिन है, इसमें धोखे भी बहुत हैं। आप थोड़े से बड़े हुए तो आपने बहुत से लोगों से परमात्मा के मिलाप की चर्चा की। कई लोगों ने आपको परमात्मा दिखाने की कोशिश भी की। इसी तरह कई साल तक कई गुरुओं की सेवा करके बहुत कष्ट पाकर भी आपको वह वस्तु प्राप्त नहीं हुई जिसकी आपको तलाश थी।

आखिर सन् 1940 में आपकी मुलाकात बाबा बिशनदास जी से हुई। बाबा बिशनदास जी के पास 'दो शब्द' का भेद था। उन्होंने आपको रूहानी रास्ता बताया। वह आपके साथ बहुत सख्ती से पेश आया करते थे, कभी–कभी आपको थप्पड़ भी मार दिया करते थे लेकिन आप धुन के पक्के थे। आप जान चुके थे कि इस साधु के पास कुछ असली धन है, आप उनके चरणों में लगे रहे।

कुछ समय बाद आप फौज में चले गए, आप अपनी आदत के अनुसार भक्ति में लगे रहे और देश की सेवा करते हुए एक फौजी का फर्ज भी निभाते रहे। जब भी मौका मिलता आप छुट्टी लेकर बाबा बिशनदास जी के दर्शन करने जाते।

एक बार आपकी युनिट ब्यास में थी। तब आपको महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों का मौका मिला। महाराज सावन के चेहरे पर ऐसा नूर था जिसे देखकर आपको ऐसा लगा कि आप परमात्मा को देख रहे हैं। आपने उनसे नामदान माँगा। सावन सिंह जी ने कहा,''जिसने तुम्हें नामदान देना है वह खुद चलकर तुम्हारे घर आएगा।'' आपने महसूस किया कि पूरे सन्त मिल गए हैं। आप बाबा बिशनदास जी को लेकर ब्यास गए। बाबा बिशनदास जी ने भी महाराज सावन सिंह जी से नामदान के लिए प्रार्थना की लेकिन उन्होंने कहा, ''आपकी आयु ज़्यादा हो चुकी है इसलिए आपको नामदान नहीं दिया जा सकता।'' उन्होंने आश्वासन दिया की आपकी संभाल की जाएगी।

सन् 1950 में आपने फौज की नौकरी छोड़ दी। आप अपना पारिवारिक धन–दौलत, जमीन–जायदाद त्यागकर खेती करने लगे। आप एक बार खेतों में काम कर रहे थे तो बाबा बिशनदास जी आपके पास आए और कहने लगे, ''अजायब! मैं तुझसे बहुत खुश हूँ और तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।'' इसके साथ ही उन्होंने अपनी आँखो द्वारा रूहानियत की शक्ति आपकी आँखों में डाल दी और कहा, ''तुम्हें इन शक्तियों को और बढ़ाना है। कोई और ताकत तुम्हें खुद ही आकर मिलेगी।'' उसके अगले ही दिन बाबा बिशनदास जी ने देह त्याग दी।

आपको अन्तर में ही बाबा बिशनदास जी ने अपने पैतृक खेत छोड़कर खूनी चक्क–राजस्थान में आश्रम बनाने का हुक्म दिया। राजस्थान में खूनी चक्क गांव वह जगह है जहाँ पर बेहद गर्मी पड़ती थी। पानी के लिए मीलों–मील जाना पड़ता था। जब वहाँ पर आश्रम बनकर तैयार हुआ तो पानी का इन्तजाम भी हो गया। खेती भी अच्छी होने लगी, जिससे लंगर चलने लगा। आप वहाँ बैठकर अभ्यास करते रहे। थोड़े समय में ही यह बात दूर–दूर तक फैल गई कि यहाँ कोई सन्त रहते हैं। जिनको प्रभु की तलाश थी वे लोग आपके पास आने लगे। आप वहाँ 'सन्त जी' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

आपका आत्मिक ज्ञान बढ़ता गया। अन्तर में आपको स्वामी शिवदयाल जी के दर्शन होने लगे। धीरे–धीरे वह स्वरूप किसी और सन्त के स्वरूप में बदल गया। सन् 1967 में महाराज कृपाल सिंह जी आपके आश्रम में आए, आपको नामदान दिया। इस तरह बाबा सावन सिंह जी की भविष्यवाणी सच साबित हुई।

हुज़ूर कृपाल ने आपको खूनी चक्क आश्रम छोड़कर 16 पी.एस. जाने का हुक्म दिया। गुरु के हुक्म पर अटूट विश्वास होने के कारण आप सब कुछ छोड़कर आश्रम से बाहर हो गए।

आप अपने पुराने साथी रतन सिंह (लाला जी) के गांव 16 पी.एस. चले गए। आप वहाँ एक गुफा बनवाकर उसमें लकड़ी के तख्त पर बैठकर लगातार पाँच–छह साल भजन–अभ्यास करते रहे। एक ऐसा समय आया कि आप तीन दिन तक गुफा से बाहर नहीं निकले। हुज़ूर कृपाल वहाँ पहुँचे। आपका सेवक जो बाहर आपकी सेवा के लिए रहता था, उसने हुज़ूर कृपाल को रोते हुए सब हाल बताया। हुज़ूर गुफा की सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए यह बोले:

चलो नी सईयों रण वेखन चलिए, जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोलां, मौतों मूल ना डरदे।।

हुज़ूर कृपाल ने आपको गुफा से बाहर लाकर आपकी सुरत को नीचे खींचा और कहा, ''एक तो पास हुआ।''

हुज़ूर कृपाल समय–समय पर आपसे मिलने राजस्थान आया करते थे। हुज़ूर ने आपको यह आदेश दिया हुआ था, ''मैं जब भी मुनासिब समझूँगा तुमसे मिलने राजस्थान आऊँगा, तुमने दिल्ली नहीं आना।''

सन् 1972 में हुज़ूर कृपाल ने राजस्थान की आखिरी यात्रा की। उस समय नामदान का आयोजन किया गया। इस आयोजन में हुज़ूर ने प्रेमियों को आपसे नामदान दिलवाया। आपने इसका विरोध भी किया लेकिन हुज़ूर के आगे आपका कोई ज़ोर न चला। यह हुज़ूर के जीवन काल की एक असाधारण घटना थी।

कुछ ही क्षणों बाद हुज़ूर ने आपको अपने पास बुलाया और आपकी आँखों में देखकर कहा, ''मैं तुमसे बहुत खुश हूँ; मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।'' जैसे–जैसे महाराज कृपाल बोल रहे थे, आपको लग रहा था कि कोई ताकत आँखों के द्वारा आपके शरीर में प्रवेश कर रही है। लगभग 22 साल पहले बाबा बिशनदास जी ने भी आपको इसी तरह कहा था।

अगस्त 1974 में आप प्रेमियों को दर्शन देने के लिए 77 आर.बी. पहुँचे तो आपको पता चला कि आपके प्यारे गुरु महाराज कृपाल चोला छोड़ चुके हैं। आप गुरु के दु:ख में रोते–रोते सावन आश्रम दिल्ली पहुँचे। सावन आश्रम वालों ने आपको वापिस जाने के लिए कहा। जैसा कि आमतौर पर गुरु के जाने के बाद गुरु की सम्पत्ति और गद्दी के लिए झगड़े हुआ करते हैं वहाँ भी इसी किस्म के झगड़े हो रहे थे।

जब आप दिल्ली से वापिस चले तो आपके दिल दिमाग पर गुरु के जाने का बहुत सदमा था। आप किसी से मिलना नहीं चाहते थे। किसी से कोई बातचीत नहीं करना चाहते थे। आप रास्ते में ही एक छोटे से गांव – किल्लेयाँवाली में छिपकर रोते रहे, भक्ति करते रहे। उस गांव में आपको कोई भी नहीं जानता था। जिस तरह आप अपने गुरु के वियोग में दु:खी थे उसी तरह आपके प्रेमी आपके बिछोड़े में दु:खी और परेशान थे। आखिर सरदार गुरदेव सिंह (पाठी जी) आपकी तलाश में 77 आर.बी. से आपको ढूँढने निकल पड़े। पाठी जी इस इरादे से निकले कि आपको ढूँढकर ही घर वापिस आऐंगे। प्रभु की दया से उनकी मेहनत सफल हुई और उन्होंने आपको ढूँढ ही लिया। उन्होंने आपके आगे प्रार्थनाएं की और आपको वापिस 77 आर.बी. ले आए।

सन् 1980-81 में आप अपने गुरु के आन्तरिक आदेश पर 16 पी.एस. आए जहाँ पर गुफा में बैठकर आपने भजन–अभ्यास किया और उसी जगह को आश्रम का रूप दे दिया। आपके बाकी जीवन की कहानी तपस्या, त्याग और भक्ति की कहानी है। आप यहाँ पर अपनी सारी ज़िंदगी भजन, अभ्यास और गुरु की याद में बिता सकते थे लेकिन आपने अपने गुरु के आदेश के अनुसार दुनिया का भला करने के लिए सतसंग व नामदान का कार्यक्रम जारी रखा।

देश–विदेश के हर कोने से प्रेमी आपके पास पहुँचकर फायदा उठाने लगे। आपने देश और विदेशों में सतसंगों का, नामदान का कार्यक्रम रखा। आपने अपने जीवन काल में बहुत बार पूरी दुनिया में जाकर अपने गुरु कृपाल का यश गाया और तड़पती आत्माओं को प्यार बख्शा। वहाँ आज भी उसी तरह परमात्मा कृपाल का यशगान हो रहा है और प्रेमी फायदा उठा रहे हैं।

आपने अपना जीवन बहुत ही साधारण तरीके से व्यतीत किया। आपने हुज़ूर कृपाल के ज्योति जोत समाने के बाद 23 साल तक खेती–बाड़ी करके अपना पेट पाला और उसी आमदनी में से खुले दिल से संगत की, दुखियों और दर्दमंदों की सेवा की। जो आपके पास श्रद्धा और प्यार से आया आपने उसे अपने नाम की कमाई में से नामदान बख्शा।

वे जीव बहुत भाग्यशाली थे जो आपके चरणों में पहुँचे और आपकी दया मेहर को प्राप्त कर सके।

अन्त में आप संगत की सेवा करते हुए और अपने गुरु कृपाल का यश गाते हुए 71 वर्ष की आयु में 6 जुलाई 1997 को अपने गुरु कृपाल की गोद में चले गए। आज भी आपके सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. में उसी तरह आपकी याद मनाई जाती है और संगत आपके प्यार को प्राप्त कर रही है।

***

प्रस्तावना

आदरणीय गुरु प्यारी साध संगत,

सर्वप्रथम हम अपने महान परमपिता परमात्मा सन्त सतगुरु अजायब सिंह जी महाराज के चरणों में शतकोटि प्रणाम करते हुए तहेदिल से उनका धन्यवाद करते हैं। आप हम जीवों के उद्धार के लिए इस संसार में दुखों और मैल से भरा हुआ इन्सानी जामा धारण करके आए; आपने हम जीवों पर दया की बारिश की। आपकी अपार दया से हमें सन्तों के वचनों का यह अनमोल खज़ाना **'अमृतवेला'** किताब के रूप में प्राप्त हो रहा है।

यह खज़ाना पूर्ण सन्तों के महत्वपूर्ण वचनों का संग्रह है। इस खज़ाने से संगत को मार्गदर्शन मिलेगा जिससे अन्दरूनी प्रगति करने में सहायता मिलेगी। इसमें परम पूज्य हुज़ूर स्वामी जी महाराज, हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज, हुज़ूर कृपाल सिंह जी महाराज व हमारे महान परम सन्त सतगुरु अजायब सिंह जी के अनमोल वचन हैं। हम इन वचनों पर अमल करके अपना जीवन सुधार सकते हैं और गुरु की दया से इस भवसागर को पार करके अपने असली घर सचखंड अपने परमपिता परमात्मा की गोद में जा सकते हैं।

सभी सन्त–महात्माओं ने प्रात:काल तीन बजे से छह बजे तक के समय को **'अमृतवेला'** कहकर इसकी महानता का वर्णन किया है। अमृतवेला सिमरन के लिए उत्तम समय होता है। इस समय किया गया थोड़ा सा सिमरन भी कारगर होता है।

हमारे महान सतगुरु परम सन्त अजायब सिंह जी ने जब इस किताब को बनाने का हुक्म दिया तब आपने अपने मुखारविन्द से इस किताब का शीर्षक **'अमृतवेला'** रखा। आप कहा करते थे कि इन्सान का जामा भी एक अमृतवेला है। परमात्मा ने हमें इन्सानी

जामे में अपनी भक्ति करने का एक सुनहरा मौका दिया है। इन्सानी जामा बड़ा अनमोल है, यह बार–बार हाथ नहीं आएगा। चौरासी लाख योनियां भुगतने के बाद में हमें इन्सान का जामा मिलता है। इस जामें को शराब–कबाब और दुनिया के बुरे कर्मों में व्यर्थ गँवाकर चले जाना अपने आपके साथ बेइन्साफी करना है।

अमृतवेले की महानता को समझते हुए इस किताब में महान सन्त–महात्माओं की हिदायतों और संदेशों का संग्रह इकट्ठा किया गया है। इस किताब में छह भाग दिए गए हैं।

भाग एक : पारमार्थिक जीवन की तैयारी में वे संदेश हैं जो सन्तों के आश्रम व अन्य सतसंग के कार्यक्रमों में जाने से पहले और अपने घर में रोज़ाना पवित्र जीवन जीते हुए नित्यनियम से अपना भजन–सिमरन करने का मार्गदर्शन करते हैं। इसमें सतसंगियों को हिदायतें दी गई हैं कि अपना पारमार्थिक जीवन मजबूत बनाने के लिए किन गुणों को अपनाना है और किन अवगुणों को त्यागना है।

भाग दो : सन्तों की संगत का लाभ में सन्त हमें समझाते हैं कि सन्तों के आश्रम और सतसंग के कार्यक्रमों में किस तरह का आचरण रखना चाहिए जिससे हमें सन्तों की संगत का ज़्यादा से ज़्यादा फायदा हो सके, जैसे एकांत में रहना, सन्तों के दर्शनों की महानता, सेवा का महत्व और सेवक को सतगुरु से क्या माँगना चाहिए।

भाग तीन : नाम और भक्ति में सन्तों द्वारा भजन–अभ्यास में बिठाने से पहले दी गई हिदायतों का संग्रह है।

भाग चार : भजन–अभ्यास में परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब हैं। ये सवाल–जवाब प्रेमियों के भजन–अभ्यास के विषय पर शंकाओं का निरसन करते हैं और रुहानियत के रास्ते पर योग्य उपायों का मार्गदर्शन करते हैं। सन्तों का सतसंग के कार्यक्रमों के आयोजन का मुख्य मकसद भजन–अभ्यास

करवाने का ही होता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हज़ार काम छोड़कर भजन में बैठें।''

भाग पाँच : गुरु की दया में परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा वे प्रेरणात्मक संदेश हैं जो आपने संगत को कार्यक्रमों के आखिर में गुफा दर्शनों के समय दिए थे। आपने इस गुफा में अपने गुरु के हुक्म के अनुसार कई साल कड़ा भजन–अभ्यास किया। आपके ये संदेश हमें भजन–अभ्यास के लिए मेहनत करने की प्रेरणा देते हैं।

भाग छह : सतगुरु के मुख्य संदेश में परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के कुछ खास संदेश हैं जिनमें आपने सारी संगत को जागृत करते हुए अपने जीवन का ध्येय बताया और गुरु के चोला छोड़ जाने के बाद सेवक के फ़र्ज समझाए।

महाराज जी ने इस किताब को बनाने के लिए हुक्म देते समय कहा था, ''यह किताब उन प्रेमियों के लिए बहुत कीमती और मददगार होगी जिन्हें नामदान प्राप्त है, जो रुहानियत के मार्ग पर प्रगति करने की कोशिश कर रहे हैं। यह किताब उनके लिए भी फायदेमंद होगी जो पूर्ण सन्तों से नामदान की अभिलाषा लेकर बैठे हैं और रुहानियत के मार्ग पर चलना चाहते हैं। ऐसे कई प्रेमी होंगे जो रुहानियत की असलियत को जानना चाहते हैं। सन्तमत के सभी उत्सुक प्रेमियों के लिए यह किताब बहुत लाभदायक होगी।''

इन संदेशों के मूल आडियो उपलब्ध न होने के कारण इस किताब को प्रकाशित करने में काफ़ी समय लगा इसलिए परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज व सारी संगत से क्षमा याचना करते हैं। संगत से अनुरोध है कि गुरु प्यार में तैयार की गई इस पुस्तक की त्रुटियों की तरफ ध्यान न देते हुए गुरु वचनों से लाभ उठाएं।

आपका कृपाभिलाषी
सुबोध दामोदर सिनकर

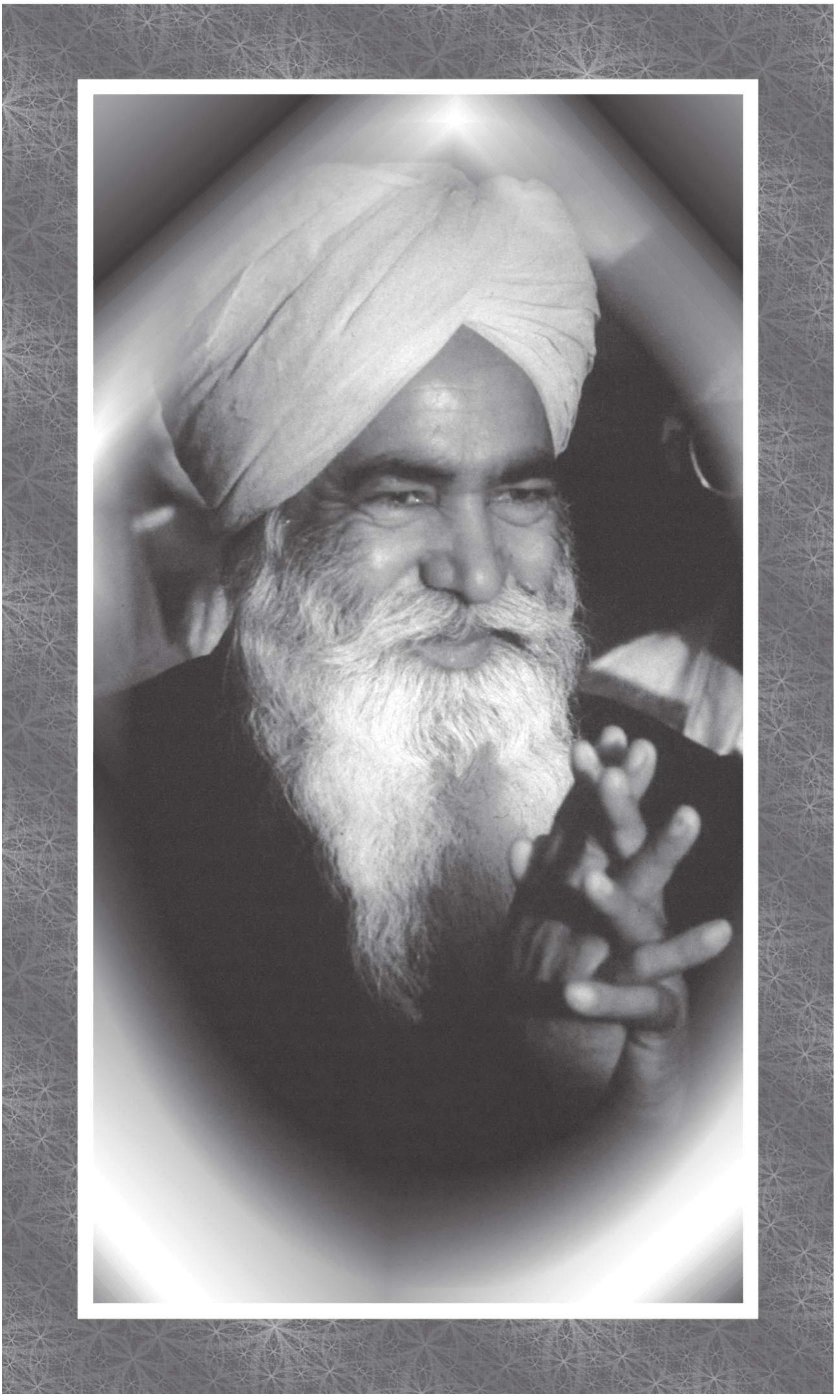

अमृतवेला

भाग–एक : पारमार्थिक जीवन की तैयारी

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	पहला संदेश	3
2	जागो जागो सुतयो चलया वणजारा	5
3	प्यार के मार्ग की परंपरा	13
4	प्रगति के लिए ज़रूरी बातें	25
5	ग्रहणशील बनना सीखें	37
6	अपने मन पर विजय प्राप्त करें	41
7	पवित्रता का पालन	47
8	हर सांस के साथ सिमरन करें	57
9	इन्सानी जामा एक मौका	63
10	दूसरों की आलोचनात्मक परख करना	73
11	परमात्मा की रज़ा में संतोष	75
12	गुरुमुख की पहचान	81
13	जब दिल में तड़प उठती है	87
14	सचखंड की सीढ़ी	91
15	भरोसा, प्यार, भक्ति और मेहनत	99
16	गुरु के प्रति सच्चा समर्पण	111
17	मन का हमला	123
18	आगे बढ़ें और करें	131
19	प्रेम प्यार से मिलकर रहें	135

भाग–दो : सन्तों की संगत का लाभ

20	एकान्त में रहने का महत्व	143
21	आश्रम की महानता	147

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
22	पवित्र जगह	153
23	सतसंग और दर्शनों की महानता	155
24	हमें सतगुरु से क्या माँगना चाहिए?	163
25	जिन्हां लग्गे प्रेम तमाचे	177
26	भजन गाना अभ्यास से कम नहीं होता	181
27	सेवा	183
28	सिमरन	189
29	खाने पर संयम रखें	203
30	प्रसाद की महानता	209
	भाग–तीन : नाम और भक्ति	
31	मन की आदत बदलें	213
32	अंदर की रचना	217
33	गुरु का सिख	229
34	अमृतवेला	233
	भाग–चार : भजन–अभ्यास	
35	सतगुरु के साथ मुलाकात	285
36	सिमरन का तरीका	293
37	गुरु की मदद	301
38	रूहानियत के मोती	309
39	सन्तों का भजन–अभ्यास	321
40	कर्मों का लेखा	331
41	सच्चे दिल से माफी	341
42	गुरु की खुशी	347
43	अभ्यास के बारे में सवाल–जवाब	355

भाग–पाँच : सतगुरु की दया

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
44	मधुरता को कायम रखना	457
45	जिस जगह उन्होंने मेरी प्यास बुझाई	459
46	गुरु चरणों में बैठें	463
47	प्यार का सागर	465
48	दिल से दिल की राह	471
49	लम्बी और कठिन यात्रा	473
50	नाम की खुशबू	479
51	खुशी की कीमत	483
52	वक्त का सदुपयोग	489
53	सतगुरु खुले दिल से दया बाँटते हैं	497
54	मन की एकाग्रता	501
55	सतगुरु का नाम रोशन करें	505
56	उद्यम करें	509
57	नया साल – नया मनुष्य जन्म	513
58	प्रकाश और शब्द धुन को प्रकट करें	519
59	नाम एक अनमोल रत्न है	523
60	सतगुरु की संगत	529
61	साधु की महिमा	531

भाग–छह : सतगुरु के मुख्य संदेश

62	मेरे दिल के जज़्बे को समझें	545
63	गुरु सदा जीवित रहते हैं	549
64	सच्चाई पर अडिग रहें	551
	डायरी का नमूना	557

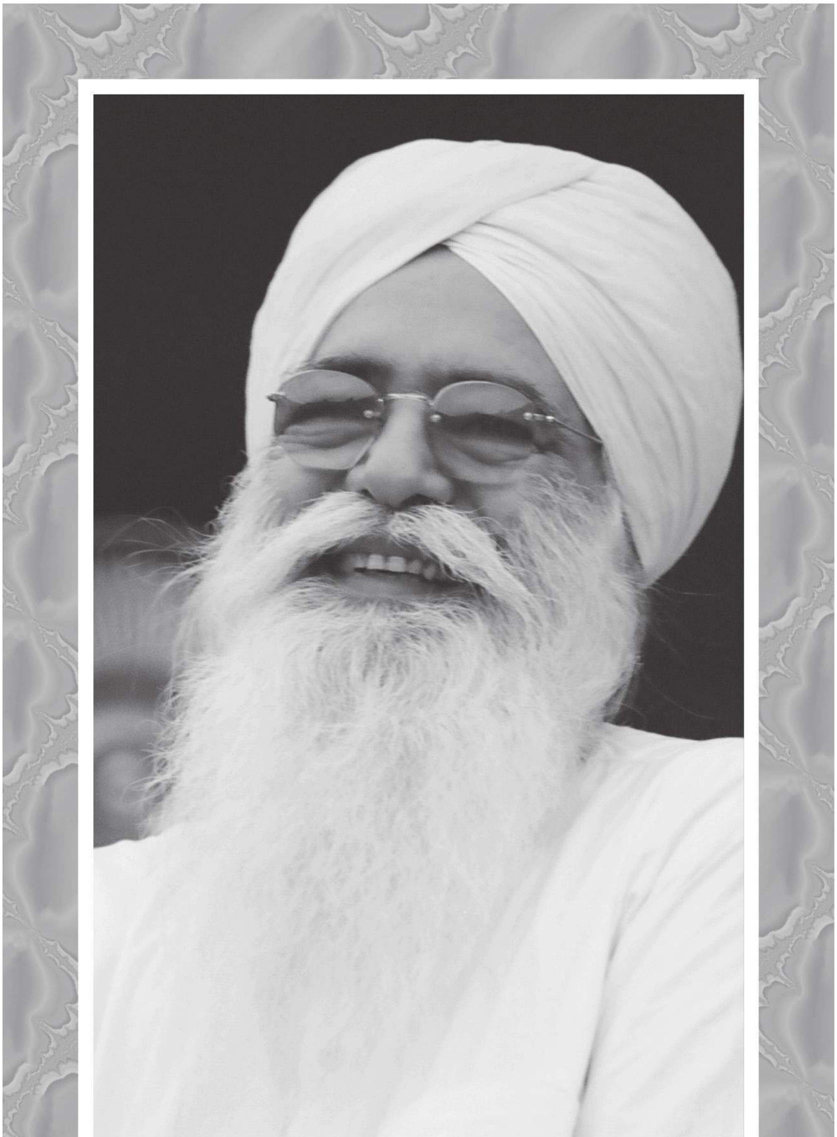

भाग – एक

पारमार्थिक जीवन की तैयारी

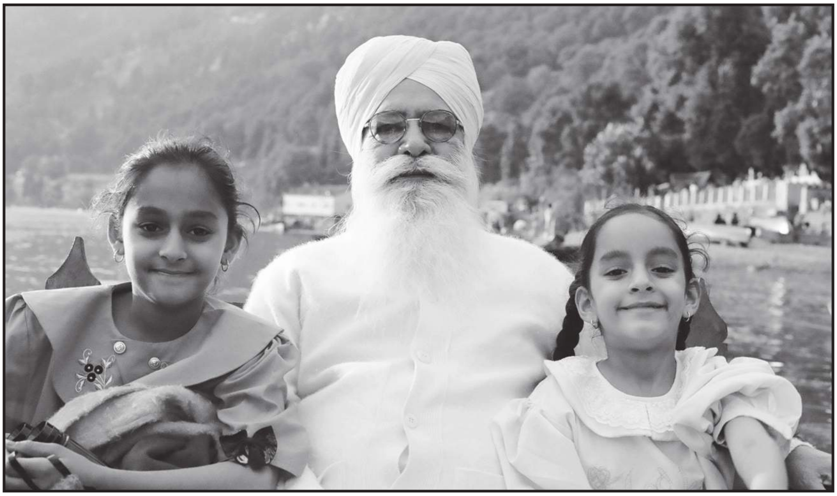

इन्सानी जामा बड़ा अनमोल है यह बार–बार हाथ नहीं आएगा। चौरासी लाख योनियां भुगतने के बाद हमें इन्सान का जामा मिला है, इसे शराब–कबाब में, दुनिया के बुरे कर्मों में व्यर्थ गँवाकर चले जाना अपने आपसे नाइंसाफी करना है। परमात्मा ने हमें इन्सानी जामा एक सुनहरी मौका दिया है। समझदार लोग ज़िंदगी में वह काम करते हैं जो इस ज़िंदगी के बाद काम आए। वह काम 'शब्द–नाम' की कमाई है। मुक्ति नाम में है और नाम हमें गुरु से मिलता है। अगर हम जीवन के इस भवसागर को पार करना चाहते हैं तो हमें पूरे गुरु से नामदान प्राप्त करके 'शब्द–नाम' की कमाई करनी चाहिए।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

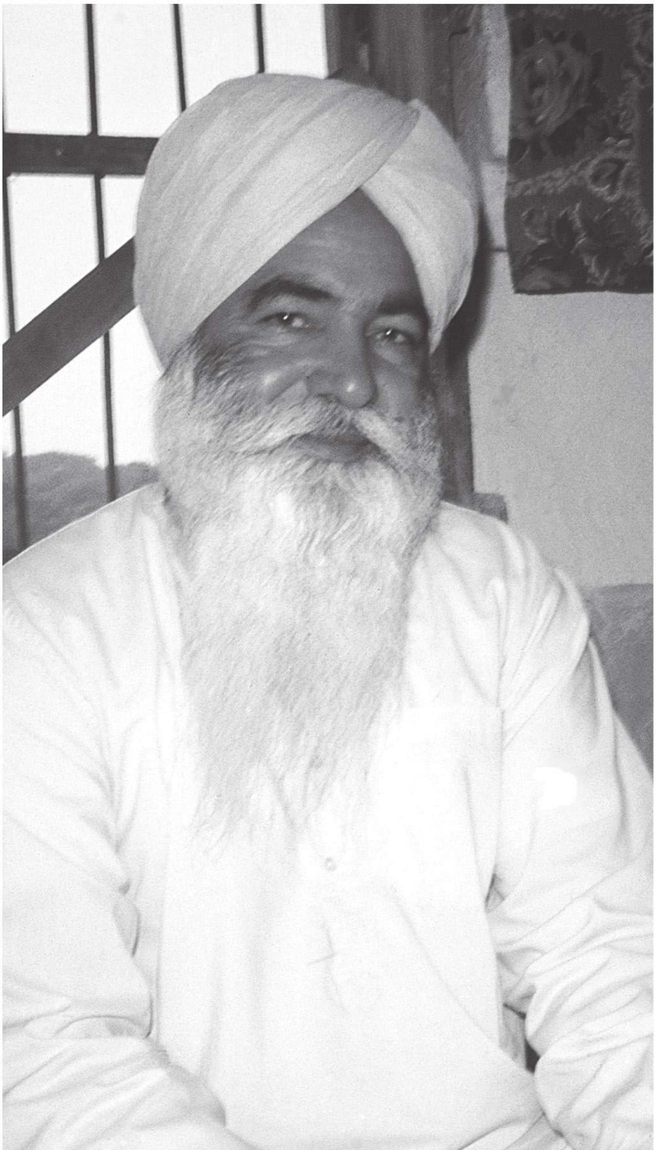

1

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा महाराज कृपाल सिंह जी की संगत को

पहला संदेश

राजस्थान – मई 1976

प्यारे सतसंगी भाईयो और बहनो,

महाराज कृपाल हमें छोड़कर नहीं गए आप हमारे साथ हैं और जीवन के हर मोड़ पर हमारी रक्षा कर रहे हैं। गुरु दुनिया से कभी नहीं जाते, कभी नहीं मरते; उनकी आत्मा अमर है। वे सिर्फ भौतिक शरीर त्यागते हैं लेकिन उनकी मौजूदगी हमेशा महसूस होती है।

हमारे अंदर एक–दूसरे के प्रति प्रेम–प्यार होना चाहिए ताकि हम उनकी शिक्षा का पालन कर सकें। सिमरन से हमारी आत्मा को शान्ति मिलेगी अगर हमारी आत्मा शान्त और स्थिर होगी तभी हम एक–दूसरे से प्यार करेंगे। सारे सतसंगियों का आपस में भाई–बहन का नाता होता है इसलिए हमें एक–दूसरे की इज़्ज़त करनी चाहिए। हुज़ूर बाबा जी हमें प्यार का संदेश देकर गए हैं हमारा फर्ज़ बनता है कि हम उनकी शिक्षा और उनके संदेश का पालन करें।

अगर हम किसी की निन्दा करेंगे या किसी के बारे में बुरा कहेंगे तो इससे हमारा बहुत नुकसान होगा। हमारे सतगुरु कहा करते थे, ''हम जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप हमारे खाते में जमा हो जाते हैं और हमारे पुण्य उसके खाते में जमा हो जाते हैं।'' जो दूसरों में नुख्स निकालता है उसका हमेशा नुकसान होता है इसलिए हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

निन्दा भली काहू की नाहीं मनमुख मुग्ध करन, मुँह काले तिन निन्दका नरके घोर पवन।।

बाबा सावन सिंह जी ने मुझे भी यही बताया था कि निन्दा न फ़ीकी होती है, न मीठी होती है। इन्द्रिय भोगों में स्वाद और आनन्द होता है। किसी की निन्दा करने से कोई आनन्द नहीं मिलता।

प्यारे भाईयो और बहनो, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप किसी सतसंगी या किसी अन्य व्यक्ति की निन्दा न करें। सतगुरु जिसे 'नाम' दे देते हैं शब्द–रूप होकर उसके अंदर बैठ जाते हैं। आप उसकी निन्दा करेंगे या उसे बुरा कहेंगे तो यह अपने गुरु को बुरा कहने या उनकी निन्दा करने के समान होगा।

मैं आपसे फिर अनुरोध करता हूँ कि आप किसी में नुख्स न निकालें। ज़्यादा से ज़्यादा समय अभ्यास में लगाएं यह आपके जीवन के लिए अच्छा होगा।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हज़ार काम छोड़कर भजन–अभ्यास में बैठें।'' मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय भजन–अभ्यास और सतसंग के लिए निकालें। किसी की निन्दा न करें निन्दा करने से आपको भजन–अभ्यास में मदद नहीं मिलेगी। जो प्रेमी भजन–अभ्यास नहीं करते वे दूसरों को बुरा कहते हैं।

आपको सदा सावधान रहना चाहिए कि आप किसी की निन्दा तो नहीं कर रहे या किसी में नुख्स तो नहीं निकाल रहे? आप अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय भजन–अभ्यास में लगाएं।

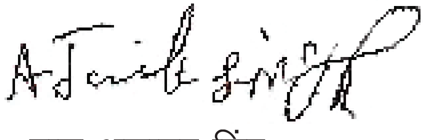

दास अजायब सिंह

***

2

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संगत के लिए खास संदेश

जागो–जागो सुतयो चलया वणजारा

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 अप्रैल 1994 और 6 फरवरी 1995

मेरे महान सतगुरु परमपिता कृपाल की साजी निवाजी साध संगत,

हुज़ूर सावन–कृपाल की दया–मेहर आप सब पर सदा बनी रहे और उनकी मधुर याद आपके दिलों में ताजा रहे। परमपिता कृपाल समझाया करते थे कि पानी की लहर और समय किसी का इंतज़ार नहीं करते।

वक्त हाथों से बे–इख्तियार निकलता जा रहा है और हम सब हर पल उस घटना के नज़दीक जा रहे हैं जिसे मौत या मृत्यु कहते हैं। मौत के बारे में हर सन्त–महात्मा ने अपने ढंग से और अपने शब्दों में हमें सावधान किया है लेकिन हम जीव ऐसे हैं कि हमारे कान पर जूँ भी नहीं रेंगती।

मैं सतसंग में, दर्शनों के समय और पत्रों द्वारा अपने महान गुरु के आदेश अनुसार इस सच्चाई का होका देता रहता हूँ कि न जाने कब अचानक इस शरीर को छोड़ना पड़े। हम इस शरीर को अपना संगी–साथी समझ रहे हैं क्यों न हम वह काम करें या वह माल इकट्ठा करें जो यहाँ से हमारे साथ जाए और अगली दुनिया में हमारे काम आए। वह काम 'शब्द–नाम' की कमाई, गुरु की याद और दिल में गुरु की बेरुखी का भय रखना है। यह हमारा सबसे ज़्यादा ज़रूरी और सबसे निजी काम है लेकिन हमारा इस तरफ़

कोई ध्यान नहीं हम इससे बिल्कुल बेखबर हैं और गफलत की नींद में अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं। गुरबानी का वाक़ है:

जागो जागो सुतयो चलया वणजारा।

गुरु साहब ने इस बात को एक जगह इस तरह लिखा है:

उठ जाग बटाउ तें क्यों चिर लाया।

ऐ मुसाफिर, उठ जाग होश में आ अपनी मंजिल की तरफ़ कदम बढ़ा। अभ्यास, भजन–सिमरन की कमाई और कुर्बानी के बगैर आज तक परमार्थ में न किसी का कल्याण हुआ है और न होगा। यह वस्तु हमारी अपनी है और मुश्किल घड़ी में हमारा साथ देती है। अफसोस! हमें यह याद ही नहीं। कबीर साहब कुल मालिक थे और संसार में आए पहले सन्त थे। आप कहते हैं:

कहो कबीर हम धुर के भेदी लाए हुकम हज़ूरी।

आपने परमात्मा की तड़प और तलाश में रातें जाग–जागकर गुज़ारी और हमें समझाया:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने प्रभु प्राप्ति के लिए ग्यारह साल कंकड़–पत्थरों का बिस्तर किया। बाबा जयमल सिंह जी ने बहुत भूख–प्यास काटी और केशों को कील से बाँधकर कमाई की। बाबा सावन सिंह जी कई–कई रातें लगातार खड़े होकर बेरागन का आधार लेकर भजन करते रहे। परमपिता कृपाल ने रावी नदी के बर्फ जैसे ठण्डे पानी में खड़े होकर अभ्यास किया।

प्यारे बच्चो, किसी गलतफहमी में न रहना अगर कमाई और कुर्बानी साथ नहीं होगी तो बिना भजन गुरु के दरबार में बिल्कुल जगह नहीं मिलेगी इसलिए मेरी प्रार्थना है, मेरी विनती है, मेरी

अरजोई है कि आज और अभी से ही अभ्यास में नित्यनियम से समय देना शुरू करें। शुरू–शुरू में मन नहीं लगेगा और लगाना आसान भी नहीं लेकिन असम्भव भी नहीं है।

भिखारी का काम है कि धनी के दर पर बैठकर भीख मांगे अगर हम दुनिया और दुनिया के बंधनों, धंधों को भूलकर गुरु के दर पर बैठेंगे, रोएंगे–चिल्लाएँगे तो अंदर वाला गुरु जो हमारी हर हरकत को देख रहा है वह ज़रूर–बर–ज़रूर हमारी चीख–पुकार सुनेगा और हमें हमारी करनी का फल देगा। यह काम न बातों से होगा न भंडारे मनाने से होगा न कॉन्फ्रेंस और सम्मेलनों से और न ही बड़े–बड़े साजो–सामान और इंतजामों से होगा। आत्मा की सफाई का काम अकेले और एकांत में बैठकर अपने गुरु के आगे श्रद्धापूर्वक और विश्वास के साथ करने से होगा। ऐसी कोशिश करने से गुरु की दया–मेहर बिल्कुल साथ होगी।

प्यारे बच्चो, मेरी बात को समझें मेरी भावना की कद्र करें होश में आएं। हुज़ूर सावन–कृपाल के बताए हुए रास्ते और दिए हुए काम को आज से ज़रूर–बर–ज़रूर करना शुरू कर दें इससे मेरी सेहत ठीक होगी और मेरे काम में मदद मिलेगी।

मैं एक बार फिर बहुत ज़ोर देकर कहना चाहता हूँ कि आज से कोई प्रेमी मुझे अपने घरेलु झगड़े, अपने दूसरे निजी और शारीरिक मसलों के बारे में पत्र न लिखे अगर ऐसा पत्र आएगा तो उस पत्र का जवाब नहीं दिया जाएगा।

मैंने बचपन से ही अपना जीवन प्रभु की खोज और प्रभु की याद में गुज़ारा है। प्रभु को प्राप्त करने के लिए मैंने अनेक उपाय किए, जगह–जगह धक्के खाए, पीरों–फ़क़ीरों के पास गया और धर्म–स्थानों के चक्कर भी लगाए।

बाबा बिशनदास जी से मेरा मिलाप, उनकी सोहबत–संगत, उनकी डाँट और थप्पड़ उसी दया–मेहर और तड़प–तलाश की एक कड़ी थी। मेरे आध्यात्मिक जीवन की नींव भी बाबा बिशनदास जी ने ही रखी। मैंने बाबा बिशनदास जी का दिया हुआ 'दो–शब्द' का अभ्यास उनकी दया–मेहर से 18 साल ज़मीन के नीचे बैठकर किया और अन्दरूनी तज़ुर्बा प्राप्त किया।

हुज़ूर सावन के भोले–भाले और इलाही स्वरूप ने मेरी आत्मा को ऐसा पकड़ा कि मैं चारों खाने चित्त हो गया और आज तक उस स्वरूप और प्यार को भुला न सका। वह स्वरूप मेरे मन में ऐसा बसा कि दिल को आर–पार कर गया। यह उसी हस्ती की देन और वरदान था कि सावन रूप परमात्मा कृपाल 500 किलोमीटर चलकर अपने–आप मेरे घर आए। मैंने आपसे कहा, ''मेरा दिल दिमाग खाली है मैं नहीं जानता कि मैं आपसे क्या सवाल करूं?'' आपने जवाब दिया, ''मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ। दिमागी कुश्तियां करने वाले मेरे आस–पास बहुत हैं।'' मुझे बचपन से जिस कन्त जिस पति की तलाश थी वह परमात्मा कृपाल ने पूरी की और मेरे हाथ में अंगूठी पहनाई।

प्यारे बच्चो, अगर हम अपने दिल में उनके लिए सेज बनाएंगे तो वह ज़रूर आएंगे। आप जानते हैं कि यह आश्रम मेरी निजी ज़र–खरीद जायदाद है। इसमें खेती करके मैं अपनी कमाई से अपना पेट पालता हूँ बाकी सारी कमाई लंगर में डालता हूँ और साध–संगत की नि:स्वार्थ सेवा करता हूँ।

गुरमेल और बलवन्त की अपनी अच्छी कमाई है और ये दोनों लंगर में काफी योगदान करते हैं। सरदार रतन सिंह, बाबा भाग सिंह, परसराम और गेट वाले चौधरी भी अच्छी जायदाद के मालिक हैं और साध–संगत की मुफ्त सेवा करते हैं।

मैं बताया करता हूँ कि यह लंगर परमपिता कृपाल का चल रहा है और हर मुनासिब ज़रूरत अच्छी तरह पूरी हो जाती है। उन्हीं के हुक्म अनुसार मैंने शुरू में ही ओबेराय साहब से घोषणा करवा दी थी कि किसी प्रेमी को सेवा देने की ज़रूरत नहीं। मेरे महान गुरु ने हर मुनासिब ज़रूरत को पूरा करने का वचन और वरदान दिया हुआ है जो पूरा हो रहा है।

प्यारे बच्चो, मेरी एक बार फिर बड़ी दिली ख्वाहिश और प्रबल प्रेरणा है कि आप दुनियावी कामों को करते हुए आज से ही अभ्यास करना शुरू कर दें। यह मजबून करनी का है कथनी का नहीं अगर अब भी आप मेरी बात मान लेंगे तो अपने घर की तरफ़ के सफ़र की शुरुआत कर लेंगे और एक दिन मंजिल पर पहुँच जाऐंगे। मेरी शुभकामनाएं और मदद आपके साथ है।

संगत के जोड़े झाड़ने वाला

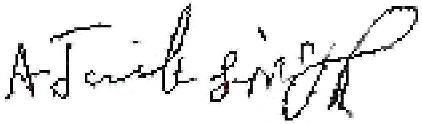

सतपुरख जिन जांणया सतगुरु तिसका नाव।
तिसके संग सिख उभरे नानक हरिगुण गाव।।

सच्चे पातशाह हुज़ूर सावन–कृपाल के प्यारे बच्चों,

मेरी ओर से सारी संगत को और हर प्रेमी को मेरे महान सतगुरु, कुल मालिक हुज़ूर कृपाल के जन्मदिन की लाख–लाख बधाई। सज्जनो, आज हम अपने महान सतगुरु की मीठी मधुर याद में बैठकर आपका पवित्र जन्मदिन मना रहे हैं।

हम परमात्मा रूपी गुरु की बड़ाई को तभी समझ सकते हैं जब हम अंदर जाकर रूहानी मंडलों पर उनकी शान और जाहो जलाल

को देखें। बाहरी तौर से तो महान सतगुरु संसार में हमारी तरह ही खाते–पीते, सोते–जागते थे लेकिन वह हमसे बहुत ज़्यादा ऊँचे सच्चे और सम्पूर्ण थे; वह परमात्मा के प्यारे बेटे थे।

असलियत तो यह है कि वह खुद ही परमात्मा थे। वह इन्सानी शक्ल रखते थे लेकिन सतपुरूष से मिलाप करके सतपुरूष का स्वरूप हो गए थे। आप परमार्थ का अथाह सागर दया सहानुभूति और प्यार का बहता हुआ दरिया थे। आप अपने माता–पिता के रखे हुए नाम के अनुरूप कभी न खत्म होने वाली कृपा का झरना थे। आप बेसहारों का सहारा, दीनों के नाथ व बन्धु थे। शब्दों में इतनी ताकत नहीं कि आपकी महानता का वर्णन किया जा सके।

आज संसार में ऐसे लाखों लोग मिलते हैं जिन्होंने उस महान हस्ती से रूहानी फैज़ प्राप्त किया और प्यार की अनमोल दात ली। ऐसी सूझ–बूझ और समझदारी ग्रहण की जिसने उनके जीवन को बदलकर रख दिया। काया पलट करके कौए से हंस बना दिया।

सज्जनो, महान सतगुरु अपने अविनाशी असीम सुख और शान्ति के देश को छोड़कर हम भूले–भटके पापियों के लिए इस जलते–सुलगते हुए संसार में आए। आपने दिन–रात लगातार खून पसीना एक करके हम भाँति–भाँति के लोगों को अपने सतसंग के बगीचे में लाकर हमारी कोमल पौधों की तरह देखभाल की और हम भूले जीवों को 'सुरत–शब्द' के अभ्यास की सच्ची सुच्ची शिक्षा देकर परमार्थ के सच्चे मार्ग पर डाला।

प्यारेयो, हमने सारा जीवन अपने शरीर को सुन्दर बनाने और सजाने में लगा दिया। अब जीवन का अन्त नज़दीक आ रहा है, आ गया है और सामने ही है लेकिन हमने आत्मा की आवाज़ और पुकार को नहीं सुना। आत्मा को साफ–सुथरा बनाने की तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

आओ, आज के इस पवित्र व शुभ मौके पर अपने महान सतगुरु हुज़ूर कृपाल को हाज़िर–नाज़िर जानकर उनके सुन्दर और मनमोहक स्वरूप को आँखों के आगे रखकर यह प्रण करें कि हम आज से ही ज़्यादा से ज़्यादा समय इस तरफ़ लगाएंगे। हम अपने गुरु के चरणों में गिरकर सच्चे दिल से उनके आगे प्रार्थना करें कि वे हमें बल दें कि हम आज से ही अपने सबसे ज़्यादा ज़रूरी काम यानि भजन–सिमरन में लग जाएं।

प्यारयो, आज गुरु से विनती करने का उनका आर्शिवाद प्राप्त करने का बहुत शुभ मौका है। ऐसे दुर्लभ व नाजुक मौके पर अपनी आत्मा को सिमरन का झाड़ू लगाकर साफ–सुथरा करें। गुरु से अपनी गलतियों और अवगुणों की माफी मांगें; पता नहीं फिर समय साथ दे या न दे! अगला श्वास आए या न आए! इसलिए अभी से, इसी वक्त से इस शुभ काम की शुरूआत करें।

मैं आपको विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि अगर हमारी कोशिश और इरादा पक्का होगा तो हमारी मंजिल ज़रूर–बर–ज़रूर हमारे कदम चूमेगी और हमारा स्वागत करेगी। वक्त की कद्र करते हुए समय का लाभ उठाते हुए वक्त को हाथों से न निकलने दें। अपनी आत्मा को साफ–सुथरा बनाने और उसे चमकाने में लग जाएं ताकि हम अपना जीवन सफल बना सकें और सच्चे पातशाह हुज़ूर कृपाल की खुशी प्राप्त कर सकें।

एक बार फिर आपको सतगुरु कृपाल के जन्मदिन की लाख–लाख बधाई हो।

आपके जोड़े झाड़नेवाला

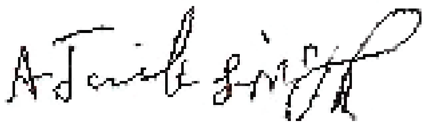

***

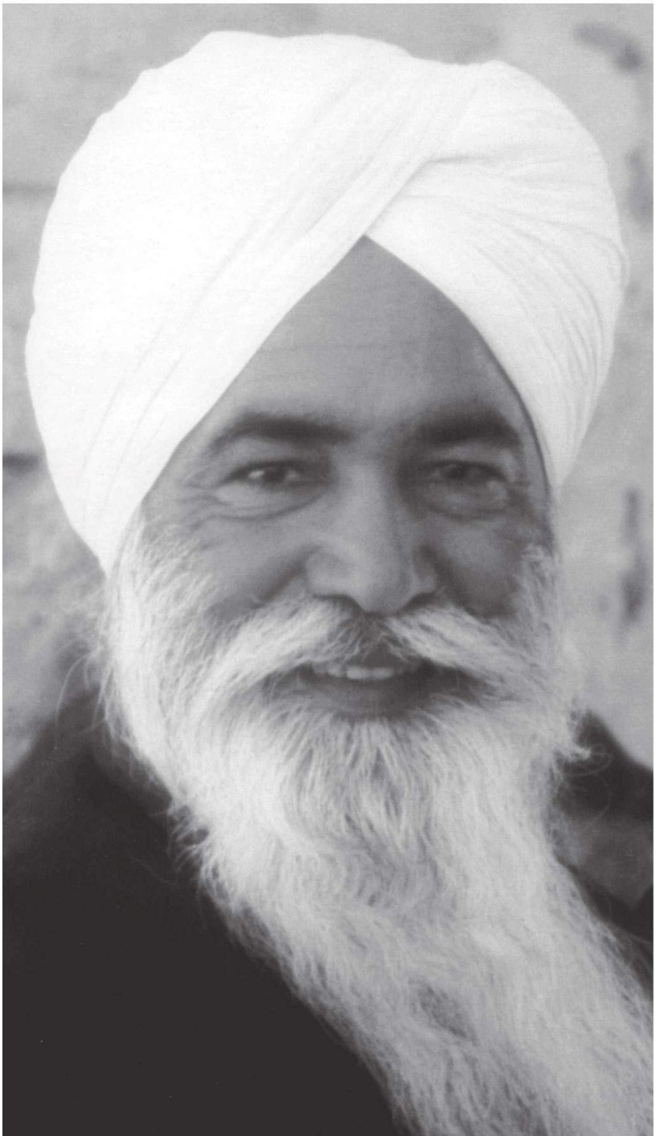

3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अपनी बीमारी के बारे में संदेश

प्यार के मार्ग की परंपरा

जयपुर, राजस्थान – मार्च 1992

मैं जब भी बीमार हुआ प्रेमियों ने मेरी सेहत के बारे में काफी सवाल किए। मैंने कई बार उन सवालों के जवाब दिए हैं। वे जवाब मैगज़ीन में भी छप चुके हैं फिर भी मैं आपके सवाल का जवाब दे रहा हूँ।

प्यारेयो, जिस देह में गुरु ताकत प्रकट होती है वह देह अपने साथ सारी बरकतें लेकर आती है। वहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। वहाँ दया–मेहर और शान्ति छा जाती है। जो प्रेमी ऐसी अवस्था प्राप्त कर लेते हैं उनके कर्मों का हिसाब–किताब तो पहले ही खत्म हो जाता है; उनके अंदर सतगुरु प्रकट हो जाते हैं। वे बादशाहत के ऊपर थूकना भी पसंद नहीं करते।

उनके लिए अमीरी और गरीबी एक समान होती है। वे न गरीबी की वजह से दुखी होते हैं और न धन–दौलत मिलने से खुश होते हैं। उनके लिए दोस्त और दुश्मन एक समान होते हैं। वास्तव में उनका कोई दुश्मन नहीं होता क्योंकि उन्हें हर एक के अंदर परमात्मा दिखाई देता है।

उनके लिए अमेरिकन, हिन्दुस्तानी, काला, गोरा सब एक समान होते हैं। वे हर व्यक्ति के कल्याण और खुशहाली के लिए प्रार्थना करते हैं। उनका रोम–रोम गुरु का यश गाता है। वे अपने आपको संगत के जोड़े झाड़नेवाला समझते हैं। जो उनकी संगत–

सोहबत में आते हैं वे उनके प्यार में मस्त हो जाते हैं और अपने आपको सतगुरु की याद में समर्पित कर देते हैं।

ऐसी अवस्था कैसे प्राप्त की जा सकती है? क्या ऐसी अवस्था अपने आप प्राप्त होती है? क्या ऐसी अवस्था पढ़-पढ़ाई से प्राप्त होती है धन-दौलत से खरीदी जा सकती है या हुकूमत के ज़ोर से छीनी जा सकती है? ऐसी अवस्था प्राप्त करने के ये साधन नहीं।

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''अंदर की ताकत किसी का लिहाज नहीं करती। रुहानियत प्यार, बलिदान और भजन-सिमरन का मार्ग है। जो यह करता है वह इस अवस्था को प्राप्त कर सकता है। इस अवस्था को अजनबी, विदेशी या कोई भी व्यक्ति करे वह प्राप्त कर सकता है।''

प्यारेयो, ऐसा शिष्य जिसके अंदर सतगुरु प्रकट होते हैं वह बलिदान, त्याग और भजन-सिमरन का जीता जागता नमूना होता है। उसने अपने गुरु के हर शब्द का पालन किया होता है। उसने अपने गुरु के विरह में दुनियावी सुख-आराम, इज़्ज़त-शोहरत छोड़कर बहुत भूख-प्यास सहन की होती है। उसने अपने गुरु के ऊपर अपना सब कुछ कुर्बान किया होता है।

उसने हमारी तरह शरीर धारण किया होता है। वह हमारी तरह खाता, पीता, सोता और बाकी चीज़ें करता है लेकिन अंदर से वह बहुत निराला होता है। वह अंदर परमात्मा से मिला होता है, असल में वह परमात्मा रूप बन चुका होता है। वह जब आँखें खोलता है इस दुनिया में होता है और जब आँखें बंद करता है तो सचखंड में होता है। उसे बाहरी रूप से समझना बहुत मुश्किल होता है।

जब हम ऐसे सन्तों के पास जाते हैं तो वे अपनी मुस्कान और प्यारे शब्दों से हमें अपने गले से लगाते हैं। हमारा उन पर श्रद्धा और

विश्वास बन जाता है लेकिन हमारा जानी दुश्मन हमारा मन हमारे अंदर भ्रम पैदा करता है और हमारे श्रद्धा–विश्वास को तोड़ता है।

जब तक हम भजन–अभ्यास के ज़रिए अंदर नहीं जाते तब तक हम अपने अंदर गुरु के प्रति सच्चा प्यार और दृढ़ विश्वास पैदा नहीं कर पाते और अंदर उनकी सच्ची महिमा नहीं देख पाते। सिर्फ गुरु का ऐसा शिष्य ही साधु सन्त या पूर्ण शिष्य कहलाता है, सिर्फ ऐसी अंदरूनी प्रगति की हुई आत्मा को ही सतगुरु अपनी देह त्यागने से पहले अपनी रुहों को जागृत करके परमपिता परमात्मा के साथ जोड़ने का काम सौंपते हैं।

आपको पता है जब हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने परमपिता कृपाल सिंह जी को अपनी ड्यूटी सौंपी थी तब बाबा सावन सिंह जी ने कहा था, ''कृपाल सिंह, यह रूहानी ज्ञान खत्म न हो जाए क्योंकि यहाँ थ्योरी समझाने वाले काफी लोग होंगे लेकिन भजन–अभ्यास न करने की वजह से उनके पास सच्चा ज्ञान नहीं होगा और वे लोगों को गुमराह करेंगे।''

यही बात सच्चे पातशाह महाराज कृपाल ने सच्चाई का संदेश देने के लिए मुझसे कही थी, ''आजकल प्रॉपगेन्डा और प्रवचनों का जोर है, पढ़े–लिखे लोग पार्टियों के बल पर गुरु बनेंगे। वे सच को झूठ और झूठ को सच बताएंगे। वे खुद भ्रम में होंगे क्योंकि उन्होंने भजन–अभ्यास नहीं किया होगा और वे दूसरे लोगों को अज्ञानता की खाई में धकेल देंगे। किसी की आत्मा के साथ धोखा करना बहुत बड़ा पाप है।''

महाराज कृपाल ने बहुत ज़ोर देकर कहा था, ''सच्चाई का मार्ग आगे चलता रहना चाहिए ताकि जिन आत्माओं को प्रभु–परमात्मा से मिलने की सच्ची तमन्ना है वह पूरी हो सके।''

प्यारेयो, यह ड्यूटी निभानी बहुत मुश्किल काम है। जब गुरु किसी प्रेमी को ऐसी आज्ञा देते हैं तो गुरु के शब्द सुनकर उनकी आत्मा काँप उठती है, वह रोती–चिल्लाती है। गुरु के आगे मिन्नतें करती है कि उनके गुरु दया–मेहर करके अपने देह रूप में उनकी आँखों के सामने रहें ताकि संगत को उनके दर्शनों का लाभ मिलता रहे। प्रेमी की यही इच्छा होती है कि उनके गुरु उन्हें यह काम न सौंपें जिसके लिए वे पूरी कोशिश करते हैं। अपने गुरु के देह रूप से चले जाने का छोटा सा विचार भी उन्हें अपनी मौत के बराबर लगता है। वे हमेशा यही चाहते हैं कि इस दुनिया में उनके गुरु की छत्रछाया उनके सिर पर बनी रहे।

ऐसे भक्त की बड़े–बड़े आश्रम, डेरे बनाने की या आश्रम के लिए धन–पदार्थ इकट्ठा करने की ड्यूटी नहीं लगाई होती। उन्हें सादगी से प्यार होता है। वे खुद बहुत साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। जो उनके पास आते हैं वे उन्हें भी अपनी ज़रूरतों को घटाकर साधारण जीवन जीने के लिए कहते हैं। उनकी संगत में ज़्यादा लोगों को इकट्ठा करने की ख्वाहिश नहीं होती। उनकी ड्यूटी आत्माओं को सच्चाई के साथ जोड़ने की होती है ताकि सच्चे मार्ग पर चलकर वे अपने असली घर सचखंड पहुँच जाएं।

पूर्ण सन्त इस दुनिया में परमात्मा के कार्यशील प्रतिनिधि होते हैं। जिन आत्माओं के दिल में परमात्मा से मिलने की तड़प होती है वे उन आत्माओं को, चाहे वे आत्माएं दुनिया के किसी भी कोने में रहती हों उन्हें अपनी देहरूपी संगत–सोहबत में लाकर नाम के साथ जोड़ते हैं। वे खुद उन आत्माओं के पास चले जाते हैं या इस तरह का इंतज़ाम करते हैं कि आत्मा उनके पास नामदान के लिए चली आती है।

कई ऐसी आत्माएं होती है जिन्हें नाम के मार्ग पर आने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता। शायद! उन्हें परमात्मा के ऊपर श्रद्धा और विश्वास भी नहीं होता लेकिन जब उन पर कष्ट आते हैं तो वे आत्माएं दुख से रोते–बिलखते हुए कहती हैं,''हे परमात्मा, तू जहाँ कहीं भी है हमारे ऊपर रहम कर, हमें बचा, हमारी रक्षा कर।'' ऐसी परिस्थिति में जीवित पूर्ण गुरु ड्यूटी के तौर पर उन पीड़ित आत्माओं तक पहुँचते हैं और उनकी मुनासिब मदद करते हैं।

जीवित पूर्ण गुरु न सिर्फ अपने शिष्यों के कर्मों का बोझ अपने ऊपर लेते हैं बल्कि उन पीड़ित आत्माओं का बोझ भी अपने सिर पर लेते हैं जो परमात्मा के आगे मदद के लिए पुकारती हैं। जो आत्माएं प्यार से गुरु को याद करती हैं या जिन्होंने सिर्फ एक बार ही गुरु का दर्शन किया होता है, पूर्ण गुरु ऐसी आत्माओं के कर्मों का भुगतान भी अपने शरीर द्वारा करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु न सिर्फ अपने शिष्यों की मदद करते हैं बल्कि उनके रिश्तेदारों और पालतू जानवरों की भी रक्षा करते हैं। स्वाभाविक रूप से इन चीज़ों का उनकी सेहत पर भारी असर पड़ता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''किए गए सारे कर्मों का भुगतान करना ही पड़ता है चाहे शिष्य करे चाहे गुरु करे। काल एक भी कर्म का लिहाज नहीं करता। उन कर्मों का भुगतान किस तरह किया जाए इसका निर्णय भी काल ही करता है। शिष्य के कर्मों का भुगतान करने के लिए अगर काल गुरु से उनके शरीर का कोई अंग भी माँग ले तो वे मना नहीं करते; बिल्कुल नहीं हिचकिचाते बल्कि खुशी से अपने शिष्य के कर्मों का भुगतान करते हैं।''

अब सवाल उठता है कि सन्त अपने शिष्यों के कर्मों का बोझ अपने ऊपर कैसे लेते हैं और उनका भुगतान कैसे करते हैं? आपको पता है कि यह सवाल आत्मा से संबंधित है, मन और बुद्धि से परे है। हम इसे अपनी आँखों से नहीं देख सकते। सिर्फ अंदर जाकर ही गुरु की दया से इस बात को समझ सकते हैं।

एक मशहूर सर्जन जिसने काफी ऑपरेशन किए थे उसने बाबा सावन सिंह जी से कहा, ''मैंने कई इन्सानों के शरीर के ऑपरेशन किए हैं लेकिन मैंने कभी किसी इन्सान के शरीर में कोई मंडल या ब्रह्मांड नहीं देखा।''

महाराज सावन सिंह जी ने जवाब दिया, ''यह सूक्ष्म और कारण मंडल हैं इसलिए हम इन्हें अपनी बाहरी आँखों से नहीं देख सकते। जब हम सूक्ष्म और कारण रूप धारण करते हैं तभी इन्हें देख सकते हैं। जब तक हम उस मंडल में नहीं पहुँचते जहाँ यह सब होता है तब तक हम यह बात नहीं समझ सकते। तब तक हम इस बात की थोड़ी सी भी कल्पना नहीं कर सकते कि यह कैसे होता है, गुरु जीव के कर्मों का भुगतान कैसे करते हैं और वे अपने ऊपर कर्मों का बोझ कैसे लेते हैं?''

प्यारेयो, जैसा मैंने पहले भी कहा है कि गुरु के ऐसे शिष्य जो अंदर गुरु से मिलकर गुरु का रूप बन चुके हैं उनके अपने खुद के कोई कर्म भुगतने के लिए बाकी नहीं होते। वे अपने शिष्यों के प्रेम–प्यार में बंधे हुए अपने ऊपर उनके कर्मों का बोझ लेते हैं। वे खुद को दूसरों की आग में जलाते हैं। वे खुद दूसरों के दुख और पीड़ा को सहन करते हैं। ऐसा करते समय उनकी कोई शिकायत नहीं होती और न ही वे इस बात का ज़िक्र करते हैं कि वे यह दूसरों के लिए कर रहे हैं।

कई बार ऐसा होता है कि वे जिस प्रेमी के कर्मों का भुगतान कर रहे होते हैं वही प्रेमी उनको इतने दुख और कष्ट भुगतते हुए देखकर उन पर अभाव ले आता है। गुरु हमेशा मुनासिब मदद करते हैं लेकिन कई बार वे शिष्य के प्यार में इतना भीग जाते हैं कि अपने ऊपर हद से ज़्यादा कर्मों का बोझ उठा लेते हैं जोकि बर्दाश्त करने की क्षमता से बाहर होता है और गुरु की सेहत के लिए हानिकारक बन जाता है। फिर भी गुरु उसे परमात्मा की मर्ज़ी समझकर खुश रहते हैं। वे कभी भी दिखावा नहीं करते या यह नहीं जताते कि उन्होंने उसकी मदद की है। उन्हें पता होता है कि यह सब परमात्मा और गुरु की मर्ज़ी से हो रहा होता है।

आखिरी दिनों में महाराज सावन सिंह जी की सेहत ठीक नहीं थी। संगत उनके पास विनती कर रही थी कि आप अपने आपको ठीक करें और बाबा जयमल सिंह जी के पास विनती करें कि संगत की खातिर आपको इस दुनिया में कुछ समय और रहने दिया जाए। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''मैं ऐसी विनती नहीं कर सकता इससे मेरी गुरुमुखता में फर्क आता है।''

महाराज कृपाल सिंह जी बाबा सावन सिंह जी के आगे प्रार्थना करते, ''हम यह दुख नहीं देख सकते। कृपा करके हमारे ऊपर दया-मेहर करें और खुद की सेहत ठीक करें ताकि आपकी देहरूपी मौजूदगी हमेशा हमारे सिर पर बनी रहे।''

एक दिन बाबा सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल सिंह जी को बुलाया और कहा, ''तुम मुझे इस दुनिया में रहने के लिए कहते हो आज सचखंड में इस बात का फैसला होने वाला है; अपनी आँखें बंद करके देख लो कि क्या फैसला होता है!''

महाराज कृपाल ने आँखें बंद करके अंदर जाकर देखा कि सारे पूर्ण सन्त कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, तुलसी साहब, पल्टू साहब और स्वामी जी महाराज भी मौजूद थे। सारे सन्त इस बात पर सहमत थे कि बाबा सावन सिंह जी को देहरूप में कुछ और समय दुनिया में रहना चाहिए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''नहीं, सावन सिंह ने पहले ही इतना सारा बोझ अपने ऊपर ले लिया है इनके ऊपर और बोझ नहीं डालना चाहिए; अब इन्हें वापिस बुला लेना चाहिए।''

जब महाराज कृपाल सिंह जी ने यह सब अपनी आँखों से देखा तो आप चुप हो गए। आप सिर्फ बाबा सावन सिंह जी की प्यार भरी आँखों में देखते रहे और उन आँखों के नशे में मदहोश हो गए। जिसके बारे में महाराज कृपाल खुद कहा करते थे, ''वह नशा वह मदहोशी शब्दों में बयान नहीं की जा सकती।''

उसी तरह जब एक बार प्यारे परमपिता कृपाल सिंह जी बहुत बिमार हुए तो एक प्रेमी ने आपसे पूछा क्या आप अपने आपको ठीक नहीं कर सकते? महाराज कृपाल ने कहा, ''अगर आपका सबसे प्यारा दोस्त आपके लिए कोई तोहफा भेजे तो क्या आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे? मुझे यह शारीरिक दर्द मेरे गुरु की मर्ज़ी से मिला है क्या मैं उसे स्वीकार न करूं? गुरु के भेजे हुए तोहफे को स्वीकार करके उसे प्यार से गले लगाना मेरी ड्यूटी है।''

प्यारेयो, यही **प्यार के मार्ग की परंपरा** है। यही परमार्थ के मार्ग का रिवाज है। मैं उसके खिलाफ जाने की सोच भी नहीं सकता। अपने गुरु के तोहफे को कबूल करना, गुरु की मर्ज़ी में रहना और उनकी दया के लिए उनका शुक्राना करना मेरी ड्यूटी है।

मैं जानता हूँ आप सब चाहते हैं कि मेरी सेहत ठीक हो जाए। मैं आपकी हमदर्दी और सहानुभूति की कद्र करता हूँ। अगर आप

वाकई मेरी मदद करना चाहते हैं तो कुछ बातें हैं जिन्हें करने से आप मेरा भार हल्का कर सकते हैं। कुछ कुर्बानियाँ आप बड़ी आसानी से दे सकते हैं वह है – अभ्यास के लिए ज़्यादा समय निकालें, ज़्यादा मेहनत करें अगर आप मेहनत करेंगे तो अंदर की ताकत आपकी हज़ार गुना मदद करेगी। भजन–अभ्यास करके आप गुरु ताकत की ख़ुशी हासिल कर लेंगे।

आपके दोस्तों, रिश्तेदारों और सतसंगी भाई–बहनो के साथ जो भी झगड़े या मतभेद हैं, उन्हें प्यार से खत्म करें। हमारा एक–दूसरे के साथ संबंध पिछले कर्मों की वजह से है, उन कर्मों का प्यार से भुगतान करें। हमारे लिए इस जन्म में पिछले कर्मों का लेखा–जोखा खत्म करना ज़रूरी है। मुझे प्रेमियों के भजन–अभ्यास के बारे में बहुत कम पत्र आते हैं। ज़्यादातर प्रेमी आपसी झगड़ों के बारे में ही पत्र लिखते हैं और मुझसे इस जवाब की उम्मीद करते हैं कि वे सही हैं और दूसरे गलत हैं। क्या यह सन्तमत का सिद्धांत है?

प्यारेयो, सन्तों के दरबार में सिर्फ माफी होती है। समझदार बनें झगड़ों को टालें। दूसरों की गलतियाँ माफ करके उन्हें भूल जाएं। अपने अंदर से इन सब चीज़ों को निकाल फैंकें फिर देखें वहाँ गुरु का प्यार कैसे प्रकट होता है? निन्दा से बचें, मीठा बोलकर किसी को धोखा न दें सबसे प्यार करें। जब आप यह सब करेंगे तो भजन–अभ्यास में आपकी बहुत तेज़ी से प्रगति होगी।

जिन प्रेमियों को सेवा दी गई है, वे प्रेम–प्यार से सेवा करें। साथ वाले सेवादारों का आदर करते हुए उन्हें प्यार का वातावरण बनाना चाहिए। सेवा करते हुए सिमरन करना चाहिए। इससे आपको गुरु की दया का अनुभव होगा और आपको यह प्रत्यक्ष देखने में मदद मिलेगी कि गुरु ही कर्ता हैं हम सिर्फ उनके साधन हैं।

मुझे आप लोगों को एक बात और बतानी है कि हम जब भी गुरु की आज्ञा के अनुसार उनकी याद मनाने के लिए और परमात्मा की भक्ति के लिए इकट्ठा होते हैं तब काल भी उस वातावरण को किसी न किसी तरीके से बिगाड़ने की कोशिश करता है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''जब आत्मा पूर्ण सन्तों के पास जाती है तब काल और माया अपनी छाती पीटकर रोते हैं कि एक और आत्मा उनके जाल से निकल गई। काल के पास आत्मा को फँसाने के कई तरीके हैं। काल सेवादारों में फूट डालता है और उन्हें आपस में लड़वाता है। काल प्रेमियों के दिलों में गुरु के प्रति अविश्वास पैदा करता है।''

जो प्रेमी सतसंग करते हैं काल अंदर से उन्हें ऐसा अहसास दिलवाता है कि वे जिस तरह से प्रेमियों को समझाते हैं उन्हें सन्तमत की शिक्षा ज़्यादा बेहतर और आसानी से समझ आती है। वे ज़्यादा बोलने लग जाते हैं और गुरु के सतसंग की टेप लगाना या उनके कहे संदेश को संगत में पढ़ना कम कर देते हैं। धीरे–धीरे गुरु की टेप कुछ ही मिनट लगाते हैं और बाकी समय वे अपनी मन–बुद्धि के लेवल पर खुद बात करने लग जाते हैं लेकिन प्रेमियों की आत्मा पर उनकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सिर्फ उनका अपना मन बहलता है और उनकी बुद्धि को संतुष्टि मिलती है।

प्यारेयो, सन्त मन–बुद्धि से ऊपर उठे होते हैं वे जो कुछ कहते हैं अपने पूरे तजुर्बे के साथ कहते हैं। उनके शब्द दया भरे होते हैं और उन शब्दों में से उनके भजन–अभ्यास का तेज झलकता है। उनके शब्द सीधे और सरल होते हैं लेकिन वे अंदर की गहराई और निर्मलता से आते हैं इसलिए वे शब्द हमारी आत्मा को छू जाते हैं। गुरु के शब्दों को विस्तार से समझाने की ज़रूरत

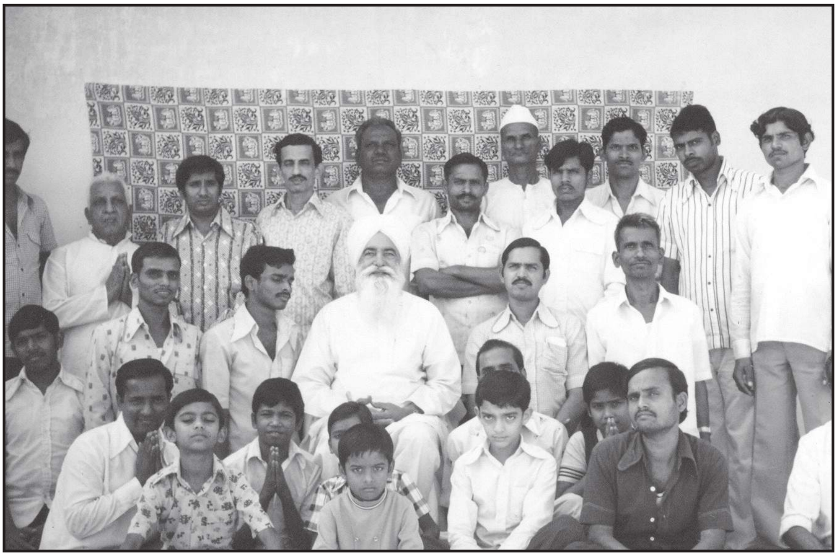

नहीं होती। इसका मतलब यह नहीं कि महत्वपूर्ण बातें न समझाई जाएं। गुरु की बातों को समझाना चाहिए लेकिन समझाते-समझाते दूर बहाकर नहीं ले जाना चाहिए। गुरु के शब्दों की जगह खुद की बातें नहीं करनी चाहिए।

प्रेमी अपना कीमती वक्त निकालकर, काफी पैसे खर्च करके आश्रम में आते हैं या अन्य जगह कार्यक्रमों के लिए जाते हैं। इसलिए आपस में बातें करने में समय व्यर्थ न गँवाए। जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं, अपना समय उसमें व्यतीत करें। गुरु की मधुर याद में रहें और ज़्यादा से ज़्यादा भजन-सिमरन करें।

अगर सारे प्रेमी यह याद रखेंगे और मेरे कहे अनुसार करेंगे तो इससे मुझे मदद मिलेगी। मैं ज़्यादा समय आपकी बेहतर सेवा कर सकूंगा। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे और गुरु ताकत के ऊपर कम बोझ बनेंगे।

***

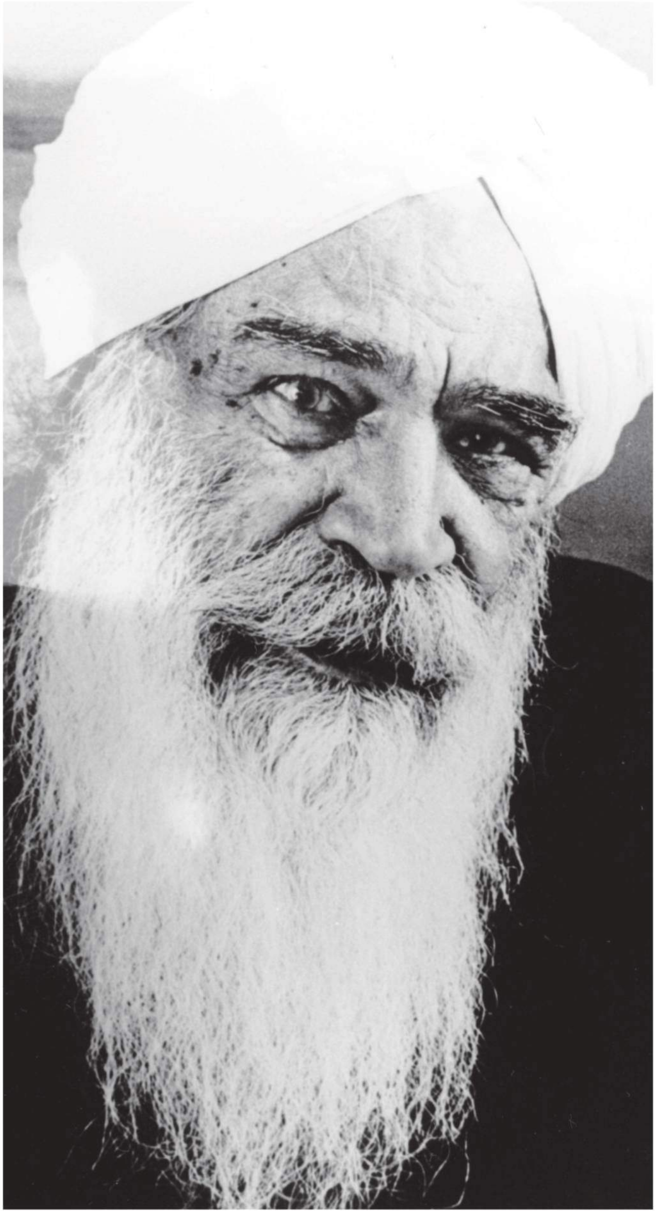

4

महाराज कृपाल द्वारा विदेशी प्रेमियों को तीसरे विश्व दौरे पर दिया गया संदेश

प्रगति के लिए ज़रूरी बातें

न्यूयोर्क, अमेरिका – 12 अक्टूबर 1972

पिछले कुछ दिनों में हमें रुहानियत के अलग–अलग पहलुओं पर चार–पाँच संदेश मिले हैं। हमारा मकसद इस मार्ग पर प्रगति करने का है। प्रगति करने के लिए कुछ बातें बहुत ज़रूरी हैं अगर आपने उन बातों पर अमल नहीं किया तो प्रगति नहीं हो सकती।

सबसे पहले **नित्यनियम** है। जैसे आप अपने शरीर के लिए दिन में दो या तीन बार खाना खाते हैं, वैसे ही आपका यहाँ आने का मुख्य मकसद अपनी आत्मा को खुराक देना है। आपने अपनी आत्मा को अन्न और पानी देना है यहाँ आप सबको यह पूंजी प्राप्त हुई है। सबसे पहले आप अभ्यास में नित्यनियम बनाएं। नित्यनियम से आपको अच्छा रुहानियत का अन्न तभी मिलेगा जब आप डायरी रखकर अपना आत्मनिरीक्षण ठीक से करेंगे।

आमतौर पर हम डायरी में अपना आत्मनिरीक्षण लिखने में लापरवाही बरतते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि हमारी इस मार्ग में प्रगति नहीं होती। कभी हम इस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं तो कभी पीछे हटते हैं। इसलिए मैंने डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखने पर यह सलाह दी है कि आपके अंदर किसी भी व्यक्ति के लिए विचारों में शब्दों में या कृति में द्वेष भाव या वैर भाव नहीं होना चाहिए।

हमारे विचार बहुत प्रबल होते है। हम कहते हैं, ''अगर कोई मेरे खिलाफ कह देगा तो मैं क्या करूं?'' खून से खून साफ नहीं किया

जाता। उसकी सफाई के लिए जीवन के पानी की ज़रूरत पड़ती है अगर कोई आपके बारे में दुर्भावना रखता है या बुरा सोचता है तो आप थोड़ी देर के लिए शान्त मन से सोचें कि वह जो सोच रहा है क्या उसमें कोई सच्चाई है? आप अपना परिक्षण करें अगर उसमें जरा भी सच्चाई है तो आप उस व्यक्ति का शुक्रिया अदा करें।

आप सोचकर देखें, आपको आपके दोष या कमियाँ आपका दुश्मन बताएगा या आपका करीबी दोस्त आपको सलाह के तौर पर बताएगा क्योंकि आपका उस दोस्त के साथ अटूट प्रेम-प्यार है। अगर उसमें कोई सच्चाई नहीं है तो फिर आप वही कहें जो क्राईस्ट ने कहा था ''परमपिता, इन्हें माफ कर दें क्योंकि इन्हें पता नहीं है कि ये क्या कर रहे हैं?'' यही एक तरीका है नहीं तो यह विचार आपके मन में चुभता रहेगा आपका मन शान्त नहीं होगा और आप जब भी भजन-अभ्यास में बैठेंगे यह विचार दिमाग में आ जाएगा।

दूसरी बात है **सच्चाई**। सच्चाई का मतलब न कोई अभिनय न कोई ढोंग और न कोई दिखावा। आपका दिल, ज़ुबान और दिमाग जब ये तीनों किसी बात पर सहमत हों तो उस बात में सच्चाई होती है। कभी हम बाहर दिखाने के लिए कुछ कहते हैं लेकिन हमारा दिल कुछ और सोच रहा होता है और हमारा दिमाग कुछ और ही सोच रहा होता है। हमें सतर्क होकर बड़े गौर से इनका निरीक्षण करना चाहिए।

कोई और व्यक्ति आपका निरीक्षण उतनी गौर से नहीं कर सकता जितना आप खुद कर सकते हैं क्योंकि आप अपने बारे में ज़्यादा जानते हैं। अगर हम कोई गलत बात करते हैं तो सबसे पहले हम अपने आपको धोखा दे रहे हैं। हम न सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हैं बल्कि हम अपने अंदर बैठे परमात्मा को भी धोखा

दे रहे होते हैं। परमात्मा हमारी हर हरकत को देख रहा है। परमात्मा हमारी प्रवृति को जानता है कि हम यह क्यों कर रहे हैं?

अब मेरा सुझाव **जीवन की पवित्रता** पर है। जीवन में पवित्रता को छोड़कर विषय-भोगों को अपनाना मौत को गले लगाना है। आप जितना ज़्यादा पवित्र बनेंगे उतना अच्छा है। आपको पवित्र बनने से ज़्यादा फायदा होगा आपको परम आनन्द मिलेगा।

जब आपके अंदर कोई खोट होगी कोई गलत विचार या झूठ होगा या आप कुछ बनकर दिखाने की कोशिश करेंगे जोकि आप हैं ही नहीं तो परिणाम यह होगा कि आप अपने और अंदर बैठे परमात्मा के बीच दीवार महसूस करेंगे। अगर आपको रूहानियत के मार्ग पर प्रगति करनी है तो हमेशा सच्चे और ईमानदार बनें। इस मामले में कभी भी अपने आप पर रहम न खाएं।

इसके बाद यह तत्त्व आता है कि **हम सब एक समान हैं और परमात्मा की अंश हैं।** हम उस सर्वज्ञ चैतन्यमय महासागर की बूँदें हैं। परमात्मा के नाम में हम सब भाई-बहन हैं कोई छोटा-बड़ा नहीं। हमारे पिछले कर्मों के अनुसार हमारे जीवन की स्थिति बनी है। यह अलग बात है कि कुछ लोगों के जीवन में कठिनाईयाँ भी हैं लेकिन परमात्मा ने हमें एक समान चीज़ें दी हैं जैसे भौतिक शरीर और आत्मा। हमें परमात्मा ने भक्ति करने का अवसर दिया है।

इन्सान वही है जो दूसरों के लिए जीता है। सच सबसे ऊँचा है और सच्चाई से जीना उससे भी ऊँचा है। अगर कोई बल्ब जल रहा है लेकिन उस बल्ब के ऊपर काले बिन्दुओं का लेप लगा हो तो उस कमरे में कितना प्रकाश होगा? इसी तरह प्रकाश आपके अंदर है। आप ध्यान लगाकर देखें कि आपके अंदर अंधकार नहीं प्रकाश है। यह आपको खुद ध्यान लगाकर देखना पड़ेगा। आपके

लिए यह कोई और नहीं करेगा। फिर भी अगर ऐसा होता है कि आपकी कोई कमी किसी के ध्यान में आ जाती है और वह आप से दुश्मनी के कारण आपको बदनाम करने के लिए या आपको आपका प्यारा भाई समझकर बताता है तो यह आपके फायदे में ही है। आप यही समझें की वह चाहता है आप न भटकें क्योंकि अगर पैसे खो गए तो आपने कुछ नहीं गँवाया अगर सेहत खो गई तो आपने थोड़ा बहुत गँवाया है अगर चरित्र खो जाए तो आपने सब कुछ गँवा दिया है।

जैसे मैंने आपको कहा है कि नित्यनियम सबसे पहले है। ये सब चीज़ें परमार्थ के मार्ग पर प्रगति के लिए सहायक तत्त्व हैं। मैं आपके सामने कोई नई बातें नहीं रख रहा हूँ अगर आप एकदृष्टि से देखें तो आपको बेहतर मालूम होगा। अगर आपको कोई भाषण देना हो तो मुझे लगता है कि आप अपनी बात प्रशंसनीय रूप और जोश से बड़े-बड़े शब्दों में पूरा ज़ोर लगा कर रखेंगे। लेकिन एक बात ज़रूर याद रखें कि हमें अपने आपके साथ सच्चा बनना चाहिए।

अगर किसी आदमी के हाथ में लैम्प है और वह खड्डे में गिर जाए तो क्या किया जाए? हम प्रगति चाहते हैं और परमात्मा हमारे अंदर है। परमात्मा हमारी हर हरकत को देख रहा है। आप परमात्मा के साथ सच्चे और प्रामाणिक रहें। मैं आपसे विदा लेते हुए आपको यही संदेश देता हूँ कि यह संदेश हमेशा आपके काम आएगा।

अगर आप इस दिशा में एक कदम बढ़ाते हैं तो आप सौ कदम प्रगति कर लेंगे। आप अपने जीवन की त्रुटियों और कमियों पर कब गौर करेंगे? अगर आपने अपने अंदर की कमियाँ दूर नहीं की तो आप देखेंगे कि परमात्मा आपके और परमात्मा के बीच एक बड़ा और मोटा पर्दा डाल देता है। इसलिए यह प्रार्थना की गई है, ''हे परमात्मा, हम

आपके शुक्रगुज़ार हैं कि आपने यह रहस्य संसार के बुद्धिमानों से छिपाकर रखा है और भोले बच्चों को बताया है।'' इसका यह मतलब है कि परमात्मा ने भोले बच्चों को अपनी प्राप्ति का भेद बताया है ऐसे भोले बच्चों के जीवन में त्रुटियाँ और कमियाँ नहीं होती।

मैं आप सबकी प्रगति की शुभकामना करता हूँ। वह परमात्मा रूप शक्ति, क्राईस्ट रूप शक्ति, गुरु शक्ति आपके अंदर है। वह कभी-कभी इन्सानी रूप लेकर आपका मार्गदर्शन करने के लिए बोलती है क्योंकि हम उस परमात्मा का कहा हुआ अंदर सुन नहीं रहे। वह एक बार दो बार तीन बार कहेगा अगर आप नहीं सुनेंगे तो वह कहना छोड़ देता है; इसे आप अन्तरात्मा की आवाज़ भी कह सकते हैं।

मैं कहता हूँ अगर आप अपने आपसे सच्चे और प्रामाणिक रहेंगे तो आपको परमात्मा से भी डरने की ज़रूरत नहीं। आप अपने अंदर बैठे परमात्मा से सच्चे और प्रामाणिक रहें। परमात्मा किसी स्वर्ग में नहीं रहता वह सर्वव्यापी है, सारी सृष्टि का नियंत्रण करता है। परमात्मा आपके शरीर को भी नियंत्रित रखता है वह आपके अपने हाथों और पैरों से भी बहुत नज़दीक है।

आप अपनी आत्मनिरिक्षण की डायरी अनुशासनपूर्वक भरें कड़ी मेहनत करें अगर कोई कमी नज़र आती है तो उसे दूर करें। अगर आपके पेट में दर्द है तो आप कितनी देर अपने ठीक होने का ढोंग कर सकते हैं? अगर आपके आस-पास आग लगी है तो आप कितनी देर चुपचाप बैठकर सब कुछ ठीक होने का दिखावा करेंगे? अगर आप रोना शुरू करेंगे तो यह तत्त्व आपकी रुहानियत मार्ग पर प्रगति के लिए बहुत मदद करता है।

परमात्मा हमारी हर हरकत और हमारे मन की प्रवृत्ति को देख रहा है। यहाँ बैठे हर व्यक्ति को मालूम है कि मैं आपको कोई नई

बात नहीं बता रहा हूँ मेरे थोड़े से लफ्ज़ों को समझें बस, बात सिर्फ इतनी ही है कि हम अपने आपमें प्रमाणिक और सच्चे नहीं।

हमारे दिल में जो बात है वही बात मुँह से निकलनी चाहिए। हमारे दिमाग (मन–बुद्धि) को भी वही सोचना चाहिए जो हमारे दिल में है। मैं कहूँगा कि हमारे दिमाग की प्रगति हुई है लेकिन हमारे दिल की प्रगति नहीं हुई। बस, यही तकलीफ है। आप देखें, दिमाग (मन–बुद्धि) सोचकर स्वार्थी, घमण्डी और संकीर्ण विचारों वाला बन जाता है। यह मालिक बनकर सबको काबू में रखना चाहता है। यह सर्वश्रेष्ठ बनना चाहता है फिर उसके लिए चाहे बाकी सबका बलिदान ही क्यों न देना पड़े? सारे विश्व में जहाँ कहीं भी लड़ाई–झगड़े हो रहे हैं वहाँ आपको यही बात नज़र आएगी। क्या उन लोगों में दिल नहीं होता? अगर आपका दिमाग (मन–बुद्धि) कोई क्रूर चीज़ करने की सोचता है तो क्या आपका दिल उस बात से सहमत होगा? मुझे नहीं लगता अगर आप किसी का कत्ल करने की सोचते हैं तो क्या आपका दिल कहेगा हाँ ऐसा करो?

आपका दिल परमात्मा के बैठने की जगह है। आपके दिमाग की प्रगति हो इसके साथ दिल की भी प्रगति हो तब आप कई चीज़ों से बच सकते हैं। अगर ऐसा हुआ तो सारे अत्याचार और क्रूर घटनाएं जो आपको दुनिया में देखने को मिलती है ये सब मतभेद भुलाकर सारे एक हो जाएंगे। यह सारी बातें क्यों पैदा हुई? क्योंकि सिर्फ हमारे दिमाग की प्रगति हुई दिमाग के साथ दिल की प्रगति नहीं हुई। अगर इन दोनों की प्रगति हुई होती तो क्या आज दुनिया में गोलाबारी होती?

आप जब भी सच्चे और प्रामाणिक हों तो आप वहीं रहें जहाँ आप हैं। सभी संप्रदाय विभिन्न विचारों के हैं लेकिन सभी संप्रदायों

की मूलभूत शिक्षा एक ही है। परमात्मा ने आप सबको एक समान शरीर और बाकी चीज़ें देकर पैदा किया है। आपके पास शरीर, आत्मा और उसे नियंत्रण करने वाली परमात्मा की शक्ति है इसलिए सब एक समान हैं। हम अपनी विचारधाराओं में सीमित रहें। जाति और संप्रदाय हमारी उन्नति और प्रगति के लिए बने हैं।

आपने यह जानने की कोशिश नहीं की कि परमात्मा ने इन्सान क्यों बनाया, अलग–अलग विचारों के संप्रदाय क्यों बने? फिर उनके मतभेद चतुरता वगैरहा बहुत चीज़ें हैं। वह ताकत आपके अंदर है, आपकी हर हरकत को देख रही है अगर आप गुरु से सच्चे और प्रमाणिक हैं तो आप परमात्मा से भी सच्चे और प्रमाणिक हैं।

आप नित्यनियम से अभ्यास करें यह जीवन का अन्न और पानी है इससे आपकी आत्मा बलवान होगी। अगर घोड़ा ताकतवर है तो वह टूटी हुई गाड़ी को भी खींच सकता है। मुश्किल यह है कि हमारा शरीर बौद्धिक दृष्टि से ताकतवर हो गया है लेकिन हम अध्यात्म में कमजोर है; हमारी आत्मा कमजोर है।

मैं आप सबके सामने सिर्फ यही विचार रख सकता हूँ जो विचार मेरे दिल से निकल रहे हैं। आप सभी अपना भजन–अभ्यास नित्यनियम से करें यह आत्मा की खुराक है। आपकी शारीरिक बौद्धिक प्रगति के साथ रुहानियत में भी प्रगति होनी चाहिए। इन्सान को दोगुनी दया–मेहर मिली है।

आप सभी संपर्क में रहना, मिलते भी रहना और पत्रों द्वारा भी संपर्क बनाए रखना। आप ईमानदारी से अपनी आत्मनिरीक्षण की डायरियाँ भी भेजना। जब मैं ईमानदारी की बात कहता हूँ तो इसका मतलब सच्चाई और ईमानदारी से जो विचार आपके मन में शब्दों में और कृति में आ रहे हैं वही डायरी में लिखें। कभी–

कभी डायरियां बिल्कुल कोरी होती हैं। जिनमें आप सिर्फ इतना ही लिखते हैं कि मैं दो घंटे अभ्यास में बैठता हूँ लेकिन कोई प्रगति नहीं हुई। यह पढ़कर मुझे किस पर विश्वास करना चाहिए? आप बाहर दुनियावी लोगों को धोखा दे सकते हैं लेकिन जो आपके अंदर बैठा है वह आपकी हर हरकत को देख रहा है।

अगर आप ईमानदारी से डायरी भरते हैं और आप भजन-अभ्यास को नियमित समय देते हैं तो प्रगति न होने का कोई कारण नहीं है। गुरु ताकत अदृष्य पवित्र शक्ति है जो हर समय काम करती है आपका मार्गदर्शन करती है आप उसकी आवाज़ को सुनें और उसकी संगत में रहें।

हम कार्यक्रम के दौरान एक घंटे के लिए भजन-अभ्यास में बैठते थे। मैं आशा करता हूँ कि आप में से हर किसी को अच्छा महसूस हुआ होगा। अगर आप इसी तरह अभ्यास ज़ारी रखेंगे अपने आत्मनिरीक्षण को महत्व देकर डायरी भरेंगे और अपनी कमियों को दूर करेंगे तो परमात्मा दिन प्रति दिन आपकी ज़्यादा मदद करेगा। आपकी डायरी का नमूना पन्ना नं. 557 पर भी मौजूद है।

जैसा मैंने आपको पहले भी कई बार कहा है कि हर महापुरूष की अपनी हिस्ट्री होती है और हर पापी का भविष्य तय होता है। हर एक के लिए उम्मीद है अपना दिल छोटा न करें। आपके सिर पर मदद करने वाली ताकत है खासकर जिन्हें नाम मिला है। आप अकेले नहीं हैं अपनी अंतर आत्मा की आवाज़ को सुनें। आप जब तक गुरु ताकत से अंदर नहीं मिलते तब तक बाहर अपने गुरु के संपर्क में रहें उनकी संगत करें। मुझे लगता है कि मैं जो कुछ आपसे कह रहा हूँ वह आप सबको स्वीकार्य होगा। मैं सिर्फ इन्सानी स्तर पर बोल रहा हूँ जैसे एक इन्सान दूसरे से कहता है।

हमें सादा जीवन और ऊँची सोच रखनी चाहिए। हमारे दिल में सबके लिए एक जैसा प्यार हो। वह इन्सान सबसे सुंदर है जिसके अंदर परमात्मा का प्रकाश दिप्तिमान होता हो। वह घर बहुत सुंदर लगता है जिसमें बिजली के बल्ब जल रहे हों अगर घर में बल्ब न लगे हों तो भव्य और शानदार घर भी अंधकारमय लगता है। आपको इन बातों को दिल पर लेना चाहिए इन्हें आचरण में लाना चाहिए तो परमात्मा भी आपकी मदद करेगा।

यहाँ–वहाँ सब जगह मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ हैं। सतगुरु का असली स्वरूप आपके साथ ही है। जैसा मैंने आपको बताया कि आप जब तक सतगुरु को अंदर प्रकट नहीं करते, अंदर उसके साथ रूबरू नहीं मिलते हमें तब तक इन्सानी जामें में कार्यरत सतगुरु के साथ संपर्क रखना उनकी संगत–सोहबत करना अंतरी मार्गदर्शन के लिए बहुत ज़रूरी है। मुझे लगता है कि यह सारी हिदायतों का सार है।

आपके लिए कम से कम दो घंटे भजन–अभ्यास के लिए देना ज़रूरी है अगर आप इससे ज़्यादा समय दे सकते हैं तो आपको सतगुरु की ज़्यादा खुशी प्राप्त होगी।

सन् 1912 में मैं एक मुसलमान प्राध्यापक को जानता था। आपको पता ही है कि जिनके विचार मिलते–जुलते हैं उनका आपस में प्यार होता है। वह हमेशा मुझसे मिलते थे। उन्होंने अपने घर के दरवाजे पर एक सूचना पट्ट लगाया हुआ था कि इजाज़त के बगैर अंदर आना मना है लेकिन मुझे किसी भी समय उनके घर जाने की इजाज़त थी। मैं जब कभी उनके घर जाता तो वह मुसलमान धर्म के रिवाज के अनुसार नमाज पढ़ रहे होते थे। मुसलमान धर्म में यह आम रिवाज है कि नमाज पढ़ते समय पाँच

बार नीचे बैठकर सिर झुकाते हैं और खड़े हो जाते हैं। मैं जब उनके घर जाता तो यह देखता कि वह कई घंटे नमाज पढ़ते।

एक बार मैंने उनसे पूछा, ''प्रिय मित्र, नमाज में तो सिर्फ पाँच बार बैठना और उठना होता है लेकिन आप तो कई घंटे नमाज पढ़ते रहते हैं।'' उन्होंने कहा, ''पाँच उठक-बैठक तो हर मुसलान के लिए अनिवार्य है। मैं इसलिए ज़्यादा नमाज पढ़ता हूँ कि मैं परमात्मा की खुशी और दया प्राप्त कर सकूं।''

भजन-अभ्यास में दो घंटे बैठना आप सबके लिए ज़रूरी है अगर आप इससे भी ज़्यादा अभ्यास करेंगे तो आप गुरु रूप परमात्मा की खुशी प्राप्त करेंगे। यह आपका अपना काम है जो आपको करना ही है अगर आप इससे कम अभ्यास करते हैं तो यकीनन यह अच्छा नहीं। आप समझें कि इन्सान चोर है। चोर तो दिन-रात पैसे चुराने की कोशिश में रहता है। आप रुहानियत में प्रगति करना चाहते हैं तो आपको जो समय मिलता है आप उस मौके का फायदा उठाएं और भजन-अभ्यास में बैठ जाएं।

जहाँ चाह है वहाँ राह है, लेकिन अफसोस! हमारी चाह ही नहीं है। इन्सानी जामा सारी योनियों में ऊँचा है। इन्सानी जामें में हमें परमात्मा को प्राप्त करने का सुनहरी मौका मिला है। अगर हम खुद यह काम नहीं करते तो कोई दूसरा हमारे लिए यह काम नहीं करेगा और हमें फिर इस दुनिया में दोबारा आना पड़ेगा।

मैं कल रात सतसंग में मौत के बारे में अलग-अलग तरीकों से बता रहा था। मैंने जो पाँच सतसंग दिए हैं उनमें मुख्य उदेश्य यही था कि इन्सानी जामा हमें एक सुनहरी मौका मिला है इसका फायदा उठाएं। भजन-अभ्यास क्या है? रुहानियत क्या है? गुरु कौन है? परमात्मा कहाँ है? हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते है? ये सब बातें उन सतसंगों में शुरू से आखिर तक होती रही। हम

मौत के बारे में बात कर रहे थे। आप लोग मौत का नाम सुनना भी पसंद नहीं करते लेकिन हम सबको इस अवस्था से गुजरना पड़ता है। मौत कोई हौवा नहीं इसमें हमें अपना शरीर त्यागना पड़ता है। आमतौर पर इस विषय पर कोई बात नहीं करता।

मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं। मैं सिर्फ यही कहूँगा कि वह ताकत आपके अंदर है, आपकी हर हरकत प्रवृत्ति और हर विचार को देख रही है। वह ताकत हर क्षण बिना मांगे मुनासिब मदद कर रही है। हमारे ऊपर बड़ी दया मेहर यह है कि इस संसार में हमारे जैसा कोई इन्सान ही हमारा मार्गदर्शन कर रहा है।

आप सब मेरे लिए प्रिय हैं क्योंकि आप सबको इस मार्ग पर लाया गया है । हम सब आपस में भाई-बहन है और हमारा सच्चा रिश्ता है। हमारा आपस में यह ऐसा रिश्ता है जो मौत के बाद भी नहीं टूटता। आप कितने खुशनसीब हैं अगर आप इस रिश्ते की कद्र करते हैं तो भजन-अभ्यास करें।

इस पूरी शिक्षा का थोड़े लफ़्ज़ों में सारांश है। आप इस पर अमल करेंगे तो आपकी मुझसे भी ज़्यादा प्रगति होगी। मैं निवेदन करता हूँ कि आप सब उस परमात्मा के प्यारे बनें लेकिन हमें अपने शब्दों में विचारों में कृति में निष्कपट और सच्चे बनना पड़ेगा।

अब मैं यहाँ से अगले कार्यक्रम स्थल पर जा रहा हूँ। जो प्रेमी बाहर से आए हैं वे अपने घर वापिस जाएं। जो प्रेमी अगले कार्यक्रम में शामिल होना चाहते हैं और अपना खर्च उठा सकते हैं, उन्हें अपनी आर्थिक स्थिति का पता है जिसके लिए मुझे कोई ऐतराज़ नहीं। शायद, उन लोगों को अपने रहने का इन्तजाम खुद करना पड़ेगा। वहाँ के प्रेमियों से जितना बन पड़ेगा वे इंतज़ाम करेंगे लेकिन आप उनके ऊपर पूरी तरह से निर्भर न रहें।

आप मेरे कहने का मुख्य मुद्दा समझ गए होंगे। भजन–अभ्यास नित्यनियम से करें। अपने अंदर किसी के लिए द्वेषभाव न रखें। हमेशा सच्चे बनें अपने विचारों को नेक–पाक बनाएं और अपने अंदर सबके लिए प्रेमभाव रखें।

आपका जन्म सिर्फ आपके लिए ही नहीं हुआ। आप इन्सान हैं, वही इन्सान है जो दूसरों के लिए जीता है सिर्फ अपने लिए नहीं जीता। परमात्मा सारी सृष्टि का रचयिता है और विश्वव्यापी है। आप अंदर उस परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए समय दें। आप जिस भी धर्म में रहें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मकसद तो परमात्मा को प्राप्त करने का ही है।

शादी का मकसद एक जीवनसाथी बनाकर एक–दूसरे की मदद से परमात्मा को जानना है। इससे आपको सदा के लिए सुख और शान्ति मिलेगी।

इन शब्दों के साथ इस कार्यक्रम को यहीं समाप्त करते हैं। हमें इस कार्यक्रम में बहुत अच्छा भजन–अभ्यास करने का मौका मिला। मैंने आपको जो बताया है आप उन मुद्दो पर पाँच–दस मिनट गौर से सोचें; इन्हें अपने दिल पर लें और इन पर अमल करें। आप इन बातों पर अमल करेंगे तो आपके चेहरों पर नूर आएगा। आपकी आँखें खुलेंगी और प्रकाशमान होंगी।

***

5

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

ग्रहणशील बनना सीखें

नित्यनियम से सतसंग में जाना बहुत फायदेमंद और मददगार होता है। इससे हमारा मन रूहानियत के मार्ग पर लगा रहता है। मनमुख और दुनियादारों की संगत को टालना एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। हमारी रूहानियत की शुरूआत में ये तत्त्व बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। जिस तरह पौधे को पानी, खाद और पोषण की ज़रूरत होती है उसी तरह ये तत्त्व रूहानियत के पौधे का पोषण करके पौधे को एक विशाल वृक्ष बनाते हैं; उस वृक्ष को हाथी भी नहीं हिला सकते।

हमने बाहर विषय–विकारों में फैले हुए ख्याल को अंदर की तरफ़ लाकर अपने मन को शान्त करना है। मन को शान्त करने का तरीका और उपाय भी आपको बताया गया है। आप सोचकर देखें, आपको परमात्मा की कितनी भारी दया प्राप्त हुई है? आप दुनिया में रहते हुए इसे और बढ़ा सकते हैं। बहादुर बनें, भागें नहीं भागना तो कायरों का काम है।

समझने वाली महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम खुद को अपने गुरु के आगे पूर्ण रूप से समर्पित करें। हम गुरु की ताकत, गुरु की शरण और गुरु की दया की छत्रछाया में इस भवसागर की लहरों को सही सलामत पार कर जाएंगे। परमपिता परमात्मा प्यार का सागर हैं। वह अपने मजबूत हाथों से आपको एक बच्चे की तरह अपनी गोद में उठाकर आपकी हिफाज़त करेगा; आपको इस जलती–सड़ती दुनिया से निकालकर सही–सलामत ले जाएगा।

हर एक से भूल होती है। हमें इन भूलों और गलतियों से उभरकर स्वच्छ निर्मल और नूरी आत्मा बनना है इसलिए डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) लिखना ज़रूरी है। डायरी आपके नैतिक जीवन की कमियों पर नज़र रखने में मदद करती है। नैतिक और नेक-पाक जीवन हमारी रूहानी प्रगति के लिए बहुत ज़रूरी है।

याद रखें! पिता हमेशा अपने बच्चे को गले लगाना चाहता है। अगर बच्चे के कपड़े गंदे और मैले हैं तो पिता बच्चे के कपड़े साफ करके उसे अपनी गोद में बिठाता है। पिता सदा अपने प्यारे बच्चों के साथ होता है, जिन्हें वह बहुत प्यार करता है। उन बच्चों के साथ पिता का प्यार एक माँ के प्यार से भी सौ गुना ज़्यादा होता है।

मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि आपने महसूस किया कि आपके गुरु आपके साथ चल रहे हैं और उन्होंने आपकी बहुत सी चिंताएं दूर की। आपके साथ किसी के अनुचित व्यवहार से आपको हुई उदासी को दूर किया और आपका उत्साह बढ़ाया। आप जब तक इस दुनिया में हैं, अपना काम करते रहें। आप महत्त्वाकांक्षा और पूरे दिल से काम करें इसी में खूबी है।

सारी सृष्टि सुंदर है। आप परमात्मा से प्यार करें वह सर्वव्यापी है। आपको उसकी बनाई हुई हर चीज़ से प्यार करना चाहिए लेकिन उनके मोह बंधन में नहीं फँसना चाहिए, जैसे कि आप किसी बगीचे में जाकर फूलों की सुंदरता और पौधों की हरियाली का रस लेते हैं लेकिन फूलों को नहीं तोड़ते, पौधों को नहीं उखाड़ते क्योंकि बगीचे का माली आपकी अच्छी खबर लेगा।

आप अपनी इच्छा और मंशा के अनुरूप फल की अपेक्षा नहीं रख सकते इसलिए आप अपनी तरफ़ से काम करते रहें और उसका फल अपने सिर पर खड़े गुरु के ऊपर छोड़ दें। जो भी फल

मिले उसे प्यार से स्वीकार करें वह हमेशा शिष्य के हित में होगा क्योंकि गुरु ताकत आपके सिर पर काम कर रही है; गुरु ताकत को पता है कि कौन सी चीज़ शिष्य के हित में है।

वैवाहिक जीवन रूहानियत में वर्जित नहीं। बशर्ते यह धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार हो। आप अपने दुनियावी सफ़र के लिए ऐसा जीवनसाथी ढूंढ़े जो अच्छी दुनियावी ज़िंदगी जीना चाहता हो और जिसकी सोच आपकी सोच से मिलती हो, यह आप दोनों के लिए मददगार होगा।

मेरी शुभकामनाएं हमेशा आपके साथ है। आप कहीं भी जाएं कहीं भी रहें, ऐसा काम करें जिससे आपको अंदरूनी प्रगति करने में मदद मिले। जो काम आपकी अंदरूनी प्रगति को रोके या धीमा करे वह काम आपके हित में नहीं होगा।

अगर आपको किसी काम के सिलसिले में हिन्दुस्तान आने का मौका मिले और आप मेरे पास आ सकें तो मुझे आपसे मिलकर खुशी होगी। गुरु से व्यक्तिगत मिलने और उस वातावरण में रहने को कम न समझें। गुरु कभी भी दूरी से सीमित नहीं होते चाहे आप उनसे हज़ारों मील दूर बैठे हों, वे हमेशा आपके साथ होते हैं।

आप गुरु की दया को ग्रहण करना सीखें। आप झाड़ियों में, रास्ते में, किसी से बातें करते हुए, बगीचे में बैठे हुए, हर रोज़ दफ्तर जाते हुए, तालाब में कमल के फूलों को देखते हुए या रात को चाँद की रोशनी में घर लौटते हुए हर समय गुरु की कृपालु मौजूदगी महसूस करें।

गुरु हमेशा शिष्य के साथ होते हैं और शिष्य को दुनिया के अंत तक नहीं छोड़ते, जैसे पिता अपने बच्चे को कभी नहीं छोड़ता।

***

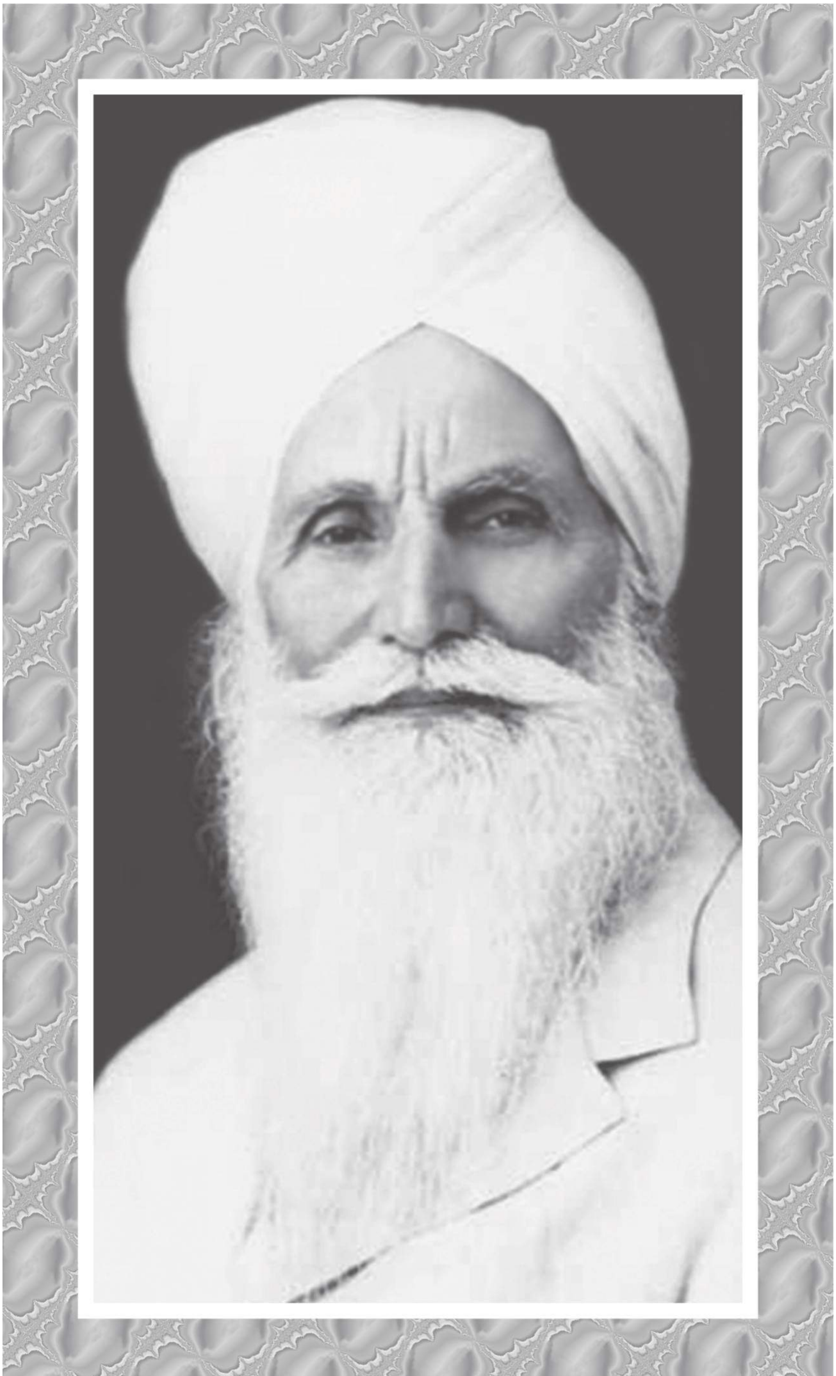

6

बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा एक श्रद्धालु सतसंगन को लिखा खत

अपने मन पर विजय प्राप्त करें

1 अगस्त 1912

मेरी प्यारी बेटी,

तुम्हारा प्यार और श्रद्धा भरा खत मिला। नए मकान में स्थानान्तरण करने की वजह से तुम्हारे भजन–अभ्यास पर असर पड़ा। इसके बावजूद तुम अंदर अच्छी प्रगति कर रही हो यह जानकर बड़ी खुशी हुई। तुम्हें परमपिता की दया से आरामदायक घर मिल गया है और तुम्हारी दुनियावी चिन्ता खत्म हो गई है। अब तुम्हें परमपिता की भक्ति में जी–जान से जुड़ जाना चाहिए। अपने कारोबार में से जितना समय आसानी से निकाल सको उतना समय भजन–अभ्यास के लिए देना चाहिए लेकिन ख्याल रहे कि तुम्हारे कारोबार पर इसका असर न पड़े।

इस दुनिया के सारे ऐशो–आराम, स्वयं दुनिया, सूरज, चाँद, सितारे जो कुछ भी हम देख रहे हैं ये सब नाशवान हैं। सिर्फ आत्मा अमर है। यह छोटी सी ज़िंदगी इस तरीके से जिओ जिससे परमात्मा खुश हो जाए। तुम्हारा इस दुनिया में आवागमन खत्म हो जाए और तुम्हें तुम्हारा अविनाशी घर सचखंड मिल जाए जहाँ सिर्फ निर्मल आनन्द है।

भजन–अभ्यास में बैठने के बारे में तुमने लिखा है कि तुम एक ही आसन में ज़्यादा देर नहीं बैठ सकती तो तकिए का इस्तेमाल

करने में कोई हर्ज़ नहीं। तुम सस्मास से कहकर अपने लिए एक बैरागन बनवा लो। बैरागन एक तरह का लकड़ी का सीधा टुकड़ा होता है जिसमे एक और छोटा लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है तो 'T' आकार की बैरागन बन जाती है। इसकी लंबाई में डेढ़ फुट और चौड़ाई में दो इंच का लकड़ी का टुकड़ा इस्तेमाल होता है और उसके ऊपर की चोटी पर बीचो-बीच छोटी लकड़ी का टुकड़ा जोड़ा जाता है, जिससे आपकी दोनों कुहनियों को भजन-अभ्यास करते समय आधार मिलता है।

आम जीवन में आचरण के बारे में कुछ शब्द:

पहली बात :- हम दिन में ज़्यादातर अपना समय दुनियावी बातों में बिताते हैं और ध्यान में कुछ ही घंटे बिताते हैं। हमारी आत्मा उस पवित्र शब्द की आवाज़ का रस ठीक से नहीं ले सकती। हमारा मन बार-बार बाहर जाता है और दुनियावी चीज़ों के बारे में सोचता रहता है। इसलिए सारे दिन के कामकाज पर तीक्ष्ण नज़र रखो और यह ध्यान रखो कि मन तुम्हें दुनियावी चीज़ों में न बहा ले जाए।

दुनियावी इच्छाओं को रोकने की कोशिश करो और बाहर की तरफ़ ले जाने वाली इन्द्रियों पर नियंत्रण रखो। हमेशा अपना ध्यान केंद्रित करो और अपने मन को फालतू कल्पनाओं में न फँसने दो। यह तभी संभव होगा जब तुम अपने मन को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़े रखोगी। हर समय चलते-फिरते, खाते-पीते या कोई भी ऐसा काम करते समय जिसमें खास ध्यान देने की ज़रूरत नहीं होती उस समय पवित्र नाम जपने में अपना ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करो। हमेशा सतर्क रहो अपने ध्यान को इधर-उधर न भटकने दो मन पर काबू पाने का यही एक तरीका है।

दूसरी बात :– किसी इन्सान या किसी चीज़ के ज़रिए तुम्हारे लिए जो भी अच्छा या बुरा होता है वह हमारे प्यारे परमपिता की तरफ़ से होता है। सारे इन्सान और सारी चीज़ें उस परमात्मा के कार्य के साधन हैं। अगर तुम्हारे साथ कोई बुरी घटना घटती है तुम यह सोचो कि यह परमात्मा की सबसे बड़ी दया है।

हमें पिछले कर्मों का भुगतान तो करना ही पड़ता है, अभी करें या बाद में। ऐसे कर्मों का भुगतान जिनका भविष्य में सामना होने वाला हो हमारे सतगुरु वे दुख और कष्ट शीघ्रता से भुगतवाना चाहते हैं और जल्दी हमारे कर्मों का बोझ हल्का करना चाहते हैं। यह तो कर्मों का कर्ज़ है। सतगुरु इस कर्ज़ को जल्दी चुकाकर हमारे दुख और कष्ट की मात्रा को कम करते हैं। अगर हमने एक टन जितना भुगतान करना हो तो अब हमें एक पौन्ड जितना भुगतान करके छुटकारा मिल जाता है। अगर तुम्हें सख्त कर्मों का भुगतान करना पड़े तो दिल छोटा न करना यह तुम्हारे अच्छे के लिए ही होता है।

अगर कोई आदमी आपकी गलती न होने पर भी आपके साथ बुरा सुलूक करता है तो आप उस बुरे सुलूक के पीछे सतगुरु का हाथ समझो। गुरु देखना चाहते हैं कि आपका अहंकार खत्म हो गया है या नहीं? वे देखना चाहते हैं कि आपके अंदर नम्रता और प्यार की जड़ें कितनी गहरी और मजबूत हैं।

सोचकर देखो! अगर इन्सान अपना लड़का खो देता है तो आपके दुनियावी रिश्तों का प्यार कम हुआ या नहीं? ऐसा परखने के लिए होता है। परमपिता हमें उन भारी जंजीरों से छुड़वाना चाहते हैं जो जंजीरें हमें दुनिया में जकड़कर रखती हैं। दुनियावी रिश्तेदारों से ज़्यादा प्यार होने का मतलब है सतगुरु से कम प्यार।

वे सारी घटनाएं जो दुर्भाग्यपूर्ण दिखाई देती हैं वे असल में वैसी नहीं होती। वे हमें शुद्ध करने के लिए हमारे कर्मों का बोझ हल्का करने के लिए होती हैं, हमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाती हैं और हमें बेहतर इन्सान बनाती हैं। हमेशा ईश्वर की इच्छा के आधीन रहें, उसकी रज़ा में सन्तोष मानें। परमपिता जो करते हैं अच्छे के लिए ही करते हैं।

इस दुनिया में जो लोग अंदरूनी तरक्की करने में जुड़े हैं उन्हें सदा दो ताकतवर शत्रु मन और विषय के आक्रमण का सामना करना पड़ता है। ये हमारे मार्ग में अनेक रुकावटें पैदा करने की कोशिश करते हैं। अगर कोई प्रतिकूल या बुरी घटना घटती है तो हमें निराश नहीं होना चाहिए बल्कि हमें दोगुने प्रेम से उभरना चाहिए अन्त में जीत हमारी होगी।

हमारे परमपिता प्यार का सागर हैं और हम उस प्यार के सागर की बूँदे हैं। इस विशाल संसार की यंत्रणा निरंतर प्यार के तत्त्व पर आधारित है। इसलिए तुम प्यार के तत्त्व के अनुरूप होने का प्रयत्न करो। तुम्हारे अंदर सतगुरु का प्यार जितना गहरा होगा उतना ही दुनिया के साथ प्यार कम और फीका रहेगा। सतगुरु का प्यार दुनियावी प्यार की जगह ले लेगा फिर आत्मा शरीर से निकलने लगेगी। एक-एक करके अंदरूनी परदे खुलने लगेंगे। संसार का गूढ़ रहस्य खुल जाएगा और तुम अपने आपको प्यारे परमपिता की गोद में पाओगी उनसे एकरूप हो जाओगी।

परमपिता ने अपनी दया करके तुम्हें यह पवित्र दात दी है। इस दात की तुलना दुनिया के किसी भी खज़ाने के साथ नहीं हो सकती। अगर तुम उसे नहीं करोगी तो तुम्हारी अंदरूनी प्रगति नहीं होगी। भूखे आदमी की भूख सिर्फ सामने पड़े विभिन्न पदार्थों

को गिनने से नहीं मिटती। तुमने जो शिक्षा प्राप्त की है वह शिक्षा अनमोल है। इसका फायदा तब तक नहीं होगा जब तक तुम इसके अनुसार नहीं चलोगी, इस पर अमल नहीं करोगी। रोज़ाना अपने दुनियावी कामकाज़ से जितना ज़्यादा समय भजन–अभ्यास के लिए निकाल सकती हो अवश्य निकालो।

सारांश में तुम्हें निम्नलिखित बातों का ख्याल रखना चाहिए:

1. मन के ऊपर काबू
2. विषय विकारों से परहेज़
3. परमात्मा की रज़ा को मानना
4. सतगुरु से प्यार
5. नित्यनियम से भजन–अभ्यास

तुम्हें ऐसे खत अपने मार्गदर्शन के लिए संभालकर रखने चाहिए और इन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

तुम्हारा प्यारा

सावन सिंह

***

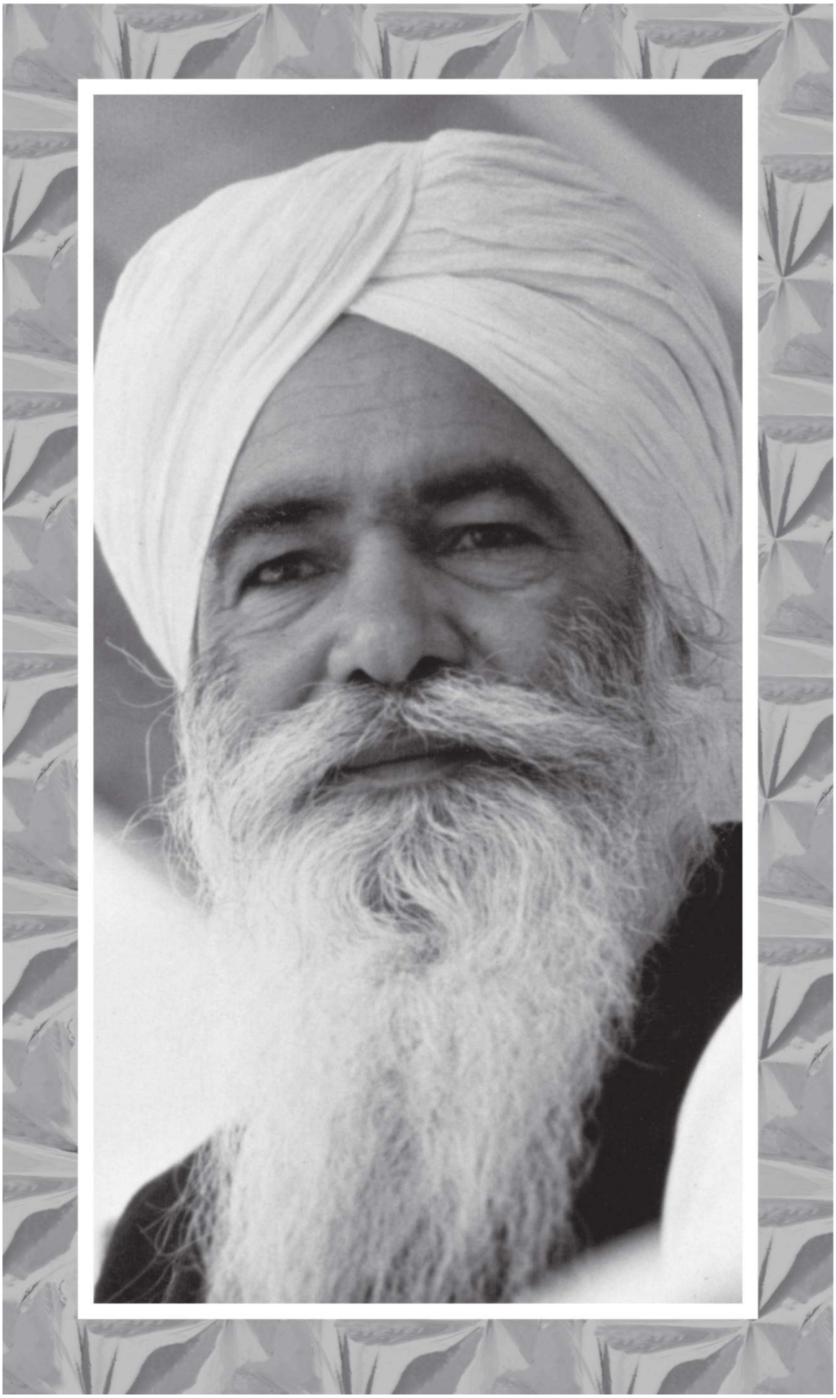

7

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का भाग

पवित्रता का पालन

सेनबोर्नटन, अमेरिका – 13 जुलाई 1980

जिस तरह ज़मीन के अंदर फसल बीज़ने से पहले हम कृषि विशेषज्ञों से उस ज़मीन की मिट्टी टेस्ट करवाते हैं कि हमें कौन सी फसल बीज़नी चाहिए? फिर हम ज़मीन में उसी किस्म का बीज़ डालते हैं; अगर हम ज़मीन अच्छी तरह तैयार नहीं करेंगे तो हम जो भी फसल बीज़ेंगे वह पककर घर नहीं आएगी। इसी तरह सन्तों ने हमारे अंदर नाम का बीज़ डाल दिया है; अगर हमें शब्द–नाम को उगाना है तो ज़मीन की तैयारी बहुत ज़रूरी है।

हम रोज़ सतसंग कर रहे हैं, अभ्यास कर रहे हैं, यह एक तरह से ज़मीन की तैयारी कर रहे हैं। इसी तरह ज़मीन की तैयारी करके उसमें बीज़ डालकर हमारी ड्यूटी खत्म नहीं हो जाती। उसके बाद हमें कीड़ों–मकोड़ों का भी ध्यान रखना पड़ता है जो उस बीज़ी हुई खेती और हमारी मेहनत को फिजूल में खराब कर देते हैं।

सन्त हमें बताते हैं कि हमारा शरीर धरती है और बीज़ नाम है। इस खेती को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार खा रहे हैं। इन पाँचो में काम एक बड़ी ज़बरदस्त ताकत है जो बड़ी जल्दी खेती को खा जाता है।

डाक्टर हमें बताते हैं कि हम सौ कतरा खुराक खाते हैं तब एक कतरा खून बनता है। सौ कतरे खून से एक कतरा वीर्य का बनता है। सौ कतरा वीर्य को मिलाकर एक कतरा महा वीर्य का

बनता है, जो हमारे दिमाग में होता है; उसे ओजस भी कहते हैं। जितना वीर्य शरीर के अंदर बनता नहीं उससे ज़्यादा हम कामवश होकर निकाल रहे हैं।

अगर हम डाक्टर से दवाई लाकर दवाई नहीं खाएंगे और डाक्टर ने जो परहेज बताए हैं वे नहीं करेंगे तो हम कैसे ठीक हो सकते हैं? यह तो इस तरह है जैसे दवाई अलमारी में और गालियाँ डॉक्टर को। हमें डाक्टर के कहे मुताबिक दवाई खानी चाहिए और परहेज रखना चाहिए। सन्तों की शिक्षा सिर्फ औरतों के लिए नहीं या सिर्फ मर्दों के लिए नहीं बल्कि सबके लिए एक समान होती है। इस अपराध में दोनों उतने ही दोषी होते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

नार पुरख सब ही सुनों सतगुरु जी की सीख।
बिख फल फले अनेक मत कोई देखे चाख।।

महात्मा औलाद प्राप्त करने के लिए औरत–मर्द के संयोग को नाजायज़ नहीं कहते। महात्मा कहते हैं:

एक ही नारी सदा जति।

महात्मा कहते हैं कि जब औलाद पैदा करनी हो तब मेथिली (मासिक) धर्म के चार दिन बाद मर्द पवित्र ख्याल लेकर औरत के पास जाए। उस समय ऐसे पवित्र ख्याल हों कि हमारे घर में नेक औलाद पैदा हो तो एक बार जाने से ही औलाद पैदा हो जाएगी। उसके बाद मर्द को तीन–चार साल के लिए छुट्टी कर देनी चाहिए।

अगर बच्चा पेट में है तब औरत–मर्द दुनियादारी करते हैं तो औरत का दूध खारा हो जाता है। अगर गर्भस्थ शिशु लड़की है तो वह बदचलन होगी अगर लड़का है तो वह बदमाश होगा। जिस तरह गाय–भैंस जब नया दूध देती है तो वह दूध खारा होता है। पशु–

पक्षी भी अनुशासन में रहते हैं। जब मादा गर्भवती हो जाए तो पशु हो या पक्षी मादा के पास नहीं जाता लेकिन इन्सानों की हालत आप देख ही रहे हैं कि वे क्या कर रहे हैं? कबीर साहब कहते हैं:

कामी कुत्ता तीस दिन अंतर होए उदास।
कामी नर कुत्ता सदा छेरत बारा मास।।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हमें इस बुरी आदत से बचना चाहिए। कामी आदमी किसी जगह भी शोभा नहीं पाता। मैं जब कामी इन्सानों की कहानियाँ सुनता हूँ या उनके माथे की तरफ़ देखता हूँ तब लगता है कि इन बेचारों ने किस तरह अपना जीवन बर्बाद किया होता है? एक तरफ़ हम परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं दूसरी तरफ़ विषय-विकारों का रस नहीं छोड़ना चाहते। हमारी विचार करने की शक्ति और आत्मबल वीर्य गिराने से कमज़ोर हो जाता है। हम चौकड़ी मारकर बिना हिले-डुले एक घंटा भी नहीं बैठ सकते। कभी आगे झुकते हैं कभी पीछे झुकते हैं। हमारा ध्यान बिल्कुल नहीं टिक पाता, कहाँ-कहाँ घूमता रहता है।

अगर हमने पच्चीस साल की उम्र तक ब्रह्मचर्य का पालन किया होता और उसके बाद हमने ज़िंदगी में ज़्यादा से ज़्यादा दो या तीन बच्चे पैदा किए होते तो अच्छा होता। आजकल माता-पिता की बेअफलाक में फर्क होता है। औलाद के जन्म लेने के बाद डाक्टरों की फीस भरते हैं।

मेरे पास एक औरत-मर्द का जोड़ा आया उनकी नौ बेटियां थीं। मर्द ने मुझसे कहा, ''मैं इनकी देखभाल नहीं कर सकता अब मैं तौबा करता हूँ।'' मैंने उससे कहा, ''तू अपनी घरवाली से तो पूछ?'' उसकी घरवाली ने कहा, ''लड़का तो ज़रूर होना चाहिए।'' आप खुद ही सोचकर देखें मैं उनसे क्या कहता?

पिछले ज़माने में ऋषि–मुनी अभ्यास करते थे, अपने आप ही संतान संयम होता था। वे केवल औलाद के लिए ही औरत के पास जाते थे। आजकल संतान संयम करवाकर निडर बन जाते हैं कि अब औलाद तो पैदा नहीं होगी जितना मर्ज़ी भोग भोग लें। अपने शरीर का ख्याल नहीं करते कि यह रोज़–रोज़ खत्म हो रहा है। आप ब्रह्मचर्य का पालन करके देखें इसके फायदे आपको अपने आप ही पता चल जाएंगे।

आजकल आप अखबारों में इश्तिहार देखें तो पता चलता है कि ज़्यादातर ताकत वाली दवाईयां ही बिकती हैं। पहले लोग अपना जीवन खराब कर लेते हैं बाद में उस खोई हुई ताकत को उन दवाईयों के जरिए पूरी करना चाहते हैं।

जो उस वीर्य (बिंद) को संभालकर रखता है उसकी आँखों में रोशनी रहती है। वह रोशनी लाल हीरे की तरह इन्सान की आँखों में चमकती है। उसी रोशनी को रखने के लिए योगी रातों को जागे और अपने घर को छोड़कर उजाड़ों में चले गए कि कहीं हमारा बिंद गिर न जाए।

बिंद न रखने से, विषय–विकार भोगने से हम अपना तन खो बैठते हैं। बिंद रखने से अपने आप अंदर नाम और ज्योति प्रकट हो जाते हैं। चंचल हिरन की तरह भटकने वाला मन अपने आप ही स्थिर हो जाता है। बिंद रखने से ज्योति माथे के अंदर प्रकट हो जाती है और आपको अविनाशी परमात्मा मिल जाता है।

मुझे अच्छी तरह याद है एक दिन एक आदमी ने हुज़ूर कृपाल के आगे विनती की,''मुझे नामदान के समय अनुभव नहीं हुआ।'' हुज़ूर ने कहा बैठ। जब हुज़ूर ने उस आदमी के माथे के ऊपर हाथ लगाया तो वह आदमी रो पड़ा और कहने लगा, ''आपका कोई

कसूर नहीं मैं काम के जरिए अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर बैठा हूँ। मैंने अपनी ज़्योत बुझा ली है।'' हुज़ूर ने उसकी कहानी सुनकर बड़ी हमदर्दी के साथ कहा, ''तू आगे के लिए सब्र कर।'' गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं:

पर नारी की सेज भूल सुपने नहीं जाई हो।

अगर आपके अंदर बिंद रखी है और आप जितेन्द्रिय (इन्द्रियों पर जीत प्राप्त की है) हैं तो आप पाँच घंटे, सात घंटे, दस घंटे लगातार एक चौकड़ी में बिना हिले-डुले बैठ सकते हैं। आपको सिर्फ शौचालय के लिए ही उठना पड़ेगा, थकावट आने का सवाल ही पैदा नहीं होता, आपका ख्याल बाहर दुनिया में नहीं जाएगा। आपका दिल हमेशा गुलाब की तरह खिला रहेगा। बिंद रखने से आप अपने आपको पहचानेंगे। आपके अंदर नाम का हीरा प्रकट हो जाएगा।

महात्मा हमें समझाते हैं कि शादी का मतलब यह नहीं कि हम भोगों के कीड़े बन जाएं और दिन-रात विषय भोगों में ही लगे रहें। अगर आप बिंद रखेंगे तो जितेन्द्रिय बन जाएंगे आपको पारब्रह्म में पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं होगी। आप जन्म-मरण में दोबारा माता के गर्भ में नहीं आएंगे। अभी हमारा ख्याल नहीं टिकता। बार-बार हम अपने ख्याल को तीसरे तिल पर लेकर आते हैं, वह गिर जाता है; फिर लेकर आते हैं फिर गिर जाता है। कभी इधर दौड़ता है कभी उधर दौड़ता है क्योंकि हमारे अंदर आत्मबल और विचार करने की शक्ति कमज़ोर है।

जो इस बात को नहीं मानता वह दो चार महीने ब्रह्मचर्य रखकर देख सकता है कि इसका क्या फायदा है? आप ऐसा करके देखें! आपका ख्याल टिक जाएगा। अगर हम ब्रह्मचारी जीवन का सख्ती से पालन करते हैं फिर हमें अपने आप ही सन्तमत का पता चल

जाएगा कि किस तरह आगे रास्ता खुलता है और किस तरह गुरु हमारी मदद करते हैं? हमारे दिल में कोई सवाल नहीं रहेगा। आपके अंदर ज़्योत अपने आप ही प्रकट हो जाएगी।

बिंद रखने से जितेन्द्रिय बनने से हम दुनिया की मान–बड़ाई में नहीं फँसते। हमारे अंदर चौबीस घंटे परमात्मा का ख्याल लगा रहता है, परमात्मा हमारी रक्षा करता है। हमारे अंदर शब्द धुन अपने आप ही प्रकट हो जाती है।

आमतौर पर हम कहते हैं कि जब हमने नामदान लिया था तब हमें शब्द–धुन सुनाई देती थी। अब सुनाई नहीं देती, पता नहीं कहाँ गई? जब प्यार से उनसे इसका कारण पूछा जाता है तो वे खुद ही तौबा करते हुए बता देते हैं कि ओह! हम तो अपनी जिन्दगी बर्बाद कर बैठे हैं। नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ़ है और काम की गिरावट नीचे की तरफ़ है। जहाँ काम है वहाँ नाम प्रकट नहीं हो सकता, जहाँ नाम प्रकट होता है वहाँ काम ठहर नहीं सकता। कबीर साहब कहते हैं, ''जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं और जहाँ दिन है वहाँ रात नहीं। इसी तरह जहाँ काम है वहाँ नाम नहीं और जहाँ नाम है वहाँ काम नहीं।''

अगर हम बिंद रखते हैं तो हमें योगियों और देवताओं की युक्ति का ज्ञान हो जाता है कि उन्होंने किस तरह इस युक्ति का इस्तेमाल किया और इससे फायदा उठाया। अगर हम बिंद रखते हैं, हमारा जीवन ब्रह्मचारी है तो हमारे दिल में कमाल की क्षमा आ जाती है; हम दूसरों को माफ कर सकते हैं क्योंकि हमारे अंदर नाम प्रकट हो जाता है। मैंने देखा है अगर किसी से गलती हो जाती है तो वह कहता है,''भाई, मुझे माफ कर दे।'' लेकिन दूसरा आदमी उसे माफ नहीं करता क्योंकि उसके पास माफी होती ही नहीं।

अगर हम ब्रह्मचारी जीवन का पालन करते हैं बिंद रखते हैं तो हमें अपनी काया का ज्ञान हो जाता है कि इसके अंदर बिंद रत्न को रखना कितना ज़रूरी था? फिर बिंद रत्न को संभालकर रखते हैं और इस बिंद रत्न के व्यापारी हो जाते हैं। जिस तरह हीरे-रत्नों का व्यापारी कोयले की दुकान पर जाकर खड़ा नहीं होता, वह हमेशा हीरे-रत्नों का ही ग्राहक होता है लेकिन जिसने बिंद रखा हो ऐसा कोई विरला ही होता है।

श्रृंगी ऋषि कभी शहर में नहीं आया था। वह जंगल में रहता था कि कहीं मेरा जीवन गन्दा न हो जाए। उसने जत (संयम) रखने के लिए अन्न-पानी भी छोड़ा हुआ था। वह जिस पेड़ के नीचे बैठकर भक्ति कर रहा था, दिन में एक बार उसी पेड़ को ज़ुबान लगाकर चाट लेता था।

राजा दशरथ के घर कोई औलाद नहीं हुई तो उसने ज्योतिषियों से उपाय पूछा? ज्योतिषियों ने राजा दशरथ को बताया, ''अगर श्रृंगी ऋषि आकर यज्ञ करे तो तुम्हारे घर औलाद हो सकती है।'' कुछ वेश्याओं ने राजा से कहा कि वे ऋषि को यहाँ लेकर आ सकती हैं। राजा ने वेश्याओं से कहा, ''अगर ऋषि को यहाँ ले आओ तो मैं तुम्हे मुँह माँगा धन दूंगा।''

वेश्याएं श्रृंगी ऋषि की तरह भगवे कपड़े पहनकर जंगल में चली गईं और उन्होंने देखा कि यह सारे दिन में क्या खाता है? श्रृंगी ऋषि दिन में एक बार पेड़ को चाटता था। वेश्याओं ने उस पेड़ पर शहद लगाना शुरू कर दिया। ऋषि दिन में दो बार पेड़ को चाटने लगा फिर उन्होंने पेड़ पर हलवा और कुछ ताकत देने वाली चीज़ें लगानी शुरू कर दी। यह सब खाकर जब ऋषि ताकतवर हुआ तो उसने देखा औरतें वहीं पर थीं। उसने अंदर अपने गुरु से

पूछा, ''मेरे सिर पर सींग हैं लेकिन इनकी छाती पर सींग हैं।'' गुरु ने कहा, ''जिनकी छाती पर सींग हैं उनके साथ निवास नहीं करना।'' श्रृंगी ऋषि को वे औरतें भा गई थीं। उसने सोचा गुरु तो यूं ही कहते हैं।

श्रृंगी ऋषि ने हृष्ट पुष्ट होकर उन औरतों के साथ दुनियादारी की कई बच्चे पैदा किए। जब कई बच्चे पैदा हो गए तो उन औरतों ने कहा, ''अब हमारा यहाँ गुज़ारा नहीं होगा, चलो हम शहर में चलते हैं।'' जिस तरह अमेरिकन लोग अपने बच्चों को उठाते हैं उसी तरह श्रृंगी ऋषि ने कुछ बच्चे अपनी पीठ के ऊपर बिठाए कुछ बच्चों को हाथों में पकड़ा कुछ बच्चों को आगे लटकाया और शहर की तरफ़ चल पड़ा।

शहर में बहुत लोग इकट्ठे हुए थे कि श्रृंगी ऋषि आने वाले हैं हम उनका स्वागत करें। शहर के लोगों ने जब श्रृंगी ऋषि की गोद में बहुत सारे बच्चे देखे तो वे लोग कहने लगे, ''ओह! हम तो समझते थे कि यह महात्मा है लेकिन यह तो बच्चों का बोझ उठाकर घूम रहा है। यह हम गृहस्थियों से भी गया गुजरा है।'' यह देखकर श्रृंगी ऋषि को होश आया कि मैं तो गिर गया। वह वापिस जंगल में भाग गया।

ऐसा नहीं कि महात्मा गिरने के बाद संभले नहीं थे लेकिन मन ने उन्हें भी धोखा दे दिया। बिंद का सार सिर्फ विरले ही जानते हैं। इस रत्न और ज़्योति को विरले ही पहचानते हैं। जितना आज बिंद को रखना कठिन समझते हैं अगर हमने इसे बचपन से रखा होता तो हमें बिंद गिराने से ज़्यादा बिंद रखना आसान लगता।

जिसने बिंद खो दी उसके अंदर सारा दिन काम आग मचाता है क्योंकि काम भोगकर शान्ति नहीं आती। आप जितना भोग

भोगेंगे उतनी ही काम की अग्नि ज़्यादा भड़केगी। आग के अंदर जितनी ज़्यादा लकड़ियाँ डालेंगे उतनी ही ज़्यादा लपटें निकलेंगी। जिसने बिंद की कद्र नहीं की उसे बार-बार जन्म लेना पड़ता है। जो पराई औरतों के पीछे घूमता है वह अंत में बैठकर रोएगा कि मैंने अपना कीमती समय क्यों बर्बाद किया।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर सतसंग में कहा करते थे, ''जो औरतें पराए मर्दों के साथ भोग विलास करती हैं या जो मर्द पराई औरतों के साथ भोग विलास करते हैं उन्हें यमदूत तपते हुए खंभों के साथ चिपकाते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

नार पराई आपनी भोगे नर्के जाए। आग आग सब एक है हाथ दिए जल जाए।

मैंने हमदर्दी के तौर पर आपको यह बताया है। अब आपका फ़र्ज बनता है कि आप अपनी जिंदगी को ऊँचा और सुच्चा बनाएं। मैंने एक नहीं हज़ार नहीं बल्कि कई हज़ारों आदमियों का जीवन देखा है। जब उन्हें ऐसी बात बताई जाती है वे परहेज कर लेते हैं तो अपनी ज़िंदगी बना लेते हैं फिर आकर जय-जयकार करते हैं कि बाबा जी, हम अब तक भूले भटके रहे। कोई कहता है कि मैंने ज़िंदगी के बीस साल गँवा दिए कोई कहता है मैंने पचास साल गँवा दिए तो कोई कहता है मैंने साठ साल गँवा दिए।

मेरा अपना जीवन तज़ुर्बों से गुजरा है। मैंने आपको अपने जीवन के बारे में ही बताया है। आप भी बिंद रखकर देख लें। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ, आप पाँच-छह महीने ही बिंद रखकर देखें अगर आपको फायदा हो तो आगे बढ़ा लें।

***

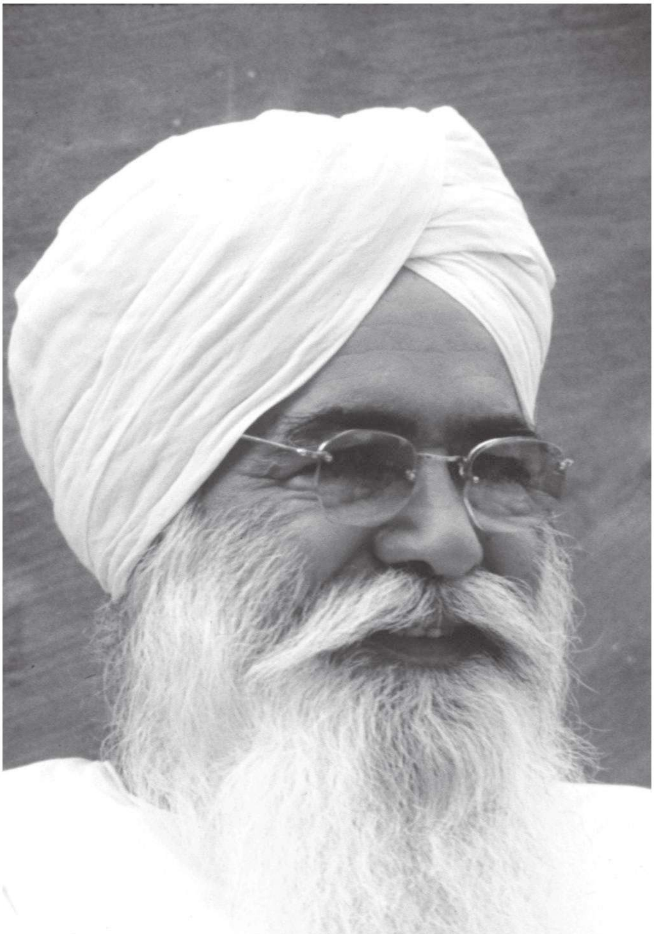

8

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का भाग

हर साँस के साथ सिमरन करें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 9 जुलाई 1995

हम सबको सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है। महात्मा सिमरन किसे कहते हैं यह सोचने की बात है। हमारा मन दिन–रात अंदर बैठकर अच्छी कल्पना भी करता है और बुरी कल्पना भी करता है, यह सारा दिन टिकता नहीं। जिस तरह जंगल में आग लग जाती है उसे आम लोग भूतों की अग्नि भी कहते हैं। यह आग कभी जलती है तो कभी बुझती है।

बेशक हवा चल रही हो या न चल रही हो दीपक की ज्योति कभी नहीं टिकती। मंदिर का दरवाजा बंद भी हो और हवा बिल्कुल न चल रही हो फिर भी यह ज्योति थोड़ी बहुत हरकत करती ही रहती है। कल्पना करने की शक्ति को सिमरन करना कहते हैं। हमारा मन भी उस ज्योति की तरह कल्पना करता ही रहता है। यह मन न सोते हुए टिकता है न जागते हुए टिकता है।

सन्तों को हमारी इस कमज़ोरी का पता होता है कि जीव किस बीमारी के शिकार हैं और इसका क्या ईलाज है? परमात्मा ने सन्तों को अंदर से ही इस बात का ज्ञान दिया होता है लेकिन ये दुनिया में आकर मर्यादा का पालन करते हैं, पूर्ण गुरु के चरणों में श्रद्धा पूर्वक बैठते हैं और उन्हें गुरु जो हुक्म देते हैं वे हमें डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए उसका पालन करते हैं।

सन्त कहते हैं कि सिमरन करना आपके लिए क्या मुश्किल है? यह आदत तो आपको पड़ी हुई है। सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। सिमरन धुनात्मक नाम के साथ जुड़ने का एक जरिया है। आप सिमरन किसी भी लफ़्ज़ का कर लें, मसला तो आत्मा को नौ द्वारों से निकालकर आँखों के पीछे लाने का है। हम जब तक एकाग्रचित होकर सिमरन नहीं करते हमारी आत्मा नौ द्वारों से नहीं निकलेगी, तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं होगी तो किस तरह शब्द को पकड़ेगी? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

साँस साँस सिमरो गोबिंद मन अन्तर की उतरै चिंत।

आप कहते हैं कि जब साँस ऊपर जाता है, नीचे आता है आप साँस–साँस के साथ नाम का सिमरन करें। हम दिन–रात चिंता का सिमरन करने में लगे हुए हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''चिंता के बिना कोई महल कोई शरीर सूना नहीं।'' चाहे परमात्मा ने उन्हें सारी दुनिया का सोना–चांदी दिया हो, नेक औलाद दी हो, नेक पत्नी दी हो वे फिर भी संतुष्ट नहीं होते। चोरों का डर लगा रहता है। पत्नी और बच्चों का डर लगा रहता है कि कहीं ये बगावत न कर दें या मेरे कहेकार न रहें। आप देख लें सारे बूढ़ों की यही हालत है।

सन्त कहते हैं कि चिंता से बचने के लिए साँस–साँस गोबिंद सिमरें। आपके गुरु ने आपको नाम का सिमरन दिया है। जब साँस ऊपर जाता है तब भी उस नाम का सिमरन करें जब साँस नीचे आता है तब भी उसी नाम का सिमरन करें।

मैं आर्मी की एक मिसाल दिया करता हूँ कि जब मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो शब्द' का भेद मिला। मैं उन दिनों हे राम! हे गोबिंद! का जाप किया करता था। उस समय विल पावर इतनी ज़बरदस्त थी कि मेरे भुलाने पर भी नहीं भूलती थी। आर्मी में जब

शुरू–शुरू में मार्च करवाते हैं तब यह नियम होता है कि कदम–कदम चलने के साथ लेफ्ट–राइट, लेफ्ट–राइट बोलना पड़ता है ताकि आदत पड़ जाए। अफसर दाँईं–बाँईं तरफ़ मुड़ने के लिए भी सिखाते थे। मैं लेफ्ट राइट के बदले हे राम! हे गोबिंद! कहता था। यह मैं नहीं कहता था, यह स्ट्रौंग विल पावर कहलवाती थी।

एक बार हमारे कमाण्डर ने सुन लिया और उसने हॉल्ट का आदेश देकर सबको रोका। कमाण्डर ने सबसे कहा, ''भाईयो, आज मैं आपको एक और लेफ्ट–राइट सुनवाता हूँ।'' उसने मुझे सबके सामने क्विक मार्च करने का आदेश देकर चलने के लिए कहा। मैं उस जाप की धुन में था अगर मैं उस धुन में न होता तो उससे डरकर चुप रहता या लेफ्ट–राइट कहता। मैंने मार्च करते हुए हे राम! हे गोबिंद! कहा। कमाण्डर ने मुझसे कहा, ''क्या यह गुरुद्वारा है? तुम यहाँ परेड करने के लिए आए हो।'' आखिर उसने कई दिन देखा और अन्त में मेरी परेड माफ कर दी। मेरे कहने का भाव इतना ही है कि सिमरन इस तरह का होना चाहिए। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

नानक चिंता मत करो चिंता तिसकी हे।

हमारे मन के अंदर दिन–रात चिंता लगी रहती है कि यह काम कैसे होगा, कैसे नहीं होगा। चिंता चिता समान होती है। चिंता करने वाला दिन में कई बार मरता है। जिसने आपको पैदा किया है क्या उसे आपकी कोई चिंता नहीं? मसला यह है कि अगर हम उससे जुड़े हों तभी हमें पता चलेगा कि कोई हमारी चिंता करने वाला है लेकिन हम अपनी चिंता खुद करने लग जाते हैं तो वह भी हमारी तरफ़ से बेखबर हो जाता है। बच्चा सोया है तो माँ बेफिक्र होकर अपना काम करती है, जब बच्चा रोता है तो माँ उसकी संभाल करती है।

आस अनित त्यागो तरंग सन्त जनां की धूड़ी मन मंग।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं,''मन में जो तरंग है उसे त्यागें और सन्तों की धूड़ी (चरणों की धूल) माँगें। हमारा मन अनेकों तरंगे उठाता है कि मेरा यह काम हो जाए, मेरा वह काम हो जाए, मुझे यह मिल जाए। इसलिए हम भक्ति करते हैं।'' कोई कहता है मेरे घर औलाद हो जाए। कोई कहता है मेरी औलाद नेक बन जाए। कोई कहता है मेरा कारोबार ठीक हो जाए। हम तो इस तरह की भक्ति करते हैं जैसे राजस्थान के लोग नाग की पूजा करते हैं। ये लोग नाग की पूजा इसलिए नहीं करते कि ये नाग से प्यार करते हैं बल्कि ये नाग से डरते हुए उसकी पूजा करते हैं कि कहीं ये हमें डस न ले! सोचकर देखें, क्या नाग के साथ प्यार है?

मैं गाँव किल्लेयाँवाली की मिसाल दिया करता हूँ कि मुझे वहाँ कुछ दिन रहने का मौका मिला। मेरे घर के पीछे नाग की पूजा किया करते थे। सुबह वहाँ एक आदमी आकर बैठ जाता था। घर की औरतें नाग के लिए सेवियां वगैरह लेकर आतीं थीं।

एक मियाँ–बीवी मेरे घर के सामने रहते थे। वे भी सेवियाँ वगैरह लेकर नाग की पूजा करने के लिए निकले तो उसी जगह नाग ने दर्शन दे दिए। उन्होंने सेवियां एक तरफ़ रखकर नाग की मरम्मत कर दी। मैं शोर ही मचाता रह गया कि आप तो नाग की पूजा करने निकले हैं। हम परमात्मा की भक्ति नहीं करते, हम वैसी भक्ति करते हैं जैसे राजस्थान के लोग नाग की भक्ति करते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि *आस अनित त्यागो तरंग*। यह तरंग छोड़ें। दुनिया की आस छोड़कर मालिक की आस रखें। *सन्त जना की धूड़ी मन मंग*। हम बाहर की धूड़ी को नमस्कार करते हैं और समझते हैं कि अगर बाहर की धूड़ी नहीं मिली तो अंदर पता

ही नहीं चलेगा, आस ही नहीं उठेगी। गुरु साहब असली धूड़ी के बारे में बताते हैं कि नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आएं और देखें! उसे नूर कह लें धूड़ कह लें या प्रकाश कह लें।

आप छोड़ बेनती करो साध संग अगन सागर तरो।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि अपना आप छोड़ें अपनी कला छोड़ें कि मैं हूँ कुछ। जब हम अपने आपको बड़ा समझते हैं कि मेरे आसरे ही गाड़ी चलती है, तब हम दुखी होते हैं और हमारे अंदर हौमें–अहंकार आ जाता है।

गुरु साहब कहते हैं, *आप छोड़ बेनती करो*। अब मसला उठता है कि हम बातों से तो अहंकार नहीं त्याग सकते; अगर दान–पुण्य करते हैं तो भी मन हमारे साथ होता है और मन कहता है कि मैंने ही सब कुछ किया है। अगर नाम जपते हैं तब मन कहता है कि मैंने ही सब कुछ किया है। सतसंग में जाते हैं तब भी मन यही कहता है तो हम अपना अहंकार कब छोड़ते हैं? जब हम अपनी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म के दोनों पर्दें उतारकर ब्रह्म में जाते हैं, मन और आत्मा की गाँठ खोल लेते हैं तब मैं से बच जाते हैं। जब आत्मा पारब्रह्म में पहुँचती है वहाँ सार शब्द है प्रकाश है नूर है।

गुरु साहब कहते हैं, *साध संग अगन सागर तरो*। उसे अग्न सागर या आग का सागर कह लें। उस आग के सागर का ज़िक्र हर सन्त ने किया है चाहे वे मुसलमान जाति में हुए हैं या हिन्दुओं में हुए हैं चाहे उन्होंने उपनिषदों का अभ्यास किया हो या न किया हो।

हर सन्त ने, चाहे वह हज़ार साल पुराना है या दो युग पुराना है, उसने आग के सागर का ज़िक्र किया है। जो प्राणी यहाँ मन की मर्ज़ी करते हैं, बुरे खोटे कर्म करते हैं, जानवरों को कत्ल करते हैं उन्हें जिस रास्ते से गुज़ारा जाता है, वह रास्ता सन्तों और सन्तों

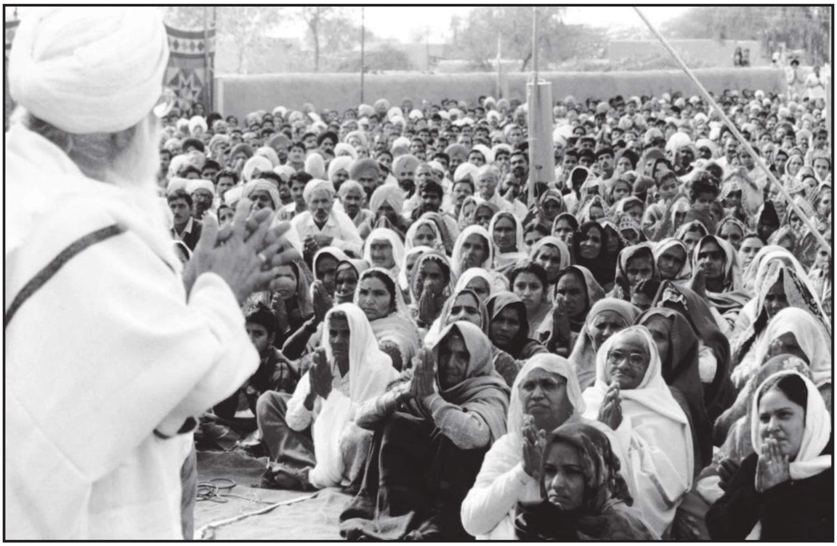

के सवकों का नहीं। अगर आप इस आग के सागर को आसानी से पार करना चाहते हैं तो किसी पूरे गुरु के पास जाएं वे आपको मार्ग दिखाएंगे।

हर धन के भर लेहो भंडार नानक गुरु पूरे नमस्कार।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि हम पूरे गुरु को नमस्कार करते हैं। जो गुरु के बेड़े में सवार हो गए जिन्होंने गुरु का कहना माना, उन्हें गुरु दुनिया की मैं-मेरी और उस आग के सागर से पार ले गए।

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक ना लग्गी जो बाँस बजाई फूक।।

हम सतसंग में गए वहाँ जो सीखा अगर वहीं छोड़ आए तो आप सोचकर देखें! फिर तो किस्से-कहानियाँ ही रह जाती हैं। गुरु साहब के इस छोटे से शब्द को प्यार से समझें इसमें हज़ार पोथियों का निचोड़ है।

***

9

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का एक भाग

इन्सानी जामा एक मौका

रोहतक, हरियाणा – 23 मार्च 1997

प्यारेयो, आज इन्सान के ख्याल बहुत फैल चुके हैं। हर इन्सान ज़िंदगी के शुरू से लेकर आखिर तक मारो–मार करता चला जाता है। किसी को यह चिंता नहीं कि इस छोटी सी ज़िंदगी के बाद मैंने कहाँ जाना है और क्या करना है? यह उस महान सतगुरु कृपाल सिंह जी की दया है जिन्होंने हमें यह सोचने के लिए मजबूर किया कि आप इस ज़िंदगी में बैठकर वह काम भी करें जो अंत समय में आपके साथ जाए और आपके काम आए।

बाबा बिशनदास जी बड़े प्यार से एक कहानी सुनाया करते थे कि एक बहुत ही सुहावना नगर था। उस नगर के लोग बहुत खुशहाल थे। वे हर साल एक नया राजा चुनते थे और उस राजा की आज्ञा का पालन बहुत अच्छी तरह से किया करते थे लेकिन एक साल बाद वे उस राजा को जंगल में छोड़ आते थे बेशक जंगल में राजा को शेर, कुत्ते या कोई भी जानवर खा जाए। राजा वहाँ हड्डियों का ढ़ेर हो जाते थे।

इसी तरह उन्होंने एक बहुत सूझ–बूझ और विवेक बुद्धि वाला समझदार राजा चुना। उस राजा ने सोचा मुझे यह राज्य एक साल के लिए मिला है प्रजा मेरा कहना मानती है तो क्यों न मैं वह काम करूं जिससे मैं एक साल बाद अच्छी ज़िंदगी बिता सकूँ।

राजा ने जंगल का अच्छी तरह मुआयना किया। राजा ने हुक्म देकर जंगल की सफाई करवाई और वहाँ बहुत अच्छा आलीशान महल बनवाया। उस महल में अच्छा फर्नीचर तथा खाने–पीने का सामान भिजवा दिया।

राजा ने उस महल को अपने एक प्यारे मित्र के नाम करवा दिया। एक साल बाद बाकी राजाओं की तरह वे लोग इस राजा को भी जंगल में छोड़ आए। इस राजा ने सब इंतज़ाम पहले से ही किया हुआ था इसलिए वह अपनी ज़िंदगी सुख से बिताने लगा।

प्यारेयो, यह तो एक कहानी है। हमने इस कहानी से यह शिक्षा लेनी है कि परमात्मा ने हमें इन्सानी जामा एक मौका दिया है। यहाँ मन राजा और इन्द्रियां प्रजा हैं। इन्द्रियां मन का हुक्म मानती हैं, मन जो भी कहता है इन्द्रियां वही करती हैं। हम जानते हैं कि जब आखिरी समय आता है तो हमारे रिश्तेदार हमें श्मशान में छोड़कर चले आते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैं :

जब जलिए तब होए भस्म तन रहे किरम दल खाई ।
कच्ची गागर नीर परत है यह है तन की वडियाई ।।

अगर आग के सुपुर्द कर दिया जाता है तो राख बन जाती है। मिट्टी में दबा दिया जाता है तो इसे कीड़े खा जाते हैं। हमारी देह भी कच्चे घड़े की तरह है जिसमें पानी नहीं ठहरता। बिमारियां शरीर को खराब कर देती हैं। बुढ़ापा बिमारियों का घर है। परमात्मा ने हमें इन्सानी जामा एक मौका दिया है। समझदार लोग ज़िंदगी में वह काम करते हैं जो इस ज़िंदगी के बाद काम आए। वह काम 'शब्द–नाम' की कमाई है। हमारा प्यारा मित्र कौन है? जिसने हमें नाम दिया है, जिसने हमारी जिम्मेदारी ली है।

हम शब्द–नाम की कमाई करके जो पूंजी कमाते हैं उसे हमारे गुरु इकट्ठा करके रखते हैं। जो बच्चा अपने पिता के कहे अनुसार चलता है पिता उसका हक नहीं रखता बल्कि अपनी कमाई भी उसके हवाले कर देता है; पिता जानता है कि बच्चा समझदार है।

गुरमेल सिंह ने अभी शब्द बोला है कि आखिरी समय में माता–पिता, भाई–बहन और किसी समाज ने हमारी मदद नहीं करनी। नौकर–चाकर, कारें और तिजोरी में जो माया है, यहाँ का सब सामान हमने यहीं छोड़ जाना है। हमारे सगे–संबन्धी जो प्यार का दम भरते हैं हमारे ऊपर जान वारते हैं, जोश से हमारा स्वागत करते हैं वही हमें अग्नि के सुपुर्द कर आते हैं। मुर्दे को कौन घर में रखता है? सब यही कहते हैं कि इसे जल्दी से जल्दी ठिकाने लगाया जाए। गुरु साहब कहते हैं :

सज्जन से ही आखिए जो चलदेयाँ नाल चलन।

सन्त–महात्मा ने हमें नाम का साधन दिया और अंदर जाने का तरीका बताया कि देख बेटा, तेरा यह रास्ता है अगर तू इससे भटक जाएगा पहले भी भटकता ही रहा है। भटकते हुए पहले भी कुछ नहीं मिला तो अब क्या मिलेगा? सन्त यह भी नहीं कहते कि आप अकेले जाएं वे खुद सेवक के साथ जाते हैं।

सारे सन्त इस बात पर सहमत हैं कि नाम के बिना मुक्ति नहीं। सन्त हमें उस देश के बारे में बताते हैं जहाँ ये आँखों हाथ पैर और शरीर ने नहीं जाना। वहाँ बगैर कानों के आवाज़ सुनी जाती है और बगैर आँखों के देखा जाता है। उस देश को रूहानी आँखों से देखा जा सकता है वह देश देखने वाला है। सन्त इस बात की कल्पना ही नहीं करवाते, वे कहते हैं कि आप खुद अपनी आँखों से देखें। हर एक व्यक्ति की ज़िंदगी में एक दिन मौत ज़रूर आती है।

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि दुनिया में सबसे अचरज चीज़ कौन सी है? युधिष्ठिर ने जवाब दिया कि हम ज़िंदगी में अपने साथियों को मरता हुआ देखते हैं, उन्हें श्मशान भूमि में अग्नि के सुपुर्द करके आते हैं, तिनका तोड़कर वहीं छोड़ आते हैं कि अब तेरा हमारा साथ नहीं रहा। यह सबसे अचरज और विचित्र है कि हम यह सब कुछ अपने हाथों से करते हैं, अपनी आँखों से देखते हैं पर सोचते हैं कि मौत इनके लिए है हमारे लिए नहीं।

प्यारेयो, जीते जी हमारे लाखों दोस्त हैं जो हमारे ऊपर जान न्यौछावर करते हैं लेकिन मरे हुए का कौन है? हम ज़िंदगी में देखते हैं कि जब हमारे पास चार पैसे आ जाते हैं, जवानी आती है, कोई ऊँचा ओहदा मिल जाता है तो सब हमें अपना-अपना कहते हैं। फौरन हमारे साथ रिश्तेदारी जोड़ लेते हैं, हमारे साथ प्यार का दम भरते हैं। जब हमारे पास कुछ नहीं होता कोई ओहदा नहीं रहता तो हमारे अपने भी हमें अपना कहकर खुश नहीं होते।

प्यारेयो, अंत समय में माता-पिता, बहन-भाई ने हमारे साथ नहीं जाना। आपने और भी जो रिश्तेदार बनाए हैं जैसे मामी, बुआ, इन्हें इस बात की चिंता नहीं कि क्या आपने भजन-सिमरन किया? ये सब अपनी गरज़ के लिए ही आपके पास आते हैं और उतने दिन ही आपकी वाह वाह करते हैं जब तक इनकी गरज़ पूरी होती है। जिस दिन उन्हें पता चलता है कि उनकी गरज़ पूरी नहीं होने वाली उस दिन कौन पूछता है? हम सारे अपनी ज़िंदगी में यह तज़ुर्बा करते हैं।

सन्त हमें समझाते हैं कि परमात्मा ने हमें ये आँखें संसार को देखने के लिए और हाथ खाना खाने के लिए दिए हैं। परमात्मा ने हमारे अंदर आत्मा रखी है जिसके होने की वजह से सब हमारे साथ प्यार करते हैं लेकिन हम उसी परमात्मा को भूल गए हैं।

जिस तरह कोई बच्चा नुमाईश(मेला) देखने के लिए जाता है। वह नुमाईश में बहुत सी मनमोहक चीज़ें देखता है और उन चीज़ों को देखकर बहुत खुश होता है। अगर उसके हाथ से पिता की अंगुली छूट जाती है तब भी सारा सामान उसी तरह रखा होता है लेकिन बच्चा चीखें मारता है। फिर पता चलता है कि सुख-शान्ति सामान में नहीं शान्ति तो पिता की अंगुली पकड़ने में है। इसी तरह अगर हम उस परमात्मा गुरु की अंगुली पकड़कर संसार में घूमेंगे तो हम भी दुनिया में चार दिन शान्ति से गुज़ार लेंगे। नहीं तो प्यारेयो, रोते-तड़पते हुए आते हैं और रोते-तड़पते हुए ही चले जाते हैं।

इन्सान मुट्ठी बंद करके संसार में आता है और हाथ पसारकर चला जाता है। महाराज कृपाल सिंह जी महमूद गजनवी की मिसाल देकर समझाते थे कि उसने हिन्दुस्तान पर काफी हमले किए, हिन्दुस्तान का बहुत माल लूटा। जब उसका आखिरी समय आया तब उसने हुक्म दिया कि मैंने जो माल लूटा है उसे बाहर सजाया जाए ताकि मैं उसे देख लूं। जब वह पालकी में बैठकर देखने गया तब वह चीख-चिल्लाकर रोने लगा कि इसमें से कोई भी सामान मेरे साथ नहीं जा रहा। मैंने इस सामान को इकट्ठा करने के लिए लाखों औरतों को विधवा बनाया लाखों बच्चों को यतीम किया। उसने अहलकारों को हुक्म दिया, ''मेरे साथ जो होगी वो तो मैं भुगतूंगा, लेकिन मेरे मरने पर मेरे हाथ नीचे की तरफ़ खुले करके यह नारा लगाना:

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

दुनिया को यकीन हो जाए कि जब महमूद गजनवी संसार से गया उसके दोनो हाथ खाली थे, दुनिया को तो सीख मिले।'' महात्मा चरणदास जी भी यही कहते हैं, ''प्यारेयो, इन्सान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है। हम जिस

शरीर का इतना अभिमान करते हैं यह भी साथ नहीं जाता; यह किराए का मकान है।'' गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कहो नानक थिर कुछ नहीं सुपने जो संसार।।

राम, रावण जैसे सब चले गए। इस संसार की कोई भी चीज़ सदा के लिए नहीं रहती फिर हम किस चीज़ का अभिमान करते हैं? क्या हम घर का अभिमान करते हैं? क्या सड़कों पर रहते हुए गरीब नहीं देखे? क्या जवानी का अभिमान है? किसी बूढ़े को देखें बुढ़ापे में चेहरा डायन जैसा हो जाता है। क्या अच्छी सेहत का अभिमान है? दो दिन बुखार चढ़ जाए तो चेहरा पीला पड़ जाता है मेंढ़क जैसा हो जाता है।

जब हमारे हाथ में हुकूमत आती है तब लोग हमारे गले में हार डालते हैं जुलूस निकालते हैं हमारी वाह-वाह होती है। तब दिल में ख्याल आता है कि मैं कुछ हूँ। आप अखबार, रेडियो, टेलिविजन देखते हैं कि जब दूसरी पार्टी का ज़ोर बढ़ जाता है रातों-रात तख्ते पलट जाते हैं। तब वही लोग हमारी निन्दा-आलोचना करने लग जाते हैं, हमें गोलियों का निशाना बना देते हैं। जिस हुकूमत को हम सुखों की सेज़ समझते हैं आखिर वही दु:खों का बिछौना बन जाती है। प्यारेयो, हम किस चीज़ का गरूर करते हैं?

बंदर मदारी के डंडे से डरकर किस तरह नाचता फिरता है? लेकिन हम तो खुशी-खुशी पत्नी, पुत्र और पुत्री के लिए नाचते फिरते हैं। कभी कहीं नौकरी करते हैं तो कभी कहीं से रोज़गार कमाते हैं। रात को सोते नहीं दवाईयाँ लेते हैं। सोचते हैं मैं कुछ न कुछ करके यहाँ-वहाँ से धन कमा लूं। गुरु साहब कहते हैं:

श्वान समान करी गत अपनी, धन का सिमरन धन की जपनी।

हमारी कुत्ते जैसी हालत हो जाती है। सोते–जागते हुए धन की ही सोचते हैं ऐसी अवस्था में भी परमात्मा की तरफ़ ध्यान नहीं लगता। अंत समय में कोई पुत्र–पुत्री, यार–दोस्त काम नहीं आएंगे। ये आपको चिता के ऊपर रख देंगे, आपके शरीर को अग्नि लगा देंगे। अगर किसी को डाकुओं ने घेरा हो डाकू लूट रहे हों, कत्ल करने पर तुले हों उस समय हमें कोई अपना मिल जाए, कोई मदद करने वाला मिल जाए तो हमें कितनी खुशी होगी। उस समय गुरु हमारी मदद करते हैं जिन्होंने हमें नाम दिया है। कबीर साहब हमें डराने के लिए नहीं बल्कि नींद से जागृत करने के लिए कहते हैं:

यम का ठेंगा बुरा है वो नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया तिनहु लिया बचाए।।

कबीर साहब हमें समझाते हैं, ''वहाँ बहुत दुख और कष्ट हैं। मुझे मेरे साधु मिले उन्होंने मुझे यमों से बचा लिया।''

कबीरा घानी पीड़दे सतगुरु लए बचाए। पुरा पुरवली भावनी ते प्रगट होई आए।

आप कहते हैं,''मुझमें ताकत नहीं थी, मैं अंधा था। गुरु ने खुद ही आकर मेरी अंगुली पकड़ी।''

प्यारेयो, जीव मरता मर जाता है, अंत समय आ जाता है फिर हम उस मरते हुए को सन्त–महात्मा के पास ले जाते हैं कि यह बच जाए। आप देखें, उस समय घर के लोगों को उससे कहना चाहिए कि तुम हमारे में से अपना ख्याल निकालकर परमात्मा की तरफ़ लगाओ। सिमरन करो अगर तुम्हें याद नहीं है तो हम याद करवाते हैं लेकिन कौन रहम करता है, किसे उसकी चिंता है?

मैं एक बूढ़े की कहानी बताया करता हूँ कि उसे रूदंग (गठिया) रोग हुआ उससे चला नहीं जा रहा था। वह कई साल बिस्तर में पड़ा रहा। उसके परिवार वाले उसे मेरे पास ले आए कि शायद यह

ठीक हो जाए। मैं उससे मिलने चौबारे से नीचे आया क्योंकि वह ऊपर नहीं चढ़ सकता था। मैंने उससे कहा, ''बाबा, तू परमात्मा को याद कर।'' उसने कहा,''मैं मर रहा हूँ, दुखी हूँ और आप कह रहे हैं कि परमात्मा को याद कर?'' अब आप सोचकर देखें कि उसे ऐसे समय में भी परमात्मा को याद करना मंजूर नहीं था।

महात्मा करनी पर ज़ोर देते हुए कहते हैं कि जिस तरह चन्द्रमा के बगैर रात की शोभा नहीं होती, जिस तरह किसी औरत ने कपड़े न पहने हों तो वह कितनी बदसूरत लगती है। जिस तरह सूरमा शस्त्र बिना अधूरा है, हाथी सूंड के बिना अच्छा नहीं लगता, फल के बगैर बाग का क्या काम? नाक बिना इन्सान की शोभा नहीं उसी तरह 'शब्द नाम' की कमाई के बिना परमात्मा के दरबार में जीव की शोभा नहीं होती। इसलिए कथनी की नहीं करनी की ज़रूरत है।

हम न सतसंग में जाते हैं और न गुरु की सेवा करते हैं। हम सतसंग के लिए समय नहीं निकालते दुनिया की बातों में चाहे कितना भी समय लग जाए कुछ याद नहीं रहता। जिसने हमारी मदद करनी है उसके साथ प्यार नहीं। कबीर साहब कहते हैं :

जाके हृदय गुरु नहीं सिख साखां की भूख।
ते नर ऐसे सूख सी ज्यों जंगल विच रुख ।।

हृदय में गुरु तभी होंगे अगर आप गुरु को प्रकट करेंगे। गुरु को प्रकट करना कोई आसान काम नहीं अगर गुरु प्रकट करने में एक ज़िंदगी भी लग जाए तो कम है। आप महात्माओं का इतिहास पढ़कर देखें, गुरु नानकदेव जी ने पत्थरों का बिछौना किया, भूखे-प्यासे रहे; ऊँचे भाग्य हों तो ही परमात्मा से बनती है।

पहले पाई बख्श दर पिछो दे गुरु घाल कमाई।
भारी करी तपस्या वड्डे भाग हर स्यों बण आई ।।

आप महाराज सावन–कृपाल का इतिहास पढ़कर देखें कि उन्होंने कितनी मेहनत की। मेहनत करने से आपके अंदर गुरु प्रकट होंगे। दिन–रात सिमरन करें भूख–प्यास काटें। तो नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आकर आत्मा से सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म से भी ऊपर चले जाएंगे। सचखंड पहुँचकर सतपुरूष के साथ मिलाप करके सतपुरूष का रूप बन जाएंगे। तब गुरु हृदय में रहेगा और परछाई की तरह आपके साथ–साथ चलेगा। ऐसा शिष्य सोते–जागते गुरु गुरु ही करता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं :

गुरु गुरु गुर कर मन मोर, गुरु बिना मैं नाहीं होर।

प्यारेयो, सन्तमत कथनी का नहीं करनी का मत है। अगर कोई आदमी नदी के बाहर खड़ा रहे तो क्या वह पार हो जाएगा? उसे नदी पार करने के लिए प्रैक्टिस करनी पड़ेगी, नाव चलानी सीखनी पड़ेगी। हम मेहनत के बिना खेती नहीं कर सकते डाक्टर या वकील नहीं बन सकते। दुनिया का कोई व्यापार मेहनत के बिना नहीं हो सकता तो क्या बिना मेहनत परमात्मा की भक्ति हो जाएगी?

बहुत से प्रेमी बड़े जोश से नाम ले लेते हैं फिर कहते हैं कि अभी समय नहीं आया। सतगुरु अपने आप नाम जपवा लेगा सतगुरु ने ही पाप छुड़वाने हैं। कई लोग सतगुरु के सतसंग की महिमा तो गाते हैं लेकिन जब मीट शराब छोड़ने या मेहनत करके खाने का सवाल आता है तब इन लोगों का जोश ठंडा पड़ जाता है।

बिना मेहनत आप परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। छिलके में रस नहीं होता रस गूदे में होता है। कथनी छिलका है और करनी गूदा है। महाराज कृपाल ने मुझसे कहा था :

बीतया वेला हत्थ ना आवे अजायब नूं कृपाल सुनावे।

यह समय दोबारा हाथ नहीं आएगा इसमें करनी करें। इन्सानी जामा बड़ा अमोलक है यह बार-बार हाथ नहीं आएगा। चौरासी लाख योनियां भुगतने के बाद हमें इन्सान का जामा मिला है, इसे शराब-कबाब में, दुनिया के बुरे कर्मों में व्यर्थ गँवाकर चले जाना अपने आपसे बेइंसाफी करना है।

सन्त संसार में आकर सबको गले लगाते हैं। सबको एक जैसा उपदेश करते हैं। हमें भी चाहिए कि हम इन लड़ाई-झगड़ों से ऊपर उठकर परमात्मा की भक्ति करें। जिस तरह परमात्मा सबको हवा, पानी, बारिश मुफ्त में देता है इसी तरह सन्त-महात्मा अपनी तालीम की कोई फीस नहीं लेते, वे मुफ्त में हमारी सेवा करते हैं। अगर हमें ऐसे महात्मा मिल जाएं तो हम उनसे फायदा उठाकर अपने जीवन को सफल बनाएं। **इन्सानी जामा एक मौका है** यह बार-बार हाथ नहीं आएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो, चौरासी का फेर बचा लो।

प्यारे बच्चो, चौरासी लाख योनियों से बचने के लिए अपने ऊपर दया करें। जो अपने ऊपर दया करता है परमात्मा भी उस पर दया करता है। भजन के चोर न बनें। स्वामी जी महाराज कहते हैं :

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे।
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावें लोभ नदी में डूब मरे।

भजन के चोरों को अनेकों बलाएं चिपक जाती हैं। हमनें भजन के चोर नहीं बनना, भजन करके अपने जीवन को सफल बनाना है और इस इन्सानी मौके का पूरा फायदा उठाना है।

***

10

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

दूसरों की आलोचनात्मक परख करना

28 जनवरी 1967

अगर हमें यह बात समझ आ जाए कि मृत्यु अटल है तो हमारे जीवन में बहुत बदलाव आ सकता है। आपको अभ्यास में हमेशा सतर्क रहना चाहिए, अगर हम ऐसा नहीं करते तो हमारा मन दूसरे लोगों के बारे में सोचने लग जाता है, उनके काम की आलोचना निन्दा करने लगता है।

हम दूसरों के अच्छे गुणों को अपनाने की जगह उनके अवगुण अपनाते हैं अगर आप दूसरों के अवगुण देखेंगे तो आपमें भी वे अवगुण आ जाएंगे क्योंकि आप जैसा सोचते हैं आप वैसे बनेंगे।

परमात्मा कहता है, ''मेरा सबसे अच्छा बच्चा वही है जिसे मैं दूसरों में नज़र आता हूँ।'' विचार बहुत प्रबल होते हैं। आपको दूसरों के अवगुण देखने की बजाय उनके नेक गुण देखने चाहिए। आपका बोल मीठा होना चाहिए जिससे दूसरों की भावनाओं को चोट न पहुँचे। किसी की भावनाओं को चोट पहुँचाना घोर पाप है। आप परमात्मा से तो प्यार करना चाहते हैं फिर भी आप दूसरों को कोसते हैं जिनमें परमात्मा बसता है।

अगर आपका किसी ऐसे आदमी से वास्ता पड़ता है जिसके अंदर यह कमी है तो आप उसका सामना करने की बजाय एक तरफ़ हो जाएं। दूसरों में अवगुण देखने वाले और नुख्स निकालने

वाले आप कौन होते हैं? परमात्मा को प्राप्त करना आसान है लेकिन खुद को सुधारना बहुत मुश्किल है। अगर आपको यह समझ आ जाए कि परमात्मा हर एक के अंदर बसता है तो क्या आप दूसरों का दिल दुखाएंगे? हमें एक–एक करके अपने अंदर से अवगुण और कमियां निकाल देनी चाहिए इसलिए मैं आत्मनिरीक्षण के लिए डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) लिखने पर ज़ोर देता हूँ।

अगर कोई दूसरों का दिल दुखाने का शैतानी अवगुण नहीं छोड़ता तो आप दूसरों की मदद करने का अपना नेक गुण क्यों छोड़ते हैं? अगर आपने दूसरों का निरीक्षण करना है तो उनके नेक गुणों का निरीक्षण करें। हर व्यक्ति में कुछ कमियां होती हैं और कुछ गुण भी होते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं आपको सलाह देता हूँ अगर आपको कमियां देखनी हैं तो अपने अंदर झाँककर देखें अगर आपको नेक गुण देखने हैं तो दूसरों के नेक गुण देखें।''

आप मेरा कहना मानें सावधान हो जाएं अगर ऐसा नहीं किया तो आप पछताएंगे तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। अब यह आपके ऊपर है कि आपने इस पर अमल करना है या नहीं! परमात्मा ने हमें ज़ुबान परमात्मा को याद करने के लिए दी है दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचाने के लिए नहीं दी।

***

11

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा किए गए सतसंग का एक भाग

परमात्मा की रज़ा में संतोष

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 मार्च 1986

आपको बाहर का कोई भी रीति–रिवाज़ या क्रियाकर्म करने की ज़रूरत नहीं। आपको सिर्फ शब्द–नाम का अभ्यास करना है। यह नाम न हिन्दी, न पंजाबी, न संस्कृत और न ही किसी और भाषा में लिखा गया है। यह नाम बिना लिखा कानून, बिना बोली भाषा है। परमपिता परमात्मा हमेशा अपने प्यारे सन्तों को इस संसार में नाम का भेद देने के लिए भेजते हैं।

नाम वह शक्ति है जिसके सहारे खंड–ब्रह्मांड चल रहे हैं। यह नाम हमारे अंदर है। पूर्ण गुरु परमात्मा की मर्ज़ी से इस संसार में आते हैं और हमें इस नाम का ज्ञान देते हैं। अफसोस! चोटी के महात्मा इस संसार में आए लेकिन बहुत कम आत्माएं उन महात्माओं से फायदा उठा पाईं।

एक बार किसी ने महाराज सावन सिंह जी से पूर्ण गुरु के बाहरी चिह्नों के बारे में पूछा। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''पूर्ण गुरु अपने गले में बोर्ड टाँगकर नहीं घूमते और न उनके माथे पर लिखा होता है कि वे पूर्ण गुरु हैं। अगर आप उनकी पूर्णता के बारे में जानना चाहते हैं तो आप अंदर जाकर देखें।''

किसी पेड़ की विशेषता का पता हमें उस पेड़ का फल खाने से चलता है। उसी तरीके से अगर हम अपनी ज़िंदगी को गुरु की

शिक्षा के मुताबिक ढ़ाल लेते हैं और पूरी श्रद्धा से वह सब करते हैं जो हमें हमारे गुरु ने बताया है तभी हमें गुरु की पूर्णता और योग्यता का पता चलता है। गुरु सुनी सुनाई बातें नहीं बताते वे हमें वही बताते हैं जो उन्होंने अपनी ज़िंदगी में किया होता है।

रोम के राजा के इतिहास की एक घटना है। एक बार उसके दरबार में सब्र और संतोष के ऊपर सवाल आया। राजा ने अपने लोगों से पूछा, ''सब्र और संतुष्टि का क्या मतलब है?'' राजा के दरबार में बहुत सारे पढ़े–लिखे बुद्धिमान लोग थे। उन सबने उस सवाल का जवाब अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार देने की कोशिश की लेकिन राजा की तसल्ली नहीं हुई। राजा ने अपने प्रधानमंत्री को बुलाया और उससे भी इस बारे में पूछा कि इस सवाल का क्या मतलब है? प्रधानमंत्री ने सब्र और संतुष्टि के बारे में समझाने की कोशिश की लेकिन वह राजा की तसल्ली नहीं करवा सका।

राजा ने अपने प्रधानमंत्री से कहा मैंने सुना है कि भारत में एक बहुत बड़ा बादशाह औरंगज़ेब है। वह बहुत विद्वान और पढ़ा–लिखा बादशाह है, उसके दरबार में बहुत अच्छे मंत्री हैं। तुम वहाँ जाकर उनसे इस सवाल के बारे में पूछो। शायद वे तुम्हे सही जवाब दे। लेकिन तुम तभी वापिस आना जब तुम संतुष्ट हो जाओ।

अगर वे लोग तुम्हें संतुष्ट न कर सकें तो तुम वहाँ एक फ़क़ीर को ढूंढ़ना जिसका नाम शर्मद है। मैंने यह सुना है कि शर्मद बहुत उच्चकोटि के फ़क़ीर है, वह इस सवाल का जवाब दे पाएंगे। तुम भारत जाओ और इस सवाल का जवाब लेकर आओ कि सब्र और संतुष्ट होने का क्या मतलब है?

प्रधानमंत्री भारत गया और औरंगज़ेब से मिला। प्रधानमंत्री ने औरंगज़ेब से सब्र और संतुष्टि का सवाल पूछा। औरंगज़ेब बहुत

विद्वान था उसने प्रधानमंत्री को समझाने की कोशिश की लेकिन प्रधानमंत्री उसके जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ। प्रधानमंत्री ने और लोगों से भी बातचीत की सबने बेहतर तरीके से समझाने की कोशिश की लेकिन वह किसी के जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ।

आखिर प्रधानमंत्री ने लोगों से शर्मद फ़क़ीर के बारे में पूछा तो वहाँ के लोगों ने बताया कि औरंगज़ेब बहुत कट्टर धार्मिक किस्म का व्यक्ति है। औरंगज़ेब ने किसी भी फ़क़ीर या सन्त को बाहर रहने की इजाज़त नहीं दी। सब सन्तों–फ़क़ीरों को जेल में डाल दिया है। अब यह पता करना बहुत मुश्किल है कि फ़क़ीर शर्मद कहाँ है। वह जहाँ भी होगा बहुत बुरी हालत में होगा। उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं होंगे, उसे अच्छा खाना नहीं मिलता होगा और उसे पीने के लिए दिन में एक ग्लास पानी ही मिलता होगा, उसे ढूंढ़ना बहुत ही मुश्किल काम है।

प्रधानमंत्री ने शर्मद फ़क़ीर को ढूंढ़कर राजा के सवाल का जवाब लाना था। वह फ़क़ीर को ढूंढ़ने में लग गया। आप जानते हैं जब आप कोई काम बहुत श्रद्धा और मेहनत से करते हैं तो आपको उसमें कामयाबी ज़रूर मिलती है। आखिर प्रधानमंत्री को शर्मद एक बहुत ही अंधकारमयी जेल में मिले। शर्मद ने कपड़े नहीं पहने हुए थे वे बहुत ही बुरी हालत में थे। प्रधानमंत्री ने देखा कि औरंगज़ेब के भेजे हुए एक आदमी ने शर्मद को बिना किसी कारण चाबुक से पीटना शुरू कर दिया लेकिन शर्मद ने कोई शिकायत नहीं की और सब कुछ सब्र से सहन करते रहे।

फिर प्रधानमंत्री ने देखा कि कोई आदमी एक कप पानी और एक सूखी रोटी शर्मद को देकर गया। शर्मद ने परमात्मा की मर्ज़ी मानकर बड़ी संतुष्टि से वह रोटी खाई।

फिर प्रधानमंत्री ने शर्मद से अपना सवाल पूछा, ''सब्र और संतुष्टि का क्या मतलब है?'' शर्मद ने कहा कि मैं तुम्हे इस सवाल का जवाब कल दूँगा। जब कल तुम मेरे पास आओ तो एक बड़ी सी चादर और पानी से भरी हुई चमड़े की मश्क लेकर आना फिर मैं तुम्हारे इस सवाल का जवाब दूँगा।

अगले दिन प्रधानमंत्री शर्मद के पास एक बड़ी सी चादर और पानी की भरी हुई मश्क लेकर गया। शर्मद ने अपनी दया–दृष्टि से जेल का दरवाज़ा खोल दिया और प्रधानमंत्री को अंदर आने दिया। शर्मद ने उस पानी से स्नान किया और कपड़े की चादर से अपने शरीर को ढ़क लिया। शर्मद ने प्रधानमंत्री को अभ्यास में बिठाया और खुद भी अभ्यास में बैठ गए। शर्मद प्रधानमंत्री की आत्मा को परमात्मा के दरबार में ले गए।

वहाँ प्रधानमंत्री ने देखा कि परमात्मा के दरबार में दूसरी आत्माएं शर्मद के साथ बातचीत कर रही थी। वे आत्माएं शर्मद से पूछ रही थी अगर आप कहें तो हम औरंगज़ेब और उसके राज्य को बर्बाद कर सकते हैं क्योंकि वह आपको बहुत दुखी कर रहा है। लेकिन शर्मद ने हाथ जोड़ते हुए उन महान आत्माओं से कहा, ''औरंगज़ेब और उसके लोगों को कोई नुकसान न पहुँचाना उसे माफ कर दें क्योंकि वह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है?''

प्रधानमंत्री यह सब देखकर बहुत हैरान हुआ कि शर्मद परमात्मा के ही रूप है। उनके पास परमात्मा की सारी शक्तियाँ हैं फिर भी उनके अंदर परमात्मा की रज़ा में इतना सब्र है कि वह नहीं चाहता कि औरंगज़ेब को कोई भी नुकसान पहुँचाया जाए जबकि औरंगज़ेब उसे इतना दुख दे रहा है।

प्रधानमंत्री ने शर्मद की शान और असली स्थान देखा तो वह बहुत ही प्रभावित हुआ। जब शर्मद प्रधानमंत्री को नीचे लाए तो शर्मद ने प्रधानमंत्री से कहा क्या अब तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल गया है? अगर तुम्हारे पास परमात्मा की दी हुई सब चीज़ें हैं लेकिन तुम उन शक्तियों का इस्तेमाल नहीं करते तो इसका मतलब है कि तुम परमात्मा की रज़ा में संतुष्ट हो और सब कुछ कर सकते हुए भी तुम किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते तो इसका मतलब है तुम परमात्मा की मर्ज़ी में सब्र कर रहे हो।

शेख फरीद भी कहते हैं कि पूर्ण गुरु परमात्मा के प्यारे होते हैं, उनमें बहुत सब्र होता है। वे परमात्मा की रज़ा में संतुष्ट रहते हैं। वे परमात्मा के पास रहते हैं फिर भी लोगों को यह नहीं बताते कि वे परमात्मा में मिले हुए हैं। जैसे शर्मद प्रधानमंत्री को ऊपर लेकर गए और उसे दिखाया कि सब कुछ परमात्मा की रज़ा में हो रहा है तो हमें भी परमात्मा की रज़ा में संतुष्ट रहना चाहिए।

जैसे शर्मद ने प्रधानमंत्री को सच्चाई दिखाई थी उसी तरह बाबा सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल सिंह जी को सच्चाई दिखाई थी। जब बाबा सावन सिंह जी अपने जीवन के अंत समय में बहुत ही तकलीफ से गुज़र रहे थे तब उनके प्यारे बेटे कृपाल सिंह जी इस तकलीफ को देखकर बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे। वह हर रोज़ महाराज सावन सिंह जी से प्रार्थना कर रहे थे कि वे अपनी तकलीफ को हटा दें, कुछ साल और इस संसार में रुकें। महाराज कृपाल हर रोज़ महाराज सावन से विनती कर रहे थे और महाराज सावन यह विनती अपने गुरु के पास पहुँचा रहे थे।

एक दिन महाराज सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल को बुलाया और उन्हें अपने पलंग के पास बिठाकर कहने लगे, ''तुम

आँखें बंद करके खुद ही देख लो कि आज सचखंड में फैसला होने जा रहा है।'' महाराज कृपाल ने मुझे बताया कि उन्होंने परमात्मा के दरबार सचखंड में देखा कि सचखंड पहुँचे हुए सारे महात्मा वहाँ मौजूद थे। ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ सब महात्माओं की सभा चल रही हो। सब महात्मा चाहते थे कि महाराज सावन सिंह जी को अभी इस संसार में कुछ साल और रहने दिया जाए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इस समय संसार की परिस्थितियाँ ठीक नहीं हैं। अब मैं सावन सिंह को और वक्त संसार में नहीं रहने दूँगा; अब इन्हें वापिस आ जाना चाहिए क्योंकि इन्होंने पहले ही बहुत सारी पीड़ा सह ली है।''

जब महाराज सावन सिंह जी कृपाल सिंह जी को नीचे लेकर आए तो उन्होंने कहा, ''कृपाल सिंह, अब तुमने सचखंड के फैसले को अपनी आँखों से देख लिया है और अपने कानों से सुन लिया है। यही परमात्मा की रज़ा है। जो भी होने जा रहा है वह परमात्मा की रज़ा में होगा।''

गुरु रामदास जी कहते हैं कि मुक्ति नाम में है और नाम हमें गुरु से मिलता है। अगर हम जीवन के इस भवसागर को पार करना चाहते हैं तो हमें शब्द–नाम की कमाई करनी चाहिए।

***

12

स्वामी जी महाराज के मुखारविन्द से

गुरुमुख की पहचान

दया स्वरूप सतगुरु सदा ही इस जीव की देखभाल करते हैं। सतगुरु यह कामना करते हैं कि उनके सभी सेवक उनके चरणों में असीम प्यार और विश्वास रखें। लेकिन मन को यह अच्छा नहीं लगता कि जीव ऐसी अवस्था प्राप्त करे इसलिए मन जीव को काम की लज़्ज़त की तरफ़ खींचने की कोशिश करता है और मन चाहता है कि जीव उसके आदेशों को माने।

जीवों को अपने गुरु के चरणों की भक्ति जारी रखनी चाहिए। मन के इस छल–कपट से सावधान रहना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि वह मन के जाल में न फँसे।

यहाँ गुरुमुख और मनमुख के तरीकों का संक्षिप्त वर्णन दिया जा रहा है, जिससे जीव अपने आपको पहचान सकें और अपने आचरण को सही कर सकें।

1. गुरुमुख का आचरण सबके साथ सच्चा और सीधा होता है। वह बुराई से दूर रहता है और कभी किसी को धोखा नहीं देता। वह जो कुछ भी करता है सतगुरु के लिए करता है और वह गुरु की दया पर निर्भर रहता है।

मनमुख अपने आचरण में कपटी और झूठा होता है। वह अपने हित की रक्षा और स्वार्थ के लिए दूसरों को धोखा देता है। मनमुख अपनी चालाकी और बुद्धि पर विश्वास रखता है और अपने आपको ही महान बताने में जुटा रहता है।

2. गुरुमुख अपने मन और इन्द्रियों पर काबू करता है। वह स्वभाव से विनम्र होता है। वह दुनिया के तानें सहता है और सलाह को ध्यान से सुनता है। वह महान बनने की कोशिश नहीं करता या किसी तरह के आदर–सत्कार के पीछे नहीं भागता।

मनमुख अपने मन को काबू में नहीं करना चाहता। वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहता। किसी की बात मानना नहीं चाहता और दूसरों की महानता से जलन रखता है।

3. गुरुमुख किसी को अपने दवाब में नहीं रखता। वह हमेशा सेवा के लिए तत्पर रहता है और दूसरों का भला करना चाहता है। उसे अपने यश या आदर–सम्मान में रूचि नहीं होती। वह सतगुरु के चरणों में विलीन और विचारों में मस्त रहता है।

मनमुख दूसरों को अपने दवाब में रखना चाहता है और चाहता है कि दूसरे लोग उसकी सेवा करें। वह सम्मान चाहता है और अपने मतलब के अलावा दूसरों के बारे में नहीं सोचता, दूसरों की चिन्ता नहीं करता। उसे सम्मानित होना अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लगता है। वह सतगुरु के पवित्र चरणों में विलीन नहीं रहता।

4. गुरुमुख कभी भी अपनी नम्रता, उदारता और सौम्यता को नहीं छोड़ता। अगर कोई उसकी निन्दा करता है या उसे नीचा दिखाता है तो वह उसका बुरा नहीं मानता। वह इन सबमें अपनी भलाई ही मानता है।

मनमुख को अपनी निन्दा और अपमान से डर लगता है। वह सदा अपना यश और अपनी तारीफ चाहता है।

5. गुरुमुख हमेशा मेहनत करता है कभी खाली नहीं रहता।

मनमुख शारीरिक आराम चाहता है। वह आराम का सब सामान चाहता है और आलसी होता है।

6. गुरुमुख साधारण और नम्रता भरा जीवन जीता है। चाहे उसे खाने के लिए सूखी रोटी मिले, चाहे उसके कपड़े भद्दे हों, चाहे जैसी भी परिस्थिति हो वह उसमें सन्तुष्ट रहता है।

मनमुख हमेशा स्वादिष्ट पकवान चाहता है। उसे सूखी रोटी और सस्ती चीज़ें अच्छी नहीं लगती।

7. गुरुमुख संसारिक जंजालों या चीज़ों में नहीं फँसता। वह किसी दुनियावी चीज़ को प्राप्त करने या खो देने में खुशी या दुख का अनुभव नहीं करता। वह अपनी निन्दा से विचलित नहीं होता। उसकी नज़र अपनी आत्मा की मुक्ति और अपने सतगुरु को खुश करने में लगी रहती है।

मनमुख दुनियावी चीज़ों के बारे में बहुत सोचता है। उसे इन वस्तुओं के खो जाने से दुख और प्राप्त करने से खुशी होती है। अगर कोई उससे कठोरता से बात करता है तो उसे तुरन्त गुस्सा आ जाता है। वह सतगुरु की दया-मेहर और सतगुरु की ताकत को भूल जाता है, सतगुरु पर भरोसा नहीं रखता।

8. गुरुमुख हर मामले में सच्चा और निष्कपट होता है। वह स्वभाव से उदार होता है। वह दूसरों की मदद करता है और उनकी अच्छाई की कामना करता है। वह थोड़े में ही संतुष्ट हो जाता है वह दूसरों से कुछ भी लेने की इच्छा नहीं रखता।

मनमुख लालची होता है हमेशा दूसरों से चीज़ें लेने के लिए तैयार रहता है पर अपनी चीज़ें देना नहीं चाहता। वह हमेशा अपने ही बारे में सोचता है दूसरों की परवाह नहीं करता। वह अपनी इच्छाओं को बढ़ाता जाता है।

9. गुरुमुख संसारिक व्यक्तियों से जुड़ा हुआ नहीं होता। वह सुखों या भोगों की चाह नहीं रखता और उनकी परवाह नहीं करता।

वह पर्यटन स्थलों को देखने की या अपना मनोरंजन करने की कामना नहीं रखता। उसकी इच्छा सिर्फ अपने सतगुरु के चरणों मे रहने की होती है वह उसी आनन्द में मस्त रहता है।

मनमुख को संसारिक चीजें और संसारिक लोग पसंद होते हैं। वह मौज़–मस्ती और भोग विलास की कामना रखता है। वह पर्यटन स्थलों को देखने तथा अपना मनोरंजन करने में खुशी महसूस करता है।

10. गुरुमुख जो भी करता है अपने सतगुरु को खुश करने के लिए करता है। वह सतगुरु से हमेशा दया और माफी चाहता है। वह सिर्फ सतगुरु की ही प्रशंसा करता है और अपने सतगुरु को सम्मानित होते हुए देखना चाहता है। गुरुमुख संसारिक इच्छाएं नहीं रखता।

मनमुख जो भी करता है उसमें उसका स्वार्थ या आनन्द होता है। वह ऐसा कुछ भी नहीं करता जिससे उसका स्वार्थ पूरा न होता हो। वह वाह–वाही और सम्मान की इच्छा रखता है। उस पर संसारिक इच्छाएं हावी रहती हैं।

11. गुरुमुख किसी के लिए विरोधता नहीं रखता बल्कि अपने विरोधियों से भी प्यार करता है। वह अपने परिवार, जाति, पदवी और महान लोगों से अपनी दोस्ती का अभिमान नहीं करता। वह भक्तिभाव व आध्यात्मिक लोगों से प्यार करता है। वह हमेशा अपने सतगुरु के चरणों में अपने प्यार,श्रद्धा और भक्ति को जीवित रखता है। सतगुरु से ज़्यादा से ज़्यादा दया और रहम की कामना करता है।

मनमुख बड़ा परिवार या दोस्त रखने की कामना रखता है। वह प्रभावशाली और अमीर लोगों के साथ रहना चाहता है; उनसे दोस्ती रखने में गर्व महसूस करता है। वह दिखावे के लिए बहुत कुछ करता है। सतगुरु की रज़ा की परवाह नहीं करता।

12. गुरुमुख को गरीबी में पीड़ा नहीं होती। उसके ऊपर जो भी संकट आता है वह उस संकट का सामना बड़े धैर्य से करता है। वह हमेशा सतगुरु की दया में विश्वास रखता है और हमेशा सतगुरु का धन्यवादी रहता है।

मनमुख किसी भी विपत्ति में बहुत जल्दी घबरा जाता है। मदद के लिए ज़ोर से गुहार लगाता है। अगर वह गरीब है तो वह दुख महसूस करता है और असन्तुष्ट होता है।

13. गुरुमुख सब कुछ परमात्मा की इच्छा पर छोड़ देता है चाहे वह उसके लिए ठीक हो या गलत हो वह कभी भी उस चीज़ को अपने अहम पर नहीं लेता। वह अपने आपको सही साबित करने की कोशिश नहीं करता। वह दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करता। वह अपने आपको किसी भी झगड़े में नहीं फँसाता। वह हमेशा सतगुरु की स्वीकृति का ध्यान रखता है और सतगुरु का गुणगान करने में अपने दिन काटता है।

मनमुख हर चीज़ में अपनी मनमानी चाहता है। वह अपनी खुशी और अपने फायदे के लिए विरोधता या विवादित काम भी करता है। वह अपनी सच्चाई मनवाने के लिए गुस्सा भी करता है और झगड़ा करने के लिए भी तैयार रहता है।

14. गुरुमुख नई चीज़ों के पीछे नहीं भागता क्योंकि वह देखता है कि उन चीज़ों की जड़ें इस भौतिक संसार में है। वह अपनी अच्छाईयों को संसार से छिपाकर रखता है। उसे अपनी वाह–वाही करवाना अच्छा नहीं लगता। वह जो भी देखता या सुनता है उसमें वह उस बिन्दु को चुनता है जिससे उसका अपने गुरु में प्यार और श्रद्धा का योगदान हो सके। वह सदा गुरु का गुणगान करता रहता है जोकि सब सुखों का भंडार है।

मनमुख हमेशा नई चीज़ें देखने में तत्पर रहता है। वह दूसरों के रहस्यों और निजी मामलों को जानने में तत्पर रहता है। वह यहाँ-वहाँ से अपने मन मुताबिक संकेत और बातें जानकर बुद्धिमता और चालाकी में वृद्धि करने की इच्छा रखता है। वह अपनी महान बुद्धि का प्रदर्शन करके वाह-वाही लूटने में बहुत खुश होता है।

15. गुरुमुख आध्यात्मिक अभ्यासों को नियमित रूप से करता है। हमेशा अपने सतगुरु की दयालुता पर निर्भर रहता है और उसकी अपने सतगुरु के पवित्र चरणों में दृढ़ श्रद्धा होती है।

मनमुख हर चीज़ में जल्दबाजी करता है। जल्दी से चीज़ों को पूर्ण करने की इच्छा रखता है। मनमुख जल्दबाजी में सतगुरु की दया, रहम, भरोसे और सतगुरु की सिखाई बातें भूल जाता है।

गुरुमुख के आचरण के बारे में जो कुछ बोला गया है, वह सिर्फ सतगुरु की दया से ही प्राप्त हो सकता है। सतगुरु जिस पर दयालु होते हैं वही इस भेंट को प्राप्त कर सकते हैं। जो सतगुरु के पवित्र चरणों से प्यार करते हैं और विश्वास करते हैं उन्हें एक दिन यह तोहफा ज़रूर मिलता है।

सतगुरु के चरणों के लिए प्यार सब अच्छाईयों का स्त्रोत है। जिसे प्यार का तोहफा मिलता है उसमें सारी अच्छाईयां अपने आप ही आ जाती हैं फिर मनमुख वाले लक्षण एक मिनट में गायब हो जाते हैं।

***

13

सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन गाने के समय दिया संदेश

जब दिल में तड़प उठती है

अहमदाबाद, गुजरात – 9 अक्टूबर 1992

सोहणा सोहणा मुखड़ा ते सोहणी सोहणी खिच्च वे
रुह पई उड्डे हवा दे विच वे.....
आ सचमुच (2) दर्श दिखा दाता मैं दिल दे दुखःड़े फोलां
इक वारी आ इक वारी वेहड़े वड़ दाता मैं वांग पपीहे बोलां
इक वारी आ इक वारी अक्खियां च वस दाता
मुड़ फेर कदी ना खोलां.....

चाहे गुरु सात समुन्द्र पार रहते हों हमें अपने गुरु से कौन जुदा कर सकता है? गुरु हमसे दूर नहीं वह हमेशा हमारे अंदर मौजूद हैं। हमें अपने दिल में गुरु के लिए तड़प बनानी पड़ती है। डॉक्टर हैमिल्टन ने अभी जो शब्द गाया है, इसमें सेवक के दिल में गुरु के लिए जो तड़प उठती है उस तड़प का वर्णन है। जब सेवक के अंदर यह तड़प पैदा हो जाती है सेवक दिल का आँगन तैयार कर लेता है तो गुरु को आवाज़ देता है कि गुरु एक बार इस दिल के आँगन में आ जाए। मेरे दिल में जो तड़प है वह मैं आपके साथ बाँट लूँ।

प्यारेयो, यह एक सच्चाई है कि जब सेवक के अंदर सचमुच इतनी तड़प पैदा हो जाए जैसी कि इस भजन में लिखी है तो कोई दीवार गुरु को दूर नहीं रख सकती। वह सदा ही सेवक के आँगन में आने के लिए तैयार है। कमी तो हमारी अपनी है कि हमारे अंदर वैसी तड़प वैसी याद वैसी श्रद्धा नहीं होती जैसी होनी चाहिए।

हमें महात्माओं की बानियों से और उनके जीवन से शिक्षा मिलती है कि जो दिल में है वही ज़ुबान पर आता है। महात्माओं के दिल में अपने गुरु के लिए प्यार था आभार था जिसे उन्होंने अपनी लेखनियों द्वारा प्रकट किया।

जब प्रेमी के अंदर तड़प उठती है उस वक्त जिस तरफ़ गुरु का आश्रम है अगर उस तरफ़ हवा भी जाती है तो वह प्रेमी हवा को भी संदेश देने लग जाता है कि तू उस तरफ़ जा रही है, तू मेरे प्यारे को संदेश देना अगर उस तरफ़ जानवर जाता है तो प्रेमी उससे भी कहता है प्यारेया, तू थोड़ी सी तकलीफ करे तो मेरे प्यारे को संदेश दे देना।

सेवक के लिए वह बड़ा ही सुहावना मौका होता है उसका दिल खिला हुआ होता है। गुरु को याद करता है आँखें पानी से भर आती हैं ज़ुबान बंद हो जाती है; स्थिति बयान नहीं की जा सकती। इस स्थिति को सेवक जानता है या गुरु जानते हैं जिनके लिए सेवक की आँखों से आँसू बह रहे होते हैं। तब गुरु से भी नहीं रहा जाता, वह भी सेवक के प्यार की कद्र करते हैं और उस तड़प को आकर बुझाते हैं। वे भी ज़रूर आते हैं और दिल के आँगन में बैठते हैं।

हाँ भई, काफी वक्त हो गया है जब से अहमदाबाद का प्रोग्राम तय हुआ। आप सब ने तड़प बनाई इस तड़प के पीछे भी परमात्मा कृपाल की दया काम करती है। वह खुद ही संगत में तड़प जगाते हैं और खुद ही सारा इंतज़ाम करते हैं।

आओ! उन्होंने हमारे अंदर दया करके जो तड़प बनाई है अब हम उससे पूरा फायदा उठाएं जो मिनट-सैकिंड मिले हैं हम उनकी याद में लगाएं। सोते-जागते, हर वक्त उनकी याद में बीते।

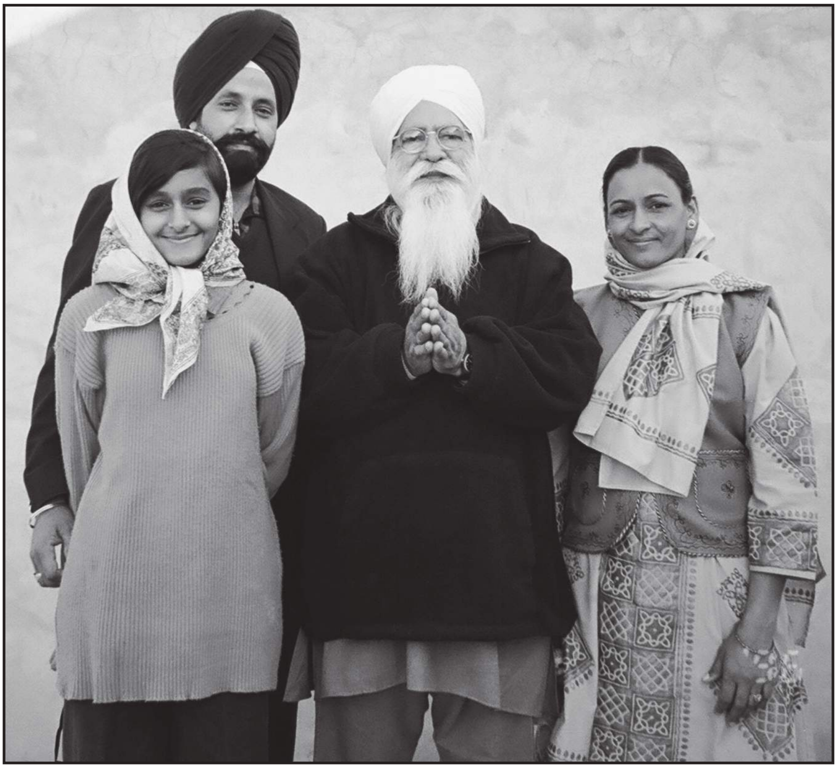

मैं आपके साथ वक्त बिताकर गुरु की याद मनाकर अभ्यास में बैठकर बहुत खुश होता हूँ। हमें मालूम है कि वे ही गुरु की याद मना सकते हैं जिनके दिलों में गुरु बैठे हैं।

हाँ भई, आज प्रेमियों के भजन बोलने का कार्यक्रम है। सबके दिल में इच्छा है, जिसे इजाज़त मिलती है वह अपनी बारी से पूरा फायदा उठाए। भजन बोलने से पहले पेज नम्बर बोलना है। पेज नम्बर बोलने का यह फायदा है कि दूसरे प्रेमियों को पता चल जाएगा और उनके लिए किताब से भजन ढूंढ़ना आसान हो जाएगा।

***

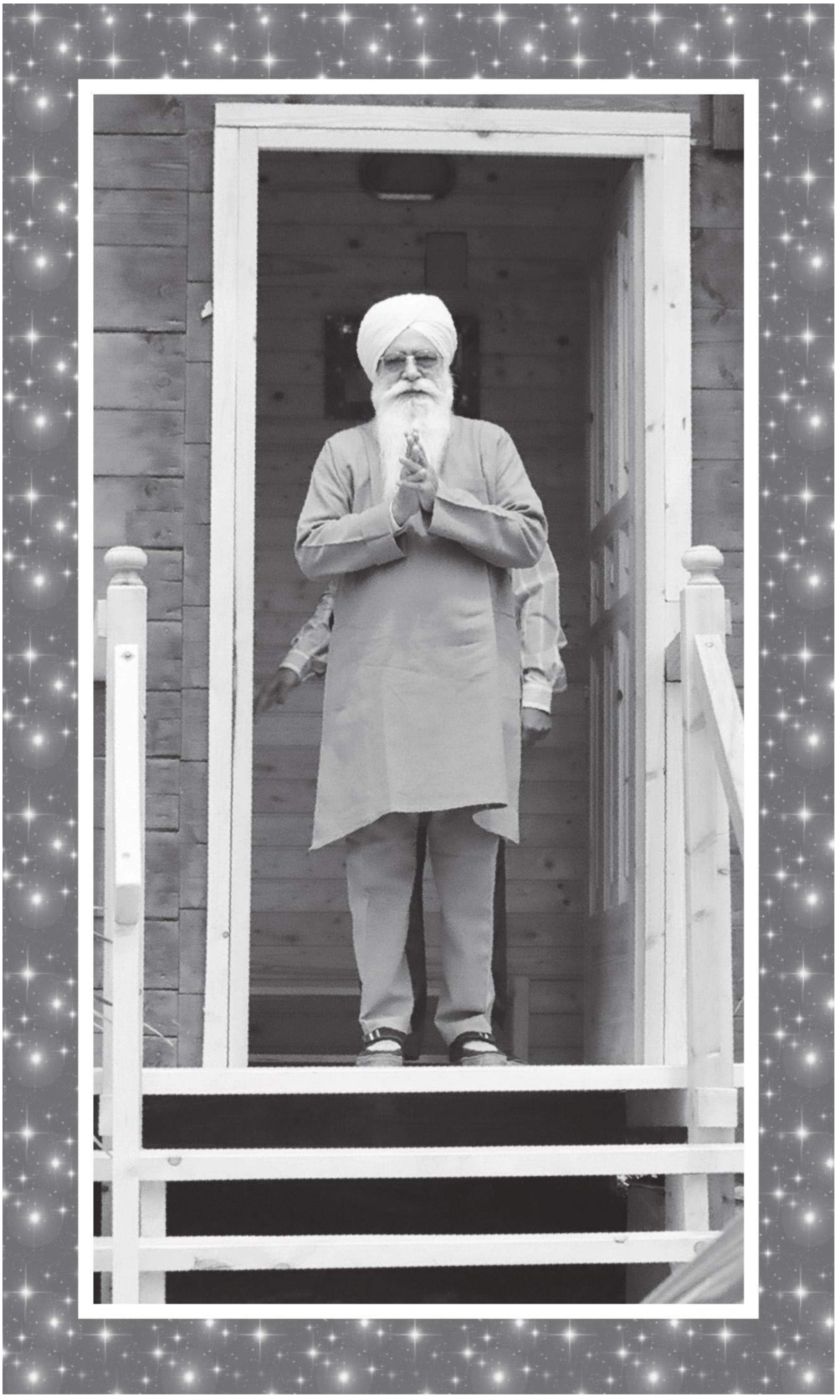

14

सन्त अजायब सिंह जी द्वारा बीमारी से उभरने के बाद संगत को दिया संदेश

सचखंड की सीढ़ी

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 2 अक्टूबर 1986

आप लोगों ने बहुत दिन तक सब्र किया अपना भजन–सिमरन किया। मेरे दिल में आप सबके प्यार की और आपके भजन–सिमरन की बहुत कद्र है। पूर्ण सन्त अपने शिष्यों से भजन–सिमरन का ही तोहफा चाहते हैं।

मेरे गुरुदेव जो मेरी आत्मा के स्वामी हैं, वह इस संसार में इन्सानी जामा धारण करके आए। आप कहा करते थे, ''सतसंगी का दिल फौलाद जैसा मजबूत होना चाहिए क्योंकि फौलाद बहुत ही मजबूत धातु होता है।''

आपने अनुराग सागर में तीन मशहूर देवताओं–ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नाम पढ़े होंगे। ब्रह्मा के पास परमात्मा की मौज में शरीर की रचना करने की जिम्मेदारी है; ब्रह्मा को जैसा आदेश मिलता है वह उसी हिसाब से शरीर की रचना करते हैं। विष्णु के पास पालन की जिम्मेदारी है। शिव के पास विनाश की जिम्मेदारी है। इन तीनों देवताओं में शिव बहुत ही भोले और सुंदर हैं।

आजकल आप शिव की जो तस्वीरें देखते हैं वे बहुत ही अलग हैं। संसार के अलग–अलग भागों में लोगों ने अपनी कल्पना के हिसाब से उनकी तस्वीरें बनाई हैं। मुम्बई में लोगों ने शिव की जो तस्वीरें बनाई हैं वे तस्वीरें वैसी नहीं हैं जैसी राजस्थान के लोग बनाते हैं। लोग अपनी कल्पनाओं से देवी–देवताओं की तस्वीरें

बनाते हैं इसलिए तस्वीरों में वे अलग दिखते हैं। हकीकत यह है कि शिव बहुत सुंदर और भोले थे। आपका झुकाव अपने पिता की तरफ़ था और आप हमेशा अपने पिता की भक्ति किया करते थे।

पार्वती एक राजकुमारी थी, वह शिव से शादी करना चाहती थी। पार्वती ने सोचा! शिव जैसे देवता से शादी करने के लिए अगर मुझे कई जन्मों तक इंतज़ार करना पड़े तो मैं ऐसा करने के लिए तैयार हूँ। पार्वती ने यह वरदान पाने के लिए कठोर आत्मसयंम रखा ताकि उसकी शादी शिव से हो जाए। पार्वती ने बहुत जन्मों तक भक्ति की और बहुत कर्मकांड किए। बहुत से लोगों ने पार्वती को समझाने की कोशिश की कि तुम एक राजकुमारी हो, शिव विष पीते हैं और अपने शरीर पर भस्म लगाए रखते हैं; शिव तुम्हारे लिए ठीक नहीं हैं लेकिन पार्वती ने उन लोगों पर विश्वास नहीं किया और अपने आत्मसयंम का पालन करती रही।

आप मन की आदत जानते हैं कि जो इन्सान शिखर तक पहुँच रहा हो मन उसे बहका देता है क्योंकि मन का यह काम है कि उसे नीचे ले आए। नारद को कई जगह मन कहकर बताया जाता है। नारद जी पार्वती के पास आए और उससे बोले, ''पार्वती! क्या तुम पागल हो जो तुम शिव से शादी करना चाहती हो? तुम शिव के इंतज़ार में अपनी शक्ति को बर्बाद कर रही हो। शिव विष पीते हैं और अपने शरीर पर भस्म लगाए रखते हैं। तुम एक राजकुमारी हो ऐसे आदमी का इंतज़ार करना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है।''

पार्वती ने नारद जी को जवाब दिया, ''चाहे मुझे करोड़ो साल भी इंतज़ार क्यों न करना पड़े और खरबों साल भी संयम क्यों न रखना पड़े तब भी मैं शिव से ही शादी करूंगी।'' पार्वती में इतनी दृढ़ता थी कि वह किसी के भी सामने झुकना नहीं चाहती थी।

इसी तरह सतसंगी को भी अपने गुरु के शब्दों में इतना ही विश्वास और दृढ़ता होनी चाहिए कि वह किसी के सामने न झुके। अगर परमात्मा भी आकर सतसंगी का इम्तिहान ले तो उसे झुकना नहीं चाहिए। सतसंगी को हमेशा अपने गुरु में विश्वास रखना चाहिए और अपने गुरु पर ही निर्भर रहना चाहिए।

मैं अक्सर अपने बचपन के हालात के बारे में बताया करता हूँ कि मेरे अंदर तड़प थी कि काश! मुझे ऐसे गुरु मिलें जो मन इन्द्रियों से ऊपर उठ चुके हो। जिन्होंने अपनी ज़िंदगी पवित्र तरीके से बिताई हो जैसे दस सिख गुरुओं के बारे में मैंने पढ़ा था। मेरी यह तड़प हमेशा बनी रही और मैं परमात्मा से यही विनती करता रहा। मैं किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिलना चाहता था जिसका जीवन विषय–विकारों में डूबा हुआ हो और जिसने अपने शिष्यों के साथ भोग–विलास किया हो।

मैं हमेशा यह सोचता रहता कि क्या मैं कभी पूर्ण गुरु से मिल पाऊंगा। मैं अपने प्यारे गुरु कृपाल का बहुत आभारी हूँ कि मेरे गुरु कृपाल वैसे ही हैं जिनके लिए मेरे दिल में तड़प थी और जिनकी खोज़ में मैं भटक रहा था। हालाँकि मैं उनके पूर्ण गुरु परमात्मा सावन से भी मिल चुका था जो महाराज कृपाल जितने ही पवित्र थे लेकिन मैं जैसे गुरु की खोज़ कर रहा था मेरे प्यारे गुरु कृपाल सिंह जी ठीक वैसे ही मुझे मिले। मेरे गुरु कृपाल मन–इन्द्रियों से ऊपर उठ चुके थे। उन्होंने अपनी ज़िंदगी बहुत ही पवित्रता से बिताई थी। वे सर्व गुणों से पूर्ण थे।

मैं बाबा बिशनदास जी और बाबा सावन सिंह जी का बहुत आभारी हूँ, जिनकी दया से मैं अपने आपको ऐसा बना पाया। इन्होंने मुझे गुरु की पवित्रता को ग्रहण करने लायक बनाया।

जब हम पूर्ण गुरु से मिलते हैं और गुरु की पवित्रता को ग्रहण करने लायक बन जाते हैं, तब गुरु के देने के अपने तरीके होते हैं और वह हमें हमारी ज़रुरत के हिसाब से सब कुछ देते हैं।

जुदाई का दर्द एक बादशाह की तरह है। जुदाई के दर्द का स्वागत वही कर सकता है जो अंदर से पवित्र हो चुका हो और जो गुरु की दया प्राप्त करने लायक बन चुका हो। अगर आप एक बादशाह का स्वागत करना चाहते हैं तो आपको भी बादशाह बनना पड़ेगा; एक बादशाह ही दूसरे बादशाह का अच्छा ख्याल रख सकता है। जब तक हम गुरु जितने पवित्र नहीं बनते, गुरु की दया पाने के काबिल नहीं बनते; तब तक हम गुरु की जुदाई के दर्द से फायदा नहीं उठा सकते।

एक नामलेवा बहुत ही भक्तिभाव और बहुत ही प्यार करने वाला पूर्ण गुरु का सेवक था। वह अभ्यास किया करता था, उसे अभ्यास में तरक्की भी मिल रही थी। उसके गुरु उससे खुश हुए और उन्होंने उसके सामने प्रकट होकर कहा,''आज तुम जो माँगोगे मैं तुम्हे वह देने के लिए आया हूँ। तुम कुछ भी माँग लो तुम्हें दे दिया जाएगा और मैं तुम्हें दिए बिना वापिस नहीं जाऊँगा।''

वह सेवक गुरु का बहुत ही अच्छा भक्त था। उस सेवक ने कहा, ''गुरु जी! सचखंड से यहाँ आने तक आप जितनी सीढ़ियों से चलकर आए हैं, मैं उन सीढ़ियों पर अपना सिर कुर्बान करता हूँ। मैं सिर्फ जुदाई का दर्द चाहता हूँ। अगर आप मुझे यह तोहफा देंगे तो मैं आपको याद करूँगा आपसे प्यार करूँगा। जब मैं आपको याद करूँगा तो मेरे अंदर प्यार प्रकट होगा और मैं आपकी ज़्यादा भक्ति कर पाऊँगा।'' जुदाई का दर्द एक बादशाहत की तरह है। जुदाई का दर्द सहकर हम बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि

गुरु अपने तरीके से शिष्यों पर दया करते हैं। यह शिष्य पर निर्भर करता है कि वह गुरु की कितनी दया प्राप्त कर पाता है।

मैंने कभी किसी की निन्दा नहीं की और परमात्मा मुझसे कभी किसी की निन्दा न करवाए। मैं सदा दूसरों की निन्दा करने के खिलाफ हूँ। उन आचार्यों और अखोती महात्माओं की दशा देखकर बहुत ही दया आती है जो अमेरिका जाते हैं वहाँ जाकर अपनी किसी शिष्या से शादी कर लेते हैं भोगी कीड़ा बनकर वहीं रह जाते हैं। जो अखोती महात्मा परमार्थ की आड़ में ऐसे काम करते हैं और जो लोग उन्हें मिलने आते हैं उनकी स्थिति देखकर बहुत दया आती है।

सन्तबानी आश्रम अमेरिका में एक महिला ने सोचा कि मैं भी ऐसे अखोती महात्मा जैसा ही होऊंगा। मैं जब वहाँ सतसंग दे रहा था तो वह मेरे बारे में ऐसा ही सोच रही थी। उसने सोचा कि मैं सतसंग के बाद अपने कमरे में जाकर टीवी चलाकर अपना मनोरंजन करूंगा। ये उसके अपने विचार थे कि भारत से जो महात्मा आते हैं, मैं भी उन्हीं की तरह करूँगा।

अगले दिन उस महिला ने मुझसे अपने उन विचारों के लिए माफी माँगी। उसको कुछ संशय हुआ तो उसने मुझसे पूछा,''क्या मैं शादी करके अमेरिका में ही बस जाऊंगा?'' मैंने उस महिला से कहा पहले मैं तुम्हें अपनी स्थिति के बारे में बताऊंगा कि मैं औरत के शरीर को किस नज़र से देखता हूँ।

मेरी नज़र में औरत का शरीर एक गंदगी का थैला है जिसकी आँखों से, नाक से, मुँह से और शरीर के सभी हिस्सों से गंदगी आ रही है। मेरे लिए यह गंदगी के एक थैले से ज़्यादा कुछ भी नहीं है। वैसे ही आदमी के शरीर में से भी गंदगी ही आती है और मुझे औरत के शरीर से किसी किस्म का आकर्षण महसूस नहीं होता।

बाबा बिशनदास जी ने मुझसे कहा था कि औरत या आदमी के शरीर की तरफ़ देखो तो आपको नज़र आएगा कि यह शरीर एक गंदगी के थैले से ज़्यादा कुछ भी नहीं। मैं औरत के पैरों को भी देखना पसंद नहीं करता इसलिए ऐसा नहीं हो सकता कि मैं किसी औरत की तरफ़ आकर्षित हो जाऊँ या उससे शादी कर लूं। रामचन्द्र जी के गुरु विशिष्ठ जी थे। जब विशिष्ठ जी रामचन्द्र को शिक्षा दे रहे थे तो उन्होंने राम से कहा:

थैला यह गंदगी दुर्गन्धी स्थान। बिष्टा है इसमें भरा और न कुछ भी जान।।

परमात्मा ने आदमी और औरत दोनों के शरीर बनाए हैं। औरत और आदमी दोनों के शरीर से गंदगी बाहर आती है। तुम्हें औरत के शरीर की तरफ आकर्षित नहीं होना चाहिए और परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। तुम्हें अपना मकसद अपने सामने रखना चाहिए कि तुम्हें परमात्मा ने इस संसार में किस काम के लिए भेजा है? तुम्हें औरत की शारीरिक सुंदरता की तरफ़ ध्यान नहीं देना चाहिए।

मैं अपने महान गुरु बाबा बिशनदास जी का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे यह देखने का वरदान दिया कि शरीर से सिर्फ गंदगी ही बाहर आती है इसलिए मुझे शरीर की तरफ़ कोई भी आकर्षण महसूस नहीं होता। जब मैंने सतसंग में यह बात बताई तब सतसंग से वापिस आते हुए मेरे एक प्यारे मित्र ने मुझसे विनती की, ''आप मुझे वह वरदान दे दें जो आपको बाबा बिशनदास जी ने दिया है ताकि मैं भी देख पाऊं कि शरीर से सिर्फ गंदगी ही आ रही है और मैं शरीर की तरफ़ आकर्षित न होऊँ।'' मैंने उससे कहा, ''प्यारेया! यह वह चीज़ नहीं है जो हम माँग सकें इसे भजन-अभ्यास करके कमाना पड़ता है। अगर हम भजन-अभ्यास करें, अपनी ज़िंदगी को पवित्र रखें और गुरु की आज्ञा का पालन करें तो हमें ये सब चीज़ें

माँगने की ज़रुरत नहीं। गुरु हमें यह वरदान अपने आप ही दे देंगे। अगर हमने ऐसा मन बना लिया है कि हम अंदर की असलियत देख सकें तो यह चीज़ हम अभ्यास करके, अपने आपको पवित्र रखकर और गुरु पर विश्वास रखकर ही पा सकते हैं।''

प्यारेयो! आप अपनी ज़िंदगी को पवित्र रखें। अपने गुरु में विश्वास रखकर अभ्यास करें ताकि आपको भी वैसा ही वरदान दिया जा सके। आपको भी वैसा ही दिखाई दे कि शरीर से सिर्फ गंदगी ही बाहर आती है ताकि आप शारीरिक मोह-बंधन से ऊपर उठें।

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें इन्सानी जामा मिला है, पूर्ण गुरु मिले हैं। हम नहीं जानते कि इस शरीर में आने से पहले हम कितनी बार शरीर में आए हमने कितनी बार शादी की; हम कितनी बार पति या पत्नी बने और हमारे कितने बच्चे थे। अगर हमें गुरु नहीं मिलते तो पता नहीं हमें कितनी बार इस संसार में आना पड़ता।

हम अपने गुरु के आभारी हैं कि उन्होंने हमें नामदान दिया और वह युक्ति बताई जिससे हम अपने असली घर सचखंड वापिस जा सकते हैं। हम भजन-सिमरन करें अपने मन को पवित्र रखते हुए अपने गुरु में विश्वास रखें तो वह खुद ही आकर हमारी मदद करेंगे और हमें ऊपर खींच लेंगे। अगर हम गुरु की भक्ति करते हैं और हमें गुरु पर विश्वास है तो गुरु हमारे लिए काम करते हैं।

यह संभव है कि जब आप बीमार हैं आपको मदद की ज़रुरत है तब आप अपने गुरु को याद करें तो गुरु आकर आपकी मदद करेंगे क्योंकि गुरु हमेशा आपकी मदद करने के लिए मौजूद हैं। कबीर साहब कहते है:

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोय।।

***

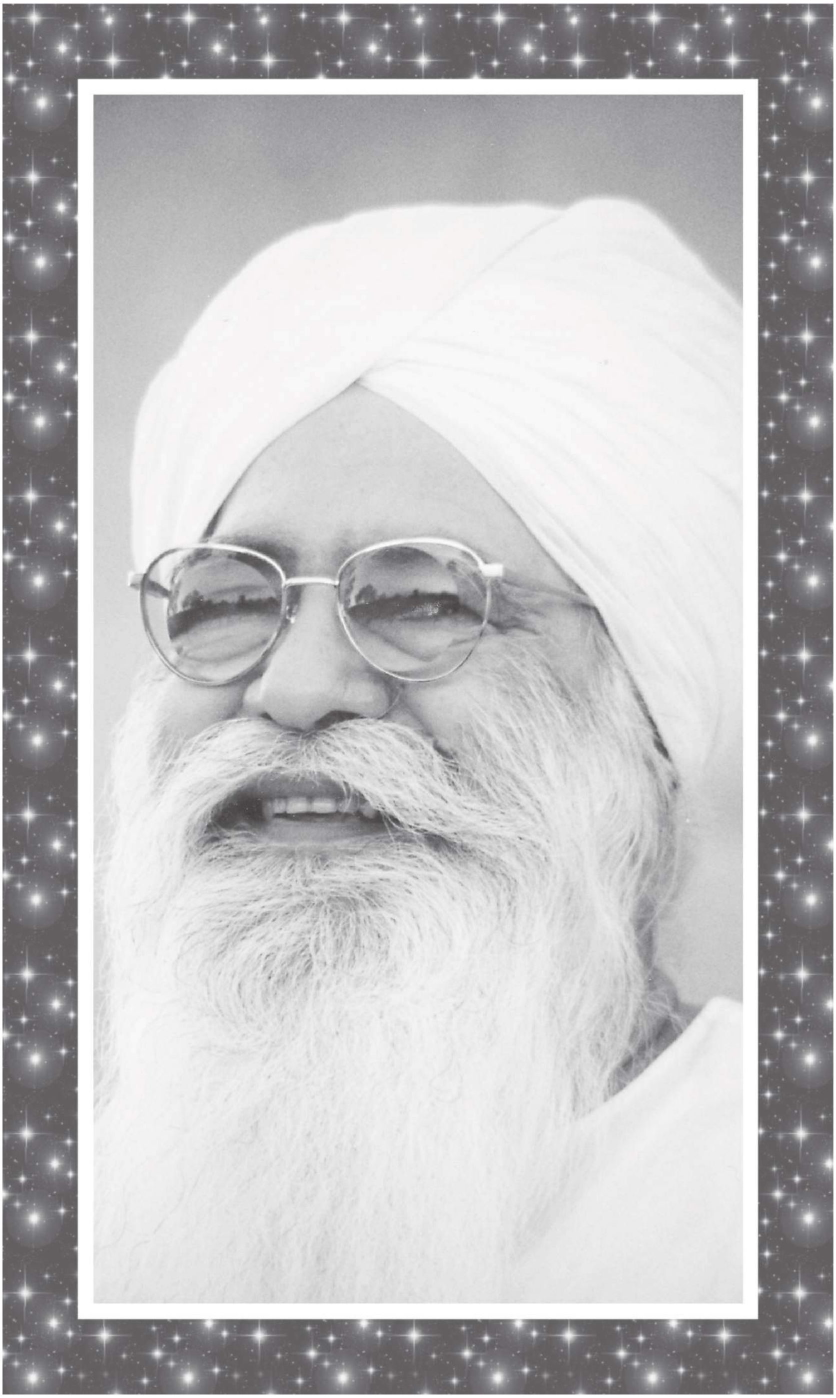

15

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

भरोसा, प्यार, भक्ति और मेहनत

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 25 सितम्बर 1988

सेवक : *प्यारे महाराज जी, मुझे नामदान प्राप्त हुए आठ साल हो गए हैं लेकिन मेरी तमाम कोशिशों के बावज़ूद भी मैंने भजन–अभ्यास में कोई तरक्की हासिल नहीं की। मेरे अभ्यास से यह रास्ता उजागर नहीं होता और न ही इस रास्ते पर मेरा अभ्यास उजागर होता है। इस वजह से लोग मेरी और आपकी निन्दा करते हैं तब मुझे बहुत दुख होता है।*

मैं आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि ऐसा क्यों है, क्या मेरा स्वभाव बहुत ज़्यादा खराब है, क्या मेरे कर्म इतने ज़्यादा भारी हैं या कोई और कारण है कि मुझे कुछ भी प्राप्त नहीं होता? मेरी सुरक्षा के लिए आपको अभी और कितना दुख उठाना पड़ेगा। मैं नहीं जानती कि मैं आपसे क्या उम्मीद करूँ?

बाबा जी : हाँ भई, इस सवाल के बारे में हर सतसंगी को ठंडे दिल से सोचना चाहिए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पति–पत्नी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते उन्हें एक जैसा तज़ुर्बा नहीं होता। इसी तरह हमें अपने कर्मों के बारे में पता नहीं होता कि हम पिछले किस कर्म का हिसाब–किताब दे रहे होते हैं। वह कर्म अच्छा है या बुरा है, लेकिन आत्मा के ऊपर बुरे कर्म का बुरा ही प्रभाव पड़ता है।

मैं बताया करता हूँ कि हार जाना उतना बुरा नहीं होता जितना हार मान लेना बुरा होता है। हमारा व्यक्तिगत तज़ुर्बा यह बताता है अगर हम प्यार, भरोसे और श्रद्धा से इस रास्ते पर चलते हैं तो हमारा सब कुछ ठीक हो जाता है। हमें अपनी गलती का खुद ही पता चल जाता है और शिकायत की कोई जगह नहीं रहती।

हमारा तज़ुर्बा बताता है कि सौ, दो सौ, चार सौ लोगों को एक साथ नामदान दिया जाता है लेकिन सबके तज़ुर्बे एक जैसे नहीं होते। कई प्रेमियों को दो–दो बैठकें भी दी जाती हैं लेकिन कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। अगर वे भी प्यार और भरोसे से अपना अभ्यास करते हैं तो आखिर उनकी भी यह शिकायत खत्म हो जाती है।

बहुत सारी अच्छी आत्माएं नामदान लेने के लिए आती हैं उन्हें ज़्यादा समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। बस बैठे तवज़्जो दी और वे सब अच्छे तज़ुर्बे का इकबाल करते हैं क्योंकि वे प्रेमी आत्माएं होती है। कई बार हम गलती करते हैं लेकिन हमारा मन धोखेबाज़ है, वह अपनी गलती समझने नहीं देता।

सन्तबानी आश्रम में पहले टूर पर काफी लोगों को नामदान दिया गया। वहाँ साऊथ अफ्रीका की एक प्रेमी आत्मा आई थी। उसे न आवाज़ सुनाई दी न रोशनी दिखाई दी लेकिन उसने बहुत सब्र और सौम्यता से कहा, ''मुझे इसके कारण का पता है सब ठीक हो जाएगा।'' उसने अपने घर जाकर नित्य–नियम से प्यार से अपना भजन–अभ्यास किया। जिसका उसके परिवार पर बहुत अच्छा असर पड़ा उसके पति ने भी नाम लिया और वहाँ बहुत सारी संगत बन गई। उसका सब्र, भक्ति–भाव और प्यार था कि एक साल बाद उसका सब कुछ ठीक हुआ।

इसी तरह वहाँ एक और प्रेमी को दो बैठकें दी गई लेकिन उसे कोई तज़ुर्बा नहीं हुआ। नामदान से पहले वह जो कुछ करके आया था उसके बारे में उसने कुछ नहीं बताया। कुछ समय बाद उसने खत लिखा कि उसे उस रोज़ तज़ुर्बा नहीं हो रहा था, उसका कारण उसे पता था कि वह क्या करके वहाँ गया था। उसे अफसोस था कि उस समय उसे वह सब बताने में शर्म आ रही थी।

प्यारेयो, मन की आदत है यह अपने ऊपर इल्ज़ाम नहीं लेता हमेशा दूसरे पर इल्ज़ाम लगाता है। इसलिए डायरी रखना बेहतर होता है। अगर हम डायरी रखें तो हम अपने आपको कुछ ही दिनों में सुधार सकते है।

बाबा सावन सिंह जी पहाड़ पर गए। वहाँ जितने प्रेमियों को नामदान दिया सबको अच्छा तज़ुर्बा हुआ। बाबा सावन सिंह जी बहुत खुश हुए। आप हमेशा अपने सतसंगों में ज़िक्र किया करते थे, ''पहाड़ी आत्माएं बहुत अच्छी हैं प्योर और निर्मल हैं; नाम देते ही उनकी सुरत अंदर चली गयी।''

इसी तरह जब बैंगलोर में कार्यक्रम था हालाँकि वहाँ के प्रेमी अच्छी तरह हिन्दी भी नहीं समझते। वहाँ नाम लेने वाले काफी लोग थे लेकिन किसी को भी दूसरी बार बिठाने का सवाल ही पैदा नहीं हुआ। बड़ी अच्छी आत्माएं थीं उनके अंदर बहुत तड़प थी।

मैं पिछले साल कोलंबिया गया। वहाँ बहुत लोग नामदान लेने के लिए आए थे। उन्होंने कई दिन सतसंग सुना उन्हें समझ आया। बहुत प्यार भरी आत्माएं थी किसी ने भी दूसरी बैठक नहीं ली। आप सोचकर देखें! सन्तमत कोई सरकारी सर्विस नहीं कि इतने साल बाद सुरत अंदर जाएगी या कोई तज़ुर्बा होगा। यह हमारे **प्यार, भरोसे, मेहनत और पवित्र ख्यालों पर निर्भर होता है।**

प्यारेयो, ठंडे दिल से समझने वाली बात यह है कि हमें भरोसा भी होता है और हम अभ्यास भी करते है लेकिन जो गलतियाँ रोज़ करते हैं उस तरफ़ हमारा ध्यान नहीं होता। जिस तरह मरीज़ डॉक्टर से दवाई लाता है उसका डॉक्टर पर भरोसा होता है। वह दवाई पर पैसे भी खर्च करता है। अगर मरीज डॉक्टर के कहे मुताबिक समय पर दवाई न खाए और परहेज न रखे तो आप देखें! महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे,''मरीज बिस्तर में दवाईयाँ अलमारी में और गालियाँ डॉक्टर को।'' हमारी यही हालत है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

ठीका ठौर ना पावई गुरु को दोष लगावई।

प्यारेयो, जहाँ तक हमारी निन्दा का या गुरु को गालियाँ दिलवाने का सवाल है यह हमारी नासमझी, हमारी खामी होती है। सतसंगी की जिम्मेदारी बनती है कि घर और अड़ोस-पड़ोस में एक उदाहरण बनकर पेश आए। उसे देखकर और लोग भी नामदान प्राप्त करें अपना जीवन बनाएं।

हमारा परिवार सिख समाज में से है। सिखों में सुबह जपजी साहब का पाठ पढ़ना ज़रूरी समझा जाता है। मैं अपने पिता की एक दिलचस्प बात सुनाया करता हूँ कि मेरे पिता को एक महात्मा मिला जो अंदर नहीं जाता था सिर्फ माला ही फेरता था। उस महात्मा ने मेरे पिता जी को माला देकर कहा, ''जपजी साहब पढ़ा करें और यह माला फेरा करें। आपके बिगड़े हुए कामकाज ठीक हो जाएंगे।'' हम जानते हैं कि घरों में बहुत समस्याएं होती हैं अगर समस्याएं न भी हों तो यह मन समस्याएं खड़ी कर देता है।

मैं यह भी बताया करता हूँ कि मेरे पिता जी सुबह जपजी साहब पढ़ते और हाथ से माला फेरा करते तब नौकरों को गालियाँ भी देते

और पशुओं को चारा भी डालते थे। मैं और मेरी माता उनसे कहती कि भगवान आपका जपजी साहब पसन्द करेंगे या आपकी गालियाँ पसन्द करेंगे? ऐसे लोग माला देने वालों को भी बुरा कहलवा देते हैं और माला फेरने वालों को भी बुरा कहते हैं।

बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिता जी से कहा, ''जब आप माला फेरते हैं तब आप चुप रहकर जपजी साहब पढ़ें ताकि लोग आपकी तारीफ करें कि जिस दिन से इसने माला पकड़ी है, अब यह किसी के साथ झगड़ा नहीं करता; किसी से ज़्यादा बात नहीं करता। अब यह बहुत शान्त इन्सान बन गया है।''

प्यारेयो, सतसंगी में से नाम की खुशबू आनी चाहिए। सतसंगी को तज़ुर्बों की तरफ़ नहीं अभ्यास की तरफ़ ध्यान देना चाहिए कि मैंने भजन-अभ्यास करना है। मन रोए चिल्लाए फिर भी आप इसे भजन-अभ्यास में बिठाएं। शब्द आपके अंदर है, प्रकाश और तारे भी आपके अंदर हैं और देखने वाली शक्ति भी आपके अंदर है। आपके शब्द रूप गुरु कण-कण में व्यापक हैं वह भी आपके अंदर मार्गदर्शन करने के लिए आपका इंतज़ार करते हैं।

हमारी शिकायतें उसी वक्त शुरू हो जाती हैं जब हम अभ्यास में नहीं बैठते अगर हम अभ्यास में बैठें और सन्तों ने हमें जो परहेज बताए हैं कि किस तरह एकाग्र होना है किस तरह विषय-विकारों से मन को मोड़ना है किस तरह दुनिया में से ख्याल निकालकर ख्यालों को पवित्र करना है और किस तरह बाहर से ख्याल निकालकर अंदर जाना है तो यह कोई खास मुश्किल काम नहीं लेकिन हमारा जानी दुश्मन मन इसे मुश्किल बनाए बैठा है।

सेवक : *जब कोई सतसंगी गुरु से दर्शन की माँग करता है तो क्या वह चोर होता है?*

बाबा जी : हाँ भई! जिस वक्त हमारा मन शान्त होता है तीसरे तिल पर एकाग्र होने की कोशिश करता है उस वक्त हम गुरु का दर्शन माँगते हैं नहीं तो मन हमें बाहर ही भटकाता रहता है, वह चोर नहीं होता। उस वक्त सेवक का दिल गुरु के सामने आने के लिए करता है कि गुरु की देह को गुरु स्वरूप को देखकर अभी मेरा दिल नहीं भरा। जब ऐसा ख्याल आए तब सतसंगी को ऐसे मौके से फायदा उठाना चाहिए और अभ्यास में बैठ जाना चाहिए।

गुरु ने हमें नाम दिया होता है वे बेइंसाफ नहीं होते। वे हमारी आत्मा की इच्छा पूर्ति करते हैं क्योंकि वे हमारी हर आवाज़ सुनने के लिए नज़दीक से नज़दीक शब्द रूप में हमारे अंदर बैठे होते हैं। गुरु रोम-रोम में समाए होते हैं, वे सेवक को एक सैकिंड के लिए भी नहीं छोड़ते।

दर्शन और तड़प के बारे में मैं आपको छठे गुरु हरगोबिंद जी और उनके शिष्य की कहानी सुनाता हूँ। गुरु हरगोबिंद जी का सेवक रूपचंद और उसका भाई था। आमतौर पर अप्रैल, मई के महीने काफी गर्म होते हैं। उस वक्त रूपचंद और उसका भाई अपने खेत में गेहूँ की कटाई कर रहे थे। उन्हें प्यास लगी तो वे पानी पीने के लिए एक झरने पर गए।

उस समय आज की तरह हिन्दुस्तान में फ्रिज नहीं हुआ करते थे। उन दिनों ठंडा पानी बहुत मुश्किल से मिलता था। जब उन्होंने देखा कि झरने का पानी बहुत ठंडा है तो उन्होंने सोचा कि यह पानी तो गुरु के पीने वाला है हम इसे नहीं पीते। गर्मी बहुत थी वे व्याकुल हो गए लेकिन उन्होंने पानी नहीं पिया। उनके खेत से गुरु हरगोबिंद जी के आश्रम का फासला तकरीबन पचास-साठ मील का था। उस समय गुरु हरगोबिंद जी संगत में बैठे थे।

गुरु हरगोबिंद जी बहुत अच्छे घुड़सवार थे। आपने सतसंग करते हुए कहा, ''हमारे सेवक प्यासे मर रहे हैं हमने बहुत जल्दी जाना है।'' वे दोनों प्यास से व्याकुल होकर बेहोश हो गए थे। गुरु हरगोबिंद जी ने उनके खेत में आकर उन दोनों को पानी पिलाया। पचास मील दूर आकर गुरु हरगोबिंद जी ने जिस जगह उन दोनों सेवकों को पानी पिलाया था, आज वहाँ पर यादगार बनी हुई है। सोचकर देखें! वहाँ कौन सा टेलिफोन गया था कौन सी तार गई थी? दिल से दिल को राह होती है। गुरु जानीजान होते हैं। गुरु ने आकर उन्हें दर्शन दिए और उनकी आत्मा की प्यास भी बुझाई।

इसी तरह राजा राम सराफ महाराज सावन सिंह जी के काफी प्यारे प्रेमी थे। महाराज कृपाल बताया करते थे कि एक बार राजा राम खरबूजा खाने लगे तो खरबूजा बहुत मीठा लगा। राजा राम के दिल में ख्याल आया कि यह खरबूजा तो महाराज जी के खाने वाला है; क्यों न उनको ही भोग लगवाया जाए!

मुल्तान से डेरा ब्यास काफी दूर है। राजा राम उसी वक्त खरबूजा लेकर कार में डेरा ब्यास के लिए भागे। जब डेरा ब्यास पहुँचे तो पता चला कि महाराज जी सतसंग देने के लिए होशियारपुर की तरफ़ गए हुए हैं। रास्ते में काफी तूफान आया था सड़को पर काफी पेड़ भी टूट कर गिरे हुए थे। आखिर राजा राम खरबूजा लेकर होशियारपुर पहुँचे। राजा राम को देखकर महाराज सावन सिंह जी हँसकर बोले, ''राजा राम, तूने इतनी तकलीफ क्यों की? खरबूजा तो मुझे तभी मिल गया था जब तूने मुझे याद किया था।''

आप देखें! किस तरह शिष्य के अंदर तड़प होती है उसकी तड़प को गुरु ही पूरी करते हैं। जिसने प्यार जगाया है वही प्यार की कद्र जानते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

बिन बोलया सब कुछ जांणदा किसपे करिए अरदास।

वह बिना बोले सब कुछ जानता है हम किसके आगे अरदास करें। हम अरदास से उस समय निराश हो जाते हैं जब हम यह नहीं समझते कि जो वस्तु हम माँग रहे हैं उससे हमारा फायदा होगा या नुकसान होगा। जीव अंधा है इसे पता नहीं। यह समझता है कि मुझे इस चीज़ से फायदा होगा लेकिन उससे बहुत भारी नुकसान होना होता है। इसका फैसला गुरु ही कर सकते हैं कि कौन सी वस्तु ठीक है कौन सी ठीक नहीं। अगर हम दर्शन माँगते हैं तो वह दर्शन ज़रूर देते हैं।

आप जहाँ बैठे हैं आज यहाँ सड़क, पानी, बाग जैसी सब सहूलियतें हैं लेकिन जब हुज़ूर कृपाल इस गरीब के पास आते थे तब यहाँ ऐसी कोई सहूलियत नहीं थी। यहाँ हर तरफ़ रेत ही रेत थी, रेत के टीले थे। यह दर्शन माँगने का ही फल था कि आप यहाँ आकर दर्शन देते थे। जहाँ पर आप गुफा देखते हैं वहाँ छोटा सा ही मकान था जिसे आपने अपना हुक्म देकर बनवाया था।

मैं यही कहा करता हूँ कि जब तक आँसू पोंछने वाला पास न हो रोने का मजा नहीं आता। यह एक सच्चाई है कि आप आँखें पोंछने के लिए भी आते थे और ढ़ांढ़स भी बँधाते थे। अगर आप ढ़ांढ़स न बँधवाते तो यह गरीब आत्मा अभ्यास न कर पाती आपके रास्ते पर नहीं चल सकती थी।

शिष्य एक पुतली की तरह और गुरु नट की तरह होते हैं। पुतली की डोर नट के हाथ में होती है। नट जो खेल करवाए पुतली वह खेल करती है। सवाल हमारे भरोसे और श्रद्धा का है कि हमारे अंदर कितनी गुंजाईश है कि हम उसका हुक्म मान सकें। सबसे बड़ा पुण्य सबसे बड़ी सेवा गुरु का हुक्म मानने में ही होती है।

अगर हम गुरु का हुक्म मानते हैं तो हमारे दर्शन माँगने पर, चुटकी बजाने से भी कम समय में गुरु हाज़िर हो जाते हैं। जब हम अंदर जाकर अपनी आँखों से तीनों पर्दे उतार लेते हैं तो हमें पता चलता है कि गुरु देह से बंधे नहीं होते। देह तो उन्होंने संसार मंडल में आकर धारण की होती है। गुरु ने भी देह यहीं छोड़ जानी है उनका असली रूप शब्द–नाम है जो कण–कण में मौजूद है। उन्होंने बाहर से नहीं आना आपको अंदर से ही दर्शन देने हैं।

आमतौर पर गुरु और शिष्य में ऐसे तज़ुर्बे होते ही रहते हैं। गुरु किसी और व्यक्ति के अंदर बैठकर प्रेमी का काम कर जाते हैं और प्रेमी अच्छी तरह समझता है कि मेरे साथ जो हमदर्दी दिखाई है ये मेरे गुरु ने ही दिखाई है और इसे प्रेरित करने वाले भी गुरु ही हैं।

बाबा जयमल सिंह जी ने महाराज सावन सिंह जी से कहा था, ''देख भई! गुरु किसी भी बंदे से काम करवा लेते हैं। ऐसे वक्त हमें समझना चाहिए कि यह गुरु का ही खेल है।'' कई बार ऐसा होता है कि रात का वक्त है हम रास्ता भूल जाते हैं, तब गुरु असली रूप धारण नहीं करते किसी और का रूप धारण करके सेवक को सही रास्ते पर डाल जाते हैं कि तू इधर नहीं उधर जा। सेवक का गुरु की तरफ़ ध्यान नहीं होता अगर गुरु की तरफ़ ध्यान हो तो गुरु असली रूप में भी आ सकते हैं।

बहुत बार सेवक उस स्वरूप को समझ नहीं पाता। अगर सन्त ऐसी करामात दिखाते हैं तो हम संसार में उनका जीना ही मुश्किल कर देते हैं। हम कहते हैं कि यह इतना बली है इतना ज्ञानी है इसने इतने चमत्कार किए हैं। सन्त ऐसा नहीं करते वह कोई न कोई पर्दा डाल देते हैं। सेवक के सभी काम करते हैं लेकिन जाहिर नहीं होने देते अपने आप भी नहीं जताते कि हम कुछ हैं।

एक बार की बात है कि हम हनुमानगढ़ के पास लीलांवाली नहर के पास से जा रहे थे। जैसे आज बारिश हुई है उस दिन भी अचानक बारिश हुई थी। दिन ढ़लने वाला था और सड़क पर बड़े–बड़े खड्डे थे। हमारी जीप एक खड्डे में गिर गई जहाँ से निकलना बहुत मुश्किल हो रहा था। थोड़े दिन पहले ही मुझे नाम मिला था। मेरे साथ दो–तीन प्रेमी थे हमारा ड्राईवर पदमपुर से था। मैंने ड्राईवर से कहा कि मैं जीप के अगले हिस्से को पकड़ता हूँ तू रेस दे तेरी जीप निकल जाएगी। खड्डा बहुत गहरा था अगर वहाँ जीप गिर जाती तो निकलने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। शायद! हमें चोटें लगती और जीप पलट भी जाती।

उस समय मैंने बहुत प्यार से कहा, ''हे सतगुरु, जैसे तूने द्रौपदी की लाज रखी थी आज हमारी डोर तेरे हाथ में है। द्रौपदी कृष्ण की शिष्या थी। जब दुर्योधन भरी सभा में द्रौपदी को नग्न कर रहा था तब द्रौपदी ने कृष्ण की आराधना की कृष्ण को याद किया तो वहाँ साड़ियों के अम्बार लग गए। उसी तरह हे सतगुरु, आज हमारी डोर आपके हाथ में है।'' हमारी जीप निकल गई। यह मेरी करामात नहीं थी। मुझे तो अभी नया–नया ही नाम मिला था। यह किसकी करामात थी? यह करामात महान गुरु कृपाल की थी जिन्हें हमने याद किया था कि आपके बगैर इस बेड़ी को कोई किनारे लगा ही नहीं सकता। गुरु पर्दे के पीछे बैठकर सेवक के सारे काम करते हैं। जो अपना बाहुबल छोड़कर गुरु के सहारे हो जाते हैं वह उनके सारे काम करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आमतौर पर हम लोग क्या करते हैं? लड़का बीमार हो गया गुरु के आगे अरदास करते हैं कि इसे ठीक करें। हमें कर्मों के बोझ का तो पता नहीं!

लड़का ठीक नहीं हुआ तो गुरु से भरोसा तोड़ लेते हैं। हमारे ऊपर कोई मुकदमा हो गया उसमें हम अपनी गलती नहीं देखते कि इसमें हमारा क्या कसूर है? अगर मुकदमें में जीत नहीं मिलती तो हम गुरु से भरोसा तोड़ लेते हैं।

हमें बच्चे की इच्छा होती है अगर बच्चा पैदा नहीं होता तो गुरु से भरोसा तोड़ लेते हैं। बच्चा पैदा हो गया अगर बच्चा रोता है फिर कहते हैं महाराज जी, अब आप इसे चुप भी कराएं अगर ऐसा नहीं होता तो हम भरोसा तोड़ लेते हैं।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसे लोगों ने सतगुरु से क्या प्राप्त करना है? जो लोग गुरु से ऐसे काम करवाना चाहते हैं वे अपने घर पर ही तशरीफ रखें। सन्तमत से वही लोग फायदा उठा सकते हैं जो नाम जपना चाहते हैं, गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहते हैं। अगर हमारी कोई मंशा पूरी नहीं होती तो सेवक को यह देखना चाहिए कि इसमें मेरा ही कोई कसूर होगा। ये बात मेरे फायदे की नहीं होगी इसलिए गुरु ने पूरी नहीं की। गुरु हर बात को सुनते हैं और सेवक की हर मुनासिब मदद करते हैं।''

सारी दुनिया मन के आगे नाचती है लेकिन मन शब्द धुन के आगे नाचता है। गुरु और शिष्य का रिश्ता बहुत गहरा है। इस दुनिया में भी गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है और यहाँ से जाकर अगली दुनिया में भी सम्बन्ध है। बाकी सारे रिश्ते दुनियावी हैं। कई हमारे जीते जी ही साथ छोड़ जाते हैं, नहीं तो मौत के वक्त सभी साथ छोड़ जाते हैं। गुरु और शिष्य का रिश्ता वर्णन से बाहर है, यह रिश्ता अटूट है।

***

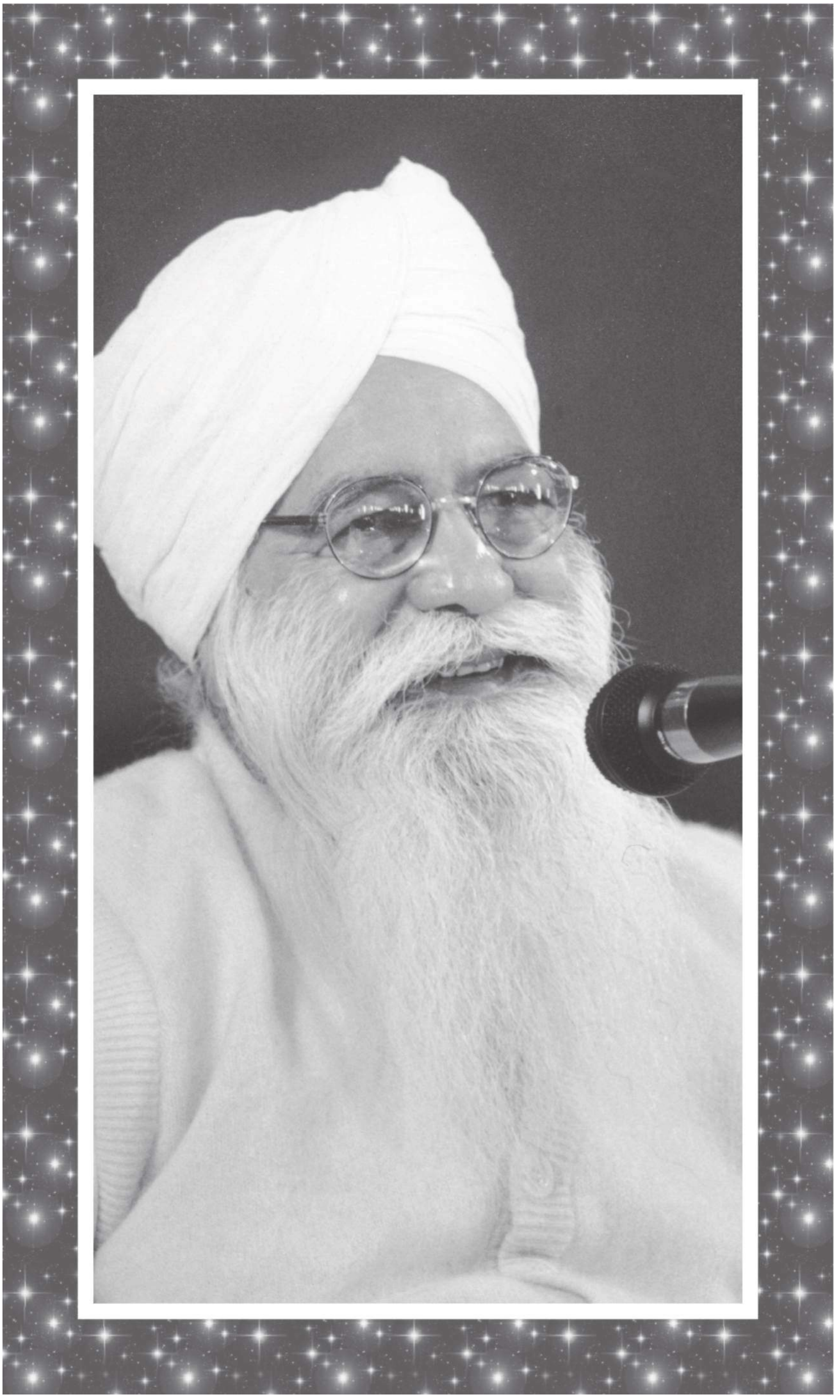

16

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु के प्रति सच्चा समर्पण

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 2 मार्च 1988

सेवक : *गुरु के अंदर भगवान है। दुनिया में अपना जीवन बिताते हुए गुरु के प्रति अपने आपको समर्पित करने के बारे में सेवक का क्या रवैया होना चाहिए? इसके बारे में क्या आप कुछ बताना पसंद करेंगे।*

बाबा जी : हाँ भई! सवाल बहुत अच्छा है। हम रोज़ सतसंग सुनते है और सन्त–महात्माओं की लिखी हुई लेखनियाँ भी पढ़ते है। इसके बारे में सन्तों ने बहुत कुछ बताया है। उन्होंने खुद भी इस संसार में इसी तरह का जीवन व्यतीत किया है। हमें उदाहरण दिया है कि आप भी इस तरह का जीवन व्यतीत करें। गृहस्थ में रहते हुए भजन–सिमरन करें ख्यालों को पवित्र बनाएं। आपको समाज बदलने या किसी खास किस्म के कपड़े पहनने की ज़रूरत नहीं। सवाल यह है कि पहल भजन–सिमरन को देनी है, गुरु के प्यार को देनी है और गुरु का कहना मानना है।

मैंने कल गुरु नानकदेव जी की बानी पर सतसंग किया था। उसमें गुरु अंगददेव जी महाराज की हिस्ट्री बताई थी कि उन्होंने संसार की जिम्मेदारियाँ पूरी करते हुए अपने गुरु की सेवा की और गुरु का हुक्म मानकर अपने जीवन को पवित्र बनाकर खुद को गुरु का अंग साबित किया। उन्होंने गुरु को अपने ऊपर मेहरबान किया। स्वामी जी महाराज ने कहा है :

जब जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब दे नसावे।
जो मार्ग गुरु दे बताई सोई कर्म-धर्म हुआ भाई।।

मैं बताया करता हूँ कि जिसने ज़िंदगी में भजन-अभ्यास किया है, हमें उसके जीवन से फायदा उठाना चाहिए। सन्त बताते हैं कि आप पहले चाहे जितनी मर्ज़ी खोज कर लें, सन्त-महात्माओं की हिस्ट्री पढ़ लें लेकिन जब हमने खोज कर ली नामदान प्राप्त कर लिया फिर हमें अपना ख्याल इधर-उधर भटकने नहीं देना चाहिए, अपने ख्याल को मजबूत कर लेना चाहिए।

महाराज सावन सिंह जी ने दुनियावी तौर पर आर्मी में नौकरी की और गृहस्थी की जिम्मेदारियों को भी निभाया लेकिन आपने गुरु के बताए हुए रास्ते को ही ज़्यादा महत्व दिया। हममें यह कमी है कि हम गुरु के प्यार को वह जगह नहीं देते जो हमें देनी चाहिए। हम दुनिया को खसम-खसाई (सब कुछ) मानकर चलते हैं। हम मन का हुक्म मानते हैं गुरु का हुक्म मानने के लिए तैयार नहीं। कबीर साहब का एक शिष्य था। वह नामदान प्राप्त करके इधर-उधर घूमता रहा लेकिन जब मुसीबत आई तो रोया और गुरु को याद किया। कबीर साहब कहते हैं:

डगमग डगमग क्या करे कहें डुलाएँ जिओ।

कबीर साहब ने उससे पूछा, ''तू अपने आपको हर जगह क्यों डगमगाता रहा? अगर तूने मेरे कहे अनुसार सभी रसों के महारस नाम का रस पिया होता तो आज तुझे इतनी समस्या न होती।'' सन्त-सतगुरु फिर भी दयालु होते हैं वे मुनासिब मदद करने से कभी भी पीछे नहीं हटते।

हम महाराज कृपाल के सतसंग में सुनते रहे हैं, आप आमतौर पर अपने सतसंग में लैला-मजनूं की मिसाल देते थे। बेशक

लैला–मजनूं का दुनियावी प्यार था। आशिकों की कहानियाँ आम लोगों की ज़ुबान पर आ जाती हैं। एक बादशाह मजनूं से मिलने आया उसके दिल में ख्याल आया कि देखें! मजनूं कैसा है? जो अपनी माशूका के प्यार में लकड़ी की तरह सूख गया है। किसी ने मजनूं से कहा कि बादशाह आपसे मिलना चाहता है। मजनूं ने कहा, ''मैं मिलने को तैयार हूँ पर वह लैला बनकर आ जाए।''

सोचकर देखें! क्या हमारे अंदर इतनी मजबूती है? आमतौर पर लोग डेरों के लिए, जायदादों के लिए अदालतों में जाते हैं लेकिन परमपिता कृपाल एक ऐसे महान सन्त हुए हैं जो किसी जायदाद या डेरे से बंधे हुए नहीं थे। आप अपने आपको अपने गुरुदेव के प्रति समर्पित कर चुके थे। मैंने खुद डेरा ब्यास में आपका मकान देखा है। वह अच्छा मकान था और काफी पैसा खर्च करके बना था। आप अपना बनाया हुआ मकान भी छोड़ आए थे और आपके दिल में डेरे के प्रति कोई नफ़रत या दुर्भाव नहीं था। आप सदा यही कहते रहे, ''मैंने जो कुछ किया अपने गुरु के लिए किया।'' इसे कहते हैं अपने आपको गुरु के प्रति कुर्बान कर देना।

प्यारेयो, हम गुरु के प्रति अपने आपको तभी कुर्बान कर सकते हैं जब हम पहल गुरु के हुक्म को गुरु के बताए भजन–अभ्यास को दें और दुनिया को बाद में रखें। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मैं हमेशा यही सोचकर चला कि परमात्मा पहले, दुनिया बाद में।''

यह बड़ी सोचने वाली बात है कि जब हम अपना दीन–ईमान गुरु को मान लेते हैं फिर चाहे सारी दुनिया एक तरफ़ हो जाए और कहे कि यह ठीक नहीं लेकिन हम कभी भी मानने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि हमने अपनी आँखों से देख लिया होता है कि यह पूर्ण गुरु हैं। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

सतगुरु पूरा भेटेया पूरी होवे जुगत हसेंदयाँ खेलेदयाँ विच्चे होवे मुक्त।

गुरु हमसे दुनियादारी नहीं छुड़वाते। गुरु हमसे कोई समाज नहीं बदलवाते। गुरु हमें दुनियावी जिम्मेदारियों से दूर नहीं करते बल्कि हम जिम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार नहीं होते। गुरु हमसे कहते हैं, ''आपने जो जिम्मेदारियाँ उठाई हैं उन्हें प्यार से निभाना आपका पहला फर्ज़ है।'' हम ज़्यादातर दुनिया के कारोबार को पहल देते हैं। विषय-विकारों से अपने मन को पीछे नहीं हटाते तो हमारे अंदर गुरु का प्यार कैसे जागेगा? गुरु ने हमें जो प्यार दिया होता है हम उस प्यार को विषय-विकारों की दलदल में गंदा कर देते हैं। इस बारे में महाराज सावन सिंह जी पंजाबी का यह मुहावरा सुनाया करते थे:

हथ कार वन्नी दिल यार कन्नी।

जब हाथ कोई दुनियावी काम कर रहे हों तब दिल अपने प्यारे से जुड़ा हुआ हो। हममें से कितने ऐसे सतसंगी होंगे जिन्होंने दुनिया के काम करते हुए भी आँखों में अपने गुरुदेव की मनमोहिनी सूरत बसाई हो। हम भजन करते वक्त दुनिया के काम और दुनिया की शक्लें आंखों के सामने ले आते हैं लेकिन दुनिया के काम करते हुए हम गुरु की शक्ल या गुरु का सिमरन भूल जाते हैं।

आप अनुराग सागर में कबीर साहब और उनके शिष्य धर्मदास के सवाल-जवाब पढ़ते हैं। धर्मदास हिन्दुस्तान में सबसे ज़्यादा धनवान व्यक्ति था। उस जमाने में करन्सी की बहुत कीमत थी। धर्मदास उस वक्त चौदह करोड़ का मालिक था और अपने आपको धनी धर्मदास कहलवाता था। सोचकर देखें! जिसके पास इतना धन था उसका कारोबार कितना बड़ा होगा और उसकी कितनी जिम्मेदारियाँ होंगी? जब धर्मदास ने कबीर साहब से नाम लिया नाम की कमाई की तो अपने गुरुदेव से यही कह सका:

सुपने इच्छया न उठे गुरु आन तुम्हारी हो।

सतसंगी हर तरह का नुकसान सह लेगा लेकिन कभी अपने गुरु की कसम उठाने के लिए तैयार नहीं होगा। धर्मदास ने अपनी सच्चाई बताने के लिए गुरु की कसम खाकर कहा,''मेरे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का झोंका नहीं उठता। सपने में भी दुनिया का कोई ख्याल नहीं उठता तो जागते हुए क्या उठेगा।''

हमें जागते हुए जो ख्याल उठते हैं, हमें सपने भी उन्हीं चीज़ों के आते हैं अगर हम जागते हुए गुरु की मनमोहिनी सूरत आँखों के सामने रखते हैं और गुरु का दिया हुआ सिमरन प्यार से ज़ुबान से करते रहते हैं तो क्या हमें सोते हुए गुरु नज़र नहीं आएंगे? क्या हमें रात को सपने में गुरु नहीं मिलेंगे? ज़रूर मिलेंगे।

प्यारेयो, इस संसार की रचना ही ऐसी है कि काल ने जीवों को फँसाने के लिए अनेक प्रकार के फंदे लगाए हुए हैं। सारे सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि इस संसार में ऐसा कोई देश नहीं, इस स्थूल मंडल पर ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ जाकर आप संसारी कामों से छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं और सिर्फ गुरु का प्यार ही प्राप्त कर सकते हैं।

सन्त-महात्मा अपना तज़ुर्बा बताते हैं कि आप अंदर के मंडलों में जाएं स्थूल, सूक्ष्म और कारण का पर्दा उतार कर देखें। आप अपनी आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में चले जाएं वहाँ कोई लिंग भेद नहीं वहाँ कोई किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता, वहाँ से प्यार की दुनिया की रचना शुरू होती है। तभी आपको पता चलेगा कि हम कैसे संसार की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए गुरु के प्रति अपने आपको समर्पित कर सकते हैं और अपने दिल का आभार प्रकट कर सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी इस बारे में एक कहानी सुनाया करते थे कि एक सवार घोड़ा लेकर जा रहा था। आगे एक किसान का कुँए से पानी निकालने वाला रहट चल रहा था। किसान उस रहट से अपने खेत को पानी दे रहा था। सवार ने किसान से कहा कि मैंने अपने घोड़े को पानी पिलाना है। किसान ने कहा कि तू अपने घोड़े को आगे ले आ।

जब रहट चलता है तो टिक–टिक की आवाज़ करता है। सवार घोड़े को रहट के पास ले गया लेकिन घोड़ा टिक–टिक की आवाज़ सुनकर पीछे हट गया। सवार ने किसान से कहा कि इसे रोक दे। जब किसान ने रहट को रोका तो जिस जगह पर पानी गिरता है वह एक सैकिंड में ही खाली हो जाती है। जब घोड़े को पानी नहीं मिला तो सवार ने फिर किसान से कहा कि रहट चला दे। जब किसान ने रहट चलाया तो घोड़ा टिक–टिक की आवाज़ सुनकर फिर पीछे हट गया। किसान को तज़ुर्बा था तो उसने कहा, ''देख प्यारेया, पानी तो इसे टिक–टिक में ही पीना पड़ेगा।''

प्यारेयो, आपको दुनिया की जिम्मेदारियाँ भी निभानी पड़ेंगी और भजन–सिमरन भी करना पड़ेगा लेकिन आप पहल गुरु के नाम और गुरु प्यार को ही दें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मुख दी बात सगल स्यों कर दा जीव संग प्रभ अपने घर दा।

गुरुमुख सतसंगियों का जीवन इस तरह का होता है कि वे दुनिया के साथ बातें भी करते हैं कारोबार भी करते हैं लेकिन उनका दिल अपने गुरु परमात्मा के साथ जुड़ा होता है। एक भजन में आपको बताया गया है :

अजायब दी पुकार है खड़क रही तार है।

प्यारेयो, तार को अंदर से खटखटाने का मतलब है कि चौबिस घंटे आपका ख्याल गुरु की तरफ़ जुड़ा रहे। आपकी ज़ुबान पर गुरु का ही नाम हो और दिल में आँखों में गुरु की मनमोहिनी मूरत हो।

महात्मा बताते हैं कि परमात्मा के दर्शनों की खातिर लाखों लोग घर-बार छोड़ देते हैं फ़क़ीर बन जाते हैं जंगलों में जाकर डेरे लगा लेते हैं हरड़ की तरह सूख जाते हैं लेकिन इन साधनों से परमात्मा नहीं मिलता। न काम की भावना घटती है न क्रोध घटता है न लोभ न मोह और न ही अहंकार घटता है। आखिर निराश होकर फिर दुनिया में आ जाते हैं।

बस्ती में वापिस आकर उसी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में लिपटे रहते हैं। उन पर दुनिया हँसती है कि यह इतना टाइम साधु बना रहा देखो! अब इसकी क्या हालत है? महात्मा हमें जंगलों में जाने या दुनियादारी छोड़ने का उपदेश नहीं करते। वे कहते हैं कि आप सुबह उठकर दो-तीन घन्टे अभ्यास को दें और अपने जीवन को पवित्र बनाएं। अपनी रोज़ी-रोटी अच्छे और सही तरीके से कमाकर खाएं। आप गृहस्थ में रहते हुए मुक्त हो जाएंगे।

मेरी ज़िंदगी की एक बड़ी दिलचस्प घटना है। एक बार मैं आर्मी से दो दिन की छुट्टी पर घर आया। मेरे साथ हमारे नज़दीक के तीन-चार साथी और भी थे। हम सबने एक ही ट्रेन से वापिस जाना था। ट्रेन हमारे स्टेशन पर सही बारह बजे आ जाती थी लेकिन हम घर से ही डेढ़ बजे चले। ट्रेन ने तो अपने समय पर जाना ही था, हमारी ट्रेन छूट गई।

आर्मी के कानून बड़े सख्त होते हैं। जब ड्यूटी पर पहुँचे तो हमारे साहब ने कहा आपकी पेशी होगी। हमसे पहले कभी गलती नहीं हुई थी। आमतौर पर एक गलती माफ कर देते हैं। हमारे

साहब ने पूछा, ''क्यों भई! आप लेट क्यों हुए आपने कोई तार नहीं दी?'' हर एक का यही जवाब था कि ट्रेन छूट गई। मैं सबसे आखिर में खड़ा था। जब वह मेरे पास आए तो उन्होंने हँसकर मुझसे पूछा, ''हाँ भई! तेरा क्या जवाब है?'' मैंने कहा, ''साहब जी, ट्रेन तो सही वक्त पर आई थी लेकिन हम घर से ही लेट चले थे। अब आपकी मर्ज़ी है जो भी सज़ा दें हम भुगतने के लिए तैयार हैं। मेरे सच बोलने पर साहब बहुत खुश हुए और बोले कि मैं सबको माफ करता हूँ। आगे से सही जवाब दें और सच बोलें।''

मेरे दिल पर इस घटना का बहुत असर हुआ कि एक घंटे के आराम के लिए हमें साहब के सामने पेश होना पड़ा। वहाँ भी हमारा मन घबराया किसी का भी दिल सच बोलने के लिए तैयार नहीं हुआ। क्या कभी गुरु के भजन-अभ्यास के लिए सोचा। हम पाँच दिन, सात दिन, महीना और कई प्रेमी तो कई-कई महीने भी भजन-अभ्यास में नहीं बैठते डायरी नहीं भरते। अगर डायरी भरते भी हैं तो वही गलती बार-बार दोहराते जाते हैं। हालाँकि ज़िंदगी में हुई एक गलती ही काफी है।

कभी हमने सोचा! हम एक दुनियावी अफसर का कितना डर मानते हैं? क्या हम गुरु को एक अफसर के बराबर भी नहीं समझते? क्या हमारे दिल को कभी ये दुख हुआ कि हमें सिमरन छोड़े हुए कितने महीने या कितने घंटे हो गए। हम गुरु को क्या जवाब देंगे?

मिस्टर ओबेराय ने एक किताब लिखी है। उस किताब में आपने सुंदरदास का जीवन पढ़ा होगा। सुंदरदास वह इन्सान था जिसे महाराज सावन के चरणों में रहने का काफी मौका मिला। उसने सांसारिक कर्मों का भी काफी भुगतान किया जिसके बारे में दयालु सावन ने उसे वक्त से पहले ही बता दिया था।

प्यारेयो, सुंदरदास मेरे साथ बीस साल रहा। हम एक मकान में एक साथ रहते और खाना खाते थे, हमारा आपस में बहुत प्यार था। सुंदरदास हमेशा यही कहा करता था, ''अगर हम एक मिनट गुरु को भूलेंगे तो वह इक्कीस मिनट गुरु को भूल जाने के बराबर है। अगर हम एक दिन भजन-अभ्यास से गैरहाजिर होंगे तो इक्कीस दिनों के गैरहाजिर होने के बराबर है। अगर एक महीना गैरहाजिर होंगे तो हमारा इक्कीस महीने गैरहाजिर होने के बराबर है। अगर एक साल तक गुरु को याद नहीं करेंगे गुरु के दर्शन नहीं करेंगे तो वह इक्कीस साल के बराबर है। पता नहीं हमने इतना समय संसार में रहना भी है या नहीं!'' इसलिए हम दोनों ने अभ्यास को पहल दी हुई थी।

हम रात को खेत में धूनी लगाकर अभ्यास के लिए बैठ जाते थे। एक बार जलती हुई लकड़ी सुंदरदास की टाँग पर गिर गई। सोचकर देखें! उसे कितना दर्द हुआ होगा? जब सुरत अंदर लग जाए शरीर की सुध नहीं रहती सारे दर्द भूल जाते हैं। हमारी वह आठ घंटे की बैठक थी। जब अभ्यास से उठे तो सुंदरदास ने यह कहा, ''जितना रस भजन में आज आया है इतना ज़िंदगी में पहले कभी नहीं आया।'' आप उसकी लगन देख सकते हैं।

हम सुंदरदास को गंगानगर के मशहूर डॉक्टर के पास ले गए तो डॉक्टर ने कहा इसकी टाँग काटनी पड़ेगी। जब परमपिता कृपाल आए उनके साथ उनके कई साथी भी थे। हुज़ूर ने उन साथियों से कहा, ''देखो भई प्यारेयो, इसका नाम भजन-अभ्यास है। क्या आपमें से कोई ऐसा है जो गुरु के साथ लिव लगाकर तन को भूल जाए।'' सुंदरदास अपनी जिम्मेदारियाँ निभाता था लेकिन गुरु के प्यार में मस्त था; उसने पहल गुरु के प्यार को दी थी।

प्यारेयो, आज तो हम ट्रैक्टर से खेती करते हैं खेती करने के लिए बहुत किस्म की मशीनरी है लेकिन जिस वक्त मैं और सुंदरदास साथ रहते थे उस समय ये साधन नहीं थे। हमारे पास खेती करने के लिए एक ऊँट और दो बैल थे। उनके साथ ही हम खेती किया करते थे। लोग छिप–छिपकर हमारी बातें सुना करते थे कि हमारे दिल में गुरु के प्रति कितना चाव था। लोग कहते कि इन दोनों को कोई फिक्र नहीं सुंदरदास का परिवार चल बसा है और इसने शादी नहीं की।

उस समय मैं नौजवान था और सुंदरदास बुज़ुर्ग था। मैं सुबह उठकर पानी गर्म करता चाय बनाकर सुंदरदास को आवाज़ देता, ''सुंदरदास, जाग रहा है?'' सुंदरदास ने कहना, ''हाँ। जाग रहा हूँ मुझे चाय न बनानी पड़े इसलिए मैं सोने का नाटक कर रहा हूँ।'' सुंदरदास लेटे हुए अपने सिमरन में लगा रहता था। जब सुंदरदास चाय पीने आता तो यह दोहा पढ़ता :

भजन करन को आलसी भोजन को होशियार।
तुलसी ऐसे मर्द को लख वारी धिक्कार।।

चाय पीकर नहाकर हम अपना कामकाज करते। हम दोनों मिलकर अच्छी खेती करते थे और अपने अभ्यास से कभी गैरहाजिर नहीं होते थे। तीसरे आदमी के बारे में सुंदरदास कहा करता था:

तीजा रलया ते कम्म गलया।

वह जितना समय मेरे साथ रहा तब तक हमने खाना बनाने के लिए और किसी कामकाज के लिए अपने साथ किसी तीसरे आदमी को नहीं रखा। अगर कोई काम रह जाता था तो हम रात को भी वह काम आसानी से कर लेते थे और साथ ही हमारा सिमरन भी चलता रहता था।

इत्रवाला चाहे इत्र न दे पर कभी–कभी शीशी खुली भी रह जाती है। इत्र की खुशबू से लोग आ जाते हैं। आमतौर पर बचपन से ही मेरे पास लोग आते थे और मुझे सन्त जी कहते थे। कई लोग आकर मुझसे कहते, ''सन्त जी से मिलना है।'' मैं खेत में कामकाज कर रहा होता था, मेरे हाथ में कस्सी होती थी। मैं उनसे कहता, ''सन्त जी आ जाएंगे आओ बैठो हम बातचीत करते हैं।''

बातचीत से उन्हें पता चल जाता था कि यह वही आदमी है, जिससे हम मिलने आए हैं। हम कभी अच्छे कपड़े नहीं पहनते थे और हमने कभी अपने आपको महात्मा साबित नहीं किया था। उस समय मेरे पास 'दो–शब्द' का भेद था। मैं अपना अभ्यास किया करता था। सुंदरदास के पास बाबा सावन सिंह जी का दिया हुआ 'पाँच–शब्द' का भेद था। कहने को बहुत कुछ है लेकिन टाइम हो गया है।

आपसे खास विनती है कि जो अभ्यास के कार्यक्रम बनाए गए हैं, आप उस मुताबिक ही अभ्यास करें। मैंने हिदायत दी थी कि आप अपने देश से तैयार होकर आएं। कई प्रेमी अपने देश में अभ्यास नहीं करते और यहाँ देखा–देखी ज़्यादा अभ्यास करते हैं। फिर उन्हें सतसंग में नींद आने लग जाती है फिर प्रेमी कभी आँखें बंद करते हैं तो कभी आँखें खोलते हैं; ऐसा नहीं करना चाहिए।

आप खाना खाने के एकदम बाद अभ्यास में न बैठें इससे मेदे पर असर पड़ता है। यहाँ जो कार्यक्रम बनाए गए हैं उनके मुताबिक अभ्यास करें तब आपको सुबह तीन बजे उठने में दिक्कत नहीं होगी लेकिन प्रेमी जल्दी नहीं सोते फिर जब अभ्यास में बैठते हैं तो उन्हें नींद आ जाती है और जब सतसंग में बैठते है तब भी नींद आती है।

***

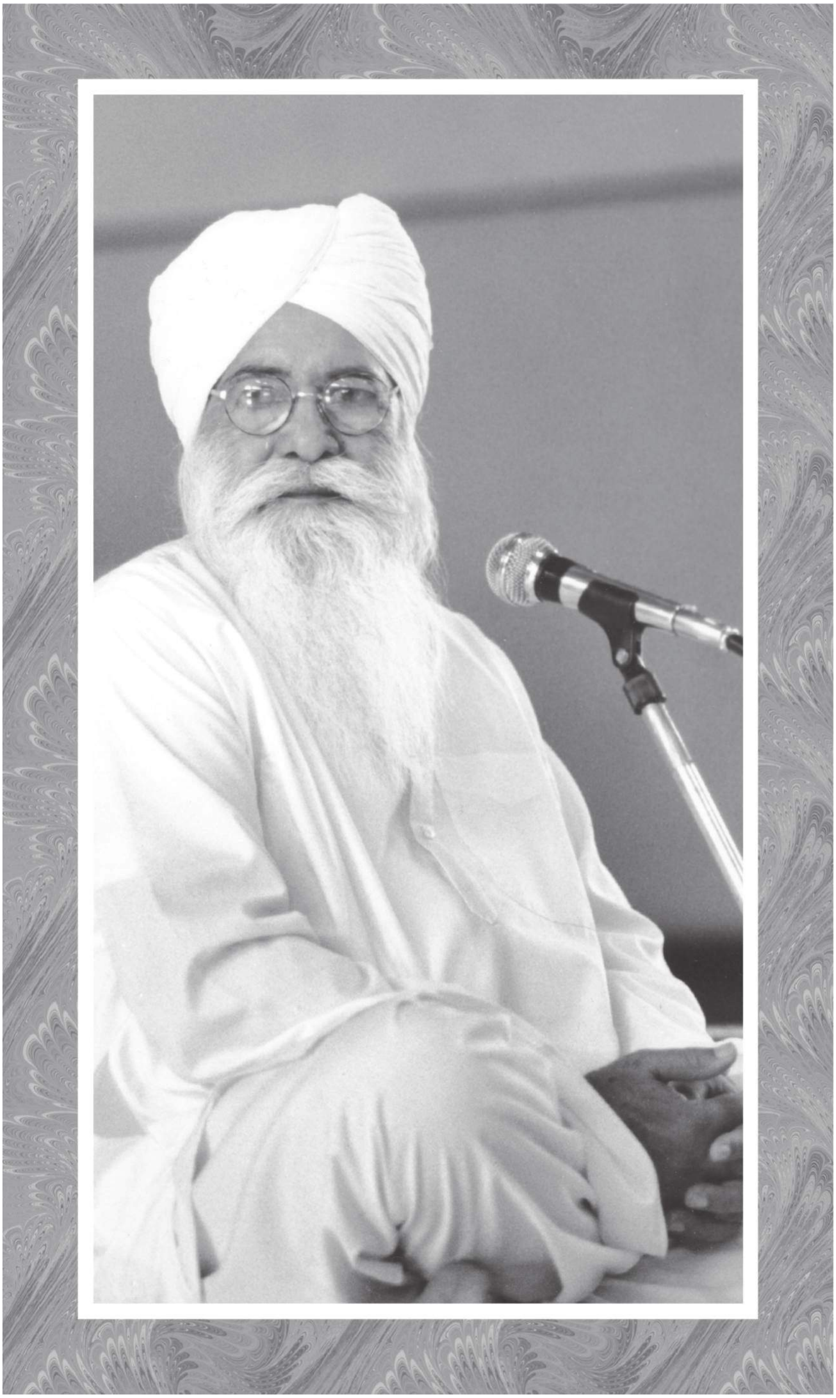

17

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मन का हमला

अहमदाबाद, गुजरात – 11 अक्टूबर 1992

सेवक : *प्यारे सन्तजी, कृपया हमें बताएं कि जब हम लगातार सिमरन, अभ्यास और प्यार भरे सम्बंध को कायम रखने की कोशिश करते हैं उस समय जो परेशानियां आती हैं उससे हमारा उत्साह भंग हो जाता है तब हमें क्या करना चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई! गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करते हैं जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। वैसे तो नामदान के वक्त सब प्रेमियों को इस सवाल के बारे में बताया जाता है फिर भी मैं आपको समझाने की कोशिश करूँगा कि दुनिया में कोई कौम, मजहब, मुल्क या जाति हमारी दुश्मन नहीं; हमें गुमराह करने वाला दुश्मन हमारा मन है।

सब सन्त यही बताते हैं कि जब सचखंड में किसी आत्मा का फैसला होता है कि अब इस आत्मा को दोबारा संसार में नहीं भेजना तो उस आत्मा को सतसंग में लाया जाता है। उसके अंदर नाम का उत्साह पैदा किया जाता है और सन्त उस आत्मा को नाम के साथ जोड़ देते हैं।

आप अनुराग सागर में पढ़ते हैं कि काल ने कई युग भक्ति करके संसार की रचना का वर माँगा। काल को भी दर्द होता है कि यह जीव जिसे मैंने बहुत मेहनत से प्राप्त किया है यह अपने

घर वापिस सचखंड न चला जाए। काल हमारे लिए हर किस्म की परेशानियाँ पैदा करता है।

मैं आपको एक दुनियावी उदाहरण देकर समझाता हूँ जिससे आपको समझना आसान हो जाएगा। चाहे हम किसी भी मुल्क में बस रहे हैं जब तक हम उस मुल्क के कायदे-कानून के मुताबिक अपनी ज़िंदगी बिताते हैं वहाँ की हुकूमत का आदर करते हैं उसके खिलाफ कोई बात नहीं करते तब तक हमारा सब कुछ ठीक चलता रहता है, हमें किसी तरह की परेशानी नहीं होती। जब वहाँ रहने वाला कोई भी इन्सान आज़ाद होना चाहता है तो उसके लिए वहाँ की सरकार हर किस्म की परेशानी पैदा करती है।

उसी तरह इस त्रिलोकी का मालिक काल है। सन्त हमें तन-मन के पिंजरे से आज़ाद करना चाहते हैं। लेकिन मन काल का एजेन्ट है और मन इस शरीर के अंदर बैठा है। यह कोई मिनट-सैकिंड खाली नहीं जाने देता। काल इसके अंदर खुष्की और परेशानी पैदा करने की कोशिश करता रहता है।

महाराज कृपाल ने हमें डायरी* रखने के लिए कहा कि आप अपनी ज़िंदगी के मिनट-सैकिंड को कीमती समझकर लेखा-जोखा करें। जिसका मतलब यही था कि कई बार मन भजन पर बैठे हुए भी विद्रोह कर देता है आँखें खोल देता है कि अब मैंने नहीं बैठना। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे,''मन तोप के आगे खड़ा होना तो आसान समझता है लेकिन भजन पर बैठना मुश्किल समझता है।''

मैं अपनी ज़िंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि दूसरे विश्व युद्ध में काफी लोगों की बर्बादी हुई काफी इन्सानों की बलि चढ़ाई गई। हिन्दुस्तान में लोग तीस-तीस साल की कैद मंजूर कर लेते

* डायरी का नमूना पन्ना नंबर 557

थे लेकिन आर्मी में जाना पसंद नहीं करते थे। आर्मी में मेरी लड़ाई में जाने की बारी नहीं थी लेकिन फिर भी मैंने लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम दे दिया। जब हुज़ूर ने कृपा करके मुझे जमीन के अंदर मकान बनवाकर भजन–अभ्यास में बिठाया और कहा, ''मैं तुझे खुद ही मिलने आऊंगा।''

मैं उस समय का वाक्या बताया करता हूँ कि उस समय मन ने शेर का रूप धारण किया कि मैं तुझे इस गुफा के अंदर दाखिल नहीं होने दूँगा। उस वक्त मैंने अपने गुरुदेव के आगे प्रार्थना की कि काल बहुत ज़बरदस्त है मेरे पीछे पड़ा हुआ है। आपने मेरी लाज रखनी है। प्यारेयो, शब्द–रूप गुरु आपके अंदर ही होते हैं सिर्फ पुकारने की ज़रूरत होती है वह ज़रूर हमारी मुनासिब मदद करते हैं। अगर आपको गुरु पर भरोसा है आप समझते हैं कि गुरु का बल आपकी पीठ पर है तो कोई आपसे जीत नहीं सकता।

कुछ दिनों के बाद दूसरी घटना एक साँप की घटी। मैं हमेशा ही बताया करता हूँ कि हमारे इलाके में इतने भारी साँप नहीं होते। एक साँप मेरे पास आया तो धरती भी हिलने लगी। मैं अभ्यास में खामोश बैठा था। मैंने गुरु की याद नहीं छोड़ी। इतनी देर में बाहर से कुछ आदमी आए। उन लोगों की आवाज़ सुनकर साँप इस तरह फुँकार मारने लगा जिस तरह कोई शक्तिशाली सांड मस्ती में फुँकार मारता है। उन लोगों ने आवाज़ देकर कहा कि गुफा के अंदर साँप है। मैंने कहा कि अंदर साँप नहीं है। उन्होंने फिर कहा कि साँप अंदर ही है। कई प्रेमियों को उस जगह के दर्शन करने का मौका मिला है कि वह कितनी छोटी सी जगह है।

जब मैं उठा तब साँप फुँकार मार रहा था। अगर मैं उसके मुँह में कुछ देता तो वह बिना कुछ कहे पकड़ लेता लेकिन जब साँप ने उन लोगों को देखा कि ये लोग मुझे मारेंगे तो उसने उनके

ऊपर हमला बोल दिया। मैंने उस समय यही प्रार्थना की, ''हे सच्चे पातशाह, यह सब तेरा ही खेल है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब आपके दिल में जहरीले जानवर के लिए अच्छी भावना है तो वह आपके ऊपर हमला नहीं करेगा।'' सन्तों के दिल में हर जानवर के लिए प्यार होता है। जानवर उनके पास ही आकर बैठ जाते हैं लेकिन उन्हें कुछ नहीं कहते। इन घटनाओं का इस सवाल के साथ गहरा ताल्लुक है।

आप प्यार से मन को इसका नुकसान समझाएं कि तू जो कुछ सोच रहा है या मन में ख्याल उठा रहा है कि भजन से उठ जा, तुझे तो इतनी परेशानियाँ हैं तू किस तरह भजन कर सकता है? उस वक्त आप प्यार से मन को सिमरन में लगाएं अगर फिर भी मन शान्त नहीं होता तो अपने अंदर बैठे शब्द-रूप गुरु के आगे प्रार्थना करें लेकिन भजन न छोड़ें। गुरुदेव ज़रूर आपकी मदद करेंगे।

महाभारत में कहानी है। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं,''देखो अर्जुन! ये जितने भी तुम्हारे दुश्मन खड़े हैं इन सबको मैं मारूंगा लेकिन सारा संघर्ष तुम्हारे हाथों से करवाऊंगा। तुम्हारी फतह करवाऊंगा तुम सूरमा बनो एक जरिया तो बनो!'' इसी तरह सतगुरु का हाथ भी हमारी पीठ पर है। सतगुरु मन के साथ हमारी लड़ाई करवाएंगे लेकिन हमें मजबूत होकर जरिया बनना चाहिए।

गुरु ने हमें शब्द धुन के साथ लेस किया हुआ है। फतह सेवक की होती है लेकिन करवाते गुरु हैं। गुरु के बिना यह कामयाब नहीं हो सकता। अगर मन अपनी आदत नहीं छोड़ता हमारे ऊपर ख्यालों का हमला करता है तो हम अपनी आदत से बाज क्यों आएं, हम भी तेज गति से सिमरन करना शुरू कर दें मन के अंदर गुरु का बल पैदा करें और फरियाद करें।

मन ने किस–किसके साथ धोखा नहीं किया। आप इतिहास पढ़कर देखें! भागवत पुराण पढ़कर देखें! आपको बहुत कहानियां मिलती है कि किस तरह मन ने ऋषियों–मुनियों को गिरा दिया।

जब मैंने अपनी सारी कमजोरियाँ परमात्मा कृपाल के आगे रखी तो आपने कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?'' मन अपनी आदत से बाज नहीं आता लेकिन हमें जो काम हमारे सतगुरु ने दिया है हमें भी पीछे नहीं हटना चाहिए। हमें भी मन की तरह हठीले होकर भजन–सिमरन में लगना चाहिए। कभी बारीकी से सोचकर देखें! आपका मन आपको अभ्यास से उठा देता है या विद्रोह कर देता है फिर कुछ समय बाद आपको यह बता भी देता है कि आपने गलती की है। जब आपको होश आती है आप फिर भजन में बैठ जाते हैं।

मन सतसंगी को हमेशा एक खिलौने की तरह खिलाता रहता है लेकिन सतसंगी को मन की बात नहीं सुननी चाहिए। जब मन ऐसे ख्याल पैदा करता है अंदर खुष्की लाता है तब आप मजबूत होकर लगातार सिमरन करें। जहाँ अभ्यास में एक घंटा लगाते हैं वहाँ अभ्यास में दो–तीन घंटे लगाएं। मदद करने के लिए गुरु हमेशा तैयार होते हैं, उन्होंने बाहर से नहीं आना; वह आपके अंदर बैठे हैं। जब सतसंगी मन की आवाज़ सुनता है उस वक्त सतसंगी भजन छोड़ देता है और अपने सामने अनेकों परेशानियां पैदा कर लेता है। अगर कोई परेशानी न हो तो भी कहता है कि तुझे इतनी परेशानियां हैं तू भजन पर क्यों बैठता है?

कई बार सतसंगी मजबूत होकर भजन में बैठने की कोशिश करता है सिमरन करता है लेकिन मन फिर से वार करता है नींद ला देता है। दो–तीन घंटे पता ही नहीं चलता कि मैं भजन पर बैठा

था या सो रहा था। अगर नींद से भी सावधान रहता है तो मन प्यार का हथियार चला देता है कि तुझे नाम लिए हुए भजन-अभ्यास करते हुए काफी साल हो गए हैं; तू अभी तक अंदर सचखंड नहीं पहुँचा! मन ऐसे भुलावे में डालकर परेशानी पैदा करके भजन से उठा देता है। मन अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता कि मुझे नाम लिए हुए दस साल हो गए हैं और इन दस सालों में मैंने कितना भजन-अभ्यास किया? क्या विषय-विकारों से अपने मन को मोड़ा? गुरु के ऊपर श्रद्धा लाया? स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जो जो चोर भजन के प्राणी सो सो दुख सहे।
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावे लोभ नदी में डूब मरे।।

आप आलस्य, नींद , जल्दबाज़ी को छोड़ें और मजबूत होकर अभ्यास करें। सतसंगी को चलते-फिरते कोई भी कारोबार करते हुए ज़ुबान से सदा सिमरन करते रहना चाहिए। सतसंगी का ध्यान दोनों आँखों के दरम्यान सतगुरु के स्वरूप की तरफ़ होना चाहिए और उसका दिल सतसंग की तरफ़ लगा होना चाहिए।

आमतौर पर राजस्थान में प्रेमी लोग दर्शनों के समय अपने तज़ुर्बे बताते हैं। उनके तज़ुर्बे सुनकर मेरा दिल बहुत खुश होता है। पिछले साल मुम्बई में एक अमेरिकन प्रेमी ने अपना तज़ुर्बा बताया कि वह किस तरह अंदर गया और उसने अंदर क्या-क्या देखा। उसने तो खुश होना ही था मेरा भी दिल खुश हुआ कि मेरा प्यारा बच्चा मन-इन्द्रियों की गुलामी से आज़ाद होकर अंदर गया है।

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी बीज़ नाश नहीं होता।'' प्यारेयो, जिसकी जैसी भावना होती है उसे वैसा ज़रूर मिलता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

तुम्हरी चिन्ता मैं मन धारी तुम अचिन्त हो धरो ध्यान।

गुरु को सेवक की चिन्ता होती है। सेवक को तो अभ्यास का ही फिक्र होता है। अगर हम इस बात को पकड़ लें कि अब हमें हमारी चिन्ता करने वाला मिल गया है तो हम उस वक्त जब मन हमला करता है कभी अभ्यास नहीं छोड़ेंगे संशय में नहीं पड़ेंगे। ऐसे समय में सतसंगी को मजबूत होकर भजन-अभ्यास करना चाहिए।

मैं सदा ही आपको सादे लफ़्ज़ों में बताया करता हूँ कि ग्रुपों में आने वाले सारे प्रेमी मेरे दिल पर लिखे हुए हैं। मेरे दिल में उन प्रेमियों की कद्र है। आप लोग बहुत दूर से इतना किराया खर्च करके आते हैं मेरे दिल में इसकी कद्र है। मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ से कुछ लेकर जाएं। यह सेवक पर निर्भर है कि उसने अपना बर्तन कितना ग्रहणशील बनाया है, उसकी कितनी ग्रहण शक्ति है?

मुझे गुरु मिले। मेरे गुरु ने मुझ पर कृपा की। मुझे जो आज्ञा दी, मैंने वह सब बहुत प्यार और श्रद्धा से किया। यह उनकी ही दया थी कि मैं वह कर सका।

बाहरी तौर पर भी मन हमें भरमाता है। अगर कुछ प्रेमियों को पता चल जाए कि यह दिन-रात अभ्यास करता है तरक्की कर रहा है। अगर आपके ऊपर दया होती है तो आप किसी को भी बताने की कोशिश न करें कि मैं अंदर सूरज, चन्द्रमां देखता हूँ या मेरे अंदर गुरु प्रकट हो गए हैं। अगर आप बताएंगे तो लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे इससे भी आपका नुकसान होगा। अगर कोई आपकी बड़ाई करता है तो आपको अहंकार नहीं करना चाहिए; होशियार रहना चाहिए कि मेरे ऊपर मन हमला कर रहा है।

प्यारेयो, सन्तमत श्रद्धा, प्यार और करनी का मत है। जिसे श्रद्धा है उसे प्यार भी होता है। प्यार में हम अभ्यास को बोझ नहीं समझते, यह करनी का मत है सोच-विचार का मत नहीं।

***

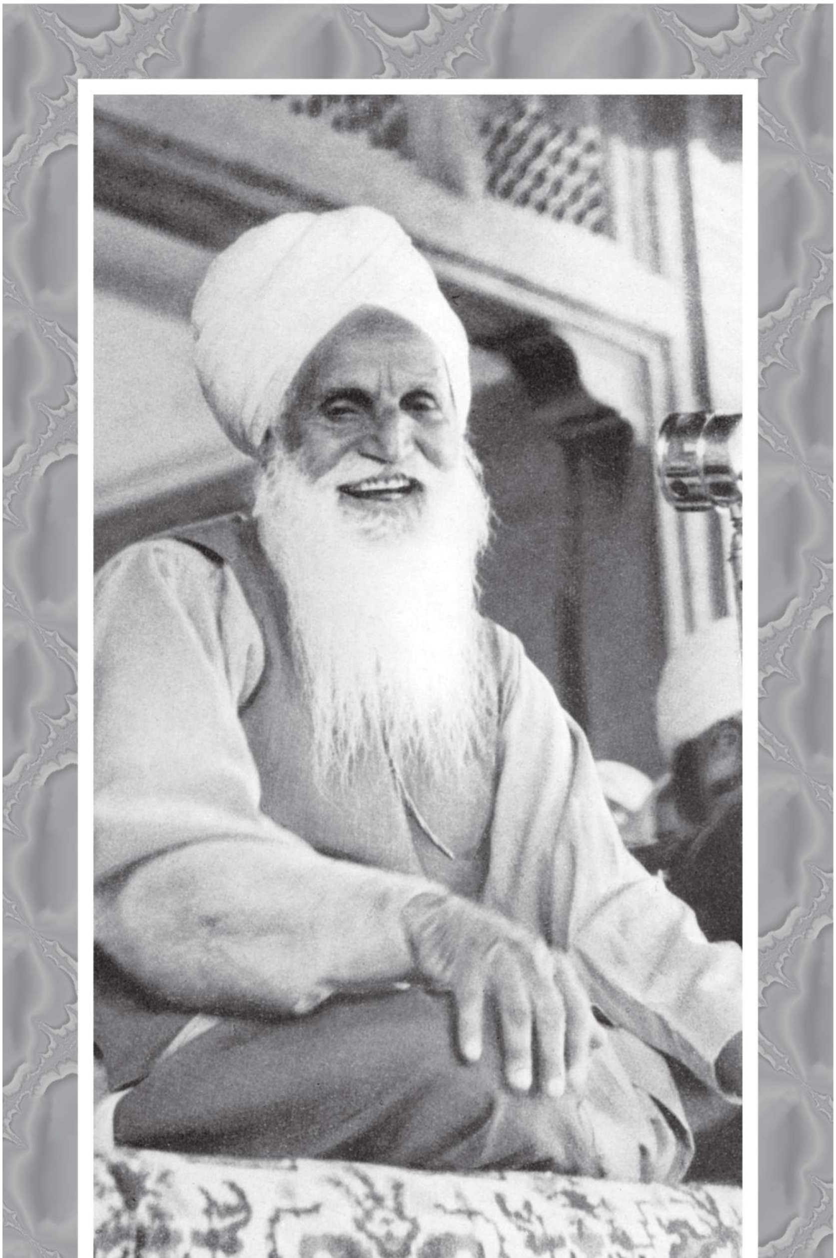

18

बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक प्रेमी को भजन–अभ्यास के बारे में लिखा खत

आगे बढ़ें और करें

मेरे प्यारे बेटे,

मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैं किसी भी अमेरिका के प्रेमी को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहता। मेरे ख्याल से मैंने तुम्हारे खत का जवाब दिया था। शायद! वह खत रास्ते में गुम हो गया होगा। तुम हर हाल में मुझे कुछ महीनों बाद खत ज़रूर लिखना और अपनी रूहानी तरक्की की पूरी रिपोर्ट भेजना। तुम जो भी सवाल पूछना चाहो ज़रूर पूछना। रुहानियत के मार्ग पर तुम्हारी अंदरूनी तरक्की के बारे में जानकर मुझे खुशी होगी। इसमें कोई शक नहीं कि तुम थोड़ी बहुत तरक्की कर रहे हो। असल में अंदर जो दिव्य प्रकाश और आनन्द तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं, तुम्हें उन्हें प्राप्त करते हुए देखने के लिए मैं उत्सुक हूँ।

इस मार्ग जैसा कुछ है ही नहीं। इस मार्ग पर सच्चा सुख और संतोष मिलता है जो सारी दुनिया में नहीं मिल सकता लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए तुम्हें अंदर जाना पड़ेगा यह तुम्हें बाहर से नहीं मिल सकता। सारी दुनिया इसे किताबों, धर्मस्थानों और समाजों में ढूंढ़ रही है लेकिन यह अंदर से ही प्राप्त होता है।

इसकी प्राप्ति निरंतर भजन–अभ्यास और बिना डगमगाए अपना ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र करने से होती है। जब तुम ऐसा करना सीख जाओगे यह खज़ाना जो तुम्हारा ही है तुम्हारी

अंतरात्मा को प्राप्त होगा और इतना प्राप्त होगा जितना तुमने सपने में भी नहीं सोचा होगा। कोई भी चीज़ तुम्हें रोक न पाए कोई भी दुनियावी रुकावट रास्ते में न आए और तुम्हें अंदर जाने से न रोके। मन की दृढ़ता से पूरी तरह भजन-अभ्यास में जुड़ जाओ और बाकी सब चीज़ों को कम महत्व दो ताकि बाकी चीज़ें अपने आप पिघल जाएं और तुम्हें तंग न करें।

मुझे पता है कि तुम्हें दिक्कतें हैं। तुम्हारे अंदर कुछ कमियाँ हैं जिन पर तुमने काबू पाना है और कुछ बाहर की चीज़ें हैं जिन्हें तुमने परास्त करना है। तुम कर सकते हो अगर तुम्हें अपने अंदर बैठे सतगुरु के ऊपर भरोसा है तो सतगुरु हर वक्त तुम्हारी मदद करेंगे।

कई बार जब तुम्हारे ऊपर बड़ी मुश्किलें या बुरा वक्त आएगा तो प्रकाश प्रकट होगा और तुम देखोगे की तुम उन मुश्किलों से मुक्त हो जाओगे। कोई भी चीज़ तुम्हें निराश न कर पाए। नाम मिलना कोई मामूली बात नहीं। नाम का मिलना मतलब तुम्हें करोड़ो रुपए विरासत में मिलने जैसा है। तुम सतपुरुष के भाग्यवान बेटे हो और सतपुरुष ने तुम्हें नाम प्राप्त करने के लिए और सतगुरु के साथ सचखंड जाने के लिए चुना है। कोई भी चीज़ तुम्हें वहाँ पहुँचने से नहीं रोक सकती। तुम चाहो तो जल्दी तरक्की कर सकते हो।

पहले अपने अंदर और बाहर की मुश्किलों को दूर करने की पूरी कोशिश करो फिर भजन-अभ्यास में जितने घंटे बैठ सको उतने घंटे बैठो। अपना ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र करो अपने मन को बाहर भटकने या डगमगाने न दो। अगर मन बाहर जाता है तो उसे तुरंत वापिस लाकर तीसरे तिल पर एकाग्र करो। थोड़ी देर में तुम्हारा मन स्थिर और एकाग्रचित्त हो जाएगा तब तुम्हें नीला आसमान, सूरज, चाँद, सितारे दिखाई देंगे फिर तुम्हें एक शानदार

बिंदु सहस्त्रदल कमल और सतगुरु का नूरी स्वरूप दिखाई देगा। तुम्हें ये चीज़ें ज़रूर देखनी चाहिए। लगातार देखते रहो और अपने मन में कोई संदेह या सवाल खड़ा न होने दो; यह निश्चित होगा।

जब तुम पहली मंज़िल पर पहुँच जाओगे तब तुम्हें अन्दरूनी आवाज़ सुनाई देगी। यह आवाज़ तुम्हें साफ और सुरीली सुनाई देगी यह संगीत तुम्हें आनन्द से भर देगा और तुम्हें बाकी कठिनाईयों और कमियों से उभरने में मदद करेगा। यह एक ऐसी चीज़ है जो तुम्हें सारे शत्रुओं से लड़ने में बलवान बनाती है और तुम्हारी विजय निश्चित बनाती है। जैसे ही यह सुरीली आवाज़ तुम्हारे कानों में गूंजने लगेगी तुम्हारी कामयाबी बिल्कुल निश्चित हो जाएगी।

तुम्हें इस सर्वोच्च ध्येय को जितनी जल्दी हो सके हासिल करना चाहिए। कुछ लोग यहाँ जल्दी पहुँचते हैं और कुछ लोग देर में पहुँचते हैं। यह अपनी–अपनी मेहनत और कर्मों के भार के ऊपर निर्भर करता है। तुम्हें ज़्यादा संघर्ष करने की ज़रूरत नहीं तुम काफी संघर्ष करके आगे आ गए हो और अंदर सतगुरु हमेशा तुम्हारे स्वागत के लिए मौजूद है।

जब तुम सतगुरु से मिलकर उनसे रूबरू बातें करोगे जैसे एक आदमी दूसरे आदमी से बात करता है। सतगुरु तुम्हारे सारे सवालों का जवाब देने और मार्गदर्शन करने के लिए हमेशा तैयार हैं। वे अब भी मौजूद हैं लेकिन जब तक तुम अपने और उनके बीच के पर्दे को हटा नहीं देते उन्हें देख नहीं सकते। फिर तुम आसानी से कह सकोगे आगे बढ़ें और करें, तुम्हें बहुत बड़ा ईनाम प्राप्त होगा।

तुम्हारा प्यारा,

सावन सिंह

***

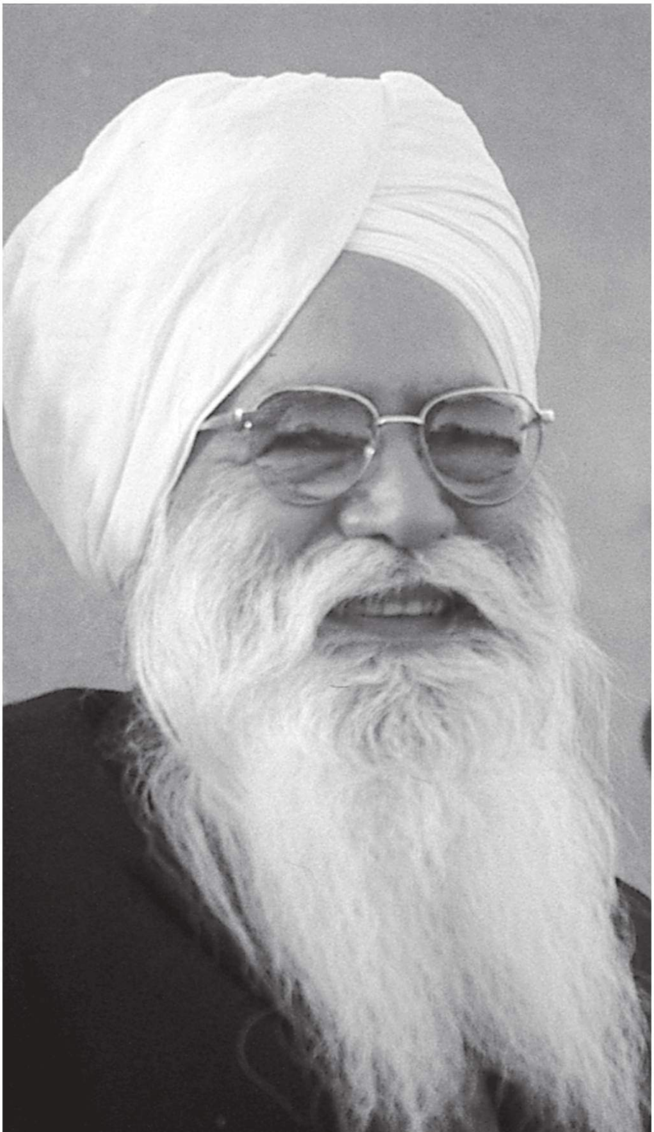

19

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के लिए एक संदेश

प्रेम प्यार से मिलकर रहें

साउथ अफ्रीका – 7 सितम्बर 1994

सबसे पहले हम परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं। जिन्होंने अपनी दया मेहर से दूर–दूर से बिछुड़ी आत्माओं को इकट्ठा करके अपनी आवाज़ और अपने प्रकाश के साथ जोड़ा। मैं यहाँ सदा उनकी दया, उनकी इजाज़त और उनके कहने के मुताबिक ही संसार में संदेश देने के लिए आता हूँ। मेरा अपना कोई मिशन नहीं। मिशन भी महान सतगुरु कृपाल का है और संदेश भी उनका ही है जो मैं आपकी आत्मा को पहुँचा रहा हूँ।

आपको पता है कि संसार में गुरु का संदेश घर–घर पहुँचाना कोई आसान काम नहीं, इसमें कई दिक्कतें आती हैं। शरीर पर काफी बोझ पड़ता है और भूख–प्यास भी काटनी पड़ती है लेकिन वह ज़ोरावर अपने शिष्य से जो चाहे करवा सकता है। महाराज जी कहा करते थे, ''गुरु चाहे तो लकड़ी से भी काम ले सकता है।''

महाराज जी अक्सर यह कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हज़ार काम छोड़कर अभ्यास में बैठ जाएं। जब तक अपनी आत्मा को खुराक नहीं दे लेते तब तक तन को खुराक न दें।'' तन की खुराक अन्न है अगर हम अन्न न खाएं तो हमारा तन काम नहीं करता इसलिए हम तन को खुराक खिलाकर इससे दुनिया के कामकाज करते हैं। हमें आत्मा की खुराक के बारे में ज्ञान नहीं होता। आत्मा जन्म–जन्मांतर से कमज़ोर है इसलिए मन

के सामने खड़ी नहीं हो सकती। मन आत्मा को एक नौकर की तरह अपने आगे लगाए फिरता है। आप देखें! हम जल्दी घबरा जाते हैं इसका यही सबूत है कि हमारी आत्मा के अंदर कमज़ोरी है।

मैंने कल रात भी बताया था कि सतसंग में जाना क्यों ज़रूरी है? मन अपनी आज़ादी को जाते हुए देखकर हमें सतसंग में जाने से रोकता है क्योंकि यह दबकर रहना पसंद नहीं करता इसलिए मन हमें सतसंग से बाहर ही बाहर रखता है। जब हम रोज़-रोज़ सतसंग में जाते हैं तब हमें रस मिलना शुरू हो जाता है हमारे ऊपर नाम का रंग चढ़ना शुरू हो जाता है जैसे पहले सतसंग में जाना मुश्किल था फिर सतसंग से हटना मुश्किल हो जाता है।

हमारे अंदर मन की पैदा की गई कमजोरियों को दो ही आदमी बता सकते हैं - महात्मा या विरोधी। महात्मा हमारी कमजोरियों को सतसंग के जरिए प्यार से समझा देते हैं। विरोधी मुँह पर ही कह देता है कि तुझमें यह ऐब है। हमें दोनों के कहने का बुरा नहीं मानना चाहिए। हमें अपने अंदर जाँच करनी चाहिए अगर हमारे अंदर ऐब हैं तो उन्हें छोड़ने में ही हमारा फायदा है।

सन्तों ने अपने विरोधियों की भी प्रशंसा की है। सन्त कहते हैं, ''हे परमात्मा, इन्हें लम्बी उम्र दे ये हमारे ऐब और हमारी कमज़ोरियां बताते रहें।'' जबकि सन्तों के अंदर कोई कमज़ोरी नहीं होती। परमात्मा ने सन्तों की मैल धोने के लिए निन्दक पैदा किए होते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

हृदय सुध जे निन्दया होए हमरे कपड़े निन्दक धोए।

पल्टू साहब कहते हैं, ''अगर निन्दक निन्दा करके सन्तों को उजागर न करते तो सन्त किस तरह तरते?'' कई सतसंगी इसका गलत अर्थ लेते हैं। निन्दा तब होती है जब हमारे अंदर ऐब न हों

अगर हमारे अंदर ऐब हैं तो हमें वे ऐब छोड़ देने में ही फायदा है। सूफी सन्त फरीद साहब घड़ियाल की मिसाल देते हुए कहते हैं:

ऐ निर्दोषा मारिए हम दोषां दा क्या हाल।

आप समझाते हैं कि काल की नगरी में निर्दोषों को कोई नहीं बख्शता। वहाँ कोई गलती करेगा तो वह कैसे बख्शा जाएगा? सतसंग सुनने का फायदा तब है जब हम उस पर अमल करें।

वैसे तो डायरी का तरीका कोई न कोई सन्त बताते ही आए हैं लेकिन परमात्मा कृपाल ने हमारे ऊपर बड़ी भारी दया की जो हमें लिखित रूप में डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखने के लिए कहा। डायरी एक तरह का रोज़नामचा है अपनी ज़िंदगी की जाँच-पड़ताल है कि हमने कल क्या किया? आज क्या किया? हम क्या सोच रहे हैं और क्या कर रहे हैं? मुझे कई प्रेमियों की डायरी देखने का मौका मिलता है लेकिन उनके अंदर बार-बार वही गलतियाँ होती हैं।

मैं हमेशा ही सतसंग में बताया करता हूँ कि प्यारेयो, जब ज़िंदगी में एक बार गलती हो गई तो दूसरी बार वही गलती क्यों हो? हमें पता चल गया और हमने हाथ से लिख भी दिया कि यह काम गलत है फिर दूसरी बार वही गलत काम क्यों हो? एक गलती ही ज़िंदगी को खराब कर देती है। जैसे हम सतसंग में एक फर्ज़ के तौर पर हाज़िरी लगवाते हैं, जो सुनते हैं वह करते नहीं। यह इसी तरह है जैसे हम मंदिर में जाते हैं माथा टेककर वापिस आ जाते हैं; जो कुछ सुनते हैं हम वह नहीं करते।

मैं आर्मी में रहा हूँ। वहाँ इसी तरह हर आदमी का रोज़नामचा लिखा जाता है। मैंने जब महाराज कृपाल का यह तरीका देखा तो मेरा दिल बहुत ही खुश हुआ कि इससे अच्छी ज़िंदगी बनती है। अब हमारे प्रेमी क्या करते हैं? ये हुक्म तो मानते हैं कि डायरी भरनी है

लेकिन बार–बार उसी गलती को लिखते जाते हैं। जिस तरह हम रात को सोने से पहले डायरी भरते हैं उसी तरह आर्मी में भी शाम को सोने से पहले हाज़िरी लगवाई जाती है कि हम हाज़िर हैं।

हमारे बहुत ऊँचे भाग्य थे कि महाराज जी ने हमें अपनी ज़िंदगी सुधारने के लिए डायरी रखने का तरीका बताया। हर सतसंगी को महाराज जी के कहे मुताबिक प्रेम–प्यार से डायरी भरनी चाहिए। डायरी के अलग–अलग खानों में लिखना चाहिए और उसके ऊपर पूरा अमल करना चाहिए। अगर हम एक हफ़्ता उसी तरीके से डायरी* लिखें तो हमारी सुरत इन्द्रियों के भोगों की तरफ़ से मुँह मोड़ लेगी। अगर सतसंगी एक बार अंदर जाकर आत्मा को नाम का अमृत पिला दे तो बाद में यह विषय–विकारों का पानी नहीं पिएगा।

सन्त–महात्मा न तो समाज सुधारक होते हैं और न कोई आर्थिक हालात को अच्छा करने के लिए आते हैं। परमात्मा ने उन्हें बिछुड़ी हुई आत्माओं को जोड़ने का मिशन दिया होता है। वे बिछुड़ी हुई आत्माओं को शब्द–प्रकाश के साथ जोड़ते हैं।

मैं आपको कोई सुनी–सुनाई बातें नहीं बता रहा हूँ और न ही मैंने कभी बताई हैं। मैं वही बात बोलता हूँ जो मैंने अपनी ज़िंदगी में खुद की हैं। मुझे गुरु मिले परमात्मा मिला। मैंने गुरु को पकड़ा परमात्मा को पकड़ा। उन्होंने मेरे ऊपर बहुत भारी दया की। वह जानते हैं कि किसके अंदर मेरे लिए तड़प है वह ज़रूर सुनते हैं। अगर हम भजन में बैठते हैं तो वह ज़रूर हमसे मिलने की कोशिश करते हैं। यह तो सिमरन का, सेवक का और गुरु का आपस में मुकाबला चल रहा होता है; जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है। सेवक कहता है कि मैं तुझे सिमरन के द्वारा ज़्यादा याद करता हूँ गुरु कहते हैं कि मैं तुझे ज़्यादा याद करता हूँ। कबीर साहब कहते हैं:

राम झरोखे बैठ के सबका झारा ले।
जाकी जैसी चाकरी ताको तैसा दे।।

सन्त–महात्मा हमें नम्रता सिखाते हैं। मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का मौका मिला है। उनके अंदर इतनी नम्रता थी कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। इसी तरह महाराज कृपाल सिंह जी को देखा है कि आपमें बहुत नम्रता थी। हम सतसंगियों को यह गुण ज़रूर धारण करना चाहिए। नम्रता से रहना सर्वोत्तम गुण है। ऊँची जगह का पानी अपने आप ही नीची जगह आ जाता है।

इस बारे में मैंने बाबा बिशनदास जी से एक छोटी सी कहानी सुनी थी। मैं वह कहानी कभी–कभी सुनाया करता हूँ। एक गुरु और चेला चले जा रहे थे। चेले ने कहा,''महाराज जी, कोई ऐसा उपदेश करें जिससे शान्ति आ जाए और दिल भी खुश हो जाए।'' गुरु ने कहा,''बेटा, कुछ बनो नहीं।'' चेले के दिल में यह ख्याल था कि गुरु जी लम्बी–चौड़ी कहानियाँ सुनाएंगे लेकिन उनकी एक ही बात थी कि,''बेटा, कुछ बनना नहीं।'' गुरु इतना कहकर चुप हो गए।

आगे गए किसी राजा का अच्छा महल था। चेला वहाँ बिस्तर देखकर मज़े से लेट गया कि थोड़ा सा आराम करके फिर आगे चलेंगे। गुरु एक तरफ़ होकर अपना भजन–सिमरन करते रहे। जब उस जगह राजा के नौकर आए तो उन्होंने उस सोये हुए को जगाकर पूछा,''यहाँ बादशाह सलामत ने लेटना था। तू कौन है?'' चेला बोला, ''जी मैं साधु हूँ।'' उन्होंने पकड़कर उसे मारा और कहा, ''लेटता है राजा के बिस्तरों पर जहाँ इत्र फूल बिछे हुए हैं और बनता है साधु?''

चेले ने अपने गुरु के पास जाकर कहा, ''इन लोगों ने मुझे मारा है।'' गुरु ने पूछा, ''तू कुछ बना होगा?'' चेले ने कहा,

''नहीं जी।'' गुरु ने फिर पूछा, ''तूने कोई कसूर किया होगा?'' चेले ने कहा, ''इन्होंने मुझसे पूछा था कि तू कौन है? मैंने कहा, ''मैं साधु हूँ और ये मुझे मारने-पीटने लगे।'' तब गुरु ने कहा, ''बच्चू, कुछ बना तभी तो मार पड़ी।''

गुरु जानते थे कि जब यह चेला आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में जा पहुँचेगा तब साध-गति को प्राप्त होगा। गुरु को पता था कि अभी यह मन-इन्द्रियों का गुलाम है, पूरी तरह से तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं होता और इसे साधु होने का अहंकार हो गया है। गुरु ने कहा, ''बेटा, मैंने तुझसे कहा था कि कुछ न बनना।''

अगर हम पर हमारे गुरु दया मेहर करते हैं कहीं अंदर थोड़ी-बहुत किरण दिखाते हैं तो हमें कुछ बनकर नहीं बैठना चाहिए। अगर गुरु हम पर दया करते हैं हमसे खुश होते हैं तो हम लोगों से माथे टिकवाने शुरू कर देते हैं इश्तिहारबाज़ी शुरू कर देते हैं। हाथी पर सवार होकर जुलूस निकालना शुरू कर देते हैं। दुनिया की वाह-वाह कमा लेते हैं। लोगों को पुत्र-पुत्रियाँ देनी शुरू कर देते हैं कि देखो भई! आपकी किस्मत में परमात्मा ने तो यह बच्चा नहीं लिखा था मैंने आपको दे दिया है। शायद! लोगों का तो हम फायदा कर देते हैं लेकिन अपने पल्ले कुछ नहीं रहता।

हाँ भई! अब यह कार्यक्रम समाप्त है। प्रबंधको ने बहुत अच्छा प्रबंध किया था, मैं सब पर खुश हूँ। परमात्मा कृपाल की दया से आपको भजन-सिमरन की प्रेरणा मिली है। आप सतसंग में भी जाएं और रोज़-रोज़ भजन-सिमरन भी करें। हम सब सतसंगी आत्माएँ एक ही शब्द-रूप गुरु के बच्चे हैं। सबने आपस में प्यार बनाकर रखना है, एक-दूसरे की इज़्ज़त करनी है।

***

भाग – दो

सन्तों की संगत का लाभ

रहट चाहे बारह महीने चलता रहे फिर भी वह दुनिया के फायदे के लिए इतना पानी नहीं निकाल सकता जितना इन्द्र देवता एक घड़ी बारिश करके पानी बरसा देता है। कबीर साहब कहते हैं कि हम घर में बैठकर भले ही पचास साल सिमरन कर लें फिर भी वह सतसंग की एक घड़ी के बराबर भी नहीं। किसी जीवित महापुरुष की संगत में एक सैकिंड भी बैठना घर में बैठकर किए हुए पचास साल के सिमरन से भी बहुत ज़्यादा महत्व रखता है।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

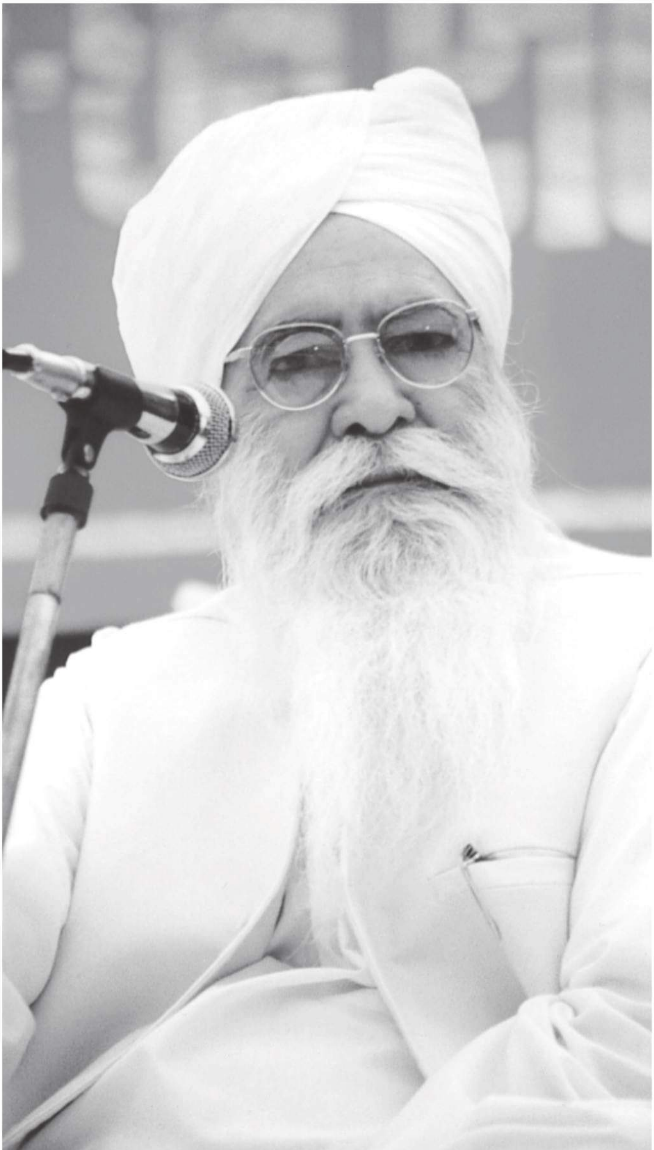

20

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

एकांत में रहने का महत्व

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 31 जनवरी 1988

सेवक : *हिन्दुस्तान आने के बारे में जूडिथ हर किसी को हिदायतें भेजती है कि यहाँ आने के बाद हमें ज़्यादा से ज़्यादा एकांत में रहने की कोशिश करनी चाहिए और आपस में बातचीत से परहेज़ करना चाहिए। आप कृपया हमें इसकी अहमियत के बारे में बताएं कि इन दस दिनों के दौरान जब हम यहाँ आए हुए हैं तब बातचीत से परहेज़ रखने का एकांत में रहने का क्या महत्व है?*

बाबा जी : हाँ भई! हमें पता ही है कि हम जिस काम के लिए जा रहे होते हैं उसका सोच–विचार पहले ही हमारे दिल में होता है। जब मैंने हिन्दुस्तान में विदेशी प्रेमियों के ग्रुप शुरू किए थे तब बताया था कि यहाँ आने वाले हर प्रेमी को तैयारी करके आना चाहिए। तैयारी का मतलब कि आप पहले अभ्यास में बैठना सीखें। अगर आपका उस तरफ़ ख्याल बना होगा तो आपको यहाँ लगातार और ज़्यादा सिमरन करने की आदत पड़ेगी; हमें चुप रहने में भी काफी मदद मिलती है।

महाराज सावन और महाराज कृपाल ने एकांत पर बहुत ज़ोर दिया है। सब सन्तों ने एकांत पर ज़ोर दिया क्योंकि हम बातों से परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते। हम जितनी ज़्यादा बातें करते हैं हमारा उतना ही ख्याल बाहर की तरफ़ दौड़ता है।

शुरू–शुरू में हमें मुश्किल महसूस होती है क्योंकि हमारा ध्यान बाहर दुनिया में ज़्यादा फैला हुआ है। हमें बाहर की बातों से चस्का और रस मिलता है इसे छोड़ना बहुत मुश्किल होता है। जब हम अपनी बातचीत पर कंट्रोल करते हैं फिर हमें इसकी अहमियत का ज्ञान होना शुरू हो जाता है। अपने आप ही हमारा स्वभाव वैसा बन जाता है। चाहे हम चल रहे हैं, उठते–बैठते हैं हमारा मन हमारा दिल–दिमाग दुनियावी बातों से बिल्कुल खाली हो जाता है। फिर हम परमार्थ के लिए सोचते हैं या परमार्थ की ही बातें करते हैं।

आप सोचकर देखें! जो प्रेमी यहाँ आते हैं वे पहले अपनी टिकट का इंतज़ाम करते हैं और उसके लिए मेहनत से पैसा कमाते हैं। मैंने बताया है कि कर्ज़ उठाकर यहाँ न आएं पहले ही मेहनत से पैसा कमाएं। आपको ख्याल रखना चाहिए कि हम किस काम के लिए जा रहे हैं? कई प्रेमियों का ऐसा ख्याल होता भी है।

आप जब यहाँ आते हैं स्वागत के वक्त मैं आप लोगों से यही कहता हूँ कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं उस मकसद को आँखों के आगे रखकर भजन–सिमरन करें। आप बहुत कीमती वक्त निकालकर घर के बंधन ढ़ीले करके यहाँ आए हैं अगर हमने यहाँ फिज़ूल बातों में अपना वक्त बर्बाद कर दिया तो यहाँ आने का क्या फायदा? यह सब कुछ तो हम वहाँ भी कर सकते थे। हम यहाँ भजन–सिमरन करने के लिए आए हैं, महात्मा से फायदा उठाने के लिए आए हैं।

अगर हम महात्मा की हिदायत के मुताबिक भजन–सिमरन करेंगे तो हमारा फायदा ज़रूर होगा। जो प्रेमी इस पर अमल करते हैं उन्हें बहुत फायदा होता है, वे मुझे इंटरव्यू में अपने अच्छे अनुभव बताते हैं जिसे सुनकर मेरा दिल खुश होता है।

महाराज सावन सिंह जी इस बात पर बहुत ही ज़ोर दिया करते थे कि जब आप सतसंग में बैठे हैं तो आपकी नज़र पाठी की तरफ़ भी न जाए। आपका ध्यान गुरु के मस्तक की तरफ़ हो अगर गुरु किसी व्यक्ति से बात करते हैं तो आपका ध्यान उस व्यक्ति की तरफ़ भी नहीं जाना चाहिए।

फिर महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंग सुनकर अभ्यास करके आपका हृदय भर चुका होता है। आप जैसे-जैसे लोगों से बातचीत करेंगे संपर्क पैदा करेंगे तो धीरे-धीरे आप अपने अंदर जो सतसंग में सुना है, जो दर्शन अंदर टिके हैं जो रूहानियत मिली है उसकी जगह दुनिया को भर लेंगे।''

सब सन्तों ने एकांत पर ज़ोर दिया है। सन्त यह नहीं कहते कि आप जंगलों-पहाड़ों में छिप जाएं और घर की जिम्मेदारियाँ छोड़ दें। हमने घर की जिम्मेदारियाँ भी निभानी हैं और एकांत में भी रहना है, हम घर को ही जंगल बना सकते हैं।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि जब मैंने अठारह साल ज़मीन के अंदर गुफा में बैठकर 'दो-शब्द' का अभ्यास किया, उस वक़्त भी मैंने अपनी ज़मीन में चारों ओर ऐसी ही दीवारें खड़ी की हुई थी जैसी कि अब हैं ताकि किसी भी तरफ़ से कोई आदमी मेरे पास न आए। गेट पर आदमी बैठा होता था आम आदमी को अंदर आने का मौका ही नहीं दिया जाता था। मैं सिर्फ ज़रूरी काम के लिए ही बाहर निकलता था।

यहाँ आश्रम में वे प्रेमी भी हैं जिनके रहते हुए मैंने अभ्यास किया है। इन सबको पता है कि यहाँ होते हुए भी मैं कितना एकांत में रहा। मैं आज भी एकांत में ही रहता हूँ। यहाँ आश्रम में रहने वालों से भी तकरीबन दो हफ्ते बाद ही मिलता हूँ। सिर्फ

खास प्रेमी जो दूर से रूहानियत का सवाल लेकर आते हैं मैं उन्हीं लोगों से मिलता हूँ। ऐसी बात नहीं कि मैं आश्रम की जिम्मेदारी नहीं निभाता।

मैं एक किसान हूँ छोटी से छोटी चीज़ मेरी नज़र में है। खेती करने में मैं गुरुमेल को पूरा सहयोग दे रहा हूँ। बड़ी अच्छी बात है कि जूडिथ आपको आपके फायदे की बात बता रही है अगर हम इस पर अमल करेंगे तो हमारा अपना ही फायदा है।

मैंने बताया था कि शुरू-शुरू में मुश्किल होती है क्योंकि हमें दुनियावी बातों की आदत पड़ी होती है लेकिन बाद में हमारी एकांत में रहने की आदत बन जाती है। हम लोगों के साथ बातचीत करते हुए भी एकांत बना लेते हैं।

मुख दी बात सगल स्यों कर दा जीव संग प्रभ अपने घर दा।

फिर हमारा ख्याल ऐसा हो जाता है जैसे महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे :

हथ कार वन्नी दिल यार कन्नी।

जब हाथ कोई दुनियावी काम कर रहे हों तब दिल अपने प्यारे से जुड़ा हुआ हो।

***

21

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

आश्रम की महानता

सन्त बानी आश्रम, 16 पी एस, राजस्थान – 26 फरवरी 1980

सेवक : *क्या आप हमें आश्रम की महानता के बारे में कुछ बताएंगे कि आश्रम की क्या महानता होती है?*

बाबा जी : आपको पता है कि हम अपने घर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए आश्रम में जाकर भजन–अभ्यास करते हैं। कई बार घरों में हमारा मन नहीं लगता क्योंकि हमारे कई धंधे गलत हो चुके होते हैं। आश्रम इसलिए बनाया जाता है कि हम वहाँ जाकर भजन–अभ्यास करें।

जो प्रेमी आश्रम में रहते हैं वे अपनी जिम्मेदारी समझते हैं कि हमने यहाँ आए हुए प्रेमियों के लिए इंतज़ाम करना है और अपना भजन–अभ्यास भी जारी रखना है। आश्रम वाले प्रेमी यह भी समझते हैं कि हमारी ज़िंदगी ज़्यादा से ज़्यादा भजन–अभ्यास के लिए है। आश्रम का मतलब यही है कि हम वहाँ बैठकर ज़्यादा से ज़्यादा भजन–अभ्यास करें ताकि उस आश्रम के अंदर से लोगों को भजन की खुशबू चढ़े और आश्रम के जरिए और भी आत्माओं का उद्धार हो।

आश्रम में प्रेमियों को एक–दूसरे की सेवा का मौका मिलता है। घर में कई बार हम अपना भजन–अभ्यास और सतसंग भी मुल्तवी कर देते हैं लेकिन जब हमने आश्रम जाना होता है तो हम दो–तीन

दिन पहले ही तैयारी शुरू कर देते हैं कि हमने वहाँ सतसंग सुनने जाना है और भजन–अभ्यास के कार्यक्रम में शामिल होना है।

जब हम आश्रम जाते हैं तब किसी का एक घंटे का रास्ता है किसी का इससे भी ज़्यादा लम्बा रास्ता है; रास्ते में हमें यह अहसास होता है कि मैं आश्रम में भजन–अभ्यास करने के लिए और सतसंग सुनने के लिए जा रहा हूँ।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। कई बार घर में हमारा मन भजन में नहीं बैठने देता। जब हम दो–चार दिन या एक दिन के लिए भी आश्रम जाते हैं तो एक दूसरे को देखकर मन को भजन में बिठा लेते हैं फिर धीरे–धीरे मन लगना शुरू हो जाता है।

आश्रम में प्रेमियों को सेवा करने का मौका मिलता है। किसी को तन की सेवा किसी को मन की सेवा किसी को धन की सेवा और किसी को सुरत शब्द की सेवा का मौका मिलता है।

महाराज सावन सिंह जी ने एक बहुत बड़ा सतसंग हाल बनवाया था। आप कहा करते थे कि जिन लोगों ने यहाँ तन, मन और धन से सेवा की है बेशक वे संसार छोड़ गए हैं लेकिन उन लोगों को संसार से जाने के बाद भी रूहानियत का फायदा मिलता रहेगा क्योंकि जो सतसंग घर प्रेमी मिल–जुलकर बना लेते हैं उसमें लोग भजन–अभ्यास ही करते हैं।

सन्त–महात्मा आश्रम अपने लिए, अपनी औलाद या अपने रिश्तेदारों के लिए नहीं सिर्फ संगत के लिए ही बनवाते हैं और किसी से भी कोई सेवा लेते हैं वह भी साध–संगत के लिए ही होती है। महात्मा अपने गुज़ारे के लिए चाहे खेती करें चाहे दुकानदारी करें चाहे नौकरी करें वे अपनी मेहनत की कमाई से अपना गुज़ारा करते हैं और खुद भी अपनी कमाई का पैसा सेवा में लगाते हैं।

हमें हमेशा ही आश्रम में जाकर ज़्यादा से ज़्यादा भजन-अभ्यास करना है ताकि आश्रम में भजन की ही खुशबू फैले। हमने हमेशा आश्रम की पवित्रता को कायम रखना है और आश्रम में जाकर अनुशासन में रहना है। हमें आश्रम में फालतू बातें नहीं करनी चाहिए वहाँ ज़्यादा से ज़्यादा भजन-अभ्यास करना चाहिए।

यह सच्चाई है कि सन्त किसी भी आश्रम के साथ बंधे नहीं होते। उनका लगाव सिर्फ परमात्मा के साथ होता है। उन्होंने संगत बनाई होती है और उनका संगत के साथ लगाव होता है कि ये कब मेरी शिक्षा का पालन करके मेरे संदेश के मुताबिक मेरे पास पहुँचेंगे! कोई ऐसा वक्त नहीं होता जब गुरु हमारे बारे में यह न सोच रहे हों कि ये कब मेरी आज्ञा का पालन करके मेरे पास पहुँचेंगे?

माता बच्चे के बारे में सोचती रहती है कि कहीं बच्चा गंदी नाली में या आग में हाथ न डाल दे या बच्चा कहीं गिर न जाए क्योंकि बच्चा अनजान है। जब बच्चे का हाथ किसी चीज़ के नीचे दब जाता है वह रोता-चिल्लाता है तो माता सारा काम छोड़कर उसके पास पहुँचती है। इसी तरह सन्त-सतगुरु भी हर वक्त हमारा ख्याल रखते हैं। जब हम पर कोई मुसीबत आती है तब वे पर्दे के पीछे से एकदम सेवक के पास पहुँचते हैं। सन्त किसी का फायदा करके एहसान नहीं जताते, उसका ज़िक्र नहीं करते।

सन्त-सतगुरु को बड़े लंगर या बड़े-बड़े आश्रम बनवाने में कोई दिलचस्पी नहीं होती। धन की सेवा सिर्फ सेवक का धन पवित्र करने के लिए होती है कि यह दस नाखूनों की मेहनत और ईमानदारी की कमाई से जो रोज़ी-रोटी कमाते हैं, उसमें से धन की सेवा करके यह अपना धन पवित्र करें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे,''अमीर लंगर में धन डाल जाते हैं और गरीब लंगर से खा जाते हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का उनपे धन है भगत नाम का।
पर तेरा उपकार करावे भूखे प्यासे को दिलवावे।
उनकी मेहर मुफ्त तू पावे जो उनको प्रसन्न करावे।
उनका खुश होना है भारी सतपुरुष निज कृपा धारी।।

सन्त हमारे धन को पवित्र करने के लिए उसे गरीबों में बाँट देते हैं या किसी सतसंग घर में लगा देते हैं। उन्हें पता है कि हमारे सेवक का धन किस जगह पवित्र होगा। जिनके ऊँचे भाग्य होते हैं उनका पैसा ही सेवा में लगता है। बाकी लोग देखते और सोचते ही रह जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बिन माला फेर दे गुरु बिन देंदे दान।
गुरु बिन दान हराम है जाए पूछो वेद पुराण।।

महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर एक महात्मा की कहानी सुनाया करते थे कि वह महात्मा उसी घर का खाना खाते थे जो मेहनत मजदूरी करके कमाता हो। एक दिन वह महात्मा किसी गाँव में चले गए तो उन्होंने वहाँ पूछा, ''यहाँ कोई ऐसा घर है जिसका मालिक मेहनत मजदूरी करके ईमानदारी की कमाई करता हो?'' वहाँ के लोगों ने बताया कि यहाँ एक महाजन है, वह ईमानदारी से रोज़ी-रोटी कमाता है। महात्मा ने पूछा, ''उसके कितने बच्चे हैं और उसके पास कितना धन है?'' वहाँ के लोगों ने बताया कि उस महाजन के चार बच्चे हैं और वह एक लाख रूपये का मालिक है।

महात्मा उस महाजन के घर गए और उससे कहा, ''मुझे खाना खाना है।'' महाजन ने कहा, ''महात्मा जी बैठो, अभी खाना तैयार करवा देता हूँ।'' जब खाना तैयार होने लगा तो महात्मा ने उससे पूछा कि तेरे कितने बच्चे हैं और तेरे पास कितना धन-पदार्थ है? महाजन ने कहा, ''मेरा एक ही बेटा है और मेरे पास पचास हज़ार रूपये हैं।'' यह सुनकर महात्मा उठकर चल पड़े। महाजन ने कहा, ''महात्मा जी, खाना तैयार हो रहा है आप क्यों जा रहे हैं?''

महात्मा ने कहा मैं तो तुझे धर्मात्मा आदमी समझकर तेरे यहाँ खाना खाने वाला था। मैंने सुना था कि तेरे पास एक लाख रूपया है लेकिन तू पचास हज़ार कह रहा है। मैंने सुना था कि तेरे चार बच्चे हैं लेकिन तू एक ही कह रहा है। महाजन ने कहा,''महात्मा जी, आप मेरी बात समझे नहीं। मैंने पचास हज़ार रूपये साध–संगत की सेवा में लगा दिए हैं। बाकी पचास हज़ार का मुझे पता नहीं कि ये पैसे किसी ने चोरी कर लेने हैं, किसी झगड़े मुकदमें में लग जाएंगे या डॉक्टरों की फीस में लग जाएंगे। जो पचास हज़ार रूपये मैंने परमार्थ में लगा दिए हैं वो मेरे अपने हैं। एक लड़का मुझे परमार्थ में सहयोग देता है वही मेरा लड़का है। बाकी कर्ज़ खाने वाले हैं।'' यह सब सुनकर महात्मा ने बिना हिचकिचाहट चुपचाप खाना खा लिया।

जितना भी धन–दौलत हम परमार्थ में लगा देते हैं वही हमारा है। बाकी का हमें क्या पता है कि वह धन कहाँ लगना है? सुथरा एक लाधड़क फ़क़ीर हुआ है। वह कहता था:

हत्थी खाईए हत्थी दईए हत्थी बनिए पल्ले।
ऐसा कोई न जन्मया जो मुओ पिच्छो घल्ले।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दान करके अहंकार नहीं करना चाहिए बल्कि अपने धन्य–भाग्य समझने चाहिए कि परमात्मा ने हमें मौका दिया। दाएँ हाथ से दान किया जाए तो बाएँ हाथ को भी पता न लगे।'' गुरु नानक साहब भी कहते हैं:

तीर्थ व्रत और दान कर मन में धरे गुमान।
नानक नेह फल जात है ज्यों कुंचर इसनान।।

हिन्दुस्तान में जब कोई लड़की की शादी करता है तो बहुत पैसा खर्च हो जाता है। इसलिए हिन्दुस्तान में जब किसी के घर में लड़की पैदा होती है तो माता–पिता के लिए बड़ी समस्या हो जाती

है कि हम इतना पैसा कहाँ से खर्च करेंगे? हिन्दुस्तान में किसी लड़की की शादी करवा देने को बहुत बड़ा पुण्य समझते हैं।

मैं जब आर्मी में था तब बाबा बिशनदास जी के चरणों में जाता था। बाबा बिशनदास जी ने मेरी आर्मी की कमाई से कई लड़कियों की शादी करवाई। आप मुझसे यही कहा करते थे, ''भई! किसी से बात नहीं करनी कि मैंने किसी की शादी करवाई है।''

बाबा बिशनदास जी ने मेरी आर्मी की तनख्वाह को अपने व्यक्तिगत खर्च के लिए कभी इस्तेमाल नहीं किया। आप आमतौर पर उन पैसों से गरीब लोगों की लड़कियों की शादी करवा देते थे।

***

22

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को अभ्यास के बारे में संदेश

पवित्र जगह

मुंबई महाराष्ट्र – 10 जनवरी 1991

मैं बहुत खुश हूँ कि आप परमात्मा की भक्ति के लिए मेहनत कर रहे हैं भजन–अभ्यास में बैठ रहे हैं और आप इसी मकसद के लिए यहाँ आए हैं। मुझे आप लोगों के साथ बैठकर भक्ति करने में परमात्मा का यश गाने में बहुत खुशी होती है, बड़ा आनन्द मिलता है। जिस जगह सतसंग होता है और जिस जगह बैठकर हम भजन–अभ्यास करते हैं वह जगह पवित्र बन जाती है।

पवित्र जगह कौन सी होती है? जहाँ परमात्मा का सिमरन किया जाता है गुरु को याद किया जाता है केवल वही जगह पवित्र है। हमें इस जगह को पवित्र समझना चाहिए यहाँ हम सतसंग सुन रहे हैं और भजन–अभ्यास कर रहे हैं। इस पवित्र जगह में आपको ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जो पवित्र न हो। मेरे कहने का मतलब आपको यहाँ कोई भी दुनियावी चीज़ें नहीं करनी चाहिए और दुनियावी मसलों के बारे में बात भी नहीं करनी चाहिए।

आप सब अपना घर–बार और कामकाज छोड़कर यहाँ आए हैं। आपको दुनियावी चीज़ों में लिपटे नहीं रहना चाहिए। आपको बाकी प्रेमियों के साथ अपने घर के बारे में बातें नहीं करनी चाहिए। यहाँ आप सबको सिर्फ भजन–सिमरन करना चाहिए और गुरु की याद मनानी चाहिए। आपको उठते–बैठते, चलते–फिरते सदा सिमरन करना चाहिए ताकि इस जगह की पवित्रता और निर्मलता बनी रहे।

सुबह का अमृतवेला है, हम सोकर उठे हैं। इस समय आत्मा ने शरीर में नया-नया प्रवेश किया होता है। सब सन्तों का कहना है कि इस वक्त का किया हुआ भजन-अभ्यास बहुत ही कामयाब होता है। इस समय आसानी से हमारी चेतनसत्ता को रोम-रोम से निकलकर तीसरे तिल पर एकाग्र होने में बहुत मदद मिलती है।

महाराज कृपाल सिंह जी कहते थे कि, ''अगर रेशम का कपड़ा किसी काँटेवाली झाड़ी पर पड़ा हुआ है और हम उसे ज़बरदस्ती खींचकर निकालेंगे तो वह कपड़ा फट जाएगा अगर हम उस कपड़े को काँटो में से धीरे-धीरे निकालेंगे तो वह कपड़ा बच जाएगा।''

इसी तरह हमारी आत्मा उस प्रभु से बिछुड़कर मन इंद्रियों का साथ लेकर बाहरमुखी हो गई है। हमारी आत्मा उस कपड़े की तरह रोम-रोम में फँस चुकी है अगर हम अभ्यास द्वारा जल्दबाजी और ज़बरदस्ती से आत्मा को समेटकर तीसरे तिल पर दोनों आँखों के दरम्यान ले आते हैं तो शरीर को कष्ट होता है।

मैंने कल बताया था कि तीसरे तिल पर एकाग्र होने का सबसे उत्तम और आसान साधन सिमरन है। बेशक और भी साधन हैं लेकिन आसान और सरल साधन सिमरन है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक और गृहस्थी भी आसानी से सिमरन कर सकते हैं।

जैसे-जैसे हम सिमरन करते हैं हमारा फैला हुआ ख्याल तीसरे तिल पर एकाग्र होना शुरू हो जाता है जहाँ पर शब्द आ रहा है। यह सबसे आसान तरीका है।

जब तक आवाज़ न दी जाए आँखें बंद करके अपना सिमरन ज़ारी रखना है।

***

23

परम सन्त बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को दी गई खास हिदायतें

सतसंग और दर्शनों की महानता

सन्तों का सतसंग सुनकर मुक्ति का द्वार मिलता है। वेदों में लिखा है कि किसी भी व्यक्ति को सतसंग के बिना सुख और चैन नहीं मिलता। सतसंग बहुत बड़ी दौलत है लेकिन हम सतसंग की क़द्र नहीं करते। अगर कोई सतसंग का एक शब्द भी अपने अंदर जज्ब कर लेता है तो उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। पूरे सतसंग की तो बात ही कुछ और है।

एक चोर था। उसने मरते समय अपने इकलौते बेटे को बुलाकर उपदेश के रूप में दो बातें बताई। एक – किसी मंदिर में जाकर सतसंग या उपदेश नहीं सुनना। दो – अगर चोरी करते हुए पकड़े जाओ तो गुनाह कबूल मत करना भले ही तुम्हें फाँसी पर क्यों न चढ़ा दिया जाए।

एक दिन वह नौजवान लड़का किसी घर से चोरी करके लौट रहा था उसने एक पुलिसवाले को आते हुए देखा। पास में पगडंडी थी वह अपनी जान बचाने के लिए भागा। उसे वहाँ एक मंदिर मिला जिसमें उपदेश दिया जा रहा था लेकिन उसे अपने पिता की सीख याद आई तो उसने अपने कानों में उंगलियाँ डाल ली कि कोई भी शब्द सुनाई न दे लेकिन कान बंद करने से पहले उसने एक वाक्य सुना कि देवी–देवताओं की परछाई नहीं होती।

किसी और दिन वह नौजवान चोरी के इल्ज़ाम में पकड़ा गया। उसे राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने उससे पूछा, ''क्या तुमने चोरी की है?'' उसने कहा, ''मैंने चोरी नहीं की।'' उस नौजवान को मारा-पीटा गया लेकिन उसने फिर भी गुनाह कबूल नहीं किया बाद में उसे क़ैदखाने में डाल दिया गया।

राजा के पुलिस दल में एक बड़ी चालाक महिला थी। उस महिला ने राजा को बताया कि मैं इससे गुनाह कबूल करवाऊंगी। राजा ने उसकी योजना को मंजूरी दे दी और उसे काम सौंप दिया।

उस महिला ने रात को देवी माँ दुर्गा का रूप धारण किया दो नकली हाथ लगाए, दो जलती मशालें हाथ में पकड़ी और एक नकली शेर बनाकर उसके ऊपर बैठने का ढ़ोंग रचाकर बहुत हो-हल्ला मचाते हुए चलने लगी। क़ैदखाने के दरवाज़े एकदम से खुल गए और अंधेरे में मशाल की रोशनी से क़ैदखाना चमक उठा।

उस बेचारे नौजवान ने देखा कि साक्षात देवी माँ दुर्गा उसके सामने खड़ी है तो वह आश्चर्यचकित हो गया और उसके पैरों में गिर गया। उस ढ़ोंगी माता ने नौजवान को आशिर्वाद देते हुए कहा, ''ध्यान देकर सुन! मैं माँ दुर्गा हूँ। मैं तुम्हारी दुर्भाग्यमय स्थिति को खत्म करने आई हूँ । तुमने चोरी की है तो मुझे सच बताओ अगर मुझसे सच कहोगे तो मैं तुम्हारी रिहाई करवाने में मदद करुंगी।''

वह चोर अपना गुनाह कबूल करने ही वाला था जब उसने उस ढ़ोंगी देवी माँ दुर्गा की परछाई देखी तो उसे मंदिर में मिले उपदेश का वाक्य याद आया कि देवी-देवताओं की परछाई नहीं होती। वह तुरंत समझ गया कि यह सब ढ़ोंग और दिखावा है। उस चोर ने कहा, ''माते, मैंने कोई गुनाह नहीं किया लेकिन राजा मुझे बेकार में सज़ा दे रहा है।''

अगले दिन उस चालाक औरत ने राजा से कहा, ''यह नौजवान अपराधी नहीं है।'' राजा ने उस नौजवान की रिहाई का हुक्म ज़ारी कर दिया।

चोर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा! यह कितना अच्छा हुआ कि सतसंग का सिर्फ एक वाक्य सुनकर मेरी क़ैदखाने से रिहाई हो गई। अगर मैं पूरा सतसंग सुनूं तो मेरी ज़िंदगी ही पलट जाएगी; मेरे जीवन में परिवर्तन हो जाएगा। उसने सतसंग सुनना शुरू किया जिसका नतीजा यह हुआ कि उसने अपना चोरी का धंधा छोड़ दिया और वह महात्मा बन गया।

महान सतगुरु बाबा सावन सिंह जी महाराज ने सतसंगी प्रेमियों को कुछ खास हिदायतें दी हैं कि सतसंगी का आचरण किस तरह का होना चाहिए:

सतसंगी का संगत में बर्ताव:

संगत में सबसे आगे बैठने की कोशिश न करें। जब तक सतगुरु बात करने के लिए न कहें बात न करें। सतगुरु के आने से पहले किसी ऐसी जगह पर बैठें जहाँ से आपको सतगुरु के साफ दर्शन हो सकें और आपको दोबारा हिलना न पड़े। सतगुरु स्टेज पर बैठे हों या न बैठे हों सतसंग में अपनी जगह पर बैठने से पहले कृपया संगत से सौम्यता और नम्रता से पेश आएं। यह मान लें कि सारे शिष्य आपस में भाई–बहनें हैं, आप उन सबके सेवक हैं। किसी गरीब का तिरस्कार न करें।

अज्ञात रहस्य:

सतगुरु को इतना याद करें कि हर साँस के साथ गुरु के विरह का दर्द दिल को पीड़ा दें। यह स्थिति सिर्फ तभी हो सकती है जब आप बाकी सारे विचारों को बाहर निकाल फैंकते हैं।

जब आप सतगुरु से मिलते हैं ऐसा ऊँचे भाग्य से होता है तब ऐसे दर्शन करें जैसे कई दिनों से भूखे हैं। जब बच्चा माता के दूध के लिए रोता है उस समय अगर कोई उसके और माता के बीच आए तो बच्चा रोता-चीखता है और मायूस हो जाता है।

पपिहा अपना पन नहिं त्यागे। जले पतंगा जोती आगे।।
मछली को जैसे जल धारा। गुरुमुख को सतगुरु अस प्यारा।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं जैसे पपीहा सिर्फ स्वाति बूँद का पानी ही पीता है। पपीहा स्वाति बूँद के लिए तरसता है आखिर में जब मेघ बरसते हैं तो पपीहा पानी पीता है। जैसे मछली पानी से अलग होकर तड़पती है, वापिस पानी में जाकर ही उसे सुकून मिलता है। उसी तरह सतगुरु को देखकर सेवक को इतना प्रफुलित होना चाहिए कि सतगुरु के दर्शन करने से उसे अपनी सुध भी बिसर जाए। सेवक के मन में कोई भी सोच-विचार न आए जैसे धूप-छांव है या बारिश हो रही है।

हर तरफ़ से ख्याल हटाकर सतगुरु की दोनों नूरी आँखों के बीच में देखें हो सके तो उतनी देर अपनी पलक भी न झपकने दें। सतगुरु के सतसंग को, उनके वचन को ध्यान देकर सुनें और आँखों से उनके दर्शन करें। इतनी एक टक से सतगुरु के चेहरे को देखें कि आपको सिर्फ अपने सतगुरु का नूरी चेहरा ही नज़र आए और किसी का भी चेहरा नज़र न आए। शान्ति से सतगुरु के दर्शन का आनन्द लें।

किसी भी आवाज़ की तरफ़ ध्यान न दें जैसे दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ या किसी की बात करने की आवाज़। अगर कोई प्रेमी सतगुरु को सलाम करे नमस्ते करे उनसे हाथ मिलाए या उन्हें सुप्रभात या शुभ रात्रि कहे तो उसकी तरफ़ ध्यान न दें। अगर आप ऐसा करते हैं तो यह सतगुरु का निरादर है।

अगर प्रेमी सतगुरु का अनमोल दर्शन लेने की बजाय कहीं और देखता है तो इसमें उसका बहुत बड़ा नुकसान होता है। प्रेमी दर्शन में इतना लीन हो जाएं अगर कोई आदमी बीच में रुकावट भी डालता है तो भी आपका ध्यान उस तरफ़ न जाए। सतसंग में न हँसें अगर सतगुरु भी हँसें तो आपको हँसने की ज़रूरत नहीं।

गुरु के दर्शन की महानता:

अगर मेरे सतगुरु बाबा जयमल सिंह जी आकर मुझे एक पल का भी दर्शन दे दें तो मैं खुशी–खुशी अपना सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ। प्रसाद बाँटते समय आमतौर पर शोर और गड़बड़ी मच जाती है जोकि बहुत बड़ी गलती है। आपको प्रसाद की तरफ़ भी ध्यान देने की ज़रूरत नहीं कि प्रसाद आपको मिलता है या नहीं! प्रसाद के बारे में सोचकर सतगुरु के कीमती दर्शनों को न गवाएँ प्रसाद ले लें लेकिन सतगुरु का दर्शन न खोने दें।

सतसंग सुनते समय आलस करके उबासियाँ न लें ऐसा करना पाप है। जब सतगुरु सतसंग करने के बाद उठते हैं तब खुद को अभागा समझें कि कीमती समय आपके हाथ से निकल गया।

सतसंग के बाद सतसंगी की ड्यूटी:

सतसंग के बाद सतसंगी को किसी के साथ बातें नहीं करनी चाहिए और सिमरन पर ज़ोर देना चाहिए। सतसंग के बाद जो सतसंगी लोगों से घुल–मिलकर बातें करते हैं, आप उनकी संगत से दूर रहें। यकीन मानें कि सतसंग के दौरान सतगुरु अपने दर्शन से सतसंगी का दिल भरपूर कर देते हैं। अगर आप किसी से बातें करते हैं तो आपके दिल से दर्शनों का खज़ाना खाली होना शुरू हो जाता है। सतसंगी का यह कर्तव्य है कि वह सतगुरु से मिली दात

व्यर्थ न गँवाए बल्कि उस दात में बढ़ोतरी करे। अगर सतसंग के बाद सतसंगी तीन से छह घंटे सिमरन करे तो उस दात में बढ़ोतरी होगी।

सतसंगी को सतगुरु के सतसंग में बोले हुए वचन भी याद करने चाहिए और अपने आपसे सवाल करना चाहिए कि मुझमें क्या कमियाँ और क्या दोष हैं? उसे उस दिन से वे दोष त्याग देने चाहिए अगर वह उन दोषों को न त्याग सके तो उसे अपने सतगुरु के आगे प्रार्थना करनी चाहिए, ''हे सच्चे पातशाह! मैं पापी और अपराधी हूँ मुझे माफ करें।'' जब शिष्य भजन–सिमरन में ज़्यादा समय देगा तो उसके अंदर अपने आप ही सतगुरु के गुण आने शुरू हो जाएंगे और उसकी कमियाँ दूर होने लग जाएंगी, सतसंग सुनने का यही फायदा है।

पूरे सन्तों का सतसंग सुनने के बाद सतसंगी को सतगुरु के कहे अनुसार चलना चाहिए। उनकी शिक्षा पर अमल करना चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। सतसंगी को काम, क्रोध, निन्दा–चुगली और बुरी संगत को छोड़ देना चाहिए। अपने दस नाखूनों की मेहनत और ईमानदारी की कमाई से ही अपना निर्वाह करना चाहिए। सतसंगी तब तक रूहानी तरक्की नहीं कर सकता जब तक वह मेहनत और पसीने की कमाई से अपना गुज़र बसर नहीं करता।

अगर सतसंगी किसी के यहाँ मेहमान बनकर जाता है और वहाँ उसे खाना खिलाया जाता है तो उसके बदले में सतसंगी को अपना तीन घंटे का भजन–अभ्यास का फल देना पड़ता है नहीं तो उसके दिल का शीशा साफ नहीं होगा; जब तक उसके दिल का शीशा साफ नहीं होगा वह सतगुरु से प्यार नहीं कर सकता।

भक्ति और दृढ़ विश्वास:

प्यार और विश्वास रुहानियत की नींव है। घर नींव के बिना नहीं बनता। उसी तरह चाहे कोई आदमी बीस घंटे भजन–अभ्यास करे अगर उसमें प्यार और विश्वास नहीं तो वह रुहानियत में एक कदम भी तरक्की नहीं कर सकता। अहंकार ज़रूर आ जाता है कि मैं रुहानियत में बड़ा आकांक्षी सतसंगी हूँ। जैसे कोल्हू सारा दिन चलता रहता है लेकिन फिर भी कोल्हू का बैल उसी जगह खड़ा रहता है। वैसी ही दशा उस आदमी की है जिसके अंदर प्यार और विश्वास नहीं जागा चाहे वह बीस घंटे भजन–अभ्यास करता रहे।

जो काम उत्साह और जोश के साथ किया जाए वह काम जल्दी और अच्छा होता है। जो छात्र दिल से पढ़ाई करता है वह विद्वान बनता है। जो शिक्षक अपने छात्रों को प्यार से पढ़ाते हैं उनके छात्र अच्छे नंबरो से पास हो जाते हैं अगर शिक्षक छात्रों पर गुस्सा करता है तो छात्रों को शिक्षक की मेहनत का पूरा फायदा नहीं मिलता।

सतगुरु प्यार की मूरत होते हैं अगर सतसंगी उनसे प्यार करें श्रद्धा से भजन–अभ्यास करें उनकी आज्ञा का पालन करें तो उन्हें बहुत जल्दी लाभ मिलता है। जब तक हम सतगुरु के लिए अपने अंदर प्यार और श्रद्धा नहीं बनाते तब तक हम अपने मन को एकाग्र नहीं कर सकते। जब तक हम दुनिया में फैले हुए ख्यालों को इकट्ठा करके तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं करते तब तक हम सिमरन का रस नहीं ले सकते। प्रेम–प्यार के बिना सिमरन बोझ लगता है।

पक्के सिमरन की यह निशानी है कि आत्मा धीरे–धीरे शरीर से निकलने लगती है और सूरज, चाँद, सितारे पार करके आत्मा सतगुरु के नूरी स्वरूप तक पहुँच जाती है। यहाँ तक पहुँचाना सिमरन का काम है। आप जब तक यहाँ नहीं पहुँचते समझें कि अभी सिमरन का कोर्स पूरा नहीं हुआ। ***

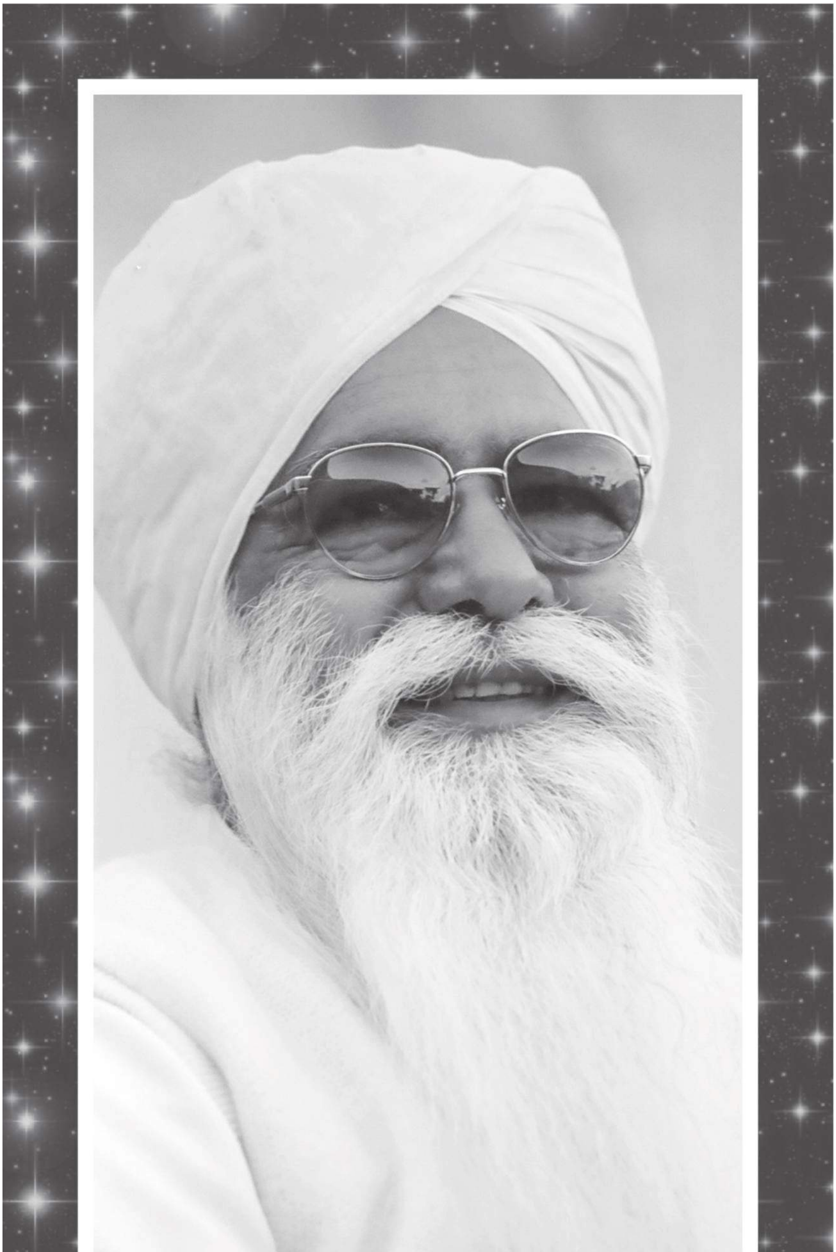

24

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

हमें सतगुरु से क्या माँगना चाहिए

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 28 जनवरी 1990

सेवक : *प्यारे सन्त जी, हमें सतसंग और सन्तों की पवित्र लेखनियों के बारे में बताया जाता है कि सन्तों के दो स्वरूप होते हैं। एक सन्तों का बाहरी या शारीरिक स्वरूप होता है और दूसरा उनका अंतरी या 'शब्द' स्वरूप होता है।*

शारीरिक स्वरूप भगवान की मर्ज़ी से कुदरत के बनाए हुए नियमों का पूरी तरह से पालन करता है। इसे यह इजाज़त नहीं होती कि यह चमत्कार दिखाए और अपनी सच्ची ताकत या सच्ची शान दिखाकर लोगों का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित करे।

हम जैसे कई प्रेमी अक्सर सन्तों से ऐसे सवाल पूछते हैं जो हमारी व्यक्तिगत समस्याएँ व्यक्तिगत फैसले होते हैं जो हमारे भविष्य की दिशा को निर्धारित करते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि गुरु का बाहरी स्वरूप हमें एक स्पष्ट और साफ उत्तर देगा जैसे कि हाँ या न, यह करो या न करो। जब हमें जवाब मिलता है तो हम उसे गुरु का हुक्म समझते हैं जिसका हमें पालन करना चाहिए।

हो सकता है कि यह गुरु के बाहरी स्वरूप का रोल न हो इसलिए गुरु अक्सर उस फैसले की जिम्मेदारी वापिस सेवकों के कँधों पर डाल देते हैं। अक्सर ऐसे सवालों का जवाब गुरु स्पष्ट रूप से नहीं देते क्योंकि गुरु चाहते हैं कि प्रेमी यह सीखें कि

किस तरह से विवेक बुद्धि का इस्तेमाल करना है। परमात्मा ने हमें अलग–अलग चीज़ें दी हुई हैं उनका इस्तेमाल करके हम दुनिया की चुनौतियों का सामना करते हुए और परेशानियों को दूर करते हुए अपने जीवन के अंदर फैसले करें।

गुरु चाहते हैं कि हम अपने आप इन चीज़ों और विवेक बुद्धि से फैसले करें इसलिए गुरु हमारे सवालों का स्पष्ट जवाब नहीं देते हैं।

सन्तजी, ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जिसके लिए सेवक को गुरु के बाहरी स्वरूप के ऊपर निर्भर रहना चाहिए? जो कीमती संपर्क हमें गुरु के बाहरी स्वरूप से मिला हुआ है, उसका आदरणीय तरीके से ज़्यादा से ज़्यादा फायदा हम कैसे उठा सकते हैं?

कौन सी ऐसी चीज़ें हैं जो कि भगवान की मौज में गुरु का बाहरी स्वरूप सेवकों के लिए कर जाता है और ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जिनका गुरु के शब्द स्वरूप की लगातार मौजूदगी को ध्यान में रखते हुए हम फायदा उठा सकते हैं? परमात्मा ने हमें जो नियामतें दी हैं उनसे फायदा उठाकर हम अपनी ग्रहणशक्ति और विवेक बुद्धि के ज़रिए अपने दुनियावी सवालों का जवाब किस तरह प्राप्त कर सकते हैं बजाय इसके कि हम हमेशा अपने दुनियावी सवाल और समस्याएँ गुरु के बाहरी स्वरूप के ऊपर बोझ बनकर डालते रहें?

बाबा जी : हाँ भई! सवाल काफी अच्छा है और हर एक के फायदे का है। कोशिश किया करें कि सवाल छोटा किया जाए। छोटे सवाल का जवाब प्रेमियों को ज़्यादा समझ में आता है। आमतौर पर इस सवाल के जवाब में बहुत सारी बातें सतसंग में बताई जाती हैं लेकिन सतसंग में हमारी तवज़्जो नहीं होती। ऐसी बात नहीं कि सभी तवज़्जो नहीं रखते कि सतसंग में क्या कहा गया है हमारे अंदर क्या कमी है और **हमें सतगुरु से क्या माँगना चाहिए?**

मैं आमतौर पर प्रेमियों से कहा करता हूँ कि आप हर महीने सन्तबानी मैगज़ीन मँगवाते हैं जिस पर आपके पैसे भी खर्च होते हैं लेकिन आप लोग मैगजीन पढ़ते नहीं। मैगज़ीन में सतसंग तथा प्रेमियों के सवाल-जवाब के जरिए भी ऐसी बातें बताई जाती हैं। मैगज़ीन में काफी सतसंग छप चुके हैं, छपते रहते हैं। बहुत सारे सवाल-जवाब भी छप चुके हैं और छपते रहते हैं।

मैं अब आपको इस सवाल के बारे में समझाता हूँ, इस सवाल का कुछ भाग बाबा सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से पूछा था! इसे समझने के लिए हमें काफी गहराई में जाना पड़ेगा।

बाहरी स्वरूप के फायदे के बारे में आपको पता ही है कि गुरु ने हमें नाम का तोहफा दिया है। गुरु हमें दिन-रात अभ्यास करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे खुद भी अभ्यास में बैठकर हमें उदाहरण देते हैं। वे हमें सदा ही सतसंग द्वारा पवित्र बनने का उपदेश देते हैं। वे हमें कई तरीकों से बार-बार समझाते हैं कि पाँच डाकू काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारी रूहानी पूँजी लूट रहे हैं और हमें रूहानियत के दिवालियेपन पर पहुँचा देते हैं इनसे बचने के लिए शब्द-नाम की दवाई खाने का उपदेश भी देते हैं।

स्वामी जी महाराज ने भी कहा है कि गुरु के दो स्वरूप हैं- एक अंतरी और दूसरा बाहरी। स्वामी जी महाराज ने अपने गुरु के आगे फरियाद की:

गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ ऐह वी रूप प्यारा मोको पर ओह वी दिखलाओ।

महाराज सावन सिंह जी और कृपाल सिंह जी, महान पवित्र आत्माएँ सचखंड से संसार में आईं। आपने हमें डैमोंस्ट्रेशन देने के लिए गुरु से कितना प्यार किया, कितना गुरु का हुक्म माना और गुरु से क्या माँगा? हमें यह समझने की ज़रूरत है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से अंतरी स्वरूप के बारे में पूछा कि कई बार जब गुरु ऊपरी रूहानी मंडलों में आत्मा को खींच लेते हैं, जिसे आमतौर पर हम लोग सपना समझते हैं लेकिन वह सपना नहीं होता सच्चाई होती है।

मैंने भी इस बारे में कई बार बताया है। गुरु कभी भी नौ द्वारों में नहीं आएंगे, नौ द्वारों में गंदगी भरी है। जिस दिन कभी हमारी आत्मा शान्त होती है, मन शान्त होता है तो गुरु अपनी प्यार भरी नज़र की कुंडी से हमारी आत्मा को ऊपरी मंडलों में ले जाते हैं। भरोसे वाले श्रद्धालू प्रेमी इसे सपना समझकर छोड़ नहीं देते बल्कि उन्होंने जो रूहानियत वाला स्वरूप देखा होता है उसे आँखों के आगे रखकर कई–कई दिन अभ्यास करते हैं। इस तरह बहुत से प्रेमी तरक्की भी कर जाते हैं।

एक बार महाराज सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह जी से पूछा,''कई बार गुरु अभ्यास में किसी वस्तु के लिए हामी भर जाते हैं लेकिन बाद में वे मौज नहीं बरताते ऐसा क्यों होता है?'' बाबा जयमल सिंह जी ने कहा,''कई बार गुरु अभ्यास में आए लेकिन सेवक ने समझ से काम नहीं लिया और जल्दी से सवाल कर दिया कि मेरा यह काम पूरा हो जाए। गुरु फिर सोचते हैं कि यह वस्तु सेवक के फायदे में नहीं है इसलिए वे मौज नहीं बरताते।''

कई बार सेवक परेशान भी होता है कि मुझे गुरु अभ्यास में हाँ करके गए थे फिर मौज क्यों नहीं हुई? सच्चाई यह है कि जो रोज़ अंदर गुरु के साथ मिलाप करते हैं उनके मण्डल में जाते हैं वे कभी भी दुनियावी वस्तुएं नहीं माँगते क्योंकि उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है। जिनकी आत्मा को गुरु कभी–कभी अपनी दया दृष्टि के साथ ऊपर खींचते हैं ऐसे लोग दुनियावी वस्तु माँगते हैं और उसके बाद फिर वे दुनिया के काम–धंधों में लग जाते हैं क्योंकि जब हम

लगातार एकाग्र नहीं होते अंदर मिलाप नहीं करते तो हमें पता नहीं कि अब मौज कैसी है और अब उस मौज का हमारे प्रति क्या रवैया है? अच्छा तो यह है कि सेवक को रोज़ाना अंदर मिलाप बनाना चाहिए ताकि कोई ऐसा टाईम भी आ जाता है कि अगले दिन भी गुरु बात को साफ बता सकते हैं।

प्यारेयो, जीव पाँच साल के बच्चे जितना नासमझ है। बच्चे को पता नहीं कि आग में हाथ दिया तो हाथ जल जाएगा। माता–पिता बच्चे का हाथ पकड़ते हैं लेकिन बच्चा रोता–चिल्लाता है। हम देखते हैं कि बच्चे को खाँसी होती है तब माता–पिता उसे दवाई देते हैं लेकिन बच्चा कहता है कि मैंने अचार खाना है। अगर माता–पिता बच्चे को अचार खाने से मना करते हैं तो बच्चा रोता है ज़मीन पर लेटना शुरू कर देता है। आप देखें, अगर बच्चे को यह समझ हो कि माता–पिता मेरी सेहत की बेहतरी चाहते हैं इसलिए मुझे इस समय अचार खाने के लिए मना कर रहे हैं तो बच्चा इतना बुरा महसूस नहीं करेगा लेकिन बच्चे को पता नहीं होता।

हम जीव ऐसे ही हैं, हम बाहर बैठे हैं। हम दुनिया के बाहरी पदार्थों को देखते हैं और उन्हें ही महत्व देते हैं। हम अंदर नहीं जाते इसलिए हम समझ नहीं सकते कि गुरु हमें अंदर वाले नाम का पदार्थ देना चाहते हैं। गुरु हमें ऊँचे तख्त पर बिठाना चाहते हैं वे हमें जीते–जी शान्ति देना चाहते हैं।

यह कहानी पहले भी कई बार सतसंग में सुनाई गई है। आज फिर मैं आप लोगों को यह कहानी सुनाना चाहूँगा। एक लक्कड़हारा लकड़ियाँ बेचकर अपना गुज़ारा करता था। एक बार कोई बादशाह बाहर शिकार खेलने गया। वह रास्ता भूल गया उस समय घने जंगल हुआ करते थे। बादशाह को प्यास लगी उस समय पानी नहीं मिलता था। प्यासे आदमी की जान तक निकल जाती है

अगर उसे कोई पानी पिलाए तो वह उसका कितना धन्यवाद करेगा। लक्कड़हारे ने बादशाह को पानी पिलाया तो उसके प्राण बच गए। बादशाह ने लक्कड़हारे से कहा, ''देख भई प्यारेया, मैं एक बादशाह हूँ। तूने मेरे कीमती प्राण बचाए हैं, मैं तुझे कीमती से कीमती चीज़ देता हूँ।'' बादशाह ने उसे चंदन का एक बाग दे दिया और कहा कि अब तू मौज कर। मेरे राज्य में यही कीमती चीज़ है।

बादशाह लक्कड़हारे को चंदन का बाग देकर चला गया लेकिन लक्कड़हारे को उसकी कद्र नहीं थी। वह रोज़ उस बाग से चंदन की लकड़ियाँ काटकर उसके कोयले बनाकर बेच दिया करता था। कुछ समय बाद बादशाह को चंदन की ज़रूरत पड़ी तो उसने अपने अहलकारों को लक्कड़हारे के पास भेजा कि उसके पास से चंदन की लकड़ी ले आओ। बादशाह को लगा कि शायद उस चंदन के बाग से फायदा उठाकर लक्कड़हारा बहुत धनी हो गया होगा।

अहलकार जब लक्कड़हारे के पास गए तो उन्होंने देखा कि उसके पास वही कुल्हाड़ी और वही रस्सी थी। लक्कड़हारे ने बाग की सारी लकड़ी का कोयला बनाकर बेच दिया था। अहलकारों ने लक्कड़हारे से कहा अगर तेरे पास चंदन की लकड़ी है तो हमें दे। लक्कड़हारे ने कहा कि आप देख रहे हैं कि सारा बाग विरान हो गया है। मैं तो सारी लकड़ी जला-जलाकर बेच चुका हूँ। बस, अब इस कुल्हाड़ी के अंदर चंदन की लकड़ी का दस्ता बचा हुआ है।

हमें पता है कि दस्ता छोटा सा होता है। जब उस लकड़ी के दस्ते की कीमत लगाई और लक्कड़हारे को काफी सारे पैसे मिले तब लक्कड़हारा बहुत पछताया कि अफ़सोस! यह इतनी कीमती लकड़ी थी लेकिन मैंने इसके कोयले बना-बनाकर क्यों जला दिए? पछतावा करते-करते ही उसकी साँसें खत्म हो गई।

यह तो एक कहानी है लेकिन सच्चाई यह है कि हमें गुरु ने नाम का तोहफा चंदन का बाग दिया है। सतगुरु की संगत–सोहबत चंदन की खुशबू है लेकिन हम उस सतसंग और भजन–अभ्यास को एक रीति–रिवाज ही समझ लेते हैं कि मैं सुबह उठकर बैठा था या शाम को बैठा था। शाम को डायरी में लिख लेते हैं कि मैंने दो घंटे भजन–अभ्यास किया है लेकिन हम मन की निगरानी नहीं करते कि उन दो घंटे में हमारा मन कहाँ–कहाँ गया। फिर हम सोचते हैं कि मैं कल इसे कहीं नहीं जाने दूँगा। अपने आपको गुरु के चरणों में रखूँगा गुरु का सिमरन करूँगा।

गुरु जिन्होंने हमें नाम दिया है वे हमारे ऊपर दया करते हैं, गुरु दया के पुँज हैं। बेशक वे शरीर छोड़कर सचखंड चले जाएं फिर भी वे हमारी तरक्की के बारे में सोचते हैं। वे सिर्फ सोचते ही नहीं उपाय भी करते हैं कि इन पौधों को कैसे पानी देना है। वे सचखंड जाकर हमें भूलते नहीं हमारी इंतज़ार में होते हैं और यही सोचते हैं कि ये किस तरह नाम की कमाई कर सकते हैं। जब हम उनके पास जाते हैं तो वे स्वागत करते हैं और हमें परमपद देते वक्त हिचकिचाते नहीं, इतना बड़ा ईनाम देते हैं।

प्यारेयो, जब हमारे थोड़े बहुत भजन का मूल्य आंका जाता है तब हम पछताते हैं कि ओह! गुरु हमें इतनी अच्छी चीज़ देने को तैयार थे लेकिन हमने उनके साथ निःस्वार्थ प्यार क्यों नहीं किया, क्यों उनका दिया हुआ भजन–सिमरन नहीं किया। सेवक को पता नहीं क्योंकि सेवक बाहर बैठा है। अभ्यास करके अंदर की तरफ़ नहीं जाता बाहरी चीज़ें ही माँगता है। हम उस लक्कड़हारे की तरह इस चंदन के बाग की खुशबू से वाक़िफ नहीं और इसकी कद्र नहीं कर रहे।

अब रही बाहरी स्वरूप की बात कि हमें बाहरी स्वरूप से क्या माँगना चाहिए और क्या कहना चाहिए? बाहरी स्वरूप कई बार सेवक से यही कहता है कि आप अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएं अपनी विवेक बुद्धि का इस्तेमाल करके खुद अपने जवाब ढूँढ़ें। यह किसी हद तक ठीक है।

आपको पता है कि सन्त सतसंग के ज़रिए जीव को अपने वचनों से बड़ी बारीकी से समझा देते हैं फिर कोई ऐसी बात नहीं रहती कि जो उसकी समझ में न आए। सन्त सतसंग में सब कुछ बताते हैं कि गुरु से क्या माँगना चाहिए। सन्त, सेवक की दुनियावी ज़िंदगी में कोई दखल नहीं देते। सन्त सेवक की प्रालब्ध नहीं छेड़ते इसे उसी पर छोड़ देते हैं।

प्यारेयो, सन्त–महात्मा का मिशन किसी वेद–शास्त्र के आसरे नहीं होता। उनका मिशन प्रभु के नाम के और उनके गुरु के सहारे होता है। उनके गुरुदेव जो काम उन्हें सौंप जाते हैं वही उनका मिशन होता है। सन्त–महात्मा पहले आए परम सन्तों की लेखनियों में से अगुआई के तौर पर उदाहरण देते हैं कि हम यह न सोचें कि ये हमें कोई नई बात बता रहे हैं। वे हमें बहुत प्यार से कहते हैं कि प्यारेयो, हमसे पहले आए हुए महात्मा धर्म–पुस्तकों में जो लिखकर गए हैं, उनमें भी यही चीज़ें लिखी हुई हैं।

मैं सतसंग में बताया करता हूँ कि महाराज सावन सिंह जी अपने सेवकों से कहा करते थे, ‘‘जो लोग सन्तों के पास यह आशा लेकर जाते हैं कि हमारी बिमारी दूर हो जाए बेरोज़गारी दूर हो जाए या हमारा मुकदमा फतह हो जाए ऐसे लोग सतसंग से क्या फायदा उठाएंगे? ऐसे लोग सतसंग में आने का कष्ट न करें वे अपने घर में ही बैठे रहें।’’

यह बहुत समझने की बात है कि बहुत से जीव जो अंदर जाते थे उन्हें पता है कि महाराज सावन सिंह जी कितने साल पहले इस संसार से चले गए, उन्हें बहुत बिमारियों का सामना करना पड़ा। इसी तरह महाराज कृपाल सिंह जी भी काफी अरसा पहले इस संसार से चले गए उन्हें भी बहुत बिमारियों का सामना करना पड़ा, ऑपरेशन भी करवाना पड़ा।

प्यारेयो, मैं सदा ही बताया करता हूँ कि सन्तों का अपना कोई कर्म नहीं होता। हम लोग उन पर अपनी दुनियावी समस्याओं का बोझ लाद देते हैं। इसका मतलब यह भी नहीं होता कि हमने अपनी किसी ज़रूरत या दिल का उभार उनके आगे निकाला हो और वे हमारी मुनासिब मदद न करें। अगर हम भजन–सिमरन करते हैं तो प्रभु हम पर दया–मेहर करता है हमारी बिगड़ी बात बन जाती है।

मैं बताया करता हूँ अगर कैदी जेल में जाकर बदमाशियाँ करेगा या जेल के नियमों को भंग करेगा तो उसकी सज़ा बढ़ा दी जाती है और जेलर उसे सख्त सज़ा भी देता है। अगर कैदी जेल के नियमों का अच्छी तरह पालन करता है, वहाँ अच्छा व्यवहार रखता है तो उसकी सच्चाई और अच्छाई को देखकर अफ़सर लोग उसकी सज़ा माफ भी कर देते हैं। हम जिसकी याद में बैठे हैं क्या वह हमें देख नहीं रहा? वह ज़रूर देख रहा है और मुनासिब मदद भी कर रहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

बिन बोलयां सब कुछ जाणदा किसपे करिए अरदास।

हम अंदर नहीं जाते इस कारण हम अहंकार में आ जाते हैं। अच्छा हो जाए तो हम कहते हैं कि ये सब हमने किया है हमारी मेहनत है अगर उसमें कोई कमी रह जाए तो गुरु–परमात्मा में कमियाँ निकालते हैं। जो महात्मा अंदर जाते हैं वे गुरु को ही माँगते हैं।

भाई गुरदास जी अपनी वारां में लिखते हैं कि गुरु जिस पेड़ के नीचे बैठते हैं वह पेड़ भी खुश हो जाता है। उस पेड़ को इन्सान का जन्म मिलता है अगर प्रेत भी सूक्ष्म रूप में गुरु के दर्शन कर लें तो वे भी मुक्त हो जाते हैं; पत्थर तक भी मुक्त हो जाते हैं।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जो इन्सान गुरु की शरण में चलकर आता है वह मुक्त क्यों नहीं हो सकता? उसका तो मुक्त होना बहुत ही आसान है लेकिन हमारा मन हमें इतना भरोसा बाँधने नहीं देता।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जीव को यह पता नहीं होता कि मैं जो माँग रहा हूँ इसमें मेरा फायदा है या नुकसान है। यह तो गुरु ही जानते हैं कि इसका दुनियावी पदार्थों में क्या फायदा है। सन्त–महात्मा हम दुनियावी पदार्थों में फँसे हुए जीवों को निकालने के लिए ही आते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने अपने गुरु से नाम माँगा कि हे गुरु, अगर आप देना चाहते हैं तो मेरे अंदर नाम की किरण प्रकट कर दें। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

बिन तुध होर जे मँगणा सिर दुखां दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख ।।

महाराज कृपाल को बचपन से ही अन्तर्यामता थी। आप अन्तर्यामता से परहेज करते रहे। जब आप गुरु के चरणों में गए तो आपने गुरु से इज़्ज़त भरा प्यार माँगा। आपने गुरु से कहा कि मुझे इज़्ज़त भरा प्यार बख्शें। आप अंदर जाते थे सच्चाई को समझते थे। इस महान हस्ती की जितनी भी इज़्ज़त की जाए उतनी ही कम है। जो अंदर जाते हैं ऊपरी मंडलों में सन्तों की कद्र देखते हैं वे ही उनसे सच्चा और ऊँचा प्यार कर सकते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि जब महाराज सावन सिंह जी का आखिरी वक्त आया तब लोग प्रार्थना कर रहे थे। महाराज सावन ने उस समय प्रेमियों से यही कहा, ''अगर आप मुझे कुछ और वक्त सेवा का मौका देना चाहते हैं तो आप मुझे दुनियावी मसलों के पत्र न लिखें अगर कोई बात भजन–सिमरन के बारे में है तो पत्र लिखें। आप मेरे ऊपर दुनियावी समस्याएँ न लादें।'' आप यह भी कहा करते थे कि,''अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ मेरे ऊपर बोझ लादते वक्त कुछ न कुछ संयम से काम लें।''

हज़रत बाहु कहते हैं कि परमात्मा के आशिकों के दिल मोम के समान होते है लेकिन माशूकों के दिल काले होते हैं। मोम थोड़ी सी गर्मी सहन नहीं करती तुरंत पिघल जाती है। सतगुरु हमारे कष्ट को देखकर हमारी मुनासिब मदद ज़रूर करते हैं। हमारी बहुत सी माँगे इस प्रकार की होती हैं जो हमें रूहानी सफ़र में आगे नहीं बढ़ने देती। महाराज जी कहा करते थे,''प्यारेयो, अगर गुरु सेवक की बातें माने तो गुरु सेवक को करोड़ों जन्मों तक भी अंदर लेकर नहीं जा सकता। गुरु परमात्मा की ओर से आए हैं, वे वही करते हैं जिससे दुनिया में रहते हुए हमारे अंदर भी रूहानी तरक्की होती रहे।

महाराज जी कहा करते थे कि सन्त–सतगुरु नामदान के समय ही जीव के अंदर इस तरह का इंतज़ाम कर देते हैं कि हमारी अंदर तरक्की भी होती रहती है और हमारे कर्मों के लेखे–जोखे का भुगतान भी होता रहता है। हमें इंटरव्यू में दर्शनों के कीमती वक्त की कद्र करनी चाहिए। ऐसा नहीं कि सारे प्रेमी कद्र नहीं करते। जिन्हें कद्र होती है वे फायदा उठाकर जाते हैं। वे कोई दुनियावी बात नहीं करते लेकिन आमतौर पर बहुत लोग अपनी दुनियावी बातें ही पूछते हैं।

महाराज सावन सिंह जी ने भी सख्ती से यही कहा था कि जो प्रेमी दुनियावी समस्याओं वाला पत्र लिखेगा उसके पत्र का जवाब नहीं दिया जाएगा। सिर्फ उसी पत्र का जवाब दिया जाएगा जो भजन–सिमरन के बारे में होगा। यही नियम महाराज कृपाल का था। मैंने भी संगत के आगे यही विनती की है कि अगर पत्र सिर्फ भजन–सिमरन के बारे में होगा तो उस पत्र का जवाब दिया जाएगा। हमें दुनियावी बातों के बारे में पत्र नहीं लिखने चाहिए। हम रूहानियत और भजन–अभ्यास के बारे में ही पत्र लिखें। अगर हम इंटरव्यू में दर्शन के लिए भी आते हैं तो हमें रूहानियत के बारे में ही बात करनी चाहिए; इसमें सेवक का बहुत फायदा है।

सन्त अपने सेवक की दुनियावी ज़िंदगी में दखल नहीं देते वे अपनी कोई बात किसी सेवक पर नहीं थोपते; सेवक को खुला छोड़ा होता है। सन्त यही सलाह देते हैं कि आप ज़्यादा से ज़्यादा भजन–सिमरन करें। भजन–सिमरन करने से आपकी आत्मा में शक्ति आएगी और आत्मा पिछले कर्मों का भुगतान करने के लिए मज़बूत हो जाएगी। अगर इस बारे में कई दिन भी बोलते रहें फिर भी कम है लेकिन टाइम हो गया है।

मैं आशा करता हूँ कि मैंने जो कुछ बोला है आप उसे समझने की कोशिश करेंगे। सबसे अच्छा यही है कि सतसंगी भजन–सिमरन करें तो मन हमारे अंदर सवाल पैदा ही नहीं करेगा। मन दुनियावी सवाल पैदा करता है और हम उसे गुरु से पूरा करवाना चाहते हैं। हम भक्ति मन की करते हैं या गुरु की करते हैं? हमने मन को ही खसम–खसाई समझ रखा है। क्यों न ज़्यादा से ज़्यादा भजन–सिमरन किया जाए ताकि मन के संकल्पों और मन के सवालों से छुटकारा पाया जा सके।

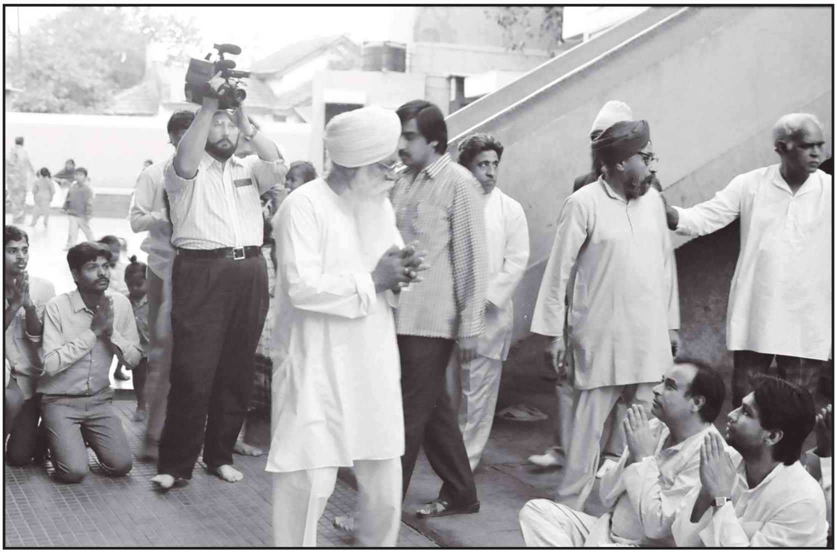

प्यारेयो, गुरु की आज्ञा का पालन करने की बजाय हम गुरु से कहते हैं कि आप हमारी आज्ञा का पालन करें, जैसा हम कहते हैं आप वैसा करें। गुरु ने हमें नाम का तोहफ़ा दिया है और हमारी जिम्मेदारी ली है।

गुरु कहते हैं, ''अगर आप इस तरह भजन–सिमरन करेंगे तो मैं आपको परमात्मा के दरबार में ले जाकर आपसे जो पहले भूलें हुई हैं उन्हें माफ करवा दूँगा।'' वे माफ करवाते भी हैं इसमें कोई शक नहीं। आज भी हमारे सतगुरु सचखंड जाकर हमारी फिक्र करते हैं, हमारी संभाल करते हैं। अनेकों लोग कहते हैं कि महाराज जी आए और उन्होंने हमारी संभाल की है।

***

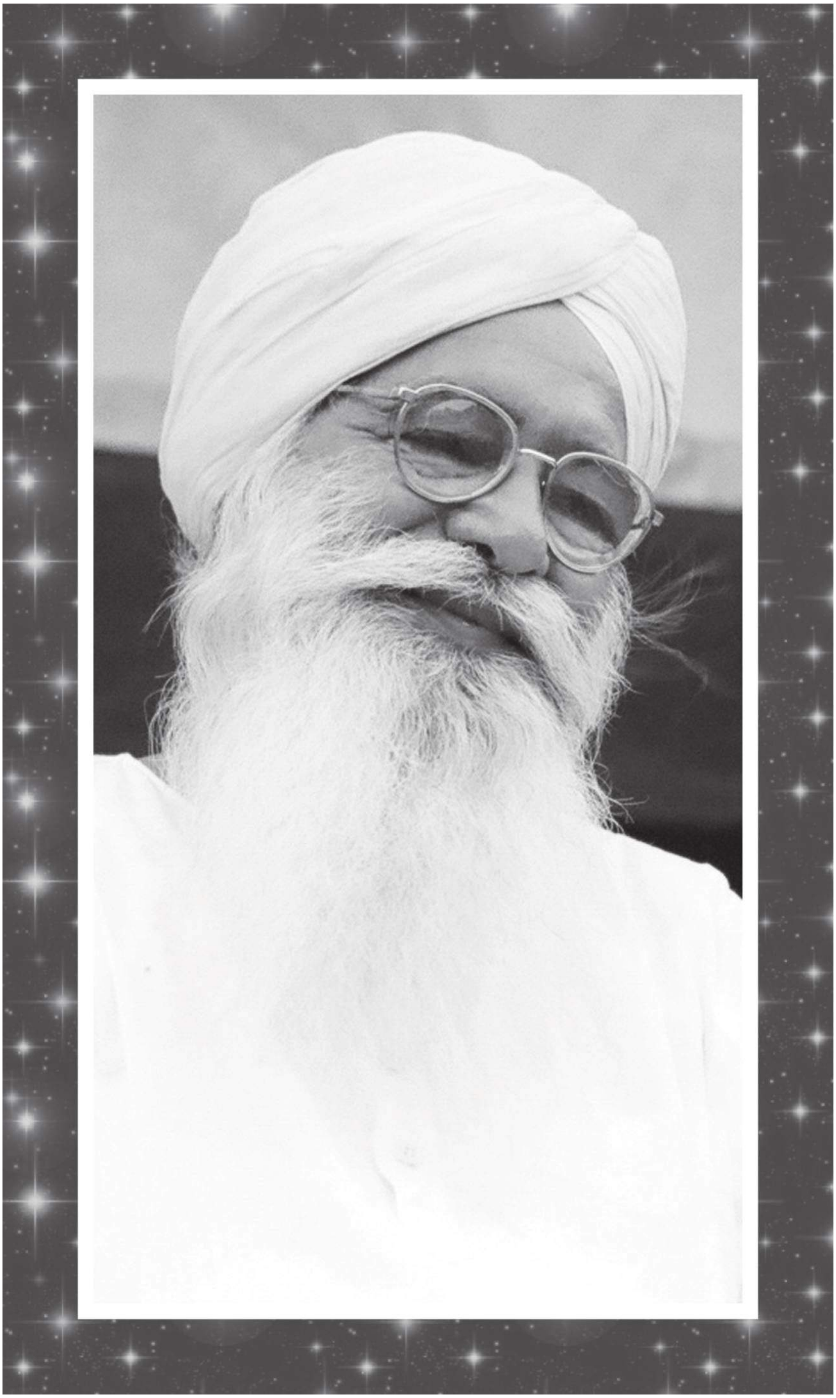

25

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

जिन्हां लग्गे प्रेम तमाचे

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 2 नवम्बर 1983

सेवक : *जब हम आपके पास यहाँ आकर दस दिन बिताते हैं तो इन दस दिनों में हमारी आत्मा पर क्या असर होता है? जब हमें नामदान प्राप्त होता है तब गुरु हमारे सारे पिछले कर्मों को खत्म कर देते हैं। क्या इन दस दिनों में ऐसा कुछ होता है?*

बाबा जी : यह हम सबके लिए बहुत समझने वाली बात है। कबीर साहब ने कहा है :

इन्द्र की एक घड़ी रहट बारह मास, सतसंग की एक घड़ी सिमरन बरस पचास।

रहट चाहे बारह महीने चलता रहे फिर भी वह दुनिया के फायदे के लिए इतना पानी नहीं निकाल सकता जितना इन्द्र देवता एक घड़ी बारिश करके पानी बरसा देता है। कबीर साहब कहते हैं कि हम घर में बैठकर भले ही पचास साल सिमरन कर लें फिर भी वह सतसंग की एक घड़ी की बराबरी नहीं कर सकता। किसी जीवित महापुरुष की संगत में एक सैकिंड भी बैठना घर में बैठकर किए हुए पचास साल के सिमरन से भी बहुत ज़्यादा महत्व रखता है।

कबीर साहब कहते हैं कि जब आप साधु के दर्शनों के लिए जाएं तो किसी को साथ न ले जाएं। आपको यह भी चिंता नहीं करनी चाहिए कि भविष्य में क्या होने वाला है? जो हो चुका है उसकी भी चिंता न करें। आप एक बार गुरु के पास जाने लग जाएं

तो आप उनके पास बार–बार जाते रहें। हमें सन्तों की संगत नहीं छोड़नी चाहिए उनके बताए मार्ग पर चलते रहना चाहिए। जैसे ही हमारे ऊपर सन्तों की नज़र पड़ती है हम निर्मल हो जाते हैं। जब हम सन्तों की संगत में जाते हैं तो वे हमसे सिमरन करवाते हैं।

जिन प्रेमियों को जीवित महापुरुष की संगत का रस आ गया वे कहते हैं कि हमारा जो भी रुहानियत का काम बना वह सन्तों की संगत से बना, पढ़–पढ़ाई से नहीं बना। कबीर साहब कहते हैं:

पढ़ना लिखना कुछ नहीं सतसंग का मेल।

कबीर साहब को वेदों का और दुनिया का भी बहुत ज्ञान था। कबीर साहब कहते हैं कि मुझे चार वेद ज़ुबानी याद हैं लेकिन मेरा जो काम बना वह सतसंग और गुरु की संगत–सोहबत की वजह से बना। कबीर साहब आगे कहते हैं:

एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूं ते आध, कबीरा संगत साध की काटे कोट अपराध।

साधु–सन्तों के दर्शनों से पाप कटते हैं। उनकी मीठी ज़ुबान से निकले हुए मधुर शब्द हमारे दिल को ठंडक देते हैं और वे हमारे पाप धो देते हैं। वे हमारे फायदे के लिए ही समझाते हैं, जब हमें उनके शब्दों का मूल्य पता चलता है तब हम कहते हैं ओह! अगर यह संगत इतनी अच्छी थी तो मैंने ज़िंदगी में पहले क्यों नहीं की? गुरु नानक साहब कहते हैं:

बिन साधु जे जीवना तैथो बिरथा जाय।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे,''परमात्मा बेइंसाफ़ नहीं अगर हमारा पैसा बुरी तरफ़ लगेगा तो वह पाप की गिनती में गिना जाएगा और अच्छी तरफ़ लगा हुआ पैसा शुभ कर्म में गिना जाएगा। बुरी संगत–सोहबत का असर बुरा होता है और अच्छी संगत का असर अच्छा होता है।''

मैं हर प्रेमी से कहा करता हूँ कि आपको परमात्मा ने अपनी खास दया करके इस पवित्र यात्रा का मौका दिया है। आप इससे फायदा उठाएं फिर मैं यह भी कहा करता हूँ कि इस पवित्र यात्रा को न भूलें। इस यात्रा में आप उन्हें मिले हैं जो आपके हमदर्द हैं।

मैंने कल भी आपको सतसंग में नाम और अच्छी सोहबत के बारे में बताया था कि अच्छी संगत का फल बहुत अच्छा होता है। आज भी मैंने आपको बड़े प्यार से बताया है कि जैसे नाम हमारी ज़िंदगी का पानी है वैसे ही सन्तों की संगत–सोहबत हमारी ज़िंदगी की रोज़ी–रोटी है। अगर हमें सतसंग न मिले तो हम नाम नहीं जप सकते और गंदे–बुरे कर्म नहीं छोड़ सकते। सतसंग भजन की बाड़ है। हम जितना ज़्यादा भजन–सिमरन करेंगे उतना ही कम है। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

महिमा साधु संग की सुनो मेरे मीता, मैल गई कोट अग हरे निर्मल भए चीता।

एक बार मैंने सन्तबानी आश्रम अमेरिका में कबीर साहब की बानी पर सतसंग किया था। जिसमें कबीर साहब ने एक मिनट से एक साल तक साधु के दर्शन न करने के बारे में समझाया था। अगर कोई साल भर साधु के दर्शन नहीं करता तो उसका साधु के साथ कनेक्शन खत्म हो जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मैं वेख वेख ना रज्जा गुरु सतगुरु देहा।

सतगुरु के दर्शनों की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। जो सुख साधु के दर्शन से मिलता है उसके बारे में मुख से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

मैं हमेशा कहता हूँ कि इस यात्रा को कभी न भूलें। हमेशा परमात्मा और सतगुरु के आगे फरियाद करें कि वे हमें बार–बार यह मौका दें। जिन्हें यह रस आ जाता है उन्हें ही इस रस का पता है।

जिस वक्त अनुराग सागर का अनुवाद हो रहा था, कैंट बिकनल और पप्पु उस पर काम कर रहे थे। उस सिलसिले में कैंट राजस्थान से वापिस दिल्ली आ गया था। तब पप्पु के दिल में विचार आया कि कुछ महत्त्वपूर्ण बातें सन्त जी से फिर पूछी जाएं। अगर कैंट दोबारा राजस्थान आएगा तो काफी पैसे खर्च हो जाएंगे। जब पप्पु ने मुझसे बात की तो मैंने पप्पु से कहा कि तुम उससे सलाह कर लो। पप्पु ने कैंट बिकनल को सलाह दी कि दोबारा आश्रम आने के लिए तुम्हारे काफी पैसे लग जाएंगे। बिकनल फिर भी पैसे खर्च करके आश्रम आया। उसके बाद पप्पु ने कभी भी किसी को सलाह नहीं दी कि भई तू वहाँ न जा। हाँ ग्रुप में जगह न हो तो कुछ नहीं कहा जा सकता। जिनको रस आ जाता है उनको चाहे कितना भी समझाएं वे पैसे की परवाह नहीं करते।

इसी तरह मेरे पास कई प्रेमियों के पत्र आते हैं जो हर महीने यहाँ आना चाहते हैं। वे मुंबई ग्रुप में भी आना चाहते हैं लेकिन मैं किसी को यह इजाज़त नहीं दे रहा हूँ। साल में एक बार ही आएं ताकि बाकी प्रेमियों को भी मौका मिल सके। जिनको रस आ जाता है उनके लिए महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

जिन्हा लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मों गईयाँ।
लेणा देणा सब छुटयाँ खू विच पइयाँ बहीयाँ।।

***

26

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

भजन गाना अभ्यास से कम नहीं होता

सन्त बानी आश्रम, 77 आर. बी. राजस्थान – 1977

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने हमें अपना यश और भक्ति करने का मौका दिया। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने प्यार भरे लफ़्ज़ों में कहा है, ''वह ज़ुबान काट दें जो गुरु का यश नहीं करती। वे कान बंद कर दें जो गुरु के दिए हुए नाद–शब्द को नहीं सुनते। वे आँखें निकाल दें जो सतगुरु के स्वरूप की चोर हैं गुरु का दर्शन करके खुश नहीं होती।''

सच तो यह है कि करण–कारण परमात्मा हमारे ऊपर दया करे तभी हम उसके प्यार और तड़प के गीत गा सकते हैं। मैंने भजनों के महत्त्व के बारे में बहुत कुछ बताया है जिसे आप लोगों ने मैगजीन में भी पढ़ा है कि भजन बोलने कितने ज़रूरी होते हैं। भजन गाना अभ्यास से कम नहीं होता।

महाराज कृपाल कहा करते थे,''अभ्यास में बैठने से पहले ऐसा भजन बोलें जो आपकी आत्मा के अंदर तड़प पैदा करे।'' भजन बोलना गुरु के आगे अपनी नम्रता जाहिर करने का बहुत अच्छा मौका है। हम गुरु के आगे अपने ऐब गिन–गिनकर बताते हैं क्योंकि हमारा भूला हुआ मन कब मानता है कि मैंने ये गुनाह किए हैं?

जब हम सिमरन के जरिए नौ द्वारे खाली करके पूरी तरह आँखों के पीछे एकाग्र होकर आत्मा से तीनों पर्दे उतार लेते हैं

तब उस जगह पहुँच जाते हैं जहाँ से गुरु पावर आई हुई है। सच्ची नम्रता, सच्ची आजजी और गुरु के लिए सच्चा प्यार उस जगह जाकर ही पैदा होता है; उससे नीचे हम सन्तों की लिखी हुई प्रार्थनाएं बोलते हैं।

सन्त–महात्मा हम जीवों की कमज़ोरी को अच्छी तरह जानते हैं। शब्दों के रूप में उनकी पवित्र आत्मा से जो कल्पना उठ रही होती है वह उनकी सच्ची तड़प और सच्ची आजजी होती है। अगर हम अपने जीवन को उस मुताबिक ढ़ाल लें तो हम भी उन प्रार्थनाओं से फायदा उठा सकते हैं।

आम लोग जो कविताएं लिखते हैं वह मन–बुद्धि की कल्पना होती है। हम जो भी कल्पनाएं करते हैं वह उतनी पवित्र नहीं होती क्योंकि यह कल्पना काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से लिपटे हुए हृदय से आती है।

परमगति को प्राप्त सन्तों ने अंदर गुरु पावर को देखकर उसमें मिलकर उसका रूप होकर ही प्रार्थना लिखी होती है। हमें भी उनकी प्रार्थना से फायदा उठाना चाहिए अगर हम खुष्क लोगों की कविता पढ़ेंगे तो हम भी खुष्क हो जाएंगे, हमारे ऊपर भी वैसा ही असर होगा।

आपको पता है जब प्रेमी आते हैं तो सारे मिलकर भजन बोलते हैं। आज आपकी भजन बोलने की बारी है। जिसे भजन बोलने की इजाज़त मिल जाती है वह भजन माला में से पन्ना नम्बर ज़रूर बोले ताकि दूसरे प्रेमियों के लिए किताब में से भजन ढूंढ़ना आसान हो जाए।

***

27

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सेवा

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान

मैं सबसे पहले अपने गुरुदेव परमात्मा कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने अपने मुबारक चरण रखकर इस धरती को पवित्र किया। उस जगह को पवित्र माना जाता है जहाँ बैठकर गुरु अपना सुंदर समय बिताते हैं। गुरु रामदास जी अपनी बानी में लिखते हैं:

जित्थे जाय बहे मेरा सतगुरु सोई थान सुहावा।
गुरु सिक्खी सो थान भालया जिनमें सतगुरु पावा।।

गुरु के जो शिष्य उस जगह की संभाल करते हैं वे गुरु को प्यारे लगते हैं। जो शिष्य सेवा करते हैं अभ्यास करते हैं गुरु उनकी **सेवा** को परवान करते हैं, अपने खज़ाने में दाखिल करते हैं। जो शिष्य गुरु को कुलमालिक समझकर तन–मन से पूजा करते हैं गुरु का दिया हुआ काम करते हैं उनको भी पूजा जाता है; गुरु उन्हें अपने घर के अंदर जगह देते हैं।

यह उनकी ही दया है कि हम सब लोग यहाँ इकट्ठे हुए हैं। वे हमारे लिए भक्ति करने का एक–दूसरे के साथ मिलाप करने का जरिया बनाते हैं कि हमने किस तरह इकट्ठे होकर गुरु की याद मनानी है, अपने जीवन तन–मन और धन को सफल करना है।

गुरु की **सेवा** के बारे में हमें गुरु रामदास जी के इतिहास से बड़ी अचरज शिक्षा मिलती है। सेवा गरीब को अमीर और नीच को

ऊँचा करती है। गुरु रामदास जी एक बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। बचपन में आपके सिर से माता–पिता का साया उठ गया था। आप बचपन में ही ननिहाल का सहारा देखकर वहाँ गए लेकिन वहाँ भी आपको सहारा न मिला। आपने बचपन से ही दस नाखूनों से रोज़ी–रोटी कमानी शुरू की। आपका छोटा सा काम था। आप छाबड़ी लगाकर घुमड़ी (उबले हुए चने) बेचा करते थे।

गुरु अमरदेव जी और उनकी धर्मपत्नी घर में अपनी बेटी की शादी के बारे में बात कर रहे थे। इतनी ही देर में रामदास ने आवाज़ लगाई कि घुमड़ी ले लो। गुरु अमरदेव जी की पत्नी ने कहा अगर हमें कोई ऐसा लड़का मिल जाए तो अच्छा है। हिन्दुस्तान में परंपरा है कि माता–पिता ही बच्चे का रिश्ता मुकर्र करते हैं। गुरु अमरदेव जी की प्यार भरी निगाह रामदास पर पड़ी तो गुरु अमरदेव जी ने कहा कि ऐसा लड़का तो यही है।

गुरु अमरदेव जी ने रामदास से कुछ नहीं पूछा और उन्हें अपनी बेटी का रिश्ता दे दिया। हिन्दुस्तान में रीति–रिवाज के मुताबिक गुरु अमरदेव जी ने कहा, ''हमारे भल्ला कुल में यह रीत है कि घर से लड़की देते हैं और साथ ही कुछ तोहफे भी देते हैं, तू माँग क्या चाहता है?'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''आप मुझे 'नाम' का दान दें मुझे और कुछ नहीं चाहिए।''

रामदास जी ने गुरु अमरदेव जी को दुनियावी रिश्तेदार नहीं समझा, कुलमालिक समझकर दिन–रात **सेवा** के लिए कमरकसा कस लिया। वह सेवा ही थी जिसकी वजह से गुरु रामदास जी को मालिक के घर में परवान किया गया। आप नीच से ऊँच हुए और आपको सारी दुनिया में पूजा गया। हम उनकी सेवा से प्रेरणा प्राप्त करते हैं कि उन्होंने सेवा करके ही मान प्राप्त किया था।

कबीर साहब ने एक छोटे से घराने में आकर मालिक की भक्ति की। हमें भी प्रेरणा दी कि गुरु का हुक्म मानना है बीच में मन को नहीं आने देना। कबीर साहब के वक्त हिन्दुस्तान में सिकन्दर लोधी बहुत शक्तिशाली बादशाह हुआ है। इसी तरह गुरु रामदास जी के वक्त भी हिन्दुस्तान में मुगल खानदान का बहुत विशाल राज्य था। आज हमें उन राजाओं के किलों के निशान तो नजर आते हैं लेकिन आज उनको कोई याद करने वाला नहीं है। जिन महान पुरुषों ने अपने गुरुओं की **सेवा** की, नाम जपा, तन–मन और धन सब कुछ गुरु पर कुर्बान कर दिया, हम आज उन्हें प्यार से याद करते हैं। हिन्दुस्तान में करोड़ों आदमी आज भी कबीर साहब, गुरु रामदास जी का जन्मदिन मनाते हैं।

आप लोगों ने महाराज सावन सिंह जी की हिस्ट्री अच्छी तरह पढ़ी है। सब जानते हैं कि आपने किस तरह अपना तन–मन अपने गुरु के ऊपर कुर्बान कर दिया। सच्चे दिल से **सेवा** की और गुरु घर में मान प्राप्त किया, यह मान किसी हुकूमत से नहीं मिलता। इसी तरह महान गुरु महाराज कृपाल सिंह जी ने अपने गुरु सावन सिंह जी की सेवा की, अपना तन–मन और धन अपने गुरु पर कुर्बान कर दिया। आज हम उन्हें प्यार से याद करते हैं।

मुझे खुशी है कि बहुत से प्रेमी घर की जिम्मेदारियाँ छोड़कर कई महीनों से यहाँ तन, मन, धन से सेवा कर रहे हैं। महाराज जी आपकी सेवा की बहुत कद्र करते हैं। आपने जो समय यहाँ बिताया है वह उनके खजाने में दाखिल है उनके रजिस्टर में दर्ज है। महाराज जी कहा करते थे, ''सेवक मेरे दिल पर लिखे हैं।''

मैं आपको प्यार से बताना चाहता हूँ कि सेवा कर लेनी आसान है। हम एक–दूसरे को देखकर सेवा कर लेते हैं और एक–दूसरे को

देखकर उत्साह भी आ जाता है लेकिन **सेवा** को संभालकर रखना इससे भी ज़्यादा मुश्किल होता है।

प्यारेयो, हमें **सेवा** करके मान नहीं करना चाहिए अपने आपको बीच में नहीं आने देना चाहिए। सतसंगी को यह मानकर चलना चाहिए कि हमने तन, मन, धन की सेवा में और सिमरन में जो समय लगाया है यह महान गुरु की ही दया है, इसे गुरु ने ही करवाया है। गुरु नानकदेव जी कहते है:

मत थोड़ी सेव गँवाईऐ।

हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर है यह कोई वक्त हाथ से नहीं जाने देता। सेवा करके अपने अंदर अहंकार की दीवार खड़ी कर लेता है कि अगर मैं यह **सेवा** न करता तो किस तरह सतसंग का कार्यक्रम चलता।

यहाँ मेरे आश्रम का वाक्या है कि मैंने जातिय तौर पर किसी आदमी को महाराज कृपाल से बात करते हुए सुना। वह आदमी महाराज जी की तारीफ कर रहा था कि किसी वक्त आपने उसकी मदद की थी लेकिन महाराज कृपाल ने उससे कहा, ''आज तो आपने बात कर ली है आगे से ऐसी बात नहीं करनी इसमें मेरा कोई एहसान नहीं था। मैं अपने गुरु का धन्यवादी हूँ जिसने मेरे अंदर बैठकर मुझे प्रेरणा दी और मुझसे यह सेवा करवा दी।''

कल दुनियावी तौर पर और अंदरूनी तौर पर गुरु को काम करते हुए देखकर मुझे खुशी हुई। जिन प्रेमियों ने लंगर में सेवा की उससे कितने ही प्रेमियों को सहुलियत मिली, प्रेमियों ने लंगर खाया। बहुत से प्रेमियों ने टैंट वगैरहा की **सेवा** की, लोगों के ठहरने, नहाने और इधर-उधर जाने की सेवा की जिससे प्रेमियों

ने भजन–अभ्यास करके फायदा उठाया। प्रेमियों ने सेवा की तभी लोग भजन कर सके और आराम कर सके।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब बंदा बंदे की मजदूरी नहीं रखता तो क्या भगवान हमारी मजदूरी रख सकता है? वह ज़रूर देता है। वह बिना बोले ही हमारी सुनता है।''

गुरु तेगबहादुर जी के पास एक बहुत ही अमीर आदमी आया। आपका इसी तरह सतसंग का इंतज़ाम देखकर प्रेमियों के रहने की जगह देखकर कहने लगा, ''साधु–सन्तों को इस तरह की जगह बनाने की क्या ज़रूरत है। वे जब साधु ही हो गए तो उन्होंने ऐसी जगह से क्या लेना है?'' गुरु तेगबहादुर जी चुप रहे।

रात को शब्द–रूप गुरु ने उस अमीर आदमी को नज़ारा दिखाया। बाहर बहुत तेज आंधी आई ज़बरदस्त ओले पड़ रहे थे। उसे सिर छिपाने की कोई जगह नहीं मिली। वह शेर की गुफा में चला गया हाँलाकि उसे पता था कि शेर की गुफा है लेकिन मौत से डरता हुआ इन्सान क्या नहीं करता। अंदर शेर को देखकर डर से भयभीत होकर उसकी आँखे खुल गई और वह काँपने लगा।

सुबह आकर उसने गुरु तेगबहादुर जी से कहा, ''महाराज जी, मैं रात को सपने में समझ गया कि यह जगह आने–जाने वाले प्रेमियों के आराम के लिए है अगर मुझे शेर की गुफा न मिलती तो मैं उस तूफान से नहीं बच सकता था।''

प्यारेयो, सन्त उद्यम कर जाते हैं प्रेमी आकर फायदा उठा लेते हैं। सन्त प्रेमियों को प्रेरणा देकर सब कुछ करवाते हैं कि आने वाली संगत आराम करे उन्हें कुछ सुविधा मिले ताकि वे ज़्यादा से ज़्यादा भजन–अभ्यास कर सकें।

***

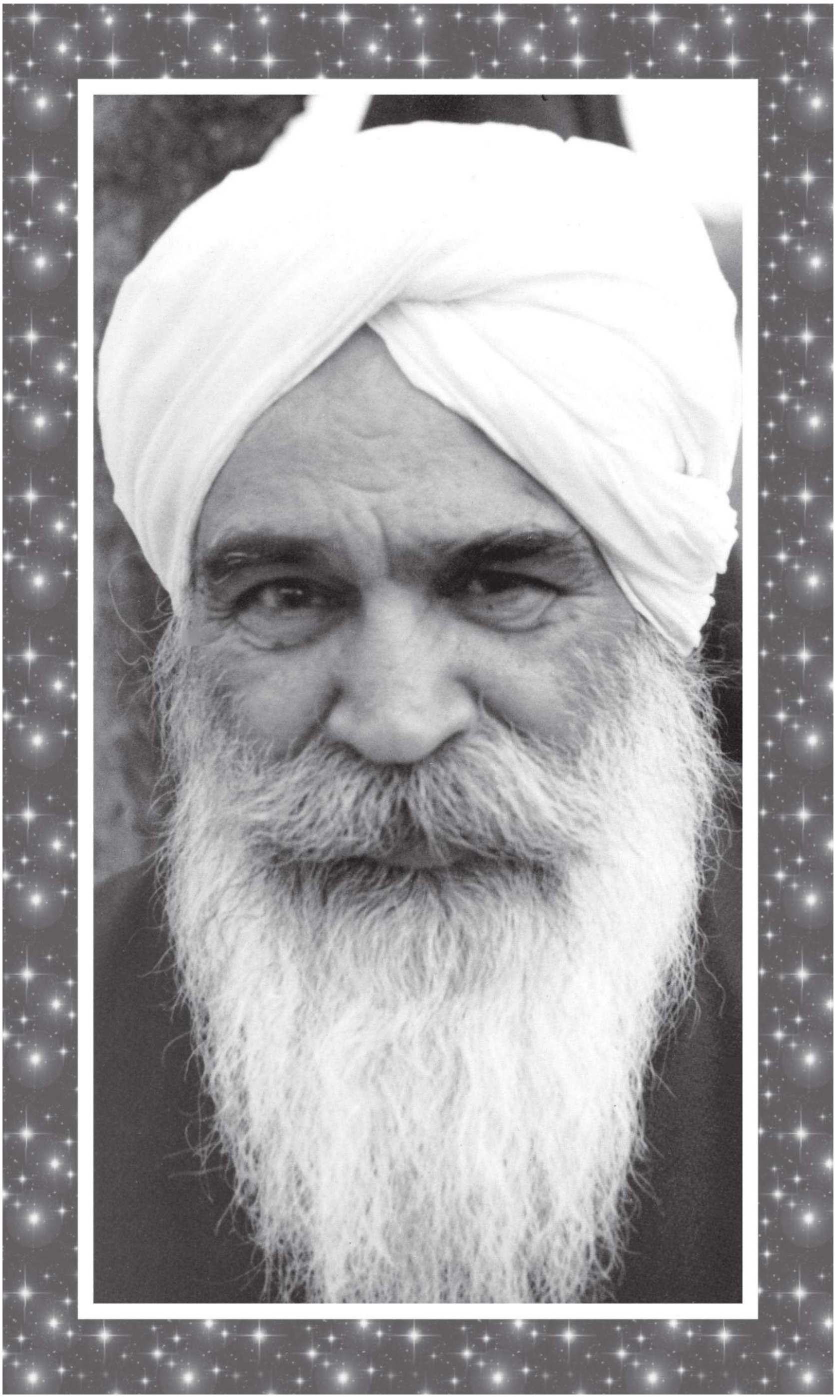

28

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा अपने जन्मदिन पर प्रेमियों को खास संदेश

सिमरन

6 फरवरी 1954

प्यारे भाईयो और बहनो,

खन्ना साहब ने मेरे जन्मदिन के अवसर पर संगत को संदेश देने के लिए कहा है। मेरा शारीरिक जन्म 6 फरवरी 1894 को हुआ लेकिन मेरा असली जन्मदिन फरवरी सन् 1924 है, जब मैं जिस्मानी तौर पर अपने गुरु महाराज सावन सिंह जी के पवित्र चरणों में बैठा। मेरा असली पुनर्जन्म सन् 1917 में हुआ जब महाराज सावन सिंह जी को देह रूप में मिलने के सात साल पहले मैंने आपकी दया से अंदर आपके दर्शन किए थे।

सभी सन्त–महात्मा दुनिया में आकर अपनी बानी द्वारा उपदेश देकर गए। मैं सभी सन्तों की लेखनियों की बड़ी इज़्ज़त करता हूँ क्योंकि परमात्मा ने उन्हें बानियाँ लिखने की प्रेरणा दी।

मेरे बहुत अच्छे भाग्य थे कि मुझे अपने गुरु के चरणों में बैठने का मौका मिला। मुझे मेरे गुरु से जो मिला मैं वही आप लोगों को दे रहा हूँ। मुझे पुराने सभी महापुरूषों की शिक्षा एक समान लगती है फर्क सिर्फ भाषा का या समझाने के तरीके का है लेकिन मतलब सबका एक ही है। उन सभी ने यही बताया कि हमने अपनी आत्मा को मन और दुनियावी विषय–वस्तुओं से कैसे आज़ाद करना है? उन्होंने हमें बताया कि खुद को पहचानें और परमात्मा को जानें।

नाम देते समय सतगुरु शब्द रूप बनकर सेवक के अंदर बैठ जाते हैं। वे दुनिया के अन्त तक हमेशा आपके साथ रहते हैं और आपकी हर मुनासिब मदद करते हैं। वे न सेवक को छोड़ते हैं और न ही उसे भूलते हैं। जो भी सच्चे मन से उन पर श्रद्धा रखते हैं वे उन्हें सच्ची शान्ति बख्शते हैं।

हर व्यक्ति के लिए उम्मीद है। गुरु ताकत इस जग में पापियों को बचाने और उन्हें परमार्थ के मार्ग पर डालने के लिए आती है। हमें उन पर श्रद्धा रखनी चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए; बाकी जो भी करना है गुरु अपने आप करेंगे।

प्रभु प्रेम है आप भी प्रेम हैं। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए प्रेम एक प्रभावशाली जरिया है। जो प्यार नहीं करता वह परमात्मा को नहीं जानता इसलिए परमात्मा को दिल से, आत्मा से और मन से प्यार करें। मैं चाहता हूँ कि आप सिर्फ सुनें ही नहीं खुद करें भी। एक पल का भजन–अभ्यास अनेकों सिद्धांतों को सुनने से ज़्यादा कीमती होता है। दूसरों को सुधारने की बजाय खुद को सुधारने की ज़्यादा ज़रूरत है, आपको परमात्मा प्राप्त होगा।

मैं शुभकामना करता हूँ कि आप सभी परमात्मा प्राप्ति के मार्ग पर शीघ्रता से बढ़ें जोकि आपके ऊपर निर्भर करता है। मेरा प्यार और मेरी शुभकामनाऐं हमेशा आपके साथ हैं और हमेशा आपके साथ रहेंगी। इस जीवन का रहस्य उनकी संगत में जाकर सुलझाया जा सकता है जिन्होंने खुद यह मसला हल किया हो। हम ऐसी हस्ती को कैसे ढूंढ सकते हैं? वही हमें उस सच को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

***

सिमरन की आदत

सतगुरु हमें सिखाते हैं कि हमने अपने शरीर से निकलकर किस तरह उस 'शब्द-धुन' के साथ जुड़ना है, जो 'शब्द' हमारे अंदर धुनकारें दे रहा है। शरीर से निकलने के कई तरीके है लेकिन जो तरीका सन्तों ने ढूंढ़ निकाला है वह कुदरती और आसान तरीका है। उसे हम 'सिमरन' के ज़रिए हासिल कर सकते हैं।

मैं परमात्मा के नाम के सिमरन के बारे में विस्तार से बताना चाहूँगा। यह बहुत महत्वपूर्ण है और यह परमात्मा के घर की तरफ़ जाने की पहली सीढ़ी है। दुनिया में हर आदमी किसी न किसी चीज़ का सिमरन करता ही रहता है सच पूछें तो कोई भी सिमरन के बिना नहीं रह सकता।

उदाहरण के तौर पर घर की महिला सारा वक्त रसोई की चीज़ों के बारे में सिमरन करती रहती है जैसे आटा, दाल, मसालें वगैरहा ताकि किसी चीज़ की कमी न पड़ जाए। महिला नये पदार्थों को बनाने का तरीका या स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के बारे में सिमरन करती रहती है।

उसी तरह किसान अपनी ज़मीन की बिजाई, खेत में खाद डालने, फसल की कटाई करने के बारे में और गाय-बैल के लिए घास वगैरहा के बारे में सिमरन करता रहता है।

दुकानदार अपनी दुकान की चीज़ों के बारे में चिन्तामग्न रहता है। उन चीज़ों की कीमतों में उतार-चढ़ाव और व्यापार में कैसे ज़्यादा मुनाफा कमाया जाए इसका सिमरन करता रहता है।

अध्यापक अपनी कक्षा, छात्रों तथा पाठ की कल्पना में मग्न रहता है। वह इन्हीं बातों का सिमरन करता रहता है।

उसी तरह एक ठेकेदार मजदूरों की समस्या सीमेंट, ईंट–पत्थर और ईमारत बनाने का सिमरन करता रहता है।

हर इन्सान सदा किसी न किसी चीज़ के बारे में सोचता रहता है और उस चीज़ का सिमरन करता रहता है। इन चीज़ों से गहरा संबंध होने की वजह से इन्सान के मन में इनकी तस्वीर बैठ जाती है जो मिट नहीं सकती और कुछ समय बाद वही उसकी पहचान बन जाती है। इसलिए कहा गया है कि आप जैसा सोचते हैं आप वैसे ही बन जाते हैं; जहाँ मन है वहाँ आप हैं। आप देह रूप में कहाँ बैठे हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता इसलिए सन्त ऐसी युक्ति अपनाते हैं जिसमें कम से कम तकलीफ हो।

कोई सिमरन के बिना रह ही नहीं सकता। इसलिए सन्त हमें दुनियावी सिमरन और दुनियावी रिश्तों के बदले में परमात्मा के नाम का सिमरन देते हैं ताकि हम दुनिया के सिमरन को भुला सकें। दुनियावी सिमरन मन को दुनिया में फैलाता है लेकिन नाम का सिमरन ऊपर खींचता है, मन को शान्ति देता है और आत्मा को मन के पंजे से आज़ाद करवाता है।

रोज़ाना कम से कम तीन–चार घंटे नाम का सिमरन होना चाहिए और उसे धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए। महात्मा कभी भी सिमरन के बगैर नहीं रहते। वे हर पल परमात्मा का सिमरन करते रहते हैं। सिमरन करना पूरी तरह से मानसिक प्रक्रिया है, इसे मन की ज़ुबान से किया जाना चाहिए। कितनी भी मेहनत का काम करते हुए सिमरन बिना किसी दखलंदाजी से किया जा सकता है। कुछ समय बाद घड़ी की टिक–टिक की तरह यह अपने आप चलने लगता है और चौबिस घंटे चलता रहता है। हम शारीरिक काम कर रहे होते हैं लेकिन हमारा मन परमात्मा के सिमरन में जुड़ा होता है।

***

सिमरन की सीट

अब हमने यह समझना है कि सिमरन कैसे जपना चाहिए? हमने जिस दिव्य जगह पर सिमरन को जपना है वह जगह हमारी दोनों भृकुटियों के बीच में है। इसे तीसरा तिल, तीसरी आँख, शिव–नेत्र, नुक्ता–इ–स्वेदा जैसे अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। यहाँ से सूक्ष्म देश की तरफ़ जाने का मार्ग है। यह पूरी चेतन अवस्था से भरी आत्मा की सीट है; यह छह चक्रों के ऊपर स्थित है। हमने स्थूल देश के आगे सूक्ष्म और कारण देश को पार करके जाना है।

योगी लोग एक–एक करके पैरों से लेकर सिर तक शरीर के छह चक्र पार करते हैं। निचले चक्रों से शुरू करके आखिर में स्थूल दुनिया को पूरी तरह से पार करते हैं। नीचे से ऊपर की यात्रा करने से बेहतर और आसान यह होगा कि हम पूरी जागृत अवस्था में अपनी आत्मा की सीट–तीसरे तिल से रूहानी यात्रा शुरू करें जोकि हमारी दोनों आँखों के पीछे है।

आत्मा को शरीर से निकालकर उसकी अपनी सीट पर पहुँचाने का सबसे आसान तरीका, मन की ज़ुबान से सिमरन करने का ही है; इसे परमात्मा ने ही लागू किया है।

***

सिमरन कैसे करना है

सिमरन करने के लिए किसी आसान आसन में बैठें। अपना ध्यान दोनों भृकुटियों के बीच में यानि तीसरे तिल पर एकाग्र करें। सिमरन पूरी तरह से मानसिक प्रक्रिया है और इसे मन की ज़ुबान से किया जाता है। जैसे ऊपर बताया गया है कि अपना ध्यान दोनों भृकुटियों के बीच में थोड़ा सा पीछे एकाग्र करना होता है। सतगुरु ने हमें जो 'शब्द–नाम' दिया है उसका धीरे–धीरे मन से या मन

की ज़ुबान से जाप करें। सिमरन करते हुए माथे के ऊपर दबाव या ज़ोर नहीं पड़ना चाहिए। शुरू–शुरू में सिमरन की बैठक आधे घंटे की या उससे ज़्यादा समय की होनी चाहिए। फिर सिमरन की बैठक दिन में दो या तीन घंटों या उससे भी ज़्यादा समय की होनी चाहिए। पवित्र नाम का सिमरन मन को अन्तर्मुखी बनाकर दुनिया के विषयों और चीज़ों के बारे में सोचने की आदत छुड़वाकर मन को शान्त और संतुलित करता है।

कुछ लोग आँखें बंद करके सिमरन करते है और कुछ लोग आँखें खुली रखकर सिमरन करते हैं। जो लोग आँखें बंद करके सिमरन करते हैं उनमें से कुछ लोग नींद में डूब जाते है और 'योग निद्रा' अवस्था में चले जाते हैं। जो लोग आँखें खुली रखकर सिमरन करते हैं उनमें से कुछ लोगों का मन पर्यावरण में व्यस्त हो जाता है इसलिए हमें दोनों खतरों से सतर्क रहना चाहिए। आँखें बंद करके सिमरन करने का तरीका बेहतर है लेकिन शर्त यह है की आप पूरी जागृत अवस्था में रहें।

सिमरन प्रतिदिन नित्यनियम से सुनिश्चित समय पर करना चाहिए। पर्शिया के सूफ़ी कवि कहते हैं,''प्रार्थना करना हमारा काम है, प्रार्थना स्वीकार की जाएगी या नहीं इसका विचार नहीं करना चाहिए।'' इसका मतलब किसी भी चीज़ की प्राप्ति की इच्छा के बगैर परमात्मा को याद करना। हमें सब कुछ हमारे सिर के ऊपर खड़े परमात्मा और गुरु के ऊपर छोड़ देना चाहिए।

जैसे हमारे शरीर को अन्न की ज़रूरत है वैसे ही हमारी आत्मा को भी खुराक की ज़रूरत है। हम घोड़े को खाना खिलाने में सावधानी बरतते हैं लेकिन घुड़सवार को भूखा रखते हैं इसका मतलब हम आत्मा को भूखा रखते हैं जोकि जीवनदायक सूत्र है।

आत्मा हमारे शरीर को सजीव बनाती है। आत्मा के बिना इस शरीर की कोई कीमत नहीं। हमें अपनी आत्मा को शरीर से भी ज़्यादा नियमित रूप से खुराक देनी चाहिए। हम जहाँ कहीं भी हों घर में हों, परदेस में हों, चाहे जिस भी अवस्था में हों हमें सबसे पहले आत्मा की खुराक की मुख्य चिंता होनी चाहिए।

'शब्द–नाम' का सिमरन जीवन का अमृत है। शब्द–नाम शारीरिक दुख, मानसिक दु:ख और बिमारियों की संजीवनी बूटी है; यह आत्मा की खुराक है। जब आत्मा तन्दरुस्त और बलवान होगी तो यह शरीर को अत्यावश्यक जीवन और प्रकाश की धारा से लबालब भरेगी, अंधेरे को जड़ से उखाड़ फैंकेगी। यीशू क्राईस्ट इसे जीवन की रोटी कहकर बयान करते हैं कि आप सिर्फ आटे की रोटी के ऊपर नहीं जी सकते। आप परमात्मा के नाम के आधार से भी जीवित रह सकते हैं।

सिमरन और ध्यान जीवन के पानी से आत्मा को भर देते हैं, आत्मा प्रबल हो जाती है। सोई हुई आत्मा परमात्मा की तरफ़ जाग जाती है। जैसे कोई बहता हुआ झरना पर्वत के ऊपर उथल–पुथल करके समुंद्र में जा मिलता है। समुंद्र उसका उगम स्थान है। समुंद्र में जाकर झरना अपनी खुद की पहचान खो देता है।

सिमरन के लिए जगह और समय की कोई पाबंदी नहीं होती। सिमरन कभी भी किसी भी जगह किया जा सकता है, जैसे उठते–बैठते, चलते–फिरते या लेटे हुए भी सिमरन कर सकते हैं लेकिन सिमरन पूरी जागरूकता से सचेत होकर ही करना चाहिए।

सिमरन करने के लिए अमृतवेला उत्तम समय होता है। रात को दूध और फल जैसा बहुत हल्का खाना तथा सुबह जल्दी उठकर स्नान करना सिमरन करने में मदद करता है।

विचार शब्द और कृति में पवित्रता रूहानी अनुशासन में बहुत कारगर होती है। पहले नैतिक और साफ–सुथरा जीवन ज़रूरी है, बाद में रूहानी जीवन सफल होता है। असल में नैतिक जीवन रुहानियत की बुनियाद है। गृहस्थी सतसंगी के लिए अपने जीवन में खाने–पीने में और वचनों में अनुशासन रखना बहुत ज़रूरी है।

सिमरन बहुत धीरे–धीरे करना चाहिए। नाम के शब्द स्पष्ट तौर पर दोहराने चाहिए या उनका मनन करना चाहिए। शीघ्र प्रगति के लिए सिमरन बहुत प्यार, श्रद्धा, विश्वास और एकाग्रता के साथ करना चाहिए। जब सतसंगी सही ढ़ंग से सिमरन करता है तो उसकी आत्मा के ऊपर ईश्वरी मदहोशी छा जाती है, आत्मा परम शान्ति का अनुभव करती है।

सारे दुनियावी विचार खत्म हो जाते हैं। आत्मा शरीर की ज़ंजीरों से मुक्त हो जाती है और गुरु की अदभुत ताकत से ऊपर की ओर प्रबल रूप से खिंची चली जाती है। जब यह इन्द्रिय भोगों की दुनिया से पार निकल जाती है तब इसकी अपनी सीट तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाती है, अंदर का प्रकाश प्रकट हो जाता है और एक–एक करके अंदरूनी अनुभव होने शुरू हो जाते हैं जैसे तारों से भरा आसमान, चाँद, सूरज प्रकट होते हैं।

इस बात का ज़िक्र कई प्राचीन और आधुनिक वेद–शास्त्रों तथा धर्म ग्रंथों में आता है। जैसे वेद, उपनिषद, पवित्र कुरान, गुरुबानी और ईसा चरित वगैरहा हैं। मोहम्मद पैगम्बर और हज़रत मूसा ने भी अंदर के प्रकाश के बारे में बताया है। परमात्मा की आवाज़ के बारे में बाईबल के अंदर अनेक जगह पर गड़गड़ाहट और चमकती बिजली का ज़िक्र है जैसा की वह अपने दूतों से कहते हैं कि यह परमात्मा की आवाज़ है।

जैसे आत्मा शुरू के मंडल पार करके सूक्ष्म मंडल में पहुँचती है तब सतगुरु का नूरी स्वरूप प्रकट होता है, वह आत्मा का स्वागत करता है। आगे की रूहानी यात्रा में गुरु एक–एक करके सारे मंडल पार करवाता है। सतगुरु के आगमन से सिमरन का कोर्स पूरा हो जाता है और अभिलाषी आत्मा परमात्मा की गोद में जा पहुँचती है।

सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने अपनी बानी में उस प्रज्वलित प्रकाश का ज़िक्र किया है जो सतसंगी को शब्द की मधुर याद मनाने पर अनुभव होता है; उसका वर्णन किया है। वे हमें हर पल परमात्मा का सिमरन करने का संदेश देते हैं। सभी महात्माओं ने अपनी बानियों में लिखा है कि उस सच्चे परमात्मा के अनेकों नाम हैं लेकिन हमारा मकसद और लक्ष्य एक ही है।

हमें नाम से शुरुआत करनी पड़ती है और नाम देने वाले सतगुरु से संपर्क बनाना पड़ता है। आप जब तक नाम देने वाले सतगुरु से संपर्क नहीं बनाते तब तक आपको नाम के शब्दों का जाप करने से फायदा नहीं होता। मिसाल के तौर पर पानी को अंग्रेजी भाषा में 'वाटर' कहते हैं। ऊर्दू भाषा में 'पानी' या 'आबे' कहते हैं। परशियन भाषा में 'जल' कहते हैं और हिंदी भाषा में इसे 'नीर' कहते हैं लेकिन इन शब्दों को बार–बार दोहराने से प्यास नहीं बुझती, प्यास तभी बुझती है जब हम एक खास द्रव्य जिसके यह अलग–अलग नाम है, उसे पीते हैं।

दुनिया और पर्यावरण का सिमरन करने की वजह से उनका हमारे ऊपर इतना प्रभाव बन गया है कि हम खुद ही दुनिया और पर्यावरण बन गए हैं। हमें सन्तों के दिए हुए नाम से परमात्मा की याद मनाकर दुनिया के विचारों को अपने अंदर से मिटाने का तरीका इस्तेमाल करना पड़ेगा।

सिमरन के दो फायदे हैं। एक तो पूरे सतगुरु के दिये हुए पवित्र नाम का सिमरन करने से अपनी आत्मा को शरीर की जंज़ीरों से छुड़वाना; दूसरा परमात्मा के पवित्र नाम का सिमरन करके दुनिया और उसके विचारों को अपने अंदर से निकाल फैंकना।

***

सिमरन के बारे में सन्तों के वचन

मैंने सिमरन के विषय पर पूरा सार–संग्रह दिया है। इस विषय पर अलग–अलग सन्तों के वचन आपके सामने रखना उचित रहेगा। सन्त कबीर साहब कहते हैं:

नाम है दारू सब रोगां दा, बिगड़ी गल बनावे नाम।

परमात्मा का नाम सुखदाई है और नाम सब बीमारियों की दवा है। जब हम परमात्मा का नाम जपते हैं तब परमात्मा हमारे पास बैठता है। तुलसी साहब कहते हैं:

धन दारा सुत लक्ष्मी पापी के भी होय।
सन्त समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ होय।।

सारे ऊँच–नीच, अमीर–गरीब लोगों में भक्त महान हैं। जो आशा उपेक्षा के बिना भक्ति करते हैं वे उनसे भी महान है। इन्सान धन–सम्पत्ति और हुकूमत से परमगति प्राप्त नहीं कर सकता। अमीरी और गरीबी वक्त के साथ बदलती है। जो इन्सान सिमरन करता है वह सारी मानव जाति में श्रेष्ठ होता है परमात्मा उस पर सबसे ज़्यादा दया बख्शता है।

ज़्यादातर लोग दुनियावी चीज़ों की माँग करते हैं। कुछ लोग संतान माँगते हैं, कुछ धन–दौलत माँगते हैं और बाकी इज़्ज़त और शोहरत कमाने की तमन्ना रखते हैं। दयालु परमात्मा सबकी विनती

सुनकर उन्हें अवश्य वह चीज़ें देता है लेकिन जो इन्सान सिमरन करता है, वह और कुछ नहीं माँगता. वह परमात्मा से परमात्मा को ही माँगता है; इसलिए परमात्मा उस पर प्रसन्न होता है।

एक बार मुगल बादशाह अकबर घोड़े पर सवार होकर घूमने निकला वह रास्ता भूल गया और उसे प्यास लगी। बादशाह ने कुएं के पास खड़े किसान से पानी माँगा। उस किसान ने बादशाह के घोड़े को पेड़ के साथ बाँध दिया। किसान को पता नहीं था कि यह अकबर बादशाह है, उसने बादशाह को खाना और पानी दिया। बादशाह उसके अतिथि सत्कार से प्रसन्न हुआ, उसने किसान को अपनी पहचान दी और कहा, ''अगर तुम्हें कभी किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मेरे पास चले आना।''

कुछ सालों के बाद गाँव में सूखा पड़ा। तब वह किसान बादशाह से मदद माँगने के लिए उससे मिलने राजधानी में गया। जब किसान राजमहल में पहुँचा तो उसने देखा कि बादशाह खुदा से प्रार्थना कर रहा था और आखिर में बादशाह ने खुदा से राष्ट्र में शान्ति और खुशहाली के लिए मन्नत माँगी। यह देखकर किसान को लगा कि मैं एक भिखारी के पास क्यों माँगने आया हूँ? मैं सीधा परमात्मा से ही क्यों न माँगूं। परमात्मा तो अमीर-गरीब सबकी प्रार्थना सुनता है।

गुरु नानक देव जी भी कहते हैं, ''हम परमात्मा से दुनियावी चीज़ें क्यों माँगें?'' जो शरीर और दुनियावी रिश्तों से प्यार करते हैं वे सब नर्क में जाएंगे लेकिन जो किसी चीज़ की आशा न रखते हुए निस्वार्थ सिमरन करते हैं वे महान हैं। आमतौर पर हम दुनियावी इच्छा और लालसा की पूर्ति के लिए परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं। जब तक औरत-मर्द ऐसी इच्छाओं से भरे हुए हैं उनका शरीर परमात्मा का मंदिर नहीं बल्कि शैतान का डेरा है।

कबीर साहब कहते हैं कि वही परमात्मा को प्यारा है जो बिना किसी स्वार्थ के परमात्मा से प्यार करता है। गुरुग्रंथ साहब में भी यही लिखा है कि मैं परमात्मा से क्या माँगूं? दुनिया में कोई भी चीज़ सदा के लिए रहने वाली नहीं है। मुझे तो सारा जग निर्गम होते हुए नज़र आता है। कबीर साहब कहते हैं:

दुख में सिमरन सब करे सुख में करे न कोय।
जो सुख में सिमरन करे दुख काहे को होय।।

जब हमारे ऊपर कोई संकट या आफत आती है तभी हम विवश होकर परमात्मा को याद करते हैं। दु:ख और कष्ट हमें परमात्मा की याद दिलाते हैं। जो धन–दौलत और समृद्धि में भी परमात्मा को नहीं भूलते विपत्ति गरीबी और दु:ख उनके पास कभी नहीं आते। जब हम परमात्मा को भूलकर पाप करते हैं तभी कठिन समय आता है।

परमात्मा का निरंतर सिमरन आत्मा का टॉनिक होता है। उससे दिन–ब–दिन मनोबल बढ़ता है। मुसीबतें, तकलीफें और इम्तिहान कितने भी कड़े क्यों न हों। वह उनसे नहीं डरता। कहर टूट पड़ने पर भी वह उनका सामना चेहरे पर मुस्कान लेकर करता है। सिमरन सारी दुनिया के रोगों का नाशक है। यह एक असरदार ईलाज है इससे चिंता मिटती है। जहाँ मानवीय कोशिशें काम नहीं करती वहाँ सिमरन गुणकारक होता है। जो सिमरन करता है उसे कभी चिंता या फिक्र नहीं होता।

लगातार और निरंतर किया हुआ सिमरन असरदार होता है। एक बार पैगम्बर हज़रत मूसा को लगा कि परमात्मा के भक्तों में वही सबसे श्रद्धालु और निष्ठावान भक्त है। मूसा को अहंकार हुआ। मूसा ने अहंकारी मनोदशा में परमात्मा से पूछा, ''क्या दुनिया में

आपका कोई मुझसे भी ज़्यादा श्रद्धालु भक्त है?'' परमात्मा ने मूसा से कहा, ''मेरे भक्तों में इन्सानों के अलावा पशु–पक्षी भी है।'' परमात्मा ने जंगल में एक त्यागी पक्षी की तरफ़ इशारा करते हुए मूसा से कहा, ''अगर तुम्हें दृढ़ भक्ति के बारे में जानना है तो उस पक्षी से जाकर मिलो।'' मूसा को पक्षियों की बोली नहीं आती थी इसलिए परमात्मा ने अपनी दया से मूसा को पक्षियों की बोली समझने में सक्षम बनाया। मूसा उस पक्षी के पास गया और उससे पूछा कि वह कैसा है? वह पक्षी परमात्मा की निरंतर याद में लीन था। पक्षी ने जवाब दिया कि जिस प्यारे ने तुझे मेरे पास भेजा है उसकी बातें करने के अलावा मेरे पास समय नहीं है।

मूसा ने उस पक्षी से दूसरा सवाल किया,''अगर तुझे कोई तकलीफ है तो मुझे बता मैं तेरी मदद करूँगा।'' उस पक्षी ने जवाब दिया,''मुझे किसी भी तरह की कोई तकलीफ नहीं। अगर तू मेरी सहायता करना ही चाहता है तो थोड़ी दूर पर पानी का झरना है तू उसे पास ले आ ताकि मुझे उस झरने से पानी पीने के लिए दूर तक उड़कर न जाना पड़े, इससे मेरे सिमरन में बाधा होती है।'' यह बात सुनकर मूसा का अहंकार दूर हो गया कि यह पक्षी तो एक सैकिंड भी सिमरन नहीं छोड़ता और मैं तो कई–कई घंटे सिमरन छोड़े रखता हूँ। गुरु नानक साहब कहते हैं:

इक पल विछड़े स्वामी जानो बरस पचासा।

हे परमात्मा, अगर मैं एक पल के लिए भी आपको भूल जाता हूँ तो मुझे पचास साल का बिछोड़ा लगता है अगर मैं आपको याद करता हूँ तो मैं जीता हूँ। जब मैं आपको भूल जाता हूँ तो इसका मतलब मैं मृतक हूँ। हमें हर हालत में सिमरन करते रहना चाहिए। परमात्मा का लगातार सिमरन भक्तों को जीवन का पानी देता है।

***

29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का भाग

खाने पर संयम रखें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 9 जुलाई 1995

शुरू–शुरू में जब बलवन्त मेरे पास आई, उस समय वह छोटी थी और उसे खाना बनाने का बहुत शौक था। मुझे यह आदत थी कि जितना खाना खाना है मैं उतना ही एक तरफ़ निकाल लेता था। इसी तरह बहुत समय हमारा संघर्ष चलता रहा। वह कई सब्जियों की कटोरियाँ भरकर लाती थी। एक दिन मैं हँस पड़ा और मैंने उससे कहा, ''बेटी, बात यह है कि मैं इतना सारा खाना देखकर घबरा जाता हूँ। मैंने भूखे रहकर अपने मुँह का स्वाद गँवाया हुआ है।'' मैं सतसंग में कहा करता हूँ:

अन्न ना खाया स्वाद गँवाया।

यह मेरी अपनी ज़िंदगी का हाल है। कई प्रेमी कहते हैं कि कभी आपकी सेहत बड़ी अच्छी होती है, कभी–कभी आप कमजोर दिखते हैं। मैं जिन दिनों 'दो–शब्द' का अभ्यास किया करता था उस समय हफ्ता भर खाना छोड़ देता था। जिसके मुँह का स्वाद ही ऐसा हो गया हो तो वह ज़ायके कहाँ से लेगा? इसलिए मैं कहा करता हूँ कि भजन करना आसान नहीं होता।

मुझे महाराज सावन सिंह जी का खाना देखने का मौका मिला है, उनका खाना बहुत सादा था। मुझे महाराज कृपाल जी के साथ खाना खाने का भी काफी मौका मिला है यह उनकी दया ही थी। उनका खाना भी बिल्कुल सादा था। मेरे ख्याल से आम आदमी

ऐसा सादा खाना कम ही खा सकते हैं। मैंने कई बुजुर्गों को खाना खाते हुए देखा है। मैंने अपने पिता को भी देखा है। वह हर निवाले के साथ कहते कि खाना ठीक नहीं बनाया। परिवार के सदस्यों पर गुस्सा भी करते थे। मैं कहता कि इन्हें नुख्स निकाले बगैर खाना हज़म नहीं होता नुख्स निकालने से खाना स्वाद बन जाता है।

मैं कई लड़कियों से सवाल करता हूँ कि जो आपके खाने की निन्दा करते हैं तो क्या आप उनके लिए दोबारा खाना बनाती हो? वे कहती हैं नहीं जी, कभी घर में दोबारा भी खाना बना है? वही खा लेते हैं। अब आप सोचकर देखें, जिनकी यह आदत है क्या उनका भजन बनेगा? क्या उनके अंदर वह रस आएगा?

महाराज सावन सिंह जी इस बारे में बताया करते थे, ''प्यारे बच्चो, आप हर निवाले के साथ सिमरन करें। हर निवाला खाते हुए सतगुरु का नाम हो सतगुरु का ध्यान हो। सिमरन करते हुए जो अन्न आपके पेट में जाएगा वह कितना रस देगा। आपका ख्याल कहीं दूसरी ओर नहीं जाएगा।''

जैसा खाईये अन्न वैसा होवे मन।

आपका यह खास उपदेश होता था कि जब खाना खाने बैठें तो आप हर तरफ़ से ख्याल हटाकर अपने ख्याल को सिमरन की तरफ़ लगाएं। फिर आप देखें, खाने में क्या रस आता है। सबसे पहले सतपुरूष कुलमालिक गुरु को भोग लगाएं। जब आपने गुरु को भोग लगाया तो वह प्रसाद हो गया तो उसे प्रसाद समझकर खाएं। अगर आप प्रसाद में नुख्स निकालेंगे तो आप पाखंड करते हैं कि हम भोग लगाते हैं।

अभ्यासी को कौन सी चीज़ें तंग करती है? नींद और आलस। आलस क्या है? जब मन कहता है कि सिमरन बाद में कर लेंगे।

जिस मन ने अब यह सलाह दी है, बाद में भी यही मन आपके पास होगा। दूसरी बात खान–पान की है। सतसंगी रात को कम खाना खाते हैं। हम या तो खाना बिल्कुल छोड़ देते हैं जिससे सेहत खराब हो जाती है या इतना पेट भरकर खा लेते हैं कि चूर्ण के लिए भी जगह नहीं छोड़ते। मैंने ऐसा खाना खाने वाले बहुत देखे हैं।

मैंने पहले माँझूवास में ज़मीन खरीदी थी। वहाँ मेरा एक प्रेमी रहता था। हमने उसे पेट भरकर हलवा–खीर खिलाई और खाना भी खिलाया। जाते हुए उसे खीर की बाल्टी भरकर दे दी और कहा कि रास्ते में यह बाल्टी फलाने आदमियों को देकर जाना। वह बाल्टी लेकर चला गया। उसके दिल में ख्याल आया कि बाल्टी उठाकर कहाँ ले जाऊँगा? उसने आश्रम के पास बैठकर ही सब कुछ खा लिया। उसने पहले ही बहुत खाना खाया हुआ था और खाकर उससे चला नहीं गया। वह हाथ–पाँव लंबे फैलाकर वहीं लेट गया।

किसी प्रेमी ने आकर मुझे बताया कि आपके दरवाजे पर एक आदमी मरा पड़ा है। मैंने वहाँ जाकर देखा तो वही प्रेमी लेटा हुआ था। मैंने उससे पूछा कि भाई तू कैसा है? उसने कहा कि बस अब मालिक के ही आसरे हूँ। मैंने उससे पूछा क्या चूर्ण लाऊँ? उसने कहा, ''चूर्ण भाए कोनी। अब पेट में चूर्ण की भी जगह नहीं है।'' मैंने उसके घर संदेश भेजा कि आपका बुज़ुर्ग यहाँ लेटा हुआ है आप इसे गाड़ी में डालकर ले जाएं।

आप सोचकर देखें! ज़्यादा खाने वालों की क्या हालत होती है? ज़्यादा खाने वाले प्रेमियों ने यहाँ तक तज़ुर्बा करवाया कि एक आदमी ने इतना खाना खा लिया कि उसे आँखों से दिखना बंद हो गया। उसके साथ वाले प्रेमी कहने लगे कि वह मेरा बुरा सोचता था इसलिए वह अंधा हो गया। मैं उसके बारे में जानता

था। पन्द्रह–बीस दिन के बाद वे मियाँ–बीबी मेरे पास सलाह लेने के लिए आए। मैंने उनसे कहा,''तुम्हें किसी डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए थी। मैंने सुना था कि तुम बोलते–बोलते अंधे हो गए थे।'' उसने कहा, ''वह मेरी अपनी समस्या थी। मैं किसी शादी में गया था वहाँ ज़्यादा अन्न–पानी खा लिया। खाने में मिर्च–मसालों के असर से मुझे दिखना बंद हो गया था।'' जबकि वह आदमी यह दावा करता है कि वह सबसे ज़्यादा भजन करता है।

अब आप सोचकर देखें, क्या ऐसे आदमी की सुरत अंदर लग जाएगी? हम लोगों की तो बातें करते हैं हो सकता है कि हमारे अंदर इससे भी ज़्यादा कमियाँ हो। सन्तों की बानी किसी खास व्यक्ति के लिए नहीं, सबके लिए होती है।

मैं गंगानगर का एक वाक्या बताया करता हूँ कि वहाँ आगरा से एक महात्मा आए। उनका रिवाज था कि जो भी प्रेमी उनके पास आता वे उसके साथ बैठकर खाना खाने लग जाते। मुझे पहले से ही ज़्यादा खाने की आदत नहीं थी। मैंने महाराज सावन का उपदेश सुना हुआ था। आप कहा करते थे, ''मेरे बच्चे यहाँ बैठे हैं इनसे पूछ लें मैंने सारी ज़िंदगी इन्हें साथ बिठाकर खाना नहीं खिलाया।''

जब मैं थोड़ी दूर बैठकर खाना खाने लगा तो उस महात्मा ने पूछा कि तुम मेरे साथ बैठकर खाना क्यों नहीं खाते? मैंने कहा कि मुझे आदत नहीं है। वह कहने लगे कि आपने थोड़ा सा खाना खाया है, आपने तो सन्तों को लाज लगा दी। मैंने भयभीत होकर पूछा क्या मैंने कोई नुकसान कर दिया? वह कहने लगे कि मैं तो ठीक से खाना खा रहा हूँ लेकिन तुम खाना खाकर उठ गए हो। वह हर चार प्रहर के बाद खाना खाते थे। मैं आठ प्रहर के बाद खाना खाता था। हर चार प्रहर के बाद खाना खाने से उनके मुँह से बदबू आती थी।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि संयम रखें। मुसलमान थोड़े दिनों का रोज़ा रखते हैं लेकिन परमात्मा के आशिक मालिक के प्यारे उम्र भर संयम रखते हैं। संयम रखना और चीज़ है और भूखे रहना या दोगुना खाना और चीज़ है।

मैं व्रत रखने के बारे में हमेशा एक पंडित और एक कुत्ते की कहानी बताया करता हूँ। एक पंडित मंगलवार का व्रत रखता था और कुत्ता भी मंगलवार का व्रत रखता था। सब लोग उस पंडित को आ दादा, आ दादा, कहकर खाने के लिए बुलाते तो वह खुश होता था। तब लोग कहते कि आज दादे का तो व्रत है। वह पंडित कहता कि आज मेरा व्रत है अगर चूरी खिलाओगे तो व्रत तोड़ दूंगा।

मेरी माता उस पंडित के लिए घी में मीठा मिलाकर चूरी बनाती थी तो वह उस चूरी को खाता था लेकिन कुत्ता संयम रखता था मंगलवार का व्रत पालता था। आदमियों को अगर खीर या चूरी मिल जाए तो फिर पेट भर के खाते हैं संयम नहीं रख पाते उनका ऐसा व्रत होता है। प्यारेयो, हमें व्रत की महानता समझनी चाहिए कि व्रत किसे कहते हैं? व्रत का मतलब है संयम यानि थोड़ा खाएं जिससे आपकी सेहत तन्दरुस्त रहेगी और ख्याल पवित्र रहेंगे।

सन्त–महात्मा कहते हैं अगर आप खान–पान के ऊपर कन्ट्रोल करेंगे, नींद पर कन्ट्रोल करेंगे तो परमात्मा के दरबार से जो आवाज़ आ रही है वह आपको सुनाई देगी। उस आवाज़ को आप धुन कह लें, आवाज़ कह लें, गुरुबाणी या अकथ कथा कह लें। आपको इन्सानी जामा परमात्मा की भक्ति के लिए एक बड़ा अच्छा अवसर मिला है यह बार–बार नहीं मिलेगा।

***

30

परम सन्त अजायब जी महाराज के मुखारबिन्द से

प्रसाद की महानता

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान

प्यारेयो, सन्त कभी भी सेवकों को प्रसाद के लिए मना नहीं करते। प्रसाद की बहुत महानता है। जिन्हें प्रसाद का ज्ञान होता है वे इससे बहुत फायदा उठा लेते हैं। अगर हम प्रसाद को श्रद्धा से खाते हैं तो इससे हमारा बहुत फायदा होता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु प्रसादि रज़ा तेरे भले की कहूँ।

मैंने अपनी ज़िंदगी में ऐसी दो घटनाएं देखी हैं कि जिन बच्चों को नाम नहीं मिला हुआ था लेकिन उन्होंने गुरु के दर्शन किए हुए थे, जब उनका अन्त समय आया, उनके मुँह में हुज़ूर का दिया हुआ प्रसाद डाला तो उन बच्चों ने बोलना शुरू कर दिया कि महाराज जी आ गए हैं। सतसंगियों के बच्चे तो बचपन से ही सन्तों की फोटो को देखकर माथा टेकते रहते हैं। बच्चों में बड़ी भारी श्रद्धा होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

प्रसाद नाम कृपा का है।

यह गुरु की अपनी दया होती है, प्रसाद में गुरु की अपनी कृपा होती है और यह गुरु की बड़ी भारी देन होती है। प्रसाद में उनकी कमाई, उनकी चार्जिंग होती है लेकिन यह हमारी श्रद्धा पर निर्भर करता है कि हमारा उसमें कितना विश्वास है कितनी श्रद्धा है।

क्या हम प्रसाद को पैरों में तो नहीं गिरा रहे? हमारे सिख समाज में गुरु नानकदेव जी को आए हुए पाँच सौ साल हो गए हैं,

आज भी उनके नाम से प्रसाद किया जाता है। वह प्रसाद गुरुद्वारे में बाँटते हैं अगर प्रसाद बाँटने वाले से कोई कण नीचे गिर जाए तो उसे इज़्ज़त से उठाकर दूसरे प्रसाद में मिलाकर खा लेते हैं।

बहुत से सतसंगियों ने मुझे परमपिता कृपाल के हाथों का प्रसाद दिया। मैंने उन प्रेमियों का धन्यवाद किया और अपने गुरु का शुक्राना किया लेकिन मुझे दुख भी हुआ कि इस बंदे को प्रसाद की कद्र नहीं। अगर इसे कद्र हो तो यह प्रसाद क्यों बाँटता फिरे?

पहले टूर पर बगोटा के आश्रम में प्रसाद के बारे में सवाल हुआ। तब मैंने अपने प्रसाद की महिमा बताई थी। जब हुज़ूर पहली बार मेरे आश्रम में आए थे तो आपने मुझे प्रसाद में बहुत से संतरे और सेब दिए थे। उस समय बहुत से लोगों ने विनती भी की थी कि उस प्रसाद में से हमें भी कुछ दें। उस समय कई लोगों का यह भी ख्याल था कि हम यह प्रसाद उठा लेंगे। मैंने चौबारे का दरवाज़ा बंद कर लिया। मैं अगले दिन ही अंदर से बाहर निकला, जब मैंने उस प्रसाद को धीरे–धीरे आराम से खा लिया।

सतसंगियों को प्रसाद की महानता का ज्ञान होना चाहिए कि प्रसाद क्या चीज़ है यह कितनी मीठी वस्तु है, कितनी प्यारी है और कितनी उत्तम है। अगर हमारे अंदर श्रद्धा और प्यार है तो प्रसाद हमारी ज़िंदगी को ही पलट देता है।

***

भाग – तीन

नाम और भक्ति

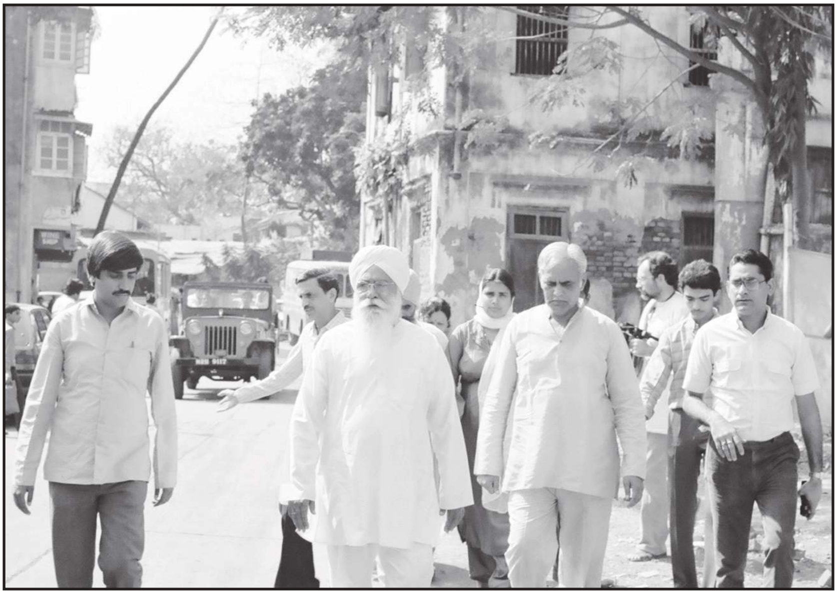

मुक्ति नाम में है और नाम हमें गुरु से मिलता है। नाम वह शक्ति है जिसके सहारे खंड–ब्रह्मांड चल रहे हैं। यह नाम हमारे अंदर है। पूर्ण गुरु परमात्मा की मर्ज़ी से इस संसार में आते हैं और हमें इस नाम का ज्ञान देते हैं। अगर हम जीवन के इस भवसागर को पार करना चाहते हैं तो हमें शब्द–नाम की कमाई करनी चाहिए।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

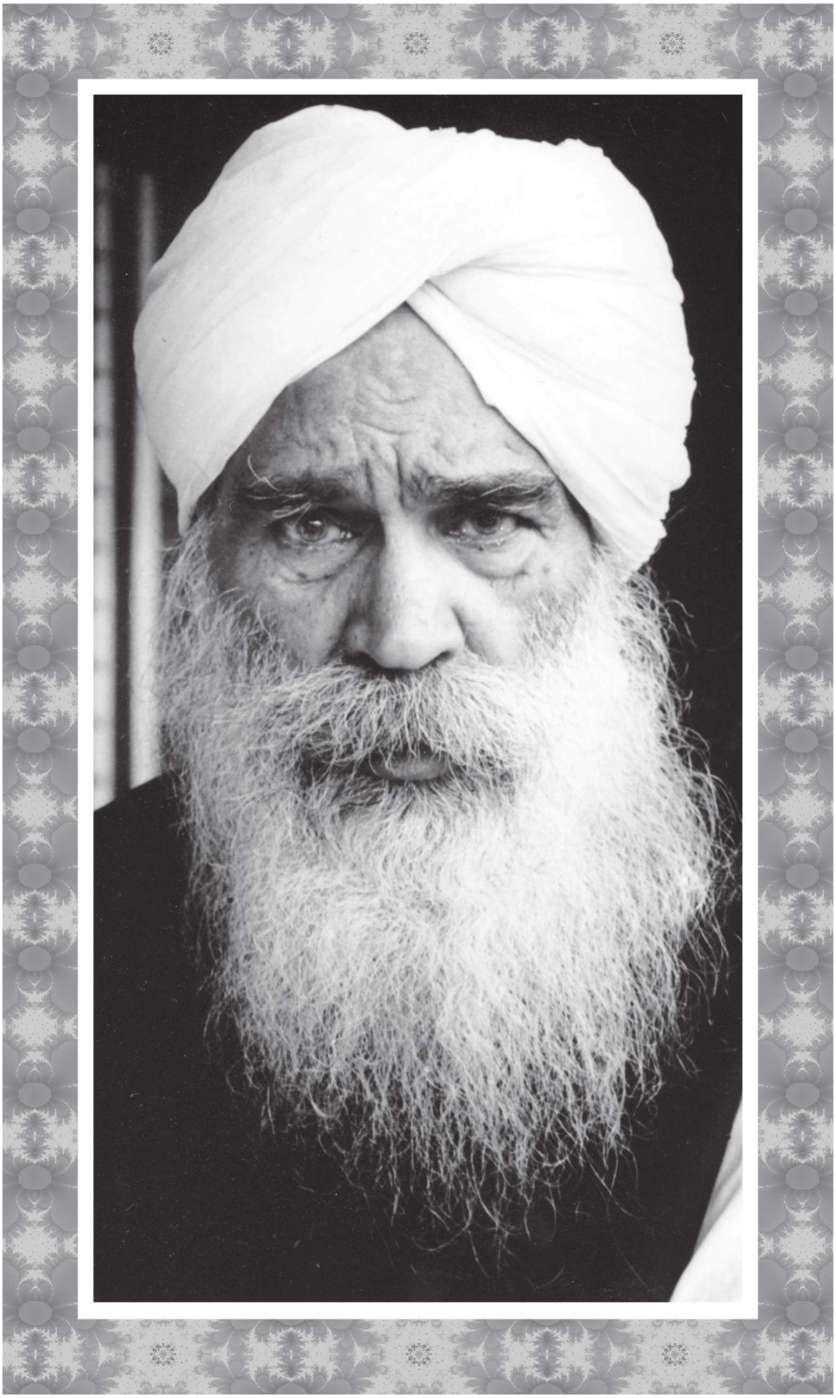

31

परम सन्त कृपाल सिंह जी द्वारा ग्रहणशीलता पर एक संदेश

मन की आदत बदलें

20 फरवरी 1971

पिछले साल मैंने प्रेमियों की भेजी हुई रूहानी डायरियों (नमूना पन्ना नं. 557) को देखा कि प्रेमियों ने बहुत थोड़ी अंदरूनी तरक्की होने या अंदरूनी तरक्की न होने के बारे में लिखा है। कुछ प्रेमियों ने तो यहाँ तक लिखा है कि पवित्र नामदान मिलने के बाद उनकी अंदरूनी तरक्की बिल्कुल नहीं हुई। उन्हें समझ नहीं आया कि अंदरूनी तरक्की क्यों नहीं हुई। मैं आपको विस्तार से बताना चाहता हूँ कि क्या करने से अंदरूनी तरक्की होती है।

अगर प्रेमियों ने अपना आध्यात्मिक भजन-अभ्यास सही ढ़ंग से ज़ारी रखा होता और आत्मनिरिक्षण करके अपने दोष त्यागने पर ज़ोर दिया होता तो वे अपनी शारीरिक चेतना से निकलकर ऊपर के मंडलों में पहुँच जाते जहाँ शब्द-गुरु अपने बच्चों का स्वागत करने के लिए सूक्ष्म देश के द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे वहाँ उतने ही यकीन से पहुँच गए होते जितने यकीन से हम कहते हैं कि दो और दो मिलाने से चार बनते हैं। लेकिन वे थोड़ी देर के लिए भी सही ढ़ंग से भजन-अभ्यास नहीं कर पाए इसलिए उन्होंने गलती से यह समझा कि भजन-अभ्यास करना निष्फल है इससे कुछ हासिल नहीं होगा।

बाईबल में सन्त पॉल ने कहा है, ''मैं रोज़ मरता हूँ।'' अगर आपने सतगुरु की बताई हुई हिदायतों पर सही तरीके से अमल किया होता तो आप इस बात से सहमत होते।

सतगुरु की हिदायतों का पालन करने से आपको आपका मन रोकता है। आप अभी तक मन को बाहरी दुनिया के मोह बंधन से मोड़कर अंदर के परम आनन्द से नहीं जोड़ सके। अगर आप सतगुरु की बताई हुई हिदायतों को आसान तरीके से समझें तो उन्हें करना इतना मुश्किल नहीं होता। सतगुरु कहते हैं:

1. आप भजन–अभ्यास के लिए तनावमुक्त आसन में बैठें जिसमें आप बिना हिले–डुले ज़्यादा से ज़्यादा समय बैठ सकें।

2. आप आसन में बैठते वक्त पूरी जागृत अवस्था में हों और आपका ध्यान आत्मा की सीट तीसरे तिल पर केंद्रित हो, यह स्थान आपकी भृकुटियों के बीच में थोड़ा सा पीछे है।

3. आपके सामने जो अंधेरा है उसके बीचो–बीच देखते हुए प्यार से और शान्त मन से पाँच नाम का सिमरन धीरे–धीरे और विराम लेकर दोहराएं।

जो प्रेमी सतगुरु की हिदायतों के अनुसार आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करते हुए भजन–अभ्यास करते हैं उन्हें कामयाबी मिलती है। जो प्रेमी सचेत होकर अपने मन और बाहरी विषयों पर लगाम नहीं लगाते वे कामयाब नहीं होते इसलिए प्रेमियों को इस बात पर ज़ोर देकर बताया जाता है कि अपनी अनुचित और आवांछनीय आदतों और अवगुणों को निकालकर उनकी जगह सद्गुणों और अच्छी आदतों को अपनाना चाहिए।

ऐसा करने के लिए आत्मनिरिक्षण की डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) को रोज़ाना लिखना अनिवार्य है। आप अपने आपको जितना ज़्यादा सुधारेंगे उतना ज़्यादा आपका मन और इन्द्रियाँ आपके क़ाबू में आ जाएंगे। इस विषय पर पहले भी बहुत कुछ विस्तार से कहा जा चुका है और आध्यात्मिक प्रगति के लिए बाकी ज़रूरी तत्त्वों के

बारे में भी मेरे पिछले संदेश में छप चुका है। इस संदेश में समझाए हुए मुद्दे और सुबह भजन–अभ्यास में बिठाने से पहले दिए गए मेरे सारे संदेश प्रेमियों के लिए एक मार्गदर्शक सीमा की तरह है। जिससे प्रेमी अपने अंतरी और बाहरी आध्यात्मिक अनुशासन पर अमल करने में कितना कामयाब हो पाए हैं, आप यह माप सकते हैं।

जब मैं कहता हूँ कि प्रेमियों ने भजन–अभ्यास सही ढ़ंग से नहीं किया तो इसका मतलब यह है कि प्रेमी दुनिया के संकल्पों–विकल्पों को हटाकर तीसरे तिल पर एकाग्रचित्त नहीं हुए हैं।

आप अपने शरीर के अंदर रहते हैं लेकिन आप अपने शरीर के मालिक नहीं हैं। आपके नौकर–मन और पाँच डाकुओं (काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार) ने आपकी आत्मा का सिंहासन छीन लिया है। आप जब तक इन नौकरों को वहाँ से हटाकर नौकरों वाली जगह नहीं बिठाते तब तक ये आपका ध्यान बाकी चीज़ों से निकालकर अंदर नहीं जाने देंगे।

एक प्यारे पिता की तरह सतगुरु आतुरता से उस दिन का इंतज़ार करते हैं जब हम अपने आपको सुधारते हैं। सतगुरु हमें शरीर रूपी क़ैदख़ाने से निकालने के लिए सिर्फ एक मौके की तलाश में रहते हैं। सतगुरु एक कुशल मछली पकड़ने वाले की तरह जैसे ही देखते हैं कि शिष्य की आत्मा रूपी मछली सफलतापूर्वक काँटे में फँस गई है, तब वे सुरक्षित रूप से उसे अपनी टोकरी में रख लेते हैं।

इन्सान इस तरह का बना होता है कि वह एक जगह ज़्यादा देर नहीं टिक पाता। वह तरक्की करता है, नहीं तो अवनति करता है। आपका मन और इन्द्रियाँ आपके कितने क़ाबू में आए हैं? आप खुद ही अंदाजा लगा सकते हैं कि आप तरक्की कर रहे हैं या आपकी अधोगति हो रही है।

आध्यात्मिक तरक्की सिर्फ नैतिकता से जीवन जीकर प्राप्त नहीं होती। हर बार भजन–अभ्यास में बैठने से अंदर से जो मदद और ताकत मिलती है उससे आध्यात्मिक तरक्की होती है। अगर अंदर की तरक्की नज़र नहीं आती तो यह समझें कि ज़मीन में पानी डाला जा रहा है। हर बार जब आप अभ्यास में बैठ रहे हैं यह आपकी आदत बन रही है मन को आज जो बाहर की चीज़ों का रस लेने की आदत बनी हुई है वह आदत बदल जाएगी और एक दिन आपका मन मान लेगा कि यह आपके फायदे के लिए है।

आदत स्वभाव में बदलती है। फिलहाल प्रेमियों को रोज़ाना अभ्यास में बैठने में इसी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि मन को बाहर की दुनिया के विषय–विकारों का स्वाद लेने की आदत उसका स्वभाव बन चुका है। इसलिए मन एकांत में बैठना पसंद नहीं करता। आप भजन–अभ्यास की आदत डालकर अपने मन को बाहरी दुनिया के विषयों का स्वाद लेने की आदत बदलकर अंदर के रसों की मधुरता और आनन्द लेने की आदत डालें।

हुज़ूर स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अधीर मन हमेशा बाहर दौड़ता है क्या उसे एक जगह टिका सकते है? यह सिर्फ परमात्मा के शब्द नाम की जी–जान से भक्ति करके ही हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग न कभी मिला है और न कभी मिलेगा।''

मैं चाहता हूँ कि आप अपने गुरु के ऊपर पूरे विश्वास और भरोसे के साथ इस मार्ग पर चलें और परमात्मा का धन्यवाद करें कि उसने आपको इस मुश्किल युग में भी नाम की दात बख्शी है।

दृढ़ रहें। दृढ़ रहें। दृढ़ रहें। गुरु पावर आपके सिर पर खड़ी है। गुरु के प्रति पूरी श्रद्धा और दृढ़ता से एक दिन आप अपनी सभी रुकावटों से उभरकर अपने रूहानी मकसद में कामयाब हो जाएंगे।

***

32

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का भाग

अंदर की रचना

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 अगस्त 1985

स्वामी जी महाराज ने अंदर के कमलों का यानि चक्रों का वर्णन किया है कि आपके अंदर परमात्मा ने किस तरह रचना की हुई है और किस तरह परमात्मा आपके अंदर बैठा है। हमारी देह में बारह चक्र यानि बारह कमल हैं। देह में छह चक्र आँखों के निचले भाग में हैं और छह चक्र आँखों से ऊपर हैं।

सबसे निचले चक्र यानि पहले कमल के मालिक गणेश जी महाराज हैं। उनका काम शरीर की सफाई करना है चाहे कोई उन्हें पूजे या न पूजे, माने या न माने उन्होंने यह करना ही करना है।

दूसरे कमल का मालिक ब्रह्मा है। ब्रह्मा को जिस तरह के बर्तन बनाने का हुक्म मिलता है वह वैसा ही देहरूपी बर्तन बनाता है। जैसे कुम्हार को जिस तरह के बर्तन बनाने का हुक्म मिलता है वह वैसे ही बर्तन बनाता है।

धर्मराज जीव के कर्मों के अनुसार ब्रह्मा को देहरूपी बर्तन बनाने का हुक्म दे देता है कि इसे अंधा बनाना है या काणा बनाना है, इसको एक पैर लगाना है या दो पैर लगाने हैं, गूँगा बनाना है या सही और पूरा इन्सान बनाना है। ब्रह्मा हुक्म के अनुसार वैसी ही देह बनाता है, देह बनाना उसकी ड्यूटी है और वह देह बनाने का काम ज़रूर करता है।

तीसरे कमल नाभिचक्र में विष्णु का निवास है। विष्णु सारी दुनिया की परवरिश करता है। कोई उसको पूजे या न पूजे वह सबको रोज़ी–रोटी देता है। हमारे मेदे के अंदर छोटी–छोटी अनेकों बारीक नाड़ियाँ सारे शरीर में फैली हुई हैं। ये नाड़ियाँ सारे शरीर को सतह दे रही हैं। यहाँ की तरंग और रोशनी बिल्कुल सफेद है।

चौथा चक्र हृदय चक्र है। यहाँ शिव और पार्वती की हुकूमत है। जान पर कब्ज़ा करना इनकी ड्यूटी है। शिव प्राणों के भंडार का मालिक है।

पाँचवें कमल में यानि कंठ चक्र में अष्टभुजी–आठ हाथों वाली आदि शक्ति दुर्गा का राज्य है। हिन्दु भक्त उसे कई नामों से याद करते हैं; वह कंठ में बैठी है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव इसी से ताकत प्राप्त करते हैं। जिस तरह वृक्ष की जड़ें ज़मीन में होती हैं वे ज़मीन से सतह लेती है। इन्सान की जड़ें दिमाग में होती है। निचले चक्र ऊपर वाले चक्रों से ताकत लेते हैं। ये तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव इस शक्ति से ताकत लेते हैं।

मन और आत्मा की सीट छठे चक्र आज्ञाचक्र में है। यह दोनों आँखों के दरम्यान है जिसे तीसरा तिल या शिवनेत्र कहकर बयान करते हैं। महात्मा हमें बताते हैं कि जागृत अवस्था में हमारी आत्मा यहीं होती है, जब यह कंठ में आती है तब स्वप्न आने शुरू हो जाते हैं। स्वप्न में अगर पैर है तो बाँह नहीं अगर बाँह है तो पैर नहीं यानि हमारी आत्मा पूरी तरह से काम नहीं करती। जब आत्मा उससे भी नीचे हृदयचक्र में आती है और इन्द्रियों के घाट पर आ जाती है तब यह बिल्कुल बेसुध हो जाती है इसे होश नहीं रहती।

ये निचले छह चक्र हमारे स्थूल शरीर यानि पिंड में हैं। ये छह चक्र योगियों के हैं। सन्तों का मार्ग इससे ऊपर शुरु होता है। ऊपर

के छह चक्रों में पहले तीन चक्र काल के हैं। अगले तीन चक्र सिर्फ सन्तों ने खोले हैं। योगी–योगिश्वर यहाँ तक नहीं पहुँच सके।

सातवें कमल में काल निरंजन बैठा है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव जो भी अवतार इस संसार में आए हैं जैसे राम, कृष्ण सब इसी स्टेज से आते हैं। इस चक्र में काल बैठा है उसे ज्योत निरंजन कहकर भी बयान किया गया है। यह सन्तों की पहली मंज़िल है लेकिन यह योगियों की आखिरी मंज़िल है; योगी यहाँ तक ही पहुँचे। इसके आगे का मार्ग योगियों को नहीं पता। पिछले ज़माने में जो योगाभ्यास करते थे वे यहाँ तक ही पहुँचे।

आजकल लोग योग की शिक्षा ज़ुबानी कलामी ले रहे हैं और शारीरिक वर्जिश कर रहे हैं। इससे न तो अंदर का कमल खुलता है और न ही हम अंदर जा सकते हैं। हमें आर्मी में भी ज़्यादा से ज़्यादा योग आसन करवाए गए थे लेकिन उन आसनों का ताल्लुक सिर्फ शरीर से ही होता है। ऐसी वर्जिश या योगाभ्यास से सिर्फ शरीर तंदरुस्त रहता है। यह योगियों की आखिरी मंज़िल है लेकिन सन्तों की अल्फ बे यहीं से शुरू होती है।

बाबा सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे कि जिस तरह कोई इन्सान पहाड़ पर बीचों बीच बैठा है, उसकी मंज़िल पहाड़ की चोटी है। अगर वह पहले पहाड़ से उतरकर नीचे आए फिर ऊपर चोटी की तरफ जाए तो उसे पहले उतरने में और फिर ऊपर चढ़ने में कितना समय लगेगा?

हमारी आत्मा आँखों के पीछे बैठी है; अगर हम पहले नीचे गणेश चक्र तक आएं जहाँ से योगियों ने अपने शिष्यों को शुरुआत करने की शिक्षा दी है, फिर वहाँ आकर पहली सीढ़ी को पैर लगाकर वापिस ऊपर जाएं तो कितना समय लगेगा? ऐसा कौन

अक्लमंद है जो पहले नीचे आए फिर ऊपर जाए। योगियों ने अपने शिष्यों को इस तरह के साधन बताए जिसे करना आजकल के लोगों के लिए बहुत मुश्किल है।

पिछले ज़माने में लोगों की सेहत अच्छी हुआ करती थी उनके ख्याल भी दुनिया में ज़्यादा फैले हुए नहीं थे। आजकल के नौजवानों को सतसंग में एक घंटा बैठना भी मुश्किल हो जाता है। वे प्राणायाम किस तरह कर सकते हैं? प्राणायाम श्वासों की शक्ति को काबू करना है जो आजकल के नौजवान नहीं कर सकते। उनके न ख्याल टिकते हैं न उनकी सेहत अच्छी है। सन्त अपने सेवकों को ऐसे भटका देने वाले साधनों में नहीं फँसाते और अपने शिष्यों को भारी मशक्कत से बचा लेते हैं।

आठवां कमल ब्रह्म में है जो त्रिकुटी में है। इस स्थान को त्रिकुटी इसलिए कहते है क्योंकि यह त्रिकोण की तरह है। अगर यहाँ के हज़ार सूरज इकट्ठे करें तो त्रिकुटी का एक सूरज बनता है। वहाँ सूरज लाल है, वहाँ की दुनिया और धरती लाल है। जो वहाँ पहुँचते हैं उन्हें पता है कि वह क्या चीज़ है।

हमारी आत्मा के ऊपर पहले स्थूल पर्दा है उसके अंदर सूक्ष्म पर्दा है। यह सूक्ष्म पर्दा सहस्त्रदल कमल के अंदर है। आगे त्रिकुटी के शिखर तक कारण पर्दा है।

जिस तरह हम कहते हैं कि आत्मा अकर्ता और भोगता है। यह जन्म–मरण में नहीं आती उसी तरह जो ब्रह्म है वह पारब्रह्म का मन है; जो अकर्ता है भोगता है। जब हम आत्मा के ऊपर से ये तीनों पर्दे हटाते हैं तब आत्मा की रोशनी बारह सूरज जितनी हो जाती है। फिर इसे पता चलता है कि मैं आत्मा हूँ। स्त्री–पुरुष का लिंग भेद यहाँ तक ही है। इस स्थान के आगे न कोई मर्द है न कोई औरत

है। यहाँ पहुँचा हुआ यह भी महसूस नहीं करता कि हिन्दुस्तान की आत्मा और है और अमेरिका या अफ्रीका की आत्मा और है या परमात्मा कोई और है। उन्हें पता है कि सारा संसार परमात्मा का है, वह सबका दाता है, बादशाह है। ऐसा इन्सान किसी के साथ नफरत नहीं करता, सारी दुनिया को गले लगाता है सबसे प्यार करता है।

आप देख सकते हैं, सन्त जब भी आते हैं वे किसी फिरके, पार्टी, समाज या मकान के साथ नहीं बँधते। परमात्मा ने सन्तों को संसार में ज़्यादा से ज़्यादा आत्माओं को काल के जाल से छुड़वाकर ले जाने के लिए भेजा होता है।

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे जिस तरह किसी लैम्प पर टाट के मोटे पर्दे चढ़े हों, हम उसे किसी भी मकान में ले जाएं वह लैम्प रोशनी नहीं देगा। जब हम लैम्प पर चढ़े हुए पर्दे उतार देते हैं तो लैम्प से रोशनी बाहर आने लगती है। इसी तरह जब हम आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों पर्दे हटा देते हैं, पाँचों प्रकृतियों को मन और माया की गुलामी से आज़ाद करते हैं तब हमारी आत्मा अपनी पूरी रोशनी में आ जाती है। हम वहाँ से नीचे वाली त्रिलोकी दुनिया को अच्छी तरह देख सकते हैं।

जो नीचे बैठा है वह ऊपर वाली मंज़िल का नज़ारा नहीं देख सकता। वहाँ पहुँचने पर पता चलता है कि मालिक किस तरह इस दुनिया की रचना को चला रहा है। किस तरह हर चीज़ कुदरत के नियमों के अनुसार हो रही है और वक्त पर आकर घटना घट जाती है। जो वहाँ पहुँचते हैं उन्हें इस संसार की सच्चाई का पता चल जाता है। योगी, योगिश्वर, वेदांती सारे नीचे ही रह जाते हैं। आजकल वेदांती पढ़ने-लिखने पर ही ज़्यादा ज़ोर देते हैं। ज़ुबानी कह देते हैं कि मैं भी ब्रह्म हूँ; तू भी ब्रह्म है।

अगर यहाँ बैठा हुआ कोई इन्सान 'सतनाम' 'सचखंड' कहता रहे तो उसे न 'सतनाम' मिलता है न 'सचखंड' मिलता है। यहाँ बैठा कोई आदमी कहे कि मैं बादशाह हूँ तो ऐसा कहने से वह बादशाह नहीं बन जाएगा। इसी तरह अगर कोई वेदांती यह कहे कि मैं ब्रह्म हूँ तो वह ब्रह्म नहीं बन जाता। पिछले ज़माने में वेदव्यास जैसे योगिश्वरों ने बहुत कमाई की थी। आठवें कमल में वेदव्यास जैसे कुछ विरले योगिश्वर ही पहुँच पाए हैं लेकिन आजकल नया ही वेदांत चला है बाकी ज़ुबानी जमा खर्च ही चल रहा है।

आगे अचिंतद्वीप आता है जिसका योगियों को भी पता नहीं होता। योगी वहाँ पहुँचे ही नहीं क्योंकि उन्हें वहाँ तक पहुँचे पूर्ण गुरु नहीं मिले होते। वह एक घोर अंधेरे का देश है। जिन्हें पूर्ण गुरु नहीं मिले अगर उन्होंने आगे चढ़ाई की भी फिर भी वे अंधेरे में ही भटकते रहे। जब सन्तों की सतसंगी आत्माएं वहाँ से निकलती हैं तब ऐसे योगी उन सतसंगी आत्माओं से विनती करते हैं, ''आप अपने गुरुदेव से कहें कि वे हमें भी साथ ले जाएं।'' लेकिन उनके लिए एक ही जवाब होता है कि आप जब मातलोक में जाएंगे और आपको इन्सानी जामा मिलेगा तब आप पूर्ण सन्तों से नाम लें। सन्त आपको यहाँ ले आएंगे।

जब दुनिया में प्रलय होती है तब पृथ्वी पानी में डूब जाती है। पानी को अग्नि खुष्क कर देती है। अग्नि को हवा उड़ा ले जाती है। हवा को आकाश अपने अंदर समा लेता है। आकाश को माया समा लेती है। माया ब्रह्म में समा जाती है। यह बड़ी प्रलय है। उसी तरह इन्सान की भी प्रलय होती है जब उसकी मौत आती है; यह छोटी प्रलय है। जब प्रलय होती है तब दूसरी स्टेज तक यानि ब्रह्म और ॐ तक सृष्टि समाप्त हो जाती है। स्वर्ग और नर्क भी इस

स्टेज से नीचे ही रह जाते हैं। जो आत्माएं इस स्टेज तक पहुँची होती हैं उन्हें दोबारा जन्म लेना पड़ता है, फिर इस संसार में आकर परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। जो आत्माएं भँवरगुफा तक पहुँची होती हैं, महाप्रलय में उन्हें भी दोबारा जन्म लेकर संसार में आना पड़ता है। लेकिन जो आत्माएं इससे भी ऊपर सचखंड में यानि बारहवें कमल में पहुँच जाती हैं उन्हें प्रलय या महाप्रलय के बाद भी इस संसार में नहीं आना पड़ता। उन्हें सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है। वे आत्माएं अपने घर, शुरू में जहाँ से आईं थीं वहाँ पहुँच जाती हैं।

जिस अचिंतद्वीप का ज़िक्र किया गया है वहाँ दसवां कमल है। गुरु अपनी रोशनी द्वारा आत्मा को आगे ले जाते हैं उसी को गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर हज़ारों सूरज और लाखों चंद्रमा भी चढ़ जाएं फिर भी उनकी रोशनी वहाँ किसी काम की नहीं, वहाँ गुरु अपने प्रकाश और कृपा द्वारा ले जाते हैं।''

भँवरगुफा ग्यारहवां कमल है। वहाँ पहुँचकर आत्मा को सुरूर आता है मस्ती आती है कि जो परमात्मा है मैं भी वही हूँ। जब महान मंसूर यहाँ पहुँचे उनमें मस्ती उठी। उन्होंने कहा, ''मैं ही परमात्मा हूँ।'' जो लोग मुल्ला मंसूर की अंदरूनी चढ़ाई को नहीं जानते थे उन्होंने मंसूर को पकड़कर सूली पर चढ़ा दिया। वे लोग नहीं जानते थे कि मंसूर क्या चीज़ है, मंसूर किस ताकत का नाम है और यह हमारे लिए कितनी हमदर्दी रखता है।

जब मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तब उससे पूछा गया कि तेरे हाथ काटने हैं, बता तुझे कुछ कहना है? मंसूर ने कहा कि ये हाथ काट दें मुझे इन हाथों की ज़रुरत नहीं मेरे पास रूहानी हाथ हैं। मैं अपना एक रूहानी हाथ लंबा करूं तो मेरा हाथ सचखंड पहुँच सकता है। जब पैर काटने लगे तो मंसूर ने कहा कि ये पैर

काट दें। मुझे इन पैरों की ज़रुरत नहीं मेरे पास रूहानी पैर हैं। जब आँखें निकालने लगे तब मंसूर ने कहा मेरे पास वह आँखें हैं जो परमात्मा को देखती हैं। ये आँखें तो नाशवान संसार को देखती हैं। आप इन्हें निकाल लें। जब मंसूर की ज़ुबान काटने लगे तब मंसूर ने कहा, ''एक मिनट ठहरो, मैं परमात्मा का शुक्रिया अदा कर लूं कि मैं इस इम्तिहान में पास हो सका। मुझमें इतनी ताकत नहीं थी कि मैं इस इम्तिहान में पास हो सकता यह तो उस परमात्मा की ही ताकत है जिसने मुझे पास किया।''

उस समय आकाशवाणी हुई। परमात्मा ने कहा अगर तुम कहो तो मैं इन्हें खत्म कर सकता हूँ। तुम जो सज़ा कहो मैं इन्हें वह सज़ा दे सकता हूँ। मंसूर ने कहा, ''हे परमात्मा, इनका क्या कसूर है? अगर आप चाहते हैं तो इन्हें मेरी पहचान दे दें। इन्हें पता चले कि मंसूर क्या चीज़ है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जैसे कुम्हार घड़े को बनाते समय पीटता है उसके अंदर हाथ भी रखता है, वैसे ही परमात्मा जिसका इम्तिहान लेता है उसके अंदर अपना हाथ रखता है। परमात्मा बड़ा दयालु है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

जिया जंत सब तुध उपाए जित जित भाणा तित तित लाए।

आपने सारे जीव पैदा किए हैं। आपने जिस तरफ़ चाहा जीवों को उस तरफ़ लगा दिया। सन्त इतनी तकलीफ़ उठाने के बाद भी अपने कत्ल करने वालों के लिए दुआ और रहम माँगते हैं कि जब ये जीव इस कर्म का भुगतान करेंगे तब इन्हें बहुत दुख पहुँचेगा। हमारी वजह से ये जीव दुखी न हो।

एक बार किसी आदमी ने महाराज सावन सिंह जी की जूती छिपा दी। किसी सेवादार ने आपसे कहा जिसने आपकी जूती चुराई

है वह तो नर्क में जाएगा। महाराज सावन सिंह जी ने अपने कानों को हाथ लगाते हुए कहा, ''क्या मेरी जूती इतनी खराब थी कि वह नर्क में जाएगा? न भई ऐसे न कहो।'' आपके दिल में सबके लिए बड़ी हमदर्दी थी।

बारहवें कमल में सचखंड है। उसे सतलोक या सचखंड कहें। यहाँ पहुँची हुई आत्माओं के दिल में जीवों के लिए बड़ा दर्द होता है। छह चक्र देह के हैं जो आँखों से नीचे हैं। तीन चक्र ब्रह्मांड में है। हमारे शरीर के चार हिस्से पिंड, अंड, ब्रह्मांड और सचखंड हैं।

जो आदमी अपनी आँखों से आसमान में सूरज की तरफ नहीं देख सकता वह पानी में सूरज का प्रतिबिंब देखकर कहता है कि यह सूरज ही है, यही सूरज का प्रकाश है। जो आदमी आसमान में झाँककर सूरज को देखेगा वह उसे देखकर समझा सकता है कि प्यारेया, यह तो प्रतिबिंब है, तू ऊपर देख। जो आदमी कहते हैं कि परमात्मा दिखाएं सन्त उनसे कहते हैं कि पहले अपनी आँखें तो बनाएं जिससे आप परमात्मा को देख सकें।

मैं अपनी ज़िंदगी का वाक्या बताया करता हूँ कि जब मैंने भोलेपन में यही सवाल बाबा बिशनदास जी से किया था तब उन्होंने मेरा मुँह पकड़कर ऊपर सूरज की तरफ कर दिया। जब मैं अपना मुँह नीचे करने लगा तो उन्होंने मेरी ठोड़ी के नीचे हाथ देकर कहा, ''तू एक सूरज की तरफ भी नहीं देख सकता। परमात्मा का प्रकाश लाखों–अरबों सूरजों से भी ज़्यादा है, उसे देखने के लिए आँखें बनानी पड़ती हैं। अभ्यास में महारत पैदा करनी पड़ती है।''

बाबा बिशनदास जी भले ही निचले चक्रों में ब्रह्म तक ही पहुँचे हुए थे लेकिन वहाँ की रोशनी भी झेलनी मुश्किल है। ऊपर के चक्रों का निचले चक्रों में प्रतिबिंब ही है। योगी उस प्रतिबिंब को

ही देखते रह गए और हम लोग भी उस प्रतिबिंब में ही खो जाते हैं लेकिन सन्त ऊपर सूरज की तरफ ध्यान करवाते हैं।

निचले छह चक्र तो आँखों तक हैं। उसके ऊपर के तीन चक्र दसवें द्वार तक हैं जहाँ कोई विरला योगिश्वर ही पहुँचा है। लेकिन जो ऊपर के तीन चक्र या कमल हैं उन्हें सन्तों के अलावा किसी ने बयान नहीं किया। हम सन्तों की बानी पढ़कर देख सकते हैं कि वे महात्मा कहाँ तक पहुँचे थे।

आठवें चक्र तक बहुत थोड़े गिनती के ही कुछ योगी पहुँचे हैं। उनका आसन इस कमल तक है। नौवें कमल तक पहुँचे हुए हमें एक ही योगी वेदव्यास मिलते हैं जिनका ग्रंथ पढ़कर पता चलता है कि उनकी चढ़ाई किस स्थान तक थी। आजकल हम उनके ग्रंथ पढ़कर ही कह देते हैं कि हम दसवें द्वार तक पहुँच गए हैं। दसवें द्वार में पहुँचना कोई आसान काम नहीं, जन्म निकल जाते हैं। पहली मंज़िल तक पहुँचना ही बड़ा मुश्किल है।

हमारे सतसंगियों की आम शिकायत होती है कि अंदर जब जाएंगे तब देखी जाएगी फिलहाल एक घंटा अभ्यास में बैठते हैं। हम आमतौर पर कहते हैं कि गिट्टे–गोड्डे दुखते हैं मन नहीं लगता। आप सोचकर देखें, मन इसलिए नहीं लगता क्योंकि हमारे अंदर प्रेम–प्यार नहीं अगर प्रेम–प्यार हो तो हमें अभ्यास बोझ ही न लगे।

सन्तमत सबसे ऊँचा और सुच्चा है। जो बारहवें कमल में पहुँच जाता है वही सन्त है। अब सन्त आम लोगों को कैसे दिखाएं? जैसे अंधे आदमी को हाथी दिखाएं तो वह हाथी का रंग, कद नहीं बता सकता अगर कोई सुजाखा आदमी हाथी को देखता है तो वह हाथी का रंग, कद, कान और दांत सब कुछ ही बयान करेगा।

उसी तरह बारहवें कमल में पहुँचे हुए सन्त परमात्मा का वर्णन करते हैं कि किस तरह वे परमात्मा को हाज़िर-नाज़िर देखते हैं। आप भी हिम्मत करें, सन्तों के कहे मुताबिक भजन-सिमरन करें और अपने जीवन को पवित्र बनाएं तो आप भी यहाँ पहुँच सकते हैं।

मैं सारे संसार में ढ़ोल बजाकर कहता हूँ, ''सज्जनो, जो भी अंदर गया, वहाँ पहुँचा, उसने इस मत को झूठा साबित नहीं किया। वही ईमानदार है जो सच्चे दिल से अपने गुरु पर भरोसा करके इस स्थान पर पहुँचा।''

जिसने अपने कपड़े रंगे हों या घर-बार छोड़ा हो उसे सन्त नहीं कहते। सन्त किसी हिन्दू या मुसलमान को नहीं कहते। यहाँ जाति का सवाल नहीं होता। वो खुशकिस्मत इन्सान-चाहे वह हिन्दू, मुसलमान, सिख या इसाई हो जो बारहवें कमल में पहुँच जाए उसे आप सन्त कहें, परम सन्त कहें, चाहे कुलमालिक कहें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

राम सन्त में भेद कुछ नाहीं।

ऐसे सन्त और परमात्मा में भेद नहीं होता। बारहवें कमल में पहुँचे हुए सन्त की हम क्या महिमा वर्णन करें? शब्द ही नहीं हैं। जिसने समुंद्र की सैर कर ली उसने सारे नदियाँ-नाले देख लिए। सारे नदियाँ, नाले समुंद्र में से ही निकलते हैं।

दुनिया की दिवाली का तो हमें पता ही है कि जब रामचन्द्र जी चौदह साल का वनवास भोगकर अयोध्या लौटे तब सारी प्रजा ने खुशी मनाई, घरों में दीपक जलाए। हम दीपक जलाने का रस्मों-रिवाज़ हर साल करते हैं लेकिन मालिक के प्यारे सन्त रोज़ दिवाली करते हैं, रोज़ सतलोक में पहुँचते हैं। इस दुनिया की कोई भी दिवाली उस मुकाबले की नहीं है।

सतलोक में करोड़ों सूरज, करोड़ों चंद्रमा हैं। उस धरती की महिमा बयान नहीं की जा सकती कि वह किस तरह की धरती है, वहाँ किस तरह सूरजों की लाईनें हैं, वहाँ किस तरह वृक्षों की सुहावनी पंक्तियाँ खड़ी हैं, वहाँ किस तरह के इन्सान हैं उनमें कितनी चमक है, वहाँ किस तरह आत्माएं अपने नूर और प्रकाश से काम कर रही हैं और उनके अंदर कितना प्यार है, उनकी खुराक कैसी है और वे किस तरह दृष्टि से ही सतपुरूष के दर्शन करती हैं और याद करते ही उन्हें अमृत प्राप्त होता है।

हमारा भी फर्ज़ बनता हैं कि सन्त–महात्माओं के समझाने के अनुसार 'शब्द–नाम' की कमाई करके अंदर जाएं और उस शब्द–रूप परमात्मा के साथ मिलाप करें।

***

33

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा दिए गए सतसंग का भाग

गुरु का सिख

सॅनबॉर्नटन, अमेरिका – 8 जुलाई 1980

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए
सु भलके उठि हरिनामु धिआवै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जो गुरु का सिख कहलाता है, वह सुबह जल्दी उठता है, नाम की कमाई करता है। वह सबसे पहले सतगुरु का काम करता है।''

हुज़ूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हज़ार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठें। जिस तरह तन को खुराक देना ज़रूरी है उसी तरह आत्मा को खुराक देना भी ज़रूरी है क्योंकि हमारी आत्मा भी जन्म-जन्मांतर से भूखी है; इसकी खुराक भजन-अभ्यास है।''

उदमु करे भलके परभाती
इसनानु करे अंमृतसरि नावै।।

आप कहते हैं, ''हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण पर्दे हैं। इन तीनों पर्दों को उतारकर रजोगुण, सतोगुण और तमोगुण से ऊपर उठकर अमृतसर पहुँचें, इसमें स्नान करें। यह अमृतसर हमारे शरीर में है।''

बाहर दुनिया में ऐसा कोई अमृतसर नहीं जो हमारे पापों की मैल धो सके, ऐसा अमृतसर आपके शरीर के अंदर है। आज जो

अमृतसर पंजाब में बना हुआ है इसकी नींव गुरु रामदास जी ने रखी थी और इसे गुरु अर्जुनदेव जी ने पूरा किया था; यह दसवें द्वार की नकल है। गुरु साहब ने मिस्त्री से कहा कि इस तरह का कमल बनाना है, मिस्त्री ने कभी दसवें द्वार का कमल नहीं देखा था तो वह किस तरह बना सकता था? गुरु साहब ने मिस्त्री को भजन में बिठाया, तवज़्जो देकर ऊपर ले गए। मिस्त्री ने कहा, ''मुझे यहीं रहने दें।'' गुरु साहब ने कहा, ''पहले इसका नमूना बाहर बनाकर दिखा फिर तुझे यहाँ ले आएँगे।'' गुरु अमरदास जी के समय में तो इसका नामोनिशान भी नहीं था फिर भी गुरु अमरदास जी महाराज अपनी बानी में लिखते हैं:

सच्चा अमृतसर काया माहें, मन पीवे भाय सो भाय है।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि सिख का धर्म है सुबह उठकर आलस को दूर करे, उद्यम करे और अमृतसर में जाकर स्नान करे।

उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै।
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''गुरु का दिया हुआ नाम रोज़ जपें। जब इस अमृतसर में पहुँचें, स्नान करें तो जितने भी पाप हैं, बुरे कर्म हैं वे सभी यहाँ स्नान करने से खत्म हो जाते हैं। इस अमृतसर में स्नान करके साध गति प्राप्त होती है।''

फिरि चड़ै दिवसु गुरुबाणी गावै।
बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवै ।।

अब आप कहते हैं, ''जब दिन चढ़ जाता है तब अपना वक्त खराब न करें। मौका बने तो सतसंग में जाएँ। सतसंग में जाते हुए उठते-बैठते हुए, साँस-साँस के साथ सिमरन करें।''

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि।
सो गुरसिखु गुरु मनि भावै ।।

अब आप कहते हैं, ''जो सिख साँस-साँस के साथ सिमरन करता है वह गुरु को भाता है।'' मैं कई बार बताया करता हूँ कि जब हम भजन-अभ्यास में बैठते हैं तब हम परमात्मा सतगुरु के दरवाज़े के आगे बैठे होते हैं। अगर दरवाज़ा नहीं खुलता तो इसका मतलब यह है कि अभी हम तैयार नहीं लेकिन हमें शर्तें नहीं रखनी चाहिए। हम कहते हैं कि पहले दरवाजा खुले हम बाद में बैठेंगे। हमें अपना मन आशिकों वाला बना लेना चाहिए।

अलख जगौणा मन फकरा दा दात करै मन भाणी।

हमारा काम भजन-सिमरन करना है। दरवाजा खोलना परमात्मा का काम है। वह दरवाजा खोले या न खोले उसकी मर्ज़ी।

जिसनो दइआलु होवै मेरा सुआमी।
तिसु गुरसिख गुरु उपदेसु सुणावै ।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जिन पर मेरा परमात्मा खुश होता है जिन पर दयालु होता है उनके दिल में ही गुरु का उपदेश लेने का चाव पैदा होता है और वे ही गुरु के पास जाते हैं। उन्हें ही गुरु का उपदेश अच्छा लगता है।''

जन नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरुसिख की।
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''मैं ऐसे सिख की धूल माँगता हूँ जो खुद भी नाम जपता है औरों को भी नाम जपाता है। सिख कोई छोटी सी पदवी नहीं, साध कोई छोटी सी पदवी नहीं-जो खुद अपने गुरु की प्रशंसा करता है औरों को भी अपने गुरु की

प्रशंसा में लगा देता है।'' सच्चाई तो यह है कि उसे अपने गुरु का बिछोड़ा होता है, अपने गुरु से प्यार होता है। वह अपने गुरु का प्यार किसी बहाने से गाता है। जो भी साँस गुरु की याद के बिना जाता है वह उस साँस को काफ़िर गिनता है।

जो तुध सच ध्यायेंदे ते विरले थोड़े।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हे परमात्मा, तुझे ध्याने वालों की गिनती बहुत कम है।''

जग में उत्तम कड़िये विरले कई के।

जो बिन सतगुरु से खांदे पहनदे से मोऐ मर जम्मे कोड़े।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं कि ऐसे बहुत थोड़े लोग हैं जो परमात्मा की भक्ति करते हैं। जो सतगुरु की भक्ति बिना खाते-पहनते हैं, वे किसी भी लेखे में नहीं।

होय हाजिर मिट्ठा बोलदे बाहर विष कडे मुख खोले।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं कि ऐसे आदमी जब सतसंग में आते हैं, गुरु की शरण में आते हैं तब वे बहुत कुछ बोलते हैं कि हम तो इतना भजन करते हैं, हम इतने अच्छे हैं लेकिन वे जब बाहर दुनिया में जाते हैं वहाँ दुनियादारों जैसे ही बन जाते हैं।

मन खोटे तज बिछोड़े मन खोटे तज बिछोड़े।।

गुरु रामदास जी ने हमें बड़े प्यार से समझाया है कि गुरु-सिख क्या होता है और गुरु सिख की क्या ड्यूटी होती है। हमें भी चाहिए कि हम गुरु रामदास जी के कहे मुताबिक शब्द-नाम की कमाई करें, उद्यम करें दसवें द्वार में पहुँचें और अपने गुरु की खुशी हासिल करें।

***

34

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को अभ्यास के लिए हिदायतें

अमृतवेला

अभ्यास में बिठाने से पहले आमतौर पर दी गई हिदायतें

* मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। मन के अंदर दुनिया के जो संकल्प–विकल्प उठ रहे हैं उनकी वजह से ही मन अशान्त होता है उन संकल्प–विकल्पों को बाहर निकाल दें और वह जगह सिमरन को दें।

* अभ्यास में बैठने से पहले मन को जवाब देकर बैठें कि अभी हम एक खास काम के लिए बैठ रहे हैं, तू इसमें अपना दखल न दे। मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है।

* अभ्यास को कभी भी बोझ न समझें प्रेम प्यार से करें। हम जो काम प्रेम–प्यार से करते हैं उसमें सफलता मिलती है।

* हमें बिना रुके अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज़ या किसी चीज़ की तरफ़ तवज़्जो न दें।

* मन को बाहर न भटकने दें। अपना ध्यान दोनों आँखों के बीचों–बीच तीसरे तिल पर एकाग्र करें। तीसरा तिल हमारे रूहानी सफ़र की शुरुआत है हमारे घर का दरवाजा है। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होकर सिमरन करते हैं तब हम एक तरह से वह दरवाजा खटखटा रहे होते हैं जो अंदर की तरफ़ खुलता है।

* हमें अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह याद कर लेने चाहिए। पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह ज़ुबान

से धीरे–धीरे उचारें। जब आपको पाँच पवित्र नाम उचारने में कोई कठिनाई न हो फिर उन्हें जो तरीका आपको मन की ज़ुबान से बताया गया है, उस तरह से उचारें।

* सबसे पहले सतसंगी को यह देखना चाहिए कि कोई ज़रूरी काम तो नहीं रह गया। उस काम को करने के लिए मन अभ्यास से न उठाए कि तुझे यह ज़रूरी काम करना था, चल तू करके आ। मन को अभ्यास में से उठाने का बहाना मिल जाता है। अगर घर का कोई खास काम है तो वह काम पहले ही कर लें ताकि आपको बीच में न उठना पड़े। बिना हिले लगातार सिमरन करें।

***

सिमरन के झाड़ू से आत्मा की सफाई

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 30 मार्च 1985)

सतसंगी को हमेशा ही चलते–फिरते अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करने की आदत डाल लेनी चाहिए। जब हम अपने ख्याल को तीसरे तिल से नीचे आने की इजाज़त दे देते हैं तब हम अपनी रूहानी शक्ति को बर्बाद कर रहे होते हैं।

हम जो पाँच पवित्र नाम बार–बार दोहराते हैं इनकी बहुत महानता है क्योंकि इनमें सन्तों की ताकत काम कर रही होती है। हमारे अंदर पाँच मंडल हैं। सन्त अंदर जाते हैं सन्तों का हमेशा उन पाँच मंडल के धनियों के साथ मिलाप होता है। पाँच पवित्र नाम उन पाँच मंडल के धनियों के नाम हैं जिन्हें अभ्यास के दौरान हमारी आत्मा ने पार करना होता है। सिमरन के ज़रिए हमने अपने ख्यालों को इकट्ठा करना है। हमारी आत्मा शब्द पर सवार होकर ही एक मंडल से दूसरा मंडल पार कर सकती है।

जिस भी सतसंगी ने अपने ख्याल पवित्र करने हैं उसे सिमरन की तरफ़ ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देना चाहिए क्योंकि सिमरन आत्मा की सफाई के लिए झाड़ू का काम करता है। आत्मा का शीशा सिमरन के ज़रिए ही साफ होता है, शब्द इसे ऊपर खींचता है।

लोहे को चाहे आप कितना भी चुम्बक के नज़दीक कर दें अगर लोहे पर जंग लगा हुआ है तो चुम्बक उसे अपनी तरफ़ नहीं खींच सकता। हमारी आत्मा की भी यही हालत है अगर हमारी आत्मा के ऊपर मन–इंद्रियों और दुनिया की मैल चढ़ी हुई है तो बेशक शब्द कितना भी नज़दीक से क्यों न आ रहा हो वह आत्मा को ऊपर नहीं खींचता। अगर हम आत्मा को सिमरन के ज़रिए साफ कर लेते हैं तो शब्द तुरंत इसे ऊपर खींच लेता है। अभी हमें शब्द तो जरूर सुनाई देता है रस भी आता है लेकिन ऊपर नहीं खींचता।

***

मन को शान्त करें

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 4 अप्रैल 1985)

अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी भी आवाज़ की तरफ़ ध्यान न दें। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करें। जिन प्रेमियों को तीसरे तिल को ढूँढ़ने में समस्या होती है मैं उनके लिए बताया करता हूँ कि हमेशा ही जब आप आँखें बंद करते हैं तो जो कुछ भी अंदर देख रहे होते हैं वह आपकी तीसरी आँख ही देख रही होती है।

ध्यान को एकाग्र करते वक्त कभी ख्याल को नीचे कभी ऊपर कभी दाएं तो कभी बाएं न जाने दें। अभ्यास में बैठते समय आपने शुरू से अपना ध्यान दोनों आँखों के बीचों–बीच टिकाना है।

कुछ प्रेमियों की शिकायत है कि कभी ज्योत आती है कभी चली जाती है और किसी वक्त बहुत ही चमकीली ज्योत आती है। जब हमारा मन स्थिर होता है तो ऐसा लगता है कि ज्योत टिक रही है। जब हमारा मन स्थिर नहीं होता तो हमें ऐसा लगता है कि ज्योत चली गई है लेकिन ज्योत नहीं जाती वह उसी जगह पर मौजूद है।

आपको पता है अगर दरिया का पानी बिल्कुल स्थिर हो तो उसके आस-पास लगे पेड़ों की परछाई पानी में बड़ी आसानी से दिखाई देती है जो देखने में बहुत सुन्दर लगती है। जब उस पानी में बड़ी लहरें उठ रही होती हैं तब भी पेड़ तो वहीं पर मौजूद होते हैं लेकिन हम पानी में उन पेड़ों की परछाई नहीं देख सकते। जब कभी पानी में थोड़ा बहुत टिकाव आता है उस वक्त पेड़ दिखते हैं फिर जब लहर आती है तो पेड़ नहीं दिखते।

यही हालत हमारे मन की है। मन भी एक बड़ा दरिया है इसके अंदर भी दुनिया के ख्यालों की बहुत लहरें उठ रही हैं हमने इस मन को स्थिर करने के लिए शब्द के सिमरन का चप्पु देना है ताकि हम इसके अंदर साफ देख सकें।

आमतौर पर आर्मी में बंदूक चलाने की ट्रेनिंग देते समय बताया जाता है कि आपका बदन, बंदूक और जहाँ निशाना लगाना है ये सब एक लाईन में होने चाहिए। बंदूक का अगला हिस्सा, बंदूक का पिछला हिस्सा जो अगले हिस्से को गोली पहुँचाने का जिम्मेदार होता है और हाथ की अंगुली ट्रिगर के अंदर दाखिल होती है उनको एक लाईन में रखकर गुलजरी के सेंटर में मिलाकर साँस को भी इधर-उधर न जाने दें और आहिस्ता से अपनी मुट्ठी को भी बंद करें ताकि बंदूक चलाते वक्त झटका न लगे। वह निशाना बिल्कुल सही जाता है।

कुछ लोग कभी इधर झाँक लेते हैं कभी उधर झाँक लेते हैं। बंदूक कहीं, टार्गेट कहीं, बदन कहीं और देखते कहीं और हैं उन्हें पता ही नहीं चलता कि गोली कब चल गई और कहाँ जाकर लगी, ऐसे लोग फेल हो जाते हैं। जो लोग ट्रेनिंग में दी गई हिदायत के मुताबिक चलते हैं वे पास होते हैं।

यही बात सन्तमत के अभ्यास में भी लागू होती है। हमारी गुलजरी का टार्गेट यह तीसरा तिल है और सचखंड हमारी मंजिल है जहाँ हमने पहुँचना है। अगर हमारा बदन स्थिर है मन टिका हुआ है और हम अपने ध्यान को तीसरे तिल पर एकाग्र कर लेते हैं, इधर–उधर भटकने नहीं देते तो हम थोड़ी सी बैठकों में कामयाब हो सकते हैं।

जो लोग उस पोज़िशन को बार–बार बदलते हैं वे फेल हो जाते हैं। मैंने खुद प्रैक्टिस की हुई है। जो एक इंच के दायरे में पाँच गोलियाँ मार देता था उसे ईनाम मिलता था। मैंने खुद वह ईनाम जीता है। यह मेरा ज़ातिय तज़ुर्बा है इस तज़ुर्बे ने सन्तमत के इस मुद्दे को समझने में मेरी बहुत मदद की। मेरे गुरु ने मुझे यह यकीन दिलाया कि बेटा, बार–बार ध्यान को, पोज़िशन को बदलने से आपका ख्याल आपके अभ्यास के शुरुआत से ही पल–पल भंग होता रहेगा; इस बात को समझने पर ज़ोर देना चाहिए।

मैं कहा करता हूँ कि जब हमारे ख्याल टिक जाएंगे उस वक्त हमारे अंदर ज्योत टिकेगी। शुरू–शुरू में कान बंद करने की आदत होती है। उसके बाद हमारे अंदर घंटियों की आवाज़, शंख की आवाज़ या कोई भी आवाज़ लगातार शुरू हो जाती है। आप जिस आवाज़ को रोज़ सुनते हैं उसे तब्दील न करें क्योंकि छोटी आवाज़ो का कनेक्शन ऊँची आवाज़ों के साथ होता है।

जब आत्मा प्रकाश को देखती है और घंटे की आवाज़ को सुनती है तब इसके ऊपर चढ़ी हुई मैल साफ होनी शुरू हो जाती है। आत्मा का शीशा साफ होकर चमक उठता है और मन–इंद्रियों की तारें जो आत्मा को नीचे खींचती हैं वे एक–एक करके टूटनी शुरू हो जाती हैं। उसके बाद हम जब भी अभ्यास में बैठते हैं फौरन हमारा ख्याल ऊपर शब्द की तरफ़ चला जाता है।

मैं आशा करता हूँ कि मैंने आपको जो कुछ समझाने की कोशिश की है आप उसी तरह अभ्यास में बैठेंगे। चाहे यहाँ बैठें, चाहे अपने देश में जाकर बैठें इसी तरह बैठें, इस तरह बैठने से कामयाबी जरूर नसीब होगी। हाँ भई! भजन–अभ्यास में बैठें।

***

दरवाज़े को खटखटाएं दरवाजा खुलेगा

(पोट्टर वैली, कैलिफ़ोर्निया – 3,4,5 और 7 मई 1985)

हाँ भई! हमें नामदान के वक्त यही बताया जाता है कि हमेशा मन को शान्त रखना है, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। प्रभु–परमात्मा जिसकी हमें खोज है वह हमारे अंदर है। वह उस समय तक दरवाज़ा नहीं खोलता जब तक हम सच्चे दिल से मन को शान्त करके बाहर से ख्याल हटाकर तीसरे तिल पर एकाग्र नहीं कर लेते। तीसरा तिल हमारे रूहानी सफ़र की शुरुआत है हमारे घर का दरवाज़ा है।

क्राईस्ट ने कहा था कि, ''दरवाज़े को खटखटाएं दरवाजा खुलेगा।'' जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होकर सिमरन करते हैं तब हम एक तरह से यह दरवाजा खटखटा रहे होते हैं। यह दरवाज़ा अंदर से खुलता है। हमारे परमात्मा रूप गुरु जिन्होंने हमें नाम दिया

होता हैं वे नामदान के वक्त शब्द–रूप होकर हमारे अंदर बैठ जाते हैं। जब हम दरवाज़े को खटखटाते हैं अपनी पुकार करते हैं तो उन्हें पता है कि मेरे इन बच्चों को कुछ ज़रूरत होगी; वे ज़रूर दरवाज़ा खोलते हैं।

हमारे अंदर बैठे गुरु बेइंसाफ नहीं हैं। जब एक इन्सान दूसरे इन्सान की मजदूरी नहीं रखता तो क्या परमात्मा रूप गुरु बेइंसाफ है? हमें शान्त मन से अंदर जाने की ज़रूरत है। हमने बाहर की किसी भी आवाज़ की तरफ़ ध्यान नहीं देना। हमने अपने मन को एकाग्र करना है इसे बाहर नहीं भटकने देना। – 3 मई 1985

***

हाँ भई! परमात्मा की दया से हमें इन्सानी जामा मिला है। हम इस जामें में प्रभु को प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ने और भी दया करके हमारा मिलाप सतगुरु से करवा दिया है। सतगुरु अपनी दया करके हमें सच्चे शब्द–नाम के साथ जोड़कर खुद तीसरे तिल पर बैठे हैं। वे चाहते हैं कि इन्होंने मन के साथ जो संघर्ष करना है मैं इसमें इनकी मदद करूं। वे हमेशा हमारी मदद करने के लिए तैयार रहते हैं। अब हमारा फर्ज़ बनता है कि हम शान्त मन से अभ्यास करके श्रद्धा, प्यार, भरोसे से अंदर जाएं और अपने गुरु की रहनुमाई प्राप्त करें।

प्रभु को प्राप्त करने के लिए प्रेमी को कुछ शर्तें अवश्य ही पूरी करनी पड़ती है। संसार के ताने–मेहणें झेलने पड़ते हैं। दुनिया की निन्दा–चुगली को बर्दाश्त करना पड़ता है। यारों–दोस्तों, रिश्तेदारों का मजबूती से सामना करना पड़ता है। निन्दा–चुगली प्रेमी के रास्ते के चौकीदार हैं, ये चौकीदारी का काम करते हैं।

आखिर जब प्रेमी ये सब बर्दाश्त कर लेता है उसकी आत्मा साफ हो जाती है क्योंकि उसका भार निन्दा करने वाले, उसका बुरा सोचने वाले ले जाते हैं।

मालिक के प्यारे उस परमात्मा के बन्दे होते हैं। वे आकर हमें बताते हैं कि आपको जिस परमात्मा की तलाश है वह आपके अंदर है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए पूरब–पश्चिम की दूरी रुकावट नहीं बनती। परमात्मा किसी समाज की जायदाद नहीं। जो परमात्मा को याद करता है फरियाद करता है परमात्मा उसे मिलता है।

सन्त हमें बताते हैं कि परमात्मा एक है और हम सबके अंदर है। मन को शान्त करें शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज़ की तरफ़ तवज़्जो न दें। मन को बाहर न भटकने दें तीसरे तिल पर एकाग्र करें। – 4 मई 1985

***

हाँ भई! इन्सानी जामा पशु–पक्षी और चौरासी लाख योनियों से उत्तम है। परमात्मा ने खास दया करके हमें इन्सानी जामा दिया है और उससे बड़ी दया करके हमें नाम जपने का मौका दिया है हमारा मिलाप सतगुरु से करवा दिया है। सतगुरु ने दया करके हमें नाम की बख्शिश दी है। सतगुरु शब्द रूप होकर तीसरे तिल पर हमारा इंतज़ार करते हैं। अब हमारा फर्ज़ बनता है कि सतगुरु के प्यार के समुंद्र में डुबकी लगाकर नाम का अनमोल मोती निकालें।

हाँ भई! मन को शान्त करें। शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज़ की तरफ़ तवज़्जो न दें। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करें । – 5 मई 1985

***

सन्त–महात्मा किसी खास कौम, मज़हब या किसी खास मुल्क के लिए नहीं आते। सारी सृष्टि उनका घर होता है और उन्हें सब कौमों से प्यार होता है। वे सबको अपना समझते हैं। महात्मा सिर्फ आत्मा और परमात्मा के रिश्ते के बारे में बताने के लिए ही आते हैं कि आत्मा महान है। आत्मा परमात्मा से बिछुड़कर मन–माया के जाल में फँसकर बहुत दुखी होती है, तड़पती है तो परमात्मा इन्सानी जामें में खुद शरीर धारण करके आत्मा को संदेश देने के लिए आता है।

महात्मा हमें बताते हैं कि आप न अपनी कौम बदलें न मज़हब बदलें और न ही अपना पेशा बदलें। हर व्यक्ति अपना कारोबार करते हुए बिमार हो या तन्दरुस्त हो, अभ्यास कर सकता है। सन्तों का अभ्यास बहुत सुखदाई होता है। आपको दुनिया में जो ड्यूटी मिली है आप उसे निभाते हुए परमात्मा से वापिस मिल सकते हैं।

महात्मा हमें बताते हैं क्या आपने कभी इन्सानी जामे के बारे में सोचा है कि परमात्मा ने इन्सानी जामे के अंदर कितनी खूबसूरती रखी है और कौन–कौन से खजाने रखे हैं, हम रोज़ाना इस शरीर को सँवारने में काफी समय लगाते हैं और इसके नष्ट हो जाने की बात से भी डरते हैं। जिसके सहारे हमारे शरीर की खूबसूरती कायम है क्या हमने कभी उस चीज़ को खोजने की कोशिश की?

क्राईस्ट ने कहा है, ''मेरे पिता के घर में अनेकों भवन हैं। क्या हमने कभी अंदर जाकर उन भवनों को देखने की कोशिश की?''

कबीर साहब कहते हैं, ''यह शरीर सिर्फ हड्डियाँ, चमड़ी और माँस का नहीं इसके अंदर लाखों सूरज, लाखों तारे और अनेक बाग–बगीचे हैं। उन बाग–बगीचों का माली और सूरज, चंद्रमा, सितारों की रचना करने वाला परमात्मा भी आपके अंदर बैठा है।''

क्या यह हैरानी वाली बात नहीं कि हमें जिस परमात्मा की खोज है वह परमात्मा तब से हमारे जिस्म के अंदर बैठा है जब से इस जिस्म की रचना हुई है। न हम उससे मिल सके और न ही हमने अंदर जाने की कोशिश की।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं अगर आपने परमात्मा की खोज करनी है तो आप अंदर जाएं। आप आसानी से परमात्मा की आवाज़ सुन सकते हैं। हमारा फर्ज़ बनता है कि हम कुछ वक्त परमात्मा की याद में लगाएं और इन्सानी जामे को सफल बनाएं। –7 मई 1985

***

सिमरन की सीढ़ी

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 28 जनवरी 1986)

मन को शान्त करें शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम प्यार से करें। अभ्यास करते वक्त बाहर की आवाज़ की तरफ़ ध्यान न दें, मन को बाहर न भटकने दें ध्यान को तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

मुक्ति के तीन साधन है – सिमरन, भजन और ध्यान। हमें युगों–युगों से सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है। सिमरन कोई खास मुश्किल नहीं। किसी चीज़ को बार–बार याद करने को सिमरन कहते हैं। चाहे हम दुनिया का कोई भी कारोबार कर रहे हैं हमारा मन हमेशा किसी न किसी चीज़ को याद करता ही रहता है।

जिस तरह पानी की मारी खेती पानी देने से ही हरी–भरी होती है, उसी तरह सन्त जानते हैं कि दुनिया के सिमरन को परमात्मा का सिमरन ही काट सकता है, दुनिया के ध्यान को गुरु का ध्यान ही काट सकता है।

हमारे कान बाहर के रागों में मस्त होते हैं। सन्त हमें बताते हैं कि जब हम अंदर का राग अंदर का कीर्तन सुनने लग जाते हैं फिर हमारे कान बाहर के रागों की तरफ़ नहीं जाते।

हुज़ूर महाराज कृपाल और बाबा सावन सिंह जी सतसंगों में मिसाल दिया करते थे जिस तरह कोई क्लर्क अपने दफ्तर के काम का सिमरन करता है कि कल कौन सी फाईल देखनी है, क्या फैसला करना है, जब वह उस फाईल को याद करता है फिर भले ही वह घर बैठा हो या बाज़ार में घूम रहा हो उसे दफ्तर की उस फाईल के सब कागज़ याद आ जाते हैं। जिस आदमी की फाईल है उस आदमी की शक्ल भी आँखों के आगे घूमने लग जाती है।

औरतों को घर का चूल्हा–चौका याद करते ही फौरन याद आ जाता है कि रसोई में किस चीज़ की कमी है, कौन सी चीज़ बाज़ार से लानी है, याद करने की देर है उन चीज़ों की शक्लें अपने आप ही उसकी आँखों के सामने आनी शुरू हो जाती है।

किसान अपने काम का सिमरन करते हैं कि कौन सा बीज़ बीज़ना है, फसल को कब पानी देना है, बस! याद करने की देर है उसकी आँखों के आगे सारे खेत की शक्ल आ जाती है।

इसी तरह जज अपने काम का सिमरन करते हैं उन्हें पता होता है कि कल कौन–कौन सी फाईलों का फैसला करना है। बस! याद करने की देर होती है मुकदमों की फाईलों वाले आदमियों की शक्लें उनकी आँखों के आगे आ जाती है और फाईलों के पेपर भी आँखों के आगे आ जाते हैं।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमें जन्म–जन्मांतर से सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है। सन्त–महात्मा हमें वह सिमरन देते है जिसकी उन्होंने अपनी ज़िंदगी में कमाई की होती है। उनके

सिमरन के पीछे उनकी चार्जिंग उनका तप-त्याग उनकी ताकत काम करती है। अगर हम उनके दिए हुए नाम को प्रेम-प्यार से याद करते हैं, सिमरन करते हैं तो गुरु स्वरूप अपने आप ही हमारी आँखों के सामने आकर टिकना शुरू हो जाता है।

जब हम किसी भी चीज़ को याद करते हैं उस वक्त हम तीसरे तिल पर ही सोचते हैं। यहाँ हमारे मन और आत्मा की बैठक है। हम जब सिमरन करते हैं उस वक्त गुरु का स्वरूप तीसरे तिल पर आकर टिकना शुरू होता है और गुरु का तसव्वुर अपने आप ही वहाँ दिखना शुरू हो जाता है। जिस तरह हम दुनिया का सिमरन करते समय कोई कठिनाई महसूस नहीं करते कोई कारोबार नहीं छोड़ते, उसी तरह हमें गुरु का सिमरन प्रेम-प्यार से करना चाहिए ताकि दुनिया का जो सिमरन चौबिस घंटे हमारे अंदर चल रहा है वह बंद हो जाए और उसकी जगह गुरु का सिमरन शुरू हो जाए।

हमारा मन हमेशा खाली रहता है। मन आसानी से सिमरन कर सकता है। जब हम कोई हिसाब-किताब का काम कर रहे होते हैं यह तभी व्यस्त होता है। प्रेमियों की ज़ुबान पर हमेशा सिमरन होना चाहिए। फिर चाहे आप किसी से बातें कर रहे हैं चाहे कहीं घूम रहे हैं, सो रहे हैं या जाग रहे हैं। जब हमें सिमरन करने की आदत पड़ जाती है फिर हमें हमेशा ऐसा महसूस होता है जैसे गुरु स्वरूप हमारे साथ ही उठता-बैठता है, साथ ही चलता है।

दुनिया का सिमरन हमें बार-बार दुनिया में ही खींचेगा क्योंकि *जहाँ आसा तहाँ वासा।* गुरु का दिया हुआ सिमरन हमें ऊपर नाम की तरफ़ ले जाएगा। जब हम सिमरन करते हैं दुनिया में फैला हुआ ख्याल अंदर टिकना शुरू हो जाता है। हम मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर चले जाते हैं। गुरु स्वरूप कभी भी तीसरे तिल से नीचे नहीं

आता क्योंकि इन्द्रियों में गंद ही भरा होता है इसलिए हमें अपना ध्यान तीसरे तिल पर एकाग्र करके ही सिमरन करना चाहिए।

गुरु नानकदेव जी मिसाल के तौर पर कहते हैं अगर हमें किले पर चढ़ना है तो हमें सीढ़ी की ज़रूरत पड़ती है। इसी तरह अगर हम परमात्मा के महल में चढ़ना चाहते हैं ऊपर के मंडलों में जाना चाहते हैं तो हमें अंदर सीढ़ी चढ़ने की ज़रूरत पड़ती है। जो महात्मा अंदर गए हैं वे हमें बताते हैं कि हर मंडल को पार करने के लिए सीढ़ी की ज़रूरत पड़ती है। गुरु का सिमरन और ध्यान सीढ़ी का काम करता है। जब हम सिमरन के ज़रिए विरह की सीढ़ी चढ़ना शुरू करते हैं तो हम ऊपर के मंडल में चढ़ना शुरू करते हैं।

हमें बाहर से ध्यान हटाकर प्रेम–प्यार से सिमरन करना चाहिए और बिना किसी झिझक के अंदर जाना चाहिए। हमें जिस चीज़ की ख्वाहिश है और हम जिस चीज़ के लिए तड़पते फिरते हैं हमें वह अंदर ही मिल जाती है।

शुरू–शुरू में हमें संघर्ष करना पड़ता है। यह मार्ग खुष्क और मुश्किल भी लगता है लेकिन जब हम तीसरे तिल पर टिकना शुरू कर देते हैं फिर यही मार्ग हमें प्यार भरा नज़र आने लगता है। हमें इसमें से मिठास आने लगती है फिर हम इस मार्ग को छोड़ नहीं सकते। इस मार्ग को छोड़ने का दिल नहीं करता।

जब बच्चा पैदा होता है शुरू–शुरू में वह अपनी माता के बोबे को बड़ी मुश्किल से पकड़ता है, उसे संघर्ष करना पड़ता है। माता अपना बोबा बच्चे के मुँह में देती है तो वह छोड़ देता है लेकिन जब उसके मुँह में दूध का स्वाद आता है तब वह हमेशा ही माता का दूध पीना चाहता है। जब माता उसे उठाकर गोदी में लेती है माता कहे या न कहे बच्चा माता की छाती से चिपक जाता है।

आज जो मन विषय–भोगों को ऊँचा और सुच्चा समझता है उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता और हमेशा विषय–भोग भोगने के लिए ही प्रेरित करता है, फिर वही मन हमारा दोस्त बन जाता है और अंदर जाने के लिए प्रेरित करता है। सच तो यह है कि फिर वही मन बहुत मिन्नतें करता है कि मुझे दो मिनट और अंदर का रस लेने दें।

हुज़ूर स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप बाहरमुखी करोड़ो उपाय कर लें लेकिन आपका मन आपके काबू में नही आएगा। यह जब भी काबू में आएगा अंदर जाकर ही आएगा। इसे अंदर का राग और धुन सुना दें यह वश में आ जाएगा।''

***

भजन–अभ्यास की आदत डालें

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – मार्च 1986)

मन को शान्त करें शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज़ की तरफ़ तवज़्जो न दें। मन को बाहर न भटकने दें तीसरे तिल पर एकाग्र करें। हमारे मन और आत्मा की बैठक दोनों आँखों के दरम्यान है जहाँ महिलाएं बिन्दी लगाती हैं। यही हमारे घर की शुरुआत है यही हमारे घर का दरवाज़ा है।

हमें अभ्यास उतनी ही देर मुश्किल लगता है जब तक हम इसे अपना नहीं लेते करने नहीं लगते। जब हम रोज़–रोज़ अभ्यास करते हैं तो हमें यह कुदरत के नियम के मुताबिक ही लगता है हमें आदत पड़ जाती हैं फिर हमें पता चलता है कि हमें इसके अंदर कितनी महारत प्राप्त हो गई है।

शुरू–शुरू में हमें अंदर जाना कठिन लगता हैं क्योंकि आदत नहीं बनी होती हम अभ्यास को समझ नहीं सकते। कभी हमारे घुटनों में तो कभी हमारे गिट्टों में दर्द होता है इसलिए हम मन को शान्त नहीं करते। मन को शान्त करने का मतलब है कि हमारे अंदर जन्मों–जन्मों के जो संकल्प–विकल्प इकट्ठे हुए हैं उनको अभ्यास के वक्त मन उठाना शुरू कर देता है और हम मन की बातें सुनने लग जाते हैं।

हम बैठते तो अभ्यास में हैं लेकिन हमारा मन हमें बाजारों में शहरों में और दुनिया के कारोबारों में ले जाता है। हम एक वक्त में सिर्फ एक ही काम कर सकते हैं चाहे बैठकर दुनिया को सोचें या अपना सिमरन करें भजन–अभ्यास करें।

दुनिया की शक्लें और दुनिया के पदार्थ, जिनके अंदर हमने मोह लगाया हुआ है यह काल ने आत्मा को फँसाने के लिए जाल फैलाया हुआ है। आत्मा मन के सामने बेबस है। आत्मा चुपचाप अपनी तबाही देख रही है। आत्मा कमज़ोर है लेकिन जब हम आत्मा को शब्द–नाम की खुराक देते हैं तो यही आत्मा बलवान और मज़बूत हो जाती है।

आप बेशक यहाँ अभ्यास करें या अपने देश में जाकर करें। हर सतसंगी को ये थोड़ी सी बातें ज़रूर याद कर लेनी चाहिए कि मैंने अभ्यास के वक्त अभ्यास ही करना है। हमें सिमरन की महानता का तब तक पता नहीं चलता जब तक हम मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं उठते। जब हम मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठते हैं फिर हमें पता चलता है कि सिमरन की कितनी महानता है। आप प्रेम–प्यार से बगैर बोझ समझे सिमरन करें।

***

सतगुरु के स्वरूप तक पहुँचें

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 30 मार्च 1986)

मन को शान्त करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी भी आवाज़ की तरफ़ तवज़्जो न दें। मन को बाहर न भटकने दें इसे तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

हम जितना अच्छी तरह सिमरन करेंगे हमारा ख्याल उतना ही पवित्र होगा। हमारे ख्याल जितने पवित्र होंगे उतना ही हमारा मन पवित्र होगा क्योंकि मन पर ख्यालों का बहुत असर होता है। हमारा मन जितना पवित्र होगा उतनी ही हमारी आत्मा पवित्र होगी।

सिमरन झाड़ू का काम करता है अगर हमें आंगन को साफ करना है तो जो जितने अच्छे तरीके से झाड़ू लगा लेता है वह आंगन को उतना ही ज़्यादा साफ कर लेता है। हमारे ऊपर रूहानियत में भी यही बात लागू होती है। जो प्रेमी मन को बीच में दखल दिए बिना जितना ज़्यादा सिमरन करेगा उसकी आत्मा का शीशा उतना ज़्यादा चमकेगा।

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि मुक्ति के तीन साधन है – सिमरन, भजन और ध्यान। सिमरन के ज़रिए हमने अपने फैले हुए ख्यालों को इकट्‌ठा करके तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। सिमरन आत्मा को नौ द्वारों में से निकलने में बहुत मदद करता है। जब हम सिमरन के ज़रिए नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आते हैं उस वक्त हमारा ध्यान लग जाता है, कभी गिर जाता है कभी फिर लग जाता है, वहाँ बहुत सख्त ध्यान की ज़रूरत पड़ती है। सतसंगी को अपना ध्यान इतना एकाग्र कर लेना चाहिए कि वह अपने आपको भूलकर गुरु में समा जाए। गुरु नानकदेव जी महाराज ने भी कहा है:

अकाल मूरत है साध सन्तन की ठहर नीकी ध्यान को।

सचखंड से उठकर यहाँ हमारी दोनों आँखों के दरम्यान आवाज़ आ रही है, शब्द आ रहा है। जब हमारी आत्मा इस शब्द के दायरे में चली जाती है तब यह शब्द इसे ऊपर खींच लेता है फिर हम अपने आपको छोड़कर गुरु में समा जाते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

आप छोड़ गुरु माहें समाए।

सिमरन हमें सूरज मंडल, तारा मंडल, चंद्रमा मंडल से आगे नहीं ले जाता। वहाँ गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है। सेवक गुरु स्वरूप को प्राप्त करके ही सच्चा शिष्य बनता है। आगे शिष्य की ड्यूटी नहीं गुरु की ड्यूटी है। गुरु शब्द के ज़रिए सेवक को साथ लेकर एक मंडल से दूसरे मंडल पार करवाते हैं और अंदर की कैफियत (विवरण) बयान करते हैं, ''बेटा, इस तरफ़ से जाना है उस तरफ़ से नहीं जाना, तू मेरे पीछे चला आ।'' काल ने अंदर बड़े फंदे बनाए हुए हैं, भूलभुलैया बनाई हुई हैं अगर गुरु अगुआई न करें तो काल गुमराह कर देता है।

हमें पता है कि जहाँ धन होता है चोर वहीं आते हैं। उसी तरह जहाँ गुरु प्रकट हो जाते हैं वहाँ आम दुनिया कीड़ों-मकोड़ों की तरह आ जाती है। दुनिया हमें मान-बड़ाई देती है और भी कई तरीकों से इज़्ज़त देती है। शुरू-शुरू में हमें समझने की बहुत ज़रूरत होती है। ऐसा न हो कि हम लोगों की मान-बड़ाई और वाह-वाह में फँसकर अपने रास्ते से गुमराह हो जाएं क्योंकि फिलहाल गुरु ने हमसे काफी दूर की मंजिल तय करवानी है।

हमें सब्र और शुक्र में रहना चाहिए। मैंने कल आपको सूफी सन्त शर्मद की कहानी सुनाई थी कि सब कुछ होते हुए भी फ़क़ीर

दम नहीं मारते। किसी को बद्दुआ नहीं देते और किसी का बुरा नहीं सोचते। मामूली सा बुरा ख्याल भी हमें ब्रह्म की चोटी से नीचे गिरा देता है इसलिए सतसंगी को सदा ही मन की चौकीदारी करते रहना चाहिए, सिमरन में लगे रहना चाहिए।

हाँ भई! अभ्यास में बैठें।

***

मन और आत्मा की धाराएं

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 5 दिसम्बर 1986)

जिस तरह सूरज की किरणें ज़मीन की तरफ़ आती हैं उसी तरह मन और आत्मा की धाराएं शरीर में नीचे की तरफ़ आ रही हैं। इन धाराओं को शरीर से समेटना कोई आसान काम नहीं। यह कुछ हफ्तों, महीनों या सालों का काम नहीं, यह बहुत संघर्ष का काम है।

जब हम लगातार सिमरन के ज़रिए आत्मा की इन धाराओं को निचले चक्रों से इकट्ठा करके ऊपर तीसरे तिल पर आ जाते हैं तब यहाँ से कुदरत का नज़ारा, परमात्मा का घर अपनी आँखों से देख लेते हैं, हमें समझ आ जाती है कि इस दुनिया की पैदाईश क्यों हुई यह दुनिया कैसे चल रही है और इसे कौन चला रहा है। यहाँ तक पहुँचे हुए महात्मा इस संसार को तमाशे के सिवाय कुछ नहीं समझते।

हमारा शरीर परमात्मा को प्राप्त करने की एक प्रयोगशाला है हम परमात्मा को बाहर खोजने की बजाय अंदर जाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ने जो कुछ बाहर की रचना रची है वह हमारे शरीर के अंदर भी रची हुई है। महात्मा पीपा कहते हैं:

जो ब्रह्मडे सोई पिंडे जो खोज़े सो पावे।
पीपा परम व परम तत्त्व है सतगुरु होए लखावे।।

ब्रह्मांड की रचना शरीर के अंदर भी है। हम जिस चीज़ की तलाश कर रहे हैं वह हमें ज़रूर मिलेगी। हम सिर्फ़ सन्त–सतगुरु की मदद और दया से शरीर के अंदर की प्रयोगशाला में दाखिल होकर कामयाब हो सकते हैं।

जब से यह संसार बना है आज तक परमात्मा हमेशा ही अपने प्यारे सन्तों को संसार में भेजता रहा है। जो आत्माएं उनकी कहेकार बनी जिन आत्माओं ने उनके कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ाला वे आत्माएं अपनी ज़िंदगी में कामयाब होकर अपनी खोज को मुकम्मल कर लेती है। वे आत्माएं जीते जी ही मालिक की दरगाह में मालिक के घर पहुँच जाती हैं।

परमात्मा ने बाहर सब कुछ रचना करके उसी का सूक्ष्म रूप हमारे शरीर के अंदर रख दिया है लेकिन यह सब चीज़ें मन के पर्दे के पीछे है। जब हम मन का पर्दा हटाते हैं तो इसे साफ देख सकते हैं। जब हमें यह पता चल जाता है कि सृजनहार परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है तो क्यों न हम बाहर से ख्याल हटाकर शरीर के अंदर जाकर परमात्मा से मिलें।

जब हम सन्त–महात्माओं से सच्चा–सुच्चा प्यार करते हैं तो हमारी आत्मा सच्ची–सुच्ची होना शुरू हो जाती है। उस प्यार ने ही हमारे मन की जड़ें–धाराएं साफ कर देनी हैं और हमारी आत्मा को ऊपर खींचना है इसलिए बाहर से ख्याल हटाकर इसे अंदर तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

***

नाम की दात

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 25 सितम्बर 1987)

मैं अपने सतगुरु परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने कलयुग के अंदर हमें नाम की दात दी। माता–पिता, बहन–भाई हमें हर जामें में मिलते आए हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार भी हमें हर जामें में प्राप्त होते आए हैं और सुख–दुख भी हमें हर जामें में मिलता आया है लेकिन हमें नाम सिर्फ इस इन्सानी जामें में ही मिल सकता है।

परमात्मा नामदान की दात देने के लिए सन्त–महात्माओं को इस संसार में भेजता है। नाम की ऊँची अनमोल दात हमें सन्त–महात्माओं से ही प्राप्त हो सकती है। प्रभु प्राप्ति के लिए हमारा मन हमें अजीब ही अभ्यासों में लगा देता है। कभी हमारा मन हमें जप–तप में लगा देता है, कभी किसी कर्मकांड और कभी तीर्थयात्रा करने में लगा देता है। कभी हम पढ़ने–पढ़ाने में ही मुक्ति समझने लगते हैं लेकिन हर युग में मुक्ति प्राप्त करने का तरीका अलग–अलग है। कलयुग में मुक्ति नाम में है।

परमात्मा हमें नाम देने के लिए इस रास्ते में हमारी मदद करने के लिए ही अपने प्यारे महात्माओं को भेजता है। महात्मा बड़े–बड़े अपराधियों को भी अपने दर से वापिस नहीं भेजते। महात्मा पशु–पक्षियों पर भी दया करने के लिए आते हैं। महात्मा को पता है कि इस मोह–माया और पाप की दलदल के नीचे शुद्ध आत्मा भी है।

हम शब्द–नाम की कमाई के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते, मालिक के दरबार में नहीं पहुँच सकते। शब्द–नाम की कमाई के बिना हमारा जीना इस तरह है जिस तरह किसान बिना सही मौसम के खेती करता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

कुरता बीज़ बीज़े नहीं जम्मे सब लाहा मूल गवाएंदा।

हमें जिस परमात्मा की खोज है हम जिससे मिलना चाहते हैं हमारी आत्मा उसी की अंश है; वह परमात्मा हमारे अंदर है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कलजुग बिन नाम निशानी मुक्त न होय सहजे जानी।

महात्मा ने हमें अंदर जाने का साधन–तरीका दे दिया है। अब हमारा फर्ज़ बनता है कि हम बाहर से ख्याल हटाकर अपने अंदर जाएं क्योंकि हमें जिस चीज़ की खोज है वह हमारे अंदर है और हमें अंदर से ही मिल सकती है। हाँ भई! अभ्यास में बैठें।

***

सन्तों को संगत प्यारी होती है

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 23 दिसम्बर 1988)

मैं रोज़ आपके सामने नाम दोहराऊँगा लेकिन इसे रिकार्ड न करें। मुझे आप सब लोगों के साथ अभ्यास में बैठकर ज़्यादा से ज़्यादा खुशी होती है। सन्त–महात्मा प्यार की मूरत होते हैं, प्यार–रूप होते हैं। वे परमात्मा की तरफ़ से प्यार लेकर ही संसार में आते हैं और अपने सेवकों को प्यार ही देते हैं। दुनियावी परिवार उनकी दुनियावी जायदाद का ही वारिस होता है चाहे उनके बच्चे हैं चाहे उनके पास रहने वाले कोई और लोग हैं।

प्यारयो, सतसंगियों ने सन्तों की परमार्थी जायदाद का वारिस बनना होता है। सन्त–महात्माओं के दिल में संगत के लिए ज़्यादा से ज़्यादा प्यार होता है और उन्हें संगत जान से भी प्यारी होती है।

हम जब तक अंदर नहीं जाते हमें सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं होता। सिमरन के पीछे महात्मा की आत्मिक शक्ति छिपी

होती है और इसके पीछे उनका तप–त्याग काम कर रहा होता है। अभ्यास में तरक्की हमारी एकाग्रता पर निर्भर होती है। जब हम सिमरन के ज़रिए दोनो आँखों के दरम्यान तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं हमारी सुरत यहाँ ठहरने लग जाती है, हमें आंतरिक रास्ता शीशे से भी साफ नज़र आने लग जाता है।

प्यारयो, आज हमें बुराई छोड़नी मुश्किल है क्योंकि हम बुराई का रूप ही हुए बैठे हैं। हमारे अंदर बुरे ख्याल ही उठते हैं लेकिन जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होकर अंदर चले जाते हैं तब बुरे ख्यालों की जगह अच्छाई ले लेती है, फिर हमारे अंदर बुराई का ख्याल, दुनियादारी का ख्याल, विषय–विकारों का ख्याल उठने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जिस भी खुशकिस्मत प्रेमी ने बुराई पर फतह हासिल की है उसने अंदर जाकर ही हासिल की है।

हम दिन–रात अभ्यास में बैठते हैं सिमरन करते हैं यह हम अंदर जाने की ही प्रैक्टिस कर रहे हैं। सिमरन के साथ ही हम तारा मंडल, सूरज मंडल पार कर सकते हैं और सिमरन के ज़रिए ही गुरु स्वरूप तक पहुँच सकते हैं। हमारा अंतरी मंडल रोशनी से भरपूर है अनेकों चाँद–सूरज इसके रास्ते में रोशनी करते हैं जब हम ऊपर के मंडलों मे जाते हैं आगे शब्द शुरू होता है।

हाँ! अभ्यास में बैठने से पहले हमें अच्छी तरह संसारी ख्यालों को मन से निकाल देना चाहिए। मन को बिल्कुल अभ्यास के लिए तैयार कर लेना चाहिए और मन को यह भी जवाब देकर बैठना चाहिए कि अब हम एक खास काम के लिए बैठ रहे हैं। जब तू संसारी काम कर रहा होता है हम तेरे काम में दखल नहीं देते अब तू भी थोड़ी देर शान्त हो जा। अभ्यास को कभी भी बोझ न समझें। प्यार से किया हुआ काम सदा ही कामयाब होता है।

***

सन्तों की जीवों के लिए हमदर्दी

(सन्त बानी आश्रम 16 पी.एस. राजस्थान – 24 मार्च 1989)

हाँ भाई! किसी ने सिमरन को रिकार्ड नहीं करना। मैं हर रोज़ सिमरन बोला करूँगा अगर किसी प्रेमी का उच्चारण सही न हो तो वह सही कर ले। दूसरी बात यह है कि मैं चाहता हूँ हर सतसंगी को अपना अभ्यास शुरू करने से पहले पाँच पवित्र नामों को अपने अंदर धीरे–धीरे बोलकर उन्हें ठीक से ज़रूर याद कर लेना चाहिए ताकि मन को पता चल जाए कि मैं किस काम के लिए बैठ रहा हूँ।

कई दफा जब हम अभ्यास के लिए बैठते हैं मन हमें उसी वक्त भुला देता है कि हम किसलिए बैठे हैं। जैसे ही हम बैठते हैं मन हमारा सिमरन छुड़वा देता है। हर सतसंगी का यह फर्ज़ बनता है कि जब अभ्यास में बैठे सबसे पहले सिमरन को याद करें।

सतसंगियों को अच्छी तरह पता है कि हम सब अलग–अलग धर्मों और अलग–अलग समाजों से आए हैं। हर समाज का व्यक्ति यही समझता है कि वह गुरुमत के अनुसार चल रहा है उसका भक्ति करने का तरीका ठीक है और दूसरों का तरीका गलत है। सच्चाई यह है कि जब हम गुरुमुखों की संगत–सोहबत में जाते हैं तब हमें पता चलता है कि गुरुमुख किसे कहते हैं और गुरुमुख कैसे होते हैं। क्या हम पहले गुरुमत पर चल रहे थे या अब गुरुमत पर चलना शुरू किया है?

सिर्फ मिश्री की बातें करने से मिश्री की मिठास और मिश्री के ज़ायके का ज्ञान नहीं होता। जब हम मिश्री चखते हैं तो मिश्री के ज़ायके का पता चलता है कि यह वाकई मीठी है। इसी तरह गुरुमत पर चलना क्या होता है, यह गुरु से मिलने के बाद ही पता चलता

है, तब हम गुरु की संगत का तज़ुर्बा करते हैं कि वाकई हम गुरुमत पर चल रहे हैं। यही नाम के बारे में है कि जब हम नाम से जुड़ जाते हैं नाम को प्राप्त कर लेते हैं नामरूप हो जाते हैं तभी हमें नाम की ताकत का ज्ञान होता है कि गुरु ने हमें नाम की कितनी महान दात बख्शी है और किस तरह गुरु ने अपने नाम की कणी हमारी आत्मा के अंदर रखी है। हम इस दान की महिमा का वर्णन नहीं कर सकते अगर ऊँचे से ऊँचा कोई दान है तो वह आत्मिक दान ही है।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि नाम ही मेरा मित्र और सखा है। नाम ही मेरा भाई है। नाम ही मेरे माता–पिता हैं। नाम ही मेरा बंधु है। नाम ही मेरी संगत है। नाम ही मेरी रक्षा करता है। नाम प्रकाश है। नाम मुझे अंधेरे से निकालकर प्रकाश में ले आया। हम किस ज़ुबान से अपने गुरु का धन्यवाद करें जिन्होंने हमें यह नाम दिया नाम के साथ जोड़ा। मैं नाम के साथ सोता हूँ नाम से ही जागता हूँ और नाम से ही मेरी हर क्रिया होती है। नाम से ही मेरा बर्ताव होता है। जो कुछ है वह नाम ही नाम है।

सहजो बाई कहती हैं,''मैं गुरु का बदला नहीं चुका सकती बेशक इसके लिए मैं अपना सब कुछ क्यों न वार दूँ।''

कबीर साहब कहते हैं,''गुरु का बदला नहीं चुकाया जा सकता। सारी त्रिलोकी को आधार देने वाली ताकत शब्द–नाम है। गुरु ने हमारे ऊपर दया करके हमें नाम मुफ्त में ही दिया है।''

बेशक हिन्दुस्तान बहुत तरक्की कर चुका है लेकिन हिन्दुस्तान में कोई खास साधन उपलब्ध नहीं हैं जैसे अमेरिका में हैं। जो लोग अमेरिका जाते हैं वे उसे दुनिया का स्वर्ग कहकर वर्णन करते हैं। इसी तरह अगर हम अपने गुरु सावन–कृपाल का घर देख लें तो हम उसे स्वर्गों जैसा भी नहीं कह सकते क्योंकि स्वर्गों में काम, क्रोध,

ईर्ष्या, मौत–पैदाईश, गर्मी–सर्दी, इस स्थूल दुनिया जैसा सब कुछ है। जिस देश से सतगुरु हमें लेने के लिए आते हैं वहाँ मौत–पैदाईश नहीं। काम–क्रोध की कोई गमता नहीं। अन्धेरे का नाम तक नहीं। गुरु दया रूप बनकर आते हैं और हमें नाम के साथ जोड़ते हैं।

प्यारेयो, वहाँ पहुँचने पर हमें पता चलता है कि ओह! गुरु ने हमारे लिए कैसा देश छोड़ा, बिमारियों की देह धारण की और किस तरह हमारे लिए हमदर्दी भरा जीवन व्यतीत किया। उनके दिल में सदा ही जीवों के लिए हमदर्दी होती है।

प्यारेयो, मैं कहा करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं। आज तक जो भी व्यक्ति अंदर गया वह इसे झुठला नहीं सका। मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल का किस तरह धन्यवाद करूं कि उन्होंने हमें ढूंढ़कर त्रिलोकी को आधार देने वाली नाम की ताकत मुफ्त में बख्शी।

मुझे आप लोगों के साथ अभ्यास करके बहुत खुशी हुई। नाम का अभ्यास करने वालों की कद्र सिर्फ वही लोग करते हैं जिनके अंदर नाम जाग जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

सुपने हू बरड़ाएके जे मुख निकसे नाम।
ताके पग की पनही मेरे तन को चाम।।

अगर कोई सपने में भी नाम को याद करता है तो मैं उसे अपने शरीर के चमड़े की जूतियाँ बनाकर उसके चरणों में पहनाने के लिए तैयार हूँ।

मैंने आप लोगों की बहुत कम सेवा की है। मैं आशा करता हूँ कि आप लोग अपने ख्याल को दुनियावी चीज़ों से हटाकर अंदर नाम की तरफ़ जोड़ेंगे। अपना सिमरन प्रेम–प्यार से बिना बोझ समझे शुरू करें।

***

रहनुमा

(बेंगलौर – जुलाई 1989)

हाँ भाई! प्रभु ने हमें बड़ा अच्छा वक्त दिया है। दुनिया में सारे जामों का सरदार इन्सान का जामा है। इन्सानी जामा श्रेष्ठ और उत्तम जामा है। यह जामा सारे जामों का शिरोमणि है। इसकी जिम्मेदारियाँ भी ज़्यादा है। बड़े सिर के उतने ही बड़े दर्द होते हैं।

इन्सानी जामें की क्या जिम्मेदारी है? प्रभु ने हमें जिस मकसद के लिए इन्सान का जामा दिया है सबसे पहले इसके बारे में सोचना है। हमें सोचना है कि हम क्या हैं, हम किस जगह हैं, हमें क्या करना चाहिए, आगे हम कौन सी जगह जाएंगे वह जगह अच्छी है या बुरी है। इस मसले को हल करने के लिए वह प्रभु खुद ही इन्सानी जामें में आकर हमें अपने घर का भेद देता है और अपने साथ जोड़ता है फिर वह हमें अकेला भी नहीं छोड़ता। वह शब्द रूप होकर हर एक के साथ परछाई की तरह रहता है। अगर हमारे दिल में तड़प और प्यार है तो जहाँ सेवक को अड़चन या कठिनाई आती है वह वहाँ हाज़िर हो जाता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भूले सिख गुरु समझाए औजड़ जांदे मार्ग पाए।

प्यारेयो, हमें तो इस दुनिया की भुल–भुलैयों का ही ज्ञान नहीं। किसी नई जगह जाने के लिए हम कदम–कदम पर रास्ता पूछते हैं लेकिन जिस दुनिया के बारे में हमें पता ही नहीं कि काल ने किस तरह की रुकावटें बनाई हैं, वह मार्ग कैसा है, वह रास्ता हमें कोई रहनुमा, कोई मालिक का प्यारा ही पार करवा सकता है, जो उस रास्ते का वाकिफ हो, जिसका मिलाप अंदर बैठे काल के धनियों से भी हो और काल के धनी उसका स्वागत करते हों ताकि आगे जाकर हमारी आत्मा का भी स्वागत हो। हमने इस मसले को इन्सानी जामें में आकर ही हल करना है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

भजो गोविंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।

हमें अपना अभ्यास बिना रुके बिना किसी चीज़ की तरफ़ ध्यान देते हुए करना चाहिए। हर व्यक्ति सड़क पर दौड़ा चला जा रहा है, अपने–अपने कारोबार में मस्त है। हम भी किसी खास काम के लिए बैठ रहे हैं। हमारे सतगुरु ने बड़ी भारी दया करके हमें सिमरन का काम दिया है, हमें भी अपने काम की तरफ़ ध्यान देना चाहिए। अभ्यास को बोझ समझकर नहीं करना चाहिए बल्कि प्रेम–प्यार से करना चाहिए।

हाँ भाई! आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

***

सतगुरु की मदद से

(सन्त बानी आश्रम सॅनबॉर्नटन अमेरिका – 25 जुलाई 1990)

मैं अपने गुरुदेव परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ, मैं उनका ऋणी हूँ। उन्होंने हम सब पर अपार दया करके हमें उस नाम के साथ जोड़ा जो नाम कण–कण में व्यापक है। हमारी आत्मा निर्मल और पवित्र मंडलों को छोड़कर जब नीचे आई तब इस पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे चढ़ गए। आत्मा का अपना प्रकाश गुम हो गया। आत्मा परमात्मा की अंश है लेकिन यह अपने असली घर का रास्ता भूल चुकी है।

परमात्मा ने अपार दया करके हमें इन्सानी जामा दिया है। हमारी आत्मा की दुर्दशा देखकर परमात्मा इन्सानी जामा धारण करके इस सुख–दुख की नगरी में आता है। हम मन और इंद्रियों का साथ लेकर इस सुख–दुख की दुनिया मे फँसे हुए हैं। हम आमतौर पर कहते हैं *'आस को मुराद मिलती है।' 'जहाँ आसा तहाँ वासा'*

अगर हम पूरे गुरु से नामदान प्राप्त करके उन पर प्रीत और प्रतीत करके भजन–अभ्यास करते हैं तो अपने घर सचखंड पहुँचने की आशा रखते हैं। प्रभु परमात्मा हमें सचखंड में जगह देता है हम भी सचखंड पहुँच जाते हैं।

यह समय बड़ा अनमोल है इसका फायदा उठाते हुए सभी प्रेमी पाँच–पवित्र नामों को याद करते हुए अपना अभ्यास शुरू करें।

***

अमृत रस

(सन्त बानी आश्रम सॅनबॉर्नटन अमेरिका – 29 जुलाई 1990)

हाँ भई! बहुत अनमोल समय है। परमपिता कृपाल ने बड़ी दया की, हमें अपने असली घर का भेद देकर अपनी आवाज़ के साथ जोड़ा। जब हम रोज़–रोज़ उस आवाज़ का उस नाम का सिमरन करते हैं तो इसमें महारत पैदा हो जाती है।

शुरू–शुरू में हमें हर काम करने में दिक्कत महसूस होती है वह काम मुश्किल और खुष्क लगता है लेकिन जब हम उस काम में महारत हासिल कर लेते हैं अंदर से रस आना शुरू हो जाता है तब उस आवाज़ में, उस शब्द में, उस गुरुबानी में से रस टपकता है। जब हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के द्वारा आँखों के पीछे एकाग्र कर लेते हैं वहाँ आत्मा को अमृत चखने को मिलता है जिसके रस और स्वाद का आत्मा को ही पता है। धन्ना भगत कहते हैं:

गोविंद गोविंद संग नाम देयो मन लीना।
हाड़ माँस को छीपरों होयो लाखीना।
बनना तनना त्याग के प्रीत चरण कबीरा।
नीच कुला जुलाहरा होयो गुणी गहीरा।
सैन नाई दुतकारिया घर–घर में सुनया।
हिरदे वसया पारब्रह्म भक्तां में गिनया।।

हम धन–दौलत से हुकूमत से और मान–बड़ाई से नाम नहीं कमा सकते ऊँचे नहीं हो सकते अगर ऊँचे हो सकते हैं तो शब्द–नाम की कमाई से ही हो सकते हैं।

इतिहास बताता है कि जब ये मालिक के प्यारे भक्त नामदेव, कबीर साहब नाम का प्रचार करते थे उस वक्त की हुकूमत ने इनके ऊपर हर किस्म के जुल्म किए। धर्म के ठेकेदारों ने उस हुकूमत के कान भर दिए कि ये गलत प्रचार करते हैं। सिकंदर लोदी बादशाह का हिन्दुस्तान पर बड़ा शक्तिशाली राज्य रहा है। आज कोई उसका नाम नहीं लेता, कोई उसको याद करने वाला नहीं, कोई उसका जन्मदिन मनाने वाला नहीं। वह जहाँ रह रहा था आज वे महल बर्बाद हुए पड़े हैं खंडहर बने पड़े हैं।

जिन मालिक के भक्तों ने भक्ति की मालिक के साथ संपर्क पैदा किया उनके करोड़ों शिष्य आज उनका जन्मदिन मनाते हैं उनसे प्यार करते हैं। सुबह उठकर फक्र से उनका नाम लेते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं :

जिस नीच को कोई ना जाने, नाम जपत चौ कुंट पहचाने।

नाम के इतने फायदे है नाम से हमें शान्ति मिलती है सुख मिलता है। नाम को पकड़कर हमें घर जाने का मौका मिलता है। क्यों न दिन–रात उस नाम का अभ्यास किया जाए? खास करके अमृतवेले से हमें पूरा फायदा उठाना चाहिए।

बहुत खुशी की बात है कि इस नाम को बूढ़ा, बच्चा, औरत, मर्द किसी भी देश का इन्सान जप सकता है और मालिक से मिल सकता है। वह परमात्मा सबका सांझा है। परमात्मा किसी समाज या किसी मुल्क की निजी जायदाद नहीं। हम सबको इस मौके का फायदा उठाकर आँखे बंद करके अपने अभ्यास में बैठना है।

***

अमृतवेला

(आइडाहो अमेरिका – 12 ,13 और 14 जून 1992)

सुबह अमृतवेला है। हमारे सतगुरु सावन–कृपाल ने हम पर बड़ा उपकार किया है दया की है जिसे हम बयान नहीं कर सकते। उन्होनें हमें भक्ति करने का मौका और भक्ति का दान दिया है। उनके चरणों में नमस्कार हैं।

सन्तों का दिया हुआ नामदान शिष्य के लिए जीवन का दान होता है। यह नाम न पैसों से मिलता है न माँगने से मिलता है और न ही हम इसे खेतों में उगा सकते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने कहा है, ''चल उठ नाम जप। सारी रात सोकर व्यतीत न कर। शरीर को नींद की जितनी ज़रूरत है उतनी ही दें।''

काला तुझे ना व्यापी नानक मिटे अपाध ।

काल ने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी पाँच डाकुओ की फौजें बनाई हैं। ये फौजें हर व्यक्ति के इर्दगिर्द रहती हैं। ये दूत इस मौके की तलाश मे रहते हैं कि कब जीव को अपने कब्ज़े में करें। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''अगर आप नाम की कमाई करेंगे शरीर के नौ द्वार खाली करके आँखों के पीछे आकर शब्द के साथ जुड़ेंगे तो ये पाँचों डाकू आपको तंग नहीं करेंगे। आपका मन आपके साथ जो छल–कपट करता है वह भी शान्त हो जाएगा।

भजन–अभ्यास के लिए चाहे घर में बैठें चाहे यहाँ बैठें। हर प्रेमी को अपना भजन–अभ्यास शुरू करने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह से याद कर लेना चाहिए।

हाँ भाई! आँखें बंद करके प्रेम–प्यार से अपना भजन–अभ्यास शुरू करें। – 12 जून 1992

***

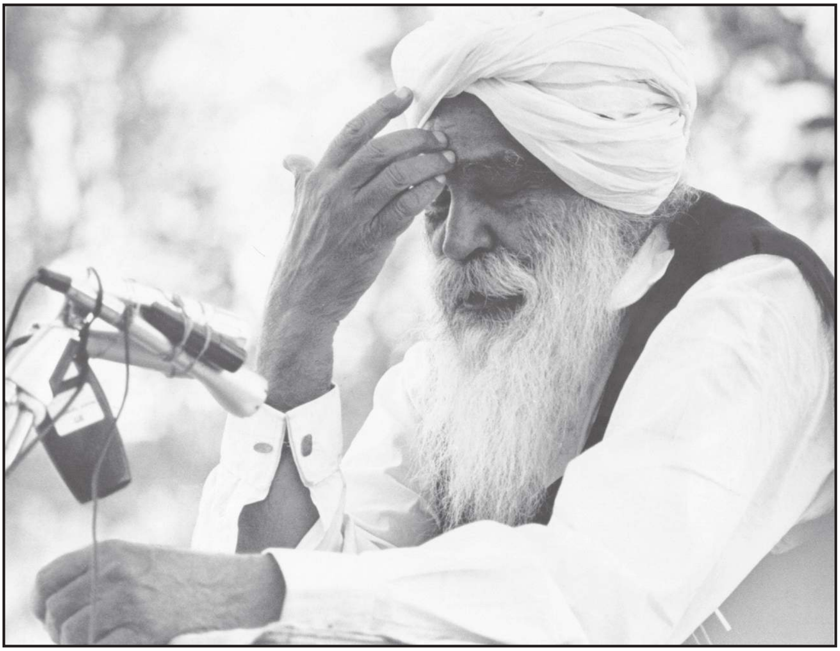

अपने गुरुदेव सावन–कृपाल के चरणों मे नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान दिया और अपनी याद में बैठने का मौका दिया। सभी सन्तों ने यही संदेश दिया है कि वह दाता वह परमात्मा एक ही है। वह जिसे चाहे बख्श सकता है। वह जहाँ चाहे नाम की बारिश कर सकता है, बरकत की बारिश कर सकता है।

नम्रता बड़प्पन की निशानी होती है। पंजाब की कहावत है कि जिस वृक्ष को फल लगता है उसकी डालियां अपने आप ही झुक जाती हैं। नम्रता ही सन्तों का श्रृंगार, सन्तों की निशानी है।

नाम कण–कण में व्यापक है। नाम हमारे अंदर है और हम नाम के साथ अंदर से ही जुड़ सकते हैं इसलिए हमें बाहर से ख्याल को हटाकर मजबूती से अभ्यास में बैठना चाहिए और सिमरन करते हुए अंदर जाना चाहिए। आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

– 13 जून 1992

***

यह अमृतवेला है। इन्सान का जामा भी एक अमृतवेला है। इस जामें में परमात्मा ने हमें अपनी भक्ति करने का एक मौका दिया है।

अभ्यास में बैठने से पहले चाहे घर में बैठें चाहे यहाँ बैठें सबसे पहले देखें कि जो एक कीमती घंटा परमार्थ के लिए निकाला जा रहा है क्या इस दौरान हमें बीच में उठना तो नहीं पड़ेगा, क्या ऐसा कोई काम तो नहीं जिसके लिए हमें भजन–अभ्यास से उठना पड़े? अगर कोई काम है तो वह काम पहले ही कर लें। भजन–अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नाम अच्छी तरह याद कर लें। अभ्यास को कभी भी बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें।

हम अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के धन्यवादी हैं जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का यह मौका दिया है। आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें। –14 जून 1992

***

परमात्मा हमारी विनती सुनता है

(मुंबई – 6 जनवरी 1994)

मैं परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों मे नमस्कार करता हूँ जिन्होंने अपार दया करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। यह उनकी ही दया है जो हम सारे यहाँ बैठकर उनके साथ जुड़ने की प्रैक्टिस करते हैं।

अभ्यास में बैठने से पहले चाहे यहाँ बैठें चाहे अपने घर में बैठें सबसे पहले अपने मन को यह कह दें कि अभी हम एक खास काम के लिए बैठ रहे हैं तू इसमें अपना दखल न दे। मन को जवाब देकर बैठें। मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है। उसके बाद पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह ज़ुबान के साथ धीरे–धीरे उचारें।

जब आपको उन पाँच पवित्र नामों को उचारने में कोई कठिनाई नहीं फिर उनको मन की ज़ुबान के साथ अंदर जैसे तरीका बताया गया है उस तरह उचारें।

अभ्यास को कभी बोझ न समझें प्रेम-प्यार से करें। हम जो काम प्रेम-प्यार से करते हैं उसमें सफलता मिलती है।

मुझे आप सबके साथ रोज़-रोज़ अभ्यास करने में बड़ी खुशी मिलती है। मैं आपको अभ्यास में बिठाकर चला नहीं जाता। मैं आज भी आपके साथ अभ्यास में बैठकर उतना ही खुश होता हूँ जितना कि उस दिन था जिस दिन हुज़ूर ने दया-मेहर करके मुझे अभ्यास में बिठाया था और मैं हुज़ूर की कृपा का पात्र बना था।

यह अमृतवेला है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि जब पपीहा स्वाति (बारिश की) बूँद के लिए दिन-रात पुकारता है। वह परमात्मा पशु-पक्षियों की आवाज़ सुनकर इन्द्र देवता को आदेश देता है। इन्द्र देवता बादलों को भेजता है बारिश हो जाती है। पपीहा स्वाति बूँद पीकर तृप्त हो जाता है। पपीहे ने सिर्फ पुकार की तो परमात्मा ने दरगाह में उसकी पुकार सुनी।

जब हम अभ्यास करते हैं पाँच पवित्र नामों का सिमरन करते हैं यह भी एक सच्ची पुकार है। अगर परमात्मा एक पक्षी की पुकार सुनता है तो वह हमारी आत्मा की पुकार भी सुनता है और उसका जवाब भी देता है, लेकिन हमारी उस जगह तक पहुँच न होने की वजह से न हमें उसके प्यार का ज्ञान है न उसके जवाब का ज्ञान है।

जो सन्त-महात्मा गुरु की दया प्राप्त करके अंदर जाते हैं उन्हें परमात्मा के जवाब का भी ज्ञान है और परमात्मा के प्यार का भी ज्ञान है। परमात्मा प्यार का सागर है उसमें से प्यार की लहरें उठती हैं। खुशकिस्मत लोग उस प्यार में से तिनका प्राप्त कर लेते हैं।

आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें। आपको जब तक यहाँ से आवाज़ नहीं देते तब तक आप अपनी आँखें खोलने की कोशिश न करें। बहुत से प्रेमियों के दिल में संदेह पैदा हो जाता है कहीं हमारे साथी चले न गए हो! ऐसा नहीं होता। सबको यहाँ आवाज़ दी जाती है और एक भजन भी बोला जाता है। आप अपने काम में मस्त रहें अपना सिमरन ज़ारी रखें।

***

दया की टोकरी

(अहमदाबाद – 16 सितम्बर 1994)

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हम भूले–भटके जीवों को अपनी भक्ति करने का मौका दिया। अपनी याद में बैठने का बल बख्शा। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि भजन–अभ्यास के लिए चाहे आप आश्रम में बैठें या अपने घर में बैठें अभ्यास को कभी बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें।

प्यारेयो, मैं जब साऊथ अफ्रीका से मुंबई आ रहा था तब मैंने एयरपोर्ट पर कुछ अरबी शेख देखे। उनमें से जो नित्यनियम से नमाज़ पढ़ते थे, जब उनके नमाज़ पढ़ने का समय हुआ तब उन्होंने वहीं एयरपोर्ट की भीड़भाड़ में ज़मीन पर कपड़ा बिछाकर नमाज़ पढ़ी। आप देखें! उन्हें न पूर्ण सन्त मिले थे न उन्होंने पूर्ण सन्तों की दया प्राप्त की थी लेकिन वे जो भी रिवाज़ कर रहे थे उसमें उन्होंने खलल नहीं आने दिया। परमात्मा को याद किया अपना नित्यनियम नहीं तोड़ा हालाँकि उन्हें पूरे गुरु से सच्चा नाम नहीं मिला था।

हम सतसंगियों को हमेशा समझाया जाता है कि हमें अपना भजन–अभ्यास नित्यनियम से करना चाहिए। किसी दिन भी भजन–अभ्यास से नहीं चूकना चाहिए।

महाराज कृपाल यहाँ तक समझाते हैं, ''जब तक आप अपनी आत्मा को खुराक न दे दें तब तक अपने तन को खुराक न दें।''

आम घरों के आस-पास छोटे-छोटे पेड़-पौधों के बगीचे होते हैं। सुबह उन पेड़ों पर छोटे-छोटे पक्षी आ जाते हैं। वे सुबह-सुबह इन्सान के जागने से पहले उठकर अपनी बोली में परमात्मा को याद करते हैं। फरीद साहब कहते हैं:

हौं बलिहारी पंखियाँ जंगल जिन्हां वास।
कंकर चुगन थल वसन रब न छड्डुन पास।।

सूफ़ी सन्त फरीद साहब कहते हैं कि मैं उन पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ। ये पक्षी जंगल में रहते हैं, कंकर-पत्थरों में से दाने चुगते हैं। खड्डों में गिरे फल खाते हैं लेकिन परमात्मा को एक मिनट भी नहीं भूलते। इन पक्षियों को खाने के लिए सिर्फ घास-पत्ते, कंकरों में गिरे हुए दाने और खड्डो में गिरे हुए फल ही मिलते हैं। बागों के मालिक असली फल और दानें ले जाते हैं। अगर पक्षी उन फलों को खाने की कोशिश करें तो बागों के मालिक उन्हें भगा देते हैं फिर भी ये पक्षी अपनी बोली में परमात्मा का शुक्र मनाते हैं।

हम इन्सान अच्छे से अच्छा खाना खाते हैं अच्छे से अच्छे बिस्तर पर सोते हैं। क्या हमारे अंदर उन पशु-पक्षियों जैसी तड़प है कि हम सुबह जल्दी उठकर परमात्मा से जुड़ें? परमात्मा से कौन जुड़ता है? परमात्मा का प्यारा जो नामरूप हो गया है, परमात्मा रूप हो गया है वही परमात्मा से जुड़ता है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

चिड़ी चुकी पो फुटी वजण बहुत तरंग।
अचरज रूप देख संतन का नानक नामें रंग।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''सन्त सुबह सूरज उदय होने से पहले और पक्षियों के जागने से पहले उठकर परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं। वे अचरज रूप धारण करते हैं।''

मीराबाई को नाम और गुरु के साथ प्यार था। मीराबाई कहती हैं,''हे नींद, अगर कोई तेरा ग्राहक हो तो मैं तुझे बेच दूं! लोग तो किसी चीज़ को माप-तोलकर, कीमत लगाकर बेचते हैं लेकिन मैं तो तुझे कीमत लिए बगैर ही बेच दूंगी। तू उस घर में जा जहाँ कोई परमात्मा की भक्ति नहीं करता; तू भक्तों के घर क्यों आती है?''

जब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के दिल में अपने गुरु रामदास जी महाराज के लिए प्यार पैदा हुआ, नाम के साथ प्यार पैदा हुआ तब उन्होंने नींद से कहा, ''ऐ नींद, तू घट जा।'' और रात से कहा, ''ऐ रात, तू बढ़ जा। रात छह महीने जितनी हो जाए ताकि मैं अपने प्रीतम के साथ जुड़ा रहूँ।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिन लोगों की रातें बन गई उनका सब कुछ ही बन गया।'' मैं हमेशा कहा करता हूँ कि सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है और मोती निकालने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। माता भी बगैर मेहनत के बच्चा पैदा नहीं कर सकती।

अभ्यासी के रास्ते में नींद और आलस रुकावट है। सन्तमत मेहनत माँगती है। खुद कमाया हुआ धन ही अपना होता है। टीचर उसी बच्चे पर ध्यान देता है जो बच्चा टीचर का कहना मानता है। उसी तरह गुरु भी अपना ध्यान और दया उस शिष्य पर करते हैं जो उनके कहने के अनुसार अभ्यास करता है रोज़-रोज़ नाम जपता है।

सन्त कहते हैं प्यारेयो, आप पैरों को न छुएं क्योंकि जो कुछ है वह साधु की आँखों और मस्तक में होता है लेकिन समाज में पाखंडियों ने हमें पैरों में गिरने की आदत डाली होती है।

एक बार महाराज सावन सिंह जी खड़े थे तब एक प्रेमी ने उनके पैर इस तरह छुए कि वह पैरों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं

हुआ। तब महाराज जी ने उसे डाँटा। वहाँ खड़े हुए एक प्रेमी ने कहा, ''महाराज जी, इस पर रहम करें इसके बस में क्या है? यह आपकी तड़प में ऐसा कर रहा है।''

सन्त-महात्मा दिलों की जानते है। आपने कहा, ''मैं रोज़ सुबह तीन बजे दया की टोकरी लेकर हर एक सतसंगी के दरवाजे पर जाता हूँ। अफसोस! उस समय सब सोए होते हैं। बहुत कम भाग्यवान प्रेमी उस समय मुझसे दया प्राप्त करते हैं।'' सूफ़ी सन्त फ़रीद साहब कहते हैं:

पहले पहर फुलड़ा फल की पाछे रात।
जो जागंणगे सो पांणगे साईं कोलो दात।
रात कस्तूरी वंडया सुतया मिले न भाओ।

पहले पहर भजन-अभ्यास करना पौधों में फूल लगने के समान है और बाद में भजन-अभ्यास करना फल प्राप्त करने के समान है। सुबह प्रातःकाल गुरु-परमात्मा अपनी दयारूपी कस्तूरी बाँटते हैं। जो जागते है वे अपने गुरु-परमात्मा से दया प्राप्त करते हैं; जो सोए रहते हैं वे उस दया से वंचित रह जाते हैं।

जो रात को सोकर उठ भी जाते हैं लेकिन नींद में होते हैं फिर सो जाते हैं। जो जागते हैं वही भाग्यशाली जीव दया प्राप्त करते हैं। सतसंगी को सदा ही अभ्यास को पहल देनी चाहिए। आप जब तक सुबह अभ्यास न कर लें तब तक नींद को मौका न दें।

भजन-अभ्यास में बैठने से पहले सिमरन अच्छी तरह से याद कर लें और आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

रोज़–रोज़ प्रेम–प्यार से अभ्यास करें

(मुंबई – 12 जनवरी 1994)

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने बड़ी भारी दया करके हमें अपनी भक्ति करने का मौका दिया है। मैं आप सबके साथ कई दिनों से अभ्यास में बैठ रहा हूँ। मुझे अभ्यास करके और संगत से अभ्यास करवाकर बहुत खुशी होती है। ढ़ेर सारे किताबी ज्ञान से रत्ती भर का अभ्यास अच्छा है। किसी को उपदेश करने से अभ्यास करना करोड़ो दर्जे अच्छा है। दुनिया को नसीहत देने से खुद उदाहरण बनकर दिखाना करोड़ो दर्जे अच्छा है।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि सन्तमत कायरों का मत नहीं यह सूरमा–बहादुरों का मत है। सूरमा इस शरीर रूपी किले के ऊपर फतह हासिल करने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने के लिए सदा तैयार रहता है। हार जाना उतना बुरा नहीं होता जितना बुरा हार मान लेना होता है।

सतसंगी को सदा मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठना चाहिए कि जब तू सारा दिन दुनिया का कारोबार करता है मैं कोई दखल नहीं देता। अब मैं खास काम के लिए एक घंटा बैठ रहा हूँ तू भी बाज आ जा इस दौरान कोई दखल न दे।

अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद कर लें। घर का कोई खास काम है तो वह भी पहले ही कर लें। अभ्यास को कभी बोझ न समझें रोज़–रोज़ प्रेम–प्यार से करें। हाँ भई! आँखे बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

***

चितवन

(मुंबई – 5, 6 और 11 जनवरी 1995)

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। यह उनकी दया है जो हम यहाँ बैठकर उस परमात्मा को याद कर रहे हैं। वह परमात्मा शब्द–रूप होकर मनुष्य देह धारण करके आया और हमारे बीच रहा। उसने हमारी आत्मा पर रहम किया और हमें अपने असली घर सचखंड का संदेश दिया।

आपको पता है कि अभी कई दिन हमने एक साथ बैठकर उनकी याद में नाम की पूँजी इकट्ठी करनी है। वह पूँजी प्राप्त करके हमने यहाँ पर कुछ दिन सुख–शान्ति से बिताने हैं और इस संसार से जाते समय भी वही पूँजी हमारे साथ जाएगी।

प्यारेयो, इस वक्त हर इन्सान अपने–अपने कारोबार में दौड़ा फिर रहा है। पशु–पक्षी या इन्सान सब अपनी–अपनी मंज़िल की तरफ़ बिना रुके दौड़ रहे हैं। हमारे सतगुरु का बताया हुआ घर–सचखंड हमारी मंज़िल है। हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम दुनिया की किसी आवाज़ की तरफ़ ध्यान न देते हुए ख्यालों को दुनिया से हटाकर, बिना रुके, बिना कुछ सोचे सिमरन करते हुए अपनी मंज़िल की तरफ़ आगे बढ़ें।

सब सन्तों का यही संदेश है कि परमात्मा की भक्ति ही अमोलक धन–पदार्थ है। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है, सच्चे सुख सच्ची इज़्ज़त की दाता है। भक्ति का धन हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते जब तक हम उन सन्त–महात्माओं के चरणों में जाकर नहीं बैठते। महात्मा परमात्मा की

तरफ़ से इस संसार में भक्ति धन के भंडारी बनाकर भेजे गए हैं। सन्त परमात्मा के शरीक नहीं होते उससे बड़े भी नहीं होते। यह एक सच्चाई है कि वे परमात्मा के प्यारे पुत्र होते हैं। उन्होंने प्यार से परमात्मा को अपने ऊपर खुश किया होता है। प्यारा पुत्र अपने पिता से जो चाहे करवा सकता है। गुरु नानकदेव जी ने कहा है:

कीता लोड़ ना सोई करायन दर फेर ना कोई पाएंदा।

भक्त नामदेव जी कहते हैं, ''अगर मैं किसी को बाँध दूं तो परमात्मा के प्यारे बच्चे सन्त उसे उस बंधन से छुड़वा सकते हैं।'' परमात्मा अपने भक्तों को मान देते हुए कहता है, ''अगर मेरे भक्त मुझे भी बाँध दें तो मैं उनसे नहीं पूछ सकता कि मुझे क्यों बाँधा है?'' परमात्मा अपने भक्तों के वश में होता है।

हमने यहाँ जितने दिन भी भजन–अभ्यास में बैठना है सबसे पहले हर रोज़ पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद करना है। मन के अंदर दुनिया के जो भी ख्याल हैं उन्हें पूरी तरह से बाहर निकालकर ही अभ्यास में बैठना है।

जिन प्रेमियों को नाम नहीं मिला है और जो नाम की अभिलाषा लेकर यहाँ आए हैं, वे बाहर इधर–उधर घूमने की बजाय जब तक नाम नहीं मिलता बैठकर अपनी दोनों आँखों के दरम्यान ध्यान लगाकर 'सतगुरु–सतगुरु' का जाप करें।

हाँ भई! आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

– 5 जनवरी 1995

***

परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर दया की अपनी भक्ति में और अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

मन में चितवो चितवनी उद्यम करो उठ नित।
हरि कीर्तन का आहरो हर दयो नानक की मित।।

सब सन्तों ने सिमरन पर बहुत ज़ोर दिया है। जो सतसंगी सिमरन करते हैं उन्हें इसकी महानता का ज्ञान है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने हमें उद्यम करने का चितवन करने का संदेश दिया है। किसका चितवन करना है? सन्त–सतगुरु हमें जो नाम देते हैं हमें उसका चितवन करना है।

उठते–बैठते, चलते–फिरते हमारी ज़ुबान पर सिमरन चढ़ जाना चाहिए। हमें उस कीर्तन को सुनना चाहिए जो कीर्तन सचखंड से उठ रहा है। वहाँ हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई, औरत, मर्द का सवाल नहीं। यह कीर्तन हर एक इन्सान के अंदर बिना लिहाज़ ज़ारी है। वह परमात्मा खुद हमारे अंदर उस कीर्तन को कर रहा है।

जब किसी नामलेवा सतसंगी के अंदर इतनी चितवन शुरू हो जाती है कि वह पपीहे की तरह सोते–जागते भी सिमरन नहीं भूलता, सदा सिमरन करता रहता है उसे वह कीर्तन प्राप्त हो जाता है। हमें भी गुरु के आगे यही विनती करनी चाहिए कि वह हमारे अंदर भी कीर्तन ज़ारी कर दे। जब हम सिमरन के द्वारा नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आते हैं तब वह कीर्तन सुनाई देता है जो दिन–रात धुनकारें दे रहा है। वह बिना बजाए बज रहा है।

सुबह का बड़ा अच्छा मौसम हैं। हम पिछले दिन के ख्याल भूल चुके हैं। इस समय किया हुआ थोड़ा सा सिमरन भी कारगर होता है। कभी हमारे दिल में यह ख्याल हो कि हम जो थोड़ा बहुत

उठते–बैठते सिमरन करते हैं वह लेखे में नहीं। हम जो साँस–साँस के साथ सिमरन करते हैं वह भी लेखे में है। गुरु साहब कहते हैं:

लेखे आवे साँस ग्रास।

जिन प्रेमियों को नाम नहीं मिला वे भी आँखें बंद करके दोनों आँखों के दरम्यान ध्यान टिकाकर 'सतगुरु–सतगुरु' का जाप करें। जब तक यहाँ से आवाज़ नहीं दी जाती तब तक न उठें। दूसरे लोग जो आपके पास बैठे हैं उनको भी कोई तकलीफ न हो।

मैं आमतौर पर कहता हूँ कि जब हम अभ्यास में बैठते हैं मन भी अपना मौका हाथ से नहीं जाने देता क्योंकि यह काल का एजेन्ट है इसकी ड्यूटी है कि कोई भी जीव सतगुरु भक्ति न कर पाए। यह उस वक्त सोचना शुरू कर देता है और सिमरन भुला देता है।

कई प्रेमी सोचते है शायद! हम ही बैठे हैं बाकी प्रेमी चले तो नहीं गए, वे कई दफा आँखें खोलकर भी देखते हैं। मैं वायदा करता हूँ हम बगैर आवाज़ दिए और बगैर भजन गाए यहाँ से नहीं जाएंगे। कोई भी प्रेमी उठकर आगे–पीछे देखने की कोशिश न करे कि बाकी प्रेमी बैठे हैं या नहीं।

हाँ भई! आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

– 6 जनवरी 1995

***

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमे भक्ति का अनमोल पदार्थ दिया और अपनी भक्ति करने का मौका दिया। गुरु की अपनी ड्यूटी होती है और शिष्य की अपनी ड्यूटी होती है। सतगुरु ने हमें नाम का अमोलक धन दिया है अब इसे आगे बढ़ाना हमारा धर्म है। हम इसे आगे मेहनत और लगन से ही बढ़ा सकते हैं। सूफ़ी सन्त फरीद साहब कहते हैं:

उठ फ़रीदा सुत्तया झाड़ू दे मसीत।
तू सुत्ता रब जागदा तेरी डाढ़े केही प्रीत।।

सब सन्तों ने कहा है अगर कोई सच्ची से सच्ची मस्जिद ठाकुर द्वारा या हरि मन्दिर है तो वह हमारा शरीर है। इस शरीर के अंदर बुरे ख्यालों के कूड़े-करकट को साफ करने के लिए रोज़ सुबह तीन बजे उठें। सतगुरु ने दया करके हमें जो सिमरन का झाड़ू दिया है उससे इस मस्जिद को साफ करें। परमात्मा जाग रहा है अगर आप परमात्मा के सच्चे भक्त बनना चाहते हैं तो आप भी जागें। परमात्मा जागता है और आप सोए हुए हैं आप फिर भी कहते हैं कि हम परमात्मा से प्यार करते हैं तो यह झूठा दावा है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हमने जिसे कभी नहीं देखा हम कहते हैं कि हम उसके साथ प्यार करते हैं लेकिन जिनको हम देख रहे हैं उनके साथ हम प्यार नहीं करते।''

कबीर साहब ने संसार को अंधा कुआँ कहकर बयान किया है कि जीव न तो संसार के अंदर देख सकते हैं और न ही इससे बाहर निकल सकते हैं लेकिन जीव सतगुरु से ज्ञान का दीपक लेकर देख भी सकते हैं और बाहर भी निकल सकते हैं।

परमात्मा पर्वत जितना विशाल है लेकिन मोह और अहंकार के पर्दे के पीछे छिपा हुआ है। हम सन्तों से नाम लेकर नाम की कमाई करके इस मोह और अहंकार के पर्दे को हटाकर परमात्मा के दर्शन कर सकते हैं। हाँ भई! रोज़ की तरह आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

– 11 जनवरी 1995

***

सतोगुणी ख्याल

(18 मार्च 1995)

परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों मे नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान दिया, भक्ति करने का और अपने साथ जुड़ने का मौका दिया। मैं हर रोज़ जहाँ कहीं भी प्रेमियों को अभ्यास में बिठाता हूँ तो हमेशा यही कहता हूँ कि आप अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को याद कर लें।

दुनिया के कारोबार के जो संकल्प-विकल्प मन के अंदर उठ रहे हैं जिनकी वजह से मन अशान्त होता है उन्हें बाहर निकाल दें ताकि आप वह जगह सिमरन को दे सकें।

आप अभ्यास में चाहे यहाँ बैठें चाहे अपने देश में बैठें हर तरफ़ से मन को शान्त करके अपना सिमरन शुरू करें। सतसंगी को यह देख लेना चाहिए कि कोई ऐसा ज़रूरी काम तो नहीं रह गया जिसकी वजह से मन अभ्यास से उठाए कि तुझे यह ज़रूरी काम करना था चल तू वह काम करके आ। मन को अभ्यास से उठाने का बहाना मिल जाता है इसलिए मन को जवाब देकर अभ्यास में बैठें। अभ्यास में बैठते ही मन ज़िंदगी की सैकड़ों साल पुरानी भूली हुई कई बातें याद करवा देता है और अपना दफ़्तर खोल देता है। उस वक्त मन की बात बिल्कुल न सुनें।

बहुत से प्रेमी सवाल करते हैं कि हमें किस तरह पता चले कि यह मन की तरफ़ से है या सतगुरु की तरफ़ से है? मैं हमेशा कहा करता हूँ कि हमारा दुश्मन कभी भी हमें नेक सलाह नहीं देगा। हमारा मित्र हमेशा हमें अच्छी सलाह देगा। हमारे अंदर जितने भी बुरे ख्याल उठ रहे होते हैं ये सब हमारे मन की तरफ़ से उठ रहे होते हैं क्योंकि मन नहीं चाहता कि ये शब्द के साथ जुड़ें।

जब हमारे अंदर सतोगुणी ख्याल पैदा होते हैं चाहे वे ख्याल दिन में आते हैं चाहे अभ्यास में बैठे हुए आते हैं चाहे किसी भी वक्त आते हैं वे सतगुरु की तरफ़ से होते हैं। हमें ऐसे मौके पर समझना चाहिए कि ये ख्याल सतगुरु की तरफ़ से है और उस वक्त हमें अभ्यास में बैठ जाना चाहिए।

जब हमारे अंदर सतोगुणी ख्याल पैदा होते हैं तब हमें तरक्की का बहुत ही अच्छा मौका मिलता है। चाहे हम यहाँ हैं चाहे अपने देश में हैं हम इन चीज़ों को ध्यान में रखकर अभ्यास में बैठें। हर रोज़ बिना लिहाज डायरी (डायरी का नमूना पन्ना नंबर 557) भरें। अब अपना सिमरन शुरू करें।

***

दिल लगाकर भजन–सिमरन करें

(दिल्ली – अक्टूबर 1981)

मन को शान्त करें शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास को बोझ न समझें प्रेम–प्यार से करें।

जो नाम लेकर नहीं जपता उस पर लाखों–करोड़ों लानतें हैं। सारे गुनाह बख्शे जाते हैं, राम बख्श देता है लेकिन अगर कोई राम से ठग्गी मारे, बेईमानी या पाप करे तो वह बख्शा नहीं जाता। गाय का हत्यारा बख्शा जा सकता है लेकिन गुरु के साथ ठग्गी–बेईमानी करने वाला नहीं बख्शा जा सकता। इसलिए हमें गुरु का दिया हुआ भजन–सिमरन दिल लगाकर ईमानदारी से करना चाहिए।

परमपिता परमात्मा ने हमारे लिए गंदगी का थैला मनुष्य देह धारण की। उसकी अपनी कोई गरज़ नहीं छिपी होती वह सिर्फ

जीवों के ऊपर दया करके ही इस संसार मंडल पर आता है। वह खुद नहीं आता बल्कि वह परमपिता के भेजने पर आता है। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं कि मेरा दिल इस दुनिया में आने के लिए राज़ी नहीं था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका।

मैं हूँ परम पुरुष का दासा आयो देखन जगत तमाशा।

अगर मृग का पैर एक बार कड़के में अटक जाए तो वह दोबारा उसमें अपना पैर नहीं फँसाता क्योंकि उसे उस वेदना और दुख का पता चल जाता है। जिसे पीने के लिए अमृत मिले वह हथेली के ऊपर ज़हर रखकर कभी नहीं खाएगा। जिसे स्वर्ग की सैर करने को मिले वह कभी भी कल्लरों में मिट्टी नहीं उड़ाएगा। जिसका एक बार परमपिता परमात्मा के साथ मिलाप हो जाए वह कभी भी बिछोड़े के लिए तैयार नहीं होगा फिर भी महान आत्माएं परमपिता परमात्मा के आगे सिर झुकाकर इस संसार में आती हैं।

जिस तरह कुत्ता एक गरीब जानवर है। वह कभी किसी द्वार पर तो कभी किसी द्वार पर जाता है। वह बेचारा भटकता रहता है उसने कभी किसी का सूखा खाना खाया तो कभी किसी और का खाना खाया। बहुत से साहूकार दया करके उसे रोटी दे देते हैं। आप देखें! उस साहूकार की उसके पीछे क्या गरज़ छिपी है भाई? उसे कुत्ते पर दया आई तो उसने कुत्ते को रोटियाँ दी।

सन्त–सतगुरुओं को पता है कि यह जीव भी गरीब जानवर की तरह है। यह कभी पशु बनता है तो कभी पक्षी बनता है। बेचारा कभी कहीं अपना गला कटवाता है तो कभी कहीं गला कटवाता है। आखिर इन्सान के जामें मे आकर भी मुसीबतें भोगता है। जब यह घूमते–घूमते सन्तों के द्वार पर आ जाता है तो सन्त इसे गरीब जानवर की तरह समझकर नाम की दीक्षा दे देते हैं।

सन्तों में दया होती है इसलिए वे आत्मा को नाम की दीक्षा देते हैं। हमारा फर्ज़ बनता है कि हम नाम जपें। नाम जपते हुए आलस या दरिद्रता करना अपना घात करने तुल्य है। नाम जपने के लिए न बैठने का मतलब है हम खुद अपनी गर्दन छुरी से काट रहे हैं। जो लोग कहते हैं कि मन नहीं लगता। कोई कहता है मेरे पैर दुखते हैं घुटने दुखते हैं। सोचकर देखें! मन क्यों नहीं लगता भाई? जो भजन के चोर हैं उनकी ही ये शिकायतें हैं।

सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है।'' सन्त-सतगुरु किसी और का नहीं अपना तज़ुर्बा बताते हैं कि मैं अपनी ज़िंदगी में इस तरह कामयाब हुआ हूँ अगर आप भी इस तरह करेंगे तो आप भी कामयाब हो जाएंगे। सन्त महान आत्मा होते हैं। वे हमें डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए ही कमाई करते हैं। ऐसी महान आत्माएं जब संसार मंडल में आती है तो उन पर गरीबी-अमीरी, पढ़-पढ़ाई या कम पढ़ने-लिखने का असर नहीं होता।

कबीर साहब छोटी और गरीब जाति में पैदा हुए थे। शाह बल्ख बुखारा एक बादशाह था। बादशाह के दिल में परमार्थ का शौक था प्रभु-परमात्मा से मिलने की तड़प थी। वह हिन्दुस्तान में कबीर साहब के पास आया। कबीर साहब ने कहा, ''मैं एक गरीब जुलाहा हूँ और तू एक बादशाह है तेरी मेरी गुजर कैसे होगी?'' बादशाह ने कहा, ''आप मुझे अपने दरवाजे से न लौटाएं। आप जो भी रूखा-सूखा खाने के लिए देंगे मैं उसी में अपना गुज़ारा कर लूंगा।''

कबीर साहब ने बादशाह को अपने पास रख लिया। कबीर साहब ने सोचा अगर इसके अंदर नाम रखना है तो कहीं बर्तन में मैल न रह जाए। इसी तरह छह साल बीत गए। माता लोई ने कबीर

साहब से सिफारिश की, ''यह एक बादशाह होते हुए भी हमारे दरवाजे पर बैठा है आप इसे कुछ दें।'' कबीर साहब अंदरूनी राज़ के वाकिफ़ थे। कबीर साहब ने कहा, ''अभी बर्तन तैयार नहीं।'' लोई ने कहा, ''मैं इसे जो कहती हूँ यह सारी बातें मान लेता है।''

कबीर साहब ने लोई से कहा, ''ठीक है। अब तू ऐसा कर कि छिलके वगैरहा लेकर छत पर चढ़ जा। मैं बादशाह को आवाज़ दूँगा। जब वह आएगा तो तू उसके सिर पर छिलके गिरा देना।'' कबीर साहब ने बादशाह को अंदर से कोई कपड़ा लाने के लिए भेजा। तब लोई ने उसके ऊपर छिलके गिरा दिए। बादशाह ने ऊपर देखा और गुस्से से बोला,''अगर मैं बल्ख बुखारा में होता तो तुझे देख लेता।'' वह और भी बहुत कुछ बोला। लोई ने कबीर साहब के पास आकर कहा, ''मैं तो समझती थी कि यह बहुत शरीफ़ आदमी है कुछ नहीं बोलता।'' तब कबीर साहब बोले, ''मैंने तुझसे कहा था कि अभी इसमें बल्ख बुखारे की बू है।''

इसी तरह छह साल और बीत गए। लोई में बादशाह को परखने जितनी चढ़ाई नहीं थी तो वह कैसे सिफ़ारिश करती? छह साल बाद कबीर साहब ने कहा,''अब बर्तन तैयार है।'' लोई ने कहा,''मैं कैसे समझूं? मुझे तो यह पहले जैसा ही दिखता है।'' कबीर साहब ने कहा,''इस बार तू कूड़ा-गंदगी वगैरहा लेकर ऊपर छत पर चढ़ जा। जब बादशाह आए तो उसके सिर पर गिरा देना।'' उसी तरह जब लोई ने बादशाह पर गंद डाला तो वह कहने लगा, ''मेरे ऊपर गंद डालने वाले तेरा भला हो मैं तो इससे भी गंदा हूँ।'' बिगड़े मन का यही इलाज़ है। बादशाह ने बादशाही को ठोकर मारकर बारह साल सेवा की और नाम लिया। जैसे ही कबीर साहब बादशाह को थ्योरी समझाने लगे बस! समझाने की देर थी तवज़्ज़ो देते ही बल्ख बुखारे की सुरत ऊपर चली गई; क्योंकि यह तड़प का ही काम है।

परमपिता कृपाल कहा करते थे,''प्रेमी आत्मा का गुरु के पास आना इस तरह है जैसे खुष्क बारूद को आग के पास कर दें।'' लेकिन हम गीले बारूद हैं। हमें जैसे-जैसे सतसंग की और थोड़ी बहुत भजन-अभ्यास की तपिश मिलती है वैसे-वैसे हमारे अंदर जो पापों की नमी है वह खत्म होना शुरू हो जाती है। एक दिन इसमें भी आग लग जाती है, पापों के ढ़ेर सड़ जाते हैं और हमारी आत्मा अपने देश पहुँच जाती है। हमें अपने मन को लानत देनी चाहिए कि तू भजन नहीं करता आलस करता है। किसके लिए ऐसा करता है, दुनिया के लिए, क्या दुनिया किसी के साथ गई है? गुरु के साथ धोखेबाज़ी-बेईमानी करना अच्छा नहीं होता।

आप जरा सोचकर देखें! जब हम भजन-अभ्यास में बैठते हैं तो दुनिया को सोचते हैं तब हम गुरु के साथ धोखेबाज़ी-बेईमानी कर रहे होते हैं। उस समय हम किसका काम कर रहे होते हैं? हम कहते हैं कि हम गुरु का काम कर रहे हैं लेकिन जब दुनिया को सोचते हैं तो वह गुरु का काम किस तरह हुआ? यह तो इस तरह है जैसे हम किसी स्याने आदमी के सामने गुनाह कर रहे होते हैं लेकिन हम स्याने बड़े आदमी की शर्म नहीं करते।

हमारे सतगुरु हमारे बड़े आदमी हैं स्याने हैं। जब आप नाम जपते हैं तब वे ज़रूर हमारे ऊपर तवज़्ज़ो देकर बैठे होते हैं और हम दुनिया के कारोबार में घूम रहे होते हैं। हमारे अंदर एक ख्याल आता है चला जाता है फिर एक ख्याल आता है और चला जाता है। हम कहते हैं कि हमें प्रकाश तो अच्छा नज़र आया लेकिन बड़ी जल्दी चला गया। जब गुरु ने आपके अंदर नाम का दीपक जला दिया तो फिर प्रकाश कहाँ गया? प्रकाश कहीं नहीं गया वह आपके अंदर ही है। आपका मन आता है चला जाता है फिर आता है और

चला जाता है। हम भजन–अभ्यास से उठकर घड़ी देख लेते हैं कि एक घंटा हो गया। अपने आत्मनिरिक्षण के लिए डायरी में लिख देते हैं कि एक घंटा भजन–अभ्यास किया। कभी यह भी लेखा–जोखा किया कि उस एक घंटे के अंदर मेरा ख्याल कितनी दफा बाहर गया और कितनी दफा अंदर आया। कितनी दफा मैं गुरु के सम्पर्क में रहा और कितनी दफा मैंने बैठे–बैठे दुनिया का कारोबार किया।

आपने जब भी भजन–अभ्यास में बैठना है तो सबसे पहले मन को जवाब दें कि यह मेरा कीमती समय है कीमती घंटा है। इस दौरान तू मेरे काम में दखल न दे। मैं भी तेरे काम में दखल नहीं देता। जब हमारा मन ईमानदारी से अपने मालिक का काम करता है तो हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम अपने परमपिता परमात्मा सतगुरु का काम दिल लगाकर करें। क्या गुरु का काम करना शिष्य का धर्म नहीं बनता? अभ्यास किसके लिए करना है? अपने लिए करना है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

काल बड़ा ज़बरदस्त है, जालिम है यह किसी का लिहाज़ नहीं करता। उस ज़ालिम काल के पंजे से छुड़ाने वाले सतगुरु हैं तो क्यों न ऐसे गुरु–दाते का हुक्म मान लिया जाए क्यों न उनके साथ प्यार किया जाए; क्यों न उनका दिया भजन–अभ्यास किया जाए? सतगुरु ने हमारी सारी आफ़तें अपने सिर पर ली हैं। वे हमें छुड़वाने के लिए ही संसार मंडल पर आते हैं।

हमें प्रेम–प्यार से भजन–अभ्यास करना है। भजन–अभ्यास को बोझ नहीं समझना अगर हम बोझ समझेंगे तो कामयाब नहीं होंगे। हाँ भई! सारे प्रेम–प्यार से भजन–अभ्यास में बैठें।

***

भाग – चार

भजन–अभ्यास

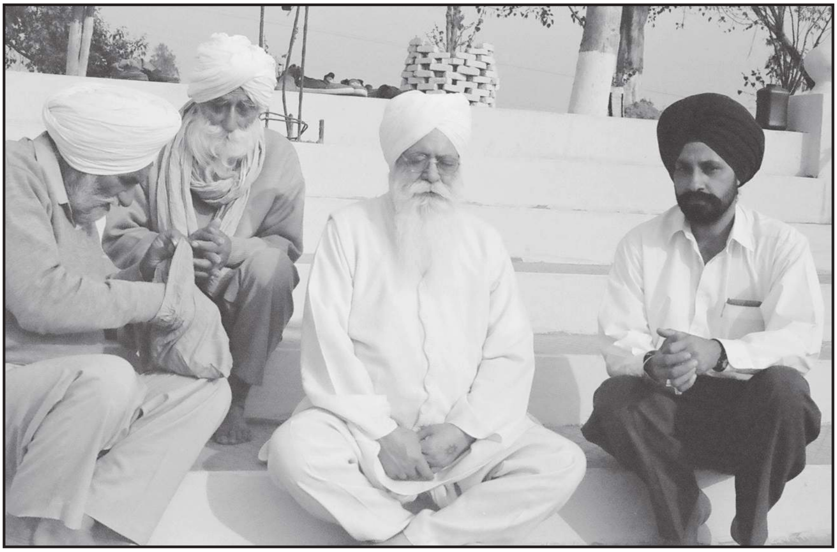

हमारे महान सतगुरुओं ने हमें बहुत प्यार से नाम की महानता के बारे में बताया है। आप कहते हैं कि हमें पूरे गुरु के बिना नाम नहीं मिल सकता और सतसंग के बिना हमें अपनी गलतियों का पता नहीं चल सकता। जब भी कोई आत्मा शब्द–नाम की कमाई के लिए भजन–अभ्यास में बैठती है या थोड़ा बहुत भी सिमरन करती है तो उसकी हाज़री परमात्मा के दरबार में ज़रूर दर्ज़ होती है।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

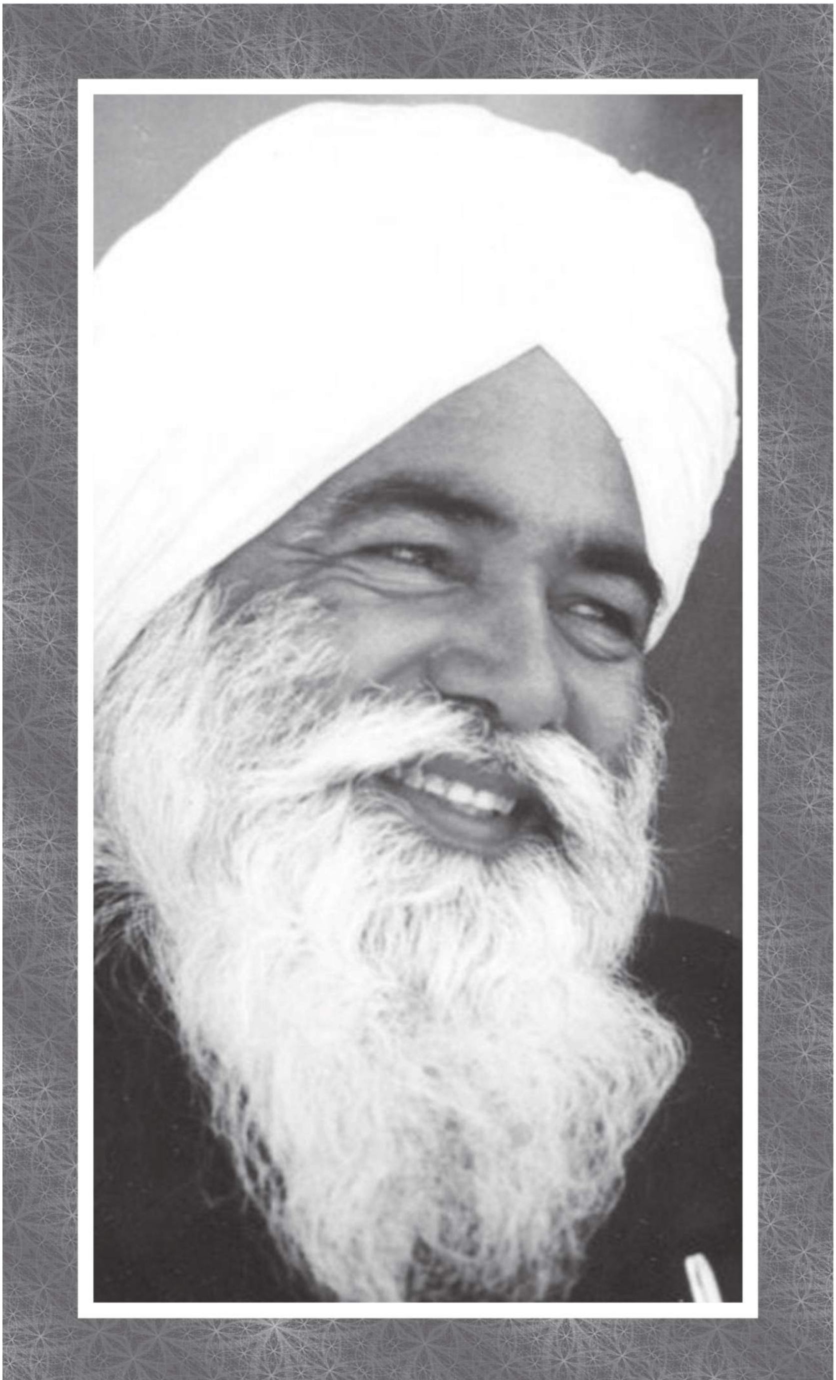

35

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की एक सेवक के साथ खास मुलाकात

सतगुरु के साथ मुलाकात

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के साथ एक सेवक का रुहानियत के मार्ग पर अंदरूनी तरक्की करने के लिए महत्वपूर्ण तत्त्वों के विषय पर सवाल–जवाब हुआ था। यह हर सतसंगी के लिए बहुत फायदेमंद है।

सेवक:–*रुहानियत में तरक्की करने के लिए कौन–कौन सी बातें मदद करती हैं?*

बाबा जी:–सतसंग, गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और प्यार।

सेवक:–*हम किस तरह गुरु के प्रति प्यार पैदा करके उस प्यार को बढ़ा सकते है?*

बाबा जी:–गुरु की निरंतर और अविरल याद मनाने से।

सेवक:–*रुहानियत के मार्ग पर सफलता के लिए कौन–कौन से घटक ज़रूरी है?*

बाबा जी:–काम–वासना से परहेज रखना। अंदरूनी पवित्रता। दूसरों के लिए सहानुभूति। आध्यात्मिक अनुशासन, नियमित भजन–अभ्यास। त्याग। गुरु के प्रति समर्पण और भक्ति।

सेवक:–*सिमरन की क्या भूमिका है?*

बाबा जी:–सिमरन दुनिया में फैले हुए ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र होने में मदद करता है और आत्मा की सफ़ाई करता

है। जब तक आत्मा का शीशा मैला है, तब तक गुरु हमें अंदर की तरक्की नहीं बख्शता।

सेवकः–*गुरु की दया कहाँ मिलती है?*

बाबा जी:–जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं, वहाँ गुरु अपने गुरुओं की दी हुई दया की टोकरी में से दया बाँटते हैं।

सेवकः–*हम अंदरूनी तरक्की जल्दी कैसे प्राप्त कर सकते हैं?*

बाबा जी:–भजन–अभ्यास के लिए ज़्यादा समय देकर।

सेवकः–*कौन सी चीजें रूहानियत में तरक्की को धीमा करती हैं?*

बाबा जी:–दूसरों की निन्दा। शिष्य में अगर यह अवगुण कणमात्र भी है तो अंदरूनी मार्ग नहीं खुलता।

सेवकः–*गुरु की सर्वश्रेष्ठता क्या है?*

बाबा जी:–गुरु शिष्य के शुभचिंतक, सच्चे और मददगार साथी होते हैं। शब्द रूप गुरु अपने शिष्य के साथ साए की तरह रहते हैं और उसकी हर कदम पर रक्षा करते हैं। जब गुरु को उनके शिष्य सुख–शान्ति से बैठे मिलते हैं तो गुरु को बहुत आनन्द मिलता है।

सेवकः–*गुरु की खुशी किस तरह प्राप्त की जा सकती है?*

बाबा जी:– गुरु की आज्ञा का पालन करके।

सेवकः–*गुरु को अपने शिष्यों से क्या उम्मीद होती है?*

बाबा जी:–गुरु चाहते हैं कि शिष्य मैल, गंदगी, काम–वासना और अपवित्रता से अपनी सफाई करके उनके पास आएं।

सेवकः–*हम गुरु की याद को किस तरह बढ़ा सकते हैं?*

बाबा जी:–हम अपने और गुरु के बीच किसी को न आने दें। सारे दुनियावी विचारों को दूर हटाकर हम गुरु की याद बढ़ा सकते हैं।

सेवक:–*जब हमारा मन दुनियावी ख्यालों के तूफान में घिरा हो तब हम भजन–सिमरन के लिए ज़्यादा समय कैसे दे सकते हैं?*

बाबा जी:–मन ही हमारा शत्रु है। हमें हमेशा मन के साथ संघर्ष करना पड़ता है, मुकाबला करना पड़ता है ताकि हम इसके पंजे से आज़ाद हो सकें। हमें बार–बार दुनिया में ख्यालों के पीछे भागते हुए मन को वापिस लाना पड़ता है ताकि यह भागना बंद करके स्थिर हो जाए। इसी को भजन–अभ्यास कहते हैं।

सेवक:–*रुहानियत के मार्ग पर शिष्य को क्या नहीं करना चाहिए?*

बाबा जी:–दूसरों के गुण–दोष विवेचन करने की बजाय शिष्य को खुद अपनी परख करनी चाहिए। दूसरों के साथ वैर भाव या बुरी भावना नहीं रखनी चाहिए। दुश्मनों के प्रति भी बुरी भावना नहीं होनी चाहिए। किसी को भावनाओं से विचारों से या शब्दों से चोट नहीं पहुँचानी चाहिए।

सेवक:–*हम गुरु के आज्ञाकारी शिष्य कैसे बन सकते हैं?*

बाबा जी:–शिष्य अपने गुरु को सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान परमात्मा रूप समझकर खुद को नकारा समझें। शिष्य समझें कि गुरु जो कहते हैं वह सही है हमारे फ़ायदे के लिए ही है। ऐसा करने से शिष्य को अपनी हर कुर्बानी छोटी लगेगी। शिष्य अपने आपको गुरु के आगे समर्पित करेगा और गुरु की आज्ञा का पालन ज़्यादा से ज़्यादा करेगा।

सेवक:–*मुझ जैसे निकम्मे और नकारा शिष्य जो दस–पंद्रह मिनट से ज़्यादा भजन–अभ्यास नहीं करते उनका क्या होगा? क्या ऐसे इन्सानों को भी उम्मीद रखनी चाहिए?*

बाबा जी:–परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''हर व्यक्ति के लिए उम्मीद है जो अपने आपको सुधारना चाहता है।'' दुनियावी

तौर पर भी जो बच्चा अपने पिता का आज्ञाकारी होता है वह पिता का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित करता है। रुहानियत में भी यह नियम लागू होता है अगर हम दिमागी कुश्ती जारी रखें तो हमारा मन हमें धोखा देगा। हमें अपने गुरु के कहे अनुसार चलना चाहिए। फिर देखें! गुरु किस तरह हमारी मदद करते हैं।

सेवक*:–*किस तरह गुरु नामदान के समय हर शिष्य के अंदर बैठ जाते हैं? किस तरह वे उसकी हर समय मदद और रक्षा करते हैं?

बाबा जी:–नामदान के समय पूर्ण गुरु इस तरह का अरेंजमेन्ट करते हैं कि शब्द रूप गुरु हमेशा शिष्य के साथ रहते हैं और शिष्य गुरु की मदद से प्रगति करता रहता है। पूर्ण गुरु के दो रूप होते हैं; एक अंदरूनी शब्द रूप और दूसरा बाहरी देह रूप।

शिष्य को नामदान देकर नाम के मार्ग पर लाने के लिए देह रूप गुरु का होना ज़रूरी है। शब्द रूप गुरु शिष्य का अंदर मार्गदर्शन करते हैं। देह रूपी गुरु शरीर धारण करने की वजह से सिर्फ इस संसार में ही सीमित रहते हैं लेकिन शब्द रूप गुरु सर्वव्यापी हैं, हर जगह मौजूद हैं। वे शिष्यों की और बाकी जीव जो उनसे प्यार करते हैं सबकी रक्षा करते हैं।

सेवक*:–*गुरु नामदान के समय शिष्य को अंदरूनी प्रकाश और आवाज़ के साथ कैसे जोड़ते हैं?

बाबा जी:–पूर्ण गुरु के अंदर नाम और शब्द प्रकट होता है। गुरु अंदरूनी प्रकाश और आवाज़ से पूरी तरह वाकिफ होते हैं। वे अपनी योग्यता और काबलियत से शिष्य को प्रकाश और आवाज़ के साथ जोड़ देते हैं। सिर्फ प्रकाश देखना और आवाज़ सुनना ही काफी नहीं होता। काल ने भी अंदर अपना पूरा अरेंजमेन्ट किया हुआ है। काल ने अपनी अलग उच्चतम आवाज़ बनाई हुई है और

जीवों की डोरियाँ ब्रह्म में छिपाकर रखी हैं। पूर्ण और सर्वसम्पन्न गुरु शब्द को अंदर प्रकट करके शब्द रूप हो चुके हैं वे अपनी ताकत के बल से शिष्यों की डोर काल से छुड़वाकर सतलोक में जोड़ देते हैं।

सेवक*:–*पूर्ण गुरु के पास इतनी दीनता और नम्रता कैसे होती है?

बाबा जी:–पूर्ण गुरुओं ने आजीवन भजन–अभ्यास करके सर्वशक्तिमान परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया होता है। वे परमात्मा से रूबरू हो चुके होते है। उन्हें पता होता है कि परमात्मा ऊँचा और महान है। इन्सान परमात्मा के आगे छोटा है।

जैसे समुंद्र बहुत विशाल होता है उसमें से नदियाँ और नाले निकलते है उसी तरह गुरु नम्रता और दीनता के समुद्र की तरह होते हैं। दीनता उनका गहना होता है। सन्तों की नम्रता सच्ची–सुच्ची होती है, किसी चीते या तेंदुए जैसी नहीं होती जो अपना शरीर झुकाकर शिकार को पकड़ते हैं और न ही धनुष जैसी होती है जो झुककर किसी की जान लेता है। उसमें कपट नहीं होता।

सेवक*:–*बाबा सावन सिंह जी और सन्त कृपाल सिंह जी के समय यह देखा गया है कि कुछ लोग जो शुरू–शुरू में उनसे बहुत प्रभावित थे और उनके चाहने वाले थे, बाद में वे उनसे दूर चले गए और उनकी उपेक्षा करने लगे। ऐसा क्यों होता है?

बाबा जी:–सच्चाई का मार्ग बहुत सरल और सीधा होता है। इसमें खुद की प्रशंसा करने की इजाज़त नहीं होती। मन बहुत कपटी और धोखेबाज़ है यह समाज के अत्यंत मान्यवर और प्रतिष्ठित लोगों पर सतर्कता से नज़र जमाए बैठा है। मन किसी न किसी तरह से छल–कपट करके इन्हें अपना शिकार बना लेता है जिसकी वजह से सेवक की अंदरूनी तरक्की नहीं होती। मन का ज़ोर और दुनिया के पदार्थों का लालच जीवों को बर्बाद कर देता है

जिसका नतीजा यह होता है कि सबसे पहले सेवक का अपने गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास खत्म हो जाता है। सेवक अपने गुरु के शब्दों या तरीकों पर सवाल उठाना शुरू कर देता है।

सन्त अपनी मर्ज़ी के मालिक होते हैं और अपनी अंदरूनी ताकत के कहे मुताबिक ही चलते हैं। वे हमेशा अपने इर्द-गिर्द के सम्मानित लोगों की बात सुनते हैं और उस हर व्यक्ति को दिलासा देने में और उन्हें निश्चिंत करने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते। फिर भी जीव अपने कर्मों और बदनसीबी की वजह से अपने पूर्ण गुरु से दूर चले जाते हैं और बहुत नुकसान उठाते हैं। सन्त ऐसी स्थिति की वजह से अपने उन प्रेमियों के प्रति प्यार में बाधा नहीं आने देते और सिर्फ उनके शुभचिंतक ही नहीं बने रहते बल्कि ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद और रक्षा भी करते हैं।

पुराने वाक्या दर्शाते हैं कि हुज़ूर महाराज कृपाल सिंह जी कई बार बीमार शिष्यों को देखने के लिए अस्पताल में जाया करते थे। आप तवज़्जो देकर उनकी आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींचते थे ताकि वे कबूल करें कि जो अंदरूनी आवाज़ और प्रकाश काफी समय से बंद था वह खुल गया है। जीव भले ही अपने गुरु को छोड़ जाए लेकिन गुरु कभी भी अपने शिष्य को नहीं छोड़ते।

***सेवक:**–कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि जिसे रुहानियत का काम सौंपा जाता है उसे बहुत ज़्यादा भजन–अभ्यास करना पड़ता है ताकि वह जिन सेवकों को नामदान देता है उनके कर्मों का भार अपने सिर ले सके और उन्हें मुक्ति दिला सके क्या यह सच है?*

बाबा जी:–सन्त सारी ज़िंदगी भजन–अभ्यास करते हैं। पहले सन्त सच को अंदर प्रकट करने के लिए भजन–अभ्यास करते हैं। बाद में वे अंदर का रस प्राप्त करने के लिए भजन–अभ्यास

करते हैं। यह दुनिया दुखों और मुसीबतों के सिवाय कुछ नहीं। जब तक सन्त का शरीर चिता पर न चढ़ाया जाए तब तक वे भजन-अभ्यास करते रहते हैं।

***सेवक*:-*यह देखा गया है और तज़ुर्बा दर्शाता है कि हुज़ूर महाराज जी के जाने के बाद कई प्रेमियों ने सतसंग सुनना छोड़ दिया। कई प्रेमियों का इस मार्ग से भरोसा उठ गया और कई प्रेमियों ने अपना मार्ग बदलकर दूसरे मार्ग अपनाए। ऐसा क्यों हुआ?*

बाबा जी:-पूर्ण गुरु का इस संसार से चले जाना उनके शिष्यों और भक्तों पर कहर टूटने जैसा है, जिसका उन्हें बहुत गहरा सदमा पहुँचता है। जब आंधी और तूफ़ान चलते हैं तब बड़े-बड़े वृक्ष भी उखड़ जाते हैं। ऐसी घटना बहुत असाधारण होती है। जब प्रेमियों को ऐसी मुश्किल और इम्तिहान की घड़ी का सामना करना पड़ता है तो वे मन के बहकावे में आ जाते हैं।

उस समय बहुत दबाव और परेशानी होती है। भजन-अभ्यास की कमी और इस मार्ग पर कम जुड़े रहने की वजह से हमारी इस मार्ग के प्रति रुचि और दृढ़ता कम हो जाती है, हम मार्ग से दूर चले जाते हैं। गुरु की भक्ति और साँस-साँस के साथ गुरु को याद करना ही इसका ईलाज है।

***सेवक*:-*हम अपने गुरु की दया कैसे प्राप्त कर सकते है?*

बाबा जी:-अपने गुरु में पूर्ण रूप से विश्वास रखकर बाकी सारे सहारे छोड़कर अपने मन को गुरु के चरणों में लगाएं।

***सेवक*:-*हम गुरु की सम्पन्नता का स्वाद कब ले सकते हैं?*

बाबा जी:-जब हम गुरु की याद में डूबकर अपना सब कुछ भूल जाते हैं यहाँ तक कि अपना शरीर भी भूल जाते हैं।

***

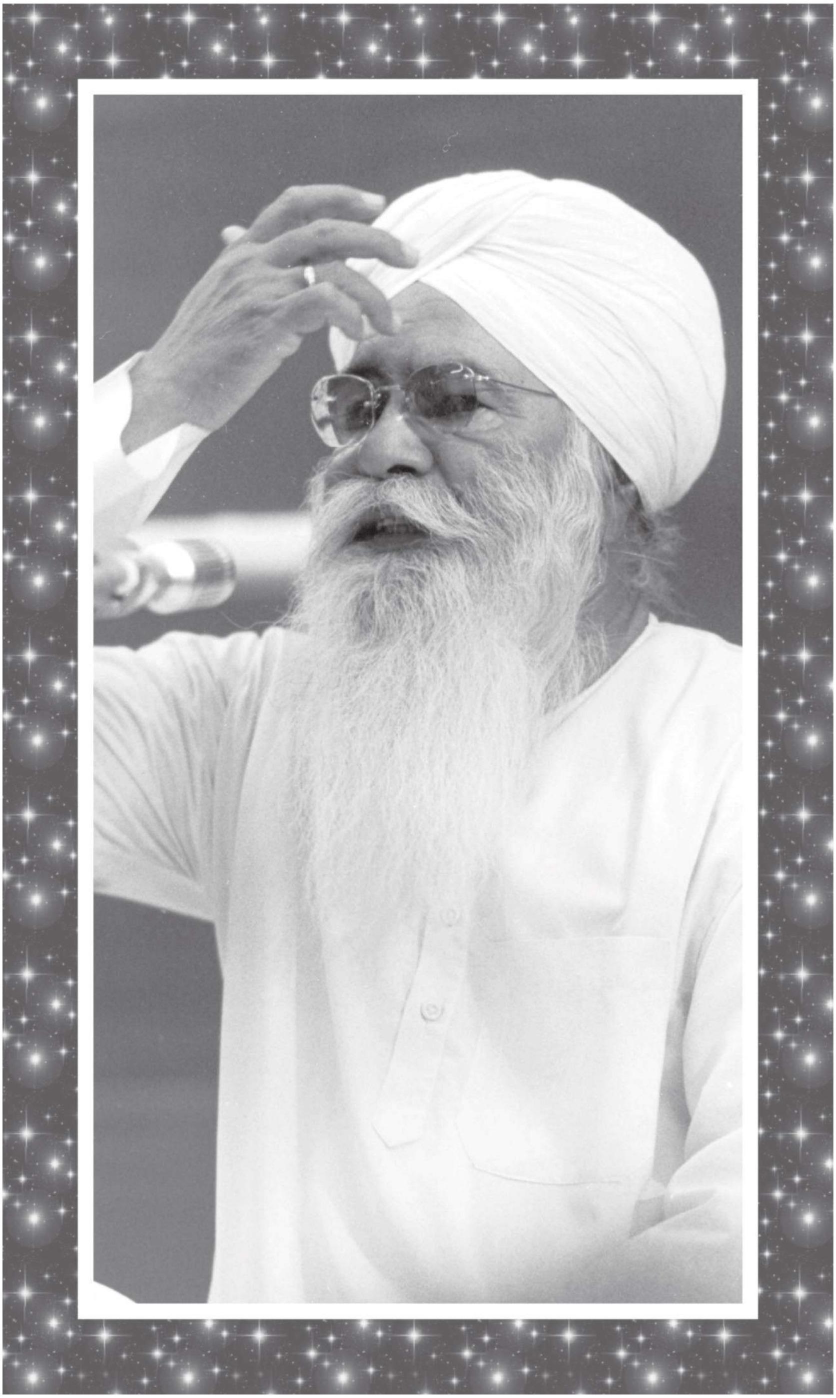

36

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सिमरन का तरीका

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 दिसम्बर 1985

***सेवक :** महाराज जी, अभ्यास करते समय हम सिमरन करने पर ज़्यादा एकाग्रता करें और महसूस करें कि हम सिमरन कर रहे हैं या ज्योत के ऊपर ज़्यादा एकाग्रता रखें और सिमरन को एक बैकग्राउंड के रूप में इस्तेमाल करें?*

बाबा जी : हाँ भई! मैं हमेशा कहा करता हूँ कि सतसंगी को सिमरन करते वक्त दुनिया के कारोबार की कोई भी कल्पना नहीं करनी चाहिए। मुक्ति के तीन साधन हैं– सिमरन, भजन और ध्यान। ये तीनों ही साधन शरीर के अंदर अपना–अपना काम करते हैं। सिमरन के द्वारा हमनें नौ द्वारे खाली करने हैं और दसवां द्वार खोलना है। अंदर सूरज, चंद्रमा, सितारे और आगे गुरु स्वरूप आता है; यहाँ तक हमें सिमरन ही लेकर जाता है।

जब हम गुरु स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं वह बिल्कुल साफ दिखाई देता है। जिस तरह हम अभी साफ बात कर रहे हैं वह ऐसे ही बात करते हैं जो सवाल करें वह उसका जवाब देते हैं। उस वक्त सतसंगी को ध्यान की बहुत ज़रूरत होती है।

कई बार ऐसा होता है कि जब गुरु स्वरूप प्रकट हो जाए तब ऐसा महसूस होता है कि स्वरूप बार–बार आता है और चला जाता है। गुरु स्वरूप उसी जगह मौजूद है लेकिन अभ्यासी का ध्यान

कभी आता है, कभी जाता है। उस वक्त अभ्यासी इतना ध्यान करे कि वह अपने आपको भूल जाए और उसे गुरु ही गुरु नज़र आए। जब ऐसा होता है अभ्यासी को बेहद खुशी होती है क्योंकि यह बात ही खुशी की है।

कई बार ऐसा होता है कि हम दुनिया की कोई न कोई कल्पना लेकर बैठ जाते हैं अगर सिमरन में थोड़ी बहुत एकाग्रता होती है तो ज़बरदस्त प्रकाश आता है, उस वक्त हम डर जाते हैं। कई प्रेमी अभ्यास ही छोड़ देते हैं कि कहीं फिर ऐसा न हो जाए!

कई बार मन की कल्पना में आकर हम थोड़ी बहुत एकाग्रता प्राप्त करते हैं लेकिन हमारे मन की कल्पना का एक हिस्सा हमें नीचे खींचता है। जब गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है उसको सही न देख पाने के कारण हम सोचते हैं कि पता नहीं किसकी शक्ल आ गई है! ये कैसी शक्ल है! और हम डरकर अभ्यास ही छोड़ जाते हैं।

मैं आपको दो-तीन बातें रोज़ ही बताता हूँ। मेरा यह बोलने का मकसद यही होता है कि आप घर पर अभ्यास में बैठें किसी वक्त भी अभ्यास में बैठें आपको ये तीन चीज़ें याद रखनी हैं। मन को शान्त करना, अभ्यास को बोझ न समझना, अभ्यास के वक्त मन को बाहर न भटकने देना और किसी बाहरी आवाज़ की तरफ़ ध्यान न देना। सच्चाई यह है कि जब हम गुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं तो गुरु परछाई की तरह हर जगह हमारे साथ होते हैं।

आपको पता है कि मैंने अपनी ज़िंदगी में काफी तप-अभ्यास किया है। बाद में बाबा बिशनदास जी की शिक्षा पर अमल किया। मेरा अपना जातिय तज़ुर्बा है कि मैं एक बार पंजाब में रोपड़वाली नहर के पास टपाली गाँव गया। वहाँ एक साधु धूनियाँ तपा रहा था। वहाँ गाँव के काफी लोग बैठे थे और बातें कर रहे थे। मेरे दिल में

ख्याल आया कि चलो बाबा के दर्शन कर आएं इस बेचारे ने भी मेरी तरह शरीर जलाया है।

जब मैं वहाँ गया तो वह बाबा मुझे देखकर रह नहीं सका। बहुत ज़ोर देकर कहने लगा,''मुझे तेरे पीछे सफ़ेद कपड़ों वाला कोई आदमी दिखाई दे रहा है।'' वह बाबा चारपाई पर बैठा था। उसने मुझे बड़े आदर से बैठने के लिए ऊँची जगह दी। मैंने उससे कहा,''मैं आपका दास हूँ। आपके दर्शनों के लिए आया हूँ। मैं ऊँची जगह बैठने के काबिल नहीं।'' उसने फिर कहा,''ऐसा नहीं हो सकता। मुझे आपके पीछे सफ़ेद कपड़ों में बड़ी शख्सियत दिख रही है।''

खैर! मैं उस स्थान पर तो नहीं बैठा लेकिन उसके मजबूर करने पर बोरी के ऊपर बैठ गया। बाबा दो बातें किसी के साथ करता और बाद में फिर कह देता कि मुझे तेरे पीछे कोई व्यक्ति खड़ा दिख रहा है। मैं जानता था कि कौन खड़ा है। परमात्मा कृपाल ही हर जगह नज़र आते थे।

ऐसे और भी कई वाक़्यात हुए जब कई लोगों ने यह बात कही। सतसंग के अंदर भी बहुत लोगों ने अगुआई दी। पत्रों द्वारा भी कई प्रेमी कहते हैं कि परमात्मा कृपाल आपके सिर पर खड़े रहते हैं।

वैनकुवर कनाडा में तो एक प्रेमी ने यहाँ तक बताया कि उसे बाबा सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी और बाबा बिशनदास जी के दर्शन हुए। मेरा कहने का भाव इतना ही है कि जब अभ्यासी को यह ऊँची अवस्था प्राप्त हो जाती है गुरु प्रकट हो जाते हैं तब गुरु सेवक के साथ-साथ घूमते हैं लेकिन यह बात छिपा लेनी चाहिए लोगों को बतानी नहीं चाहिए।

जिस तरह औरत अपने बदन को छिपाकर रखती है उसी तरह अभ्यासी को भी यह छिपा लेना चाहिए। अपने गुरु के अलावा

किसी से इसका ज़िक्र नहीं करना चाहिए अगर ज़िक्र करेंगे तो वह आदमी हमसे जलेगा और हमारी तरक्की रुक जाएगी। वह कहेगा, ''देखो! इसको भी वही नाम मिला है इस पर गुरु की कितनी दया है।'' इसलिए यह चीज़ छिपाने वाली है।

सेवक : *मेरा सिमरन के बारे में एक और सवाल है। अक्सर मेरा सिमरन गले में चलता है। जब मेरा सिमरन गले में चल रहा होता है तब मैं आँखों के पीछे ज़्यादा बेहतर ढंग से एकाग्रता क़र पाती हूँ। कई बार ऐसा होता है कि मेरा सिमरन मन में चलता है उस समय उतनी एकाग्रता नहीं बन पाती। मैं यह जानना चाहती हूँ क्या वक्त पाकर जो सिमरन गले के अंदर चलता है वह अपने आप ऊपर चला जाएगा या इसमें प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है?*

बाबा जी : भाईयो और बहनो! मैं हमेशा कहता रहता हूँ कि हम जो काम रोज़ करते हैं, हमें उसमें महारत पैदा हो जाती है। अगर आप यह सिमरन जारी रखेंगी तो सिमरन ज़रूर गले से उठकर मन की ज़ुबान से भी होने लग जाएगा।

हमारे अंदर चौबिस घंटे दुनियावी ख्याल उठ रहे हैं। क्या आपने इसकी प्रैक्टिस की है? नहीं। हमारी आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है चाहे हम पशु, पक्षी या और किसी भी जामें में हैं हमारे अंदर हमेशा दुनिया के पदार्थों की, दुनिया के सामान की कल्पना उठती रहती है। जन्म-जन्मांतर से हमारे ख्याल उस तरफ़ पक गए हैं। अब हमें इस कल्पना की प्रैक्टिस करने की ज़रूरत नहीं। अपने आप ही दुनिया के ख्याल हमारे अंदर उठ रहे हैं। सन्तों को इस चीज़ का ज्ञान होता है कि यह जीव किस तरह संसार में फँसता है।

दुनिया में ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके सारे काम पूरे हो गए हों। जब मौत आती है तब किसी के दस काम पूरे हुए होते हैं और

बीस काम अधूरे रह जाते हैं। जो कारोबार अधूरे रह जाते हैं उनके बारे में अंदर कल्पना उठनी शुरू हो जाती है कि मेरा यह काम रह गया, वह काम रह गया। यह संकल्प–विकल्प उठते हैं और इनका असर हमारी बुद्धि पर पड़ता है।

आगे जाकर जहाँ भी जन्म होता है पिछले जन्म के संकल्पों का हमारे ऊपर बहुत असर होता है। दिमाग में जिन ख्यालों को रखकर हमने देह छोड़ी होती है, उन ख्यालों के मुताबिक ही अगले जन्म में हमारे ख्याल होते हैं।

मैंने कोलंबिया में तुलसी साहब के रतन सागर की बानी पर सतसंग किए थे। तब मैंने महाराज सावन सिंह जी की एक कहानी सुनाई थी कि एक कुम्हार किसी बादशाह के महल के अंदर रेत डालने के लिए अपनी गधियों पर रेत लादकर ले जा रहा था। वह उन गधियों को हाँकते हुए कह रहा था, ''चल बीबी! चल बहन! चल माता!'' किसी आदमी ने उससे पूछा, ''यह तो गधियाँ है तू इनको माता, बहन क्यों कह रहा है?''

कुम्हार ने कहा, ''देख भई! मैं यह रेत लेकर बादशाह के महल में जा रहा हूँ । हम आज़ाद ख्यालों के मुँह–फट लोग होते हैं, जो मुँह में आया बोल देते हैं। मैं प्रैक्टिस कर रहा हूँ कि महल में मेरे मुँह से अच्छे लफ्ज़ निकलें कहीं गलत बात निकल गई तो बादशाह मुझे फांसी चढ़ा देगा।''

सन्त हमें सिमरन की प्रैक्टिस इसलिए करवाते हैं कि अन्त समय हमारे मुँह में गुरु का दिया हुआ सिमरन हो और आँखों के सामने गुरु की सूरत हो। सन्तों को हमारे मन की कमज़ोरी का पता होता है कि दुनिया का सिमरन करके हम बार–बार इस संसार में जन्म लेते हैं, मर जाते हैं। सन्तों को पता होता है कि पानी की

कमी की वजह से सूखी हुई खेती पानी से ही हरी–भरी होती है। वे हमें अपना कमाया हुआ नाम का सिमरन देते हैं। उस सिमरन के पीछे उनका तप–त्याग, अभ्यास और चार्जिंग काम करती है।

सन्त हमें दुनिया का सिमरन भुलाने के लिए नाम का सिमरन देते हैं। सिमरन को सिमरन ही काटता है। हम जिस चीज़ का बार–बार सिमरन करते हैं बेशक हम उसका ध्यान करें या न करें, अपने आप ही उसकी सूरत आँखों के आगे आ जाती है।

महाराज सावन सिंह जी अपना जातिय तज़ुर्बा सतसंग में बताया करते थे। आप एक जज का उदहरण देते थे कि जब उसका अन्त समय आया शरीर छूटने लगा तो उसने कहा, ''डिग्री ख़ारिज।'' क्योंकि उसने सारी ज़िंदगी लोगों के मसलों का फैसला सुनाने का ही कार्य किया था।

इसी तरह मैं अपना तज़ुर्बा बताता हूँ कि पदमपुर में एक महाजन रहता था। वह सारी ज़िंदगी शादी के लिए तड़पता रहा उसकी शादी नहीं हुई। अन्त समय में उसे शरीर की कोई सुध नहीं थी। मैं उस समय वैद्यक का काम करता था। कुछ लोग मुझे उसके पास लेकर गए। वह बिल्कुल बेहोश था। मैंने उसकी नब्ज़ देखी तो उसने मुझसे कहा, ''क्या मोली बाँध रहे हो।'' उसने सारी ज़िंदगी शादी का सिमरन किया था वही उसके दिमाग में था।

हिन्दुस्तान में आज से तीस–पैंतीस साल पहले आमतौर पर शादी करवाते समय हाथ में मोली–धागा बांध देते थे। जब उसने यह कहा क्या आप मेरे हाथ में मोली बाँध रहे हो तो मेरे दिल में ख्याल आया कि अब तू इस शरीर से जाने वाला है। इस समय कौन तेरे हाथ में शादी का मोली–धागा बाँधने आया है। क्या ऐसा आदमी मुक्त हो सकता है? बिल्कुल नहीं।

भक्त त्रिलोचन की बानी गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज़ है। आप अपनी बानी में लिखते हैं कि जो आदमी अन्त समय में स्त्रियों का सिमरन करता है, वह वेश्या के जामें में आता है और उसे बहुत सारे लोगों के साथ भोग करना पड़ता है; कुदरत उसे माफ़ नहीं करती। हमें जिस चीज़ की चाहत होती है कुदरत हमें उसी जगह जन्म दे देती है ताकि हम उन ख्वाहिशों को पूरा कर सकें लेकिन हम वहाँ और ख्वाहिशें पैदा कर लेते हैं और उन ख्वाहिशों को भोगने के लिए हमें फिर इस संसार में आना पड़ता है।

भक्त त्रिलोचन कहते हैं कि जो लोग अन्त समय में मकानों का सिमरन करते हैं वे प्रेत बनकर उसी जगह आ जाते हैं। जो माया का सिमरन करके मरते हैं वे साँप के जामे में आते हैं।

मेरा आम लोगों से वास्ता पड़ता है। मैंने बहुत से गृहस्थी देखे हैं जिनको बच्चा नहीं होता। वे कोई न कोई दान-पुण्य करते हैं कि किसी न किसी उपाय से बच्चा मिल जाए। कुदरत ने हमारे लिए जो बीज़ बोया है, कुदरत हमें उस फल को खाने के लिए भेज देती है। भक्त त्रिलोचन कहते हैं कि जो इस तरह बच्चे का सिमरन करते हुए देह छोड़ते हैं वे सूअर के जामें मे आते हैं। सूअर के बहुत सारे बच्चे होते हैं, सूअरी साल में दो-तीन बार बच्चे देती है।

आखिर में भक्त त्रिलोचन कहते हैं कि जो लोग परमात्मा का सिमरन करते हैं गुरु से प्यार करते हैं उनके हृदय में परमात्मा रूप गुरु प्रकट हो जाते हैं वही लोग मुक्त होते हैं।

हमें हमेशा ही लगातार नाम का सिमरन करना चाहिए। नाम का सिमरन करने से ही हम नौ द्वारे खाली करके दसवां द्वार खोलेंगे। इससे ऊपर सिमरन की ज़रूरत नहीं पड़ती आगे जो मंडल हैं हमने वे मंडल शब्द के ज़रिए ही पार करने होते हैं।

***

37

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु की मदद

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 25 फरवरी 1990

सेवक : *महाराज जी, मैंने आपका वह लेख पढ़ा है जिसमें आपने पाँच डाकुओं–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के बारे में बताया है। यह लेख पढ़कर मुझे बहुत अफसोस और दुख हुआ। मैं उसमें से कुछ बातों के बारे में समझना भी चाहता हूँ कि जब मैं यहाँ से वापिस अपने घर जाऊंगा तो काम और क्रोध मुझ पर ज़्यादा हमला करेंगे। जब ये हमला करें तब मैं आपके बारे में मधुरता से सोचकर काम और क्रोध को एक तरफ़ करने की कोशिश करूँ तो क्या यह ऐसा नहीं होगा कि मैंने अपनी रस्सी आपके गले में डाल दी? क्या यह आपके ऊपर बोझ नहीं होगा? मैं चाहता हूँ कि आप हमें इस बारे में कुछ बताएं?*

बाबा जी : मुझे खुशी है कि आपने उस लेख को अच्छी तरह विचारा है। मैं सदा ही सन्तबानी मैगज़ीन पढ़ने की सलाह दिया करता हूँ। मैगज़ीन में प्रेमियों के सवाल–जवाब होते हैं जो हर एक के फायदे के लिए होते हैं, जिन्हें पढ़ने से हमें काफी मदद मिलती है।

सबसे पहले हर सतसंगी को इन पाँच डाकुओं के बारे में अपने मन को बता देना चाहिए। काम बेइज़्ज़ती का कारण बनता है। काम इन्सान को जानवर बना देता है। कामी आदमी को अपने नज़दीक खड़ा हुआ इन्सान भी दिखाई नहीं देता कि मुझे कोई देख रहा है। काम भोग हमें नर्कों में ले जाते हैं। कामी आदमी शब्द–नाम की

कमाई नहीं कर सकता। उसे शब्द का रस ही नहीं आता बेशक वह भजन–अभ्यास में दोगुना समय लगाए। काम एक ऐसी अग्नि है इस पर जितनी लकड़ियाँ डालें यह उतनी ही ज़्यादा भड़क जाती है। हमें मन को काम के नुकसान बताते रहना चाहिए।

सबसे पहले सतसंगी को मन के साथ संघर्ष करना चाहिए। सतगुरु ने हमें शब्द धुन से लेस किया है। हमें पाँच पवित्र नाम नहीं भूलने चाहिए और साथ–साथ इनका सिमरन भी करते रहना चाहिए। सिमरन से हमें मदद मिलती है। जब मन आपके अंदर काम का ख्याल पैदा करता है तो आप उस तरफ़ तवज़्जो न दें। गुरु और उनके दिए हुए पाँच पवित्र नामों की तरफ़ तवज्जों दें तो सतसंगी को अवश्य ही मदद मिलती है।

आपको पता है कि जब सिपाही फ्रन्ट पर जाता है तब कई बार दुश्मन का ज़ोर पड़ जाता है अगर सिपाही दुश्मन के आगे हथियार फैंक दे तो क्या वह कामयाब हो जाएगा? अगर सिपाही कायर बनकर भागेगा तो क्या वह अपने मालिक के नमक का कर्ज़ अदा कर सकेगा? इसी तरह सतसंगी को भी एक सिपाही की तरह सिमरन के ज़रिए मजबूत होकर मन के आगे खड़े रहना चाहिए, हार नहीं माननी चाहिए। असल में मन के हमले से पहले ही हमें सिमरन का धावा बोल देना चाहिए।

जब काम हमारे ऊपर हमला करता है तो पहले यह हमारे ख्यालों में आता है। जब हम उन ख्यालों को अपने अंदर जगह दे देते हैं तो मन हमारे ऊपर और हमला कर देता हैं फिर हम शरीर से काम की भूख को मिटाते हैं। हम काम भोगों में फँसकर रुहानियत में दिवालिए हो जाते हैं और रुहानियत में तरक्की नहीं कर सकते। काम हमें ऐसे गहरे खड्डे में गिरा देता हैं जहाँ से हम निकल नहीं

सकते। सारी ज़िंदगी दिमाग को ऐसी बदबू चढ़ी रहती है कि दिमाग से ये ख्याल नहीं निकलते। गुरु अर्जुनदेव जी समझाते हैं:

हे कामी नरक बिसरामी बोह जूनी भरमावे।

हे काम, तू हमें ऊँची–नीची योनियों में ले जाता है और हमारे जप–तप को छीन लेता है। गुरु अर्जुनदेव जी यह भी कहते हैं:

निमख स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावे।
घड़ी मोहित रंग माणें रलिया बोहर–बोहर पछतावे।।

अगर हम मन को यह बता दें कि तुझे थोड़े से सुख–विलास के लिए करोड़ दिन कष्ट भोगने पड़ेंगे। एक करोड़ दिन के तैंतीस हज़ार साल बनते हैं, मन को यह घाटा बता दें तो मेरा ख्याल है कि मन तौबा कर देगा! इस तरफ़ नहीं जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने अपनी बाहें ऊपर करके अपने गुरु के आगे पुकार की कि मुझे बचा ले। ये दुश्मन मुझे घेरते हैं तब मुझे मेरे गुरु ने बचा लिया।'' यह एक सच्चाई है अगर हम सच्चे दिल से फरियाद करते हैं तो गुरु मदद के लिए ज़रूर पहुँचते हैं चाहे वह कितनी भी कठिन जगह क्यों न हो। असल में हमने अपने अंदर ख्यालों को जगह दी होती है ऊपर से सिमरन का ढ़ोंग रचाकर बैठे होते हैं। आप सोचकर देखें! अगर हम अंदर और बाहर से सच्चे बन जाएं तो हमारी पुकार ज़रूर सुनी जाती है।

हम गुरु को दुनियावी झगड़ो के पत्र लिखते हैं या इंटरव्यू में भी दुनियावी बातें करते हैं जिसका गुरु के ऊपर बोझ पड़ता है। सन्तों का हमारी दुनियावी ज़िंदगी से कोई लेखा–जोखा नहीं होता। सन्त हमें सतसंग में भी समझाते हैं कि हम ज़िंदगी में जितने भी काम शान्त मन और विवेक बुद्धि से करेंगे उतनी ही हम शान्त ज़िंदगी बिता सकेंगे और ज़्यादा से ज़्यादा भजन–सिमरन कर सकेंगे।

अगर आप इन पाँच डाकुओं से बचने के लिए फरियाद करते हैं तो समझ लें कि आप ऊँचे भाग्यवाले हैं। सन्त चाहते हैं कि हमारे बच्चे इनसे बचें। सन्त एक धोबी की तरह होते हैं वे मैले से मैले जीव की भी मदद करने के लिए बिना आलस किए तैयार रहते हैं।

पति-पत्नी के लिए प्यार से ज़िंदगी बितानी उनकी खुद की ड्यूटी है। पत्नी पत्र लिखती है तो पति में सारी कमियाँ निकालकर रख देती है अगर पति पत्र लिखता है तो वह पत्नी में सारी कमियाँ निकालकर रख देता है। सोचकर देखें! जब महात्मा इस तरह का पत्र पढ़ेगा तो उसके दिल पर क्या बीतेगी? मियाँ-बीवी को ऐसी परेशानियाँ घर में बैठकर ही सुलझा लेनी चाहिए।

सन्त किसी से यह नहीं कहते कि तुम अलग-अलग हो जाओ। वे पति-पत्नी को अलग-अलग करने के बारे में सोच भी नहीं सकते। इसके अलावा भी हम लोग सन्तों के पास जाकर कितनी फालतू बातें करते हैं जिनका रुहानियत से कोई मतलब नहीं होता अगर मैं यह सब बताने लगूं तो ग्रंथ बन सकता है। अगर कोई काम या क्रोध से बचने के लिए गुरु के आगे फरियाद करता है तो गुरु को ऐसे जीव की मदद करके खुशी होती है। गुरु तो हमें इन पाँच डाकुओं से मुकाबला करवाने के लिए ही संसार में आते हैं। जो सच्चे दिल से इनका मुकाबला करता है गुरु उनकी मदद ज़रूर करते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

सवा लाख से एक लड़ाऊँ तब ही गोविंद सिंह नाम कहाऊँ।

इन्द्रियों को रोकना कोई आसान काम नहीं होता। हमारे धर्म-ग्रन्थों में आता है कि एक-एक इन्द्री की ताकत दस हज़ार हाथी की ताकत के बराबर होती है। यानि दस इंद्रियों की ताकत एक लाख हाथी जितनी हुई और अकेले मन की ताकत पच्चीस हज़ार

हाथी की ताकत के बराबर होती है। इन सवा लाख हाथियों की बहुत ज़बरदस्त ताकत है। एक हाथी को रोकना भी इन्सान के लिए मुश्किल होता है। आत्मा का इसी ताकत के साथ मुकाबला करवाने के लिए ही गुरु संसार में आते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

चिड़ियों से मैं बाज़ लड़ाऊँ तो ही गोविंद सिंह नाम कहाऊँ।

आप कहते हैं कि हमारी आत्मा चिड़िया है और मन बाज़ है। मैं इस बाज़ को आत्मा के पैरों तले रौंद दूंगा। मन को आत्मा के वश में कर दूँगा तो ही गुरु कहलवाऊँगा।

मेरे गुरु कुलमालिक महाराज कृपाल सिंह जी जब मुझे अंदर बिठाने लगे तब आपने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''आँखे अंदर खोलनी है बाहर नहीं खोलनी।'' मैं सच कहता हूँ कि मैं एक यतीम की तरह अंदर से सच्चे दिल से रोया और बाहर से भी आँसू बहाए लेकिन बाहर के पानी से अंदर वाला पानी बहुत कीमती था। मैंने महाराज जी से कहा, ''आपने मेरी लाज रखनी है, यह काल का राज्य है। काल मेरे पीछे पड़ा हुआ है मेरी लाज आपके हाथ में है।'' यह आपकी दया थी जिसने मुझे बचाकर रखा। मुझे बचपन से ही आपकी दया मिलती रही। परमात्मा ने जिसे बचाना होता है उसके ख्यालों के अंदर पहले दिन से ही प्रभु का प्यार जाग जाता है और प्रभु उसे बुराई से बचाकर रखता है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आपने मेरी ज़िंदगी की मजबूत नींव डाली। मैं उस समय जवान अवस्था में था। आपने मुझसे कहा, ''देख बेटा, अगर तू कोई बुराई करेगा शराब पिएगा या भोगों में फँसेगा तो लोग मुझे बुरा कहेंगे कि यह उसका चेला है; यह मुझसे सहन नहीं होगा। हो सकता है कि मैं उस समय आत्मघात भी कर लूं। तू सदा याद रखना जिस तरह

सेवक की लाज गुरु के हाथ में होती है उसी तरह गुरु की लाज भी सेवक के हाथ में होती है।'' बाबा बिशनदास जी ने मेरे अलावा किसी और को 'नाम' नहीं दिया था। आप बहुत सख्त स्वभाव के महात्मा थे। मैं बहुत ऊँची-नीची जगह गया लेकिन मैंने आपके इस वचन को सदा पल्ले बाँधकर रखा।

मैं जब मालिक की खोज में घर से निकला तब मेरी माता ने कहा, ''देख बेटा, किसी का कपड़ा मत पहनना और किसी से माँगकर मत खाना इससे हमारी बेईज्जती होगी। जब तेरे पास पैसे खत्म हो जाएं तो तू घर आकर आसानी से पैसे ले जा सकता है। हम तुझे मना नहीं करेंगे, हम तेरे प्यार और लगन को समझते हैं।''

अगर आज भी कोई मुझे मजबूर करता है तो मैं उसे अपनी माता का वचन दोहराता हूँ। मेरी माता ने यह भी कहा था अगर कोई मजबूर करे तो उसे उस चीज़ के बदले में किसी भी बहाने से कोई चीज़ मुआवज़े के तौर पर दे देना उसका दिल भी नहीं तोड़ना। मैं कई जगह गया लेकिन मैंने अपनी माता के और बाबा बिशनदास जी के वचनों की हर जगह पालना की।

प्यारेयो, मैं बताया करता हूँ कि शिष्य से ही गुरु का पता चलता है। गुरु के शिष्य जितने अच्छे होंगे उतना ही गुरु का ज़्यादा मान होगा। गुरु जितने ज़्यादा शिष्यों को मालिक की दरगाह में लेकर जाएंगे वह अपने आपको उतना ही भाग्यशाली समझेंगे।

बाबा बिशनदास ने कहा था, ''सदा खेती करके अपना निर्वाह करना आलसी नहीं बनना।'' मैंने जब पंजाब छोड़ा यहाँ आकर ज़मीन खरीदी। उस समय इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ आकर मैंने अपने हाथों से किरत की और किरत करते हुए कभी भी शर्म महसूस नहीं की। मैं जब तक रहूँगा मेरी यही कोशिश रहेगी।

प्यारेयो, आप अपने मन को क्रोध के भी नुकसान बताएं कि क्रोध एक बहुत बुरी आग है। जिसके घर में क्रोध की आग लग जाती है यह आग उस घर को भस्म कर देती है। क्रोध अच्छे गुणों को राख बना देता है। लोभ इन्सान को एक माँस के लोथड़े की तरह बना देता है। लोभी का बेटे–बेटी से भी प्यार नहीं होता। लोभी अपनी तृष्णा पूरी करने में लगा रहता है। लोभी आदमी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता। मोह की भी यही हालत है। मोह हमें बार–बार इस संसार में खींचकर लाता है। मोह भी हमारा बहुत बड़ा जानी दुश्मन है।

अहंकार की भी ऐसी ही हालत है। अहंकार की उम्र बहुत बड़ी होती है। अहंकार सब इन्द्रियों के बाद हार मानता है। आप अपने मन को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के नुकसान बताएं। सन्तों ने इन पाँच डाकुओं से बचने की दवाई शब्द–नाम की कमाई बताई है। हम शब्द–नाम की कमाई करेंगे तो हमारी चिड़िया जैसी कमज़ोर आत्मा इन पाँच डाकुओं से मुकाबला करने के लिए बाज़ जैसी ताकतवर हो जाएगी।

महाराज सावन सिंह जी हम दुनियादारों की दुर्दशा और हालत बताया करते थे,''हम लोग जहर भी खाते रहते है और हाय! हाय! भी करते रहते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं, ''जब इन्सान हाथ में दीपक लेकर खुद ही कुएँ में गिरता है तो उसे कौन बचा सकता है?'' हमें ईमानदारी से गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए अगर हम ईमानदारी से अपनी ड्यूटी करते हैं, भजन–सिमरन करते हैं डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखते हैं तो गुरु अपनी ड्यूटी ज़रूर करेंगे। गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से कोताही नहीं करते।

***

38

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

रुहानियत के मोती

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 23 फरवरी 1986

सेवक : *जिन बच्चों की परवरिश सन्तमत की शिक्षा के अनुसार की जाती है वे बच्चे बचपन से ही सतसंग में जाते है और भजन–अभ्यास भी करते हैं। जैसे ही वे जवानी अवस्था में आते हैं तब वे न सतसंग में जाना चाहते हैं और न ही भजन–अभ्यास करना चाहते हैं। ऐसी हालत में बच्चों को कितना प्यार से समझाना चाहिए और उनको अनुशासन में रखने के लिए कितनी सख्ती बरतनी चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई! मैं कहा करता हूँ कि बच्चों की ज़िंदगी बनाना माता–पिता का पहला फर्ज़ होता है। अगर हम बच्चों को सतसंग और पढ़ाई के फायदे बताएंगे और साथ ही नशा करने से होने वाले नुकसान बताएंगे तो बच्चों पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा वे समझ जाऐंगे। अफसोस इस बात का होता है कि जब माता–पिता उन्हें समझा रहे होते है तब वे खुद क्रोध में होते हैं और बच्चों को सही ढंग से शिक्षा नहीं देते। माता–पिता बच्चों को समझाते–सम झाते अपनी शान्ति भंग कर लेते हैं या उस वक्त समझाते हैं जब बच्चे किसी न किसी बुरी आदत में फ़ँस चुके होते हैं।

इस विषय के बारे में मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ। यह कहानी आमतौर पर महाराज सावन सिंह जी भी सुनाया करते थे और मैंने पहले कई दफा यह कहानी सुनाई है। आप बताया करते

थे कि जिन माता–पिता ने अपने बच्चों को नेक बनाना है पहले वे खुद नेक बनें; तभी उनके बच्चों पर अच्छा असर पड़ेगा।

एक बादशाह की लड़की का किसी बादशाह के लड़के के साथ प्यार हुआ। वे दोनों शादी करना चाहते थे लेकिन उनके माता–पिता बीच में आए उन्होंने उनकी शादी नहीं होने दी। लड़की ने लड़के से कहा, ''कोई बात नहीं हम दोनों रात को भाग जाएंगे किसी दूसरे गाँव में जाकर शादी कर लेंगे।'' लड़की ने अपने घर से ऊँटनी ले ली और दोनों उस पर बैठकर चल पड़े।

रास्ते में एक नदी आई। दूर से बहते हुए पानी को देखकर लड़की ने बड़ी जल्दी से लड़के से कहा, ''ऊँटनी की लगाम खींचकर रख। यह नदी में बैठ न जाए। इसकी माँ को भी पानी में बैठने की आदत थी।''

इस बात का लड़के के ऊपर बहुत अच्छा असर हुआ। लड़का सोचने लगा कि जैसे माँ–बाप वैसे बच्चे। पशु–पक्षियो पर भी यह असर होता है तो इन्सान की औलाद पर भी यह असर होगा। आज यह लड़की मेरे साथ भागकर जा रही है। इसके पेट से जो औलाद पैदा होगी लड़का हो या लड़की हो वह भी इसी तरह बदमाश होगी, किसी के साथ भाग जाएगी। लोग मेरा नाम बदनाम करेंगे कि फलाने का लड़का इस तरह का बदमाश है।

लड़के ने बहुत सोचकर उस लड़की से कहा, ''मैं कोई खास चीज़ घर में भूल आया हूँ। रात बहुत बड़ी है हम दोनों वापिस चलकर वह चीज़ ले आएं। लड़की को पता नहीं था कि यह मन बदल चुका है। जब वे महल के पास आए तब लड़के ने लड़की को नमस्कार करके कहा, ''तू अपने घर जा, मैं अपने घर जाता हूँ। हमसे जो बच्चा पैदा होगा वह हमारे जैसा ही होगा। हम पाप करने

से बच गए।'' जो माता-पिता अपने बच्चों को नेक बनाना चाहते हैं उन माता-पिता को खुद भी नेक बनना चाहिए। बच्चों के ऊपर माता-पिता का ज़्यादा से ज़्यादा असर होता है।

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि उनके पड़ोसी का बच्चा अगर किसी का कोई नुकसान करके घर आता या किसी की कोई चीज़ चुराकर घर ले आता तो उस बच्चे के माता-पिता हमेशा ही कहते कि यह बच्चा बहुत अच्छा है। महाराज जी कहते थे, ''ऐसे माता-पिता को क्या कहा जाए?''

आप देखें! जब बच्चा बुरी आदतों में फँसकर अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर लेता है तो बच्चे के दिल में आता है कि मेरे माता-पिता ने मेरी ज़िंदगी नहीं बनाई। कई लड़के-लड़कियाँ जब मुझसे इंटरव्यू में मिलते है तो वे मुझे बताते हैं कि उनके ऊपर माता-पिता का बुरा असर हुआ। जिन बच्चों के माता-पिता अच्छे है वे बच्चे कहते हैं कि उनके ऊपर माता-पिता का अच्छा असर हुआ।

जो बच्चे घर से भटक जाते हैं उन्हें जेल की कोठरी देखनी पड़ती है। उन बच्चों की ज़िंदगी तबाह हो जाती है। बच्चों की ज़िंदगी बनाना माता-पिता की बड़ी भारी जिम्मेदारी होती है। माता-पिता अपनी जिम्मेदारी से दूर नहीं जा सकते बच्चों के बुरे कर्म में उनका भी हिस्सा होता है। कबीर साहब कहते हैं:

वैश्नो की कुतिया भली साकत की बुरी माय।
वो सुणे हर नाम यश वो पाप वसाहण जाय।।

मेरा जातिय तज़ुर्बा है कि जिनके माता-पिता का घर में अच्छा आचरण है वे भजन-अभ्यास करते हैं सतसंग में जाते हैं उनके बच्चों को कहने की ज़रूरत नहीं होती। आमतौर पर बच्चे माता-पिता की नकल करते हैं।

मैं अक्टूबर में राजस्थान के 7 एल. सी. गाँव में सतसंग देकर आया। वहाँ के बच्चों ने जिस तरह यहाँ 16 पी.एस. में सतसंग के लिए टैन्ट लगाए जाते हैं स्पीकर लगाए जाते हैं और जिस तरह यहाँ मेरा मकान और भजन–अभ्यास के लिए गुफा बनाई हुई है उन्होंने उसकी नकल करके वहाँ वैसा ही इंतज़ाम किया।

वहाँ के प्रेमियों ने बताया कि ये बच्चे 16 पी.एस. से वापिस आने के बाद तकरीबन एक डेढ़ महीना नकल करते रहे। वे बच्चे छोटे–छोटे फटे हुए कपडों को जोड़कर टैन्ट बनाते थे इसी तरह संगत बन जाती थी। उनमें से एक बच्चा बाबा बन जाता था। जैसे मैंने गुफा के अंदर अभ्यास किया है उन बच्चों ने एक छोटा सा मकान बनाया हुआ था और वे बच्चे कहते, ''भई, बाबा अंदर भजन करने के लिए गया है।'' कहने का मतलब यह है कि हम जो सतसंग में करते हैं वही छोटे बच्चे उन सारी चीज़ों की नकल गाँव में करते रहे।

पप्पु का भांजा सुरेश पप्पु के घर में पढ़ता था। पप्पु की माता ने उससे कहा कि जब पढ़ने के लिए जाना है तो बाबा जी की फोटो को या जब बाबा जी यहाँ आए हों तो उनको नमस्कार करके जाए इससे पढ़ाई अच्छी होती है। उसने जिस दिन पढ़ने जाना होता था वह ज़रूर मुझे माथा टेककर जाता था। उसने जिस दिन पढ़ने नहीं जाना होता था वह उस दिन माथा नहीं टेकता था। चाहे मैं उसके पास ही खड़ा होता था अगर उस बच्चे को रोज़ माथा टेकने के लिए कहा जाता तो वह रोज़ ही माथा टेक सकता था।

प्यारयो, माता–पिता को बच्चों की देखभाल करते रहना चाहिए। बच्चे भोली आत्माएं इस मन–माया के जाल में आई होती हैं। उनको भी परमात्मा ने उन्नति करने का मौका दिया होता है।

अगर माता–पिता अच्छे हैं तो वे बच्चों की दुनियावी और परमार्थी ज़िंदगी भी बना सकते हैं। बच्चों के साथ सब्र से पेश आना चाहिए। सन्त हमेशा अपने आपको परमात्मा रूप गुरु के आगे चालीस दिन के बच्चे जैसा ही समझते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जे अत कोप करे कर थाया तो वी चीत ना राख समाया।
हौं बालक तेरा काहे न खंडस अवगुण मेरा।।

बच्चा बेशक कितनी भी गलतियाँ करता है फिर भी माता बच्चे की तरफ़ अपनी दया का हाथ बढ़ाती है।

सेवक : *ऐसा लगता है कि बचपन से ही मेरा जो पालन–पोषण हुआ है उसके अंदर मुझे दूसरों को परखने और उनकी तरफ़ आलोचनात्मक दृष्टि से देखने की शिक्षा दी गई है जोकि अब मेरी आदत बन चुकी है। मैं जब भी लोगों की तरफ़ देखती हूँ या लोगों से मिलती हूँ तो मैं उनको परखती हूँ या उनकी तरफ़ आलोचनात्मक दृष्टि से देखती हूँ।*

अब यह आदत इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि लोगों के निजी बर्ताव की तरफ़ भी मेरा ध्यान चला जाता है हालाँकि मैं यह नहीं करना चाहती हूँ फिर भी यह अपने आप होता है। मैं जानना चाहती हूँ क्या इस आदत को खत्म करने का कोई ईलाज है या कोई ऐसा अभ्यास है जिससे मैं इस आदत को छोड़ सकूं?

बाबा जी : पहली बात यह है कि किसी भी आदत को छोड़ना बहुत मुश्किल होता है इसका तरीका भजन–अभ्यास ही है अगर हम भजन–अभ्यास करें तो यह आदत छूट सकती है। जब हमारा मन हमें उस आदत की तरफ़ प्रेरता है उस वक्त सिमरन करें। आपको कुछ दिन संघर्ष करना पड़ेगा क्योंकि मन आदत के मुताबिक आपको उधर ही खींचेगा। आप उस वक्त मन को सिमरन में लगा दें; मन अपने आप ही आपको उस आदत से हटा देगा।

सन्त हमें बहुत प्यार से सतसंग में समझाते हैं। सतसंग इसी मर्ज की दवा है। हमें सतसंग ध्यान देकर सुनना चाहिए। सतसंग में दिल–दिमाग को खाली करके बैठना चाहिए। महात्मा जो बोलते हैं उसे समझकर उस पर अमल करना चाहिए। सन्त हमेशा सतसंग में कहते हैं कि आप तन–मन से दूसरों के अच्छे गुण प्राप्त करने की कोशिश करें और किसी के ऐब की तरफ़ न देखें।

एक मुसलमान फ़क़ीर बाज़ार में गया। वहाँ मिठाईयों की दुकान थी। मन ने कहा कि जलेबियाँ खानी है। फ़क़ीर ने सोचा! आज इस मन ने जलेबियाँ माँगी है कल यह औरत माँगेगा फिर बच्चे माँगेगा। आखिर मैं इसी लायक रह जाऊंगा। मन को सबक सिखाने के लिए फ़क़ीर ने मन से कहा कि जलेबियों के लिए पैसों की ज़रूरत है दुकानदार बगैर पैसों के जलेबियाँ नहीं देगा। चलो! जंगल में जाकर लकड़ियाँ काट लाएं और उन्हें बेचकर जो पैसे आएंगे उससे जलेबियाँ खरीदेंगे।

फ़क़ीर बाजार से काफी दूर गया तो मन ने कहा कि यहाँ से लकड़ियाँ उठा ले। फ़क़ीर ने कहा नहीं दूर से अच्छी लकड़ियाँ मिलेंगी। एक मण का गट्ठर उठाना था तो उसने ड़ेढ़ मण का गट्ठर उठा लिया। मन ने कहा कि वजन ज़्यादा है। फ़क़ीर ने कहा ज़्यादा लकड़ियाँ बेचकर ज़्यादा जलेबियाँ आ जाएगी। आखिर फ़क़ीर ने बाजार में लकड़ियाँ बेचकर जलेबियाँ खरीद ली।

फ़क़ीर ने मन से कहा कि बाजार से बाहर चल तुझे बाहर चलकर जलेबियाँ खिलाऊंगा। उसने कुछ जलेबियाँ खाई फिर मन ने सिर घुमा लिया कि अब बस हो गई। फ़क़ीर ने कहा ये सारी जलेबियाँ खानी पड़ेंगी। जब ज़्यादा जलेबियाँ खाई तो उल्टी हो गई। तब फ़क़ीर ने मन से कहा कि अब उल्टी को भी खा। जब

उसने उल्टी खाई तो फिर उल्टी हो गई। फिर मन ने कहा कि अब बस हो गई। फ़क़ीर ने बची हुई जलेबियाँ वहाँ से निकल रहे राहगीरों को दे दी। फ़क़ीर ने फिर अपने मन से कहा, ''क्यों भई! फिर कभी जलेबियाँ माँगेगा? अब तेरी यही सज़ा है कि मैं तुझे साल भर गरम पानी पिलाऊंगा और अब एक घंटे की बजाय दो घंटे अभ्यास में बिठाऊंगा।''

इस कहानी को सुनाने का भाव यही है कि जब महात्माओं का मन उन्हें गलत काम करने के लिए कहता है जिसके करने से वे परमार्थ मार्ग से दूर चले जाएंगे तो महात्मा हमेशा अपने मन को सज़ा देते हैं। पूर्ण महात्मा कभी भी अपने आपको मन की इच्छाओं के आधीन नहीं होने देते। वे कभी भी मन की इच्छाओं को पूरा नहीं करते क्योंकि उन्हें पता होता है अगर मन की एक इच्छा पूरी की तो यह मन और कई इच्छाएं पैदा करेगा।

काल ने आत्मा को कैद करके उसे अपने आधीन किया हुआ है और मन उसका ज़बरदस्त हथियार है। मन ने बड़े जाल बिछाए हुए है। आत्मा काल की नगरी, दुश्मन की नगरी में बेबस है।

जिस तरह शिकारी लोग पक्षियों को पकड़ने के लिए चोगा डालते हैं जाल बिछा देते हैं। पक्षी चोगा चुगने के लिए आता है लेकिन जाल के अंदर फँस जाता है; यही हालत हमारे मन की है।

मन की आदतें गिनने जाए तो गिन नहीं सकते। जिस भी आदत से और जिस तरीके से कोई फ़ँस सकता है मन उसके लिए वही तरीका इख्तियार कर लेता है। आत्मा चुपचाप खामोश और बेबस होकर अपनी तबाही देख रही होती है। सतसंगी को हमेशा ही अपने मन की चौकीदारी करते रहना चाहिए। हमेशा सिमरन में ही लगे रहना चाहिए।

***सेवक :** मैंने यह पढ़ा है अगर हम रोएं आँसू गिराएं तो अच्छा है। अगर हम ऐसी अवस्था में पहुँच जाए जहाँ पर हम अंदर से तो रोएं लेकिन आँसुओं को आँखों के अंदर ही रहने दे बाहर न गिराएं तो क्या वे आँसूं रूहानियत के मोती बन जाते हैं? आप हमें इस बारे में कुछ बताएं?*

बाबा जी : हाँ भई! जब हम उस अवस्था में पहुँच जाते हैं जहाँ का यह ज़िक्र है फिर हमारे अंदर सब्र और संतोष आ जाता है। तब हम बाहर न किसी को रोकर दिखाते हैं न हँसकर दिखाते हैं। भीखन शाह ने इस अवस्था के बारे में बहुत प्यार से कहा है:

कहे भीखन दो नैन संतोखे जहं देखां तें सोई।

ऐसा प्रेमी जिधर भी देखता है उसे गुरु ही नज़र आते हैं। अंदर निगाह मारता है तो शब्द-गुरु उसी शक्ल में अंदर बैठे होते हैं। बाहर देखता है तो पाँच तत्त्व का पुतला है। गुरु बाहर से हिदायत करते हैं कि अंदर चल और वे अंदर गले से लगाते हैं। उनकी मनमोहनी मूरत अपनी तरफ़ इस तरह खींच लेती है कि वह खुशी में रोना चाहे तो रो नहीं सकता, हँसना चाहे तो हँस नहीं सकता।

यह एक बहुत ही अजीब अवस्था होती है। हम जब ग्रंथ लिखते हैं उस वक्त बयान करने का ढंग जैसा आपने कहा है वैसा ही होता है लेकिन जब मिलाप होता है उसका रंग-रूप बदल जाता है। जिस तरह हम मकान बनाते हैं तो उसका नक्शा बना लेते हैं। नक्शे को देखकर कारीगर लोग मकान बना देते हैं अगर हम उस नक्शे में मिस्त्री, सीमेंट, चूना, गारा वगैरहा ढूँढ़े तो वह नक्शे में नहीं होता। इसी तरह बयान करने में कोई और चीज़ है लेकिन अंदर कोई और चीज़ है। ठंडे हौंके या ठंडी आँहे भरने का मजा तभी आता है जब वह प्रीतम-प्यारा जिसके लिए आप ठंडी आँहें

भर रहे हैं वह आपके पास बैठा हो। आँसूं बहाने का फायदा तभी है आप जिसके लिए आँसूं बहा रहे हैं वह आपके आँसूं पोंछने के लिए रूमाल लेकर पास ही बैठा हो। उसे पता है कि आप उसकी याद में आँसूं बहा रहे हैं। यह उस वक्त की अवस्था है जब गुरु अंदर प्रकट हो जाते हैं तब प्रेमी के उन आँसुओं को गुरु आम आँसूं नहीं बल्कि मोती समझते हैं। गुरु नहीं चाहते कि वह मोती व्यर्थ जाएं इसलिए वे रूमाल लेकर मौजूद होते हैं।

जब ऐसे प्रेमी रोते हैं तब वे जंगल के पक्षियों को भी रूला देते हैं फिर पास में बैठे लोगों ने तो रोना ही होता है क्योंकि उनकी आँहें बहुत दर्द भरी होती हैं। ऐसी आँहों को सुनकर जहरीले नाग भी अपनी बम्बी के अंदर चले जाते हैं। ऐसे प्रेमी बड़े भाग्यवान उत्तम पुरुष होते है; जिनको ऐसा रोना आता है।

बाबा जयमल सिंह जी के संसार छोड़ जाने के बाद जब महाराज सावन सिंह जी उनके गाँव गए तब आप बहुत रोए। परम पिता कृपाल सिंह जी ने मुझे बताया था कि उस वक्त बाबा सावन सिंह जी इतना रोए कि संगत भी उनके साथ रोने लग गई। आपसे कहा गया, ''बाबा जी, अगर आप रो रहे हैं तो संगत की क्या हालत होगी?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''सज्जनो, अगर आज बाबा जयमल सिंह जी अपना पाँच तत्त्व का शरीर लेकर मेरे सामने आ जाएं तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

मुझे परमपिता कृपाल सिंह जी के सामने काफी भजन बोलने का मौका मिला है। मैं बगैर तैयारी के ही भजन बोल लेता था। ऐसी कोई बात नहीं थी कि पहले कविता लिखें बाद में बोलें। आप खुद ही इस ज़ुबान और हृदय से अपनी सिफ़त के लफ़्ज़ निकलवाते थे। जब महाराज सावन सिंह जी का नाम आता था तब

आपकी दोनों आँखों में से पानी की धारा बहने लगती जो आपको रुमाल से पोंछनी पड़ती थी। आपका गला भर आता था गले से आवाज़ निकलनी रुक जाती थी। आप उत्तम पुरुष थे जो गुरु की याद में आँसूं बहाते थे।

जब परमपिता कृपाल सिंह जी यह पाँच तत्त्व का शरीर छोड़कर संसार से अपने घर सचखंड वापिस चले गए हालाँकि आप परमात्मा के हुक्म में आए और परमात्मा के हुक्म में ही वापिस चले गए। तब इस गरीब आत्मा अजायब को भी बहुत रोना आया। किसी आदमी ने मुझसे पूछा, ''आप यह कहते हैं कि किसी के संसार से चले जाने पर रोना नहीं चाहिए। रोने से कोई वापिस नहीं आता। आप समझदार और ज्ञानी होकर भी क्यों रो रहे हैं?''

मेरा गला भरा हुआ था। मैं बोलना तो नहीं चाहता था लेकिन मैंने उसे बड़े प्यार से यह कहानी सुनाई कि एक बादशाह बाहर किसी मुल्क के दौरे पर जा रहा था। वह राजमहल से तो तैयार होकर निकल पड़ा लेकिन कुछ दूर जाकर वापिस घर लौट आया।

उस बादशाह की रानी का किसी और आदमी के साथ प्यार था। उन दोनों ने योजना बनाई थी कि जब बादशाह कुछ दिनों के लिए दूसरे मुल्क में जाएगा तब हम पीछे से मौज मस्ती करेंगे। वह आदमी राजमहल में आ चुका था और दोनों एक साथ सोए हुए थे।

जब बादशाह महल में वापिस आया तो रानी को पराए मर्द के साथ सोते देखकर पहले तो उसके होश-हवास उड़ गए कि रानी मुझे छोड़कर कौन से बुरे कामों में पड़ी है। आखिर सोचकर उसने तय किया चलो! ये जो करते हैं सो करते हैं। मैं अपना आप इन पर जाहिर न होने दूं। वे दोनों वस्त्रहीन पड़े थे। बादशाह ने अपना दुशाला उनके ऊपर ढ़क दिया और खुद दूसरे कमरे में जाकर सो गया।

जब रानी और उसके मित्र की नींद खुली तो बादशाह का दुशाला देखकर उनके होश उड़ गए कि अब पता नहीं बादशाह हमारे साथ क्या करेगा? रानी का मित्र तो उठकर चला गया। वे जितनी देर भी इकट्ठे रहे बादशाह ने रानी को कभी भी वह बात नहीं जताई कि तू बुरी है या तूने यह गलत काम किया है।

कुछ सालों बाद बादशाह का अन्त समय आया तो उसने अपने लड़कों को तिलक वगैरहा देकर राजगद्दी सौंप दी और उनसे कहा, ''माता के कहे अनुसार चलना है हमेशा इसकी इज़्ज़त करनी है; यह बहुत अच्छी है।'' जब रानी ने ये सब बातें सुनी तो वह हद से ज़्यादा रोई।

बादशाह ने रानी से कहा, ''देख रानी! मैंने तेरे लड़कों को राजगद्दी दे दी है। बच्चों को भी तेरा ख्याल रखने के लिए कह दिया है। तेरे खर्चे के लिए जायदाद भी तेरे नाम कर दी है तू क्यों रोती है तुझे किस चीज़ की कमी है?'' रानी ने कहा, ''बादशाह सलामत, मैं किसी सामान या गद्दी के लिए नहीं रो रही हूँ। मैं इसलिए रो रही हूँ कि अब मेरे ऊपर दुशाला कौन डालेगा? जब आप चले जाएंगे तो मेरे गुनाहों पर कौन पर्दा डालेगा?''

अंदर पहुँची हुई आत्माएं इसलिए रोती तड़पती हैं कि जो सुख गुरु के देह में बैठे होता है वह बाद में नहीं होता। उनको पता है बेशक सचखंड में बैठे हमारे गुरु रोज़ ही हमारे गुनाहों पर पर्दा डालते हैं लेकिन गुरु के शारीरिक रूप के दर्शन करने से जो पाप-ऐब कटते हैं या जिस तरह देह रूपी गुरु के आगे हम अपना आभार दिल खोलकर निकाल सकते हैं वो बाद में नहीं होता। इसलिए ऐसी आत्माएं रोती हैं। परमात्मा ऐसे आँसुओं को शहीदों के ख़ून के तुल्य समझते हैं।

***

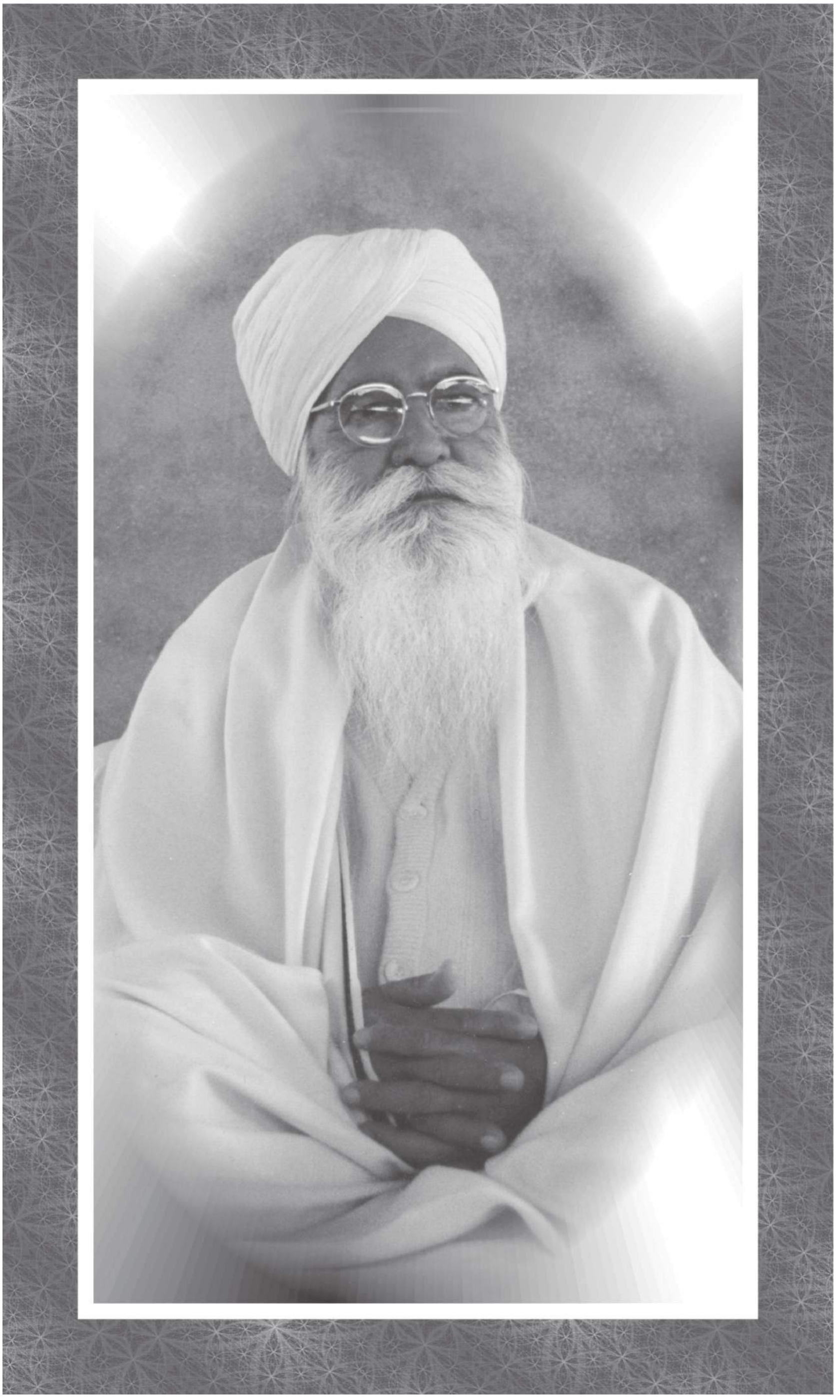

39

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सन्तों का भजन–अभ्यास

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 अक्टूबर 1986

सेवक : *पूरे गुरु किस तरह अभ्यास करते हैं, आप अब कैसे अभ्यास करते हैं?*

बाबा जी : हाँ भई! बड़ा दिलचस्प सवाल है। हर एक सतसंगी को गौर से सुनना चाहिए और इस पर अमल करना चाहिए। बेशक महान आत्माएं प्रभु की तरफ़ से इस संसार में आती हैं। शुरू से ही इनका मिशन परमार्थ ही होता है। ये ऐसी हस्ती होते हैं जिस पोल पर परमात्मा इस संसार में काम कर रहा होता है। परमात्मा कण–कण में समाया हुआ है। यह परमात्मा की ड्यूटी है कि ऐसी आत्मा को किस समय जगाना है कहाँ जगाना है। इसका वक्त तय होता है और वक्त आने पर ऐसी आत्मा को जगा दिया जाता है।

ऐसी आत्मा पर पहले माया का पर्दा चढ़ा होता है लेकिन ऐसा नहीं कि तब वह गुमराह हो जाते हैं। इन्हें बचपन से ही ज्ञान होता है और इनके अंदर ऐसे ख्याल उठते हैं कि हम इस संसार में क्यों आए हैं, किसके लिए आए हैं और हमारा मिशन क्या है? इन्हें बचपन से ही गुरु की तलाश रहती है। इनका दिल तड़पता रहता है कि हमें भी कोई पूरा गुरु मिलें!

ये सदा ही अधूरे गुरु से डरते रहते हैं। वक्त आने पर इनका मिलाप पूरे गुरु से हो जाता है क्योंकि यह बर्तन पहले से ही बना–

बनाया होता है। बर्तन साफ है तो वस्तु डालनी आसान है। ज़मीन तैयार है तो उसमें बीज़ डालना बड़ा आसान है और बड़ी जल्दी वह उगकर फल देगा। अगर ज़मीन तैयार नहीं तो उस पर टाईम ज़रूर लगेगा। बर्तन साफ नहीं तो वस्तु डालने वाला पहले उस बर्तन को साफ ज़रूर करेगा। रिद्धियाँ–सिद्धियाँ शुरू से ही इनके आगे हाथ जोड़कर खड़ी रहती हैं इन्हें प्रेरित करती हैं लेकिन ये रिद्धियों–सिद्धियों को मना कर देते हैं कि हमें आपकी कोई ज़रूरत नहीं। बचपन से ही इनमे कमाल की अंतर्यामता होती है।

जितने भी सन्त संसार में आए वे मालिक के हुक्म में आए। आप बाबा सावन सिंह जी की हिस्ट्री पढ़कर देख सकते हैं। महाराज कृपाल का यह किस्सा आपको मालूम ही है कि जब आप स्कूल में पढ़ते थे तब आपने अपने टीचर से कहा, ''मुझे छुट्टी दे दें मेरी नानी चोला छोड़ने वाली है।''

टीचर ने मज़ाक समझा और कहा, ''चल क्लास में बैठ जा। तू कहाँ का अंतर्यामी है?'' थोड़ी देर बाद एक आदमी आपके घर से भागकर आया उसने कहा कि आप पाल को छुट्टी दे दें इसकी नानी याद कर रही है, वह संसार छोड़ने वाली है। उसके बाद वह टीचर हमेशा ही महाराज कृपाल का आदर करता रहा।

मेरे बचपन की कहानी है जिसे मैंने आज तक किसी को नहीं बताया। उस समय मेरी उम्र आठ साल थी। हमारा इलाका मुसलमानों का था, वे काफी नेक आदमी थे। मुझे सुबह इस किस्म का अनुभव हुआ कि पुलिस अजीज़ को पकड़कर ले जा रही है अजीज के हाथ में हथकड़ी लगी हुई है।

मैं सुबह बाहर निकला, वह भी बाहर निकला। मैं बच्चा था उसने मुझसे मज़ाक किया। मैंने कहा, ''ओ अजीज़, तुझे आज

पुलिस ने पकड़ लेना है।'' उसने मुझसे कहा क्या तुझे सपना आया है? सपने झूठे होते हैं। मैंने कहा कि मुझे सपने का तो पता नहीं लेकिन तुझे आज पुलिस वाले ज़रूर हथकड़ी लगाएँगे। मालिक की मौज तकरीबन दस बजे पुलिस वालों ने उसे हथकड़ी लगा दी और उसे जेल में डाल दिया। थोड़े दिनों के बाद उसे छोड़ दिया क्योंकि उसका कोई कसूर नहीं था। किसी ने कोई शक डाला था कि उसके घर में कुछ है।

मेरे पिताजी के घर में काफी सहूलतें थीं। वे अमीर थे स्वभाव से भी अच्छे थे। मैं वहाँ आसानी से हर चीज़ प्राप्त करता था। यह बचपन की बात है किसी आदमी ने मुझसे पूछा, ''नर्क देखा है?'' मैंने कहा ''हाँ! हमारे घर में नर्क ही है।'' ऐसी हस्तियों पर न गरीबी का असर होता है न अमीरी का असर होता है। सभी सन्त–महात्माओं ने माया से बचने का उपदेश दिया है। सन्त कहते हैं कि हाथी तो सुई के धागा डालने वाली जगह में से भी निकल सकता है लेकिन अमीर आदमी मालिक के देश नहीं जा सकता।

बाबा बिशनदास जी ने इस गरीब अजायब की ज़िंदगी की नींव रखी। मैंने हमेशा ही बताया है कि मेरी जो भी कमाई थी हमारे घर की ज़मीन का ठेका और जो कुछ भी अनाज़ वगैरहा हिस्से में आते थे और मेरी नौकरी से जो कुछ आता था वह सब मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में रख देता था।

मैं बताया करता हूँ कि सेवा दे देनी तो आसान है क्योंकि सामने वाला धन्यवाद करता है लेकिन बाबा बिशनदास जी का इससे उल्टा व्यवहार था। मैं जिस दिन ज़्यादा पैसे लेकर उनके पास जाता, उस दिन वे मुझे ज़्यादा थप्पड़ मारते थे। सेवा दे देनी आसान है लेकिन थप्पड़ खाने बहुत मुश्किल होते हैं!

ऐसी महान आत्माएं सन्तों पर अभाव नहीं लातीं। ऐसा नहीं कि गंगा गए तो गंगाराम बन गए और यमुना गए तो यमुनादास बन गए। उनका दृढ़ विश्वास होता है। उनमें कमाल की श्रद्धा होती है। उन्हें मालूम होता है कि सच्चाई ज़रूर मिलेगी।

हिन्दुस्तान में पंजाब का इलाका पहले से ही विकासशील है क्योंकि पंजाब में नहरें पहले आई थी। पंजाब में काफी सहूलतें थीं। मैं पैंतिस–छत्तीस साल पहले यहाँ आया हूँ। जब मैं इस जगह आकर बैठा हर आदमी परेशान था कि यह इन्सान पंजाब से इतनी सहूलियतें छोड़कर यहाँ आकर कैसे बैठा है? आज आपको यहाँ हरे–भरे पेड़ दिखाई दे रहे हैं, बाग नज़र आ रहा है तब यहाँ पर बीस–बीस मील तक पानी नहीं मिलता था।

बाबा बिशनदास जी ने कहा था कि बीकानेर का इलाका धर्मवाली धरती है। यहाँ कोई जीव हत्या नहीं करता था। गाय–बकरे कत्ल नहीं किए जाते थे। यहाँ कोई शराब नहीं पीता था। आमतौर पर यहाँ के लोगों का झुकाव परमात्मा की तरफ़ था। यहाँ का राजा न्यायकारी था। वह प्रजा को अपने बच्चे समझता था और प्रजा उसे अन्नदाता समझती थी। किसी घर में कोई गेट नहीं लगा होता था क्योंकि राजा का बहुत ख़ौफ़ था डर था।

मैं बाबा बिशनदास जी के कहे अनुसार यहाँ आया उस समय काफी मुसीबतें झेलीं। बाबा जी ने कहा था कि तुझे देने वाला यहाँ आएगा। मैंने अठारह साल 'दो–शब्द' का भेद लेकर इस ज़मीन में बैठकर अभ्यास किया। मैं उस वक्त की इंतज़ार में था कि दूसरी मंजिल से ऊपर की रूहानियत देने वाला आएगा।

मैंने अपनी ज़िंदगी का एक–एक मिनट कीमती समझा। मैंने उस वक्त को दुनियावी कारोबार, इन्द्रियों के भोगों में या मान–

बड़ाई में नहीं लगाया। कबीर साहब ने कहा था कि प्यासा बहुत इज़्ज़त से पानी पिएगा और पानी पिलाने वाले की भी बड़ी इज़्ज़त करेगा कि भई, तूने मेरे प्राण बचा दिए।

बाबा सावन सिंह जी राग के बादशाह तानसेन का उदाहरण दिया करते थे। तानसेन महान अकबर के अच्छे सलाहकार थे उनके दरबार के नौ रत्नों में से एक थे। तानसेन अकबर बादशाह को अच्छी नेक सलाह दिया करते थे। अकबर के राज्य में हर जाति को सुख था, उसने हिन्दुस्तान में अच्छा राज्य किया। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिसने राग विद्या सीखनी है वह तो तानसेन के जूते साफ करेगा और जिसकी राग में दिलचस्पी नहीं चाहे तानसेन उसके जूते साफ करता फिरे वह कहेगा हाँ सोचेंगे! सलाह लेंगे!

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि मैंने बाईस साल खोज की। मैं हर सभा सोसायटी में गया। उस वक्त हिन्दुस्तान में रुहानियत के जो महात्मा काम कर रहे थे तकरीबन मैं सबके पास प्यार से गया। जब बाबा जयमल सिंह जी का सतसंग सुना तो उनके एक–एक लफ़्ज़ ने मेरे बाईस साल के शक–शकूक निकाल दिए।

जब मेरी आत्मा के परमात्मा हुज़ूर कृपाल मुझे मिले तो मैंने उनसे यह नहीं पूछा कि आप किस जाति से हैं, आपकी शादी हुई है या नहीं आपके कितने बच्चे हैं और आप कहाँ रहते हैं? मैंने आपसे ऐसा कोई सवाल नहीं किया। मुझे जिसकी खोज थी वह मुझे मिल गए। मेरे उदाहरण देने का भाव इतना ही है कि आपको इस सवाल का जवाब अच्छी तरह समझ में आ जाए। अब मैं आपके सवाल का जवाब बताता हूँ। सवाल यह था कि पूरे गुरु कैसे अभ्यास करते हैं और अब आप कैसे अभ्यास करते हैं?

सबसे पहले तो ऐसी आत्माओं के अन्दर बड़ी कमाल की तड़प होती है। वे अपने गुरु को कुल मालिक समझकर जो कुछ वे कहते हैं उनके लफ़्ज़ों को ग्रहण करते हैं। यह वक्त के महात्मा की अपनी मर्ज़ी है कि वह ऐसी आत्माओं को संगत में बिठाकर थ्योरी समझाए या तवज्जो देकर ही उनकी सुरत को उसी वक्त भी ले जाए। ऐसी आत्मा के ऊपर कर्मों का कोई बोझ नहीं होता। उनसे अभ्यास इसलिए करवाया जाता है ताकि वे लोगों को डेमोंस्ट्रेशन दे सकें। लोगों के दिल के अंदर भी यह बैठ जाए कि इन्होंने कितना अभ्यास किया है, हमें भी करना चाहिए। ज़िंदगी में ऐसी आत्माएं बहुत कम मिलती हैं जो साफ, निर्मल और प्योर हों।

मैं बताया करता हूँ कि मैं अठारह साल से उन 'दो–शब्दों' का अभ्यास कर रहा था, रास्ता खुला हुआ था। मेरे बारे में हुज़ूर ने महसूस ही नहीं किया कि इसे थ्योरी समझानी है या इसे संगत में बिठाना है। आपने अपनी दया करके अपने ही कमरे में तवज्जो दी सुरत ऊपर ले गए। जितना वक्त मुनासिब समझा अंदर रखा। उसके बाद आपने कहा कि आप 16 पी.एस. जाकर अभ्यास करें।

रोज़–रोज़ अभ्यास करने से और भी महारत पैदा हो जाती है। मुझे बचपन से ही आँखें बंद करके नीचे बोरी पर बैठने की आदत थी। जब सुरत संभली कुछ होश आया मैं फिर भी ज़मीन के अंदर ही मकान बनाकर बैठा। हुज़ूर अपना अभ्यास रावी नदी में खड़े होकर करते थे। रावी नदी उनके अभ्यास की जगह थी।

राजस्थान में इस जगह बहुत गर्म लू चला करती थी। मकान के बाहर बैठना बहुत मुश्किल था इसलिए हुज़ूर ने अपनी दया करके खुद ही यह मकान बनवाया, यह उनकी आज्ञा से ही बना। आपने खुद ही मेरी आँखों पर हाथ रखकर मुझे यहाँ बिठाया और

कहा, ''अब तू यहाँ बैठकर अभ्यास कर। जब ज़रूरत होगी मैं खुद ही आऊँगा।'' और आप आते रहे। यह श्रद्धा और प्यार का एक नमूना था।

जब हुज़ूर कृपाल ने मुझे अंदर से बाहर निकाला तब वे प्रेमियों को नामदान दे रहे थे। प्रेमियों को थ्योरी समझाकर हुज़ूर ने मुझसे कहा कि ''इन्हें सिमरन याद करवा।'' मैंने विनती की,''देखो सच्चे पातशाह! कैसी थ्योरियाँ कैसा सिमरन? मेरी यही अरदास है कि आपने अपना जो असली रूप मुझे दिखाया है इस समय जो आदमी यहाँ बैठे हैं आप इन सबको अपना असली रूप दिल खोलकर दिखा दें।

फिर भाई यह लड़ाई नहीं करेगें कि शंख बजाने से परमात्मा मिलता है। सूफ़ी यह लड़ाई नहीं करेगें कि मंत्र पढ़कर पानी पीने से परमात्मा मिलता हैं और पंडित भी लड़ाई नहीं करेगें कि सिंदूर माथे पर लगाने से ही परमात्मा मिलता है। तेरा सांझा प्यार घर-घर में हो और तेरी युक्ति से सभी प्यार करें। कोई मंदिर-मस्जिद के पीछे झगड़ा न करें। सबको यह पता चल जाए कि परमात्मा एक है, वह इन्सान में रहता है।'' ये सब कुछ सुनकर हुज़ूर ने मुझसे कहा, ''देख भई! लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

जब ऐसी महान आत्मा को पूरे महात्मा मिल जाते हैं तो वह महान आत्मा उनसे भेद लेकर बिल्कुल वक्त खराब नहीं करती। उन्हें गुरु से जो हुक्म मिलता है वे सिर झुकाकर सब कुछ ही करते हैं। इन पर बचपन से ही भूख-प्यास का कोई असर नहीं होता। अगर ये हफ्ता-हफ्ता भी अंदर बैठ जाएँ फिर भी भूख-प्यास इन्हें तंग नहीं करती। इनकी नींद बचपन से ही गायब होती है, कम नींद से भी इन्हें कोई मुश्किल नहीं होती।

जिन प्रेमियों ने घर में कोई प्रैक्टिस नहीं की होती और यहाँ जो नियम है कि तीन बजे घंटी बजेगी तब उठें। ऐसे प्रेमी सिर्फ यहाँ सुबह जल्दी उठते हैं जब देखा–देखी अभ्यास करते हैं तो उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है।

इस तज़ुर्बे को अगर गलत समझते हैं तो पप्पु गवाह बैठा है। यह जितनी बार भी बाहर बिमार होता है नींद के कारण ही होता है। यह ननैमो में बीमार हुआ वहाँ कई डॉक्टर इसकी देखभाल में लगे। शर्मा जी जो आपके पास बैठे हैं इन्होंने सतसंग का अनुवाद करने में मदद करवाई। वहाँ मैंने सभी डाक्टरों से कहा, ''हम आपका धन्यवाद करते हैं आप जाएं; मैं इसका इलाज कर लूँगा।

मैंने पप्पु से कहा तू चुपचाप सो जा किसी से बात मत कर जब यह सोया तो बुखार उतर गया। इसी तरह जब हम पहले टूर से वापिस आए इसे हवाई जहाज में फिर बुखार हुआ। हमारे साथ गुरभाग सिंह भी था। वह घबरा गया उसने कहा कि मैं दवाई लाऊँ। मैंने उससे कहा दवाई की ज़रूरत नहीं। देखो अगर कोई सीट खाली है तो बस यह लेट जाए क्योंकि लेटने से बुखार उतर जाएगा। वहाँ सीट मिल गई जब यह सोया तो इसका बुखार उतर गया। हर आदमी नींद का हमला बर्दाश्त नहीं कर सकता। अगर मन सतसंगी को काम, नींद, आलस्य में न फँसाए तो सतसंगी के लिए अभ्यास करना क्या मुश्किल है?

कल मैंने बताया था कि भगवान की सबसे बड़ी रीति यह है कि वह जिसके लिए एक बार दरवाज़ा खोल देता है फिर उसे बिछोड़ता नहीं। आप सन्तों की लेखनियाँ पढ़ सकते हैं उस वक्त का ज़िक्र सभी सन्तों ने किया है। कबीर साहब कहते हैं :

आँख ना मूंदू कान ना रूंदू काया कष्ट न धारूँ।
खुल्ले नैण में हँस–हँस देखूँ सुंदर रूप निहारू।।

ऐसे महात्मा जो भी कारोबार करते हैं चाहे खेती करें, घर का काम करें, संगत का काम करें वह सारा पवित्र और परमार्थ में गिना जाता है। ऐसे महात्मा किसी की बुराई करनी तो क्या सोच भी नहीं सकते। वे खुद पवित्र होते हैं और अपनी संगत को भी पवित्र कर लेते हैं। वे खुद मुक्त होते हैं और धीरे–धीरे अपनी संगत को समझाकर उनको भी मुक्त कर लेते हैं।

आपको मालूम है कि मुझे बहुत से प्रेमियों से इंटरव्यू करने का मौका मिलता है। हर प्रेमी अपना–अपना तज़ुर्बा बताता है। बहुत से प्रेमी रूहानियत में दिवालिया होकर आते हैं। आखिर परमात्मा कृपाल किसी न किसी हिसाब से उन्हें यहाँ ज़रूर देते हैं, उन पर दया करते हैं और कई प्रेमी अपने ऐब छोड़कर जाते हैं।

सतगुरु दयालु होते हैं। वे प्रेमी का थोड़ा बहुत कर्म अपने ऊपर भी लेते हैं। आखिर अपनी संगत को हर तरह से पवित्र कर लेते हैं। उनकी कोशिश होती है कि संगत में जितनी भी आत्माएं मेरे संपर्क में आई हैं या मुझे याद करती हैं, मैं अपने जीवनकाल में ही इनके अंदर शब्द की धार पैदा कर दूँ और इन्हें मालिक के आगे खड़ा कर दूँ। कहने को और भी बहुत कुछ था पर टाईम हो गया है।

***

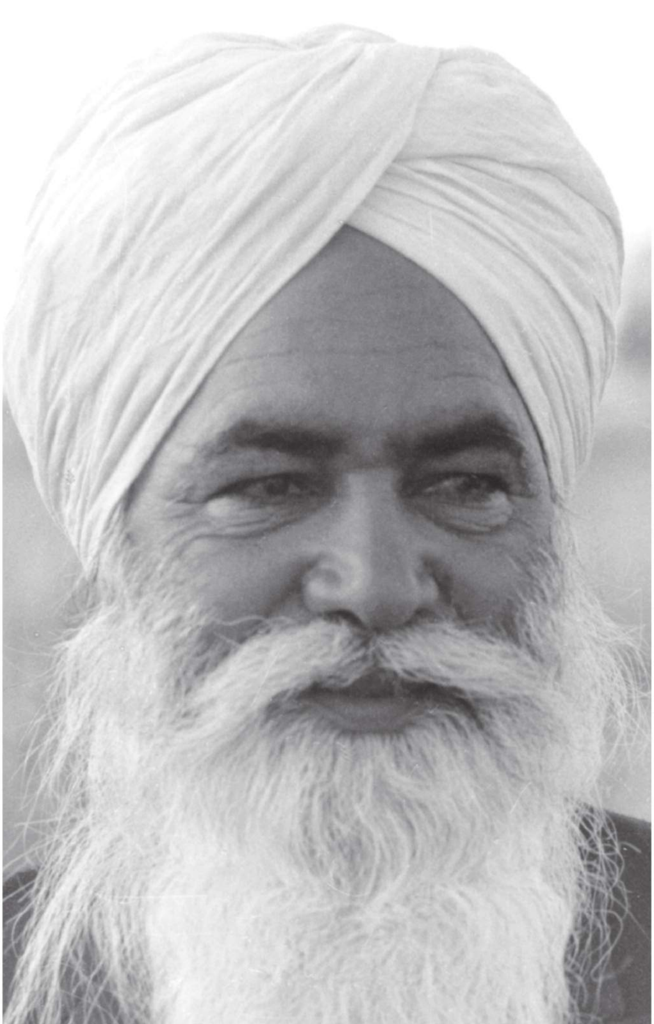

40

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

कर्मों का लेखा

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 29 मार्च 1987

सेवक : *कल आपने यह कहा था कि नामदान के समय हर जीव के संचित कर्मों का लेखा–जोखा गुरु अपने कब्ज़े में लेकर खत्म कर देते हैं। मेरी समझ में यह आया था कि जैसे–जैसे हम अभ्यास के अंदर तरक्की करते हैं, कुछ कर्म ऐसे भी होते हैं जो हमें अभ्यास करने के बाद ऊपरी मंडलों में जाकर खत्म करने होते हैं। क्या वे कोई और कर्म होते हैं या वे संचित कर्मों में से ही कुछ हिस्सा होता है?*

दूसरी बात मैं यह जानना चाहता था कि किस तरीके से गुरु संचित कर्मों का लेखा–जोखा खत्म करते हैं। मुझे राजा जनक की कहानी याद है कि जिस तरह से वह नर्क में गए थे और तीन बार सिमरन करने से उन्होंने सारी आत्माओं को वहाँ से मुक्त करवा दिया था। क्या गुरु इसी तरह से संचित कर्मों को खत्म करते हैं या कोई और तरीका है?

बाबा जी : हाँ भई! मुझे खुशी है कि यह बड़ी गहराई से सोचने वाली बात है और हर एक के फायदे के लिए है। हो सकता है! ऐसा सवाल और भी कई लोगों के दिमाग में घूम रहा हो। सबसे पहले सोचने वाली बात यह है कि जो सतसंगी अंदर जाते हैं वे इसे भली–भांति समझते हैं। मैंने कई बार महाराज सावन का हवाला दिया है। महाराज सावन कहा करते थे, ''दुनिया कहती है कि हम

सन्तों के पास जाते हैं, नामदान प्राप्त करते हैं, नाम की कमाई करते हैं लेकिन जब वे अंदर जाते हैं तो खुद देखते हैं कि हम सन्तों के पास जाते थे या सन्त हमें खींचते थे? वे जब तक अंदर ऊपर के मंडलों में नहीं जाते तब तक ही कहते हैं कि हम अभ्यास करते हैं। जब ऊपर जाते हैं तो उन्हें मालूम होता है कि कोई उनसे भजन करवा रहा था। फिर वे यह भी कहते हैं कि कोई हमें उठा भी रहा था और कोई अंदर से प्रेरणा भी दे रहा था।''

मैं यह भी कहा करता हूँ कि सन्त-सतगुरु नामदान देते समय हमारे अंदर इस किस्म का अरेंजमैंट कर देते हैं कि हमारे कुछ कर्म कटते रहते हैं और हम कुछ तरक्की भी करते रहते हैं। जिदंगी में प्रालब्ध की वजह से कुछ ऐसे भी कर्म पैदा होते हैं जो वक्त पर आकर बर्दाश्त से बाहर होते हैं। जब हम भजन-अभ्यास करते हैं तो हम उस वक्त की तैयारी में होते हैं कि हमारी आत्मा के अंदर ताकत आए और हम उन कर्मों को बर्दाश्त कर सकें।

मैं यह भी बताया करता हूँ कि ज़ब ज़ोर सें तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं। इसी तरह जब कर्मों का वेग चलता है और वक्त पर आकर घटना घटती है उस समय हम चिल्लाते हैं दुखी होते हैं। आपको मालूम ही है कि ये कर्म बर्दाश्त से बाहर होते हैं। ऐसे वक्त में जो प्रेमी अभ्यास नहीं करते वे डोल जाते हैं, खुष्क भी हो जाते हैं। जो प्रेमी कमाई करते हैं तकलीफ़ उन्हें भी है लेकिन वे इस राज़ को समझते हैं उन्हें कोई शिकायत नहीं होती कि हमारे ये दुख दूर करें बल्कि वे परमात्मा के भाणे में मज़बूत रहते हैं। उन्हें मालूम होता है कि जितने कष्ट आ रहे हैं इससे हमारी उतनी ही सफाई हो रही है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

दुख की घड़ी गनीमत जानों सुख में रहत सदा मन गाफिल।

दु:ख की घड़ी को गनीमत समझें क्योंकि सुख के अंदर मन गाफ़िल होता है। दुख की घड़ी में मन नरम हो जाता है। जो अंदर जाते हैं वे कहते हैं कि उस वक्त का फायदा उठाएं अभ्यास करें। आप सोचकर देख सकते हैं कि हर सतसंगी का ख्याल ऐसा नहीं होता। सतसंगी मामूली सी तकलीफ से घबराकर गुरु के आगे विनतियाँ करता है अरदासें करता है अगर ऐसे वक्त पर उसकी मदद न हो तो वह ख़ुष्क हो जाता है।

हमें यह सब कुछ अंदर जाकर ही समझ आता है कि गुरु किस तरह दया करते हैं गुरु के दया करने का क्या तरीका है और गुरु किस तरह हमारे कर्म काटते हैं। हम जब तक बाहर बैठे हैं थोड़ा–बहुत सुनकर विश्वास भी आता है, धीरज भी रखते हैं हमें ढ़ांढ़स भी मिलती है। सन्त हमेशा इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सच्चाई का पता जानने के लिए आप खुद अंदर जाएं और देखें।

मैं आपको बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी के पास 'दो–शब्द' का भेद था। उन्होंने नीचे वाले दोनों मंडलों का प्रेक्टिकल किया हुआ था। जब उन्होंने दया दृष्टि करके मुझे इनका प्रेक्टिकल करवाया तो पहले उन्होंने मुझे मेरे पिछले जन्म के बारे में जानकारी दी सच्चाई दिखाई। उसके बाद जिनके साथ मेरा देन–लेन था उन्हें भी आँखों के आगे लाए कि जितना–जितना उनका हिसाब–किताब था वह भी दिला दिया। यह उनकी खास दया थी।

जिन माता–पिता ने मेरा पालन–पोषण किया था उनके बारे में बाबा बिशनदास जी की दया से मुझे खुद ही ज्ञान हो गया था कि मैंने इनका कितने वक्त तक देना है इन्होंने मेरा क्या देना है और मैं इनके बीच में क्यों आया हूँ? मैंने घर छोड़ने से कई साल पहले ही उन्हें बता दिया था कि आपका मेरा सम्बन्ध कितने वक्त का

है। बाद में मैंने मालिक की याद में लग जाना है। जब इतना ज्ञान सिर्फ दूसरी मंजिल पर पहुँचे हुए महात्मा को हो सकता है तो आप सोचकर देखें! आपको पूरा रास्ता मिल गया है। आपको पूर्ण सन्त मिले हुए हैं अगर आप आलस्य न करें तो आप खुद देख सकते हैं, आपको ज्ञान हो सकता है।

सन्त–सतगुरु और अच्छी कमाई वाले सतसंगी संयम में रहते हैं। इनके पास कमाल का धीरज, अनुशासन होता है। ये कुदरत के कानून के खिलाफ़ जाकर किसी भी घटना को नहीं रोकते बेशक यहाँ से चलकर वहाँ कोई एक्सिडेंट हो जाए; ये ऐसी बातों के लिए करिश्में नहीं दिखाते और न ही अपने लिए किसी ऐसी घटना को रोकने के लिए कुछ करते हैं। कुदरत के कानून के मुताबिक जो घटना घटती है ये उसे बड़ी आसानी से स्वीकार करते हैं।

अच्छी कमाई करने वाला पिछड़ी जाति का एक सेंसी महाराज सावन सिंह का नामलेवा था। उसकी पत्नी बहुत झगड़ालू थी। वह उसे बहुत ज़्यादा परेशान करती थी, उसे भजन नहीं करने देती थी कभी–कभी उसे डंडे भी मारती थी। उसने महाराज सावन के पास बातों ही बातों में बात की। अगर कोई सेवक कमाई करके सन्तों के पास कोई रूहानी सवाल पूछे तो सन्त अपनी मौज में कभी–कभी सेवक को दया–मेहर करके बता देते हैं इशारा कर देते हैं।

महाराज सावन ने उससे कहा, ''देख भई प्यारेया! तू पिछले जन्म में कौआ था और यह गधी की योनि में थी। तू इधर–उधर पेड़ो पर घूमता रहता था और यह धोबियों के पास थी। इसकी पीठ छिली हुई थी उस पर जख्म था। तू स्वाद लेने के लिए अपनी चोंच इसकी पीठ के जख्म पर मारकर पेड़ पर जाकर बैठ जाता था। देना–लेना तो हर एक को चुकाना पड़ता है। अब यह तेरी औरत

बनी और तू इसका पति बना। मेरे भाई! अगर इसी जन्म में लेखा निपट जाए तो बहुत अच्छा रहेगा।''

मैं तकरीबन 15 साल पहले कुछ दिन संगरिया में रुका था। इस प्रेमी ने अपना डेरा उठाकर किसी और जगह जाना था। उस औरत ने इसे कई डंडे मारे और उसके बाद इसके मुँह में डंडा डाल दिया। मैंने काफी कुछ देखा आख़िर में मैं वहाँ पर बैठ गया।

जब ये लोग वहाँ से चले तो मैं इनके पीछे-पीछे चल पड़ा लेकिन मैंने इन पर खुद को जाहिर नहीं होने दिया कि मैं इनके पीछे-पीछे क्यों आ रहा हूँ। मैं एक किलोमीटर तक गया आख़िर इन्होंने यह सोचा कि यह बंदा हमारा पीछा क्यों कर रहा है? इन्होंने कहा, ''रब के बंदे! तू हमारा पीछा क्यों कर रहा है क्या पूछना चाहता है या हमारी तहकीकात कर रहा है?''

मैंने कहा, ''प्यारेया! मैं यह देख रहा हूँ कि तू बिल्कुल नहीं बोलता और यह औरत इन्सानियत वाली कोई बात नहीं कर रही। तेरे मुँह में डंडा डाल रही है अगर तू मुँह खोल दे तो हो सकता है कि यह तेरा गला ही फाड़ दे।'' उन दोनों ने मुझे बिठा लिया और कहा कि आप समझदार हैं बैठ जाएं।

उसने बताया कि आज से चालीस साल पहले हमें महाराज सावन सिंह जी से नामदान मिला था। मैंने महाराज सावन को अपनी दुर्दशा बताई तो उन्होंने हमें ये कहानी बताई थी। मैं उन पर विश्वास करता हूँ। मैं इसी तरह से अपना भजन-सिमरन करता हूँ। मैं मीट नहीं खाता शराब नहीं पीता। मेरी यह हालत एक दिन की नहीं तकरीबन हर रोज़ ही थोड़ी-बहुत चलती रहती है। दूसरे-तीसरे दिन तो ज़रूर ही होती है। मैं तो अपने उस कर्म का फल दिल लगाकर भोग रहा हूँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो अंदर जाते हैं वे इस सच्चाई को समझते हैं कि परिवार और यारी–दोस्ती आपके पिछले लेन–देन के हिसाब के मुताबिक होती है। जिसके साथ आपका अच्छा लेन–देन है उसके साथ प्यार होगा और जिसके साथ पिछले जन्मों में आपका लेन–देन बिगड़ा हुआ है उसके साथ ज़रूर आपकी खटपटी होगी।

आपने मिस्टर ओबराय की किताब में सुंदरदास की कहानी पढ़ी होगी। सुंदरदास मेरे पास बीस साल रहा। वह महाराज सावन सिंह जी का खास प्यारा था। वह काफी वक्त महाराज सावन के पास रहकर सेवा करता रहा। एक दिन महाराज सावन ने मौज़ में आकर उसे बताया, ''सुंदरदास, तेरी बीवी संसार छोड़ जाएगी तेरा जवान लड़का और लड़की भी संसार छोड़ जाएंगे। तेरा दिमाग खराब हो जाएगा ऐसी हालत में तेरे हाथों से कत्ल हो जाएगा। तू उस सज़ा को भुगत लेना। तुझे बीस साल की सज़ा होगी लेकिन तू जेल में छह साल ही सज़ा भोगेगा मैं तेरी संभाल करूंगा।''

महाराज सावन ने जिस वक्त सुंदरदास को यह बात बताई उस वक्त सुंदरदास की शादी भी नहीं हुई थी। सुंदरदास शादी नहीं करवाना चाहता था क्योंकि उसे घटना का ज्ञान था। सुंदरदास बताया करता था कि मैंने महाराज सावन से हँसकर कहा था, ''जी! मैं शादी ही नहीं करूँगा तो फिर ऐसी हालत क्यों होगी।''

समय आने पर इस तरह के हालात बन गए कि उसके परिवार वालों ने कहा कि तू शादी कर नहीं तो हम परिवार के पाँचों सदस्य कूँए में कूद रहे हैं इसलिए उसे शादी करनी पड़ी और सारी घटनाएँ घटी। वह अडोल रहा। उसने परमात्मा के भाणे को मीठा करके माना। उसे आखिरी वक्त तक इस घटना का ज्ञान था।

सुंदरदास की राजा फरीदकोट के साथ अच्छी मेल–मुलाकात थी। उसे सारी कहानी का पता था कि बाबा का दिमाग ठीक नहीं था, इसके घर में बहुत कुछ गुज़र चुका है। सुंदरदास ने जज से कहा, ''जब मैंने कत्ल किया है तो तुम मुझे सज़ा क्यों नहीं देते?'' सुंदरदास ने जज को बताया कि मेरे गुरुदेव ने मुझे बताया हुआ है कि मुझे बीस साल की सज़ा होगी लेकिन मैं छह साल ही काटूँगा।

जब हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ उस समय हिन्दुस्तान में बीस साल की सज़ा वाले कैदियों को माफ़ी के तौर पर रिहा किया गया। उस वक्त सुंदरदास के जेल में छह साल हुए थे। जब वह अपनी सज़ा काटकर वापिस आया उस समय मैंने अपनी आँखों से जो उसका हाल देखा है उसका ज़िक्र किताब में किया गया है।

सुंदरदास बहुत अच्छा अभ्यासी था। सुंदरदास मेरे साथ अभ्यास किया करता था। एक दिन अभ्यास करते समय उसकी टाँग जल गई। उन दिनों हमारी आठ घंटे की बैठक हुआ करती थी। तब उसने अभ्यास से उठकर यही कहा, ''आज अभ्यास में जितना रस आया है उतना ज़िंदगी में कभी नहीं आया।'' जबकि उसे ज़्यादा से ज़्यादा तकलीफ थी। उस किताब में सुंदरदास का इंटरव्यू बयान किया गया है जिसमें सुंदरदास ने हुज़ूर कृपाल के सामने अंदर के नजारे बताए हैं।

मैं हमेशा ही प्रेमियों को सन्तबानी मैगज़ीन पढ़ने के लिए कहा करता हूँ। मैगजीन में ऐसे बहुत से सतसंग और सवाल–जवाब छप चुके हैं। मैं जब पिछले टूर पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका में गया तब मैंने थोड़ा–थोड़ा करके काफी कुछ अंदर के मंडलों के बारे में बयान किया था कि हम गुरु की दया के बिना सतसंग में नहीं जा सकते नाम प्राप्त नहीं कर सकते। किस तरह गुरु हमारे साथ होते हैं।

गुरु नामदान देते वक्त हमारे ऐसे कर्म काटते हैं जो कि हमें अंदर जाने में बाधा डालते हैं फिर हम तरक्की भी करते जाते हैं। जब हम अपने ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करते हैं तब जिस गुरु ने हमें नाम दिया होता है, वह हमसे पहले ही वहाँ खड़े होते हैं। हम जैसे–जैसे ऊपर वाले मंडलों में जाते हैं वे वैसे–वैसे हमारी आत्मा को कर्मों के बोझ से हल्का करते जाते हैं।

मैंने यह भी बताया था कि ज़्यादा अरसा त्रिकुटी में रहकर अभ्यास करना पड़ता है। वहाँ संचित कर्मों का खज़ाना जमा होता है वहाँ हमारी आत्मा साफ़ हो जाती है। जिस तरह हम थ्रेशर के अंदर गेहूँ के दाने निकालते हैं तो तूड़ी एक तरफ़ और दाने एक तरफ़ हो जाते हैं। उसी तरह बुरे कर्मों का असर आत्मा से उतर जाता है और हमारी आत्मा ऊपर कारण मण्डल में दाखिल होती है।

हम अंदर के मंडलों से बिल्कुल नावाकिफ होते हैं अगर सतगुरु साथ न हों तो हम कभी भी अंदर नहीं जा सकते। यह कहने की बात नहीं इसे बयान नहीं किया जा सकता। हम जैसे–जैसे सूक्ष्म, महासूक्ष्म के ऊपर के मंडलों में जाते हैं तब खुद ही अपनी आँखों से देखते हुए जाते हैं। शुरू में हमारी आत्मा सचखंड से आई थी हम जब तक सचखंड नहीं पहुँच जाते सन्त हमारा साथ नहीं छोड़ते। वहाँ सन्त हमारी आत्मा को परमात्मा के आगे खड़ा करके यही अरदास करते हैं, ''यह तेरा जीव है। भूल गया था माफी माँगने के लिए आया हैं।''

स्वामी जी महाराज ने कहा था अगर आप जीते जी प्रेक्टिकल करना चाहते हैं, देखना चाहते हैं, मसला हल करना चाहते हैं तो यह आपकी बहादुरी है लेकिन अंदर जाने के लिए सबसे पहले गुरु की दया प्राप्त करें। आज हम संगत में अपनी–अपनी कमाई के

हिसाब से ही भरोसा रखे बैठे हैं, श्रद्धा बनाकर बैठे हैं। जिनकी कमाई ज़्यादा है उनकी ज़्यादा श्रद्धा बन जाती है क्योंकि वे थोड़ा-बहुत सच्चाई को देखते रहते हैं। वे सचखंड पहुँचकर गुरु के ऋणी हो जाते हैं; उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है। जब तक हम बाहर बैठे हैं तब तक मन कई बार अभाव ला देता है खुष्क कर देता है।

प्यारेयो! सब सन्त यही बताकर गए हैं कि यह संसार कर्मभूमि है। हमें कर्मों का भुगतान करने के लिए ही यह शरीर मिलता है। हम इसमें बैठकर अपने अच्छे-बुरे कर्मों का भुगतान कर रहे हैं। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को बताया था कि न तो अच्छे कर्म देह के बंधनों से मुक्त करवा सकते हैं और न ही बुरे कर्म देह को मुक्त करवा सकते हैं। बुरे कर्मों को लोहे की बेड़ियाँ और अच्छे कर्मों को सोने की बेड़ियाँ कहकर बयान किया है; बेड़ी आखिर बेड़ी होती है। मुक्ति नाम में है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दद्दा दोष ना दीजै काहूँ दोष कर्मां आपणयाँ।
जो मैं कीता सो मैं पाया दोष ना दीजै अवर जना।।

हमें चाहिए कि हम श्रद्धा प्यार से सन्तों के बताए हुए रास्ते और युक्ति के मुताबिक 'शब्द-नाम' की कमाई करें। अंदर जाएं ताकि हम इस कर्मों की कैद से जीते जी ऊपर उठें और अपने सतगुरु की खुशियाँ प्राप्त करें।

***

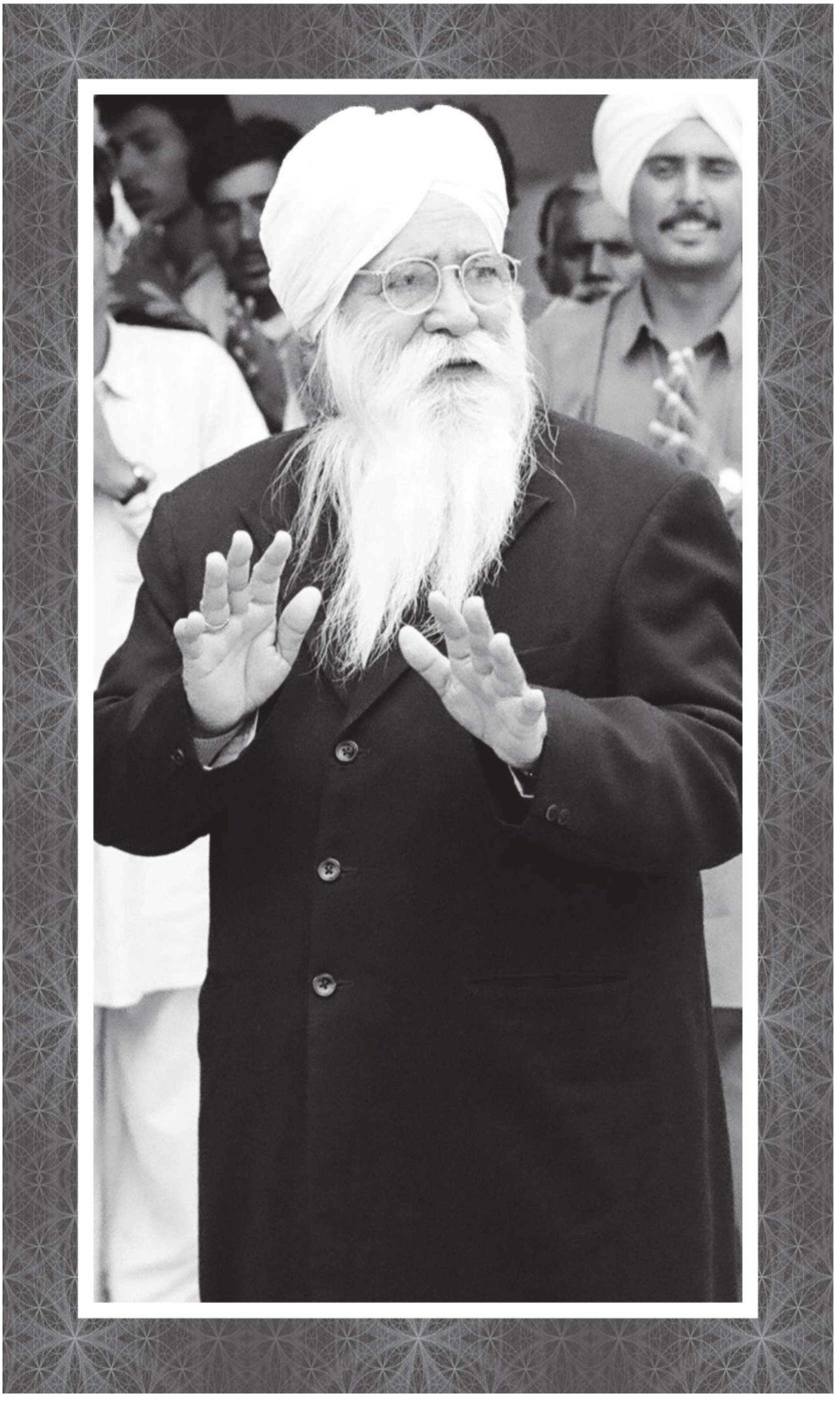

41

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सच्चे दिल से माफी

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 26 मार्च 1989

सेवक : *किसी व्यक्ति ने मेरे दिल को बहुत ज़्यादा दुखाया है, उसने जो कुछ भी किया है मैं चाहता हूँ कि मैं उसे भूल जाऊं उसे माफ कर दूँ लेकिन मैं उसे किस तरीके से सच्चे दिल से माफ कर सकता हूँ? क्या आप मुझे यह समझाने में मेरी मदद करेंगे?*

बाबा जी : हाँ भई! यह सवाल हर सतसंगी के लिए समझना बहुत ज़रूरी है। माफ करना सन्तमत का एक बड़ा अंग है। जब हम किसी को माफ कर देते हैं तब हमारे स्वपन में भी यह नहीं आना चाहिए कि मैंने उसे माफ किया है।

अगर हम बार–बार दिल में लाएँगे कि मैंने उसे माफ किया है तो हो सकता है कि हमारा मन हमें धोखा दे जाए। हम अहंकार में भी आ सकते हैं यह भी हो सकता है कि हम उस इन्सान को रोज़ कहना शुरू कर दें कि देख भई! मैंने तुझे माफ किया है अगर सच्चे दिल से माफी दे दी है तो उसे भूल जाना अति ज़रूरी होता है।

पहली बात तो यह है कि सतसंगी को सदा ही गुरु का स्वरूप आँखों के आगे रखना चाहिए। आप माफ करने वाले बनें ही न अगर बनेंगे तो अहंकार आएगा क्योंकि हम जीव इतनी ताकत वाले नहीं जो किसी को माफ कर दें। आप यह समझें कि हमारे अंदर यह गुरु की दया है जिसने इसे माफ किया है। आप यह क्रैडिट ही न

लें। अच्छा तो यही होगा कि आप बैठकर भजन–सिमरन करें गुरु का धन्यवाद करें विनती करें कि गुरु हमें भी क्षमा दे जैसे हमारे अंदर बैठकर इसे दी है।

मैंने एक बार स्वामी जी महाराज की बानी पर इस बारे में सतसंग दिया था। शायद कई प्रेमियों को वह सतसंग पढ़ने का मौका मिला हो। उस सतसंग में यह था अगर किसी से गलती होती है तो उसका फर्ज बनता है कि उसे बिना संकोच बिना शर्म किए माफी माँगनी चाहिए कि भई, मुझे माफ कर दे। जिसका दिल दुखाया है उसका भी फ़र्ज़ बनता है उस पर जिम्मेदारी आती है कि वह भी उसे प्रेम–प्यार से गुरु के नाम में माफ कर दे।

आत्मा कोई गलती नहीं करती। आत्मा निर्दोष है यह प्रभु की अंश है। प्रभु अभूल है और गलतियों से रहित है लेकिन हम उस वक्त ही प्रभु में गलतियाँ निकालते हैं जब हम प्रभु से दूर होते हैं, प्रभु की भक्ति नहीं करते, कहते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? हालाँकि हमें पता है कि हमारे ही कर्मों का भुगतान हो रहा है।

प्यारेयो, सारी गलतियाँ मन करता है। मन किसी को माफ नहीं करता और न ही इसके पास माफी रखी है इसलिए हम किसी को माफ नहीं करते। प्रभु ने माफी सन्तों के पास रखी है। सन्त आत्मा के अंदर शब्द–नाम का गुण रखते हैं। गलती करने वाले से भी उसके मन ने ही गलती करवाई होती है और उसका मन उसे माफ नहीं कर रहा होता। अंदर शब्द–रूप गुरु ही माफ कर रहे हैं।

सन्त अभ्यास करने पर ज़ोर देते हैं कि अपने आपको पहचानें कि आप कौन हैं, कहाँ से आए हैं। फिर आपको पता चलेगा कि हम माफ नहीं कर रहे हमारे अंदर बैठकर शब्द–रूप गुरु माफ कर रहे हैं। वही आगे से माफी माँग रहे हैं हम किस पर एहसान करें!

मैं बाईबल का इतना जानकार नहीं। आप सब प्रेमी बाईबल के बारे में अच्छी तरह जानते हैं। सच्चा इसाई वही है जो दूसरों को माफ करता है उसके लिए प्रार्थना करता है कि प्रभु तू बख्श। आपको मालूम है कि क्राईस्ट को काँटों का ताज पहनाया गया, फाँसी पर चढ़ाया गया। यह सबसे ज़्यादा दुखदाई कष्ट है नाम सुनकर भी आत्मा काँपती है। लोग इससे ज़्यादा क्या कष्ट दे सकते थे? लेकिन उस वक्त क्राईस्ट ने कहा, ''प्रभु, तू इन्हें माफ कर दे ये जो कुछ कर रहे हैं अंजाने में कर रहे हैं; इन्हें पता नहीं कि हम अपने लिए कितना बुरा कर्म कर रहे हैं।''

हम उन्हीं महापुरुषों के सेवक हैं जिनकी हम लेखनियाँ पढ़ते हैं। मैं आपको गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का इतिहास बताऊँगा कि उन्हें गर्म तवे पर बिठाया गया। उनके सिर में गर्म रेत डाली गई और भी कई अमानवीय कष्ट दिए गए। उस वक्त की हुकूमत ने उनके सामने ही उनका घर-घाट लूट लिया और उनके सेवकों को बहुत कष्ट दिए गए।

आप सोचकर देखें! अगर हमारे साथ ऐसा हो तो हमें कितना कष्ट महसूस होगा। उनके बाद चंदू सवाई ने उनके लड़के को ज़हर देकर मारने का बीड़ा उठाया। जब चंदू सवाई का अंत समय आया तो वह गुरु अर्जुनदेव जी के सेवकों के हाथ आ गया। हुकूमत आज इसकी है तो कल उसकी है। आखिर लोग मजे लेने के लिए हुकूमत के पास जाकर एक-दूसरे की बुराई करते हैं, कई बार उन्हें भुगतना भी पड़ जाता है।

उस वक्त की हुकूमत ने गुरु हरगोबिंद जी से कहा कि आप जहाँ चाहे वहाँ रह सकते हैं, अपना प्रचार कर सकते हैं। आप चाहें तो हम चंदू सवाई आपको सौंप देते हैं आप उसे खुद सज़ा दे सकते हैं।

चंदू सवाई ने जब देखा कि गुरु हरगोबिंद जी का प्रभाव बढ़ रहा है क्यों न उनसे माफी मांग कर उन्हें खुश किया जाए। सन्त रहमदिल होते हैं। गुरु हरगोबिंद जी ने कहा कि हमारे दरबार में सज़ा की कोई जगह नहीं माफी की जगह है। हम उसे दुनिया के सामने ज़रूर लाएँगे कि यह वह इन्सान है जिसने एक फ़क़ीर को इतने कष्ट दिए। गुरुदेव तो ऐसा कर सकते है लेकिन सेवकों के पास इतनी ताकत नहीं होती। आमतौर पर सेवक ज़ज्बाती होता है बदले की भावना पैदा कर लेता है।

सेवकों ने लाहौर के बाजार में चंदू सवाई के गले में संगल डालकर ऐसे घुमाया जैसे कुत्ते को घुमाते हैं। जिस भड़भूंजे(दाने भूनने वाला) से गुरु अर्जुनदेव जी के सिर में गर्म रेत डलवाई थी जब उसकी दुकान के सामने से निकले तो उस भड़भूंजे को गुस्सा आया कि चंदू सवाई ने हुकूमत के नशे में आकर मुझसे एक फ़क़ीर के सिर में रेत डलवाई थी। उस भड़भूंजे ने गुस्से में आकर वही रेत वाला कड़छा चंदू सवाई के सिर पर ज़ोर से मारा तो उसकी जान निकलने लगी। चंदू सवाई ने तड़प कर कहा *हरगोबिंद मोहे अवगत मारा* (ये मुझे मार रहे हैं आप मुझे बचाएं)। सन्तों को पुण्य करने वाला याद करे या पाप करने वाला याद करे, सन्तों के पास माफी का गुण होता है। उन्होंने आकर चंदू सवाई की संभाल की।

गुरु गोविंद सिंह जी का खास प्यारा भाई दया सिंह था उसके अंदर गुरु गोविंद सिंह जी प्रकट थे। उसने एक दिन अकेले में गुरु गोविंद सिंह जी से सवाल किया, ''चंदू सवाई ने बहुत पाप किए हैं उसने गुरु साहब को हद से ज़्यादा कष्ट दिए गर्म तवे पर बिठाया। सिर में गर्म रेत डलवाई और कौन-कौन से अमानवीय कष्ट नहीं दिए वह तो ज़रूर नर्क में सड़ रहा होगा?'' गुरु गोविंद सिंह जी ने

हँसकर कहा, ''उसे तो गुरु हरगोबिंद जी ने मुक्त करवा दिया था। उसे नर्क में नहीं जाने दिया। उसने दो गुरुओं गुरु अर्जुनदेव जी और गुरु हरगोबिंद जी के दर्शन किए हुए थे। वह गुरु अर्जुनदेव जी को दिन में रात में और सपने में भी नहीं भूलता था। उसे हमेशा गुरुओं का ध्यान बना रहा। आखिरी वक्त उसने फिर उन्हीं गुरुओं के आगे फरियाद की।''

अब आप अंदाजा लगा सकते हैं कि परमात्मा ने सन्तों के अंदर कितनी माफी रखी होती है। माफी सन्तों का श्रृंगार होता है। हम भी सन्तों के सेवक हैं हमारा भी फर्ज बनता है कि हम भी अपने गुरु को ध्यान में रखते हुए दूसरों को माफ करें। बार-बार अपने ख्यालों में यह न आने दें कि मैंने उसे माफ किया है और न कभी भूलकर उससे कहें कि मैंने तुझे माफ किया है।

मैं बताया करता हूँ कि हमें गृहस्थी में भी माफी का अंग नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे घरों में समस्याएँ इसलिए पैदा होती हैं क्योंकि पति-पत्नी इस माफी वाले अंग को नहीं अपनाते। हम एक-दूसरे को माफ करना सीख लें तो हमारी गृहस्थी भी स्वर्ग की तरह बन सकती है। जो अंदर जाते हैं उन्हें इस राज का ज्ञान होता है कि क्या हम पुण्य कमाकर गुरु के पास आए हैं? ऐसी कोई बात नहीं होती। सिर्फ उन्होंने हमें माफी दी हुई है और उन्होंने हमें प्रभु से माफ करवाया होता है।

पिछले अवगुण बक्श ले प्रभु अग्गे मार्ग पावै।

पिछले बुरे कर्मों की उन्होंने माफी दी होती है और आगे के लिए वे बताते हैं कि प्यारेयो, बुरा काम न करें, साध-संगत के साथ जुड़े रहें, शब्द के साथ जुड़े रहें। आप रोज़ देखते हैं कि सन्त-सतगुरु कभी भी अपने सेवक को यह नहीं जताते कि मैंने

तुझ पर कोई उपकार किया है। कई बार सेवक गुरु के सामने खड़े होकर कह देता है कि आपने मेरे ऊपर ये उपकार किया, आपने मेरे साथ इतना अच्छा किया मेरा इतना भला किया लेकिन गुरु फिर भी अपने गुरु को श्रेय देते हैं और कहते हैं कि प्यारेया, मुझमें तो यह ताकत नहीं थी जो किया है मेरे गुरुदेव ने ही किया है।

मथुरा भाट उस जमाने के बहुत कमाई वाले संस्कृत के बड़े पंडित थे। आपने हिन्दुस्तान में बहुत खोज़ की थी। आखिर आप गुरु रामदास जी की शरण में आए। गुरु ग्रंथ साहब में आपकी बानी आती है। मथुरा भाट कहते हैं:

हम अवगुण भरे एक गुण नाहीं अमृत छाड़ बिखे–बिख खाही।
माया मोह भरम भए भूले सुत दारा स्यों प्रीत लगाई।
एक उत्तम पंथ सुणयों गुरु संगत तहं मिलत यम त्रास मिटाई।
एक अरदास 'भाट' कीरत की गुरु रामदास राख्यो शरणाई।।

जो माता–पिता बच्चों को पालते हैं उन्हें मालूम है कि बच्चा हर वक्त गलती करता है लेकिन माता के अंदर ममता भी रखी है और माफी भी रखी है। बच्चा सारा दिन गलतियाँ नहीं छोड़ता गलती पर गलती करता है लेकिन माता के पास माफी होती है। माता उसके अपराध नहीं गिनती तुरंत ही भूल जाती है। इसी तरह सन्त भी अपने शब्द–रूप गुरु के आगे चालीस दिन के बच्चे की तरह ही रहते हैं। आप कहते हैं :

सुत अपराध करत है जेते जननी चीत ना राखस तेते।
रमैया हों बारक तेरा काहे ना खंडस अवगुण मेरा।।

मैं आशा करता हूँ कि आप इसे प्यार से समझ गए होंगे इसके बारे में और भी काफी कुछ समझाया जा सकता है।

***

42

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु की खुशी

अहमदाबाद – 12 सितम्बर 1994

***सेवक :** प्यारे सन्तजी, सिमरन करते समय क्या गुरु को याद रख कर सिमरन करना अच्छा है? क्या सिमरन करने के लिए हमें कोई मकसद लेकर चलना चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई! यह बड़ा अच्छा सवाल है। मैं आशा करता हूँ कि इस सवाल के जवाब को सतसंगी अपने दिल पर लिख लेंगे। मन हर सतसंगी के अंदर ऐसे भ्रम और ख्याल उठा देता है। सबसे पहले हर सतसंगी का दिल मजबूत होना चाहिए।

मैं हमेशा कहता हूँ कि सतसंगी का दिल फौलाद जैसा होना चाहिए तभी वह भजन–अभ्यास कर सकता है क्योंकि स्थूल दुनियां से ज़्यादा संघर्ष सूक्ष्म दुनियां में करना पड़ता है। वहाँ काल की ताकतें डराती हैं और प्रलोभन भी देती है अगर कमज़ोर दिल वाला अंदर जाएगा तो वह डरकर हट जाएगा या लोभ में फ़ँस जाएगा। कबीर साहब कहते हैं:

साकनी डाकनी बहु किलकारे।।

एक प्रेमी मुझे दर्शनों के कार्यक्रम के दौरान मिलने आया तब उसने मुझसे कहा अगर मैं सुबह तीन बजे भजन–अभ्यास के लिए उठता हूँ तो मुझे डर लगता है। मैंने उससे पूछा अगर तुझे उस समय सोना पड़े तो क्या तुझे डर लगता है? उसने कहा सोएं तो

डर नहीं लगता। फिर मैंने पूछा अगर तुझे उस समय सिनेमा देखना हो टेलिविज़न देखना हो या दफ्तर का काम करना पड़े तो क्या तुझे डर लगता है? उसने कहा फिर डर नही लगता सिर्फ भजन–अभ्यास करते समय ही डर लगता है। मैंने उससे कहा अगर तुम कमज़ोर दिल से भजन–अभ्यास में बैठते हो तुम्हें अपने गुरु के ऊपर विश्वास नहीं तो फिर तुम्हारे ऊपर डर ज़रूर हावी होगा।

प्यारेयो, भजन–अभ्यास में यही मकसद लेकर बैठें कि हम अंदर जाएंगे, गुरु को प्रकट करेंगे और गुरु से बातें करेंगे। अगर आप गुरु को याद नहीं करेंगे गुरु को अंदर प्रकट करने के मकसद से नहीं बैठेंगे तो आप किसकी भक्ति कर रहे हैं? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु गुरु गुर कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर।

चाहे हम बस में सफ़र कर रहे हैं, स्नान कर रहे हैं, शौचालय में भी बैठे हैं या कोई भी जरुरी काम कर रहे हैं हमेशा सतसंगी की आँखों में गुरु का तसव्वुर समाया रहना चाहिए और ज़ुबान पर गुरु का दिया हुआ सिमरन होना चाहिए। अगर आप अपने अंदर दुनिया का ख्याल लेकर बैठेंगे तो उससे आपको दुनिया की कोई चीज़ प्राप्त नहीं होगी और न ही आपका भजन बनेगा। जो समय दुनिया के ख्यालों मे बिताएंगे वह बेकार जाएगा।

मैं अपने पिछले गाँव की एक घटना अक्सर सतसंग में बताया करता हूँ कि उस गाँव में एक आदमी था जिसे पैसों की ज़रूरत थी। वह रोज़ पैसों की इच्छा और ख्याल लेकर भजन में बैठता था। एक दिन ऐसी मौज़ हुई कि उसे भजन में बैठे हुए अंदर दिखाई दिया कि उसके घर में एक ट्रंक है, जिसमें नोट ही नोट भरे हुए है। उसने भजन में बैठे हुए अपने लड़की को आवाज़ लगाकर कहा,

''फलानी जगह ट्रंक रखा हुआ है तू उसे खोलकर देख वह नोटों से भरा होगा। अगर मैंने अपनी आँखें खोली तो वह सारे नोट वहाँ से गायब हो जाऐंगे।'' लड़की ने जब ट्रंक खोला तो उसके अंदर कुछ नहीं निकला। वह मेरे पास आया और उसने मुझे सारी बात बताई। तब मैंने उससे कहा, ''देख प्यारेया! अगर हम सपने में लड्डू खा लें, हलवा खा लें तो क्या मुँह मीठा होता है?''

वह अपना ख्याल उस तरफ़ लेकर भजन में बैठा था उसके मन के ख्याल ने ही यह खेल रचा जिसमें कोई सच्चाई नहीं थी। प्यारेयो, दुनियावी चीज़ों का मोह अपने अंदर से निकालने के लिए ही भजन-अभ्यास किया जाता है। आपका हृदय दुनिया के पदार्थों के लिये तड़प रहा हैं उसे खाली करके उस जगह गुरु का सिमरन रखने के लिये ही भजन-अभ्यास किया जाता है।

सभी सतसंगी प्रेमियों को तीन-चार बातें याद रखनी चाहिए। मैं भजन-अभ्यास में बिठाने से पहले हमेशा याद दिलाता हूँ कि सतसंगी भजन-अभ्यास को कभी बोझ न समझें इसे प्रेम-प्यार से करें। दुनिया के संकल्प-विकल्प सागर की लहरों की तरह अंदर उठ रहे हैं इन्हें शान्त करें फिर आप सिमरन करें। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि ऐसा पल भर किया हुआ सिमरन भी बहुत महानता रखता है, आप करके तो देखें।

मैं एक वाक्या हमेशा ही बताया करता हूँ कि मुक्तसर गाँव की एक भागवंती नाम की महिला महाराज सावन सिंह जी की नामलेवा थी। उसके दिल में तड़प उठी कि भजन-अभ्यास करके गुरु को अंदर प्रकट कर लेना चाहिए। उसने मुझसे कहा, ''मैं तभी वापिस जाऊंगी जब मेरा अंदर पर्दा खुल जाएगा।'' मैंने उससे कहा, ''बहुत अच्छा।'' मैंने एक-दो महिला सेवादारों से कहा, ''यह बुज़ुर्ग महिला

है इसकी हमेशा सेवा करें।'' वह सेवादार भागवंती की बहुत सेवा करती थी उसके कपड़े भी धोया करती थी। एक दिन भागवंती ने एक औरत को बुलाने के लिए कहा जो उसके गाँव से दो मील दूर रहती थी। मुक्तसर गाँव से आई भागवंती को बातें करने की बहुत आदत थी और वह जिस दूसरी औरत को बुलाना चाहती थी उसे भी बातें करने की आदत थी। मैं उन दोनों को जानता था। मैंने उससे कहा, ''तुम अकेली ही बातें करने से बाज नहीं आती एक और बातें करने वाली औरत को बुला लोगी तो कैसे काम बनेगा?''

भागवंती तीन-चार दिन तो भजन-अभ्यास के लिए बैठी फिर चौथे दिन मुझसे कहने लगी, ''मुझे मुक्तसर छोड़कर आएं।'' मैंने उससे कहा कि तेरे बेटे तुझे यहाँ छोड़कर गए हैं। अब मेरे लिए तुझे गाँव वापिस छोड़कर आना मुश्किल है। तू तो यहाँ भजन-अभ्यास करने आई थी क्यों जाना चाहती है? भागवंती ने कहा, ''जब मैं भजन-अभ्यास में बैठती हूँ तब मेरी आँखों के सामने मेरे बेटे और घर के कारोबार आते है इसलिए मैं वापिस घर जाना चाहती हूँ।''

आप सोचकर देखें! पहले तो मन ने उसे भजन-अभ्यास के लिए उत्साहित किया कि भजन कर और अंदर का पर्दा खोलकर आ। जब भजन करने के लिए बैठी तब उसके आगे मन ने घर के कारोबार याद दिलाए। जब वह घरवालों के बारे में सोचने लगी बस! दुनियावी चीज़ों का पलड़ा भारी हो गया इसलिए वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाई। अगर वह गुरु की याद में गुरु के प्यार में भजन-अभ्यास में बैठती कि मैंने महाराज सावन सिंह जी को अंदर प्रकट करना है तब गुरु की याद का पलड़ा भारी होता उसके गुरु उसके पास आते और वह अपने मकसद को हासिल करने से पीछे न हटती।

महाराज कृपाल और परमपिता परमात्मा सावन सिंह जी दयालु थे। जब उनके दिल में दया की लहर उठती थी उस समय जो भी जिज्ञासू आकर उनसे 'नामदान' की विनती करता था तो वे उसे उसी वक्त नामदान दे देते थे।

मेरे घर में ही यह घटना घटी कि एक जिज्ञासू महाराज कृपाल सिंह जी के पास आया। महाराज जी ने मुझे उसे नाम याद करवाकर भजन में बिठाने के लिए कहा। महाराज जी चौबारे में आराम कर रहे थे। मैं उसे ऊपर दूसरे चौबारे में ले गया। मैंने उसे वहाँ भजन-अभ्यास में बिठाया और मैं भी आँखें बंद करके बैठ गया। बस! मेरे बैठने की देर थी वह शख्स वहाँ से चुपचाप उठकर मेरे दरवाजे के सामने से जो सड़क जा रही थी उस सड़क पर भाग गया। वह लगभग दो किलोमीटर दूर चला गया होगा।

जब मैंने अपनी आँखे खोली और देखा तो वह प्रेमी गायब था। मैं बड़ा परेशान हुआ कि कहीं महाराज जी तो उसे नहीं ले गए? मैं उसे ढूंढ़ता हुआ बाहर आया। मुझे उसे ढूढ़ते हुए देखकर सारे प्रेमी उसे ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर भागने लगे। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति ने बताया कि वह इस तरफ़ गया है। तब मैं जल्दी-जल्दी उस तरफ़ गया उसे वापिस लेकर आया और उससे पूछा, ''तूने यह क्या किया?'' उसने कहा, ''मुझे कुछ पता नहीं लगा कुछ समझ नहीं आया कि क्या हो गया? मैं अपने घर के कारोबार से यहाँ आया था। महाराज जी ने दया की लेकिन मैं उस दया को ग्रहण नहीं कर पाया।''

सोचकर देखें! अगर वह गुरु का ख्याल लेकर बैठता कि गुरु ने मेरे ऊपर दया की है। वह उस दया को समझता तो फल प्राप्त कर लेता लेकिन उसके मन ने उसे उसी समय धोखा दे दिया।

प्यारेयो, सतसंगी को भजन–अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को अच्छी तरह याद कर लेना चाहिए। अगर आप गुरु के दिए हुए पाँच पवित्र नामों को याद करेंगे तो आपको अपने आप ही गुरु की याद आएगी। गुरु का स्वरूप आँखों के सामने आ जाएगा। अगर आप सन्तों के कहने के मुताबिक दुनिया के संकल्प–विकल्प झाड़ू लगाकर बाहर निकाल दें तो आपको वहाँ गुरु का स्वरूप ही नजर आएगा।

आज भी जब नामदान की क्रिया करते हैं तो पप्पु और गुरुमेल अपनी आँखें बंद करके नहीं बैठते। इसी तरह जब रोज़ सुबह भजन–अभ्यास के कार्यक्रम में प्रेमी बैठते हैं तब कुछ प्रेमी सेवादार घूमते हुए आपको देखते रहते है। शुरू–शुरू में भजन–अभ्यास में बैठे हुए प्रेमी अपनी आँखें खोलकर यह देखते थे कि बाकी प्रेमी उठ तो नहीं गए!

मैं भजन–अभ्यास में बिठाने से पहले प्रेमियों को बताता भी हूँ कि जब हम यहाँ से जाएंगे तब आवाज़ देकर ही जाएंगे। आपको भजन–अभ्यास में बैठे छोड़कर नहीं जाएंगे। अब प्रेमी इस पर अमल करते हैं आराम से बैठे रहते हैं। पहले कुछ प्रेमी आँखें खोलते थे थोड़ा सा चक्कर काटकर सबको बैठा देखकर दोबारा बैठ जाते थे। मुझे खुशी है कि अब सतसंगियों को बिना हिले भजन में बैठने की आदत है। कार्यक्रम के दौरान अगर प्रेमी सतसंग से गैरहाजिर हो जाएं तो चल सकता है लेकिन प्रेमी भजन–अभ्यास के कार्यक्रम में गैरहाजिर रहें तो मैं खुश नहीं होता।

मन लागत लागत लागत है।

आप सबको पता है कि हम जिस काम को रोज़–रोज़ करते है हमें उस काम में महारत हो जाती है। मुझे खुशी है कि अब प्रेमी

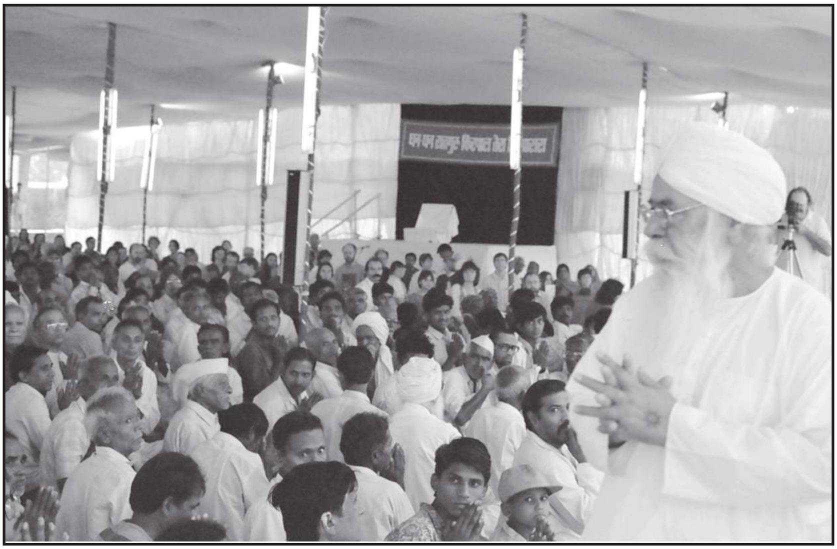

टिक कर सिमरन करते है ध्यान में एकाग्र होते है। सुबह भजन-अभ्यास के कार्यक्रम में जब मैं पाँच-छह मिनट पहले अपनी आँखें खोलकर देखता हूँ कि मेरे बच्चे खुशी से भजन-अभ्यास में बैठे होते है, तब मुझे प्रसन्नता होती है। बहुत से सतसंगी प्रेमी ऐसे भी है जिनके चेहरे पर नूर चमकता है।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि सन्तमत सच्चाई पर खड़ा है और विश्वास पर आधारित है। सन्तमत परियों की कहानी नहीं। जो कुछ परम सन्तों ने बताया है वह बिल्कुल सच है सही है।

इसलिए हमें प्यार से और पूरे भरोसे के साथ अपना भजन-सिमरन करना चाहिए। वही बेहतर आत्माएं होती हैं जो अपने गुरु के जीवनकाल में ही अपने अंदर शब्द की धारा शुरू कर लेती है। गुरु को अंदर प्रकट कर लेती है। गुरु को भी खुशी होती है कि चलो! मेरे इतने सेवक पास हो चुके हैं।

***

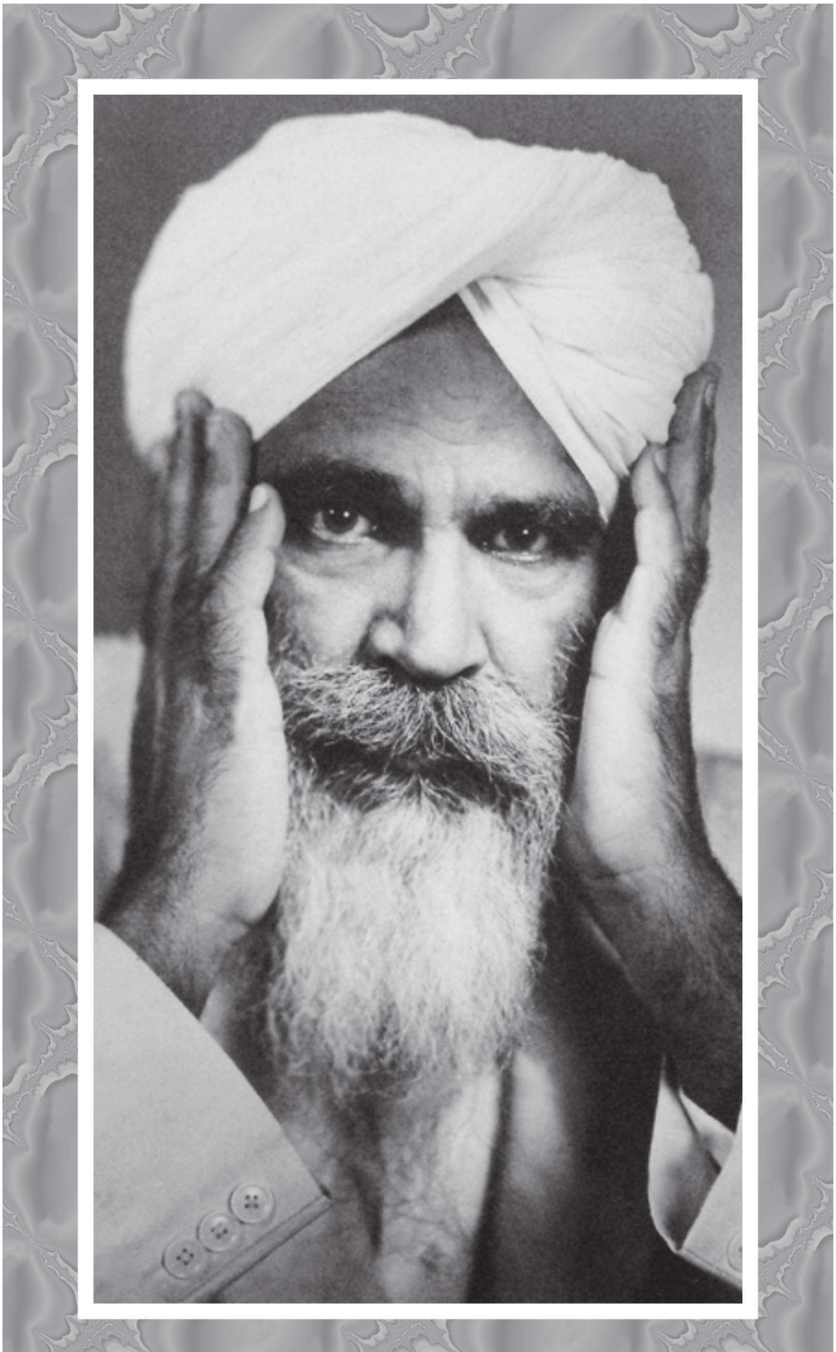

43

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

अभ्यास के बारे में सवाल–जवाब

सेवक : *अगर किसी के दिल में गुरु के दर्शनों की इतनी ज़बरदस्त तड़प उठे कि वह वहाँ जाए जहाँ उसके गुरु हैं तो उसे किस तरह पता चल सकता है कि वह सही कर रहा है या गलत कर रहा है? कल मुझे आपके दर्शन करने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आया। मैं जब पुल तक आया तब मुझे पता चला कि मैं आगे नहीं जा सकता लेकिन एक आदमी आपसे मिलने जा रहा था, उसने मुझसे कहा कि तू मेरे साथ दर्शन करने के लिए आ जा।*

उसके बाद किसी ने मुझे यह भी बताया कि तुम्हारा इस तरह जाना ठीक नहीं है फिर मैंने सोचा अगर मैं इस तरह से जाता हूँ तो शायद मैं सन्त जी के ऊपर बोझ बनता हूँ या मेरा इस तरह से जाना ठीक नहीं है। हमें कैसे पता चल सकता है कि जब अंदर दर्शनों की इच्छा होती है तब हमें आपके पास जाना चाहिए या नहीं?

बाबा जी : प्रेमी को चौबिस घंटे अपने अंदर गुरु के दर्शनों की इच्छा रखनी चाहिए। वह इच्छा ही क्या जो महीनों बाद या साल बाद जागे। महात्मा चतुरदास जी कहते हैं:

अट्ठो प्रहर तांघ दिल रेहंदी होवे किंवे जे मान सखी।
क्यों न देह दीदार होण जाईए नदियाँ चिर जदों।।

अगर आठों पहर दिल में इच्छा रहेगी तो कहीं न कहीं वह दया का सागर ज़रूर उछलता है, उनके दिल में भी तड़प उठती है।

मेरा खुद का तज़ुर्बा है कि उनके पास जाकर यह बताना ज़रूरी नहीं है कि इस वक्त हमारे दिल में गुरु के दर्शनों की तड़प है। अगर आपके दिल में तड़प है आप कहीं भी बैठे हैं वह ताकत अपने-आप ही चलकर आपके पास आ जाएगी। भले ही रात का वक्त हो, भले मकान चारों तरफ़ से बंद हो अगर हमारे अंदर तड़प उठी हो तो वह सर्वशक्तिमान ताकत उस जगह भी प्रकट होकर हमारी प्यास बुझा देती है। तकलीफ सिर्फ इतनी ही है कि हमारा मन हमें ऐतबार नहीं आने देता। हमारा मन सन्तों को देह से ऊपर नहीं समझता उन्हें सिर्फ देहरूपी मानता है।

– 22 अगस्त 1977

***

सेवक : *अगर हम ज़्यादा मेहनत करें तो यहाँ आश्रम में रहते हुए जितने दिनों के लिए हम यहाँ आते हैं क्या हम अपने सिमरन को पका सकते हैं?*

बाबा जी : हाँ! आपको पता है कि आपने कितनी पढ़ाई की है। कई बच्चे ऐसे होते हैं जो बहुत मेहनत से अपना सबक याद करते हैं। कई बच्चे इतने होशियार होते हैं कि वे बहुत जल्दी अपना सबक याद कर लेते हैं। सिमरन से हमने ख्याल को ही पलटना है।

हमारे अंदर जो संकल्प-विकल्प उठते हैं ये हमें किसी ने नहीं बताए हम इन्हें अपने आप ही ज़ारी करते हैं। सन्त हमें सिमरन बताते हैं अगर हम कोशिश करें तो ज़्यादा वक्त की ज़रूरत नहीं, आप इसे एक दिन में भी पका सकते हैं।

हम सिमरन की तरफ़ पूरी तवज़्जों नहीं देते इसलिए हम अपनी सारी ज़िंदगी इस तरफ़ ही लगा देते हैं। कभी सिमरन दस

मिनट कर लिया कभी छोड़ दिया कभी कर लिया कभी पाँच घंटे भूल गए कभी दस घंटे भूल गए। कभी हम कई–कई दिन ही भजन–सिमरन में नहीं बैठते।

सतसंगी को सिमरन की ताकत के बारे में ज्ञान नहीं कि सिमरन के अंदर कितनी ताकत है कितनी शक्ति है इसलिए सतसंगी इस तरफ़ से लापरवाह रहता है। सिमरन के अंदर बहुत शक्तियाँ हैं अगर हमारा सिमरन मजबूत होता है तो हमारे अंदर रिद्धियाँ–सिद्धियाँ जाग जाती है। सिमरन करने वाला अगर दौड़ती गाड़ी की तरफ़ हाथ कर दे तो वह गाड़ी भी रुक जाती है। जब आपका मन सिमरन के ज़रिए टिकना शुरू हो जाए आप खुद ही देख लेंगे कि सिमरन के अंदर कितनी शक्ति है फिर आप सिमरन नहीं छोड़ सकेंगे।

आपके शहर में जो करतब करके दिखाते हैं, कोई जादू वगैरहा करता है कोई बहुत हैरानी वाले तमाशे करते हैं जिससे आप अचंभे में पड़ जाते हैं, उन लोगों का मन थोड़ा बहुत एकाग्र होता है। मन की एकग्रता करके ही वे दूसरों पर प्रभाव डाल देते हैं। सन्तमत में रिद्धियों–सिद्धियों का उपयोग करना वर्जित होता है। सन्तमत में यह खेल नहीं खेला जाता। फ़रीद साहब कहते हैं:

हौण नजदीक खुदाए दे भेद न किसे दैण।

सन्त खुदा के नज़दीक होकर भी कभी किसी को यह भेद नहीं बताते कि हमारे अंदर खुदा प्रकट है अगर उनसे पूछते हैं तो वे यही कहते हैं कि भई! हम आपके दास है।

मैंने कई दफा यह कहानी सुनाई है कि इंग्लैंड से आया हुआ एक अंग्रेज रिटायर्ड मेजर था। उसने बहुत कमाल के करतब दिखाए। वह जगह–जगह करतब दिखाता फिरता था। जब वह हमारी आर्मी

में आया तो उसने बहुत करतब दिखाए। उसने कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि मुर्दे ज़िन्दा नहीं होते वे आज देख लें कि मैं मुर्दे ज़िन्दा कर दूंगा। उसने एक चिड़िया इस तरह अपने हाथ में पकड़ ली कि एक तरफ़ चिड़िया की गर्दन और एक तरफ़ उसका बाकी शरीर था। वह दूसरे आदमियों से कहने लगा कि जिसकी मर्ज़ी है इस चिड़िया के ऊपर छुरी चला दे। एक आदमी ने चिड़िया के ऊपर छुरी चला दी। उसने सबको चिड़िया की गर्दन अलग दिखाई, खून गिरता हुआ दिखाया, धड़ भी अलग दिखाया। वह फिर सबसे पूछने लगा क्यों भई! चिड़िया मर गई? सबने कहा हाँ। चिड़िया मर गई है। फिर उसने सबके सामने चिड़िया को उड़ा दिया।

फिर उसने पेड़ की लकड़ी का बूरा लिया और कहने लगा देखो! यह लकड़ी का बूरा है अगर आप कहें तो मैं इसकी चीनी बना दूं! मैं आपको इसकी गरम–गरम चाय पिला दूं? वहाँ हमारी आर्मी के बड़े–बड़े अफसर थे। उसने चाय बनाई सबने दूर से भाप निकलते हुए देखी। जब उन अफसरों ने चाय पी तो उसने पूछा क्यों भई, चाय मीठी है? अफसरों ने कहा हाँ मीठी है। फिर उसने कहा अच्छा अब और पी लो। वे जब दूसरा घूंट भरने लगे तो उनकी मूछें लकड़ी के बूरे से भर गई। वहाँ कोई चाय नहीं थी।

उसने कहा कि सब कुछ मेरी बाँसुरी के अंदर है। वह बाँसुरी बजाता और उन चीज़ों को एक लकड़ी भी लगाता था। उस वक्त मुझे भी ऐसे खेल करने की आदत थी। जब वह बाँसुरी बजाने लगा तो मैंने उसकी बाँसुरी को बंद कर दिया। उसने बाँसुरी बजाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसकी बाँसुरी नहीं बजी। आखिर उसने हमारे कमान्डर से कहा आपकी आर्मी में कोई ऐसा आदमी है जिसने मेरी बाँसुरी बंद कर दी है। मेहरबानी करके इसे छुड़ा दें।

फिर उसने बताया कि देखो भाई, अगर मैं मुर्दे को ज़िन्दा कर सकता होता तो मैं इंग्लैंड से हिन्दुस्तान न आता। वहाँ के राजा–महाराजा मुझे न आने देते। मुझे आपके सामने इतने करतब दिखाने की क्या ज़रूरत है? यह सब कुछ मैं अपने पेट की खातिर करता हूँ। मेरा मन एकाग्र है मैं जो चाहता हूँ थोड़ा बहुत कर लेता हूँ।

मेरे कहने का भाव यह है कि यह एक गुड़ियों का खेल है। सन्तमत में आने के बाद ही पता चलता है कि यह तो एक बिल्कुल ही छोटे से बच्चे का खेल है। जब आपका मन एकाग्र हो जाता है तब आप दुनिया को हैरान करने वाले करतब दिखा सकते हैं लेकिन सन्तमत में ऐसी चीज़ों की इजाज़त नहीं होती।

***सेवक** : मैं ऐसी ताकत चाहता हूँ कि मैं हमेशा आपको जब चाहूँ जहाँ चाहूँ प्रकट कर सकूं।*

बाबा जी : बस! सिमरन करें। बाबा बिशनदास जी सिमरन के बारे में समझाते थे कि सिमरन में बहुत ताकत है। बाबा बिशनदास जी ने कई करतब करके दिखाए। ब्रह्म से नीचे जो भी महात्मा हैं वे इस चीज़ में बड़ाई समझते हैं कि मैंने फलां आदमी को वर दिया उसको यह प्राप्त हुआ। फलां आदमी को श्राप दिया उसका यह नुकसान हुआ। उन्हें दूसरों के दिल का हाल बता देने में बड़ी खुशी महसूस होती है। बाबा बिशनदास जी सिमरन की वजह से ही यह सब कुछ कर सकते थे। – 5 जनवरी 1980

***

***सेवक :** अभ्यास की बैठक के दरम्यान अगर दर्द हो तो क्या सिमरन करना ही उस दर्द को बर्दाश्त करने का एक तरीका है?*

बाबा जी : मेरा ख्याल है अगर हम प्रेम–प्यार से सिमरन करें सिमरन को बोझ न समझें तो हमें दर्द का पता ही नहीं चलेगा।

सिमरन करने से आत्मा के अंदर बर्दाश्त करने की शक्ति अपने आप ही पैदा हो जाती है।

सेवक : *पिछली गर्मियों में मैंने माता मिली से बात की थी। उसने मुझे बताया कि अभ्यास में बैठते समय सारी तवज़्जो आँखों के पीछे चली जानी चाहिए और वहाँ बैठकर सिमरन करना चाहिए लेकिन ऐसा नहीं हो पाता तो क्या पहले सिमरन करके बाद में आँखों के बीच में पहुँचना चाहिए या किस तरह करना चाहिए?*

बाबा जी : अभ्यास में बैठते ही हमारी तवज़्जो दोनों आँखों के दरम्यान होनी चाहिए। प्रेमी को चलते–फिरते भी अपनी तवज़्जो दोनों आँखों के दरम्यान रखनी चाहिए। हमारे सोचने का सेंटर दोनों आँखों के दरम्यान ही है। आप जब सिमरन नहीं कर रहे होते तब भी आपका ख्याल यहीं होता है। फर्क इतना है कि हम दुनिया का सिमरन लिए बैठे हैं; सतगुरु के सिमरन को जगह नहीं दे रहे और दुनिया के सिमरन को ज़्यादा महत्त्व दे रहे हैं।

सेवक : *यहाँ सिमरन करने पर काफी ज़ोर दिया जाता है। मैं जब अभ्यास में बैठता हूँ सिमरन करता हूँ तो मुझे यही महसूस होता है कि जैसे ये पाँच विदेशी शब्द हैं जिन्हें मैं जप रहा हूँ और मुझे इन शब्दों का कोई ज्ञान नहीं है। सिर्फ मुझे यही पता है कि मेरे गुरु ने मुझे यह कहा है कि तुम इन शब्दों को जपते जाओ और ये शब्द तुम्हें दूसरे मंडलों पर ले जाएंगे। जब तक इन शब्दों की समझ न हो तो किस तरह से इन शब्दों का सिमरन लगातार हो सकता है?*

बाबा जी : समझने की बजाय आपको इन शब्दों को प्रेम–प्यार से जपना चाहिए। आप जब अंदर जाएंगे तो अपने आप ही समझ आ जाएगी। अंदर का मार्ग एक किताब की तरह आपके अंदर अपने आप ही खुल जाएगा। किसी को अंदर के बारे में कुछ

पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ती, कोई शक–संदेह की गुंजाईश नहीं रहती। हम सिर्फ उतने दिन ही शक–संदेह करते हैं जितने दिन हमें सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं होता।

सेवक : *जब हम भजन में (धुन सुनने) बैठते हैं तो क्या उस समय हमें सिमरन करना बंद कर देना चाहिए?*

बाबा जी : हाँ! एक वक्त में हम एक ही काम कर सकते हैं, दो काम नहीं कर सकते।

सेवक : *आपने हमेशा यही कहा है कि हमें प्रेम–प्यार से अभ्यास करना चाहिए। हम जब अभ्यास करने बैठते हैं तो दर्द होना शुरू हो जाता है। आपकी मौजूदगी में बैठने के बावज़ूद भी मन का विशाल घोड़ा बहुत परेशान करता है और काफी दर्द महसूस करवाता है। दर्द इतना होता है कि एक दफा अभ्यास खत्म करने के बाद दिल में यह ख्याल आता है कि फिर दोबारा अभ्यास में नहीं बैठेंगे। फिर भी आप कहते हैं कि प्रेम–प्यार से अभ्यास करना चाहिए। किस तरह से प्रेम–प्यार और श्रद्धा बनाई जा सकती है?*

बाबा जी : मन का कहना न मानें बस! प्रेम ही रह जाएगा। मन हमारा शत्रु है इस शत्रु का कहना नहीं मानना। मन कोई भी मौका अपने हाथ से नहीं जाने देता।

जिस साधु ने ज़िंदगी भर संघर्ष किया है उसे पता है कि सब्र के बगैर हम कामयाब नहीं हो सकते। आपको सब्र करके भरोसा करके प्रेम–प्यार से अपना संघर्ष ज़ारी रखना चाहिए। जब आपके अंदर मन यह कहता है कि दर्द होता है फिर से अभ्यास में नहीं बैठेंगे, उस दिन आप अभ्यास के लिए थोड़ा समय और बढ़ा दें ताकि मन फिर चालाकी न कर सके। मन को पता चल जाता है अगर मैंने फिर यही सवाल उठाया तो यह फिर ज़्यादा सज़ा देगा।

महाराज सावन सिंह जी एक मुसलमान फ़क़ीर की कहानी सुनाया करते थे कि वह बाजार से निकल रहा था। बाजार में एक आदमी खजूर बेच रहा था। मन ने कहा कि खजूर खानी है। फ़क़ीर ने कहा कि पैसे नहीं हैं। मन ने कहा कि जंगल से लकड़ियाँ उठाकर लाते हैं लकड़ियाँ बेचकर उन पैसों से खजूर खरीदेंगे। फ़क़ीर बस्ती से काफी दूर चला गया। मन ने कहा कि काफी दूर आ गए हैं। फ़क़ीर ने कहा और दूर चलते हैं वहाँ अच्छी लकड़ियाँ मिलेंगी, काफी दूर चले गए; लकड़ियों का बहुत भारी बोझ बनाया।

आखिर बाजार में आकर लकड़ियाँ बेचकर खजूरें खरीद ली। मन ने कहा खजूरे यहीं खा लेते हैं। फ़क़ीर ने कहा तुझे एकांत में ले जाकर खजूरें खिलाता हूँ। फ़क़ीर ने कहा देख! आज तूने खजूरें माँगी है। कल तू कुछ और माँगेगा। फिर तू बीवी माँगेगा फिर बच्चे हो जाएंगे फिर तो मैं तेरा ही पालन–पोषण करता रहूँगा और मैं भजन किस समय करूँगा?

वहाँ से कोई राहगीर निकल रहा था। फ़क़ीर ने राहगीर से कहा भई, ये खजूरें ले जा। फ़क़ीर ने मन से कहा अब मैं तुझे ठीक से समझाता हूँ। फ़क़ीर ने साल भर मन को गर्म पानी पिलाया और उससे बहुत भजन करवाया।

जब मैं आर्मी में था मैं बाबा बिशनदास जी के पास गया। बाबा बिशनदास जी मेरे पहले गुरु थे उन्होंने मुझे 'दो–शब्द' का भेद दिया था। मैं उनके बारे में काफी कहानियाँ बताता रहता हूँ क्योंकि मेरी ज़िंदगी को बनाने वाले वह बहुत अच्छे महात्मा थे। वह आमतौर पर सुबह एक बजे उठकर खुश होते थे और मुझे भी उस वक्त उठाकर उन्हें खुशी होती थी। मैं जब छुट्टियों में आया मेरे मन ने सोचा आज बाबा जी भजन करवाएँगे। अगर भजन ही

करना है तो छुट्टियों में यहाँ आने का क्या फायदा? हिन्दुस्तान में दिसम्बर का महीना काफी सर्दी का होता है। उन्होंने सुबह आवाज़ लगाई, ''उठ भई अजायब सिंह!'' मैंने कहा, ''मुझे अभी उठने की क्या ज़रूरत है आप तो उठे हुए हैं।'' बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''मेरे साथ आ।'' मैं उनके साथ चला गया।

जहाँ बाबा बिशनदास जी रहते थे उनके डेरे के पास एक तालाब हुआ करता था। बाबा जी ने मुझसे कहा, ''नज़दीक आ जा।'' नज़दीक जाते ही उन्होंने मुझे पकड़ा। मुझे पता चला कि अब ये मुझे पानी में डालेंगे। मैंने कहा मुझे कपड़े उतार लेने दें। आपने कहा नहीं। आपने कपड़ों समेत ही मुझे पानी में धकेल दिया। जिस तरह चूहा पानी में भीगकर बाहर आता है उसी तरह मैं बाहर निकल आया और ठंड से काँपने लगा।

तब बाबा जी ने मुझसे कहा, ''देख! अब तेरा आलस दूर हो गया।'' उस दिन हद थी। उसके बाद मैं सुबह कभी नहीं सोया। मैं यही कहा करता हूँ कि सुबह का सोना मेरी तकदीर में नहीं है।

महात्मा हमें थोड़े में ही समझा देते हैं। बाबा बिशनदास जी के समझाने का यही मतलब था अगर मन आलस पैदा करता है तो मन को सज़ा दें। मन के साथ संघर्ष करें अगर संघर्ष नहीं करेंगे तो आपका यह दुश्मन आपको रोज़–रोज़ ही भजन से दूर कर देगा।

– 28 अक्टूबर 1980

***

सेवक : *आप हमेशा ही हमें यह आदेश देते हैं कि मन को शान्त करें, मन के अंदर दुनिया के संकल्प–विकल्प उठने न दें एकाग्रता से सिमरन करें। मैं अपनी तरफ़ से आपके आदेश अपने मन को भेज देता हूँ। पता नहीं मेरा मन इन आदेशों का पालन क्यों*

नहीं करता? मेरा मन या तो उन आदेशों को स्वीकार नहीं करता और अगर आपके आदेशों को स्वीकार करता है तो इनके ऊपर अमल करने की कोशिश नहीं करता। तब मुझे क्या करना चाहिए?

बाबा जी : मन को धीरे–धीरे संदेश भेजते रहेंगे तो वह एक दिन ज़रूर मान जाएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

मन मानत मानत मानत है।

सेवक : *जब हम अपने कान को अंगूठों से बंद करते हैं अगर ज़ोर से बंद करते हैं तो अंदर की आवाज़ अलग आती है अगर हल्का बंद करते हैं तो अंदर की आवाज़ अलग आती है। कौन सा दबाव ठीक है, कितने दबाव से कान बंद करने चाहिए?*

बाबा जी : असल में हर व्यक्ति का अपना–अपना मसला होता है। जिसको जैसा फिट बैठे वैसा कर लेना चाहिए। शुरू में आपको कान बंद करने पड़ते हैं लेकिन जब आपका सिमरन पूरा हो जाता है, फैला हुआ ख्याल सिमरन के ज़रिए इकट्ठा होकर तीसरे तिल पर टिकने लग जाता है फिर आपको कान बंद नहीं करने पड़ेंगे, ऊपर से आवाज़ अपने आप आपके अंदर आने लग जाएगी।

हम कान इसलिए बंद करते हैं कि हमें जन्म–जन्मांतर से बाहर की आवाज़ सुनने की आदत पड़ी हुई है। हम बाहरमुखी हो चुके हैं। हमें ऐसा लगता है कि आवाज़ बाहर से आ रही है लेकिन आवाज़ बाहर से नहीं ऊपर दोनों आँखों के बीच में से आ रही है। यह आवाज इतनी जोरदार होती है यह सिर्फ आपको ही सुनाई देगी आप समझेंगे जैसे यह आवाज़ तीस मील दूर तक लोगों को सुनाई दे रही होगी लेकिन यह सिर्फ आपको ही सुनाई दे रही होगी।

हमारी यह हालत है कि हम सिमरन पर ज़ोर नहीं देते। हमारा ख्याल बाहर फैला होता है। हम शब्द सुनने बैठते हैं लेकिन हमारा

ख्याल बाहर फिरता है। शब्द सुनाई तो देता है लेकिन वह हमें ऊपर नहीं खींचता। आत्मा को खींचने वाली, मुक्ति देने वाली शक्ति 'शब्द–धुन' है। शब्द पर सवार होकर ही हमारी आत्मा सचखंड जा सकती है।

पुराने ज़माने में सन्त नाम दो हिस्सों में बाँटकर देते थे। पहले सिमरन देते थे और जब सेवक का सिमरन पक जाता था तो फिर धुन देते थे। कई बार ऐसा होता था कि सिमरन पकाने से पहले गुरु चोला छोड़ जाता था या सेवक चोला छोड़ जाता था। जिससे सेवक का काम अधूरा रह जाता था। इसलिए कबीर साहब और गुरु नानकदेव जी ने जीवों पर ऐसी दया की कि वे उन्हें इकट्ठा ही नामदान देने लगे सिमरन के साथ धुन भी देने लगे।

हमारे प्रेमी सतसंगियों को पता नहीं कि सिमरन के अंदर कितनी शक्ति है और सिमरन करना हमारे लिए क्यों ज़रूरी है। हम बारह या चौदह घंटे जागते हुए दुनिया का सिमरन करते हैं। जब हम आठ–दस घंटे सोते हैं तो उस वक्त भी हम दुनिया का ही सिमरन करते हैं और हमें उसी के सपने आते हैं। हम सोते हुए और जागते हुए भी दुनिया का सिमरन करते हैं। हमें न सोते हुए चैन है न जागते हुए चैन है। संकल्प–विकल्प उठते ही रहते हैं।

अगर आप पाँच छह घंटे नाम का सिमरन करें फिर भी दुनिया का पलड़ा भारी रहेगा। हम लोग कितना सिमरन करते हैं? कोई दो घंटे कोई ड़ेढ घंटा कोई भाग्यशाली जीव ही तीन घंटे बैठता है। एक आसन में चौकड़ी लगाकर कोई नहीं बैठता। दिन में कई बार कभी एक घंटा तो कभी आधा घंटा बैठ गए। बैठने से पहले घड़ी देख लेते हैं। अगर हम एक घंटा बैठते हैं तो क्या उस एक घंटे का लेखा–जोखा किया है कि उस एक घंटे में कितनी बार हमारे

अंदर दुनिया के ख्याल आए, हमने कितनी बार सिमरन किया और कितनी बार मन ने हमें सिमरन से हटाया?

मैं सन्तबानी आश्रम शम्स और ननैमो में भी देखता रहा हूँ कि जो प्रेमी घर में अभ्यास नहीं करते वे यहाँ आकर देखा–देखी अभ्यास में बैठते थे। जब अभ्यास में बैठे थोड़ी देर हो जाती थी तो वे सो जाते थे। जब सोए हुए प्रेमियों की नींद खुलती थी तब उनके दिल में ख्याल आता था शायद! हमारे साथ वालों ने तो नाश्ता कर लिया होगा तब वे जल्दी से उठते थे और उठकर देखते थे कि सब लोग तो बैठे हैं फिर वे चारों तरफ़ चक्कर लगाकर देखकर आते और फिर अभ्यास में बैठ जाते।

मैंने अगले दिन अभ्यास से पहले बोला कि किसी ने बीच में नहीं उठना। मैं आपसे वायदा करता हूँ कि मैं सबको उठने के लिए बोलूंगा। कोई भी आदमी अकेले नाश्ता करने नहीं जाएगा। जो प्रेमी घर में अभ्यास करते थे उन्हें जब भजन से उठने के लिए बोला जाता था वे तभी उठते थे। उन्हें अगर और भी दस मिनट बिठाए रखता तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे शान्त बैठे रहते।

हर सतसंगी को सिमरन पर बहुत ज़ोर देना चाहिए। सिमरन की महानता को समझना है कि सिमरन करना क्यों ज़रूरी है और दुनिया के ख्यालों को भूलना क्यों ज़रूरी है।

सेवक : *अभी आपने बताया कि हमें सिमरन करना चाहिए। आपने हमें पहले भी बताया था अगर सिमरन करते समय एकाग्रता न हो तो सिमरन करने से फायदा नहीं होता; सिमरन करने से एकाग्रता किस तरह से होती है?*

बाबा जी : भई! सिमरन करेंगे तो एकाग्रता अपने आप ही आ जाएगी। साथ में मन और आत्मा भी एकाग्र होंगे।

सेवक : *आपको पता ही है कि हम पश्चिमी देशों में रहते हैं। पश्चिमी समाज में धन और दुनियावी वस्तुओं को जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानने की प्रवृत्ति है। वहाँ हमें रोज़ाना ज़िंदगी में काम, विषय, आसक्ति वगैरहा ज़्यादा देखने को मिलती है। हम सब पश्चिमी देशों से है इसलिए मैं महसूस करता हूँ कि हम लोगों के लिए यहाँ के लोगों के मुकाबले यह रास्ता काफी मुश्किल है।*

आप अभी एक बार पश्चिम में जाकर आए हैं। आपको वहाँ के लोगों का रहन–सहन देखने का मौका मिला है और आपने वहाँ की काफी जिंदगी भी देखी है। क्या आपकी राय में हिन्दुस्तानी लोगों की तुलना में पश्चिमी लोगों के लिए यह रास्ता ज़्यादा मुश्किल है या दोनों के लिए एक समान है?

बाबा जी : यह तो मैं मानता हूँ और मुझसे वहाँ भी एक प्रेमी ने इस तरह का सवाल किया था तो मैंने उसे सुखदेव मुनि और राजा जनक की कहानी सुनाई थी। सुखदेव मुनि ने राजा जनक के पास जाकर नाम की विनती की थी। राजा जनक ने सुखदेव मुनि को एक तेल का कटोरा भरकर दे दिया और शहर का चक्कर लगाने के लिए कहा और साथ ही यह भी कह दिया अगर तेल का कटोरा कहीं भी गिर गया और तेल बिखर गया तो नाम नहीं मिलेगा। एक नंगी तलवार वाला आदमी उसके पीछे लगा दिया उस आदमी से कहा जहाँ तेल गिर जाए वहाँ इसकी गर्दन काट देना।

राजा ने शहर के अंदर जगह–जगह मुजरे लगवा दिए। जब मौत सामने दिखे तो मुजरे अच्छे नहीं लगते। जब सुखदेव मुनि सारे शहर का चक्कर लगाकर आ गया तब राजा जनक ने पूछा, ''सुखदेव मुनि, क्या देखा शहर में क्या हो रहा था?'' सुखदेव मुनि ने कहा, ''सच्चाई तो यह है अगर मैं इधर–उधर ध्यान देता

तो तेल गिर जाता और यह तलवार से मेरी गर्दन काट देता। आपने नाम नहीं देना था तो मैं बिना नाम के वापिस चला जाता।

मेरे कहने का भाव यह है कि पश्चिम के अंदर भले कुछ भी है जिन्होंने नाम जपना है, अपने आपको सुधारना है उन लोगों के लिए इन चीज़ों का कोई फर्क नहीं पड़ता। आपको नाम मिला है आप सतसंग में हाज़री लगाते हैं आपके ऊपर भगवान ने बहुत दया की है। आपको अपना–आप सुधार लेना चाहिए।

– 31 अक्टूबर 1980

***

सेवक : *अभ्यास करने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि हम अपनी मनोवृत्ति और स्वभाव को अच्छा बनाएं। हमारे अंदर हमेशा ही अभ्यास करने के लिए तड़प होनी चाहिए। आप भी हमेशा यही कहते हैं कि अभ्यास को बोझ न समझें। फिर भी मन यह महसूस करता है कि अभ्यास बहुत ज़बरदस्त बोझ है। ऐसा कौन सा अच्छा तरीका है जिससे हम अपने मन को यह महसूस ही न होने दें?*

बाबा जी : प्यारेयो, आपको पता ही है कि हमारा मन हठीला दुश्मन है, यह काल का एजेंट है। इसकी ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा गुरु–भक्ति करने न पाए। यह अपने मालिक के हुक्म का पालन करता है हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम अपने सतगुरु के हुक्म का पालन करें। जब हमारा मन महसूस कराता है कि अभ्यास एक बोझ है उस वक्त हमारा फर्ज़ बनता है कि हम मन की बात न सुनें गुरु की बात सुनें। जो गुरु कहते हैं वह करें।

सेवक : *प्यारे महाराज जी, क्या सिमरन करते वक्त हम गुरु के स्वरूप की कल्पना कर सकते हैं?*

बाबा जी : अगर हम प्रेम–प्यार से सिमरन करते हैं तो गुरु स्वरूप की कल्पना किए बगैर ही गुरु का स्वरूप वहाँ प्रकट हो जाता है और हमारे अंदर निवास करने लग जाता है। सिमरन गुरु स्वरूप को प्रकट करने का साधन है।

आमतौर पर जैसे हम किसी चीज़ को याद करते हैं तो उसकी शक्ल अपने आप ही हमारी आँखों में बस जाती है। इसी तरह जब हम सतगुरु का दिया हुआ सिमरन करते हैं तो वह स्वरूप हमारे अंदर टिकना शुरू हो जाता है, अपने आप ही आना शुरू हो जाता है। अगर हम अपने आप ही गुरु स्वरूप की कल्पना करने की कोशिश करते हैं तो कभी आँखों का ध्यान करते हैं कभी पगड़ी का ध्यान करते हैं लेकिन पूरा चेहरा नहीं बनता। इससे हमारे अभ्यास में बाधा पड़ती है और हमारी अभ्यास में तरक्की नहीं होती। इसलिए बेहतर यही है कि हम प्यार से सिमरन करें अगर हम प्यार से गुरु को याद करेंगे तो उनका स्वरूप अपने आप ही हमारे अंदर प्रकट होने लगेगा।

– 31 मार्च 1981

***

सेवक : *मेरा मन बहुत शक्तिशाली बहुत चालाक और लक्ष्यवेधी भी है। यह अपनी चालाकियों से मुझे परेशान करता रहता है। मैं लालच में घिर जाता हूँ यह मुझ पर हर तरफ़ से हमला करता है जिसका मुझे लगातार मुकाबला करना पड़ता है। जब मैं आपको सिमरन करते हुए सुनता हूँ और जब मैं उसी प्रकार से सिमरन करता हूँ, गुरु को याद करता हूँ तब मुझे यह महसूस होता है कि मैं इन चालाकियों और इन हमलों पर थोड़ा बहुत काबू पा लेता हूँ। जबकि मुझे गुरु के ऊपर पूरा भरोसा है लेकिन ये लालच इतने सारे होते हैं कि मुझमें इतना आत्मविश्वास नहीं है। मेरा सवाल यह*

है कि जब हम यहाँ से चले जाएंगे, आपकी दया से दूर चले जाएंगे क्या तब भी हम अपने संघर्ष में कामयाब हो सकेंगे? क्या तब भी हम मन की इन चालाकियों को थोड़ा बहुत कम कर पाएंगे?

बाबा जी : निःसंदेह सतगुरु एक सैकिंड के लिए भी सेवक को अकेले नहीं छोड़ते। जिस तरह इन्सान की परछाई हमेशा उसके साथ होती है उसी तरह गुरु भी सेवक के साथ होते हैं। फर्क सिर्फ इतना ही होता है कि गुरु पूरे प्रेम–प्यार के बगैर सामने नहीं आते। सेवक और गुरु के बीच पर्दा बना रहता है। अगर आप मजबूत होकर भजन–सिमरन करेंगे और इस पवित्र यात्रा को याद करेंगे तो आपको ज़रूर मदद मिलेगी और आपके अभ्यास में तरक्की होगी।

सेवक : *सन्तों की बानी में यह लिखा गया है कि सन्तों की धूड़ी में स्नान करना चाहिए। जिस तरह से यह कहा गया है शाब्दिक रूप में इसका क्या अर्थ लेना चाहिए? वास्तव में सन्तों की धूड़ी में स्नान करना चाहिए या इसका कोई और मतलब है?*

बाबा जी : सन्तों की बानी में इस धूड़ी (चरणों की धूल) का बहुत ज़िक्र आता है, इसकी बहुत महानता है। हमारे शरीर के नौ द्वार बाहर दुनिया की तरफ खुलते हैं और दसवां द्वार अंदर की तरफ़ खुलता है। जब हम ये नौ द्वारे खाली करके दसवें द्वार को खोल लेते हैं तब आगे सन्तों की धूड़ी मिलती है। यहाँ हम सन्तों के चरणों में पहुँच जाते हैं। दसवें द्वार में जो मानसरोवर है यह उसकी तरफ़ इशारा है कि वहाँ पहुँचें और स्नान करें। तुलसी साहब ने कहा है:

छिन छिन सुरत समार लार बिरके रहो, तन मन अर्पण मांझ साज सुरते गहो।
लगन लगे लख बार तब पाया अरे हाँ रे सन्त चरण की धूड़ नूर दरसाया।।

हम बाहर भी सन्तों की धूड़ी को नमस्कार करते हैं। अगर हमें बाहर धूड़ी न मिले तो हमारे अंदर शौक ही पैदा नहीं होता हम उसे अंदर प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा था:

नानक दास एह सुख माँगे, मोको कर सन्तन की धूड़ी।

सन्तों की धूड़ी बहुत ऊँची चीज है। सन्तों की धूड़ी में स्नान करना या सन्तों की धूड़ी को प्राप्त करना बहुत ऊँचे कर्मों की वजह से ही नसीब होता है।

हिन्दुस्तान में अड़सठ तीर्थ बहुत मशहूर हैं। गुरु रामदास जी महाराज ने अपनी बानी में लिखा है कि सब तीर्थ साधुओं की धूड़ी के लिए लोचते हैं। तीर्थ कहते हैं कि हमारे अंदर भोगी, कामी, शराबी लोग नहाते हैं, हम मैल और पापों से भरे पड़े हैं। अगर कमाई वाले महात्मा हमारे तीर्थ पर आएं, उनकी धूड़ी हमारे अंदर आकर गिरे और हमें उनके चरणों को स्पर्श करने का मौका मिले तो हमारे सारे पाप–मैल धुल जाएंगे।

एक बार मैंने बाबा बिशनदास जी के आगे विनती की कि मेरा दिल करता है कि मैं भी हरिद्वार जाऊं। वहाँ काफी लोग जाते हैं। बाबा बिशनदास ने कहा अगले साल पर्व लगेगा तो मैं तुझे हरिद्वार ले चलूंगा। सन्तों की हर बात के पीछे राज होता है।

हम हरिद्वार गए। वहाँ रात के वक्त एक औरत आई। उसके चेहरे पर तेज़ था। उसने बाबा बिशनदास जी से कहा, ''मैंने आपके चरण धोकर पीने है।'' बाबा बिशनदास जी ने उससे कहा, ''मेरे पास इतनी कमाई नहीं कि मैं तुझे चरण धोकर पीने का मौका दूं।'' उसने बहुत मिन्नतें की। मैं यह सारा कौतुक देखता रहा।

सुबह मैंने बाबा जी से पूछा,''वह औरत कौन थी? मैंने पहले कभी उस औरत को आपके पास आते हुए नहीं देखा।'' बाबा जी ने कहा,''जिसके पास तू आया है यह वह गंगा है। लोग इसमें स्नान करने के लिए आते हैं लेकिन ये साधुओं के आगे मिन्नतें करती है कि इसे किसी भी तरह साधु के चरणों की धूड़ी मिल जाए।

इसी तरह गुरु अंगददेव जी के इतिहास में आता है। आप देवी के उपासक थे और उस इलाके के ग्रुप लीडर भी थे। पहले आपका नाम भाई लैहणा था। भाई लैहणा लोगों को इकट्ठा करके देवी के दर्शनों के लिए ले जाते थे। एक दफा आपका मिलाप गुरु नानकदेव जी के किसी सतसंगी के साथ हुआ।

उस सतसंगी ने आपसे सीधा सवाल किया कि आप जिस देवी के दर्शनों के लिए जाते हैं क्या वह आपको कभी मिली है? उनके दिल में ख्याल आया कि हम लोग आमतौर पर एक अंधविश्वास बनाकर बैठ जाते हैं। हमें उससे फायदा हो या न हो हम उस तरफ़ चलते जाते हैं। उस सतसंगी ने कहा कि गुरु नानकदेव जी करतारपुर गाँव में हैं। जब आप देवी के उत्सव में कांगडे की तरफ जाएंगे तो करतारपुर गाँव आपके रास्ते में पड़ेगा।

भाई लैहणा ने जब गुरु नानकदेव जी के दर्शन किए और गुरु नानकदेव जी की बातें सुनी तो गुरु नानकदेव जी की तस्वीर उनके दिल में बस गई। अब भाई लैहणा ने दिल में तय किया कि आज यहीं रुका जाए। उन्होंने अपने साथियों से कहा, ''भाईयो, अब मैं आपके साथ नहीं चलूंगा आप लोग चले जाएं।''

भाई लैहणा रात को तीन बजे उठा तो उसने देखा कि वहाँ एक औरत झाड़ू लगा रही है। आपने उससे पूछा, ''तू कौन है? जो इतनी रात में झाड़ू लगा रही है।'' उसने कहा,''तुम जिसके उत्सव में जाते हो मैं वही हूँ।'' भाई लैहणा ने कहा, ''इससे पहले तो तू मुझे कभी नहीं मिली आज मिली है?'' उस औरत ने कहा, ''हम भी सन्तों के द्वार पर भीख माँगते हैं कि ये हमारे ऊपर दया–मेहर करें, हमें भी इन्सानी जामा मिले। हम भी नाम–भक्ति करके उस मंडल में पहुँच जाए जहाँ से हमारी आत्मा आई हुई है।''

जब भाई लैहणा के साथ यह घटना घटी तब उन्होंने गुरु नानकदेव जी से नाम लिया और उनके गुरुमुख शिष्य बने।

अगर हमें बाहर भरोसा है तभी हम अंदर जाएंगे अगर हमारा मन बाहर ही डाँवाडोल है कश्मकश में है और हमें बाहर की धूड़ी के साथ प्यार नहीं हमारे अंदर श्रद्धा नहीं तो हम अंदर धूड़ी प्राप्त ही नहीं कर सकते। जो कमाई करते हैं वही बाहर सन्तों के चरणों से प्यार करते हैं। उन्हें सन्तों के चरणों की कद्र होती है, उनको ही सन्तों की धूड़ी की कद्र होती है।

– 3 अप्रैल 1981

***

सेवक : *मेरा सवाल क्रोध के बारे में है। कल सतसंग में आपने कहा था कि क्रोध को दूर करने की सिर्फ़ एक ही दवाई है, वह है नाम का अभ्यास। आप यह भी कहते हैं कि क्रोधी आदमी अभ्यास नहीं कर सकता, भक्ति नहीं कर सकता। यह भूल भुलैया कैसे सुलझे? मैं यह नहीं मान सकती कि क्रोध का बहुत ज़बरदस्त आवेग आया हो और उसके तुरंत बाद ही इन्सान अभ्यास के अंदर कामयाब हो जाए, यह नामुमकिन से भी ज़्यादा नामुमकिन है।*

बाबा जी : मैं आपके सवाल का स्वागत करता हूँ। देखो भई! बात यह है अगर आपके दरवाज़े पर शत्रु की आर्मी खड़ी हो और आप उस वक्त अपनी आर्मी या साथियों को लड़ाई का ढ़ंग सिखाएं तो आप कभी कामयाब नहीं हो सकते। आपको प्यास लगी हो उस वक्त आप कुँआ खोदकर अपनी प्यास नहीं बुझा सकते। आपको पहले से ही यह तैयारी करनी चाहिए। अगर कोई आदमी समुंद्र में डूब रहा है, उस वक्त वह कहे कि मैं अभी तैरना सीखूं तो वह कभी भी कामयाब नहीं हो सकता। उसे तैरने की प्रैक्टिस पहले ही करनी चाहिए।

जब मैं कोलंबिया में तुलसी साहब की बानी पर सतसंग दे रहा था, मैंने उसमें बताया था कि एक कुम्हार गधियों के ऊपर मिट्टी लादकर किसी राजमहल में ले जा रहा था। वह जाते हुए अपनी गधियों से कह रहा था,''चल बीबी! चल बहन! चल माता!''

किसी ने उससे पूछा, ''भई, तू इन गधियों को माता, बहन क्यों कह रहा है?'' कुम्हार ने कहा, ''हम लोग खुला बोलने वाले मुँहफ़ट लोग हैं, हम बोलने पर कंट्रोल नहीं रखते। मैंने यह मिट्टी राजमहल में डालनी है। अगर मेरे मुँह से राजमहल में कोई गलत बोल निकल गया तो हो सकता है कि राजा मुझे फ़ाँसी पर चढ़ा दे। मैं वहाँ मीठी–मीठी बोली बोलने के लिए प्रैक्टिस कर रहा हूँ ।

सन्त–महात्माओं ने हमें भजन–सिमरन बताया है। हमने इन बिमारियों से बचने के लिए पहले प्रैक्टिस करनी है।

– 26 फरवरी 1984

***

सेवक : *यह सवाल नहीं है यह सिर्फ़ एक दोष स्वीकृति है। आज मैं आपके सामने अभ्यास में बैठी और आठ बार हिली।*

बाबा जी : सब सन्त यही कहते आए हैं कि किसी सन्त के लिए दूर या नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। भले ही आप दूर हैं या नज़दीक हैं। यह बात तो आपके ऊपर लागू होती है कि भई क्या आप अभ्यास के लिए बैठे हैं? क्या आप इस अभ्यास की महानता को समझते हैं? अगर आप अभ्यास की महानता को समझते हैं तो आप ऐसी पोज़िशन में बैठें जिसमें ज़्यादा हिलना–डुलना न पड़े।

– 29 फरवरी 1984

***

सेवक : *सन्त जी, मैं जब अभ्यास में बैठती हूँ तब मेरा ध्यान माथे पर जाता है लेकिन इसके साथ मैं यह भी महसूस करती हूँ कि मेरी आँखें कौन सी जगह देख रही हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है, जैसे मेरी आँखे नीचे की तरफ़ देख रही हैं और मेरा ध्यान ऊपर माथे की तरफ़ होता है। मैं इन दोनों बातों से परेशान हो जाती हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि मैं किस तरह से अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच में रखूं? क्या आप समझा सकते हैं कि क्या हो रहा है और मैं किस तरह से कर सकती हूँ?*

बाबा जी : सन्तबानी मैगज़ीन में इस बारे में बहुत सारे सवाल–जवाब छप चुके हैं। मैं हमेशा सलाह देता रहता हूँ कि आप मैगज़ीन अच्छी तरह गौर से पढ़ा करें। आपको उसमें आसानी से जवाब मिल जाएंगे। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि अभ्यास में बैठते वक्त तन का स्थिर होना ज़रूरी है। अगर आपका तन स्थिर है तो मन स्थिर होगा अगर मन स्थिर है तो आपकी सुरत और निरत शक्ति भी स्थिर होगी। सुरत सुननेवाली शक्ति को कहते हैं और निरत देखने वाली शक्ति को कहते हैं।

मैं इस बारे में मिसाल दिया करता हूँ कि जब आर्मी में बंदूक चलाना सिखाते थे। तब वे कहते थे कि बदन, बंदूक और टार्गेट एक लाईन में रहे तभी आपका निशाना सही जा सकता है। इसी तरह सन्तमत का यह असूल है कि न तो माथे से ज़्यादा ऊपर की तरफ़ देखें न नीचे की तरफ़ देखें न दाईं तरफ़ न बाईं तरफ़ और न ही किसी साइड में देखें। आपके देखने का केंद्र बिंदु दोनों आँखों के दरम्यान थोड़ा सा पीछे ऊपर की तरफ़ है जिसे तीसरा तिल कहते हैं; यही आपका सही केंद्र बिंदु है।

नाम देते वक्त कहा जाता है कि आप अपनी तरफ़ से कोई भी शक्ल न बनाएं। सिर्फ आप अपनी आँखें बंद करें अंदर जो कुछ भी दिखाई दे रहा होता है वह आपकी तीसरी आँख ही देख रही होती है। उस वक्त अभ्यासी को बहुत गौर से समझाया जाता है।

बाद में तो यह होता है कि आँखें बंद करो तो आपका ख्याल अपने आप ही अंदर तीसरे तिल पर चला जाता है। जब हम अपनी कोशिश करते हैं फिर क्या होता है? या तो हम ऊपर की तरफ़ देखते हैं या नीचे की तरफ़ देखते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हमारा ख्याल टिकता नहीं, हम अपना वक्त संघर्ष करते–करते ही निकाल देते हैं।

सेवक : *हमें यह बताया गया है कि मन को काबू करने के लिए सिमरन करना बहुत ज़रूरी है। हमें सिमरन करना है यह याद करने के लिए हमें मन का सहारा भी लेना पड़ता है क्योंकि मन ही हमें याद दिलाएगा कि हमने सिमरन करना है। यह तो ऐसी कहानी हुई जैसे किसी पक्षी से कहा जाए कि तू इस मकई की खेती की देखभाल कर। मैं यह नहीं समझ पाती कि यह कैसे हो सकता है?*

बाबा जी : हमेशा यह बताया जाता है कि जब सन्त नामदान देते है, वे शब्द रूप होकर सेवक के अंदर बैठ जाते हैं। सिमरन के वक्त आप अपने गुरुदेव का सहारा लें। गुरुदेव की मदद लेकर सिमरन करें, वह सिमरन कारगर होगा।

सेवक : *क्या आप हमें एक कहानी सुनाएंगे?*

बाबा जी : जब हम भजन के बारे में कोई बात करते हैं तो उस वक्त की ही बातें अच्छी होती है। किसी सवाल के जवाब में कोई कहानी उचित हो तो कहानी अपने आप ही शुरू हो जाती है।

सेवक : *जब मैं आवाज़ सुनने के लिए बैठता हूँ तो मुझे अंतरी आवाज़ों में अलग–अलग किस्म की आवाज़ें सुनाई देती हैं, ऊँची भी और नीची भी। मेरा सवाल यह है क्या ऊँची–नीची आवाज़ का कोई फर्क पड़ता है या सब आवाज़ें एक ही हैं और कोई भी आवाज़ आए तो उसे प्राप्त करके हमें खुश होना चाहिए?*

बाबा जी : मैं आप लोगों को सन्तबानी मैगज़ीन पढ़ने का सुझाव देता रहता हूँ। मैगजीन में आपको ऐसे आम सवाल मिलेंगे। मैं कहा करता हूँ कि जहाँ से दरिया निकलता है उसकी कोई और आवाज़ है। जब पानी पत्थर से टकराता है उसकी और आवाज़ हो जाती है। जब पानी साफ ज़मीन पर आकर बहता है तो उसकी कोई और आवाज़ सुनाई देती है। जब आगे जाकर वह पानी समुंद्र में गिरता है तब पानी में पानी गिरने से उसकी कोई और आवाज़ हो जाती है। पानी एक ही है लेकिन जैसी ज़मीन आती है पानी की वैसी ही आवाज़ आती है।

सचखंड से एक ही 'शब्द' उठता है लेकिन उसके पाँच मंजिलों से गुजरने के कारण उसे पाँच–शब्द कहकर बयान इसलिए किया गया है क्योंकि जैसी मंजिल के अंदर से वह आता है वह वैसी ही आवाज़ इख्तियार करता है। आपको शुरू–शुरू में जो भी आवाज़ मिले उसे पकड़ें, बेशक वह आवाज़ कितनी भी बारीक क्यों न हो। रोज़–रोज़ आवाज़ को तब्दील न करें उसी आवाज़ को पकड़ें। उस आवाज़ का ऊपर की आवाज़ के साथ कनेक्शन होता है।

आपको पता ही है कि ऐसे जो आम सवाल–जवाब हैं इनमें हर समय हर सतसंगी को पेश आने वाली बातें बोली जाती हैं। प्रेमी अपनी मुश्किलों के ही सवाल करते हैं उस मुश्किल को हल करने का ही जवाब आगे दिया जाता है। आपको सन्तबानी मैगज़ीन गौर

से पढ़नी चाहिए। भले ही वे सवाल–जवाब पहले के अंक में छप चुके हैं वे सवाल–जवाब आपके फायदे के लिए ही होते हैं।

इसका मतलब यह नहीं कि आप मुझसे कुछ न पूछें। मेरा मतलब यही है कि जो सवाल छप चुके हैं कम से कम उसके बारे में तो आपको पता होना चाहिए। आपको यह पता चले कि ग्रंथ–पुस्तकों में सन्त–महात्माओं ने क्या लिखा है और हमने उससे कैसे फायदा उठाना है।

सेवक : *सन्त जी, मैं कई बार बिमार होती हूँ तब मुझे यह महसूस होता है कि मेरे मन ने मुझे बिमार किया है। मन नहीं चाहता कि मैं अभ्यास करूं इसलिए मैं बिमार हुई हूँ। क्या वाकई ऐसा होता है कि मन हमें अभ्यास से दूर रखने के लिए इस तरह की बिमारी लाता है। अगर ऐसा होता है तो हमें किस तरह पता चले कि यह मन की तरफ़ से पैदा की गई बिमारी है और उसे रोकने का क्या उपाय हो सकता है?*

बाबा जी : बिमारी–तन्दरुस्ती, दुःख–सुख, गरीबी–अमीरी सब हमारे कर्मों का ही भुगतान होता है। यह सिर्फ मन का एक बहाना होता है। सतसंगी इसके बहाने में फँस जाता है और अभ्यास को मुल्तवी कर देता है। अगर हमारे अंदर आत्मिक बल ज़्यादा होता है, गुरु पर भरोसा होता है तो हम बड़ी से बड़ी बिमारी को बर्दाश्त कर जाते हैं अगर हमारे अंदर आत्मिक बल की कमी होती है तो छोटी सी बिमारी या छोटी सी बात होने पर हम डर जाते हैं।

सेवक : *आपने कई बार हमें यह कहा है कि हमारा अहंकार हमारी अंदरूनी तरक्की को बर्दाश्त नहीं करता इसलिए गुरु हमें हमारी अंदरूनी तरक्की नहीं दिखाते। वह हमें तरक्की दिखाने के लिए टालते रहते हैं और उसे अपने पास जमा करते रहते हैं,*

संभाल कर रखते हैं। आपने कई दफा यह भी कहा है कि हमें अपनी बाहरी ज़िंदगी की तरफ़ देखना चाहिए। अपनी गलतियों की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और पता चलाना चाहिए कि हम तरक्की क्यों नहीं कर रहे हैं? जब हमें अपनी तरक्की नज़र न आ रही हो तो हमें किस तरह पता चलेगा कि हमारी बाहरी गलतियों की वजह से गुरु हमारी तरक्की को अपने पास संभालकर रख रहे हैं और हमें दिखाना नहीं चाहते?

बाबा जी : परमपिता कृपाल सिंह जी ने हमें डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखने का साधन और तरीका इसलिए बताया था कि हम अपना जीवन अच्छी तरह से जाँच सकें। हम जब भी कोई नेक या मंद कर्म करते हैं तो क्या हमें उसका पता नहीं होता? हमारे सोते हुए तो कोई दूसरा आदमी कर्म करके नहीं जाता अगर वह कोई कर्म करता है तो वह कर्म हमें नहीं लगता। हमें वही कर्म लगेगा जो हमने खुद किया है। फरीद साहब कहते हैं:

लोड़े दाख बिजोरियां कीकर बीज़े जट।
हंडा उन्न कताएंदा पैंदा लोड़े पट्ट।।

मैं कहा करता हूँ मिर्ची बीज़कर हम ईख नहीं काट सकते। ईख बीज़कर मिर्ची नहीं काट सकते। यह हमें बीज़ बोते वक्त खुद को पता होता है। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे:

तारा मीरा साग बीज़के स्वाद भालदां है खीरां दे।
जी लोचदा अम्ब खाण नूं बीज़ै बीज़ करीरां दे।।

जब हम ईमानदारी से पवित्र ख्यालों से भजन–अभ्यास करेंगे तो हमारी शिकायत नहीं होगी। हम खुद देख लेंगे कि हमारे गुरु हमारे लिए क्या कर रहे हैं? सन्तमत किसी को धोखे में नहीं रखता अंधविश्वास में नहीं रखता। हम जो करते हैं सतगुरु उसका

फल हमें ज़रूर देते हैं, साथ में अपनी दया भी देते हैं। जो लोग यह देखना चाहते हैं वे पवित्र ख्याल बनाकर अपना भजन-अभ्यास करें तो वे साथ-साथ यह भी देख सकते हैं कि किस तरह हमारी तरक्की हो रही है और गुरु हमारे लिए क्या कर रहे हैं? गुरु अंदर भी आत्मा को खींच रहे हैं और संभाल कर रहे हैं।

मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ और अभी जिस प्रेमी ने कहानी सुनाने के लिए कहा था उसका भी मसला हल हो जाएगा। सुथरा एक बेधड़क फ़क़ीर हुआ है। वह हास्य रस की कविता और कहानियाँ भी बड़ी अच्छी लिखता था। उसने किसी से पूछा कि मकान किस तरह मजबूत बनता है। किसी ने कहा अगर मकान में ज़्यादा स्तंभ लगाए जाएं तो मकान मजबूत बनता है।

उसने अपने घर में एक तरफ़ से स्तंभ लगाने शुरू कर दिए और सारा मकान ही स्तंभों से भर दिया। एक दिन बारिश हो रही थी ठंड पड़ रही थी और सुथरा बाहर खड़ा भीग रहा था। कोई समझदार आदमी वहाँ से गुजर रहा था उस आदमी ने सुथरे से कहा, ''तुम बाहर भीग रहे हो ठंड से काँप रहे हो तुम्हें निमोनिया हो जाएगा। तुम घर के अंदर क्यों नहीं हो जाते?'' सुथरे ने कहा, ''अगर अंदर जगह होती तो मैं एक स्तंभ और न लगा लेता?''

हमारी यही हालत है। वैसे तो हम गुरु से कह देते हैं कि वह हमारी पूंजी संभाल कर रखते होंगे पर हमें कैसे पता चलेगा? अफसोस की बात है कि हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मुँह नहीं मोड़ते। दुनिया के ऐब-पाप से अपना हृदय भरे जा रहे हैं। जहाँ हमारे गुरु ने बैठना है उसे हम दुनिया के ख्यालों, ऐबों से भर रहे हैं। सोचकर देखें! किस तरह आपकी अंदर चढ़ाई होगी? आप खुद ही मानने को तैयार नहीं।

जो गुरुदेव आपके अंदर बैठे हैं वह आपकी हर हरकत को देख रहे हैं। आप सोचते बाद में हैं वह सुन पहले लेते हैं। क्या उनको आपका ख्याल नहीं? क्या आप नेक–नीति से जो भजन करते हैं उसका उनको पता नहीं है? ज़रूर पता है। आप जो बुरे–खोटे कर्म करते हैं उसका भी उन्हें पता होता है लेकिन उनके अंदर बर्दाश्त करने की शक्ति कमाल की होती है।

गुरु शर्मिंदा तो होते हैं क्योंकि काल उन्हें कहता है, ''देख! तूने इसे नाम दिया है। इसकी हालत तो देख यह क्या कर रहा है, क्या यह नाम के लायक है?'' गुरु फिर भी काल से कहते हैं, ''तू देख तो सही यह ठीक हो जाएगा।'' सन्त–सतगुरु हमें सतसंग के ज़रिए समझाते हैं कि आपके अंदर ये ऐब हैं आप इन ऐबों को छोड़ दें। आप ऐब छोड़ेंगे तो आपकी सुरत शरीर के अंदर इस तरह शब्द के साथ जुड़ जाएगी जिस तरह बंदूक की गोली बहुत जल्दी अपने निशाने पर जाकर लगती है। हमारी आत्मा को हमारे कर्म ही शरीर के अंदर जकड़े हुए हैं।

चार साल पहले गंगानगर का एक वाक़या है। एक प्रेमी को महाराज जी से नामदान मिला था। वह बिमार हुआ और उसकी सुरत अंदर खिंच गई। उसने रोना शुरू कर दिया कि महाराज जी मार रहे हैं। वह सब्ज़ी में पानी डालता था और सब्जी बेचते वक्त कम तोलता था। उसने बहुत ही शोर मचाया कि मुझे बचाओ अंदर बाबा जी पीट रहे हैं, मार रहे हैं। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मैं कभी सब्ज़ी में पानी नहीं डालूंगा और कभी भी कम नहीं तोलूंगा।

वह परिवार 77 आर.बी. आश्रम में मेरे पास आया और उन्होनें कहा, ''हमें बख़्शें।'' मैं हँस पड़ा और मैंने कहा, ''भई देखो! बख़्शने वाला तो आपके अंदर ही है। आगे से यह काम न करें वह

प्रेमी अभी भी ज़िन्दा है और सब्ज़ी बेचने का ही काम करता है। हम जब भी मिलते हैं तब हँसकर पूछते हैं कि भई, अब कैसे हो? वह कहता है, ''बस! तौबा है कान पकड़े हुए हैं।''

आमतौर पर सन्त ऐसा नहीं करते लेकिन कहीं न कहीं तो प्रेमियों को थोड़ी बहुत ऐसी करामात दिखा देते हैं ताकि उन्हें यह एहसास होता रहे कि गुरु हमारी हर हरकत को देख रहे हैं। जब हम रोज़ कर्म करते हैं तो हमें अपनी पड़ताल ज़रूर करनी चाहिए। शाम को जब हम डायरी भरते हैं तो हमें अपनी पड़ताल करनी चाहिए कि हमसे कितने नेक कर्म हुए और कितने बुरे कर्म हुए। आगे से हमने ऐसा बुरा कर्म नहीं करना। मैंने नाम क्यों नहीं जपा, आलस क्यों किया? इस तरह हमें रोज़ जीवन की जाँच करनी चाहिए।

आप सतसंगी हैं। सन्तमत में आए हैं, गुरु वाले हैं आपका बीमा हो चुका है। गुरु ने अपनी इच्छा से ही आपको नामदान दिया है। गुरु ने आपको ज़रूर सचखंड पहुँचाना है इसमें शक की कोई गुंजाईश नहीं। पश्चिम के अंदर विषय–विकारों का दौर चल रहा है लोग इसे मामूली बात समझते हैं। विषय–विकारों के साथ वे अपनी सेहत का नुकसान करते हैं और साथ ही अपनी ज़िंदगी को दागी बनाने पर तुले हुए हैं।

मैंने आपको कई बार कबीर साहब की बानी सुनाई है कि जिसके साथ हमारी शादी हुई है औरत–मर्द को उसके साथ ही गृहस्थी जीवन व्यतीत करने की इजाज़त होती है। बाकी जितना भी है व्याभिचार होता है। जो औरत या मर्द व्याभिचार करते हैं उनकी सुरत शब्द को किस तरह पकड़ सकती है? किस तरह उनके ख्याल टिक सकते हैं? किस तरह उनकी ज़िंदगी पवित्र हो सकती है? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घर की नार के आगे अन्धा, परनारी से घाले धन्धा।

हम अपनी औरत को छोड़कर लोगों की औरतों के पीछे मिट्टी खाते फिरते हैं। यही औरतों की आदत बनी हुई है अपने मर्द को संभालना नहीं और दूसरी जगह अपना ख्याल दौड़ाती फिरती हैं। सुखमनी साहब में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

पर त्रिया रूप न पेखे नेत्र साध की टहल सन्त संग हेत।

बुरी भावना से पराई औरत का रूप देखना गुनाह है। औरत के लिए भी पराए मर्द का रूप देखना गुनाह है। यह सिर्फ औरतों के लिए नहीं लिखा गया है मर्दों के लिए भी है, दोनों के लिए एक जैसा है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कामवंत कामी बौह नारी पर ग्रह जोही ना चूके।
दिन परत परत करै पछतावे लोभ मोह में सूके।।

क्या आप यह समझते हैं कि जब कोई इन्सान बुराई करता है तब उसके दिमाग पर उसका बुरा असर नहीं होता? उसका दिमाग बदबू से भर जाता है। उसको हमेशा डर लगा रहता है कि मेरी पोल न खुल जाए, मेरा राज़ किसी को पता न लग जाए कि मैं बुराई कर रहा हूँ। अंदर एक ऐसी भी ताकत है जो उसको फटकार देती है; उसके दिल में चुभन होती रहती है।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का ज़्यादा से ज़्यादा सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने अपने कानों से उस महान सतगुरु के जो वचन सुने हैं वे वचन आज भी मेरे दिमाग में गूंज रहे हैं। आप कहा करते थे, ''अगर आप नेक पाक़ नहीं रह सकते तो आप शादी कर लें। शादी में क्या खराबी है?'' महात्मा कहते हैं:

बाहर दा पंचा तपा सुणाए अंदर दा तपा पाप कमाए।

बाहर तो लोगों को महात्मा बनकर दिखाता है। अच्छा सतसंगी बनकर दिखाता है लेकिन अंदर बैठकर पाप करता है। हम जो पाप अंदर बैठकर कर रहे हैं क्या कोई देख नहीं रहा? वह परमात्मा गुरुदेव तो हमारे अंदर बैठे हैं, वह देख रहे हैं। हर व्यक्ति को यह बात अपने दिमाग में डाल लेनी चाहिए।

अगर सपने में भी आपके दिल में काम वासना का ख्याल नहीं उठता तो आप हाथ ऊँचा करके हौका दे सकते हैं कि हमने शादी नहीं करनी। हमारे ऊपर परमपिता कुलमालिक की दया है। अगर सपने में भी आपको शादी के और बीवीयों के ख्याल आते हैं तो आपको निडर होकर शादी कर लेनी चाहिए। आपको अपने जीवन के ऊपर तरस करना चाहिए। इसका आपकी रूहानी चढ़ाई के ऊपर बहुत ज़बरदस्त असर पड़ेगा। मैं आपको कई दफा इसके बारे में सतसंग में भी बताया करता हूँ कि सन्त–महात्माओं ने पतिव्रता धर्म के ऊपर ज़ोर दिया है, उसके फायदे बताए हैं।

मैं एक बार नहीं अनेकों बार भरे सतसंग में कहा करता हूँ कि जो मर्द यहाँ कायम नहीं रहते जब आप स्थूल पर्दा हटाकर सूक्ष्म में जाएंगे वहाँ स्वर्ग में आपको सूक्ष्म औरतें मिलेंगी और औरतों को सूक्ष्म मर्द मिलेंगे। वे यहाँ की औरतों और मर्दों से भी ख़ूबसूरत होंगे। जो औरतें यहाँ कायम नहीं रहती क्या वहाँ ऐसे मर्द देखकर कायम रह जाएंगी? जो मर्द यहाँ कायम नहीं रहते क्या वहाँ वे ऐसी औरतें देखकर कायम रह जाएंगे? जो मिट्टी की औरतों पर मारे जाते हैं क्या वे सूक्ष्म औरतों से बच जाएंगे? गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

निमख स्वाद कारणे कोट दिवस दुख पावै।
घड़ी मोहत मन माणें रलियाँ बोहर बोहर पछतावै।।

थोड़े से स्वाद की खातिर यह करोड़ों दिन दुख भोगता है। करोड़ दिन के तैंतीस हज़ार साल बनते हैं। यह बुराई करके फिर पछताता है कि मैंने यह काम क्यों किया? लेकिन बाद में पछताने से क्या बनता है? गुरु अर्जुनदेव जी तो यहाँ तक कहते हैं:

हे कामी नरक बिसरानी बहु योनि भरमावणै।

मैंने कल बताया था कि सन्त गृहस्थी भी हुए हैं और त्यागी भी हुए हैं। जो त्याग में थे वे पूरे त्याग में थे। जिन्होंने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया उन्होंने न त्याग को बुरा कहा न गृहस्थ को बुरा कहा है। सवाल तो हमारी मजबूती का है अगर आप मजबूत होकर त्यागी जीवन काट सकते हैं अगर आपका मन आपको बुराई की तरफ़ नहीं ले जाता, तो भई आप त्यागी रह सकते हैं। अगर आपका मन आपके अंदर यह बुराई पैदा करता है तो उस बुराई को मिटाने के लिए सन्तमत में आपको शादी की खुली इजाज़त है।

मैं कहा करता हूँ कि आप पवित्र ज़िंदगी जी कर देखें उसका आनन्द और सुख महसूस करके देखें। अगर आपको कोई करोड़ों रुपए देकर कहे कि आप इस बुराई की तरफ़ आएं तो भी आप उस तरफ़ जाने के लिए, उस तरफ़ देखने के लिए भी तैयार नहीं होंगे।

सवाल पूछा गया था कि हमें कैसे पता चले कि हमारी तरक्की हो रही है या हम नीचे जा रहे हैं और हमें कैसे पता चले कि गुरु हमारा भजन–सिमरन इकट्ठा कर रहे हैं या नहीं? अगर बारिश होती है या बर्फ़ गिरती है तो आसपास से गुजरने वाली हवा ठंडी होती है। इसी तरह अगर आपकी ज़िंदगी पवित्र है गुरु को तो उसका पता ही हैं क्योंकि गुरु तो अंदर ही बैठे हैं। आपके अड़ोस–पड़ोस में जितने आदमी रहते हैं उनको भी आपकी पवित्रता की झलक मिलेगी कि यह पवित्र आदमी है या पवित्र औरत है।

हमारी आर्मी में पहरेदारों की सुस्ती की वजह से कोई आदमी राईफल चुराकर ले गया। आर्मी के कानून बहुत सख्त होते हैं। लोगों को बहुत सज़ा मिलने लगी थी। हर एक के लिए बहुत मुश्किल आ रही थी। उस वक्त आर्मी में मुझे आमतौर पर सारे लोग भाई जी या ज्ञानी जी कहा करते थे।

एक दिन हमारे कमांडर अफसर ने कहा, ''अगर आप सच्चे हैं तो इसके शरीर को हाथ लगाकर चले जाओ।'' यह एक सच्चाई है कि पंद्रह सौ आदमी मेरे शरीर को हाथ लगाकर आगे बढ़ गए लेकिन जिन चार आदमियों ने यह ऐब किया था वे फौरन मान गए। मेरे नज़दीक आते ही उनको डर लगना शुरू हो गया कि पता नहीं इसे हाथ लगा देंगे तो क्या हो जाएगा? उन लोगों ने कहा, ''हाँ जी! हमने यह ऐब किया है।'' क्या इन्सानों को पता नहीं चलता कि यह पवित्र है या नहीं? क्या मैंने उन अफसरों से कहा था कि मेरे अंदर यह पवित्रता है?

मैं बताया करता हूँ कि मैं कभी शहर मे नहीं गया था। कोई चीज़ मँगवानी होती तो अपने दोस्त से मँगवा लेता था। मैं धर्मस्थान में जाता था। आप मीट–शराब न खाएं–पिएं तो क्या आपके अड़ोस–पड़ोस वाले लोग नहीं जानते होंगे? वे ज़रूर जानते होंगे। आपके दोस्त जो पहले आपकी निन्दा करते हैं वही दोस्त बाद में लोगों के पास आपकी तारीफ भी करेंगे।

मैं कहा करता हूँ कि हम जिस धरती पर बैठे हैं। हम जिस मकान में रहते हैं कम से कम उसको हमारे रहने पर मान होना चाहिए कि मेरे अंदर कितना पवित्र आदमी रह रहा है।

आपके गुरु निर्मल हैं पवित्र हैं। वे दुनिया की मैलों से ऊपर उठे हुए हैं उनको आपकी निर्मलता और पवित्रता प्यारी है। क्यों न

आप अपने ख्यालों को पवित्र रखें ताकि वे आपके अंदर प्रकट हो सकें। आपके अंदर बैठकर मान कर सकें कि मेरे शिष्य पवित्र हैं।

परमपिता कृपाल सिंह जी जब मेरे आश्रम में आए तो मैंने उन्हें यही कहा, ''बचपन से मेरा दिल–दिमाग खाली है। मुझे नहीं पता कि मैंने आपसे क्या सवाल करना है?'' आपने हँसकर खुश होकर यही कहा, ''मैं दिल और दिमाग खाली देखकर ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर आया हूँ। मेरे पास दिमागी कुश्तियाँ करने वाले बहुत आदमी हैं।'' आप ऐसे आए कि मैं आपका बन गया और आप मेरे बन गए।

आपने मुझ पर दया की, मैं दया का भूखा था। मैं तप रहा था। आपके पास नाम था, आपने नाम की बारिश करके मेरे तपते दिल को ठंडक पहुँचाई।

– 28 मार्च 1984

***

***सेवक :** क्या तीसरी आँख पर सिमरन करने की काबलियत ज़्यादा मेहनत, गुरु की दया और ब्रह्मचर्य का पालन करने से प्राप्त होती है या इसके अलावा कुछ और गुणों की भी ज़रूरत होती है?*

बाबा जी : हाँ भई! करनी और दया दोनों ही साथ–साथ चलती हैं अगर हम करनी करते हैं तो सन्त ज़रूर दया करते हैं, इसमें कोई शक नहीं। ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने के बहुत शारीरिक फायदे भी हैं और रूहानियत में तो बेअंत फायदा है।

अगर बच्चा स्कूल में दिलचस्पी रखता है, मेहनती है, पढ़ाई करता है और अपने टीचर की इज़्ज़त करता है तो टीचर अपनी

पूरी तवज़्जो उस बच्चे की तरफ़ देता है। उसे दूसरे बच्चों से ज़्यादा पढ़ाने और सिखाने की कोशिश करता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर हम करनी करें और गुरु दया न करे तो कुछ भी नहीं बनता फिर भले ही शिष्य कितना भी ज़ोर क्यों न लगा ले! सन्त–सतगुरु जिन्होंने हमें नामदान दिया होता है वे कभी बेइंसाफ नहीं होते।

महाराज सावन सिंह जी का वाक है कि जिसके खेत में मज़दूर काम करते हैं या स्टोर में नौकर काम करते हैं उस मालिक को सबकी फिक्र होती है कि इनको किस समय खाना देना है और किस समय तनख्वाह देनी है। एक दुनियावी आदमी हमारी मज़दूरी नहीं रखता तो क्या गुरु जिसके अंदर भगवान प्रकट हैं, वह हमारी मेहनत का फल रख सकता है?

मैं अपने बचपन का एक वाक़्या बताया करता हूँ कि उस समय मेरी उम्र तेरह–चौदह साल की थी। मैं एक नहर के साथ वाले रास्ते से चला आ रहा था। वहाँ से एक बुज़ुर्ग वकील साईकिल पर जा रहा था। पहले तो वह मेरे पास से गुज़रा फिर आगे जाकर उसने साईकिल खड़ी कर दी और मुझसे पूछने लगा, ''बेटा, मैं तुझसे एक सवाल करता हूँ अगर बुरा न लगे तो मुझे जवाब देना।'' मैंने कहा, ''पूछो जितना मैं जानता हूँ आपको बताऊँगा।''

उस बुज़ुर्ग ने पूछा, ''मैंने एक किताब में पढ़ा है कि जो इन्सान के दिल में है अगर कोई मालूम करने वाला हो तो उसके चेहरे से ज़रूर मालूम हो जाता है। मुझे तेरा चेहरा देखकर इस तरह मालूम होता है कि तू भक्ति करता रहता है। तू भक्त है।'' मैंने हँसकर कहा, ''अभी तो मैं छोटा ही हूँ। भक्ति की खोज में हूँ भक्त तो नहीं हूँ।'' वह बहुत खुश हुआ।

सज्जनो, जो लोग काम के रोगी हैं बेशक देखने में उनकी सेहत अच्छी नज़र आती है लेकिन उनकी आँखें और चेहरा देखकर फौरन पहचान सकते हैं कि इस आदमी के अंदर यह कमी है।

औरतों और मर्दों को ब्रह्मचारी जीवन का पाठ नहीं पढ़ाया जाता और न ही माता–पिता का इस तरफ़ कोई ख्याल होता है। माता–पिता ने भी ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने की कम ही कोशिश की होती है जिसका बच्चों पर भी यही असर होता है। बच्चों के अंदर पूरा वीर्य नहीं बना होता और वे उसे पहले ही गिराने लग जाते हैं उसके लिए गैर कुदरती तरीकों को भी अपनाने लग जाते हैं। फिर किस तरह उनकी सेहत ठीक हो सकती है? किस तरह उनका मन तीसरे तिल पर एकाग्र हो सकता है? किस तरह उनकी सुरत ऊपर चढ़ सकती है?

आप खुद सोचकर देखें! जब ख्याल ही पवित्र नहीं तो मन किस तरह पवित्र हो सकता है? जब हमारा मन ही पवित्र नहीं तो वह किस तरह तीसरे तिल पर टिकेगा? अगर लोहे पर ज़ंग लगा हुआ है तो चुम्बक लोहे को किस तरह खींचेगा? 'शब्द' चुम्बक का ही काम करता है। 'शब्द' मन और आत्मा को तभी ऊपर खींचता है जब ये पवित्र होते हैं।

आजकल डॉक्टर आमतौर पर अखबारों में बहुत इश्तिहारबाज़ी करते हैं कि जिसने गई जवानी, खोई हुई ताकत प्राप्त करनी है वे हमसे मिलें। नौजवान लोग ऐसी दवाईयाँ लेकर अपने अंदर गर्मी पैदा कर लेते हैं। गर्मी और खुष्की पैदा होने के कारण उनका मन विषय–वासना के लिए और भड़क उठता है।

मैं दिल्ली से सतसंग करके 16 तारीख को वापिस आ रहा था तब मुझे रास्ते में घंटा डेढ़ घंटा गंगानगर में रुकना पड़ा। दिल्ली से

गंगानगर में एक डॉक्टर लोगों को जवानी देने के लिए आया हुआ था। उसने अखबारों मे काफी इश्तिहारबाज़ी की, वह अखबार मैंने भी पढ़ा और काफी देर से पढ़ते आ रहे थे।

मुझे गंगानगर में इसलिए रुकना पड़ा कि महाराज जी का कोई खास सतसंगी चोला छोड़ गया था और मैंने वहाँ से गुज़रना था इसलिए मुझे वहाँ रुकने का मौका मिला। वह डॉक्टर साहब वहाँ भी तशरीफ रखे हुए था। देखने में तो वह डॉक्टर ज़रूर हट्टा–कट्टा नज़र आ रहा था। जब मैं उसकी तरफ़ देखता था तो वह फौरन आँखें बंद कर लेता था। मैंने सोचा कि इसे नींद आती होगी।

जब उस डॉक्टर को पता चला कि यह सन्त हैं तो उसने मुझसे कहा कि मैं अकेले में आपसे बात करना चाहता हूँ। जब अकेले में बात की तो उसने अपना रोग बताया कि मुझे यह बड़ा रोग लगा हुआ है। मेरी उम्र साठ वर्ष की है लेकिन मैं इस बीमारी को नहीं छोड़ सका। अगर औरत पास में न हो तो भी मैं हाथ से बीरजपात करता हूँ। मैंने उससे कहा यह अफसोस की बात है जिसकी अपनी जवानी खराब है वह दूसरों को क्या जवानी देगा? क्या तेरा प्रचार लोगों को गुमराह नहीं कर रहा? वह शर्मिंदा हो गया क्या जवाब देता? कबीर साहब कहते हैं:

नार पुरख सबही सुणों सतगुरु जी की साथ।
बिख फ़ल फले अनेक है मत को देखो चाख।।

यह अकेले मर्दों के लिए ही नहीं, औरतों के लिए भी उतना ही ज़रूरी है। जिन्होंने बचपन से वीर्य धन अच्छी तरह संभाला हुआ है उनके अंदर कुदरती ही ज़्योत जल पड़ती है। नाम का प्राप्त करना उनके लिए इस तरह है जिस तरह दीपक को माचिस की तीली दिखाई जाती है। कबीर साहब कहते हैं:

कामी कबहू न गुरु भजे मिटै ना संसय सूल।
इंद्री केरे बस परा, भुगतै नरक निसंक।।

कामी भक्ति नहीं कर सकता। कामी के दिल में हमेशा डर लगा रहता है कि मैं बुराई कर रहा हूँ। यह बुराई कब छूटेगी? वह इन्द्रियों के वश होकर अपना आप खो बैठता है।

– 28 अक्टूबर 1984

***

सेवक : *मैंने कई जगह पढ़ा है कि आपने पहले सत्रह साल गुफा में बैठकर अभ्यास किया। बाद में महाराज कृपाल सिंह जी से मिलने के बाद भी आप पाँच साल तक एक गुफा में बैठकर अभ्यास करते रहे। क्या आप उस समय के दौरान कभी रात को सोए भी थे या लगातार अभ्यास ही करते रहे?*

बाबा जी : इस शरीर को थोड़ी बहुत रोटी की भी ज़रूरत पड़ती है। शरीर को हल्का रखने के लिए थोड़ी बहुत नींद भी लेनी पड़ती है। अभ्यासी की नींद और भूख खुद ब खुद घट जाती है।

मैंने किसी खास तरीके से अभ्यास किया है। तभी तो मैं आप लोगों को बताता रहता हूँ कि जो प्रेमी कहते हैं कि हमारे पास टाईम नहीं है, मैं उन प्रेमियों से कहता हूँ कि आप इस तरह का कार्यक्रम बना लें कि हमें इस टाईम पर खाना खाना है, इस टाईम पर सोना है, इस टाईम पर जाकर स्टोर का काम करना है और इस टाईम पर हमने अभ्यास करना है।

जिस तरह महाराज जी ने डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखने का हुक्म दिया, मैं उस डायरी के मुताबिक ही आपको कार्यक्रम

बनाने का सुझाव देता रहता हूँ। अगर आप सारे सतसंगी इस तरह का कार्यक्रम बना लें तो आपका भी फायदा होगा।

यह इस तरह होता है कि पहले नींद कम करनी बहुत मुश्किल होती है, यह एक समस्या बन जाती है। आँखें भारी हो जाती हैं सिर भारी हो जाता है लेकिन जब नींद कम हो जाती है बाद में नींद का आना मुश्किल हो जाता है। इसी तरह पहले भूख काफी तंग करती है लेकिन बाद में ज़्यादा खाना मुश्किल हो जाता है। मेरा व्यक्तिगत तज़ुर्बा है कि जिन भोगों को इन्सान पहले छोड़ नहीं सकता लेकिन जब हम संघर्ष करते हैं इन्हें छोड़ देते हैं फिर खुद–ब–खुद अंदर से इनके लिए घृणा पैदा हो जाती है। बाद में इन्सान का इन चीज़ों को अंगीकार करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

जिन सन्तों को परमात्मा का आशिर्वाद मिला कि आप जीवों को लेकर आ सकते हैं उन्होंने बहुत साल अभ्यास किया। बहुत सालों का मतलब होता है कि तब तक अभ्यास किया होता है जब तक उनको परमात्मा की तरफ़ से परमिशन नहीं मिल जाती कि आप मेरा मिशन चलाएं।

मैं अपने बारे में कहता हूँ अगर मुझे यह पता होता कि बाद में मुझसे यह काम लिया जाएगा कि मुझे आत्मा की संभाल करनी है, सतसंग सुनाने हैं, हवाई जहाजों में चढ़ना है, न दिन को आराम न रात को आराम और लोगों के कर्म उठाने हैं तो मैं इस तरह की भक्ति न करता। मैंने नाम ले लिया था। मुझे पता था कि गुरु जिसे नाम देते हैं उसकी संभाल करते हैं। मेरे दिमाग में यह था कि भई रब की भक्ति करेंगे, रब को प्राप्त करेंगे, मौज करेंगे लेकिन अब मेरी यह हालत है जैसे पहाड़ पर चोर पकड़ा जाए न उसको भागने की जगह मिलती है न उस बेचारे को कोई बैठने की जगह देता है।

मेरे पास पहले 'दो–शब्द' का भेद था। दो शब्द के भेद वाले को परमिशन मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होता। वह एक बहुत संघर्ष भरा अभ्यास था इसलिए मैं आप लोगों से कहा करता हूँ कि सन्तमत के पहले अभ्यास बहुत कठिन होते हैं, बाद में रास्ता खुल जाता है बाद के अभ्यास इतने कठिन नहीं होते, आसान होते हैं।

जब उस दयालु कृपाल ने दया की तो उस वक्त साथ में उन्होंने यह भी कह दिया, ''भई, मेरी तालीम गुम न हो जाए तूने इसको आगे चलाना है।'' उस वक्त मेरे साथ जो बीती वह मुझे ही पता है। उस समय मैं रोया लेकिन उन्होंने मेरा रोना नहीं सुना। मैंने आपसे कहा कि यह काम आप ही करते अच्छे लगते हैं। मैं तो आपके चरणों का भंवरा बनकर ही खुश हूँ और मैंने अपनी कई कमज़ोरियाँ आपको बताई।

मैंने कई बार कहा कि दुनिया में संदेश देना बहुत ही मुश्किल है। बहुत लोग निन्दा करेंगे कोई कुछ कहेगा तो कोई कुछ कहेगा। उस समय परमपिता कृपाल ने कहा, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?'' मैं आज भी महसूस करता हूँ कि जो सुख प्यारे कृपाल के चरणों में, गोद में बैठने का था वह सुख आज नहीं है। मैंने तो आपके चरणों में बैठने के लिए, आपकी गोद को प्राप्त करने के लिए अभ्यास किया था।

जिन लोगों ने अभ्यास नहीं किया होता सिर्फ उन लोगों के दिल में गुरु बनने की खुशी होती है। उनको यह पता नहीं होता कि काल को हिसाब देना पड़ेगा या सेवकों का भी कुछ बोझ उठाना पड़ेगा। वे पार्टियाँ बनाकर एक–दूसरे की निन्दा आलोचना करते हैं। जो लोग कमाई करते हैं वे न किसी की निन्दा करते हैं न आलोचना करते है न उनके दिल में खुशी होती है कि हम गुरु बनें।

गुरु नानकदेव जी के बच्चों ने उनसे काफी संघर्ष किया। वे पिता पर गुस्सा भी हुए कि आप हमें गद्दी क्यों नहीं देते? लेकिन जब भाई लैहणा से कहा जो बाद में गुरु अंगददेव कहलाए कि भई, हमारे पीछे से तुमने रुहानियत का काम करना है। भाई लैहणा रो पड़े। भाई लैहणा ने रोते हुए कहा, ''यह बोझ बहुत भारी है मैं किस तरह उठाऊँगा?''

महाराज सावन सिंह जी ने परमपिता कृपाल से कहा कि भई गिनती करो और बताओ कि कितने लोगों को नामदान दिया गया है? जब महाराज सावन को बताया गया कि इतने लोगों को नामदान दिया गया है तो महाराज सावन ने कहा, ''कृपाल सिंह, मैंने तेरा आधा काम कर दिया है बाकी का काम तुमने करना है।''

परमपिता कृपाल सिंह जी अपने गुरुदेव के आगे रो पड़े और कहने लगे, ''बाकी का काम भी आप ही करें।'' महाराज सावन ने कहा, ''यह काम आपको ही करना पड़ेगा।'' परमपिता कृपाल ने कहा कि हम तो नालियाँ हैं। आप पीछे से जितना पानी देंगे उतना ही पानी हम आगे दे देंगे। कहने का भाव है कि जो कमाई करते हैं उन लोगों को यह बोझ उठाने में कोई खुशी नहीं होती। उनके गुरु उन्हें मजबूर करके यह बोझ उनके सिर पर रख जाते हैं। वे अपने गुरु को जवाब नहीं दे सकते।

आप लोगों ने ज़िंदगी का काफी स्वाद चखा हुआ है। आपने घूम फिर कर काफी दुनिया देखी है। मैंने किसी शहर की सैर नहीं की और न ही कभी किसी चीज़ की इच्छा की है। न अच्छे लज़ीज़ खाने खाकर देखे हैं न कोई अच्छा पहनावा पहनकर देखा है।

आपको पता है कि मैं जब बाहर जाता हूँ तो हवाई जहाज के अंदर बंद होकर जाता हूँ। वहाँ कमरे में बंद होकर बैठ जाता हूँ और

आए हुए प्रेमियों से मिलता हूँ। मैं पिकनिक मनाने के लिए कभी कहीं नहीं गया। आप पप्पु से पूछ सकते हैं कि मैं दिल्ली जाता हूँ, मुंबई जाता हूँ आपमें से कई आदमी मेरे साथ दिल्ली में उस कार्यक्रम के दौरान भी रहे हैं। उनको पता है कि मैं शहर देखने के लिए कितना जाता हूँ। मैं कार में बंद होकर जाता हूँ और उसी तरह वापिस उठकर आ जाता हूँ।

आप सोचकर देख सकते हैं कि इस संसार के अंदर मेरा आने का क्या मिशन था और इन्सानों का क्या मिशन होता है? क्योंकि दुनिया शहर, तमाशों को पहल देती हैं लेकिन मेरी ज़िंदगी तो अलग ही संसार में बीती है।

– 31 अक्टूबर 1984

***

सेवक : *अभ्यास के शुरू में जब हमारी अपनी इच्छा शक्ति अभ्यास के बीच बाधा डालती है। जब हम अपने मन को शान्त करते हैं और एकाग्र होने की कोशिश करते हैं तो क्या जब गुरु की दया शुरू होगी तो हमारी इच्छा शक्ति खत्म हो जाएगी? क्या हमें अपने आपको अंदर से बिल्कुल ही खाली करना पड़ेगा या हमें गुरु के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए? क्या अंदर जाना हमारी इच्छा शक्ति पर निर्भर होता है या गुरु की दया पर निर्भर होता है?*

बाबा जी : हाँ भई! जब आप मन को शान्त करके दुनिया के संकल्पों को खाली करके बैठेंगे तो इच्छा शक्ति आपके अंदर उठ ही नहीं सकती क्योंकि आप मन तो खाली करके बैठे हैं अगर आप इस तरह की इच्छा शक्ति बनाएंगे कि हम अंदर जाएं तो हो सकता है कि मन आपको इस तरफ़ से हटाकर आपके अंदर दुनिया की कोई और इच्छा भी उठा दे।

मैंने कल बताया था कि मन वकील की तरह अंदर से निमित्त बनकर दिखाता है, बहाने बनाता है और पढ़ाता है। कभी दोस्त बनकर छल करता है तो कभी दुश्मन बनकर छल करता है।

जब अभ्यास में बैठना है चाहे यहाँ बैठें चाहे अपने घर में बैठें मैं हमेशा आपको दो–तीन बातें कहा करता हूँ कि मन को खाली करके बैठें, अभ्यास को बोझ न समझें। सतसंगी के लिए हमेशा इन बातों को याद रखना ज़रूरी है।

मैं हमेशा ही महाराज सावन सिंह जी की ये बात दोहराया करता हूँ। आप कहा करते थे अगर किसी के दरवाज़े पर कोई बैल या जानवर खड़ा है तो उस घरवाले को फिक्र होती है कि इसे कब पानी पिलाना है, कब धूप में से छांव में लाना है। इसी तरह अगर कोई स्टोर में काम करता है तो उस स्टोर के मालिक को पता है कि इसे कब मजदूरी देनी है, यह मालिक की जिम्मेदारी है मालिक बेइंसाफ नहीं होता। जब एक इन्सान दूसरे इन्सान की मजदूरी नहीं रखता तो क्या गुरु रूपी भगवान हमारी मजदूरी रख सकता है?

हमारा काम अभ्यास करना है। जब हम सन्तों का दिया हुआ सिमरन करेंगे अभ्यास करेंगे तो स्वरूप अपने आप ही हमारे अंदर टिकना शुरू हो जाएगा। उनकी दया से ही शब्द हमारे अंदर प्रकट होना है। हम सुरत को ऊपर नहीं खींच सकते हमारे पास कोई ऐसा यंत्र नहीं है। बच्चे का काम स्कूल में जाना है, पढ़ाना टीचर का काम है। हमारा काम स्कूल में जाना है। हमारा स्कूल दोनों आँखों के दरम्यान तीसरा तिल है जिसके साथ हमारा खास ताल्लुक है। यहीं से हमारे सफ़र की शुरुआत होती है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से खेंचे सुरत गुरु बलवान।

सन्त–सतगुरु अपनी ज़िंदगी में यह नहीं चाहते कि हमारे बच्चे हमारी देह छोड़ जाने के बाद कामयाब हों या हमारे बच्चों को इस धरती पर एक जन्म और लेना पड़े। उनकी यही कोशिश होती है कि हमारे बच्चे हमारे जीवनकाल में ही मन इंद्रियों से ऊपर उठ जाएं ताकि इन्हें दोबारा इस दुखी संसार में हाज़िरी न लगानी पड़े।

हमें हिम्मत करनी चाहिए। अगर हम प्यार भरोसे से अपने अंदरूनी सफ़र की तरफ़ एक कदम चलेंगे तो सन्त–सतगुरु पचास कदम आगे आकर हमारी अगुवाई करेंगे।

सेवक : *महाराज जी, मुझे क्षमा करें, मुझे यह तय करने में कुछ परेशानी है कि हमें शब्द की आवाज़ सुनने के लिए कब बैठना चाहिए? मैंने सुना है कई जगह यह कहा भी गया है कि अभ्यास के आखिरी दस मिनट हमें सिर्फ शब्द की आवाज़ सुनने के लिए बैठना चाहिए। मैंने कई जगह यह भी सुना है कि जब तक हम अंदर ज्योत न देख लें, मन को टिका न लें तब तक हमें धुन के लिए नहीं बैठना चाहिए। मैं जानना चाहूँगी कि हमें धुन–अभ्यास कब करना चाहिए?*

बाबा जी : मैं आमतौर पर कहा करता हूँ कि सतसंगी को हर रोज़ अभ्यास का चौथाई हिस्सा शब्द सुनने में लगाना चाहिए क्योंकि इससे हमें बैठने की आदत बन जाती है और मन को रोज़–रोज़ रस मिलना शरू हो जाता है। सतसंगी को सिमरन अपना मामूल बना लेना चाहिए, उसे हर वक्त सिमरन करने की आदत डाल लेनी चाहिए। जैसे कारोबार करते वक्त आपका मन खाली होता है इस दौरान आप सिमरन करें फिर आप जब भी भजन के लिए बैठेंगे आपकी सुरत फौरन ऊपर प्रकाश में चली जाएगी और प्रकाश आपके सामने आ जाएगा। फिर आपको संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।

– 31 मार्च 1985

***

सेवक : *महाराज जी, कृपया आप हमें बताएं कि जीते जी मरना किसे कहते है?*

बाबा जी : मैं हर रोज़ सुबह और शाम आपको इसी चीज़ की तैयारी करवा रहा हूँ। मैं फिर भी आपको थोड़ा बहुत समझाने की कोशिश करता हूँ। हमारी आत्मा आँखों के दरम्यान तीसरे तिल से उतरकर शरीर के रोम–रोम में फैल गई है। यह आत्मा शरीर से भी निकलकर समाज, पुत्र–पुत्री, माँ–बाप दुनिया की ऐसी कौन सी जगह है जहाँ यह नहीं फैली हुई।

सन्त हमें बताते हैं कि आपको बार–बार जन्म क्यों लेना पड़ता है? दुनिया का सिमरन हमें बार–बार दुनिया में खींचकर ले आता है। हम जिनको याद करते हैं अंत समय उनकी ही शक्ल हमारी आँखों के सामने आती है और वहीं हमारा जन्म हो जाता है। हमारा ख्याल घरवालों मे होता है या पड़ोस तक ही होता है।

सन्तों का व्यक्तिगत तज़ुर्बा होता है कि सिमरन को सिमरन काटता है और ध्यान को ध्यान काटता है। जब हम सन्तों का दिया हुआ सिमरन करते हैं तो दुनिया के ख्याल, दुनिया का सिमरन जो हमारे अंदर चौबीस घंटे चल रहा है वह रुक जाता है। उसकी जगह सन्तों का दिया हुआ सिमरन आ जाता है। जब हम दुनिया का सिमरन छोड़ते हैं तो दुनिया की शक्लें हमारे सामने आनी खत्म हो जाती हैं। फिर किसकी शक्ल सामने आती है? हम जिनका दिया हुआ सिमरन करते हैं उनकी शक्ल सामने आती है।

दुनिया का सिमरन भी हमारे तीसरे तिल पर चल रहा होता है। आप जब किसी को याद करते हैं तो उसकी शक्ल आँखों के सामने आ जाती है वह शक्ल तीसरे तिल से नीचे नहीं आती। यह माला चौबीस घंटे इसी जगह फिरती रहती है लेकिन जब आप

इस जगह दुनिया का सिमरन याद करेंगे जैसे कभी माता को कभी पिता को कभी बहन को कभी भाई को कभी पति पत्नी को और पत्नी पति को तब क्या होगा? ये सब बाहर हैं। आप अपने ख्याल को बाहर उनकी शक्ल में लेकर जाएंगे इसलिए आप इस कदर बाहरमुखी हुए हैं कि आज तक अन्तरमुखी हो ही नहीं सके।

सन्त जब आपको नाम देते हैं, सिमरन देते हैं उस वक्त वे हमें कहते हैं कि गुरु भी आपके अंदर है भगवान भी आपके अंदर है। आप अंदर जाएं आपको सब कुछ अंदर ही मिलेगा। आप जितना ज़्यादा सिमरन करेंगे उतना ही आपका ख्याल अपने आप अंदर जाएगा। अंदर कहाँ जाएगा? जहाँ आपके गुरु हैं। जब आपका ख्याल तीसरे तिल पर टिकना शुरू हो जाएगा तो आपके गुरु जिन्होंने आपको नाम दिया है वे इस जगह बैठे हैं प्रकट हो जाएंगे।

अकाल मूरत है साध सन्तन की ठहर नीकी ध्यान को।

फिर वह मनमोहनी सूरत हमेशा हमारी आँखों के सामने रहती है। वह छोड़ने से छूटती नहीं, तोड़ने से टूटती नहीं। फिर चाहे कोई कितना भी ज़ोर लगा लें आप उस स्वरूप को नज़र के सामने से नहीं हटा सकते। पहले वह स्वरूप अंदर आना मुश्किल है अगर अंदर आ गया तो फिर अंदर से निकालना मुश्किल है।

आमतौर पर सतसंग में और नामदान के समय भी प्रेमियों को बताया जाता है कि हमें सिमरन के ज़रिए बाहर के ख्याल को हटाकर तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। शुरू–शुरू में जब हमारा ख्याल एकाग्र होता है तब हमारे पैरों के अंदर चींटियाँ चलती है। धीरे–धीरे नीचे वाला हिस्सा सुन्न होता जाता है; मौत भी इसी तरह आती है। आखिर जब हम तीसरे तिल पर पहुँच जाते हैं तो निचला हिस्सा बिल्कुल ही सुन्न हो जाता है। हमें उस वक्त कुछ

इस तरह महसूस होता है जैसे कोई पराया घर होता है। जिन लोगों का सिमरन मज़बूत होता है उनकी आत्मा शरीर में से इस तरह निकल आती है जिस तरह मक्खन में से बाल निकल जाता है।

जिनका सिमरन पूरा नहीं होता अभ्यास के समय उनकी आत्मा कभी प्रेमवश होकर शरीर से निकलती है और जब शरीर सुन्न होता है उनको वह तकलीफ बर्दाश्त नहीं होती। वे कहते हैं पता नहीं हमारे शरीर को क्या हो गया? कई तो डर के मारे फिर से अभ्यास में नहीं बैठते।

मैं पिछले साल सन्तबानी आश्रम अमेरिका में जब नामदान देने लगा तो मैंने पप्पु और रसल पर्किन्स को भी बताया अगर इस तरह किसी प्रेमी आत्मा की हालत हो जाएं तो उस प्रेमी की बीच वाली नाड़ियों की मालिश कर दें तो वह बहुत जल्दी होश में आ जाता है। वहाँ नामदान में एक प्रेमी कुर्सी पर बैठा था फौरन उसका शरीर खाली हो गया और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। इन्होंने उसी तरह मालिश की तो वह बहुत जल्दी होश में आ गया। अगर मैंने इन्हें पहले न बताया होता तो ये घबरा जाते। उस प्रेमी ने कोई तकलीफ महसूस नहीं की।

सब सन्तों ने कहा है कि नाम जपने वाले का हृदय फौलाद जैसा होना चाहिए। एक दिन हर किसी ने इस शरीर को छोड़कर जाना है तो क्यों न हम जीते जी ही इस क्रिया को पूरा कर लें जो मरने के समय करनी है। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा हैं:

मोइयां जिस घर जाईए तिस जिवंदेया मर मार।

आत्मा रोम–रोम में समाई हुई है। जब यह ऊपर जाती है शरीर के निचले चक्र टूटते हैं। तब स्वाभाविक ही दर्द होता है। सिमरन ही एक ऐसा साधन है, अगर हम सन्तों का दिया हुआ सिमरन करते रहें तो हमें कोई तकलीफ नहीं होती।

शुरू–शुरू में कई प्रेमी मेरे पास अभ्यास करने के लिए आते थे। उस वक्त मेरे पास 'दो–शब्द' का भेद था। वे प्रेमी महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा थे। उनके पास 'पाँच–शब्द' का भेद था। हमने इस तरह का नियम रखा हुआ था कि जो व्यक्ति अभ्यास में बैठे हुए हिले या सो जाए तो उसे दो थप्पड़ मारें।

एक व्यक्ति की सब पर निगाह रखने की ड्यूटी होती थी। हम सब मिलकर बारी–बारी यह ड्यूटी देते थे जिसमें मैं भी शामिल था। हम दस–बारह लोग मिलकर अभ्यास किया करते थे। अभ्यास सूरमे और प्रेमी लोग ही कर सकते हैं।

वे बेचारे कई–कई मील चलकर मेरे पास आते थे। हममें से कोई व्यक्ति चाय नहीं बना सकता था या कोई चाय पीकर नहीं बैठ सकता था और कोई भी बीच में आकर प्रसाद भी नहीं बाँट सकता था। अगर कोई ऐसी शरारत करता तो वह अभ्यास में नहीं बैठ सकता था। इसका मतलब यही था कि वह सब किया–कराया ही ले जाना चाहता था। वह वक्त बहुत कठिन था।

मैं आपको उस वक्त की कहानी बताता हूँ कि मैंने कभी भी अभ्यास में बैठने के लिए अच्छा कपड़ा नहीं बिछाया था। मैं आमतौर पर कंकड़–पत्थर या ईटों से भरी बोरियों पर या लकड़ी के फट्टे पर बिना कोई कपड़ा या बोरी बिछाकर भजन में बैठता था।

मिस्टर ओबराय ने जो किताब लिखी है उसके अंदर आपने सुंदरदास की कहानियाँ पढ़ी होंगी। सुंदरदास महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था। उसकी मेरे साथ आठ–आठ घंटे की भजन की बैठक रही है। आपने उस किताब में पढ़ा होगा कि जीते जी कैसे मरते हैं। मैं और सुंदरदास खेत में आग जलाकर भजन में बैठा करते थे। भजन में बैठे हुए सुंदरदास की टाँग पर जलती हुई

लकड़ी गिर गई और उसकी टाँग जल गई लेकिन उसे पता नहीं चला कि मेरी टाँग जल गई है। जब वह अभ्यास से उठा तो उसने मुझे बताया कि जितना रस आज अभ्यास में आया इतना मेरी ज़िंदगी में पहले कभी नहीं आया। अब आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह किस मंजिल पर गया होगा? अगर वह शरीर में होता तो क्या उसे दर्द नहीं होता? मामूली दर्द से भी इन्सान उठ जाता है।

मिस्टर ओबराय ने इस किताब में सुनी–सुनाई बातें नहीं लिखी। उसने इसमें ज़्यादा से ज़्यादा उन लोगों के बारे में लिखा है जिन्होंने मेरे साथ मिलकर भजन–अभ्यास किया है। अगर हमारे अंदर तड़प उठती है, हम अभ्यास में बैठते हैं तो हमारा मन हमारे अंदर जल्दबाज़ी और अविश्वास पैदा कर देता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आमतौर पर पश्चिम के लोगों के साथ ऐसा होता है कि इनका मन जल्दबाज़ी में आ जाता है। हमें कभी भी जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। श्रद्धा और प्यार से अपना अभ्यास ज़ारी रखना चाहिए।

– 3 अप्रैल 1985

***

सेवक : *मेरा सवाल दर्शनों के बारे में है। मैं जानना चाहती हूँ कि जब आप हमें दर्शन देते हैं तो हमें जो आशीर्वाद मिलता है क्या यह हमें भजन–अभ्यास करने से मिलता है, हमारी किस्मत के हिसाब से मिलता है या आपकी दया से मिलता है?*

बाबा जी : हाँ भई! सबका मूल–मुद्दा अभ्यास ही है। हम अभ्यास तभी करते हैं जब हमारी भावना बन जाती है कि हमने यह काम करना है। नेक काम करते हैं तो नेक भावना बन जाती

है। बुरा काम करते हैं तो बुरी भावना बन जाती है। हमें उस भावना के मुताबिक ही दर्शन मिलते हैं। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा है:

जाँकी होए भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी।

महाराज कृपाल मुसलमानों की पवित्र किताब कुरान में से मिसाल दिया करते थे कि मोहम्मद साहब ने कहा था, ''मोमिन खुदा का शीशा है। आप शीशे में जैसी शक्ल देखेंगे आपको वैसा ही नज़र आएगा।'' सन्त–सतगुरु सबसे समान प्यार करते हैं, उन्हें हर एक के साथ प्यार होता है मौहब्बत होती है। वे सबको देना जानते हैं लेकिन हमारा जैसा बर्तन होता है जैसी भावना होती है हम उसके मुताबिक ही प्राप्त करते हैं।

रात को मैंने सतसंग में बताया था कि जब परमपिता कृपाल ने मुझे नामदान देने का हुक्म दिया। तब आपने मुझसे कहा, ''ये जो लोग बैठे हैं इन्हें थ्योरी समझा दे।'' मैंने कहा, ''महाराज जी, आप इन्हें अपना असली रूप दिखा दें, फिर मंदिर–मस्जिद का झगड़ा नहीं रहेगा, घर–घर में आपका प्यार हो जाएगा और लोगों को मालूम हो जाएगा कि परमात्मा कहाँ है।'' तब हुज़ूर ने हँसकर कहा, ''तू मेरे कपड़े न फड़वा, मैं तुझसे जो बोल रहा हूँ तू वह कर।''

उस समय उनके कई पुराने नामलेवा भी वहाँ खड़े थे अगर वे भी यह समझते कि महाराज कृपाल भगवान हैं तो वे भी यह कह सकते थे। जिसकी जैसी भावना है वे उस महान आत्मा को उसी तरह देखते, समझते हैं और उससे अपनी मुराद पूरी करवाते हैं।

हमारे इलाके का एक आदमी महाराज कृपाल का नामलेवा है। जब महाराज जी ने नाम दिया तो पचास लोगों को अच्छा अनुभव हुआ लेकिन एक को अनुभव नहीं हुआ तो उसने कहा कि मुझे ज्योत दिखाई नहीं दी। उस समय मेरे दिमाग को बहुत समस्या हुई

कि ज्योत भी भगवान की है और भगवान भी ज्योत का है। भगवान इसके सामने खड़ा है और यह कौन सी ज्योत देखेगा! फिर भी महाराज जी ने उसे दूसरी बैठक दी। आज वह आदमी पछताता है कि मैं उस समय कौन से ख्यालों में लगा हुआ था। जब गुरु मिल गए तो ज्योत दूर नहीं, ज्योत भी मिल गई सब कुछ ही मिल गया।

मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा कृपाल ज्योतरूप थे। उनके रोम–रोम में से किरणें निकलती थी। हमारी जैसी भावना है हम उसके मुताबिक ही देखते हैं। मैंने गुरु को पकड़ा उनके सामने खड़े होकर मैंने यह बात कही थी, ''मैं भगवान को नहीं मानता, मैंने उसे नहीं देखा आपको देखा है, मेरे लिए आपसे ऊँचा कोई भी नहीं है।'' उन्होंने जो कहा मैंने वह कर लिया अगर हम गुरुमत को इस तरह पकड़ लें तो हम जल्दी तरक्की कर जाते हैं।

नाम सन्त–सतगुरुओं ने पैदा किया होता है, उनके अंदर नाम प्रकट होता है। अगर हम सच्चे दिल से ईमानदारी के साथ सन्तों की शरण में रहें, उनके कहने पर अमल करें तो हमारा सब कुछ ही बन जाता है। गुरु हमें मन–इन्द्रियों से ऊपर उठने की सलाह देते हैं लेकिन हम वहीं फँसे रहते हैं।

जिस तरह कोई कैदी कैद काटकर जेलर से कहे कि मेरा चूल्हा–चौंका मत समेटना मैं फिर जल्दी यहीं आऊँगा। जब कैदी आज़ाद हो जाता है तो उसे चूल्हे–चौंके को भूल जाना चाहिए। अपने नगर में आकर नेक इन्सान बनकर ईमानदारी से अपना जीवन जीना चाहिए। सन्तमत सुधारक मत है हमने इसमें अपना सुधार करना है। अगर हम अपनी बाहरी ज़िंदगी को अच्छा बना लेते हैं तो अंदर का मार्ग हमारे लिए बहुत आसान हो जाता है।

– 14 जनवरी 1986

***

सेवक : *अंदर जाने के बारे में मेरा सवाल दो हिस्सो में है। पहला– सेवक को अंदर जाने के लिए कौन–कौन से कदम उठाने ज़रूरी हैं? दूसरा– जब वह अंदर जाना शुरू कर देता है तो उसे कैसे पता लगता है कि उसने अंदर जाना शुरू कर दिया है?*

बाबा जी : हाँ भई, सबसे पहले सेवक को गुरु से प्यार होना चाहिए और गुरु पर विश्वास होना चाहिए। अगर ये दो चीज़ें हैं तो आपके अंदर मेहनत करने का उत्साह अपने आप ही पैदा हो जाता है। सेवक की मेहनत और गुरु की दया ये दोनों चीज़ें बराबर चलती हैं। अगर सेवक मेहनत करता है तो हम जिस सन्त–सतगुरु का काम कर रहे हैं वह बेइंसाफ नहीं, वह ज़रूर अपनी दया करते हैं। अगर हम मेहनत के चोर हैं तो वे दया कहाँ करेंगे?

अभी हम इस कमरे में बैठे हैं, हर बंदे की शक्ल दिखती है कि किसका सिर नंगा है, किसका सिर ढ़का है, किसके बाल लम्बे हैं, किसके बाल छोटे हैं, किसकी आँखों पर चश्मा लगा हुआ है और किसकी आँखों पर चश्मा नहीं लगा। प्यारयो, अंदर हम इससे भी साफ देख सकते हैं। जब आप अंदर जाएंगे तब आप सब कुछ खुद ही अपनी आँखों से देखेंगे और सतगुरु के पास उसकी गवाही भी देंगे कि आपने हमारे ऊपर जो दया की है हम उसका मूल्य नहीं चुका सकते, हम आपका एहसान नहीं चुका सकते।

आपके बहुत से सतसंगी भाई जो राजस्थान ग्रुप में जाकर अभ्यास करते हैं उनमें से जो थोड़े बहुत अंदर जाते हैं वे अंदर का नज़ारा ज़रूर बताते हैं। वे उस दया का शुक्राना करते हैं। जो सेवक आलस कर रहा है आज का काम कल पर छोड़ रहा है उस सेवक की इस धीमी चाल से सतगुरु खुश नहीं होते। वे तो चाहते हैं कि उनके जीवन काल के दौरान ही सब शिष्यों के अंदर शब्द

की धारा प्रकट हो जाए। वही टीचर अपने आपको टीचर कहलवाने का हक़दार होता है जो ज़्यादा बच्चों को पास कर सके। इसी तरह सन्त–सतगुरु भी चाहते हैं कि हमारे जीवन काल में ही शिष्य कामयाब हो जाएं शब्द की धारा को पकड़ें, गुरु को अंदर प्रकट करें और यह हमारे पीछे से भटके नहीं।

– 12 जनवरी 1987

***

सेवक : *क्या आप समझाएँगे कि सिमरन के अंदर अपने आपको स्थिर करना, अपने आपको आराम से रखना या सिमरन के अंदर अपनी ज़ुबान को तर रखने से आपका क्या मतलब है? हम किस तरह से अपने ऊपर बिना तनाव डाले बिना ज़ोर डाले अपने सिमरन को लगातार कर सकते हैं?*

बाबा जी : हाँ भई, शुरू–शुरू में तो हमें थोड़ा–बहुत संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि जन्म–जन्मांतर से हमारे अंदर संकल्प–विकल्प उठ रहे हैं। इस जन्म में भी हमने इस ओर कोई खास तवज़्जो नहीं दी है। आमतौर पर हमारा मन आज़ाद रहा है इसे कल्पना करने की आदत है। जब हमें सन्तों की शरण प्राप्त होती है फिर सन्त हमें बताते हैं कि आपको संसार में खींचने वाली ताकत सिमरन ही है। हम दुनिया का सिमरन करके दुनिया का रूप हो गए हैं। दुनिया का सिमरन ही हमें बार–बार यहाँ खींचकर लाता है।

ऐसा कोई इन्सान नहीं जिसकी सब ख्वाहिशें पूरी हो जाएँ। किसी की दस पूरी हो जाती हैं तो पाँच अधूरी रह जाती हैं। किसी की पाँच पूरी हो जाती हैं तो दस अधूरी रह जाती हैं। जब मौत आती है तब जो ख्वाहिशें अधूरी रह जाती हैं इन्सान उसके संकल्प–विकल्प उठाने शुरू कर देता है। आमतौर पर जो कोई

उसके आस–पास होता है उससे भी कहता है कि मेरा यह काम रह गया है। वह अंदर ही उन ख्वाहिशों की रट लगाए रखता है। आखिरी वक्त जिधर ख्याल होता है उसी जगह जाकर वह जन्म ले लेता है फिर उन ख्वाहिशों को अच्छी तरह पूरा करता है और फिर से नई ख्वाहिशें उठा लेता है।

सन्तों को हमारी इस कमजोरी का पता होता है, उन्हें पता है कि पानी की मारी खेती पानी से ही हरी होती है। सिमरन, सिमरन को काटता है। ध्यान, ध्यान को काटता है क्योंकि जिसको हम याद करते हैं उसकी शक्ल बेशक हम न भी याद करें वह अपने आप ही हमारे अंदर आकर टिकनी शुरू हो जाती है।

बच्चों के साथ प्यार है सिर्फ याद करने की ज़रूरत है शक्ल खुद ब खुद ही अंदर आ जाती है। पत्नी बाहर गई है पति को याद करती है फौरन उसकी शक्ल आँखों के आगे आ जाती है। इसी तरह पति बाहर गया है पत्नी को याद करता है तो पत्नी की शक्ल आँखों के आगे आ जाती है। किसी को याद करने को ही सिमरन कहते हैं। अगर हमारा दुनियावी पदार्थों के साथ मोह है प्यार है तभी हम इन्हें बार–बार याद करते हैं और अपने अंदर ठहराने की जगह बनाते हैं।

सन्त–सतगुरु प्यार पर इसलिए ज़ोर देते हैं कि गुरु का प्यार हमें दुनियावी प्यार को छोड़ने में मदद करता है। गुरु का दिया हुआ सिमरन, दुनिया का सिमरन भुलाने में हमारी बहुत मदद करता है। जैसे अब दुनिया का सिमरन हमारे अंदर बगैर कोशिश किए अपने आप ही चल रहा है फिर दुनिया का सिमरन बंद हो जाएगा और सन्तों ने जो सिमरन दिया है वह अपने आप ही शुरू हो जाएगा।

हमें सिमरन की शक्ति का पता नहीं कि सिमरन का क्या फायदा है? अगर पता चल जाए तो हम सिमरन को छोड़ें ही नहीं।

इस पर आपका कोई खास ज़ोर भी नहीं लगता सिर्फ इस तरफ़ तवज़्जो ही करनी है। हम जैसे–जैसे ज़्यादा सिमरन करेंगे वैसे–वैसे एकाग्र होना शुरू करेंगे। जब थोड़ी सी एकाग्रता प्राप्त होती है तब हम कई तरह के चमत्कार देख सकते हैं। सन्त ऐसे सेवकों की अंदर से सदा ही रहनुमाई करते हैं उनको खबरदार करते हैं कि आपने किसी रिद्धी–सिद्धी से या किसी भी चमत्कार से कोई भी काम नहीं लेना है।

गुरु को हमारे प्यार की ज़रूरत नहीं, वे तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। सेवक जब तक गुरु से सच्चा–सुच्चा पवित्र प्यार नहीं करता तब तक उसकी ज़ुबान पर उस तरह का सिमरन नहीं चढ़ता जिस तरह का चढ़ना चाहिए। अगर सच्चा–सुच्चा प्यार होगा तो हम अपने आप ही बगैर रूके गुरु का सिमरन करते रहेंगे।

जब हमारी ज़ुबान पर सिमरन चढ़ जाता है पहले दुनिया के सिमरन ज़ुबान को खुष्क करते थे फिर सतगुरु का सिमरन ज़ुबान को अपने आप ही तर कर देता है। जब हम कोई हिसाब–किताब का काम करते हैं तब मन को साथ लेना पड़ता है नहीं तो हर काम में चलते–फिरते, उठते–बैठते, किसी से बातें करते हुए भी हम बहुत आसानी से सिमरन कर सकते हैं। गुरु नानक कहते हैं :

मुख दी बात सगल स्यों कर दा जीव संग प्रभु अपने घर दा।

प्रेमी लोग दुनिया से बातें भी करते हैं बोलते–चलते भी हैं लेकिन उनके सिमरन की तार अपने गुरु–शब्द के साथ जुड़ी होती है। ऐसा प्रेमी घर को जंगल बना लेता है भीड़–भाड़ में रहते हुए भी वह एकांत में है जंगल में है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सो एकांत जिस ह्रदय थाँय।

– 30 सितम्बर 1987

***

सेवक : *जब अभ्यास के अंदर ऐसी आवाज़ सुनाई देती है जो न दाँई तरफ़ से आती है और न बाँई तरफ़ से आती है तो हमें किस तरह उस आवाज़ को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई, बड़ा अच्छा सवाल है। आमतौर पर कई सतसंगियों के साथ ऐसा होता है। जब सतसंगी को अंदर से आवाज़ आनी शुरू हो जाती है बेशक वह आवाज़ कैसी भी है आप जिस आवाज़ को पहले से सुनते आ रहे हैं आप उसी आवाज़ को रोज़–रोज़ अंदर सुनें, पहचानने की कोशिश न करें। जब आप नौ द्वारे खाली करके आँखों के पीछे सतगुरु के स्वरूप को प्रकट कर लेंगे तो सही आवाज़ कौन सी है यह बताना उनका काम है।

अन्तर शब्द सुरत धुन जागे सतगुरु झगड़ नबेड़े।

अगर आप आवाज़ की पहचान करने बैठेंगे तो आवाज़ से दूर चले जाएंगे, आपको फिर से भजन करके वहाँ पहुँचना पड़ेगा।

– 29 फरवरी 1992

***

सेवक : *सेवक किस तरह अपना मन गुरु को दे सकता है?*

बाबा जी : जब हमारा मन सिमरन में, गुरु के काम में लग जाता है तब हम मन से कोई भी दुनियावी काम न लें, कोई भी दुनियादारी की बात न सोचें उस वक्त मन गुरु पर वारा जाता है।

महाराज सावन सिंह जी भी कहा करते थे, ''औरत पति को अपना तन, धन सब कुछ दे देती है लेकिन मन नहीं देती।'' यही हालत गुरु और शिष्य के बीच में आ जाती है। सेवक अपना मन गुरु पर नहीं वारता। गुरु और शिष्य के बीच में मन ही दीवार है, असली शत्रु मन ही है। अगर हम मन की रुकावट दूर कर लेते हैं

तो संसार भी हमारा मित्र बन जाता है और हम अपने सच्चे मित्र गुरु से भी फायदा उठा सकते हैं। हम आँखों से देख सकते हैं कि हमारे गुरुदेव हमारे लिए क्या करते हैं?

सेवक : *महाराज जी, मैं जब भजन में बैठती हूँ तब दुनिया के कामकाज के ख्याल और इसके साथ-साथ और भी कई ख्याल मेरे दिमाग में आते हैं जो मुझे परेशान करते हैं। मैं मन की ज़ुबान से सिमरन करने में कामयाब नहीं हूँ। क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे मैं गले से ऊपर उठकर मन की ज़ुबान से सिमरन कर सकूं?*

बाबा जी : उसी वक्त ज़्यादा ख्याल आते हैं जब हम गले में सिमरन करते हैं। हमें इस तरह सिमरन करना चाहिए जिस तरह आमतौर पर हमारे अंदर ख्याल चलते हैं। हम दुनियावी काम करते रहते हैं और हमारे ख्याल अपने आप ही चलते रहते हैं। मन की ज़ुबान ही ख्याल पैदा करती है। हमें उसकी जगह सिमरन को देनी चाहिए। सतसंगी को सिमरन करते समय पूरी तवज़्जो देनी चाहिए। थोड़े दिन आपको मेहनत करनी पड़ेगी और कुछ दिनों बाद आपका सिमरन अपने आप ही चल पड़ेगा ठीक उसी तरह जिस तरह दुनिया के ख्याल चलते रहते हैं फिर उन्हें याद करें या न करें।

बहुत सतसंगियों को सिमरन के बारे में कम ही ख्याल होता है कि सिमरन के क्या फायदे हैं, सिमरन क्यों करना है और सिमरन के अंदर क्या शक्ति है? जब हमें यह ज्ञान हो जाता है कि सिमरन के अंदर यह शक्ति है सिमरन का यह फायदा है और सिमरन के ज़रिए ही हम अपनी आत्मा को एकाग्र करके तीसरे तिल पर ला सकते हैं फिर सतसंगी इस तरफ़ पूरी तवज़्जो देकर सिमरन करता है और कामयाब हो जाता है।

***सेवक :** मेरे रोज़ के कामकाज में मुझे कई तकनीकी किताबों को पढ़कर समझना ज़रूरी होता है, इसके साथ ही सिमरन करते रहना भी ज़रूरी है। कृपया आप मुझे यह बताएं कि मैं सही तरीके से कामकाज करते हुए कैसे लगातार सिमरन कर सकता हूँ?*

बाबा जी : वैसे तो किताब पढ़ते समय मन की मदद लेनी पड़ती है लेकिन कई दफा मन अपनी चालाकी मारता रहता है और उस समय भी दुनिया का सिमरन पकड़कर बैठा होता है।

अगर हमें मन की ज़ुबान से सिमरन करने की आदत पड़ जाए तो उस समय भी हमारा ज़्यादा नहीं तो थोड़ा–बहुत सिमरन ज़रूर चलेगा। आप डॉक्टरी का काम करते हैं उसमें सिमरन आपकी काफी मदद कर सकता है।

***सेवक :** प्यारे महाराज जी, कई बार सिमरन करना बहुत आसान होता है लेकिन कई बार सिमरन का एक शब्द भी जपना बहुत मुश्किल होता है; ऐसा क्यों होता है?*

बाबा जी : कई दफा हम परेशान होते हैं इसलिए हमारा मन अशान्त होता है। जिस दिन मन अशान्त होता है उस दिन सिमरन करने में स्वाभाविक ही दिक्कत आती है। जिस दिन मन शान्त हो, परेशान न हो उस दिन मन सिमरन में लग जाता है।

***सेवक :** ऐसा कौन सा तरीका है जिससे हम आपकी दया प्राप्त कर सकें?*

बाबा जी : बेटी, भजन–सिमरन ही दया को प्राप्त करने का तरीका है। सतगुरु हमेशा ही दयालु होते हैं। वे अपने बच्चों को कुछ न कुछ देकर ही खुश होते हैं।

– 23 मार्च 1983

***

सेवक : *क्या आप ध्यान के बारे में कुछ बताएंगे? सिमरन और भजन से ध्यान का क्या ताल्लुक है?*

बाबा जी : जब तक हमारे विचार सही नहीं तब तक हमारे ख्याल पवित्र हो ही नहीं सकते। बुरे ख्याल बुरे विचारों में से ही उठते है। जब हम विचार करेंगे कि हमारे अंदर दिन–रात ये बुरे ख्याल क्यों पैदा हो रहे हैं तब हम दोनों आँखों के बीच में ध्यान टिकाकर मन की ज़ुबान से सिमरन करेंगे। जब हम मन की ज़ुबान से सिमरन करते हैं तो आत्मा और मन को नीचे खींचने वाली बुरे ख्यालों की तारें ढीली हो जाती हैं। मन और आत्मा तीसरे तिल पर एकाग्र होना शुरू हो जाते हैं।

सतसंगी अच्छे हैं, प्यारे हैं। ये बेचारे अपनी तरफ़ से भजन–सिमरन भी करते हैं लेकिन अपने विचारों पर ध्यान नहीं देते, अपने ख्यालों को साफ नहीं करते। अपने खान–पान का परहेज नहीं करते इसलिए ये जल्दी कामयाब नहीं होते। जब तक हम अपने जीवन को सच्चा–सुच्चा नहीं बनाएंगे तब तक हम अंदर जाने के काबिल नहीं होते, परमात्मा अंदर दरवाजा ही नहीं खोलता।

अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए चाहे हम बाग लगाएं, गेहूँ या गन्ना बीज़ें तो हमें उस ज़मीन की तैयारी करती पड़ती है। अच्छी ज़मीन तैयार होगी समय पर खाद और पानी दिया जाएगा तभी घर में अच्छी फसल आएगी।

इसी तरह सतसंगी को भी नाम का बीज़ उगाने के लिए उसका फल खाने के लिए अपने हृदय की ज़मीन साफ, पवित्र करनी पड़ेगी तभी नाम का फल उस डाली को हरा–भरा कर सकता है।

सेवक : *मेरे ख्याल में तो यह था अगर हम सिमरन और भजन करें तो ही हमारे ख्याल पवित्र हो सकते हैं। आपके कहने*

के अनुसार अगर हमारे ख्याल पवित्र होंगे तभी हम सिमरन और भजन–अभ्यास कर सकते है?

बाबा जी : देखो भई बात यह है, अगर हमने कपड़ों को साफ करना है तो हमें सबसे पहले मशीन लानी पड़ेगी फिर उसमें सर्फ डालना बहुत ज़रूरी है तभी हम कपड़ों में से मैल निकाल सकते हैं। इसी तरह जिसने कामयाब होना है उसे आत्मा की सफाई करने के लिए प्रेम–प्यार से भजन–सिमरन करने के साथ–साथ अपने ख्यालों को ठीक करना भी उसका फर्ज बनता है।

अगर हम यह सोचें, पहले फल खाएं फिर पौधा लगाएं, ऐसा नहीं हो सकता। पौधा लगाने के लिए पहले ज़मीन की तैयारी करनी पड़ती है फिर पौधा लगाते है, पौधे की परवरिश करते हैं फिर उस पर मीठा फल लगता है। इसी तरह जहाँ नाम जपने का शौक और विरह–तड़प पैदा हुई है वहाँ अपने आपको साफ रखना भी हमारा फर्ज बनता है। फिर हमारी ज़ुबान पर कोई शिकायत नहीं आएगी कि हमारा भजन नहीं बनता, मन नहीं टिकता या भजन के समय नींद आती है फिर यह समस्या खत्म हो जाती है।

हुज़ूर महाराज कृपाल सिंह जी ने प्रेमियों को डायरी रखने के लिए कहा था। उनका मकसद यह था कि अपने आपको सुधारें और अपना भजन–सिमरन भी करें। अपने आपको साफ सुथरा रखना अपने विचारों को साफ रखना खास मुश्किल नहीं होता।

अगर हम विचार करते रहेंगे, अभ्यास करेंगे तो हमारे अंदर यह अवधारणा आ ही जाती है। अपने आप ही अंदर से नेक विचार आने शुरू हो जाएंगे। ठंडे दिल से विचार करके देखें! आज यहाँ सतसंग में बैठे हुए भी हमारे अंदर कई ऐसे बुरे ख्याल उठकर खड़े हो जाते हैं जो सतसंगी को परेशान करते हैं।

आम दुनिया को तो पता ही नहीं होता कि इन्सान के ख्याल उसे मलीन करते हैं लेकिन सतसंगी को पता होता है फिर भी वह इसके लिए कोई इन्तजाम नहीं करता उसे आदत पड़ी हुई है। इसी तरह अगर हम नेक विचारों की आदत डाल लेंगे तो बगैर कोशिश किए ही हमारे अंदर नेक ख्याल पैदा हो जाएँगे।

ज़्यादातर कमज़ोर मन ही इस तरह के सवाल खड़े करता रहता है कि यह कैसे होगा, कैसे कर सकेंगे? आप मन को कमज़ोरी जाहिर न होने दें इसे सिमरन का रस देते रहें। मन जो माँगता है उसे वह न दें। इस चीज़ की अपने आप ही आदत डाल लें तो नेक विचार आने शुरू हो जाएंगे।

– 1 अप्रैल 1987

***

सेवक : *क्या सिमरन का हर शब्द उस मंडल के भगवान का प्रतिनिधित्व करता है जिसके ये मंडल हमारे अंदर हैं। जब हमारे पास सतनाम है तो हमें इन निचले चारों मंडलों की भक्ति करने की क्या ज़रूरत है। हमारे जीवन को बेहतर बनाने में सिमरन किस तरह काम करता है और सिमरन के लिए हम ज़्यादा प्यार कैसे पैदा कर सकते हैं?*

बाबा जी : हाँ भाई, मैं हमेशा ही कहा करता हूँ कि हमें जो पाँच पवित्र नाम दिए जाते है ये उन मंडलों के मालिकों के नाम हैं, जहाँ से हमारी आत्मा ने भजन–अभ्यास द्वारा सचखंड पहुँचते समय जाना है। आपको मैं एक उदाहरण देकर समझाता हूँ क्योंकि उदाहरण के साथ समझना आसान हो जाएगा।

फर्ज करें आप अमेरिका से हिन्दुस्तान आ रहे हैं। आपके पास हिन्दुस्तान का वीजा है लेकिन रास्ते में जो मंडल पड़ते है जहाँ हवाई जहाज रुककर पेट्रोल लेते है, आपको वहाँ रुकना ही पड़ेगा। उसी तरह अगर आप यहाँ से अमेरिका जाएं बेशक आपके पास अमेरिका का वीजा है, जहाँ से अमेरिका जाने का रास्ता है उस रास्ते में जो मंडल आते है वहाँ आपको ज़रूर रुकना पड़ेगा। आप जहाँ रूकेंगे वहाँ के कायदे–कानून के मुताबिक ही आप बाहर अंदर आ जा सकते हैं और आपको वहाँ का अनुशासन अपनाना पड़ेगा।

जब हम सचखंड जाते समय शुरू–शुरू में इन मंडलों को पार करते हैं तो हमें इन मंडलों में से अवश्य गुजरना पड़ेगा। हमें इन मंडलों के कायदे कानून के अनुसार चलना पड़ेगा। आगे हमारी भक्ति के ऊपर निर्भर करता है कि हमारे गुरु कितने समय में उन मंडलों को पार करवाते हैं।

यह समझने की बात है कि हम स्कूल में जाते हैं तो हमारा वास्ता कई शिक्षकों से पड़ता है। हम उनसे प्यार करते हैं। जब हम पढ़ाई समाप्त कर लेते हैं फिर हमारी इच्छा के ऊपर निर्भर है कि हमने उनका स्वागत करना है या नहीं, इसी तरह फिर हमने वहाँ रुकना है या नहीं क्योंकि हम आखिरी मंजिल सचखंड पहुँच जाते हैं फिर वह रास्ता आसान हो जाता है। गुरु साहब कहते हैं:

गुरुमुख आए जाए निसंग।

फिर आपने आँखें बंद की तो मालिक के दरबार में पहुँच सकते हैं और आँखें खोली तो दुनिया के साथ जुड़ सकते हैं। तब आपको रास्ते में रुकावट डालने वाली कोई ताकत नहीं मिलेगी।

हाँ भाई, सिमरन करने से ही हमारा प्यार जाग जाता है। हम किसी पेड़ की तभी कद्र करते हैं जब हम उसका फल खाते हैं।

फल खाने से पता चलता है कि यह मीठा है या खट्टा है। उसी तरह सिमरन करने से हमें खुद ही पता चलता है कि किस तरह प्यार जागता है। जिसको सिमरन का रस आ जाता है वह सिमरन नहीं छोड़ सकता चाहे कितनी भी कोशिश कर ले। दुनिया में ऐसे रस कहीं नहीं मिलते जितना रस सिमरन में आता है। जब हमें वह रस प्राप्त होता है तब हम मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाते हैं, हमारी आत्मा शब्द को आसानी से पकड़ लेती है। तब हमारी स्थिति इस तरह हो जाती है जैसे गुरु नानकदेव जी ने कहा है:

तोड़ी ना टूटे छोड़ी ना छूटे ऐसी माधो खिंच तणी।

गुरु हमारी डोरी इस तरह बाँध देते हैं वह डोरी हमारे तोड़ने से टूटती नहीं और छोड़ने से छूटती नहीं। यह प्यार अपने आप ही जाग पड़ता है।

– 30 दिसम्बर 1987

***

सेवक : क्या आप समझा सकते हैं कि आप हमें स्वपन द्वारा या अभ्यास के अंदर जो तज़ुर्बे देते हैं उस बारे में जब हम किसी से बात करते हैं तो क्या हम वह सब कुछ खो बैठते हैं या उसमें से थोड़ा कुछ खोया जाता है? अगर हम अपने अंदरूनी तज़ुर्बों के बारे में लोगों से बात करें तो क्या हमें दोबारा वैसा तज़ुर्बा हो सकता है या वह तज़ुर्बा हमेशा के लिए खो जाता है और इसका हमारे अभ्यास पर क्या असर पड़ता है?

बाबा जी : हाँ भाई, बड़ा अच्छा सवाल है। कई दफा इसका जवाब कई रूप में पहले भी छप चुका है और सतसंग में भी बताया गया है। आप लोग मैगज़ीन पढ़ने की आदत डालें। ऐसे सवालों के जवाब एक नहीं तो दूसरी मैगजीन में आसानी से मिल सकते हैं।

आमतौर पर स्वपन हमारे दिनभर के कारोबार में से ही जन्म लेते है। जागृत अवस्था में हमारी आत्मा तीसरे तिल पर होती है उस समय हमें पूरा होश होता है। जब हम सोते हैं तो यह नीचे कंठ में आ जाती है। उस समय कुछ चीज़ें याद होती है कुछ याद नहीं होती। जब हम गहरी नींद में चले जाते हैं हमारी आत्मा इससे भी नीचे नाभि में उतर आती है। तब हमारी चेतन शक्ति पूरी जागृत अवस्था में नहीं होती। उस समय हम जो सोच रहे होते हैं या कर रहे होते हैं वह पूरा नहीं होता अधूरा होता है। कभी ऐसा लगता है कि किसी के पैर नहीं है किसी के हाथ नहीं है। कई दफा सपने में हम दौड़ते हैं लेकिन दौड़ा नहीं जाता; कई दफा डर भी लगता है।

सतसंग में यही बताया जाता है कि हमें नाम से बिछुड़कर न जागते हुए शान्ति है न सोते हुए शान्ति है। सोते हुए भी हम मारो–मारो, पकड़ो–पकड़ो करते हैं, हमें चैन नहीं होता। आमतौर पर कई दफा बड़े भयानक और डरावने सपने भी आ जाते हैं।

मैं आपको इस सवाल का जवाब दो हिस्सों में आसानी से समझा रहा हूँ। पहला हिस्सा दुनियावी सपनों का था जो आपको बता दिया है। दूसरा हिस्सा गुरु के सपनों के बारे में पूछा है। उसका जवाब यह है अगर हमें सपने में गुरु नज़र आते हैं या हमें अंदरूनी तज़ुर्बा होता है तो क्या वह हमें लोगों को बताना चाहिए?

सदा बताया जाता है कि सतगुरु पवित्र बर्तन होते हैं वे नाम रूप बन गए होते हैं। आँखों से नीचे इन्द्रियों के भोग और विषय–विकार है। वह पवित्र हस्ती हमें कभी भी आँखों से नीचे आकर दर्शन नहीं देंगे और न ही हमें मिलेंगे।

अफ़सोस के साथ कहना पड़ेगा कि सतसंगी इतना भजन–अभ्यास नहीं करते हालाँकि जो लोग भजन–अभ्यास करते हैं वे

इस चीज़ को अच्छी तरह समझते हैं कि जब कभी हम भजन-अभ्यास करके सोए होते हैं तब हमारी आत्मा शान्त होती है। गुरु ऐसे समय में अपनी प्यार भरी नज़र से प्यार के तिनके से आत्मा को नौ द्वारों में से निकालकर ऊपर के मंडलों में ले जाते हैं। गुरु का जब भी दर्शन होता है ऊपर के मंडलों में ही होता है। कई दफा जिन अभ्यासी प्रेमियों का सिमरन और भजन-अभ्यास करते समय पर्दा न खुले तो ऐसे समय में उनका पर्दा खुल जाता है।

मन हमारा जानी दुश्मन है, यह काल का एजेंट है। इसकी यह ड्यूटी है कि कोई भी आत्मा सतगुरु से नाम प्राप्त न कर सके अगर नाम प्राप्त कर ले तो वह भजन-अभ्यास न कर सके। अगर आत्मा भजन-अभ्यास करे तो मन उसे भ्रम में डाल देता है। मन कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता।

मैं पहले विदेशी दौरे पर जब ननैमो द्वीप में गया वहाँ नामदान का कार्यक्रम हुआ। प्रेमियों को काफी अच्छे तज़ुर्बे हुए। सबने खुशी-खुशी अपने तज़ुर्बे बताए। सब लोग खुश नज़र आए। वहाँ लोगों ने यह भी सवाल उठाया, ''बाबा जी, जो कुछ हमने यहाँ देखा है क्या ये सब कुछ हम घर जाकर भी देख सकेंगे?'' मैंने हँसकर यही कहा, ''हाँ प्यारे भाईयों, आप इसे घटा नहीं सकते, आगे बढ़ाना आपका फर्ज है।'' आँखों से देखने के बाद भी मन हमें भ्रम में डाल सकता है। हमारे सपने में सतगुरु ने दया-मेहर करके हमारी आत्मा को ऊपर खींचा होता है उसके बाद हमें भ्रम में डालना मन के लिए आसान ही है।

एक औरत ने महाराज सावन सिंह जी के आगे सवाल किया, ''बाबा जी, रूहानियत में मुझे अब तक जो अंदरूनी तज़ुर्बा होता था, वह समाप्त हो गया है क्योंकि मैं वह तज़ुर्बा किसी को बता

चुकी हूँ।'' महाराज जी ने कहा, ''बता भई, इसमें गुरु का क्या कसूर है? अगर आपको कोई कीमती हीरा मिला हो तो क्या आप उसका भेद लोगों को बता देंगे? अगर आप लोगों को भेद बता देंगे तो वे आपके हीरे को चुरा लेंगे। इसी तरह जब हम अपना अंदरूनी तज़ुर्बा दूसरे लोगों को बताते हैं तो उनके दिल में जलन उठती है कि इसने इतनी तरक्की कर ली है? उनके बुरे कर्मों का प्रभाव पड़ जाता है और हमारा आत्मा रूपी शीशा धुंधला हो जाता है।''

इसी तरह अबोहर में एक एक्स. ई. एन. साहब सर्विस करता था। वह काफी अभ्यासी था। उसे महाराज कृपाल सिंह जी के ऊपर काफी भरोसा था। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। उसने किसी को अपना अंदरूनी तज़ुर्बा बता दिया, उसे अंदर जो प्रकाश दिखाई देता था वह गुम हो गया।

जब उसे पता चला कि महाराज जी मेरे आश्रम में आए हैं तब वह महाराज जी के पास आकर रो पड़ा और कहने लगा,''महाराज जी, मेरा तो सारा कुछ खो गया मुझसे बड़ी गलती हुई।'' महाराज कृपाल ने कहा, ''देख भाई, अगर तेरे पास कोई शीशा है और तू किसी हब्शी को वह शीशा दिखाएगा तो वह अपनी सूरत देखकर उस शीशे को तोड़ देगा। अब बता, यह तेरा कसूर है या उसका जिसको तुमने वह शीशा दिखाया?''

दो साल पहले का वाक्या है कि पंजाब का एक महाजन 16 पी.एस. आश्रम से नामदान लेकर गया। उस प्रेमी ने अपने गाँव जाकर वहाँ के सतसंगियों को अपने बड़े ऊँचे–ऊँचे अंदरूनी तज़ुर्बे बताने शुरू किए। वहाँ एक सतसंगी को बहुत ईर्ष्या उठी, उस सतसंगी ने मुझे खत लिखा। हमें बहुत अफसोस है कि हमें नाम लिए हुए दस–दस, बारह–बारह साल हो गए हैं लेकिन हमें ऐसे

अंदरूनी तज़ुर्बे नहीं हुए। उस गाँव से एक और सतसंगी ने भी खत में यह लिखा कि मुझे नाम लिए हुए बीस साल हो गए हैं लेकिन अफसोस! मैं इतनी तरक्की नहीं कर सका और यह कल नाम लेकर इतनी तरक्की क्यों कर बैठा है? हमें बहुत जलन हो रही है।

मैंनें उन सतसंगियों को बड़े प्यार से खत लिखा कि अब वह इस तरह की बातें नहीं कर सकेगा, अंदरूनी तज़ुर्बे नहीं देख पाएगा बस! थोड़ा सा ही समय बाकी है। उसके बाद वह सतसंगी तड़पने लगा। उसने सतसंग नहीं छोड़ा वह हर महीने आश्रम सतसंग में आता है लेकिन उन नजारों के बारे में आज भी रोता है कि मुझे फिर से वे अंदरूनी तज़ुर्बे हों। मैंने उससे कहा, ''देख प्यारेया, वह तो सतगुरु की दया–मेहर थी। अब तू मेहनत और हिम्मत कर सब कुछ तेरे अंदर है।''

जब आप दूसरे लोगों को अंदरूनी तरक्की के बारे में बताते हैं तो उन्हें जलन होती है। ऐसा बताने से उनका फायदा नहीं होता लेकिन आपका नुकसान ज़रूर होता है।

इसलिए मैं हमेशा यही सलाह देता हूँ और महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी ने भी यही सलाह दी कि आप किसी भोले–भाले सतसंगी से उसका अंदरूनी तज़ुर्बा न पूछें। अगर परमात्मा आपके ऊपर दया–मेहर करता है तो आप उसे कौड़ियों की तरह न उछालें। महाराज सावन सिंह जी कहते थे कि आपमें से धुँआ तक भी नहीं निकलना चाहिए कि हम अंदर कुछ देखते हैं या हम कुछ हैं; यह सारी सतगुरु की दया है।

प्यारयो, दुनिया के सपने हमें बगैर सोचे समझे ही आ जाते हैं। गुरु का सपना हमें ऐसे ही नहीं आ जाता हालाँकि सतसंगी बड़े प्यारे हैं कोशिश भी करते हैं। सोते समय गुरु को याद करके भी

सोते हैं। कई प्रेमियों के पत्र भी आते हैं जिसमें वे घुटनों के बल होकर विनती करते है कि हमें स्वपन में दर्शन हो जाएं।

यह बहुत ठंडे दिल से समझने की बात है कि सतगुरु हमें नौ द्वारों से नीचे आकर कभी भी सपने में दर्शन नहीं देंगे, वहाँ आपको कभी भी गुरु का सपना नहीं आएगा। गुरु जब भी अपनी प्यार भरी दृष्टि के साथ आपकी आत्मा को ऊपर खींचेंगे वे आपको ऊपर के मंडलों में ले जाएंगे, उस वक्त ही आप सारे नजारे देख सकते हैं। सतसंगी को उस समय से पूरा फायदा उठाना चाहिए। रोज़ उसी स्वरूप को आँखों के आगे रखें अपना अभ्यास करें इससे फायदा उठाएं, तरक्की करें।

सन्तमत परियों की कहानी नहीं, यह एक सच्चाई है। बच्चा, बूढ़ा, औरत, मर्द कोई भी करके देखे यह तो करनी का मत है सोच–विचार का मत नहीं।

कबीर साहब ने कहा था, ''कथनी के तो अनेकों सूरमा मिल जाते हैं जिन्होंने मन–बुद्धि के विचार से एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए बड़े ही तीर कसे होते है।'' महाराज कृपाल सिंह जी उनको दिमागी पहलवान भी कहते थे। कबीर साहब कहते हैं:

मथ काढे कोई होर।

मक्खन निकालने वाले बहुत थोड़े लोग होते है जो कमाई करते है सच्चाई से जाकर जुड़ते है। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं:

गल्ली किन्हे ना पाया।

प्यारयो, यह बातों का मजबून नहीं, यह तो करनी का मजबून है। आप नए भजनों में पढ़ते हैं:

ऐह गल्लां दा मजबून नहीं कोई वी करके देखे।

आपको आसानी से बात समझ आ गई होगी। दुनियावी सपनों में खुशी नहीं होती। जिस दिन गुरु का दर्शन होता है खुशी होती है। सारा दिन दिल गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है। आप इसे सपना न समझें सच्चाई समझें और इसी स्वरूप को आँखों के आगे रखकर तरक्की करें।

– 6 मार्च 1992

***

सेवक : *मुझे यह बताया गया है कि अपने अभ्यास के अंदरूनी तज़ुर्बे कभी भी किसी को नहीं बताने चाहिए। क्या इसके अंदर अपनी पत्नी भी शामिल है? पत्नी को भी तज़ुर्बे नहीं बताने चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई, हमारे धर्मग्रंथों में लिखा है कि दुनिया में चार युग है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग। चारों युगों का अपना–अपना धर्म है। सतयुग में अगर कोई एक आदमी पाप या जुल्म करता था तो उसका भार सारी प्रजा पर पड़ता था, सबको दंड भुगतना पड़ता था। इसी तरह त्रेतायुग में अगर कोई एक आदमी पाप या जुल्म करता था तो उसका भार शहर के सारे नागरिकों को भुगतना पड़ता था। द्वापर युग में अगर कोई इसी तरह की बुराई या अच्छाई वाली हरकत करता था तो वह जिस कुल में पैदा हुआ है उसका भुगतान उस कुल के सदस्यों को करना पड़ता था।

बेशक हम कलयुग को बुरा कहते हैं। कलयुग के अंदर हमारा मन चंचल रहता है, हमारे ख्याल नहीं टिकते, विषय–विकारों की बड़ी भरमार है। जीवों को फँसाने के और भी साधन है। इन्सान के ख्याल भी दुनिया में ज़्यादा फैल चुके हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

एह कर करे सो एह कर पाए, कोई ना पकड़्या किसी दे थांए।

कलयुग की खासियत यह है कि जो आदमी कर्म करता है वही भुगतान करता है। पत्नी का कर्म पति को नहीं लगता और पति का कर्म पत्नी को नहीं लगता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''पति–पत्नी को एक जैसे अंदरूनी तज़ुर्बे नहीं होते।'' इससे यह साबित होता है कि पति–पत्नी के अलग–अलग कर्म होते हैं। पति–पत्नी का दुनियावी रिश्ता होता है लेकिन हम तो परमार्थ में चल रहे है। पति–पत्नी को आपस में दुनियावी प्यार बनाकर रखना है और एक–दूसरे पर भरोसा करके चलना है।

अब सवाल यह है क्या पति–पत्नी आपस में ईर्ष्या–जलन भी कर सकते हैं कि इसकी इतनी तरक्की है मेरी इतनी तरक्की क्यों नहीं? उसका असर हमारे ऊपर अवश्य पड़ता है। बहुत से प्रमियों के पत्र भी आते हैं कि पति–पत्नी का प्यार मन की लहरों में ही गुम हो जाता है। एक लहर आती है हम एक–दूसरे के नज़दीक आते है और दूसरी लहर आती है हम एक–दूसरे से अलग होने की बात सोचते हैं।

महाराज कृपाल के नामलेवा एक पति–पत्नी थे। किसी मामूली बात पर दोनों में खटपटी हो गई। पति बेचारा अभ्यास में बैठा था, पत्नी आंगन को साफ कर रही थी और यह भी फरियाद कर रही थी कि हे बाबा कृपाल, अगर आप सुनते हैं तो इस इन्सान की सुरत अंदर चढ़ने न देना, यह मुझसे गुस्सा होकर अभ्यास में बैठा है।

अब आप सोच सकते हैं! अगर ऐसी पत्नी को अपना अंदरूनी तज़ुर्बा बताया जाए तो क्या वह आपसे जलन नहीं करेगी? वह तो गुरु के आगे फरियाद कर रही है कि इसकी सुरत अंदर न चढ़े। पत्नी को बताने के लिए और भी बहुत कुछ है अगर हम

पत्नी के साथ मिलकर चलें तो हमारी ज़िंदगी स्वर्ग बन सकती है। हम ज़्यादा अंदरूनी तज़ुर्बे हासिल कर सकते हैं, ज़्यादा भजन–अभ्यास कर सकते हैं।

पप्पु को पता है एक प्रेमी ने अपनी पत्नी को अपने अंदरूनी तज़ुर्बे बताए। नई–नई शादी हुई थी नया–नया प्यार था नई–नई उमंगे थी। उसने मुझसे कहा, ''महाराज जी, जिस दिन से यह मुझे मिली है मुझे कई जन्मों का ज्ञान हो गया है। इसे देखकर भगवान नज़र आते हैं इसके अंदर मुझे भगवान दिखते हैं बस, कृपाल इसके अंदर ही हैं।'' मैंने बहुत प्यार से सुना। खैर, मैंने उसके साथ कोई ज़वाब तलबी नहीं की। मैंने कहा, ''अच्छा भई, परमात्मा कृपाल आपका प्यार बढ़ाए हम तो यही कामना करते हैं।''

कुछ महीनों बाद वे पति–पत्नी अलग हो गए। वे एक–दूसरे की शक्ल देखकर भी खुश नहीं थे। मैंने बहुत ज़ोर लगाया और उन्हें वह वक्त भी याद करवाया कि आप क्या कहते थे? लेकिन अभी तक वे इकट्ठे नहीं हुए। अब आप सोच सकते हैं कि हम पति–पत्नी का रिश्ता कितना मजबूत समझते हैं और कितनी मजबूती से हम इस रिश्ते को रखते हैं। किसी प्रेमी ने कबीर साहब के पास भी ऐसा ही सवाल किया था। कबीर साहब ने अपनी बानी में लिखा है:

तिनको देख कबीर लजाने।

जब हम जीव दुनियावी बातों को परमार्थ के साथ मिलाते हैं तब हमें लज्जा आती है। परमात्मा का प्यार पवित्र और निर्मल होता है। हम परमात्मा के प्यार को इन्द्रियों के स्तर पर ले आते हैं, इससे ज़्यादा नादानी हमारे अंदर और क्या हो सकती है?

– 28 फरवरी 1988

***

सेवक : *महाराज जी, मैंने सुना है अगर मैं अभ्यास करने के बाद सो जाऊं तो क्या मैं अपना सारा अभ्यास खो देता हूँ? आप हमें इस बारें में विस्तार से बताएं, ऐसा क्यों और कैसे होता है?*

बाबा जी : हाँ भाई! सबसे बेहतर यह है कि सन्त हमें जो नामदान देते हैं उसकी महानता को समझना बहुत ज़रूरी हैं। हम जन्म-जन्मांतर से अंदर से भी और बाहर से भी सोए हुए हैं। जब आपको नाम मिलता है उस समय आपके अंदर बहुत प्यार, श्रद्धा और उत्साह होता है। सन्तों का मकसद तो यह होता है कि आप जल्दी से जल्दी सिमरन के ज़रिए नौ द्वारे खाली करके बाहर फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाएं। अंदर सितारे, सूरज और चन्द्रमा तक पहुँच जाएं तो आपकी आत्मा में जागृती आ जाएगी। फिर आपका शरीर सोएगा लेकिन आपकी आत्मा नहीं सोएगी।

जागृत अवस्था में हमारी आत्मा तीसरे तिल पर होती है। जब हम थोड़ी नींद की अवस्था में चले जाते हैं तो हमारी आत्मा कंठ में आ जाती है जब गहरी नींद में जाते है तो वह नाभि चक्र में आ जाती है। यहाँ आकर पूरी यारदाश्त नहीं रहती इसलिए सपने आने शुरू हो जाते हैं। जब अभ्यासी सो जाता है वह कई दफा डरावने सपनों में चला जाता है, जब उठता है उसका दिल खराब होता है।

अगर हम जागृत अवस्था में रहें और भजन में तरक्की करें तो हमारी आत्मा नीचे नहीं आएगी न कंठ में आएगी न नाभि चक्र में आएगी। नींद शरीर को आराम देने के लिए कुदरती साधन है लेकिन आपकी चढ़ाई तो ऊपर की तरफ़ है। जब आप सोएंगे फिर भी आपकी आत्मा जागती रहेगी ऊपर के मंडलों में सफ़र करती रहेगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अभ्यासी बाहर से तो सोता है लेकिन अंदर उसकी आत्मा जागती रहती है।'' कबीर साहब कहते हैं:

सोवत में जागत।

ऐसा बहुत विरले करते हैं। जब हम सोते हैं हमारा पूरा अभ्यास नहीं बना होता उस वक्त हमारी सुरत नीचे नाभि चक्र में जाकर बुरे सपने देखती है। हमारा ख्याल सारा दिन खुश नहीं रहता। हम महसूस करते हैं कि हमने अभ्यास खो दिया। अभ्यास के बाद सोने वालों की यही हालत होती है।

जिस सतसंगी को रोज़–रोज़ तीसरे तिल पर टिकने की आदत पड़ जाए, वह जब अभ्यास करके रात को सो जाता है तो गुरु अपनी दया भरी दृष्टि प्यार की कुंडी से उस आत्मा को ऊपर के मंडलों में खींच लेते हैं। कई दफा अभ्यासी सोते हुए सपने में बड़े ही नजारे देखता है। गुरु कई कर्म सपने द्वारा ही भुगतवा देते हैं।

जिस दिन सपने में अंदर गुरु के दर्शन होते हैं कई–कई दिन दिल में खुशी बनी रहती है। फिर हम लोचते है कि हम उसी तरह सो जाएं और हमें वैसा सपना फिर से आएं जिसमें गुरु दिखाई दें।

आमतौर पर हमें दुनिया के सपने इसलिए आते है कि जब हम सोते हैं हमारी सुरत हमेशा ही नीचे नाभि चक्र में चली जाती है, ऊपर नहीं आती। सतगुरु शब्द रूप होते हैं वे आँखों से नीचे कभी नहीं आते। वे जब भी हमें सपने में दिखाई देते हैं तीसरे तिल से ऊपर जाकर ऊपरी मंडलों में दिखाई देते हैं इसलिए उनका सपना बहुत कम आता है।

जब सतसंगी मुझे बताते हैं कि हमारे सपने में सतगुरु आए थे। हमनें सपने में इस तरह देखा कि हम ऊपर चले गए। तब मैं उनसे कहता हूँ, ''प्यारयो, यह सपना नहीं सच्चाई है। आप यहाँ पहुँच ही नहीं सकते गुरु ने आपके ऊपर दया करके आपकी आत्मा को ऊपर खींचा है।''

मैं महाराज सावन सिंह जी के सेवकों से भी इस तरह के अनुभव सुनता रहा हूँ। ये सेवक जब मुझसे अकेले में मिलते तो कहते, ''सतगुरु पहले की तरह फिर अंदर आ जाएं।''

मैं महाराज कृपाल सिंह जी के बारे में भी सुनता रहा हूँ कि जिन प्रेमियों के साथ ऐसी घटना घटती थी वे बहुत खुश होते थे और उस नूरी स्वरूप के साथ बहुत प्यार करते थे। वे प्रेमी कहते, ''हमें ऐसा स्वरूप फिर से दिखाई दे।''

आज भी महाराज जी के हिन्दुस्तानी और पश्चिमी भाई कहते हैं, ''बाबा जी, सतगुरु फिर सपने में आएं।'' तब उन्हें प्यार से समझाया जाता है, ''प्यारयो, आप इसे सपना न समझें। आप अभ्यास करें, गुरु की याद दिल में बनाएं आप जिसे याद करेंगे वह ज़रूर आपके पास आएगा। कबीर साहब कहते हैं:

जागण तो सुपना भला, जे वसे प्रभ संग।

अगर सपने में गुरु आए और उनके साथ जो घड़ी गुजर जाए वह बड़ी पवित्र घड़ी होती है, उससे फायदा उठाना चाहिए। कबीर साहब फिर कहते हैं:

सुपने हू बरड़ाइके जे मुख निकसे राम।
ताके पग की पनही मेरे तन को चाम।।

आप कहते हैं अगर कोई सपने में बड़बड़ाकर भी गुरु का नाम लेता है तो मैं उसके पैरों के लिए अपने तन की चमड़ी से जूतियां बनाकर देने को तैयार हूँ।

मैंने आपको दोनों तरीकों से समझाया है कि अभ्यास का फल किस तरह व्यर्थ जाता है। जो प्रेमी अभ्यास में पूरी तरह जागृत नहीं होते थोड़ा सा लेटटते है तब उनकी आत्मा कंठ से भी नीचे गिरकर नाभि चक्र में आ जाती है और उन्हें बुरे सपने आते है।

उस वजह से उन्हें बुरे ख्याल आते हैं और उनका दिल सारा दिन खराब रहता है। फिर वे सोचते हैं कि हमारा भजन भी चला गया। ऐसा क्यों हुआ? अगर हम भजन–अभ्यास में एकाग्र होने लग जाएं और हमने अपने दिल में गुरु की याद बिठाई हो तो हमारी आत्मा ऊपर के मंडलो में जाकर अंदर गुरु के साथ जुड़ी रहती है।

सेवकों को सिमरन करने की ज़बरदस्त सलाह दी जाती है कि आप चलते–फिरते, उठते–बैठते, साँस–साँस के साथ सिमरन करें। उसका यही मकसद है कि हमारे ख्याल, तन, मन और आत्मा में गुरु बस जाएं ताकि हम गुरु से जो भी सवाल करें हमें अंदर से ही जवाब मिले। सतगुरु हमारे हर सवाल का जवाब देते हैं लेकिन हम सुन नहीं रहे होते।

मैंने आपको महाराज सावन सिंह जी की दी हुई यह मिसाल कई सतसंगों में बताई है कि एक कुम्हार गधियों पर मिट्टी लादकर ले जा रहा था। वह गधियों को हाँकता हुआ कह रहा था, ''चल माता, चल बहन, चल माता, चल बहन।'' सामने से कोई आदमी आ रहा था उसने पूछा, ''तुम इन्हें माँ–बहन क्यों कह रहे हो?''

कुम्हार ने कहा, ''भाई, तू मेरा मक़सद नहीं समझा। हम बाहर जंगल में रहने वाले मुँहफट लोग होते हैं। मैं राजदरबार में यह मिट्टी गिराने के लिए जा रहा हूँ। अगर मेरे मुँह से वहाँ कोई गलत शब्द निकल गया तो राजा मुझे मजदूरी नहीं देगा और हो सकता है सज़ा भी दे दे इसलिए मैं प्रैक्टिस कर रहा हूँ।

इसी तरह सन्त हमसे अंदर तरक्की करने के लिए सिमरन की प्रैक्टिस करवाते हैं क्योंकि हमने भी परमात्मा के दरबार में जाना है। पहले ही प्रैक्टिस कर लेना अच्छा है कहीं परमात्मा हमें अपने दरबार से निकाल न दें।

आज आपने सुबह अभ्यास के बाद गुरु नानकदेव जी का यह शब्द सुना था। जिसमें गुरु नानकदेव जी ने फरियाद की थी:

कहो नानक हम ऐहो हवाला, राख सन्तन के पाछे।

सन्त धुरधाम पहुँचकर भी कहते हैं कि हम भी गुरु के साथ आए है, हमें इनके पीछे रख लें।

– 15 जनवरी 1992

***

आ कृपाल कोल बैठ असांदे फोल दिलां दे वरके।
होई कौन खनामी साथों लंघ जांदो चुप करके।।

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। बहुत से प्रेमी मुझे दर्शनों में मिलने के लिए आते हैं, वे बताते हैं कि अंदर गुरु का स्वरूप तो आता है लेकिन चुप रहता है कोई बातचीत नहीं करता। इसकी यही वजह है कि हमारी एकाग्रता पूरी नहीं होती।

शिष्य के दिल में तड़प पैदा करने के लिए कभी–कभी ऐसा होता है और फिर वह अपनी गलतियों और कमियों की तरफ़ देखता है कि मुझसे क्या खनामी हुई है? आप आते तो ज़रूर हैं क्योंकि आपने मुझे अपना बनाया हुआ है लेकिन मुझसे कोई बात तो करें, मुझसे ऐसी कौन सी खनामी हुई है ताकि आगे के लिए मैं दोबारा वह गलती न करूं।

अभी प्रेमियों ने जो शब्द गाया वह बहुत ही दर्दभरा शब्द है। जिनके साथ कभी ऐसा हो जाता है उनके लिए फरियाद करने का यह एक बहुत अच्छा ज़रिया है।

सेवक : *आपने यह कहा है कि नामदान के समय हमारे अंदर जो जोश होता है अगर हम उस जोश को कायम रखें तो हम बड़ी*

आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। हम उस जोश और लगन को किस तरह बरकरार रख सकते हैं? अगर हमारा वह जोश खो गया है, तो हम उस खोए हुए जोश को किस तरह हासिल कर सकते हैं?

बाबा जी : अगर हमने इस संसार की कोई भी वस्तु प्राप्त करनी है तो हमें मेहनत और मशक्कत करनी पड़ेगी। मेहनत और लगन के बगैर हम किसी भी काम में कामयाब नहीं हो सकते। सन्तमत में उसी लगन और मेहनत को भजन–अभ्यास कहा जाता है।

जब बच्चा स्कूल जाता है तो उसे स्कूल जाने का चाव होता है और पढ़ाई का जोश भी होता है। अगर बच्चा टीचर का कहना मानता रहेगा तो वह इम्तिहान में अच्छे नंबरों से पास हो जाएगा। अगर बच्चा टीचर का कहना नहीं मानेगा या जो कुछ टीचर पढ़ाता है उसे याद नहीं करेगा तो क्या वह इम्तिहान में पास होने की उम्मीद कर सकता है?

सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है और मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी ही पड़ती है। इसी तरह सतगुरु प्यार का समुंद्र हैं अगर हम नाम का मोती निकालना चाहते हैं तो हमें उस समुंद्र के अंदर डुबकी लगानी पड़ेगी।

'नामदान' के समय हमें हिदायतें बताई जाती है कि हमने हर रोज़ कम से कम अढ़ाई घंटे भजन–अभ्यास करना है अगर ज़्यादा समय मिले तो आप ज़्यादा भजन–अभ्यास करें। नामदान के समय और भी कई हिदायतें दी जाती हैं कि हमने इस दिशा में जाना है, उस दिशा में नहीं जाना। जिस तरह डॉक्टर हमें दवाई देता है, दवाई के साथ कुछ परहेज़ भी बताता है। उसी तरह सन्तमत में कुछ परहेज़ बताए जाते हैं उनका पालन करना भी ज़रूरी है।

प्यारेयो, मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि मुझे बचपन से ही यह आदत थी कि मैं कभी बाजारों में इधर–उधर आवारा नहीं घूमा। मेरी आज भी यही आदत बनी हुई है, मैं अपने कपड़े खरीदने के लिए कभी खुद बाजार नहीं गया। हमें आँख, कान, नाक और बाकी सब इन्द्रियों को काबू में करना पड़ता है। मैं यह कहता हूँ:

अन्न ना खाया स्वाद गँवाया, बहु दुख पाया दूजा भाया।

यह जो मैं अपने मुँह का स्वाद खराब करने का ज़िक्र किया करता हूँ यह मेरा अपना ही तज़ुर्बा है। मैंने इस मार्ग में काफी भूख–प्यास को सहन किया, बहुत मेहनत की। शायद मैं यह न कर सकता लेकिन यह मेरी किस्मत में पहले से ही दर्ज था।

प्यारेयो, जिन्होंने मेरे साथ पचास–साठ साल जीवन बिताया है, वे प्रेमी आज भी मेरे पास है। उन्हें मेरे जीवन के बारे में और मुझे उनके जीवन के बारे में पता है। मैं अपनी बाँह खड़ी करके आज भी उन्हें कहता हूँ कि मैं आपके जीवन के दोष बताता हूँ या आप मेरे जीवन की कमियाँ और दोष बताएं। क्या कभी किसी ने मुझे सिनेमा देखने के लिए जाते हुए देखा है? क्या कभी किसी ने मुझे मेले या मनोरंजन वाली जगह जाते हुए देखा है? क्या कभी किसी ने मुझे खाने में नुख्स निकालते हुए देखा है? ऐसा कोई नहीं मिलेगा जो मेरे बारे में यह कह सके।

आप सोचकर देखें, कोई सूरमा ही ऐसा जीवन व्यतीत कर सकता है और संगत में बाँह खड़ी करके कह सकता है। पप्पु को मेरे साथ बीस साल हो गए हैं क्या वह मुझमे दोष बता सकता है? अगर पप्पु इजाज़त दे तो मैं बहुत कुछ बता सकता हूँ।

प्यारेयो, अगर आप इन सब बातों का लगन से पालन करेंगे तो आपको यह भी पता होगा कि हमने कौन सा लक्ष्य प्राप्त करना

है? फिर गुरु आपकी मदद ज़रूर करेंगे, भले ही वे आज आपको अंदर नहीं मिले हैं फिर भी वे गुप्त रूप में आपकी मदद करेंगे।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे कि जिसके दरवाजे पर बैल बंधा है उस घर के मालिक को उसका फिक्र है कि उसे कब खाना देना है, कब धूप से छाँव में करना है। इसी तरह जिसके घर में कोई मज़दूर काम करता है उसकी मज़दूरी देने का फिक्र घर के मालिक को होता है। क्या परमात्मा बेखबर है? क्या परमात्मा हमारी तरफ़ से बेपरवाह है? आप भजन गाते हैं:

याद किया जब भी भक्तों ने नंगे पैरो दौड़ा आया।
सदा दीन को गले लगाया सदा दिया दुर्बल को सहारा।
खैर नाम की पाओ कृपाल जी अजायब रहा बोल प्रेम से गुरु गुरु...।।

यह मेरे दिल की आवाज़ है। मेरे साथ ऐसा सब कुछ ही हुआ है। मैं परमात्मा कृपाल को बचपन से ही याद कर रहा था। आप खुद ही मेरे पास आए और आकर मेरी आत्मा को शान्ति दी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे,''हम कान को हाथ लगाकर कहते हैं कि गुरु किसी का इम्तिहान न लें।'' आप सोचकर देखें, आपकी ज़िंदगी की कमाई से मकान बना हो, पचास बीघा ज़मीन हो। आप जिस व्यक्ति को पहले से न जानते हों वह आपकी ज़िंदगी में उसी दिन आया हो और वह अपनी पहली मुलाकात में यह कहे, ''तू मेरे खड़े–खड़े ही यह ज़मीन और मकान छोड़ दे।'' ऐसा करना कितना मुश्किल होगा? उस समय मैंने साफा बाँधा हुआ था और मेरी बँधी हुई पगड़ी वहीं मेज पर रखी हुई थी। मैं अपनी पगड़ी सिर पर रखने लगा तो आपने कहा मैंने तुझे पगड़ी उठाने के लिए नहीं कहा है।

वह शाम का समय था दिन छिपा ही था। मेरा वहाँ जो कुछ सामान था आपने वह सामान मुझसे वहीं छोड़ने के लिए कहा और 16 पी.एस. जाने का हुक्म दे दिया। मेरा मन झिझका, मन में बड़ी हलचल हुई लेकिन फिर अंदर से बल मिला।

महाराज सावन सिंह जी से सुनते थे कि कुम्हार जिस घड़े को बनाते समय पीटता है उसके अंदर हाथ भी रखता है। उसी तरह मेरे गुरु ने भी मेरे अंदर हाथ रखा। तब मेरे दिल में यही ख्याल आया कि अब यह तो उनकी मर्ज़ी है वह चाहे मुझे धूप में रखें, चाहे छाँव में रखें, जहाँ भी रखें वहीं रहना पड़ेगा।

आज भी मेरे अंदर उनकी याद का वही जोश है जो शुरु में हुआ करता था इसलिए मैं आपके साथ उनकी याद में बैठकर खुश हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे अंदर का जोश देखकर आपके अंदर भी जोश पैदा हो। एक खरबूज़े को देखकर दूसरा खरबूज़ा रंग पकड़ता है। खरबूज़े के अंदर तो कोई बुद्धि नहीं होती यह फल होकर भी संगत की वजह से रंग पकड़ता है लेकिन इन्सान के अंदर तो बुद्धि है समझ है क्या वह रंग नहीं पकड़ सकता? मैं कहता हूँ कि मेरी तरफ़ देखकर प्रेमी ज़्यादा से ज़्यादा अभ्यास करें और अपने अंदर जोश पैदा करें।

प्यारेयो, गुरु को भी कुछ देना पड़ता है ऐसा नहीं कि गुरु हमारी कद्र नहीं करते। वह हमारी साँस–साँस के साथ कद्र करते हैं। गुरु सतनाम से मेवा लेकर आते हैं और वे हमें वही मेवा देना चाहते हैं। परमेश्वर और ईश्वर का उसमें कोई दखल नहीं होता। कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहले लग्गी तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।।

प्यारेयो, इसलिए मैं कहता हूँ कि जैसा जोश पहले होता है अगर आखिरी साँस तक किसी प्रेमी का वही जोश रह जाए तो उसका अपना तरना तो क्या मुश्किल है अगर करोड़ों जीव भी उसके पास आ जाएं तो वह अपने कमाए हुए नाम का तिनका देकर उन सबको तार देता है।

अब रहा इस सवाल का दूसरा हिस्सा–अगर कोई जोश खो बैठता है तो वह क्या करे? प्यारेयो, जो भूल गया है उसे सारी ज़िंदगी भूला नहीं रहना चाहिए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला हुआ न जानें।'' जिसने जोश खोया है वह फिर अपना जोश बढ़ाए। अगर जोश गिर गया है तो उसे सीख लेनी चाहिए कि मैं गिरकर कितनी दूर चला गया। मैंने अपनी सेहत का भी नुकसान किया और परमार्थ का भी नुकसान किया है। उन सबसे सबक लेकर ज़्यादा से ज़्यादा जोश के साथ भजन–अभ्यास में लगें। प्यारेयो, मेहनत के कभी चोर न बनें, मेहनत ज़रूर रंग लाती है।

– 13 दिसम्बर 1996

***

सेवक : *जब कोई सेवक अपने अभ्यास के ज़रिए अंदर जाकर गुरु स्वरूप तक पहुँचने की कोशिश करता है लेकिन कामयाब नहीं होता अंदर सिर्फ आवाज़ ही सुन सकता है या सिमरन ही कर सकता है। क्या जब तक वह गुरु स्वरूप तक नहीं पहुँचता तब तक उसे अंदर गुरु स्वरूप का ध्यान करना चाहिए या अपना काम उस समय तक करते ही जाना चाहिए जब तक गुरु को लगे कि सेवक ने काफी तरक्की कर ली है, अब इसे अपने दर्शन देना ठीक है?*

बाबा जी : यह सवाल हर सतसंगी के लिए बहुत अच्छा है। जब कोई सेवक मेहनत करता है तब अंदर प्यार भी अपने आप पैदा हो जाता है। मेहनत प्यार को पैदा करने का एक तरीका है। जब अंदर प्यार पैदा हो जाता है तब प्रेमी उसे बोझ नहीं समझता। फिर प्रेमी को समय का भी पता नहीं चलता। प्रेमी यह नहीं चाहता कि मुझे कोई मुआवजा मिले मैं फिर ही यह काम करूँगा।

जब प्रेम जागता है तो वह बड़ी ज़बरदस्त कशिश पैदा करता है जिस तरह तुफानी नाला ज़ोर से बहता है उसी तरह प्यार और प्रेम की लहर होती है। प्यार एक ऐसी शक्ति है इसमें ऐसी कशिश है अगर दुनियावी तौर पर भी हमारा किसी से लगाव या प्यार हो जाता है तो सिर्फ उसे याद करने की ही ज़रूरत पड़ती है उसका नक्श–ऊँचा, लंबा, गोरा, काला सब कुछ आँखों के आगे आ जाता है।

'शब्द' सब जगह व्यापक है। परमात्मा हाथी की पुकार बाद में, कीड़ी की पुकार पहले सुनता है। सच तो यह है कि हम सोचते बाद में हैं वह सुन पहले लेता है। वह हमें जवाब भी देता है क्योंकि वह हमारे अंदर बैठा है लेकिन फिलहाल हमें सुनाई नहीं दे रहा है हमने वह अनुभव प्राप्त नहीं किया होता जिससे हम और ऊपर जा सकें।

महाराज सावन सिंह जी ध्यान पर बहुत ज़ोर दिया करते थे। लेकिन महाराज कृपाल सिंह जी इस तरफ़ ज़्यादा ज़ोर नहीं देते थे। हर सन्त के समझाने का अपना–अपना तरीका होता है। आप सदा कहा करते थे कि हमने सिमरन द्वारा नौ द्वारे खाली करने हैं। हम जब नौ द्वारे खाली करके अपने ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं उस वक्त ध्यान की ज़रूरत पड़ती है क्योंकि सुरत जाती है वापिस आ जाती है; बगैर ध्यान सुरत वहाँ टिक नहीं पाती।

इस बारे में महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब हम सतसंग में बैठते हैं हम उस समय भी ध्यान को पका सकते हैं। जब हम चलते–फिरते सिमरन करते हैं उस स्वरूप को उस समय भी आँखों के आगे रख सकते हैं लेकिन हम अभ्यास में बैठकर इस कमी को पूरा करना चाहते हैं जो पूरी नहीं होती। यह कमी हम पहले ही पूरी कर सकते हैं अगर हमारा ध्यान चलते–फिरते हुए और सतसंग के ज़रिए ही बन जाता है तो हमें बैठकर घुटने अकड़ाकर इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं पड़ती कि अब हमारा ध्यान बने क्योंकि ध्यान तो पहले ही बन चुका होता है।

मैं चश्मदीद वाक्या बताया करता हूँ कि जब कभी महाराज सावन सिंह जी दया करके सेवा करने वाले शिष्यों को अपने हाथ से रोटी दिया करते थे उस समय वे प्रेमी हाथ से फुल्का पकड़ लेते थे लेकिन उन सेवकों का ध्यान महाराज जी की भरवटों के बीच ही होता था। आप भजन में पढ़ते हैं:

लक्खां शक्लां तकियां अखियां ने कोई नज़र मेरी विच खुबदी ना।

हे सावन, मैंने बहुत सी शक्लें देखी लेकिन मेरी आँखों को कोई शक्ल जंची नहीं। तेरी शक्ल मेरी आँखों से अलग नहीं हुई। मैंने आपकी संगत में ऐसे कई सेवक देखे और मैं खुद भी यही प्रैक्टिस करता था कि जब सतसंग होता चाहे पिछली तरफ़ कोई आवाज़ हो रही हो फिर भी सतसंगी पीछे नहीं देखते थे। उनके ध्यान यहाँ तक पक चुके थे कि उन्हें मालूम ही नहीं होता था कि कौन सा पाठी पाठ कर रहा है या महाराज जी किसी से बात कर रहे हैं। सतसंगियों का ध्यान आपके पवित्र चेहरे पर लगा होता था।

सतसंग के बाद आम सतसंगी किसी से बात नहीं करते थे। चुपचाप अपने घरों में चले जाते, वहीं बैठकर सिमरन करते या

बैठकर उस स्वरूप के ध्यान की प्रैक्टिस करते रहते थे। जिनका इस तरह का ध्यान बन जाता है उन्हें बैठकर ध्यान करने की क्या ज़रूरत है? वे जब सोते या जागते हैं तब भी गुरु की शक्ल उनकी आँखों के आगे होती है। वे जब चलते हैं तब भी उन्हें यही लगता है कि वह शक्ल उनके साथ ही चल रही है।

हम महाराज कृपाल सिंह जी का इशारा समझ नहीं सके। आपके इशारे का मतलब यह नहीं था कि आप ध्यान न धरें। आप कहते थे, ''खुदा वह है जो खुद आए।'' आपके समझाने का भाव यह था कि जब हम प्रेम–प्यार से सिमरन करेंगे तो मन को अपने आप ही पता चलेगा कि हम किसका दिया हुआ सिमरन कर रहे हैं तो ध्यान अपने आप ही आ जाएगा।

शुरू–शुरू में हमें स्वरूप को आँखों में टिकाने में थोड़ी कठिनाई होती है। कभी पगड़ी नज़र आती है कभी आँख नज़र आती है कभी जिस्म ज़्यादा तो कभी कम नज़र आता है। कभी ऐसा लगता है कि स्वरूप आया, चला गया। स्वरूप वहीं पर मौजूद है। वह न आता है न जाता है। सेवक अभी उस जगह स्थिर नहीं हुआ जब हम थोड़ा सा संघर्ष करते हैं अभ्यास में महारत पैदा हो जाती है फिर हमें संघर्ष नहीं करना पड़ता, ध्यान अपने आप ही बन जाता है।

बहुत से प्रेमी रोज़ाना अभ्यास नहीं करते। वे जब बैठते हैं तो उन्हें अंदर शान्ति प्राप्त होती है, थोड़ी बहुत रसाई होती है लेकिन फौरन ही उनका ख्याल कभी ध्यान की तरफ़ कभी सिमरन की तरफ़ बँट जाता है, वे खींचतान में ही रह जाते हैं।

मैं कहा करता हूँ, ''अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को याद करें। आपको अपने आप पता चल जाएगा कि हम किसका दिया हुआ सिमरन कर रहे हैं वह स्वरूप अपने आप ही

आपकी आँखों के आगे आ जाएगा। वह तीसरे तिल से शुरू होकर सचखंड तक आपके साथ जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

अकाल मूर्त है साध संतन की ठहर नीकी ध्यान को।

एक बार महाराज कृपाल अपने गुरुदेव की सेवा कर रहे थे। उस समय आपने अपने गुरुदेव महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''अंदर और बाहर कितना फर्क है?'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''कृपाल सिंह, जो कुछ यहाँ देख रहे हो अंदर भी ऐसे ही दिखेगा। यह स्थूल शरीर यहीं छोड़ जाना है, शब्द अंदर है। सन्त देहधारी शब्द होते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं :

रूप न रेख रंग ठाकुर अविनाश ।
सो स्वरूप संतन कथे विरले योगिश्वर ।
कर कृपा जाको मेले धन धन ते ईश्वर ।।

परमात्मा का कोई रूप नहीं रेख नहीं। उसका कोई भाई–बंधु नहीं, कोई शरीक नहीं। वह हर जगह व्यापक है। जब हमने वेद–शास्त्रों की कथा–कहानियां सुनी तो दिल में तड़प हुई कि परमात्मा से मिलना चाहिए जो अविनाशी है। जब परमात्मा के बारे में उन लोगों से पूछा तो उन्होंने यही बताया कि वह तो अविनाशी है उसका कोई रूप, रंग नहीं है तो दिल में बड़ी उदासी हुई।

उस स्वरूप का वर्णन सिर्फ सन्त ही कर सकते हैं। उनके देह धारण करने का यही मकसद होता है कि हमें जन्म–जन्मांतर से ही ध्यान धरने की आदत बनी हुई है। दुनिया का ध्यान ही हमें बार–बार देह में लेकर आता है। सन्त जानते हैं कि पानी की मारी खेती पानी से ही हरी होगी। सन्त दुनिया के सिमरन को काटने के लिए अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। उस सिमरन के पीछे उनका तप–त्याग काम करता है। जब हम दुनिया का सिमरन छोड़कर गुरु

का दिया हुआ सिमरन ज़ुबान पर लाते हैं प्यार से उनके स्वरूप का ध्यान करते हैं तो दुनिया का ध्यान कट जाता है और हमें अंदर टिकने की आदत पड़ जाती है।

रही बात आवाज़ तो सुनाई देती है लेकिन स्वरूप प्रकट नहीं होता? जिन प्रेमियों में सिमरन की कमी होती है वे आवाज़ सुनने पर तो ज़ोर देते हैं लेकिन सिमरन पर ज़ोर नहीं देते। देखने वाली शक्ति निरत और सुनने वाली शक्ति सुरत हैं। अगर प्रेमी नौ द्वारे खाली करके सिमरन पर ज़्यादा ज़ोर दें तो निरत खुल जाती है लेकिन यहाँ आकर कई बार सेवक बहुत उदास होता है कि मुझे आवाज़ तो बड़ी ज़बरदस्त आती है लेकिन स्वरूप प्रकट नहीं होता उसका यही कारण है कि अभी हमारा सिमरन नहीं पका। हम सिमरन पर उतना ज़ोर नहीं देते जितना आवाज़ सुनने पर ज़ोर देते हैं।

शब्द की आवाज़ अंदर है लेकिन वह खींचती नहीं क्योंकि अभी हमारी आत्मा उस दायरे में नहीं गई। यह इस तरह है जैसे इच्छाधारी सर्प की देह बहुत भारी होती है। वह खुद जाकर शिकार नहीं मारता। जो उसके दायरे में आ जाता है वह उसकी कशिश से खींचा हुआ उसके मुँह में आ जाता है। इसी तरह जब हमारी सुरत शब्द के दायरे में जाएगी तो शब्द इसे खींचकर ऊपर ले जाएगा और देखने वाली निरत खुल जाएगी। सेवक यह सोचता है शायद मैं इस काबिल नहीं या गुरु मुझे कुछ देना नहीं चाहते।

प्यारेयो, गुरु हमें दोनों हाथों से दात देने के लिए हमारी इंतज़ार में होते है लेकिन हम अभी वहाँ पहुँचे नहीं होते। ऐसे मौके पर हम अपने अंदर सिमरन की पड़ताल करें क्योंकि हमें जन्म–जन्मांतर से दुनिया के सिमरन की आदत पड़ी हुई है। जब हमें ज़ोर से आवाज़ आती है तो कई बार मन ने हमें दुनिया के सिमरन में लगाया होता है।

मैं पहले जमाने की बात बताया करता हूँ कि सन्त पहले अपने सेवकों को सिमरन दिया करते थे। सिमरन पक जाने पर अपने आप ध्यान पक जाता है। उसके बाद वे शब्द का भेद दिया करते थे। इससे कई बार ऐसा नुकसान होता था कि गुरु सिमरन बताकर शरीर छोड़ जाते थे या सेवक शरीर छोड़ जाता था तो सेवक का काम अधूरा रह जाता था। मुक्ति धुनात्मक नाम में है। सिमरन नौ द्वारे खाली करके शब्द के साथ जुड़ने का जरिया है। कबीर साहब ने कलयुग के जीवों के ऊपर खास दया की जो अब इकट्ठा ही नामदान बख्श देते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी के समय में हर सतसंगी की चढ़ाई साथ–साथ करवाई जाती थी जिससे सतसंगी को पता चल जाता था कि मैं कहाँ पहुँच गया हूँ और मैंने कितनी तरक्की कर ली है। लेकिन बहुत सारे सेवक उस कमाई को संभालकर नहीं रखते थे। वे लोगों को करामात दिखाने में कमाई व्यर्थ गँवा देते थे। करामात दिखाना काल का बहुत कड़ा कर्म है इससे ज़्यादा खराब और कोई कर्म नहीं। सन्तों नें तो हमें इन ताकतों से बचाकर ले जाना होता है।

काबुल के एक घर में सतसंगियों का डेरा था। वहाँ एक बच्चे की मौत हो गई। सतसंगी उस घर के लोगों को रोते–कुरलाते हुए बर्दाश्त नहीं कर सके, उन्होंने उस बच्चे को जिंदा कर दिया। गुरु अर्जुनदेव जी उन सतसंगियों से बहुत खफ़ा हुए। गुरु अर्जुनदेव जी ने उन सतसंगियों से कहा, ''तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया? सन्त कुदरत के कानून के मुताबिक ही अपना जीवन जीते हैं और अपने बच्चों से भी यही कहते हैं कि हमने परमात्मा के शरीक नहीं बनना परमात्मा के बच्चे बनने में ही फायदा है।''

उस वक्त से इस जीव के ऊपर पर्दा डाल दिया गया कि इसे पता न लगे कि मैं कहाँ पहुँचा हूँ। जिन्हें मुनासिब समझते हैं,

जिनका हृदय बन गया है कि ये अपनी कमाई संभालकर रखेंगे गुरु अपनी कमाई भी ऐसे प्रेमियों के हवाले करने से नहीं झिझकते।

प्यारेयो, हम संसारिक माता–पिता में भी देखते हैं कि जो बच्चे काबिल होते हैं उनके माता–पिता अपने जीवनकाल में ही उन्हें अपनी पूंजी सौंप देते हैं और शाबाश देते हैं कि मेरा बच्चा बहुत काबिल है। हमें पता है कि जो बच्चे घर की जिम्मेदारी नहीं संभालते उनके माता–पिता अंदर से बहुत परेशान होते हैं।

मैं जब अमेरिका, कोलंबिया या और भी किसी देश में जाता हूँ तो वहाँ मुझे दोनों ही प्रकार के परिवार मिलने आते हैं। जो बच्चे घर की जिम्मेदारी समझते हैं अपने आपको तब्दील कर लेते हैं उनके माता–पिता मुझे बहुत प्यार से देखने के लिए आते हैं। धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है। हमारे बच्चों में बहुत तब्दीली आई है इसलिए हम आपके पास आए हैं। जो बच्चे अपने आपको तब्दील नहीं करते उनके माता–पिता भी कभी–कभी प्रेम–प्यार से मिलकर कहते हैं कि आपका उपदेश तो ठीक है लेकिन आप इस भले मानस से कहें कि यह घर की जिम्मेवारियों को समझे। इसलिए कबीर साहब ने कहा है :

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

प्यारेयो, सतगुरु तन–मन से अपने बच्चों की बेहतरी सोचते हैं। वे सदा ही सतसंग में समझाते हैं कि आप लोग बेहतर बनें। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि सतसंगी जितने बेहतर बनेंगे उनसे और लोग भी फायदा उठाएंगे। कम से कम यह पता चले कि ये फलाने सन्तों के पास जाते हैं। इनके अंदर तब्दीली इसलिए आई है क्योंकि ये सन्तों के सेवक हैं। इस सवाल का एक हिस्सा यह भी था कि शायद गुरु हमें इस काबिल नहीं समझतें।

प्यारेयो, सतसंगी को ऐसा नहीं सोचना चाहिए। गुरु ने हमें काबिल समझकर ही नामदान दिया है, अपनी आत्मा का दान दिया है। जब सतसंगी अंदर जाता है तब वह खुद देख सकता है कि गुरु ने मेरे लिए क्या संघर्ष किया है? मेरे लिए कितनी तकलीफ उठाई है? गुरु सेवकों के लिए क्या–क्या करते हैं? गुरु देने के लिए ही आएं है और उन्हें देकर ही खुशी होती है।

हमारे परमपिता कृपाल ने 26 साल होका दिया। सन्त देने के लिए आते हैं सवाल तो लेने वाले का है! हमने जैसा–जैसा अपना बर्तन बनाया उस महान सन्त से वैसा–वैसा ही प्राप्त किया। वह आज भी हमें दिन–रात दे रहे हैं। ऐसा नहीं कि वह सचखंड जाकर हमें भूल गए हैं। वह आज भी हमारी संभाल कर रहे हैं।

हमें चाहिए कि हम अपना बर्तन बनाएं। गुरु की दात पर शक न करें कि वह हमें देना नहीं चाहते, वह देने के लिए ही आएं है।

– 30 दिसम्बर 1990

***

सेवक : *प्यारे महाराज जी, मैं अक्सर अलग–अलग शहरों में जाता हूँ जहाँ पर लोग अभ्यास कर रहे होते हैं। मैं वहाँ देखता हूँ कि कई दफा अभ्यास के दौरान कुछ लोगों को अजीब–अजीब किस्म के तज़ुर्बे होते हैं। कईयों को ऐसा लगता है कि जैसे उन्हें दिल का दौरा पड़ने वाला है। कईयों को ऐसा लगता है कि उन्हें मतली सी आ रही है। कई अपने आपको बीमार महसूस करते हैं। कई ऐसा महसूस करते हैं कि वे मरने वाले हैं, एकदम से गिरने वाले हैं लेकिन जब वे अपनी आँखे खोलते हैं तो उनका सारा तज़ुर्बा खत्म हो जाता है। जिन लोगों को ऐसे तज़ुर्बे होते हैं उन्हें क्या करना चाहिए?*

बाबा जी : हाँ भाई! यह बड़ा गंभीर सवाल है हर सतसंगी को इस सवाल के बारे में सोचना बड़ा ज़रूरी है। महाराज कृपाल सदा यही कहा करते थे,''जिस तरह काँटेदार झाड़ी के ऊपर कोई रेशम का कपड़ा पड़ा हो अगर हम जल्दी से उस कपड़े को निकालेंगे या ज़बरदस्ती करेंगे तो वह कपड़ा फट जाएगा अगर हम उस कपड़े को धीरे–धीरे निकालेंगे तो हम उसे सही सलामत बचा लेंगे।'' यह एक दुनियावी मिसाल है इसी तरह हमारी आत्मा शरीर के रोम–रोम में फँसी हुई है। सच्चाई तो यह है कि इसके अलावा यह परिवार, बाल–बच्चे और मुल्क के झगड़ों वगैरहा में फँसी हुई है। कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ हमारा संबंध बना हो और हमारी आत्मा वहाँ न फँसी हो।

आप अनुराग सागर पढ़कर देखें, शुरू में आत्माएं प्रभु के अंदर मिली हुई थी प्रभु में अभेद थी। प्रभु ने काल की सेवा के वश होकर आत्माएं काल को सौंप दी। काल ने आत्माओं को नीचे के मंडलों में उतार दिया। जब आत्माएं भँवर गुफा पारब्रह्म में उतरी तो इनके ऊपर कारण पर्दा चढ़ गया। जब नीचे ब्रह्म में आई तो सूक्ष्म पर्दा चढ़ गया। जब उससे भी नीचे स्थूल शरीर में आई तो स्थूल पर्दा चढ़ गया फिर आत्मा ने बाहर की दुनिया को देखना शुरू कर दिया तो अपनी रोशनी गुम कर ली और अपने घर की याद भूल गई।

काल ने सिर्फ यह पर्दे ही नहीं बल्कि बड़ी चालाकी से हमारी आत्मा के पीछे पाँच डाकू – काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार लगा दिए। हमारी आत्मा को नीचे खींचने वाली पच्चीस प्रकृतियों की धारा भी लगा दी। आत्मा के ऊपर सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के फंदे भी लगा दिए।

सन्तों को जातिय तज़ुर्बा होता है। सन्त अपने प्यारे बच्चों को बताते हैं जैसे कांटों में फँसे रेशमी कपड़े को ज़बरदस्ती निकालें

तो वह फट जाता है उसी तरह अगर हम रोम–रोम में फँसी हुई आत्मा को ज़बरदस्ती इन बंधनों से निकालेंगे तो हमारे शरीर को भी तकलीफ होगी। हमारी आत्मा सिमरन के ज़रिए ही संसार में विचर रही है। हर आदमी अपने–अपने कारोबार का सिमरन कर रहा है; जैसे कर्ल्क अपने दफ्तर की फाइलों का सिमरन करता है कि आज कौन सी फाइल कर ली है कल कौन सी करनी है। लड़कियाँ चूल्हे–चौके का, घर के कारोबार का सिमरन करती हैं कि कौन सी चीज़ आज पकानी है या बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना है। इसी तरह किसान अपने कारोबार का सिमरन करते हैं कि कौन सी फसल बीज़नी है, कौन सी फसल काटनी है। इसी तरह हर आदमी अपने सिमरन में लगा हुआ है।

सन्तों ने यही आसान तरीका निकाला है कि जैसे पानी की मारी खेती पानी से हरी होती है। सन्त हमें अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। उस सिमरन के पीछे उनका तप–त्याग काम करता है। सिमरन ही सिमरन को काटता है। हम जिसका सिमरन करते हैं उसका ध्यान अपने आप ही आ जाता है। अगर हम दिन–रात सतगुरु का सिमरन अपनी ज़ुबान पर लाएँगे तो सतगुरु का ध्यान अपने आप ही आना शुरू हो जाएगा।

नामदान के समय हमें बताया जाता है कि दोनों आँखों के बीच में तीसरे तिल पर ध्यान रखकर धीरे–धीरे सिमरन करें। हम आत्मा को ज़बरदस्ती शरीर में से नहीं निकाल सकते। ऐसा करने से शरीर को तकलीफ होती है। जब हम धीरे–धीरे सिमरन करके अपना ध्यान ऊपर लाते हैं तो हमारा ध्यान जो दुनिया में, बहन–भाईयों में फैला हुआ है वह धीरे–धीरे शरीर में आना शुरू हो जाएगा। जब ध्यान शरीर में इकट्ठा हो जाता है तो हमारे शरीर के रोम–रोम में

से आत्मा अपने आप सिमटनी शुरू हो जाती है। नामदान के समय बताया जाता है कि पहले हमें ऐसा लगता है जैसे चीटियाँ काट रही हैं। उस समय हम थोड़ी सी जागृत अवस्था में होते हैं लेकिन जब पूरा सिमटाव आँखों के पीछे आ जाता है तो पास बैठे हुए को भी पता नहीं चलता कि आत्मा कब सिमट गई और तब उस प्रेमी को भी कोई तकलीफ नहीं होती।

जिन लोगों को अभ्यास में बैठे हुइ बेहोशी सी होती है या उनका शरीर अकड़ जाता है ऐसा इसलिए होता है कि उन्होंने पहले कभी इतना भजन नहीं किया होता, वे भजन की तरफ़ से लापरवाह होते हैं। वे कई–कई घंटे या कई–कई दिन सिमरन भूले रहते हैं। जब वे भूले–भटके सतसंग में आ जाते हैं तो उनके मन में उतावलापन पैदा होता है कि दूसरे लोग इतना भजन करते हैं हम भी भजन–अभ्यास करें। वे जब अभ्यास को एकदम से बढ़ाते हैं तो तकलीफ होती है अभ्यास को धीरे–धीरे बढ़ाना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने कहा था कि सतसंगी को आलस और जल्दबाज़ी छोड़ देनी चाहिए। आलस हमें रोज़ाना नित्यनियम से अभ्यास नहीं करने देता। जब हम सतसंगियों में आकर बैठते हैं तो जल्दबाज़ी करते हैं कि हमारा पर्दा क्यों नहीं खुला? फिर हम ज़्यादा से ज़्यादा बैठने की कोशिश करते हैं। कई बार तो हम लोगों से वाह–वाह कहलवाने के लिए भी ज़्यादा बैठते हैं। जो आदमी रोज़ कम खाना खाता है अगर वह एक दिन दोगुना खाना खा लेगा तो वह ज़रूर बीमार होगा।

काल के पास सतसंगियों को गिराने के बहुत तरीके हैं। वह कई बार हमें दिखावे का भक्त भी बना देता है कि लोग हमारी तारीफ करें कि यह इतने घंटे अभ्यास में बैठता है। कभी कहीं

ज़्यादा लोग इकट्ठे हों या किसी कमाई वाले प्रेमी सतसंगी ने बाहर से आना हो या सन्तों ने आना हो तो उस समय हम ज़्यादा से ज़्यादा समय अभ्यास में बैठ जाते हैं। जबकि पहले कभी इतना समय भजन में नहीं दिया होता। ऐसा करने से हमारी टाँगें और धड़ सुन्न भी हो जाते हैं।

कई दफा मानसिक रोगियों के साथ भी ऐसा हो जाता है लेकिन वे मानने के लिए तैयार नहीं होते कि हमें मानसिक रोग है। अगर वे मान लें तो वे इन रोगों में ग्रसे ही क्यों जाएं? मानसिक रोगियों को खुद अपनी सुरत का पता नहीं होता कि वह कहाँ गई है। उन्हें कई बार आठ–आठ पहर चार–चार पहर सुरत नहीं आती कि हम कहाँ पड़े हैं, हम सोए हुए हैं या जाग रहे हैं।

जैसे हमें नामदान के समय समझाया जाता है अगर हम सन्तमत के उसूलों के मुताबिक सिमरन करें तो हमारी आत्मा धीरे–धीरे शरीर में से निकलकर आँखों के पीछे आ जाती है और हमें बाहर की दुनिया की याद भूल जाती है। हम अंदर जाग जाते हैं। यह एक सपने जैसा प्रतीत होता है अगर कोई आवाज़ हो तो हम आँख खोल लेते हैं। हमें पिछली याद बिल्कुल भूली होती है हम आगे देखने लग जाते है फिर हम जब तक रस लेना चाहते है वहाँ रहते हैं और अपनी मर्ज़ी से आ जा सकते हैं। महात्मा इसी को जीते जी मरना कहते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु मुख आए जाए निसंग।

जब हमें अभ्यास में महारत हो जाती है तो आँखे बंद करते ही आसानी से ऊपर चले जाते हैं और आँखें खोलते हैं तो दुनिया में आ जाते हैं। ऐसे अभ्यासी लोग भीड़–भाड़ में चलते हुए भी अपना ध्यान मालिक के साथ जोड़े रखते हैं। दुनिया से बातचीत करते हुए भी अपने ध्यान को प्रभु के साथ जोड़कर रखते हैं।

मुख की बात सगल स्यों कर दा जीव संग प्रभ अपने घर दा।

सन्तमत में अभ्यासी को ख़ुशी होती है कभी कड़वा तज़ुर्बा नहीं होता। जिन्हें कड़वे तज़ुर्बे होते हैं वे अभ्यास नहीं करते सिर्फ देखा–देखी ही अभ्यास में बैठते हैं।

मुझे महाराज सावन सिंह की संगत में ऐसा तज़ुर्बा देखने को मिला है कि ऐसी बहुत सी बीबीयाँ जिन्हें कोई मानसिक रोग होता था वे सतसंग में आगे बैठती थी। वे रोज़ाना तो सिमरन नहीं करती थी लेकिन उस दिन कोई चार घंटे तो कोई पाँच घंटे बैठती थी फिर वे पीछे की तरफ़ गिर जाती थी। दूसरी बीबीयाँ यह सोचती कि इसकी सुरत लग गई है और उसकी बल्ले–बल्ले करने लग जाती। हम भाई–बहन रोज़ उन्हें माथा टेकने लग जाते। ऐसी बीबीयाँ जब संगत में आती है तो आम लोग उनको मान–बड़ाई देते है। उनका यह दस्तूर ही हो जाता है। नए लोगों पर इस बात का बुरा असर पड़ता है कि ऐसा क्यों हो रहा हैं? इन्हें क्या हुआ है?

जो प्रेमी महाराज सावन सिंह जी के सतसंग का इन्तजाम करते थे उन्हें यह खास हिदायत दी जाती थी कि ऐसे लोगों को आगे न बैठने दिया जाए या इन्हें सतसंग में ही न बैठने दिया जाए और अगर सतसंग में आकर बैठें तो पीछे जाकर दूर बैठें ताकि ये दूसरे सतसंगियों को परेशान न करें।

मैंने यहाँ तक देखा है कभी–कभी जब महाराज सावन सिंह जी संगत के पास से गुजरते थे प्रेमी बैठे होते थे तो कई बीबीयाँ जो पीछे खड़ी होती थी वे आगे आकर उनके पैरों में गिर जाती थी और उल्टी होकर लेट जाती थी। जो उनके पास एक दो बीबीयाँ होती थी वे जल्दी से उनके मुँह पर कपड़ा डाल देती थी कि कोई मुँह भी न देख सके कि उन्हें क्या हो रहा है। वह बीबीयाँ सुरत

चढ़ने का दिखावा करती थी और साथ में मुँह पर बैठी मक्खियाँ भी उड़ाया करती थी। महाराज सावन इस बात का बुरा मानते थे। मुझे ऐसा कुछ महाराज कृपाल के समय में भी देखने को मिला है जब महाराज कृपाल राजस्थान आते थे, तब वे भी ऐसे लोगों से काफी खफ़ा होते थे।

मैं बताया करता हूँ कि जिन लोगों को कोई बीमारी होती है या कोई समस्या होती है ऐसी घटनाऐं उन लोगों के साथ ही होती है। ऐसा एक तज़ुर्बा बैंगलोर में भी हुआ। एक बुज़ुर्ग माता थी उसके घर में कई समस्याएँ थी वह घर में तो कम अभ्यास करती थी। उसका सारा परिवार बहुत परेशान हुआ। उसके परिवार के लोग मुझे बुलाकर ले गए। मैंने उन लोगों से कहा कि तुम इसकी मालिश करो शायद यह शरीर में आ जाए, डरने की कोई बात नहीं। वह माता काफी समय बाद होश में आई।

इस बार सन्तबानी आश्रम अमेरिका में भी एक ऐसा ही तज़ुर्बा हुआ। मैंने समय पर प्रेमियों को जानकारी दी लेकिन अफसोस उस प्रेमी को अस्पताल लेकर गए डॉक्टरों ने बताया कि जिन लोगों को कोई मानसिक रोग होता है आमतौर पर उनकी ऐसी हालत हो जाती है। शरीर सुन्न होने से बढ़कर कुछ नहीं होता। हमें नामदान के समय अभ्यास में बैठने की जो विधि बताई जाती है अगर हम उस तरह अभ्यास करें तो हमें कभी भी कड़वा तज़ुर्बा नहीं होगा।

महाराज कृपाल का यह वाक हमेशा याद रखें, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हज़ार काम छोड़कर अभ्यास में बैठें। जब तक आत्मा को भजन की खुराक नहीं दे लेते तब तक शरीर को खुराक न दें।'' अगर हम महाराज कृपाल का यह पवित्र वाक अपने हृदय में बिठा लें तो किसी भी सतसंगी को न कभी कड़वा तज़ुर्बा हुआ है और न हो ही सकता है।

मैंने अपने पहले संदेश में सारे प्रेमियों से कहा था जो सन्तबानी मैगजीन में भी छपा है कि जिसने भी हिन्दुस्तान में सतसंग के कार्यक्रम में आना है वह पूरी तैयारी करके आएं। तैयारी का मतलब अभ्यास पर बैठने की पूरी प्रैक्टिस करके आएं ताकि यहाँ पर आकर फायदा उठा सकें।

आमतौर पर जो प्रेमी तैयारी के साथ यहाँ आते हैं वे मुझे अपनी तरक्की के बारे में बताकर जाते हैं कि वे किस तरह पहले से ज़्यादा आवाज़ या प्रकाश देख रहे हैं। जो तैयारी करके नहीं आते वे यहाँ आकर बीमार हो जाते हैं क्योंकि वे देखा–देखी ज़्यादा समय अभ्यास में बैठते हैं, पहले उतना समय भजन–अभ्यास में नहीं दिया होता। जिससे उनका शरीर दुखने लग जाता है; वे बीमार पड़ जाते हैं और दूसरे प्रेमियों को भी परेशान करते हैं।

– 28 अक्टूबर 1990

***

सेवक : *प्यारे महाराज जी, आपने कहा है कि शब्द गाना सिमरन से कम नहीं। जब उन शब्दों की लाईनें हमारे अंदर चलने लगें और कई दफा सिमरन में दखल दें तो क्या करना चाहिए?*

बाबा जी : प्यारेयो, हमारा मकसद तो सिमरन में एकाग्र होने का ही है। शब्द हमारे अंदर विरह और तड़प पैदा करने के लिए होते हैं। हमारा ज़्यादा ज़ोर नामदान के समय मिले हुए नाम के सिमरन पर होना चाहिए। अगर कोई ऐसी शब्दों की लाईन हमारे दिमाग में घर कर जाती है तो भजन–अभ्यास में बैठने से पहले आप कोई विरह भरा शब्द बोल लें। अगर आपमें और भी विरह है तो भजन–अभ्यास से उठने के बाद भी एक शब्द बोल लें तो आपकी आत्मा सारा दिन एकाग्र रहेगी और आपके ख्याल पवित्र रहेंगे।

– 7 जनवरी 1996

***

सेवक : *सन्त जी, भजन गाते समय हमारे अंदर जिस तरह की तड़प होती है, सिमरन करते समय हम उसी तरह की तड़प कैसे बना सकते हैं?*

बाबा जी : परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम करके हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। परमात्मा कृपाल सदा यही कहा करते थे, ''भजन–अभ्यास में बैठने से पहले आप कोई ऐसा शब्द बोलें जो आपके दिल में तड़प पैदा करे।'' शब्द तो सभी अच्छे होते हैं लेकिन अपनी–अपनी आत्मा की पसंद होती है। आपकी जिस शब्द में ज़्यादा रूचि है आप वह शब्द बोलें जिसे बोलकर आपकी तड़प बनती हो।

प्यारेयो, शब्द बोलते हुए हमारे अंदर तड़प बनती है। उस तड़प को कायम रखें बल्कि सिमरन के समय यह तड़प और बढ़ जानी चाहिए। जब हम शब्दों के ज़रिए गुरु के आगे नम्रता जाहिर करते हैं, गुरु के प्रति प्यार जाहिर करते हैं, अपनी कमियां बताते हैं और फरियाद करते हैं उस फरियाद को पूरा करने के लिए सिमरन किया जाता है।

सिमरन करते समय हमारे अंदर उससे ज़्यादा तड़प इसलिए होनी चाहिए क्योंकि सिमरन करते समय हमारे तीसरे तिल पर हमारे गुरु विराजमान होते हैं। किसी सतसंगी को यह सोचना भी नहीं चाहिए कि मेरे गुरु मेरे पास नहीं हैं। गुरु जब नाम देते हैं उस समय वह हमारे अंदर तीसरे तिल पर अपनी बैठक बनाकर विराजमान हो जाते हैं। गुरु हमारी इंतज़ार में होते हैं अगर कोई हमारी इंतज़ार में हो तो क्या हम पीछे मुड़कर देखेंगे अगर हमें उनके साथ सच्चा प्यार है तो हमारी कोशिश होगी कि वह हमारे सामने आएं और हम उनसे गले लगकर मिलें।

मैं बताया करता हूँ, ''इश्क चाहे मिजाजी है चाहे हक़ीक़ी है दोनों में ही एक जैसी तड़प होती है। अगर किसी का किसी के साथ मिजाजी इश्क है तो उसे रात को नींद नहीं आती, उसकी आंखों के आगे वही मनमोहनी सूरत घूमती रहती है। जब वह उससे मिलता है तो गले लगकर मिलता है। यही तड़प हक़ीक़ी इश्क में भी है। अगर हमारा गुरु के साथ सच्चा लगाव है तो रात को हमारी आंखों के आगे वही मनमोहनी सूरत रहेगी हमें नींद नहीं आएगी हम यही सोचेंगे अगर वह मिल जाए, मैं उससे यह बात करूं वह बात करूं। प्रेमी अपने अंदर ही ताने–बाने बुनता रहता है।''

प्यारेयो, मेरे पास कई लड़के–लड़कियां आकर अपने प्यार का इज़हार करते हैं। वे एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं लेकिन कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु के प्यार का इज़हार करता है। ऐसा नहीं कि गुरु से प्यार का इज़हार करने वाले हैं ही नहीं। मेरे पास ऐसे भी आते हैं जो तहे दिल से गुरु का शुक्राना करते हैं।

मैंने आपको कई बार ससी–पुन्नू की कहानी सुनाई है। यह कहानी सन्तबानी मैगज़ीन में भी छप चुकी है। प्रेमियों ने यह कहानी पढ़ी भी है कि किस तरह ससी के दिल में अपने दोस्त पुन्नू के लिए तड़प थी। उसने बारह साल तक न अच्छी तरह खाना खाया और न अच्छी तरह सोई। जब उसका मिलाप पुन्नू से हुआ तो वह सो गई और पुन्नू को कुछ लोग पीछे से उठाकर ले गए तब ससी पुन्नू के वियोग में रो–रोकर मर गई। आप देखें! अगर वह अपनी तड़प को उसी तरह बनाए रखती, न सोती तो पुन्नू को कोई उठाकर न ले जाता।

आप शब्द बोलते समय तड़प बनाते हैं लेकिन सिमरन करते समय तड़प न बनाकर सिमरन में सुस्ती करेंगे तो काम, क्रोध,

लोभ, मोह और अहंकार आपके पुन्नू को छिपा लेंगे क्योंकि ये विरोधी हैं आपको आपके दोस्त से नहीं मिलने देंगे। अगर आप काम, क्रोध के जाल में आ गए तो हो सकता है आप भजन से उठकर काम–भोग में लग जाए। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

अगाह को तरांग पीछा फेर न मोडहड़ा।
सिज अवेहा नानका बोहर न होसी जन्मड़ा।।

हमारी आगे बढ़ने की इच्छा होनी चाहिए सिमरन के समय तड़प और ज़्यादा बढ़ानी चाहिए, हमें पीछे नहीं देखना चाहिए। दुनिया के बारे में नहीं सोचना चाहिए अगर हम सिमरन में इस तरह आगे बढ़ते जाएंगे तो हमारा दोबारा इस दुनिया में जन्म नहीं होगा।

सोहणी ने जब देखा की घड़ा कच्चा है तो उसे यकीन हो गया अगर मैं इसका साथ लेकर दरिया में कूदूंगी तो मेरी मौत निश्चित है। सोहणी ने सोचा इश्क बेदाग है तो मैं इसे दाग क्यों लगाऊं। प्यारेयो, अगर हम सोहणी की मिसाल गुरु घर में लगाएं कि जिन गुरु सिखों ने गुरु के साथ इश्क कमाया है उन्होंने उसे दाग नहीं लगने दिया।

जब हम सिमरन के समय मन में बुरे ख्याल उठाते हैं तो क्या हम दाग नहीं लगा रहे होते। हमारे गुरु तीसरे तिल पर बैठकर हमारी हर हरकत को देख रहे होते हैं। जब आप बुरे ख्याल उठाते हैं तो किसके सामने उठा रहे हैं? हमारी ऐसी हरकतों से हमारे गुरु की बेअदबी हो रही होती है। चाहे किसी दुकान पर छोटा सा बच्चा भी क्यों न बैठा हो तो हम वहाँ से कोई सामान नहीं उठाते कि इन्सान का बच्चा हमें देख रहा है। क्या हमने कभी यह सोचा कि हमारे पूर्ण गुरु हमें देख रहे हैं। हम सोचते हैं कि हमारे गुरु हिन्दुस्तान में बैठे हैं या किसी और देश में गए हैं या सोए हुए हैं ऐसा सोचने वाले गुरु से क्या फायदा उठा लेंगे?

प्यारेयो, हमारे गुरु हमारे नज़दीक से नज़दीक हैं और हमारी हर हरकत को देख रहे हैं। जब सन्तों के अनेकों पूर्व और पश्चिम के सेवक चोला छोड़ते हैं तो गुरु कहीं और बैठे होते हैं लेकिन चोला छोड़ने वाले गवाही देते हैं कि गुरु ने हमारी संभाल की।

महाराज सावन और महाराज कृपाल को चोला छोड़े हुए काफी समय हो गया है। जिन्होंने इन महान हस्तियों को देखा ही नहीं अगर उनके घर में कोई सतसंगी है और घर पर गुरु की बात चलती है तो वे भी जब चोला छोड़ते हैं तो इस बात की गवाही देते हैं कि उन्होंने भी गुरु पावर की मौजूदगी महसूस की है और उनके दर्शन किए हैं।

मैं जब पश्चिम में और मुम्बई में सतसंग करने के लिए जाता हूँ तो कई प्रेमियों के माता–पिता मुझे देखने के लिए आ जाते हैं। वे आकर मुझसे कहते हैं, ''हम सिर्फ आपको देखने के लिए आए हैं। आपने हमारे बच्चों के लिए बहुत कुछ किया है।'' उनके दिल में कितनी तड़प होती है, क्या परमात्मा उसका फल नहीं देगा? ज़रूर देगा। यह तो अपने–अपने बर्तन का सवाल होता है।

मैं तो आपको यही कहूँगा कि चलते–फिरते, सोते–जागते किसी से बातें करते हुए भी तड़प कम नहीं होनी चाहिए। तड़प हर समय एक जैसी रहे। क्या आप सोते–जागते दुनिया की तड़प नहीं करते? आपको जो बुरे सपने आते हैं अगर आपमें गुरु की तड़प होगी तो क्या आपको गुरु का स्वप्न नहीं आएगा? ज़रूर आएगा।

– 14 फरवरी 1997

***

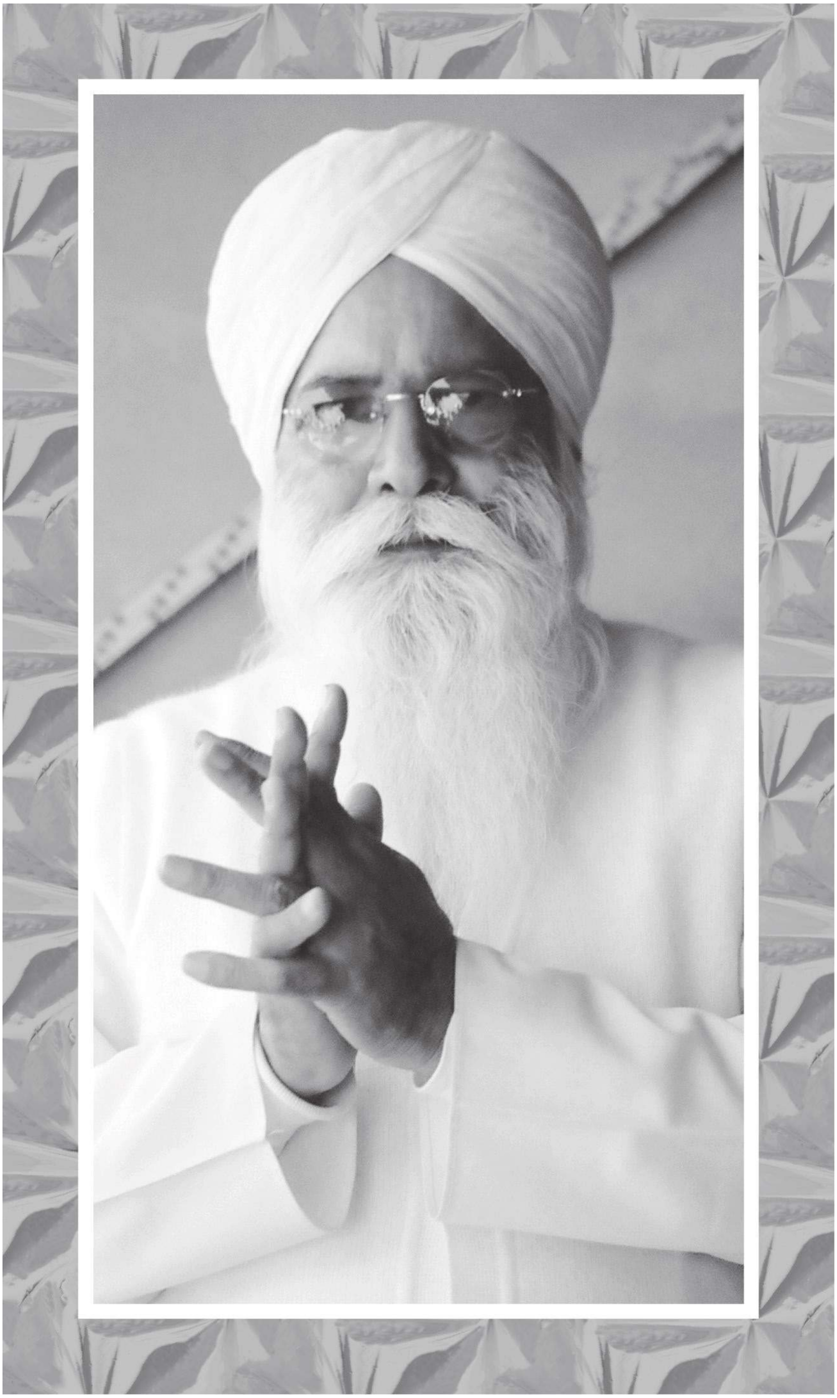

भाग – पाँच

गुरु की दया

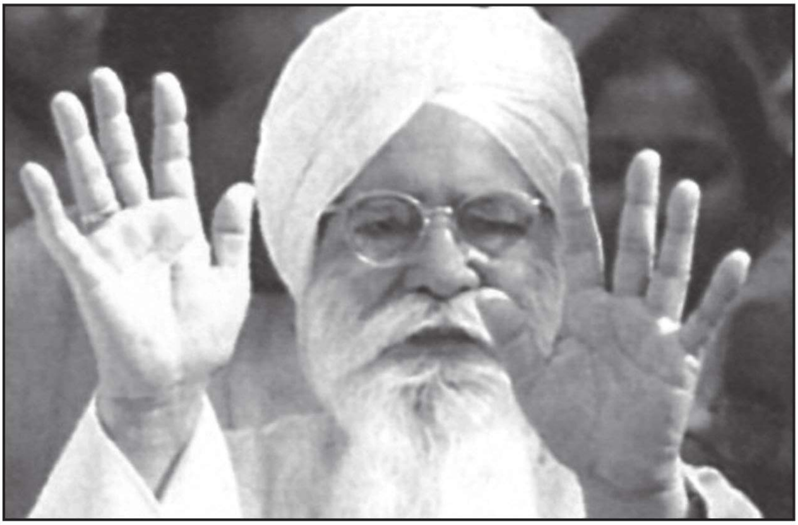

प्यारेयो, गुरु की दया सदा ही ज़ारी रहती है वह कभी बंद नहीं होती। अगर हम अपना शरीर भी छोड़ जाएं फिर भी हमने जिनसे नाम लिया है उनकी दया हमेशा ज़ारी रहती है बल्कि वह हमारी पहले से भी ज़्यादा संभाल करते हैं। गुरु दया का सागर होते हैं। ऐसा कोई लफ्ज़ नहीं जिसके साथ हम उस दया के सागर का, दया के भंडार का धन्यवाद कर सकें। सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर ही होता है बाहर तो लफ्ज़ ही है। सच्चा धन्यवाद उनके हुक्म के अनुसार चलना ही है। सन्तमत में वही कामयाब होता है जो गुरु की आज्ञा का पालन करे।

– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

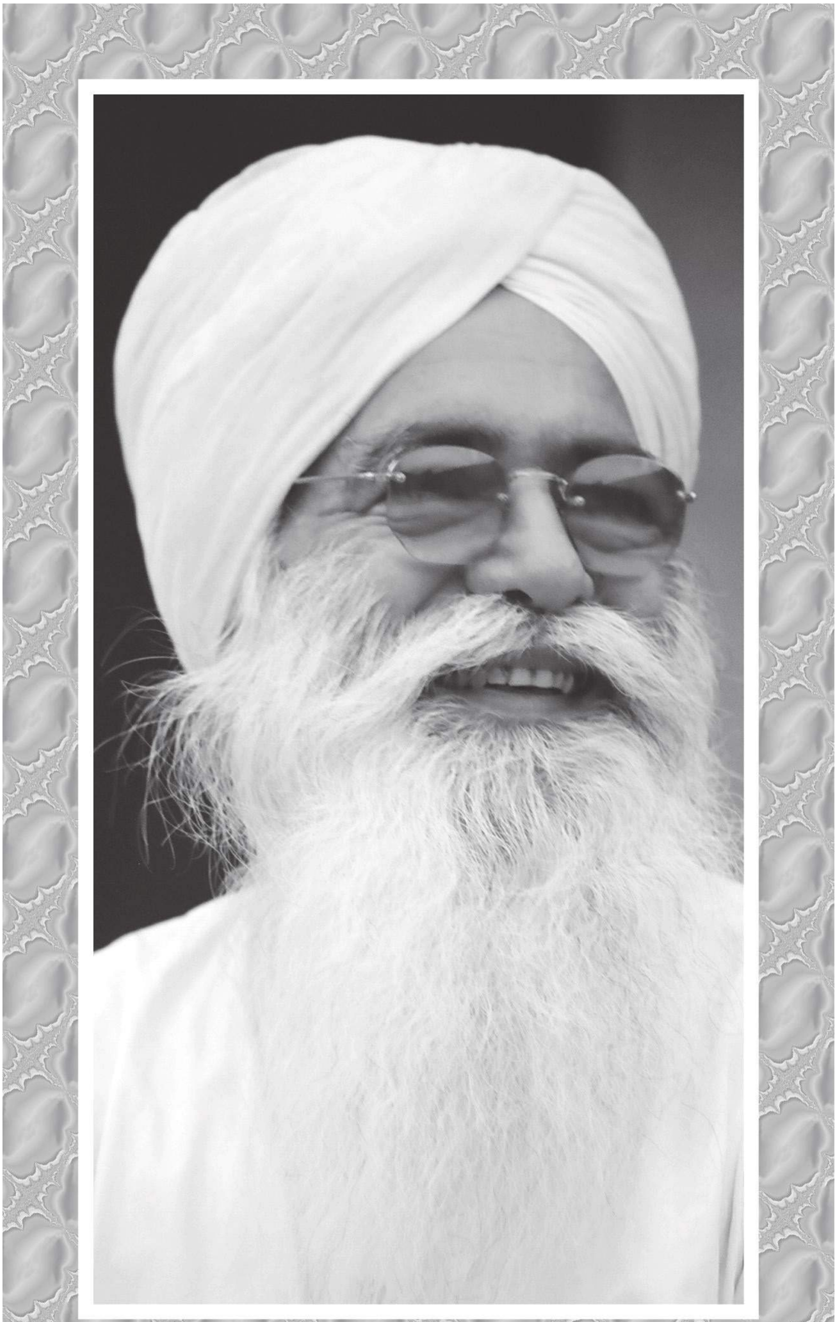

44

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को दर्शनों के समय दिया गया संदेश

मधुरता को कायम रखना

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 6 अप्रैल 1981

सेवक : *हमें यहाँ जो मधुरता प्राप्त हुई है उस मधुरता को यहाँ से जाने के बाद पूरे साल हर पल कैसे कायम रख सकते हैं?*

बाबा जी : लगातार इस पवित्र यात्रा को याद रखें। अगर हम इस पवित्र यात्रा को याद रखेंगे तो हमें यह भी प्रेरणा मिलेगी कि हमने यहाँ पर क्या सीखा। यहाँ हर आत्मा को अभ्यास करने के लिए और पवित्र ज़िंदगी व्यतीत करने के लिए प्रेरणा दी जाती है। अगर हम भजन–सिमरन करते हैं तो गुरु ताकत उस सेवक के अंदर प्रकट हो जाती है। वैसे सतगुरु ताकत हमेशा ही पर्दे के पीछे से सेवक के काम करती है लेकिन गुरु के ऊपर पूरा भरोसा और श्रद्धा रखना भी बहुत ज़रूरी है।

इस यात्रा में हमें जो कुछ यहाँ से प्राप्त हुआ है उसे भूलना नहीं चाहिए। मुझे बहुत खुशी है कि हर ग्रुप के अंदर बहुत से प्रेमी अपनी पहले की भी हालत बताते हैं और बाद में जब यहाँ अभ्यास में तरक्की करते हैं तो वह भी मुझे बताकर जाते हैं।

मुझे बहुत खुशी होती है कि जो लोग अपने घर वापिस जाकर अपना भजन–अभ्यास ज़ारी रखते हैं वे उस तरक्की को कायम कर लेते हैं। जो वापिस जाकर मन के दास बन जाते हैं या दुनिया के प्रभाव में आ जाते हैं उनको जब यहाँ राजस्थान आने का फिर

से मौका मिलता है तब वे पश्चाताप करते हैं। कहते हैं कि हम उस दया को खो बैठे हैं।

मेरे कहने का भाव इतना ही है कि आप लोगों में से ही बहुत से प्रेमी ऊँचे–ऊँचे अनुभव बताकर जाते हैं। जब फिर आते हैं उस वक्त उनकी क्या हालत होती है? यहाँ थोड़ा सा अरसा रहकर उनको अंदर किस तरह दया प्राप्त होती है!

***

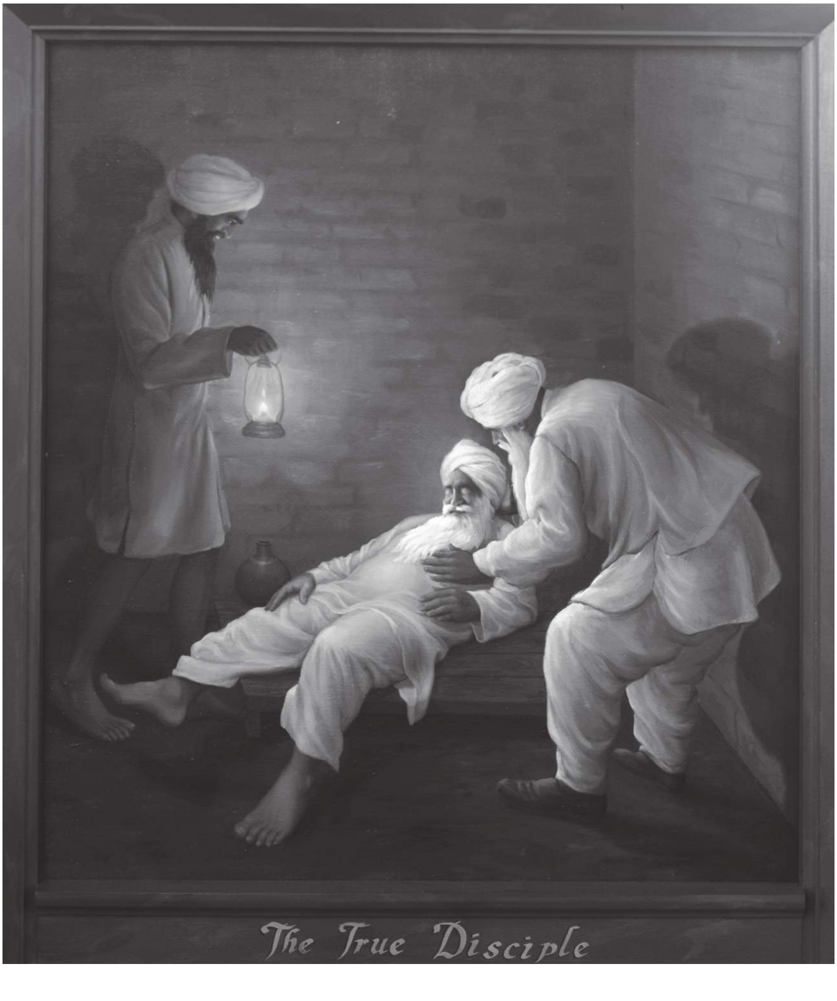

45

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

जिस जगह उन्होंने मेरी प्यास बुझाई

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 2 मार्च 1985

आपने इस जगह के बारे में बहुत कुछ सुना है क्योंकि आपमें से ज़्यादातर लोग इस जगह के दर्शन कर चुके हैं। इस जगह के बारे में सन्तबानी मैगजीन में भी बहुत कुछ छप चुका है। आप अच्छी तरह जानते हैं कि यह जगह क्यों बनाई गई और इस जगह पर क्या किया गया।

हमें सबसे पहले यह सोचने की ज़रूरत है क्या हम ईमानदारी से भजन–अभ्यास कर रहे हैं और गुरु की हिदायतों के मुताबिक अपने जीवन को ढ़ाल रहे हैं। अगर हम गुरु का हुक्म मानें और गुरु के बताए हुए रास्ते पर पूरी तरह से चलें तो गुरु हमसे कुछ भी नहीं छिपाते। गुरु ऐसी आत्मा में इस तरह समा जाते हैं जैसे दूध में चीनी समा जाती है; दूध का रंग नहीं बदलता केवल दूध का स्वाद बदलता है। इसी तरह जो गुरु की हिदायतों पर चलते हैं सतगुरु सारी बरकतें और अपने पूर्ण विश्वास से उनके अंदर बैठ जाते हैं।

हम क्या करते हैं? हम थोड़े दिनों के लिए काल के हाथों में खिलौना बन जाते हैं। हम वही करते हैं जो हमारा मन हमसे करवाता है। जब मन का वेग चला जाता है और गुरु का शब्द हमें अंदर से अपने पास आकर भक्ति करने की प्रेरणा देता है, तब हम मनमत मार्ग छोड़कर गुरुमत मार्ग पर गुरु की हिदायत के मुताबिक

चलना शुरू कर देते हैं। हम इम्तिहान में कभी पास होते हैं कभी फेल होते हैं। हमें कभी सतगुरु के प्रति प्यार होता है और कभी हम गुरु प्यार के प्रति डगमगा जाते हैं, इस कारण हम सफल नहीं हो पाते। कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहले लग्गी तैसी निबहै ओड़।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।।

आप कहते हैं कि अगर हम गुरु के प्रति वही तड़प और प्यार बनाए रखें जो हमारे अंदर पहले दिन थी जब हमारा मिलाप सतगुरु से हुआ था, ऐसा व्यक्ति खुद तो तर ही जाता है साथ में लाखों जीवों को भी तारता है।

सतसंगी को इस संसार, समाज और परिवार में एक नमूना बनकर जीना चाहिए। परिवार को पता चले कि यह सतसंगी है, पूर्ण गुरु का नामलेवा है। यह बहुत भला, साफ दिल इन्सान है इसमें सारे गुण हैं जोकि एक नामलेवा में होने चाहिए। यह जो कुछ बोलता है खुद उस पर चलता है। सतसंगी को ऐसा जीवन जीना चाहिए जो संसार में एक आदर्श उदाहरण हो।

अगर सतसंगी एक नमूने का जीवन जीता है तो उसका घर धरती पर स्वर्ग बन जाता है। सतसंगी के अंदर से नाम की खुशबू आएगी जो लोग उस खुशबू को लेंगे उन पर भी उस खुशबू का असर पड़ेगा। वे लोग भी नाम की दौलत प्राप्त करने की कोशिश करेंगे और इस दौलत से मालामाल हो जाएंगे।

जो बच्चा अध्यापक की आज्ञा का पालन करता है अध्यापक भी उस पर पूरी तवज़्जो देता है। उसी तरह जो सेवक गुरु के हुक्म का पालन करते है और मजबूत होकर गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं गुरु भी उन सेवकों को अपनी पूरी तवज़्जो देते हैं।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि मैंने कोई किताबी जीवन नहीं बिताया है, मैं कभी दिमागी पहलवान नहीं बना, मैंने कभी किसी से बहस नहीं की। मैं अपने आपको खुशकिस्मत समझता हूँ कि मेरे गुरुदेव ने मुझे जो कहा मैं वह कर सका। उन्होंने मुझे जो हुक्म दिया मैंने ठीक वैसे ही किया। मैं अपने गुरु की दया से गुरु के हुक्म को मान सका और उस पर चल सका।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यासा आदमी कद्र और इज़्ज़त से पानी पिएगा और पानी पिलाने वाले की भी कद्र करेगा।'' ठीक इसी तरह से अगर हम भी अपने गुरु की आज्ञा का पालन करेंगे और गुरु के बताए हर शब्द को गुरु का हुक्म मानकर उनके अनुसार चलेंगे तो गुरु खुश होंगे। हम भी गुरु की कद्र करेंगे। गुरु भी हमें अपना सब कुछ देने के लिए तैयार रहेंगे।

आपने यहाँ पिछले दस दिन भजन-अभ्यास किया है इसलिए इस जगह (पवित्र गुफा) का दरवाजा आपके लिए खोला गया है। यह परमपिता कृपाल के हुक्म के मुताबिक है उन्होंने दया पूर्वक यह अनुमति दी थी कि जो यहाँ दस दिन भजन-अभ्यास करें अपना ध्यान एकाग्र करने की कोशिश करें केवल उन्हीं को इस जगह के दर्शनों की इजाज़त दी जाए।

सबको यह जगह देखने की इजाज़त नहीं है। जो सिर्फ यह जगह देखने के लिए आते हैं हम उनसे कहते हैं कि जो यहाँ कम से कम दस दिन भजन-अभ्यास करते हैं उनको ही इस जगह के दर्शन करने की इजाज़त है।

मैं जब 77 आर. बी. में रहता था तब भी इस जगह को बंद रखा गया और इसकी पवित्रता को बरकरार रखा गया। जो प्रेमी यहाँ रहते थे उन्होंने किसी को भी यह जगह देखने की इजाज़त नहीं

दी। वे प्रेमी इस जगह को साफ सुथरा करते थे, धूप बत्ती जलाते थे। उन्होंने इस जगह की पवित्रता को बनाए रखा और किसी को यह जगह देखने की इजाज़त नहीं दी।

यह वह जगह हैं जहाँ महाराज कृपाल ने अपने मुबारक चरण रखे। यह वह जगह है जहाँ महाराज कृपाल ने एक प्यासी आत्मा को नाम के अमृत का पान करवाकर उसकी प्यास बुझाई। यह वह जगह है जहाँ महाराज कृपाल ने एक तपती वियोगी आत्मा पर अपनी शीतलता बरताई। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जहाँ साधु अपना चरण रख देते हैं वह जगह पवित्र हो जाती है; वह जगह अड़सठ तीर्थों से बढ़कर हो जाती है।''

मैं आशा करता हूँ कि आप इस जगह से प्रेरणा लेंगे। अपने घरों में जाकर अपने परिवार की जिम्मेदारियां निभाते हुए और सारे दुनियावी कार्य करते हुए अपने विचारों को पवित्र रखेंगे और अपना भजन–अभ्यास करेंगे।

***

46

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

गुरु के चरणों में बैठें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 5 अक्टूबर 1985

बहुत से प्रेमियों ने कई दफा इस जगह के दर्शन किए हैं, सबको इसकी महानता का ज्ञान है। सन्तबानी मैगज़ीन में भी इसके बारे में बहुत कुछ छप चुका है। मैं ज़्यादा कुछ नहीं बोलूँगा सिर्फ इतना ही कहूँगा कि वह बहुत सुहावना समय था बहुत अच्छा वक्त था जब इस गरीब आत्मा के दिल में उस परमात्मा से मिलने की तड़प उठी, प्यार पैदा हुआ।

उस तड़प को देखकर ही दयालु कृपाल आए जो आत्मा को अपने साथ जोड़ने की समर्थता रखते थे। जीवित महापुरुष के मिलने का यही फायदा होता है लेकिन सवाल हमारी अपनी तड़प और ग्रहण शक्ति का है कि हमारे अंदर कितनी तड़प कितनी ग्रहण शक्ति है? देनेवाला तो तैयार ही होता है। वह बहुत सुहावना वक्त था जब इस गरीब आत्मा के दिल में उस मालिक से मिलने की तड़प पैदा हुई।

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि जिस माता–पिता ने मेरा दुनियावी तौर पर पालन–पोषण किया उनको परमात्मा ने ज़्यादा से ज़्यादा दुनियावी धन दिया था। बचपन से मेरा वहाँ बिल्कुल ही दिल नहीं लगा था। मैं हमेशा उदास रहता था। मैं उस घर को, उस धन को नर्क से ज़्यादा कुछ भी नहीं समझता था।

मेरे दिल में हमेशा ही यह चाहना थी क्या कभी ऐसा वक्त आएगा कि मुझे जीवित महापुरुष मिलेंगे? जिस तरह गुरु नानकदेव जी हैं। मेरा जन्म सिख परिवार में हुआ था। मैं गुरु नानकदेव जी की ही बानी सुनता था और उन पर ही श्रद्धा रखता था। जब गुरु सिख की कहानी सुनता तो मेरे दिल में तड़प उठती क्या ऐसा वक्त आएगा, मुझे ऐसे गुरु मिलेंगे? वे कैसे शिष्य थे जिन्हें गुरु नानकदेव जी जैसे गुरु मिले? मेरी बचपन से की गई फरियादें वक्त आने पर रंग लाई। परमपिता कृपाल को दया आई आप मुझे खुद आकर मिले।

मैंने आपकी याद में, तड़प में काफी समय लगाया था। आपने इस गरीब आत्मा पर दया की। यहाँ आपके मुबारक चरण पड़े हैं। आपने दया करके कहा था, ''जो प्रेमी यहाँ रहकर दस दिन भजन-अभ्यास करें वही इस गुफा के दर्शन कर सकते हैं।''

दयालु परमपिता कृपाल सिंह जी ने भी अपने गाँव में उस कमरे को बंद रखा था जहाँ महाराज सावन सिंह जी के चरण पड़े थे। जब खास भजन-सिमरन के समागम होते थे उस वक्त ही प्रेमी उस कमरे के दर्शन कर सकते थे। यहाँ भी वैसे ही उनके ही हुक्म के मुताबिक किया जा रहा है।

आम इन्सान जो एक या दो दिन के लिए आया है, चाहे वह कितना भी प्यारा और कितना भी अच्छा है उसके लिए यह दरवाज़ा नहीं खोला जाता। जो प्रेमी यहाँ दस दिन भजन-अभ्यास करते हैं वही इस जगह के दर्शन कर सकते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप लोग यहाँ से अच्छी प्रेरणा लेकर जाएं कि किस तरह किसी आत्मा ने इस जगह बैठकर मन के साथ संघर्ष किया और अपने गुरु की दया प्राप्त की। मन के साथ संघर्ष करना सूरमे इन्सान का ही काम है।

***

47

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

प्यार का सागर

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 1 मार्च 1986

आप हमेशा इस जगह के बारे में थोड़ा बहुत सन्तबानी मैगज़ीन में पढ़ते रहते हैं। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि रेगिस्तान में एक प्यासी आत्मा की खातिर वह प्यार का सागर, अमृत का सागर उछलता हुआ यहाँ पहुँचा। उसने इस प्यासी और गरीब आत्मा को नाम का इतना अमृत पिलाया कि अपनी मस्ती में मस्त कर दिया, दुनिया को भुला दिया।

उस दयालु दया के सागर ने बाहर से आँखें बंद कर दी और अंदर की तरफ़ आँखें खोल दी और अपने घर की तरफ़, अपनी याद में लगा दिया। ऐसा कोई लफ्ज़ नहीं मैं जिसके साथ उस दया के सागर का, दया के भंडार का धन्यवाद कर सकूँ। सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर ही होता है बाहर तो लफ्ज़ ही है। सच्चा धन्यवाद उनके हुक्म के अनुसार चलना ही है। सन्तमत में वही कामयाब होता है जो गुरु की आज्ञा का पालन करे।

मैंने यह जगह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं बनाई। मुझे बचपन से ही दुनिया से अलग रहने की आदत थी। मैं बचपन से जहाँ पर भी बैठा हूँ ज़मीन के नीचे मकान बनाकर ही बैठा हूँ। यह खास जगह उस दयालु कृपाल ने खुद ही अपने हुक्म से बनवाई। आपने अनेकों दफा इस जगह पर अपने मुबारक़ चरण डाले। उन चरणों के लिए देवी–देवता भी लोचते हैं।

ऐसा कौन है जो उन चरणों के लिए नहीं लोचता? लोगों ने बहुत कोशिशें की लेकिन वे चरण भाग्यवान् शिष्य के अंदर ही प्रकट होते हैं। जिसके ऊँचे भाग्य हैं वही इन चरणों तक पहुँचता है।

महाराज सावन सिंह जी ने दया करके बलूचिस्तानी मस्ताना जी को भी एक ऐसी ही गुफा बनवाकर दी थी। महाराज सावन ने मस्ताना से कहा, ''तू कहे तो तुझे बलूचिस्तान का पीर बना देते हैं।'' मस्ताना जी ने कहा, ''मुझे तो सिर्फ आप ही चाहिए, मुझे तो सावन की ज़रूरत है; मैंने पीर बनकर क्या लेना है।'' आखिर महाराज सावन ने कहा, ''तुझे बागड़ का बादशाह बना देते है।''

इस राजस्थान के इलाके में जहाँ आज हम बैठे हैं इस जगह जाट लोग रहते हैं, इस इलाके को बागड़ का देश भी कहते हैं। उस वक्त महाराज सावन की इस बात को कोई सच नहीं मानता था जबकि यह बात हज़ारों लोगों के सामने कही गई थी। उस समय लोगों ने कहा कि महाराज सावन इसे बादशाह कैसे बना सकते हैं? ऐसे कम ही इन्सान होते हैं जो गुरु के वचनों पर ऐतबार करते हैं।

जब महाराज सावन सिंह जी ने मस्ताना जी को गुफा बनाकर दी तब महाराज सावन ने कहा, ''मैंने तुझे बागड़ का बादशाह बना दिया है। जो लोग नहीं मान रहे ये सब पछताएंगे। तुझे मेरे अन्त समय में अंतिम क्रिया में भी आने की ज़रूरत नहीं।''

यह एक सच्चाई है कि मस्ताना जी ने दिन को भी माया बाँटी और रात को भी माया बाँटी। हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट को कोई भेद नहीं मिला कि यह माया कहाँ से लेकर आता है, कैसे माया बाँट रहा है? कई दफा उनके घर में जाकर तलाशियाँ ली गई लेकिन उनके पास केवल ईंटें, पत्थर और मिट्टी के टूटे हुए बर्तन ही मिलते रहे।

मस्ताना जी के दिल में हुज़ूर कृपाल सिंह जी के लिए बहुत इज़्ज़त थी। मस्ताना जी महाराज सावन सिंह जी को 'ख़ुदा' और कृपाल सिंह जी को 'खुदा का बेटा' कहते थे। जब मैंने मस्ताना जी से पूछा कि मुझे महाराज सावन सिंह जी और बाबा बिशनदास जी ने कहा था कि तुझे नाम देने वाली ताकत खुद ही चलकर तेरे पास आएगी, क्या वह ताकत आप हैं? मस्ताना जी ने इस गरीब से कहा, ''वह मुझसे बड़ी ताकत है। तोपें चल रही हों अगर वह हाथ खड़ा कर दे तो तोपें रुक जाएंगी। जिसने नाम की कमाई किए हुए की ताकत देखनी है तो उनको जाकर देखो।''

जब हुज़ूर ने अपनी दया में आकर इस गरीब आत्मा को कुछ हुक्म दिए, हिदायतें दी; वर दिए उस वक्त जो लोग पास में खड़े थे वे मान नहीं रहे थे। उन लोगों ने कहा, ''भई, यह ज़मीन के अंदर से तो बाहर नहीं निकलता अमेरिकन लोग इसके पास कैसे आएंगे? क्या कभी आदमियों में से भी महक आई है? महक तो फूलों में से आती है। इतना कुछ कैसे हो सकता है?'' कोई मानने के लिए तैयार नहीं था।

जब सही वक्त आया, उस महापुरुष ने अपनी मुबारक़ ज़ुबान से जो लफ्ज़ निकाले थे वे पूरे होने लगे तो सबको चिंता हुई कि यह क्या होने लगा है? मैं अपने धन्य भाग्य समझता हूँ कि मैं अपने गुरु का हुक्म मान सका, उनकी आज्ञा का पालन कर सका, नहीं तो मन अंदर ही बैठा है दीवार बनकर खड़ा हो जाता है। यह मन हमेशा ही इन्सान को बे–ऐतबारा (अविश्वासी) बनाता है।

मैं उस दिन को ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुशकिस्मती का दिन गिनता हूँ जब परमात्मा कृपाल खुद चलकर मेरे घर आए, उन्होंने खुद ही दया की। हुज़ूर कहा करते थे, ''अन्धे की ताकत नहीं कि सुजाखे

को पकड़ सके, जब तक सुजाखा खुद अपनी अंगुली अंधे के हाथों में न पकड़ा दे, आवाज़ मारे या अपने पास बुलाए तभी अंधा सुजाखे से मिल सकता है।'' मैं तो एक अन्धा सा जीव था। मैं उन्हें कैसे पहचान सकता था? मेरे दिल में बचपन से बहुत भारी तड़प थी कि कोई ऐसा गुरु मिले जिनका हम किताबों में ज़िक्र सुनते हैं।

गुरु दया का सागर होता है, ऐसा कोई दया का सागर गुरु मिल जाए! मैं यह भी कहता था कि वे कैसे लोग हैं जो गुरु के कहे अनुसार नहीं चलते, गुरु से बेमुख हो जाते हैं। भई, हमें गुरु मिल जाए वे जो कहेंगे हम वही करेंगे। बचपन से मेरे अंदर यह लगन थी।

आपको पता है कि सेवक अपनी निन्दा सुन लेता है निरादर भी सह लेता है लेकिन अपने गुरु की निन्दा, गुरु का निरादर नहीं सह सकता। खास करके पवित्र आत्मा का तो मरण ही हो जाता है। एक फिरके के लोगों ने महाराज सावन सिंह जी के खिलाफ किताब ही लिख दी कि इन्होंने संगत के पैसे से ज़मीनें खरीदी हैं और लोगों से पैसे लेकर लंगर चलाते हैं। यह पूर्ण गुरु हैं? सन्तों को तो ऐसी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। आपने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया खामोश रहे। कई प्रेमियों ने आपसे कहा कि आप भी कुछ न कुछ बोलें। महाराज सावन सिंह जी ने कहा,''देखो भई, चुप रहने में ही सन्तों की जीत होती है।

इस बात का बलूचिस्तानी मस्ताना के दिमाग पर बहुत असर हुआ। मस्ताना जी लोगों को बता देना चाहते थे कि महाराज सावन को आप यह कहते है कि वह संगत से पैसे लेकर ज़मीनें खरीदते हैं, लंगर चलाते हैं। आप देख लो मैं तो सावन शाह के कुत्ते जैसा भी नहीं, कुत्ते भी मुझसे अच्छे हैं। मस्ताना जी दिन-रात माया बाँट रहे थे। जो आदमी 'धन्य सावन शाह' कहता मस्ताना जी उसके गले में नोटो का हार डाल देते थे।

मस्ताना जी उस फिरके के लोगों को बता देना चाहते थे कि जो अपने आपको सावन सिंह जी का एक कुत्ता भी नहीं कह सकता वह कितनी माया का मालिक है। उसके पास माया का कोई अंत नहीं तो महाराज सावन सिंह जी क्या चीज हैं? आप लोगों ने महाराज सावन सिंह जी को नहीं पहचाना।

मैं महाराज सावन सिंह जी के चरणों में ज़्यादा से ज़्यादा गया हूँ। मस्ताना जी की संगत ने महाराज सावन सिंह जी को नहीं देखा था। मैं जब मस्ताना जी के पास जाता तो वह मुझे स्टेज के पास खड़ा करके कहते कि हाँ भई, सारी संगत को बताओ कि सावन सिंह जी कैसे थे? महाराज सावन सिंह जी जैसे थे मैं वैसा ही बयान करता,''आप सुंदर थे, प्यारे थे और हमें आकर्षित करते थे। आप जब बोलते थे उस वक्त जानवर भी मौन होकर खड़े हो जाते थे। चाँद और सूरज आपके हुक्म में थे। आप सूरज को छिपा देते थे, बादल भी आपसे शरमाते थे। आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती।''

आप लोग यह आशा लेकर गुफा में जाएं कि हमारे गुरुदेव ने जो शिक्षा दी है हम उस पर ज़रूर अमल करेंगे अपनी ज़िंदगी को पवित्र बनाएंगे, सिमरन करेंगे ताकि वह दया का सागर हमारे ऊपर अपनी दया करके हमें रुहानियत से भरपूर कर दे।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि यह जगह आम लोगों के आने-जाने के लिए नहीं है। यह दयालु कृपाल का ही हुक्म था कि जो लोग यहाँ आठ या दस दिन अभ्यास करें, वही इस पवित्र गुफा के दर्शन करने के हकदार हैं। आप कहा करते थे,''यहाँ किसी ने सोना नहीं, यहाँ किसी किस्म का बुरा ख्याल नहीं करना; यह मालिक की जगह है मालिक को ही सोचना है।

***

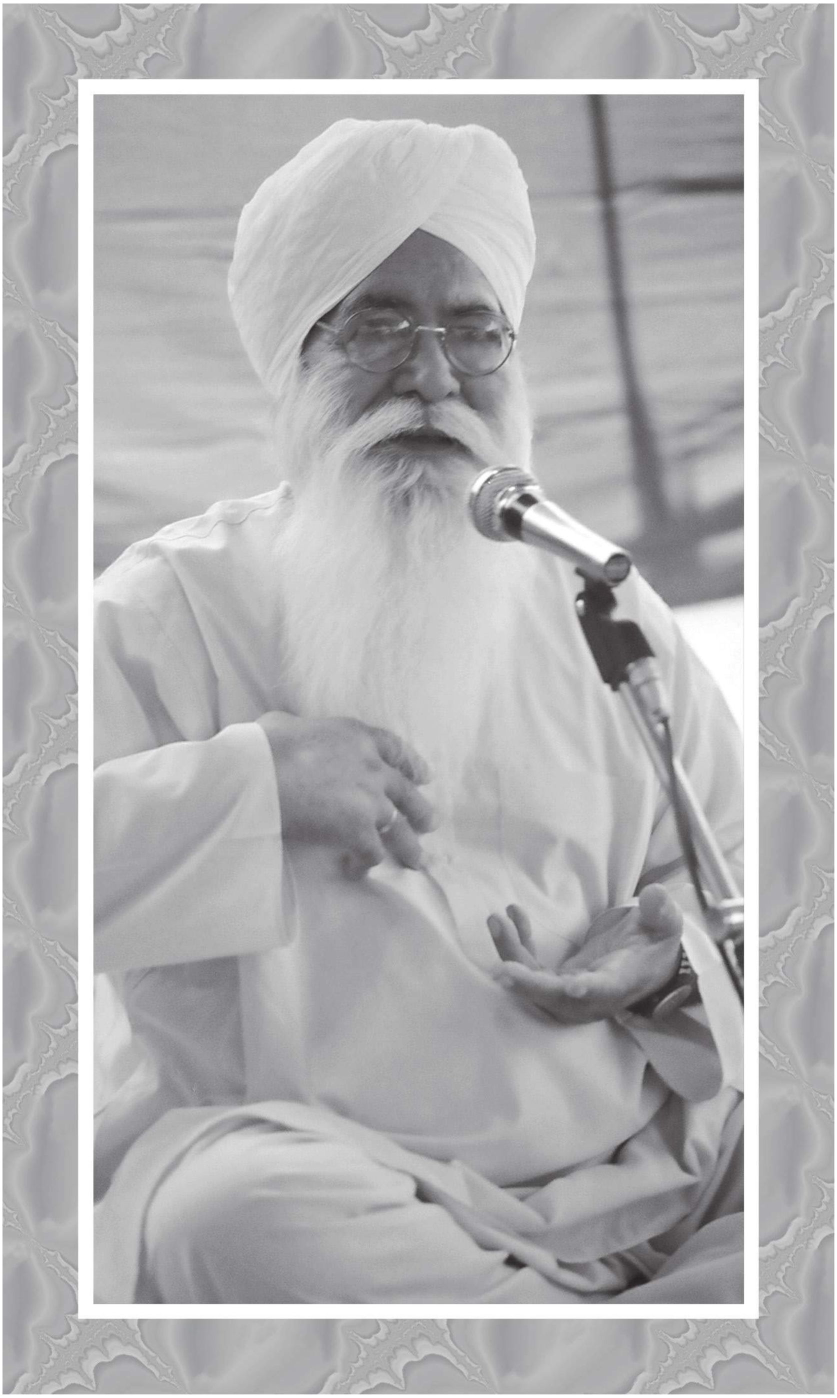

48

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा बीमारी के बाद ठीक होकर एक खास संदेश

दिल से दिल की राह

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 5 अक्टूबर 1986

हाँ भई, मैंने इस गुफा के बारे में काफी कुछ बोला है, आप लोगों ने मैगज़ीन में भी पढ़ा है। आपको मालूम ही है कि आज मैंने ज़्यादा नहीं बोलना क्योंकि यह मेरी सेहत के लिए ठीक नहीं। मैं आशा करता हूँ कि आप सब इस बात को समझेंगे।

इस गरीब आत्मा ने अपने गुरुदेव के आगे सच्चे दिल से प्रार्थना की थी, ''मेरा पर्दा रखना, मैं दुनियाँ के सब सहारे छोड़कर एक तेरे ही सहारे इस गुफा के अंदर जा रहा हूँ। वह वक्त बड़ा सुहावना था गुरु बड़े दयालु थे। आपने प्यार से मेरी आँखों पर अपना हाथ रखा और आपने खुद ही बाहर से मेरी आँखें बंद की और अंदर की तरफ़ खोली।''

आप दिलों की जानते थे। जब आपका दिल करता था आप खुद ही यहाँ चले आते थे। गुरु बेइंसाफ नहीं होते, वे जानते हैं कि कौन सच्चे दिल से मेरी याद में बैठा है? उनके लिए शिष्य दूर है या नजदीक इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता।

जिस दिन जीव को नाम मिलता है इसे सचखंड का हकदार बनाया जाता है। अब यह जीव पर निर्भर है कि यह कितनी जल्दी वहाँ पहुँचता है और गुरु के स्वागत से फायदा उठाता है।

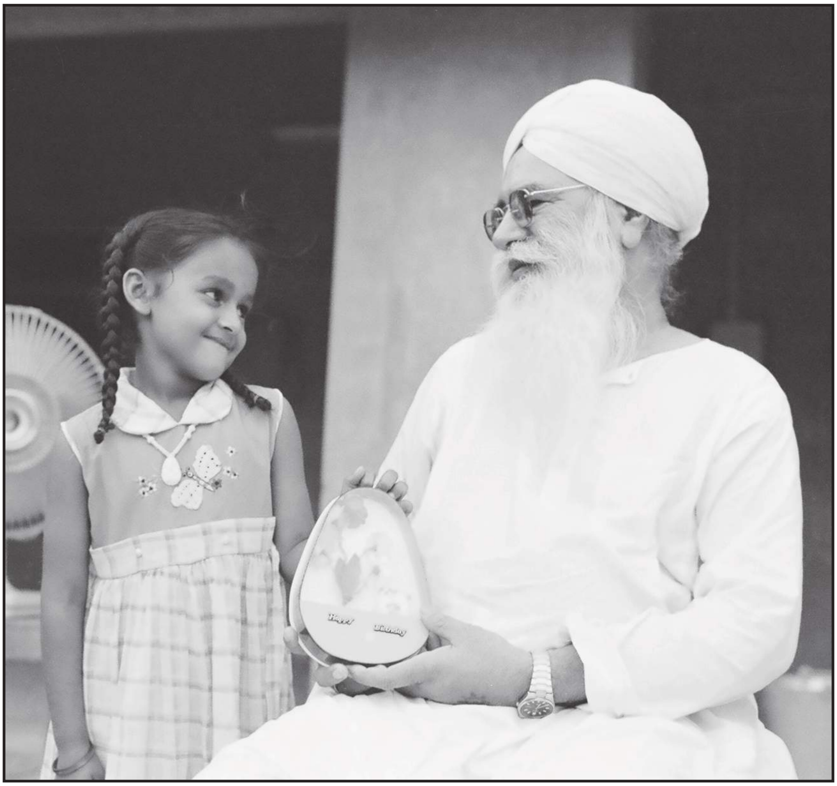

हर सतसंगी के लिए एक शर्त रखी जाती है जिसे सन्त हमेशा सतसंग में बताते रहते हैं कि अगर आप अभ्यास नहीं कर सकते तो सन्तों पर श्रद्धा और भरोसा रखें। कम से कम उनसे प्यार तो करें और वे जो कहते हैं उसे करें। गुरु को भूलकर भी इन्सान न समझें। गुरु इन्सान बनकर ही हम रोगियों को छुड़वाने के लिए इस संसार में आते हैं।

आशा करते हैं कि आप भी इस जगह से यही प्रेरणा लेकर जाएं कि हम भी गुरु का हुक्म मान सकें और सन्तों से सच्चा प्यार कर सकें। दिल से दिल की राह बना सकें।

***

49

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

लम्बी और कठिन यात्रा

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 5 नवम्बर 1986

हाँ भई! मैं हर ग्रुप में हमेशा ही आपको दो–तीन बातें याद करने के लिए प्रेरित करता हूँ कि अपने मन को शान्त रखना है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना। अभ्यास में बैठकर मन को दुनिया की तरफ़ भटकने नहीं देना और मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। सतसंगी इन बातों को सदा याद रखकर चलें तो हमारा दुनियावी फायदा भी होगा और परमार्थ में तो फायदा ही फायदा है।

जो भी परम सन्त संसार में आए चाहे उनका किसी भी जाति से सम्बन्ध था चाहे वे किसी भी देश में पैदा हुए उन्होंने इस सच्चाई को बहुत स्पष्ट खोलकर हमारे सामने रखा कि दो ताकतें अभूल होती है। एक परमात्मा और दूसरा उसके भेजे हुए सन्त–सतगुरु।

सतगुरु अपने सेवकों को सुना–सुनाया किताबी ज्ञान नहीं देते बल्कि उन्होंने अपनी ज़िंदगी में जो कमाया है, आँखों से देखा है वे हमें वही बताते हैं। सब सन्त इस बात पर सहमत हैं।

बुल्लेशाह अपनी बानी में लिखते हैं कि मौला आदमी बन आया। जब अजायब का अंदर दरवाज़ा खोला गया उसने भी यही कहा, ''भगवान इन्सान के रूप में आया है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी यही कहा:

सतगुरु को मानुख का रूप न जान।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का ज़्यादा से ज़्यादा सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबा सावन सिंह जी को अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के साथ इतना प्यार था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, वह एक अथाह प्यार था। समुंद्र की तरह जब महाराज सावन के अंदर अपने गुरु का प्यार उफनता था तो वह सभी सीमाएँ तोड़ देता था, आपकी आँखों से पानी बहना शुरू हो जाता था। कोई ऐसी जगह नहीं थी जहाँ पर आप अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी को नहीं देखते थे।

बाबा जयमल सिंह जी ने सावन सिंह से हमेशा यही कहा, ''जब इस जीव को नाम मिल जाता है यह सचखंड का हकदार हो जाता है। एक शर्त है कि जीव भूलकर सपने में भी सतगुरु को इन्सान न समझे बल्कि उसे इन्सानों को जेल से निकालने वाला दाता समझे, खुद मालिक ही जीव को लेने के लिए आया है समझे।

महाराज कृपाल को भजन सुनने का बहुत शौक था। मैं आपके आगे प्यार से भजन बोलता क्योंकि मेरे अंदर गुरु का वैराग्य था। जब वैरागी आत्मा गुरु के आगे भजन बोलती है तो कई बार ज़ुबान बंद भी हो जाती है, आँखों से पानी आता है लेकिन जब वह समुंद्र की तरह उछलता है तो उसकी कोई सीमा नहीं होती। जब विरह भरे शब्द बाहर आते उस समय हुज़ूर की आँखों से अपने आप ही पानी बहने लगता था। आपका दिल भर आता था, हुज़ूर सावन सिंह जी की याद ताज़ा हो जाती थी।

मुझे लोगों ने काफी प्रेरित किया कि आप आश्रम किसी शहर के पास बनाएं। अगर आपमें हिम्मत नहीं तो हम आश्रम बनवा देंगे आपको आने की ज़रूरत नहीं। ग्रुप में बहुत से प्रेमी आते हैं जो इस यात्रा का ज़िक्र करते हैं कि यह काफी लम्बी और कठिन यात्रा है।

हम दिन–रात जिसका यश गाने में लगे हुए हैं। जिन्हें हम अपनी आत्मा का परमात्मा समझते हैं उन्होंने भी अपनी बीमारी के दिनों में इसी रास्ते पर सफ़र किया है।

आपके यहाँ आने से कई दिन पहले हम तैयारी करने में लग जाते हैं। आपको यह भी मालूम है कि यहाँ पहुँचते ही आपको सारी सहूलियतें मिलेंगी लेकिन उस आत्मा के परमात्मा कृपाल के लिए तो यहाँ कोई सहूलियत नहीं थी। यह भी मालूम नहीं था कि वह किस हालत में बैठा मिलेगा लेकिन उन्हें इतना ज़रूर मालूम था कि मैंने बिठाया है वह बाहर नहीं जाएगा।

आप सोचकर देखें, हमारे गुरुदेव ने जिस रास्ते पर चलने में झिझक न की हो; वे कभी नहीं सोचते थे कि मैंने यहाँ आकर आराम करना है, अपना काम किया और लौट गए लेकिन हमारी कितनी–कितनी शिकायतें हैं।

मैं आपको तीसरे तिल के बारे में बताया करता हूँ कि यह तीसरा तिल हमारे असली घर का रास्ता है, हमारी शुरुआत ही यहाँ से होती है। सतसंगी को सुबह प्रेम–प्यार से उठना चाहिए। दिन में अपना काम करें। रात भर सोकर सुबह तीन बजे उठें, पेट को खाली करें और अपने भजन–अभ्यास में बैठ जाएं। दोनों आँखों के थोड़ा सा ऊपर भौहों के बीच में तीसरा तिल है। आप इस जगह लगातार दो से ढ़ाई घंटे सिमरन करें, तीसरे तिल पर पहुँचें।

तीसरे तिल को ज्योत का मंडल और ज्योत निरंजन भी कहते हैं। मुसलमान इसे अल्लाह कहते हैं, हिन्दु इसे ईश्वर और परमात्मा कहते हैं। गीता में कृष्ण भगवान ने अर्जुन को इसी जगह पर विराट स्वरूप दिखाया था। यह सूक्ष्म देश का हेडक्वार्टर है, सब इंतजाम इस जगह से ही होते हैं।

बेशक अब हमें शब्द सुनाई देता है थोड़ा–बहुत रस भी आता है लेकिन शब्द हमें खींचता नहीं। जितने भी मंडल हैं वे सब हमने शब्द के द्वारा ही पार करने हैं। जब हम तीसरे तिल पर पहुँचते हैं फिर अपने–आप जो शब्द सचखंड से उठ रहा है वह हमारे अंदर आना शुरू हो जाता है। हम उस शब्द को पकड़कर ब्रह्म के मंडल में चले जाते हैं और त्रिकुटी के शिखर पर पहुँच जाते हैं, यह कारण मंडल का देश है। आगे तीसरे मंडल का शब्द अपने आप ही आना शुरू हो जाता है।

बेशक शब्द एक ही है लेकिन अलग–अलग मंडलों में उसकी अलग–अलग आवाज़ है। आत्मा तीसरे मंडल का शब्द पकड़कर आगे पहुँचती है। मन को नीचे की ओर खींचने वाली ज़ंज़ीरें पीछे रह जाती हैं और नीचे खींचने वाले मन के सब जाल टूट जाते हैं, आत्मा आज़ाद हो जाती है। आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतर जाते हैं। आत्मा को अपने घर का ज्ञान हो जाता है फिर अपने आप ही समझ आ जाती है।

फिर आत्मा तेज़ी से चौथे मंडल की ओर बढ़ती है जिसे हम भँवर गुफा कहते हैं। वहाँ जाकर आत्मा को पता चलता है कि जो गुण परमात्मा के हैं वे ही मेरे अंदर हैं फर्क सिर्फ विछोड़े का है। उसे सचखंड का दरवाजा भी कहते हैं। वहाँ पहुँचकर आत्मा के अंदर बेहद मस्ती आ जाती है फिर यह आगे जाने की तैयारी करती है।

जब आत्मा सचखंड पहुँचती है तब इसे अपने आपका ज्ञान हो जाता है और सतगुरु पर पूरा भरोसा आ जाता है। फिर आत्मा डोलती नहीं चाहे सुख आए चाहे दुख आए यह उसे परमात्मा का भाणा समझकर बर्दाश्त करती है। फिर पता चलता है कि मैं भी पानी हूँ परमात्मा भी पानी है फर्क विछोड़े का ही था। मैं बूंद हूँ

यह समुंद्र है। जब मिल गए पानी–पानी हो गया। इसी तरह आत्मा तब तक ही खुद को अलग समझती है जब तक यह परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। सन्त–सतगुरु इसी देश से आते हैं सतपुरूष का अवतार होते हैं और आत्मा जाकर सतपुरूष में मिल जाती है। दया से बंधी वह आत्मा परमात्मा रूप बन जाती है।

वह बड़ा ही देखने लायक नूरी प्रकाश का देश है। वहाँ मौत–पैदाईश नहीं। वहाँ किसी के मन में कोई छल–कपट नहीं। वहाँ पहुँचने वाले के दिल में दया उठती है कि मेरी बाकी की बहनें आत्माएं मन के जाल में फँसकर दुखी हो रही हैं।

वह सतगुरु नूरी प्रकाश वाला देश छोड़कर मल–मूत्र की देह धारण करके इन आत्माओं के लिए संसार में आते हैं। जो आत्माएं उनकी आज्ञा का पालन करती हैं, वो वापिस अपने असली घर सचखंड पहुँचकर अपने असली रूप को पहचानती हैं। गुरु नानक साहब कहते हैं:

सतपुरूष जिन जाणया सतगुरु तिसका नाँव।
तिसके संग सिख उभरे नानक हरि गुण गाँव।।

ऐसे महात्मा इस धरती पर आकर जीवों को नाम देते हैं, अपना प्यार बख्शते हैं। अगर हम सच्चे दिल से ईमानदारी से उनके साथ प्यार–मौहब्बत करें और वे जो कुछ बताते हैं हम उस पर चलें तो हम अपनी इसी ज़िंदगी में कामयाब हो सकते हैं। सुबह दो–ढ़ाई घंटे भजन–अभ्यास में लगाएं, बाकी सारा दिन अपना काम करें।

***

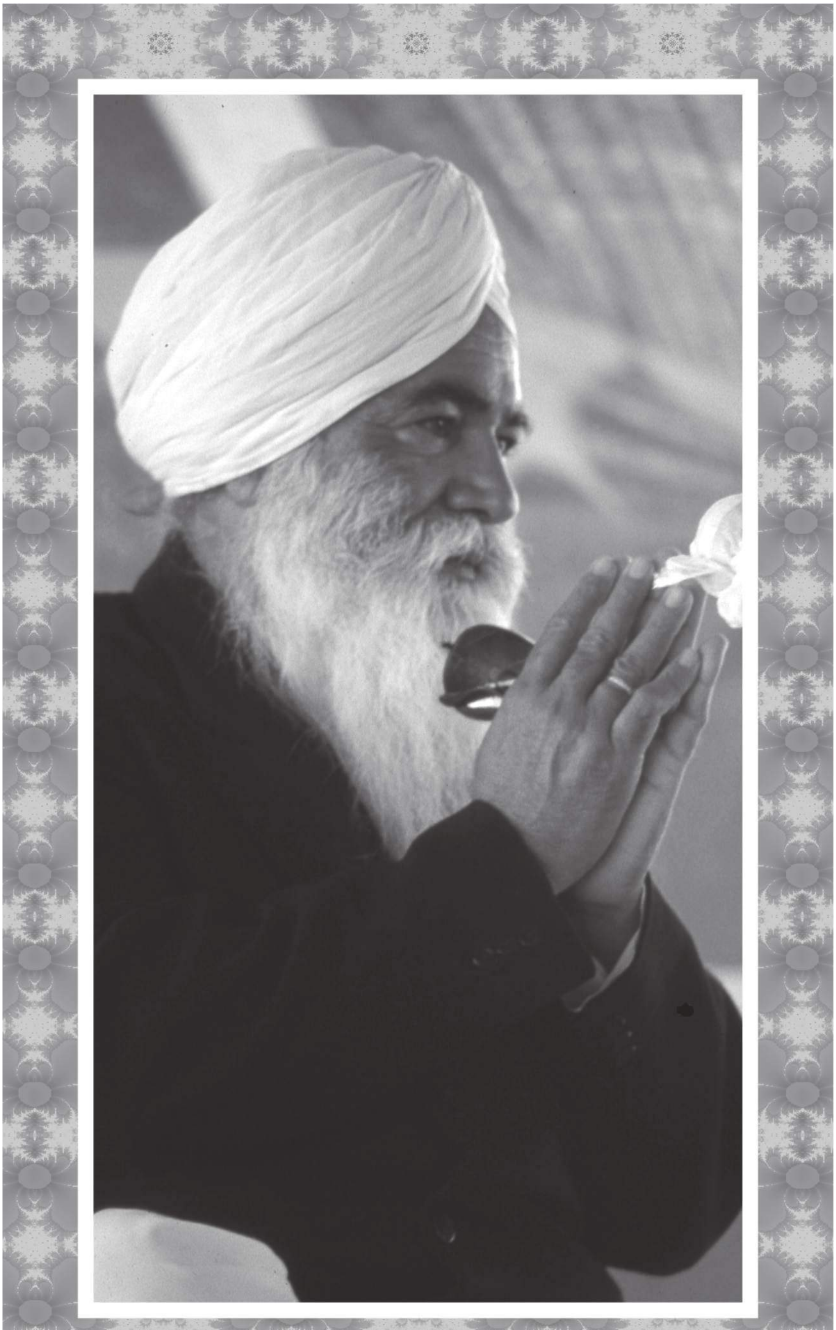

50

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

नाम की खुशबू

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 6 दिसम्बर 1986

हाँ भई! इस जगह के बारे में आपने काफी कुछ पढ़ा और सुना है। किसी भी जगह की खास महानता इसलिए होती है कि वहाँ पर किसी पवित्र आत्मा ने अपने गुरुदेव का सहारा लेकर उनकी दया से उनका हुक्म मानकर वह महान काम किया होता है जिसके लिए चौरासी लाख योनियाँ भुगतने के बाद इन्सान का जामा मिलता है।

हम इन्सान की योनि का फायदा तभी उठा सकते हैं अगर हम इसमें बैठकर प्रभु की भक्ति करें। प्रभु की भक्ति हम किसी और योनि में नहीं कर सकते। हम प्रभु की भक्ति, प्रभु से मिलाप इन्सान की योनि में बैठकर ही कर सकते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उस मालिक के प्यारे के अच्छे भाग्य होते हैं जो गुरु के चरणों में अपना ध्यान लगा लेते हैं, सच्चा प्यार प्राप्त कर लेते हैं।''

वह बहुत सुहावना वक्त था जब मेरे गुरुदेव ने दया करके मुझे यहाँ अंदर बिठाया। यह जगह आपके हुक्म से ही बनाई गई और मैं आपके हुक्म से ही अंदर बैठा। आपकी दया ही थी जब आपने आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''अंदर देखना है, मैं ही तेरे पास आऊँगा तुझे मेरे पीछे घूमने की ज़रूरत नहीं।''

दुनियावी तौर पर मुझे नाम देने से पहले भी आप खुद ही आकर मिले थे, यह आपकी ही दया थी। आपने पच्चीस साल संदेश दिया कि भई, यह तो लेने वाले की मर्ज़ी पर निर्भर होता है देने वाले का क्या कसूर है? यह तो हमारी अपनी-अपनी भावना अपने-अपने बर्तन और अपनी नज़र का सवाल होता है। जब इस गरीब आत्मा को उस शहंशाह के दर्शन हुए उस वक्त इस आत्मा को यह बात समझ आ गई थी कि तुझे देने वाला आ गया है।

बचपन से मेरे दिल में यह था कि कोई ऐसा शाह मिले जो परमात्मा का बनाया हो, नाम का खजाँची हो; नाम के कारण शाह हो सिर्फ दुनिया का ही शाह न हो। मुझे बचपन से ही गुरुबानी के साथ प्यार था। मेरे दिल में बचपन से ही सब सन्तों, भक्तों, गुरुओं की बानी पढ़ने का शौक था।

कबीर साहब ने दुनिया के शाह, बादशाह और धनी का निर्णय करके बताया है कि जो दुनिया में ज़्यादा धन पदार्थ रखता है अगर उसके घर गरीब चला जाए तो वह पीठ करके बैठ जाता है कि यह कुछ माँगेगा! अगर गरीब के घर धनी आदमी चला जाए तो वह गरीब उसका आदर करेगा उसे बिठाएगा। कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेयो, प्रभु की कला को प्रभु ही जानता है। हम इस संसार में अपने कर्मों के कारण ही गरीब या अमीर बनकर आते हैं।

कहत कबीर निर्धन है सोई जाके हिरदे नाम ना होई।

सच्चाई यह है वही आदमी निर्धन है जिसके पास नाम नहीं।

जिसके पल्ले नाम है सोई शहनशाह।

परसों एक भजन बोला था उसमें बताया है:

सावन शाह तों लैके भिच्छिया झोलियाँ भरदा खाली।

महाराज सावन सिंह जी नाम की भीख देने वाले, नाम के शाह थे। महाराज कृपाल ने आपसे नाम की भिक्षा माँगी दुनिया की नहीं। वह भिक्षा इतनी बड़ी थी कि जिसने जो कुछ भी माँगा वह खाली झोलियाँ देखकर भर गए लेकिन हमारी झोली तो दुनिया के सामान से पहले ही भरी हुई है तो भरने वाला कहाँ भरे?

जिसने दुनिया की वस्तुएँ माँगी उन्हें दुनिया दे दी। जिस आशिक ने उनका दीदार माँगा उसे दीदार मिल गया। मैं बताया करता हूँ कि मैंने अपने गुरुदेव से कभी दुनिया की कोई चीज़ नहीं माँगी। मैं बचपन से सिर्फ उन्हें ही माँगता रहा वह मुझे मिल गए। मैंने कभी आपसे यह नहीं कहा कि आप मुझे दुनिया के सारे सुख दें, मुझे बुखार न चढ़ने देना या मुझे यह तकलीफ न होने देना। अब यह आपकी मर्ज़ी है दुःखी रखें सुखी रखें। जब हमने उन्हें सब कुछ सौंप ही दिया है तो अब उन्हें ही हमारी फिक्र है।

मैंने अपने गुरु को माँगा था वह मुझे मिल गए। मैं पूरे संसार में कहा करता हूँ कि देखो भई प्यारेयो, मैंने अपने गुरु से दुनिया की कोई चीज़ नहीं माँगी। मुझे जिस चीज की ज़रूरत थी वह आपने मुझे दे दी। मैं बताया करता हूँ अगर हम गुरु से गुरु को माँगेंगे तो गुरु सारी बरकतें लेकर हमारे अंदर बैठ जाएंगे। वे ज़रूरत के हिसाब से अपने आप ही ज़रूरत पूरी करते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप यहाँ से यही प्रेरणा लेकर जाएंगे कि हमारे ऊँचे भाग्य थे हम परमात्मा के चुनाव में आए। परमात्मा और गुरु ने संसार में शान्ति फैलाने का बीड़ा उठाया होता है। हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम लोगों को अपने अंदर से नाम की खुशबू ही दें। अगर हर सतसंगी सौ–सौ इन्सानों का भी सुधार करे तो एक देश में कितने लोगों का सुधार हो सकता है।

प्यारेयो, मैंने देखा है कि पहले हिन्दुस्तान में लोग बीड़ियाँ नहीं पीते थे। शराब नहीं पीते थे यहाँ तक की चाय भी नहीं पीते थे। जब से ऐसी चीज़ें बनाने वाली कंपनियों को आज़ादी मिली तो उन्होंने गांव-गांव जाकर लोगों को चाय बनाकर पिलाई। मुफ्त में बीड़ियाँ बाँटी और शराब बनाने वाली कम्पनियों ने मुफ्त में शराब बाँटी। किस तरह इन लोगों ने इस तरह का प्रचार किया? बुरी चीज़ो को हर जगह फैला दिया। आप देख लें, अब ये चीज़ें कितनी फैल चुकी हैं।

इसी तरह अगर सतसंगी अपने में से नाम की खुशबू दूसरों तक पहुँचाए कि भई प्यारेया, मेरा इस तरह फायदा हुआ है तेरी समझ में आता है तो तू भी फायदा उठा सकता है। सोचकर देखें! दुनिया का कितना सुधार हो सकता है?

***

51

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

खुशी की कीमत

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 3 जनवरी 1987

मुझे बड़ी खुशी है कि मैं यहाँ गुफा के बारे में जो कुछ बोलता हूँ उसे रसल पर्किन्स हमेशा ही सन्तबानी मैगज़ीन में आपकी जानकारी के लिए लिखते रहते हैं। रसल बहुत मेहनत करते हैं। आपका भी फर्ज़ बनता है कि सन्तबानी मैगज़ीन ज़रूर पढ़ें। अगर आप ग्रुप में नहीं आ सकें तो भी मैगजीन पढ़ने से आपको ज़रूर अच्छी जानकारी और भजन के लिए उत्साह मिलेगा।

रसल बहुत सारे सवाल–जवाब भी मैगज़ीन में छापते रहते हैं। काफी छप भी चुके हैं। आप सन्तबानी मैगज़ीन को हमेशा ध्यान से पढ़ें। अगर आपके दिल में कोई सवाल है तो उसका जवाब आपको मैगज़ीन में मिल सकता है, आप मैगजीन से फायदा उठा सकते हैं।

एक प्रेमी ने इंटरव्यू में इस गुफा के बारे में पूछा कि यह गुफा क्यों बनाई गई? तो मैंने उसे वहाँ जवाब नहीं दिया था, जिससे पता चलता है अगर उस प्रेमी ने मैगज़ीन पढ़ी होती तो वह इंटरव्यू में यह सवाल न पूछता। बहुत से लोगों के दिलों में यह ख्याल होता है कि शायद गुफा बनाकर अंदर बैठने से मन वश में आ जाएगा; ऐसा नहीं होता भजन–अभ्यास करने से ही मन वश मे आता है। यह जगह बनाने के बहुत से कारण थे। सन्त–सतगुरु ही जानते हैं कि किससे क्या करवाना है। यह परमपिता परमात्मा कृपाल को ही पता है कि उन्होंने यह जगह क्यों बनवाई और किसलिए बनवाई?

पुराने सतसंगियों को पता है कि हुज़ूर कृपाल ने कई सम्मेलन किए। सम्मेलनों में हर व्यक्ति को निमंत्रण दिया गया। बड़े से बड़ा आदमी वहाँ पहुँचता रहा है लेकिन हर सतसंगी के अंदर भजन की बजाय यही होड़ लगी थी कि मैंने महाराज जी के साथ फ़ोटो खिंचवानी है। वहाँ कोई व्यक्ति अंदर बैठने के लिए तैयार नहीं था।

यह हुज़ूर कृपाल की दया थी कि आपने मुझे चुना और मुझसे कहा, ''देख भई, मेहनत के बगैर कुछ प्राप्त नहीं होता। तूने किसी सम्मेलन में नहीं आना। मैं खुद तेरे पास आऊंगा।'' मैं हमेशा कहा करता हूँ कि आप खुद आते रहे हैं। जिसके दरवाजे पर जानवर बंधा हुआ है उस घरवाले को जानवर का सारा फिक्र होता है।

हुज़ूर की यह सोच किसी हद तक सही थी। हुज़ूर ने खुद मुझे इसी जगह पर बताया था कि हिन्दुस्तान में बहुत सारे समाज हैं और आमतौर पर सामाजिक झगड़े होते रहते हैं। आपने बड़े-बड़े सामाजिक और धार्मिक लीडरों को इकट्ठा किया कि मैं इनके सामने सच्चाई रखूंगा ताकि ये लोग प्रभु के नाम के सूत्र में बंध जाएं। जिसके नाम पर धर्म बनाकर ये लोग लड़ते हैं, ये सब एक-दूसरे को अपना लें और परमात्मा की भक्ति करें।

मेरे गुरुदेव ने गंगानगर में भरी संगत में कहा था, ''मैंने सरकार से कहा है कि हिन्दुस्तान में जितने भी मठ है सबको बेचकर वह पैसा लोगों की भलाई में लगाया जाए। मैं चाहता हूँ कि सबसे पहले मेरे मठ की बिक्री की जाए। अफसोस! सरकार ऐसा करने के लिए तैयार नहीं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप गुफा बनाकर अंदर बैठे हैं और आपका ख्याल दुनिया में फैला हुआ है, आप दुनिया से संपर्क बनाए बैठे हैं तो आप समझ लें कि आप

पक्के दुनियादार हैं। अगर आपका मन बाहर दुनिया में बैठकर भी एकाग्र होता है, बाहर बैठे हुए भी टिकता है तो आप बाहर रहते हुए भी पूरे सन्यासी हैं। हमें सबसे पहले सारे सहारे छोड़कर गुरु के सहारे हो जाना चाहिए, गुरु पर भरोसा कर लेना चाहिए और दुनिया की मान बड़ाई से मुँह मोड़ लेना चाहिए।''

हमें पता है दुनिया की कोई भी चीज़ प्राप्त करनी हो तो मेहनत करनी पड़ती है। मेहनत के बगैर माता बच्चे को पैदा नहीं कर सकती। मेहनत के बगैर हम खान से सोना प्राप्त नहीं कर सकते अगर मोती प्राप्त करना है तो हमें गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है। हमने दुनियादारी में प्यार प्राप्त करना है तो बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इन्सान उस प्यार को प्राप्त करने के लिए क्या–क्या कुर्बानी नहीं करता?

सन्त हमें बताते है कि सुख की कीमत दुख है। जो व्यक्ति यह कहे कि मैंने दुनियादारी की किसी चीज़ को बिना मेहनत किए प्राप्त किया है तो वह एक और कर्ज़ उठा रहा होता है। महात्मा हमें बताते हैं कि परमार्थ का मसला बहुत पेचीदा है। इसमें बहुत मेहनत की ज़रूरत है क्योंकि मन इंद्रियों के साथ संघर्ष करना पड़ता है। मन को जवाब देना पड़ता है, मन एक बड़ा हठीला दुश्मन है और थोड़े किए हटने वाला नहीं है। गुरु भक्ति में पैर रखने का मतलब मन से लड़ाई मोल लेनी पड़ती है।

प्यारयो, यह बातों का विषय नहीं, करनी का विषय है। हमारे दिल कमजोर हैं और दुनिया में फंसे हुए हैं। हम उस प्यार की दौलत को बातों से पाना चाहते हैं और अभ्यास के चोर हैं। गुफा बनाने का ख्याल अच्छा है लेकिन उसमें बैठकर जो करना है वह इससे भी सौ गुना ज़्यादा ज़रूरी है।

मैं बताया करता हूँ कि दूसरी वर्ल्ड वार में मेरी उम्र ज़्यादा बड़ी नहीं थी। उस वक्त लोग बीस–बीस साल, अट्ठाईस–अट्ठाईस साल की सज़ा मंजूर कर लेते थे लेकिन लड़ाई में जाने के लिए तैयार नहीं थे, वह मौत को गले लगाने के बराबर ही था। मैंने उस वक्त लड़ाई में जाने के लिए खुशी से अपना नाम दिया। मैं यह भी कहा करता हूँ कि जब गुफा के अंदर जाने लगा तब महसूस हुआ कि जंग में जाना आसान था लेकिन गुफा में जाना उससे करोड़ों दर्जे मुश्किल था क्योंकि मन शेर बनकर आगे खड़ा हो जाता है तब पता चलता है कि मन के साथ कितना संघर्ष करना पड़ता है।

यह बात सिर्फ मैं ही नहीं कहता महाराज सावन सिंह जी ने भी यही बात कही थी, ''मन तोप के सामने खड़ा होने के लिए तैयार हो जाएगा लेकिन भजन में बैठने के लिए तैयार नहीं होगा।''

हमें पता ही है कि परमपिता परमात्मा कृपाल सिंह जी ने अभ्यास किया अमली तौर पर ज़िंदगी में कामयाब हुए। क्या आप रात को पलंग पर अच्छी रजाई में नहीं सो सकते थे? आपने रावी नदी के बर्फीले पानी में खड़े होकर अभ्यास किया।

सबसे पहले हमें बाहर भरोसा बनाने की ज़रूरत है। अगर हमारा बहिर्मुखी भरोसा पक जाता है फिर उस भरोसे को कोई नहीं तोड़ सकता। तब हमारे लिए अंदर जाना आसान हो जाता है। प्रकाश, तारे और चन्द्रमा सब कुछ हमारे अंदर है। जब हमारा मन एकाग्र हो जाता है यह सब कुछ देखता है। जब हमारा मन एकाग्र नहीं होता नीचे गिर पड़ता है तो न यह गुरु स्वरूप को देख सकता है न यह कोई प्रकाश देख सकता है और न तारे देख सकता है।

मुझे खुशी है कि आप सबने यहाँ लगातार आठ–नौ दिन सतसंग सुना। उसमें मैंने पवित्रता के बारे में काफी कुछ बोला है।

हमें हर जन्म में मन के दास बनकर नहीं रहना चाहिए कभी इसको गुलाम भी बनाना चाहिए। हमने गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना है। हमें अपने आपको सन्त-सतगुरु के हवाले कर देना चाहिए। हम बाहर से जितने पवित्र होंगे उतने ही हमारे ख्याल पवित्र होंगे। जितने ख्याल पवित्र होंगे उतना मन पवित्र होगा। जितना मन पवित्र होगा उतनी ही हमारी आत्मा ज़्यादा पवित्र होगी।

मैं संतसगियों को एक खास बात कहना चाहता हूँ जिसका सतसंग से कोई मतलब नहीं है, इसका संबंध आपके शरीर के साथ है। आज नशों की बहुत हवा चल रही है। बहुत से सतसंगी ऐसे लोगों के प्रभाव में आकर नशों का सेवन करते हैं जिससे उनके दिमाग पर बुरा असर होता है। उन्हें यह लालच दिया जाता है कि ऐसा करने से आपका मन टिक जाएगा आपको एकाग्रता प्राप्त हो जाएगी।

प्यारयो, नशा आपके दिमाग के अंदर खलबली पैदा करेगा सोचने की क्षमता कम कर देगा, शरीर को नष्ट कर देगा। कईयों का दिमाग मंद हो जाता है। नाम से ज़्यादा ऐसी कोई दवाई नहीं जो हमारे रोग को दूर करेगी। सिमरन से ज़्यादा शान्ति देने वाली कोई दवाई बाहर नहीं है। आपके पास सिमरन है आप सिमरन करें आपका दिमाग भी सही रहेगा और आपका शरीर भी सही रहेगा।

मैं आशा करता हूँ कि आप इस पवित्र यात्रा की महानता को समझेंगे। महाराज सावन सिंह जी और परमात्मा कृपाल सिंह जी ने हम पर दया करके हमें यह मौका दिया है। आप यहाँ से ज़्यादा से ज़्यादा भजन-सिमरन करने की शिक्षा लेकर जाएं। आपको यहाँ बुलाने का मकसद यही है कि आपको रोज़ाना अभ्यास करने की आदत पड़ जाए।

***

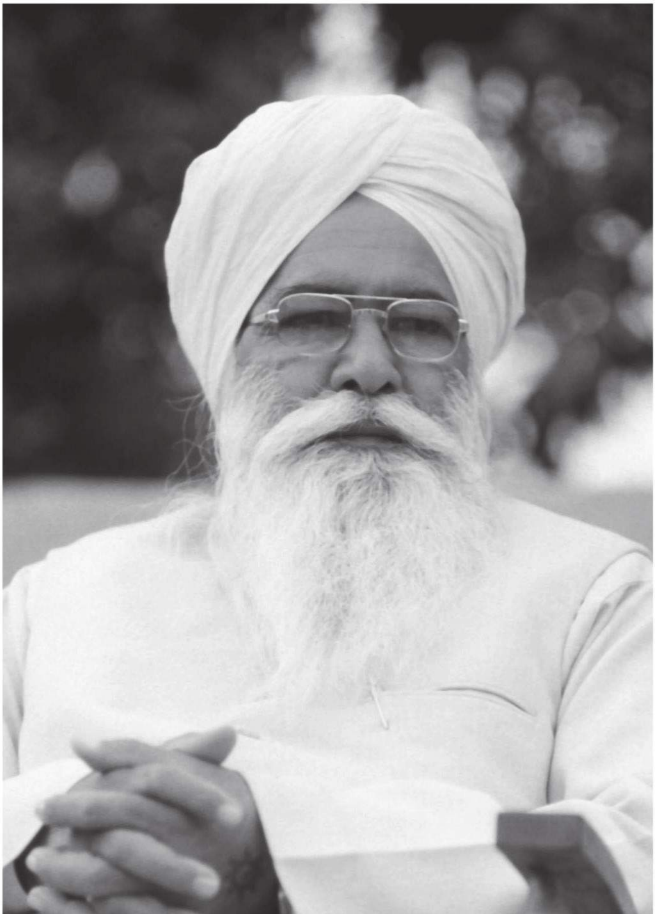

52

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

वक्त का सदुपयोग

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – फरवरी 1987

हाँ भई, मुझे बहुत खुशी है कि परमात्मा ने हम सबको दस दिन अपनी याद मनाने का काफी अच्छा मौका दिया। हमारी याद तभी सफल है अगर हम इस काम को ज़ारी रख सकें। ऐसा नहीं कि हमने यहाँ दस दिन बैठकर याद मनाई और घर जाकर बिल्कुल ही भूल जाएँ। हम परमात्मा को याद करना ज़ारी रखें तभी हम सफल हो सकते हैं। सन्त–सतगुरु ने हमें ड्यूटी दी है कि हम मन इन्द्रियों के घाट को छोड़कर तीसरे तिल पर पहुँचें, हम सफल हो जाएँगे।

प्यारेयो, हर ग्रुप में से जो लोग घर जाकर अपना अभ्यास ज़ारी रखते हैं जब फिर उन्हें आने का मौका मिलता है वे अपनी अच्छी तरक्की बताते हैं सुनकर दिल खुश होता है। बहुत प्रेमी ऊँची से ऊँची तरक्की भी बताते हैं जिसे देखकर दिल को बहुत खुशी मिलती है। जो घर जाकर अपना अभ्यास ज़ारी नहीं रखते वे जब फिर आते हैं तो वे यही बताते हैं कि हमने अभ्यास नहीं किया। वे यहाँ अपना वक्त शिकायत करने में ही निकाल देते हैं कि मन नहीं टिकता, मेरे घुटनों में दर्द होता रहा; मेरी पीठ दुखती रही।

आप सोचकर देख सकते हैं अभ्यास करने वाले को ही महारत पैदा होती है, जो करेगा ही नहीं वह कैसे महारत प्राप्त कर सकता है? दुनियादारी का काम भी हम दो दिन छोड़ दें तो वह काम इकट्ठा हो जाता है, पिछड़ जाता है।

मैं किसी को देखकर भक्ति करने नहीं लगा था। मेरी भक्ति देखा–देखी की नहीं थी। मैंने बचपन से ही दिल से भक्ति की थी इसलिए मैं यह कहा करता हूँ कि मेरे ऊँचे भाग्य थे कि बचपन से ही मेरे ख्याल अच्छे और परमार्थ की तरफ़ थे।

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है ज़रूर मिलता है। इन्सान का बनना मुश्किल है लेकिन भगवान को प्राप्त करना मुश्किल नहीं। परमात्मा इन्सान की तलाश में घूमता है।'' मैं बचपन से आपके इश्क और प्यार में बैठा था। आपने दया–मेहर करके इस सोई हुई आत्मा को जगा दिया।

आपको मालूम है जिस इन्सान को मिजाजी प्यार हो जाता है वह इन्सान लोक–लाज पर ध्यान नहीं देता और भूख, आराम के बारे में नहीं सोचता। अगर किसी को हक़ीक़ी इश्क–भगवान का प्यार, गुरु का प्यार लग जाए तो वह इन्सान भूख, आराम और दुनिया के रीति–रिवाज को आसानी से छोड़ देता है। आसानी से दुनिया के ताने–मेहणे सह लेता है क्योंकि बचपन से ही उसके दिल में सच्ची तड़प, सच्चा प्यार पैदा होता है।

वह बचपन से ही कहता है कि मेरा कुछ खोया हुआ है। जैसे किसी का कोई अनमोल सामान खो जाए वह दिल से सदा ही उदास रहता है। अगर कोई उससे पूछता है कि तू उदास क्यों रहता है? तो वह यही कहता है कि मैं कुछ नहीं कह सकता मैं ठीक–ठाक हूँ लेकिन दिल की लगी को दिल ही जानता है।

जब गुरु नानकदेव जी उदास रहने लगे तो लोगों ने कहा कि इस पर भूत–प्रेत का साया है। कोई कहता कि यह पागल है इसमें सोचने की शक्ति कम है। इसी तरह सभी सन्तों के साथ बचपन से ही ऐसी घटनाएँ घटती रही हैं।

ऐसी महान आत्माओं के अंदर बचपन से ही उस प्यार के पैगाम आने शुरू हो जाते हैं। अगर वे अमीर घराने में जन्म लेते हैं तो वे अमीरी ठुकराकर फ़क़ीरी धारण कर लेते हैं अगर गरीब घर में जन्म लेते हैं तो वे अमीर बनने की इच्छा नहीं रखते कि मैं अमीर बनूं या दुनिया का सामान इकट्ठा करूँ। उनके अंदर हर समय यही तड़प होती है कि किसी भी तरह से मेरी खोई हुई वस्तु मिल जाए। मैं जिससे प्यार करता हूँ वह मुझ पर मेहरबान हो जाए, मुझे अंदर मिले।

सच्चे प्रेमी के दिल में यह शिकायत नहीं होती कि यह दुख क्यों आया, ऐसा क्यों हुआ? मेरे साथ ऐसी घटना क्यों घटी? वह हमेशा ही उस घटना में से मजबूत होकर निकलता है कि यह मेरे अपने ही कर्मों का फल है, मेरा प्यारा तो मेरी मदद कर रहा है।

आपको मालूम हैं कि पतंगा और दीपक का प्यार होता है। पतंगा दीपक को देखकर पीछे नहीं हटता, वह जलना जानता है लेकिन यह शिकायत नहीं करता कि मैं तुझसे प्यार करता हूँ, मैं तुझे देखकर जीता हूँ। मैं पलक नहीं झपक सकता तो तू क्यों मुझे जलाता है? वह प्यार–प्रीत की रीति को निभा जाता है।

मजनूं और लैला का प्यार था। लैला बादशाह की बेटी थी। मजनूं गरीब घर में पैदा हुआ था। उनका प्यार आजकल के लैला–मजनूं वाला प्यार नहीं था। मुसलमानों में यह रिवाज चला आ रहा है कि जो आदमी मिज़ाज़ी प्यार में पूरा नहीं उतरेगा वह हक़ीक़ी प्यार में कभी पूरा नहीं उतर सकता।

हमारे महाराज गुरु कृपाल बताया करते थे कि मिजाजी इश्क एक पुल की तरह है, पुल रहने की जगह नहीं होती। लैला–मजनूं भोगी कीड़े नहीं थे उनका प्यार सच्चा–सुच्चा, पवित्र था। मजनूं फ़क़ीरों के साथ जंगलों में घूमा करता था क्योंकि उसने लैला के

प्यार में फ़क़ीरी धारण कर ली थी। लैला ने मजनूं के दर्शन करने के लिए यज्ञ किया कि मैं देखूँ तो सही कि अब मजनूं कैसा है? मजनूं ने सोचा देखूँ तो सही कि लैला मुझे याद करती भी है या नहीं? मैं तो जंगलों में घूम रहा हूँ।

जब लैला ने यज्ञ किया तो सभी फ़क़ीरों को बुलाया। एक फ़क़ीर ने मजनूं से कहा कि सभी अच्छा भोजन करने जा रहे हैं। आ तुझे भी लैला के पास ले चलें। मजनूं ने उसे अपना काँसा देकर कहा कि मैं तो नहीं जा सकता तू यह काँसा ले जा। इसमें मेरा नाम लेकर खाना डलवाना कि यह काँसा मियाँ मजनूं का है।

जब सब फ़क़ीर खाना खाने के लिए पंक्तियों में बैठ गए। लैला ने आकर देखा कि मैंने जिसके लिए इतना ताम-झाम किया है वह किसी भी पंक्ति में नहीं, वह नहीं आया। जब उस फ़क़ीर ने खाना खा लिया तो उसने खाना परोसने वाले से कहा, ''इस काँसे में मियाँ मजनूं का खाना डाल दे।'' लैला वहीं खड़ी थी।

यह सुनते ही लैला ने टाँग मारी और काँसा तोड़ दिया। फ़क़ीर चुपचाप चला गया। जब फ़क़ीर मजनूं के पास लौटा तो मजनूं ने उससे पूछा, ''क्यों भई, मेरे लिए खाना ले आए हो?'' फ़क़ीर ने कहा, ''लैला ने टाँग मारकर तेरा काँसा तोड़ दिया।'' मजनूं ने कहा, ''तूने मेरा नाम लेना था।'' फ़क़ीर बोला, ''तेरा नाम लेने से ही ऐसा हुआ।'' मजनूं खुशी से नाच उठा और बोला, ''मैं उसे याद तो हूँ।''

प्यारेयो, मैं अपने मुँह मियाँ मिट्ठू नहीं बनता लेकिन सच्चाई बतानी पड़ती है। मेरी भी परमात्मा के लिए लैला-मजनूं वाली फ़क़ीरी थी। जब मेरे गुरुदेव आकर मुझसे मिले मैंने उन्हें भगवान माना। क्यों माना? क्योंकि मेरी भी मजनूं वाली हालत थी क्या मैं

उस भगवान को याद तो हूँ? वह इन्सान का रूप धारण करके मेरे घर आया, उसने मेरी तपती आत्मा को ठंडक दी।

मैं ज़्यादा से ज़्यादा सभी समाजों में गया हूँ। बचपन से ही मेरे दिल में किसी के लिए कोई घृणा नहीं थी। उस समय हिन्दुस्तान में छूआ-छूत का दौर था। मैं मंदिरों, मस्जिदों, शिवालयों और गुरुद्वारों में सच्ची श्रद्धा लेकर गया। मैं किसी की निन्दा करने में विश्वास नहीं रखता और न ही मुझे निन्दा करने वाले अच्छे लगते हैं। जब मुझे प्यास लगी तब वह पानी पिलाने वाला आ गया। मैंने प्यार और इज्ज़त से पानी पिया। मैंने यह नहीं पूछा कि यह पानी हिन्दू का है, सिख या इसाई का है?

मैंने अपने गुरुदेव से ऐसा कोई सवाल नहीं किया कि आप किस जाति में पैदा हुए हैं? आप त्यागी हैं, वैरागी हैं या गृहस्थी हैं? आप कहाँ के रहने वाले हैं?

मैंने अपनी ज़िंदगी में आपके बारे में न आपके किसी आलोचक से सुना था न किसी प्रशंसक से सुना था। आपका ही संदेश आया कि मैं इस वक्त मिलने आऊँगा, घर में रहना। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उन्हें कैसे पता चला कि बचपन से कौन मेरी याद में बैठा है? मुझे पिछले गाँव से उठाकर खड़े-खड़े ही यहाँ भेज दिया।

यह गुफा इस मकान का वही हिस्सा है इसमें कोई बदलाव नहीं किया गया सिर्फ ऊँची-नीची जगह ही ठीक की गई है। पहले नहाने की जगह भी अंदर ही थी यह उन्होंने अपनी इच्छा से बनवाई है। मैं नहीं कह सकता कि उन्होंने यह इच्छा क्यों की थी? आपने यह भी कहा था कि जब ज़रूरत होगी मैं खुद ही आऊँगा। तुझे आने की ज़रूरत नहीं, तुझे मेरा इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं। जब याद करोगे मैं यहाँ आ जाऊँगा।

मैं आपका धन्यवाद करता हूँ ज़ुबान से तो नहीं कर सकता। मैंने पूरी ज़िंदगी में बहुत कुछ किया था लेकिन सच्चा धन्यवाद, सच्चा प्यार अंदर जाकर ही जागता है। प्यार की कहानी ज़ुबान से बयान नहीं होती प्यार में मिलकर ही उसे महसूस किया जा सकता है। जिन्होंने सारी ज़िंदगी प्याज बेचे होते हैं वे कस्तूरी की कीमत क्या समझ सकते हैं? जिन्होंने सारी ज़िंदगी मोटे कम्बल ओढ़े होते हैं वे रेशम की कीमत को क्या समझ सकते हैं? हम दुनियावी जीवों ने विषय-विकारों को सिर पर रखा है, इन्द्रियों के भोगों को ऊँचा समझा हुआ है इसलिए जब हम उस तरफ़ से अपने मन को मोड़ लेते हैं तभी महात्मा हमें नूरी नाम का रस देते हैं।

जब सेवक अंदर जाता है गुरु को प्रकट कर लेता है तब गुरु स्वरूप इससे भी साफ नज़र आता है। वहाँ हम जो चाहे बात करें उसका जवाब सही होगा बल्कि सच पूछें तो कई बार अंदर दिल्लगी भी होती है कि मैं क्या हूँ आप क्या हैं? वहाँ जाकर पता चलता है कि मैं कितना मैला हूँ, कितना गंदा हूँ। मेरे गुरु कितने पवित्र हैं। इन्हें मुझ पर तरस आया और मुझे अंदर ले गए।

जितने भी सन्त अंदर गए सबने खुद को गुरु के आगे अपराधी और मैला बयान किया और गुरु को उज्जल बयान किया। अजायब ने भी अपने गुरु कृपाल के सामने यही इकबाल किया :

ऐबां भरी अजायब दी जिन्दड़ी लावो पार किनारे।

जब गुरु कृपाल ने दया की तो आप यहाँ आए। जब यहाँ मिलाप हुआ मुझे गुफा से बाहर निकाला उस समय मुझे वह पुराना वक्त याद आया कि मैं दर-दर हर धर्मस्थान जितनी भी समाजें थीं वहाँ किसलिए गया? मैं परमार्थ के लिए ही घूमता रहा। जिसने भिक्षा दी मैंने उसका धन्यवाद करते हुए कहा:

मँगदा मँगोंदा घरे गया यार दे।
अलख जगाई जिवें होका मार दे।।

मैंने दिल में खुशी रखकर अपना अभ्यास किया था। जैसे योगी किसी घर भिक्षा मांगने जाता है तब अलख–अलख बोलता है ताकि हर घरवाले को सुनाई दे। वे उसे जल्दी भिक्षा दे दें और वह चला जाए।

खैर आके पाओ पाओंगे मुरादियाँ।
मित्रां दे मिलयाँ जेड नहीं हुई शादियाँ।।

जब मैंने यह फिकरा बोला तो हुज़ूर हँस पड़े। आपने कहा, ''मैं तुझसे क्या मुराद माँगता हूँ?'' मैंने हँसकर कहा, ''सच्चे पिता, गुरु को बना–बनाया शिष्य मिलना भी ऊँचे भाग्य की बात है। मैं तो खैर माँग ही रहा हूँ, तू खैर डाल तेरी मुराद पूरी हुई है।'' गुरु को शिष्य ऊँचे भाग्य से मिलता है और शिष्य को भी गुरु ऊँचे भाग्य के कारण ही मिलते हैं।

मेरा आपको यह सब सुनाने का भाव यही है कि आप वक्त का इंतज़ार न करें कि नाम लिए हुए बहुत साल बीत जाएंगे फिर ही हम तरक्की करेंगे। यह करने से ही होता है। अगर यह कहें कि गुरु दया करेंगे तभी होगा। दया तो हमने लेनी है। जैसा हमारा बर्तन होगा गुरु उसमें वैसी दया डालते हैं, गुरु बेइंसाफ नहीं होते।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे जिसके दरवाज़े पर कोई पशु बंधा है उस घरवाले को उसका फिक्र है कि इसे कब पानी पिलाना है, कब धूप से छाँव में करना है। वक्त की कद्र करें। हर एक ने अपने जीवन को पवित्र बनाकर शब्द–नाम की कमाई करनी है। हमें दुनिया की जो जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं जो हमारे हिस्से में आई हैं हमने उन्हें भी निभाना है।

***

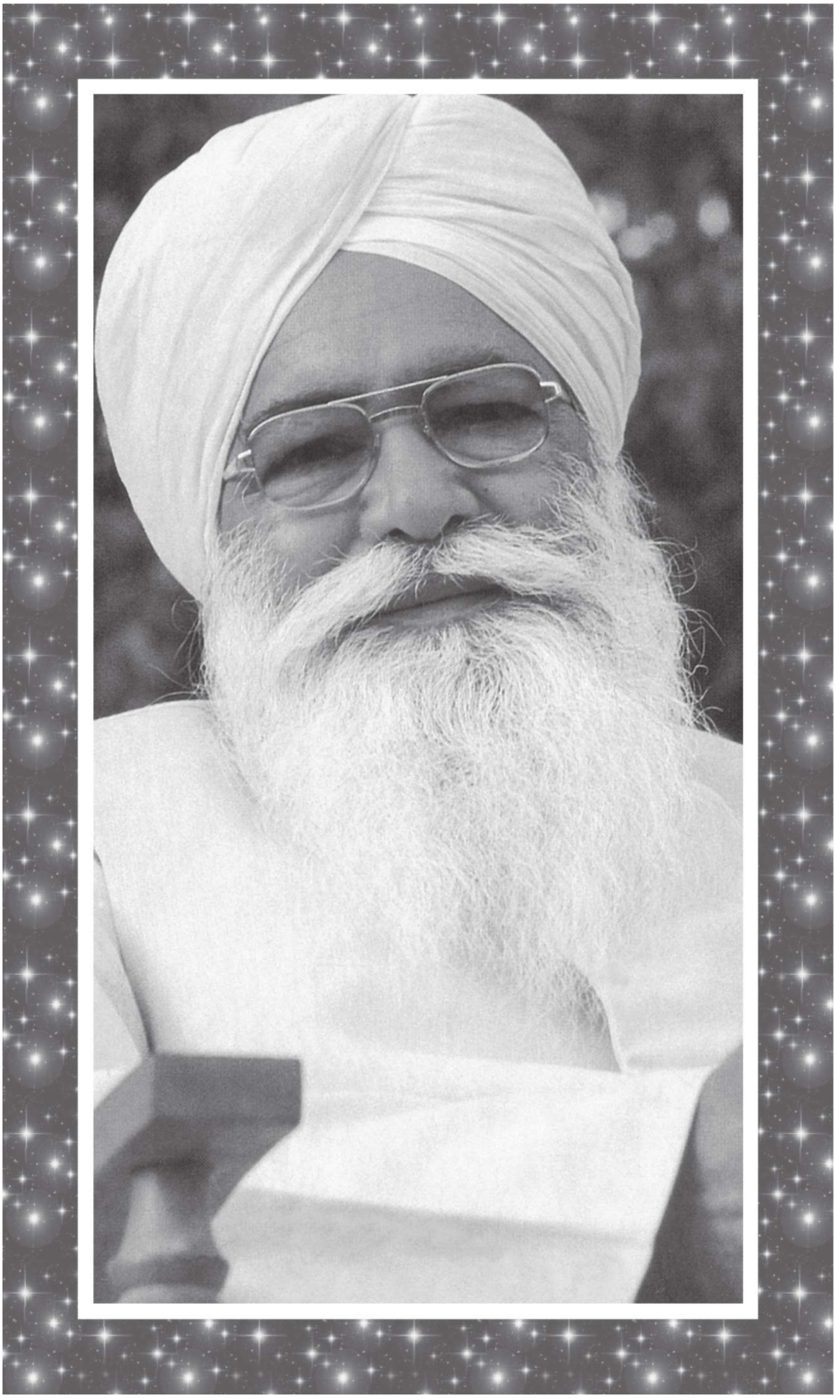

53

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

सतगुरु खुले दिल से दया बाँटते हैं

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 4 अप्रैल 1987

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि आपने यहाँ से कोई प्रेरणा लेकर जाना है। यहाँ आना रस्मो–रिवाज नहीं बनाना कि राजस्थान में एक बार सफ़र करके आ गए हैं फिर एक साल बाद आ जाएंगे। आप यहाँ जो कुछ सीख रहे हैं उसे करना है। जो कुछ इस जगह में बैठकर किया गया है हमने उसकी नकल करनी है।

एक छोटा सा जीव अपने गुरु की आज्ञा का पालन करके ज़मीन में बैठा। वह किसी को नहीं जानता था, दुनिया का वाकिफ नहीं था फिर किस तरह सारी दुनिया में जाना गया? उसने पहले खुद गुरु की दया प्राप्त की, गुरु का प्यार प्राप्त किया फिर उसी तरह खुले दिल से दूर–नज़दीक के अभिलाषी जीवों पर प्यार के छींटे मारे उनमें भी प्यार जगाया और प्यार करने का ढंग और तरीका बताया कि किस तरह गुरु से प्यार करना है? किस तरह गुरु की आज्ञा का पालन करना है?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पश्चिमी लोगों में फल प्राप्त करने की जल्दबाज़ी मची हुई है तज़ुर्बों की ज़्यादा जल्दी है लेकिन अपने ख्यालों पर कंट्रोल नहीं करते, मेहनत नहीं करते। एक प्रेमी नाम लेकर अपने देश पहुँचा ही था। उसे नाम लिए हुए एक हफ्ता भी नहीं हुआ था उसने अपने गुरु महाराज सावन सिंह जी को पत्र लिखा कि अभी तक मेरी कोई तरक्की नहीं हुई।

प्यारेयो, मैं हमेशा बताया करता हूँ कि यह काम दिनों का, महीनों का और सालों का नहीं है। हम ज़िंदगी भर संघर्ष ज़ारी रखें और अपनी ज़िंदगी में कामयाब हो जाएँ तो भी सस्ता है। जब जन्मों–जन्मों के हमारे अच्छे कर्म होते हैं तभी हम शब्द–नाम की तरफ़ आते हैं। मेहनती आदमी सदा कामयाब होता है। मेरा अपना तज़ुर्बा है मन चाहे जो भी करे अगर प्रेमी श्रद्धा और विश्वास के साथ लगा रहे तो वह ज़रूर कामयाब होता है।

हमारे अंदर यह कमी है कि हम दस–पंद्रह दिन अभ्यास करते हैं फिर चार दिन अभ्यास छोड़ देते हैं। एक महीना अभ्यास करते हैं फिर बीस दिन अभ्यास छोड़ देते हैं। लगातार अभ्यास नहीं करते अभ्यास के अंदर उखड़ते रहते हैं।

सतसंगी का जीवन खुशबू भरा होना चाहिए। काम को ख्यालों में भी न आने दें। जब हम बुरे ख्यालों को बाहर निकालेंगे तभी वहाँ गुरु के ख्याल टिकेंगे। अगर हम अपने जिस्म को गुरु का समझते हैं तो इसे बुरी आदतों में न लगाएँ इससे बुरे काम न कराएँ। सन्त–सतगुरुओं ने हमेशा अपने बच्चों को खुले दिल से दया बाँटी है और उनकी हमेशा ही यह कोशिश होती है कि किसी न किसी तरह से ये मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर आएँ। सेवक भी इतनी कोशिश करे तो वह जल्दी ही फल प्राप्त कर सकता है।

मैंने सन्तबानी आश्रम में एक सतसंग दिया था कि काल किस तरह जीवों को बहकाता है किस तरह हमारा भजन–सिमरन ले ले जाता है। अगर सतसंगी मजबूत है गुरु भी मजबूत है तो सेवक को मन इन्द्रियों के घाट से ऊपर खींचने में गुरु कामयाब हो जाते हैं। लेकिन काल अंदर से सतसंगियों के मन को ही खींच लेता है। हालाँकि हम सतसंगी बहन–भाई हैं। हम रुहानियत में एक–दूसरे

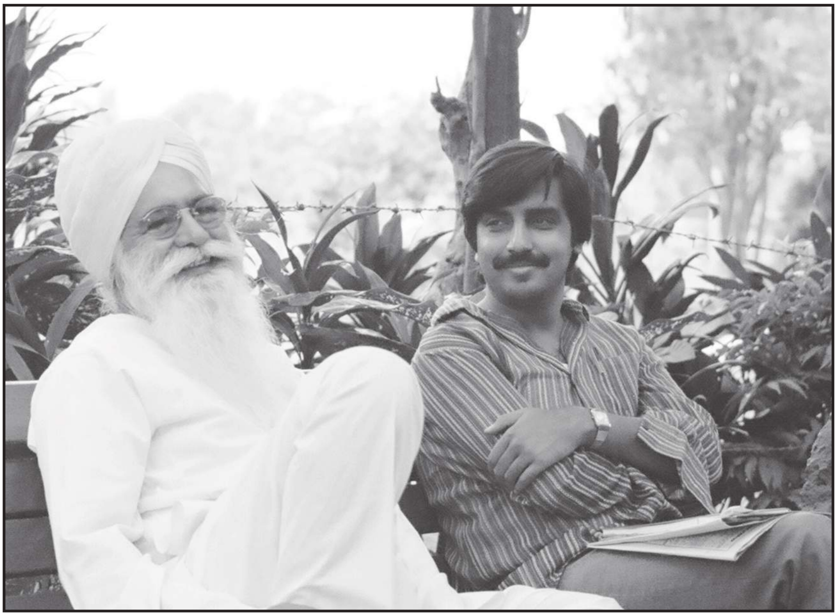

की इज़्ज़त करने के काबिल हैं और इज़्ज़त करते भी हैं लेकिन जब इसका मौका लगता है यह सतसंगियों के अंदर नफ़रत पैदा कर देता है। हमारा जो कुछ भजन–भाव होता है यह हमें उसमें खुष्क कर देता है।

जब हम भजन–सिमरन करेंगे तो हमें खुद–ब–खुद ही अंदर से रहनुमाई मिल जाती है। गुरु जागृत करते रहते हैं चेतावनी देते रहते हैं कि मन तुझ पर हमला करने वाला है, अब तू ज़्यादा अभ्यास कर। अगर हम भजन–अभ्यास करते हैं तो काल के धोखों से बच जाते हैं।

सब प्रेमियों ने आपस में प्यार बनाकर रखना है। अपना भजन–सिमरन करना है और सबने सतसंग में जाना है। हमें सतसंग के ज़रिए ही अपनी गलतियों और कमियों का पता चलता है।

***

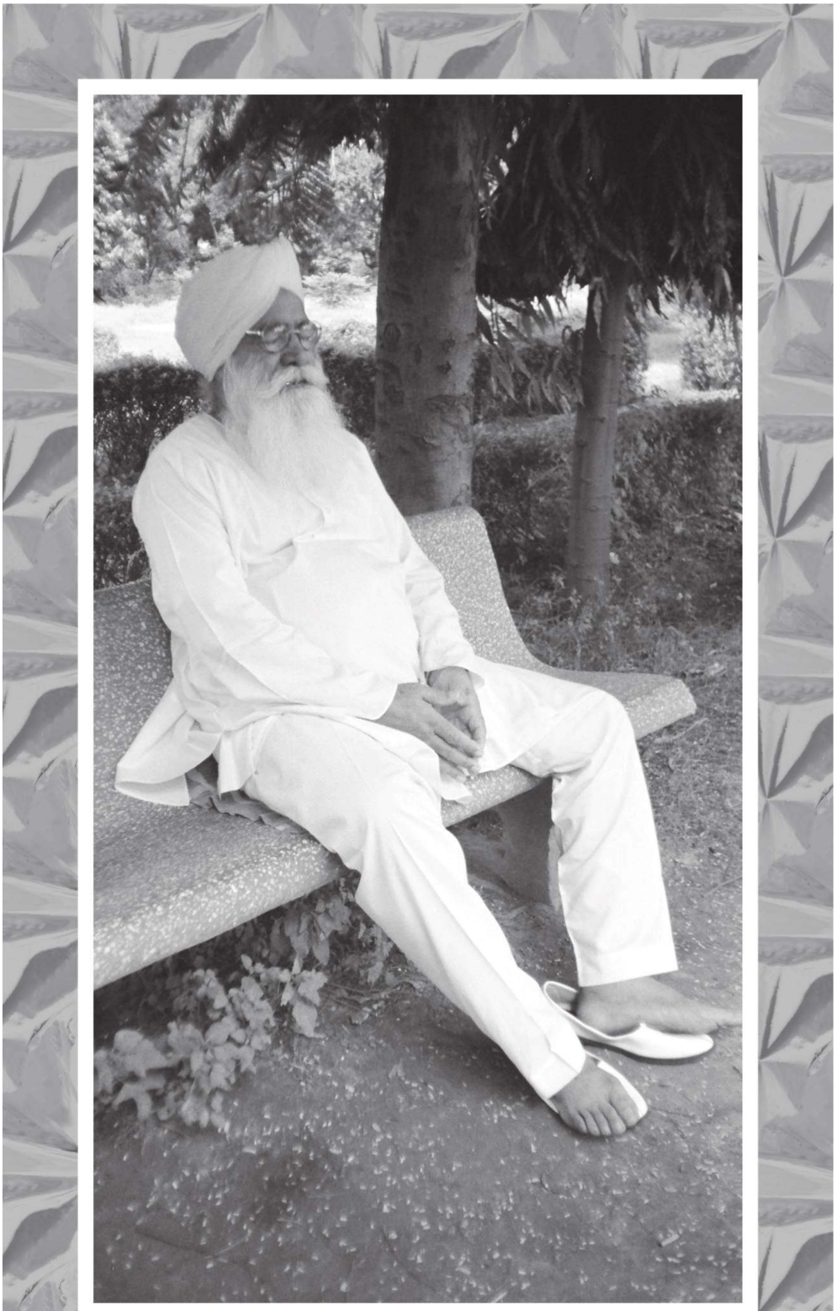

54

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

मन की एकाग्रता

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 31 अक्टूबर 1987

आप लोगों ने इस गुफा के बारे में सुना होगा और सन्तबानी मैगज़ीन में भी पढ़ा होगा। हमें इस जगह की महानता समझनी चाहिए। सन्तमत अपने आपको समझने का और सुधारने का मत है। सन्तमत करनी का मत है बातें करने और पढ़–पढ़ाई का मत नहीं। सन्त पढ़ाई को बुरा नहीं कहते लेकिन हम जो पढ़ते, सुनते और लिखते हैं हमें अपने अंदर झांककर देख लेना चाहिए कि क्या इसके मुताबिक हमारी रहनी है, क्या हम इस मुताबिक करते हैं, क्या हम अंदर जाते हैं? दूसरों को उपदेश देने से खुद उसे करना हज़ारों गुना बेहतर होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि पश्चिमी लोगों का मन फल प्राप्ति के लिए उतावला रहता है। एक पश्चिमी प्रेमी को नाम लिए हुए एक महीना भी नहीं हुआ था कि उसने महाराज सावन सिंह जी को पत्र लिख दिया कि मेरी कोई तरक्की नहीं हुई। महाराज जी कहते थे कि हमारे मन को जन्म–जन्मांतर से बाहर भटकने की आदत पड़ी हुई है। मन पर क़ाबू पाने का महीनों या दिनों का कार्यक्रम नहीं होता। चाहे इसमें हमारी पूरी ज़िंदगी ही लग जाए फिर भी यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम कितनी मेहनत करते हैं? हमारी ज़िंदगी और ख्याल कितने पवित्र हैं? हम जो रोज़ी–रोटी कमा रहे हैं इसमें कितनी पवित्रता है?

सतगुरु अभूल होते हैं वे गलती नहीं करते। वे जिस आत्मा को नाम देते हैं उसे भूलते नहीं। सतगुरु शब्द–स्वरूप होते हैं वे इन्सानी जामें में भगवान ही आए होते हैं। उन्हें पता होता है कि मैंने किसे नाम दिया है और वह इस वक्त क्या कर रहा है? उसे किस चीज़ की ज़रूरत है? हम दुखी उस वक्त होते हैं अपना भरोसा उस वक्त छोड़ देते हैं जब हम ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ों की लालसा करते हैं। अपने अंदर ज़रूरत से ज़्यादा ख्वाहिशें उठा लेते हैं। जब ख्वाहिशें और इच्छाएं पूरी नहीं होती तब हमारा गुरु के ऊपर भरोसा और प्यार नहीं रहता। दफा

कोई भी माता अपने बच्चे को दुखी देखकर खुश नहीं होती लेकिन बच्चे की बेहतरी के लिए कई दफा उसे डॉक्टर से कड़वी दवाई लाकर बच्चे को देनी पड़ती है या बच्चे के फोड़े का ऑपरेशन कराना पड़ता है। माता को बच्चे की बेहतरी प्यारी होती है उसकी बच्चे के साथ कोई दुश्मनी नहीं होती और न ही डॉक्टर की बच्चे के साथ कोई दुश्मनी होती है। हमें हौसला नहीं हारना चाहिए, हिम्मत करनी चाहिए। अपना अभ्यास रोज़–रोज़ ज़ारी रखना चाहिए।

सतगुरु का नूरी स्वरूप, सूरज, चन्द्रमा, सितारे, प्रकाश, शब्द सब हमारे अंदर हैं। हमें दुनिया में फैले हुए ख्याल को सिमरन के ज़रिए आँखों के पीछे इकट्ठा करने की ज़रूरत है। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं उस समय प्रकाश, सूरज, तारे, नूरी स्वरूप सब कुछ अपने अंदर देखते हैं। जब हमारा मन इधर–उधर हो जाता है एकाग्र न होकर हिल जाता है तब हमारा ध्यान नीचे गिर जाता है फिर न हम शब्द सुन सकते हैं न प्रकाश, तारे देख सकते हैं। कई दफा हमारी एकाग्रता भंग हो जाती है और हम कई–कई दिन एकाग्र नहीं होते। तब हम सोचते हैं कि शायद, सतगुरु की दया

हट गई है, मेरे ऊपर दया नहीं आ रही। हम घबरा जाते हैं और इस मत को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्यारेयो, गुरु की दया सदा ही ज़ारी रहती है वह कभी बंद नहीं होती। अगर हम अपना शरीर भी छोड़ जाए फिर भी हमने जिनसे नाम लिया है उनकी दया हमेशा ज़ारी रहती है बल्कि वह हमारी पहले से भी ज़्यादा संभाल करते हैं लेकिन हमारा मन भटक जाता है। यह हमारे मन की ही चालाकी होती है। कुछ दिनों बाद जब हम फिर एकाग्र होते हैं तब दिल को चोट लगती है कि यह क्या हुआ? जब हम फिर एकाग्र होते हैं उस दया को महसूस करते हैं तब हम फिर से प्रकाश, तारे सब कुछ देखना शुरू करते हैं।

आपने अनुराग सागर में पांडवों के बारे में पढ़ा है कि उन्होंने बारह साल बनवास काटा था। हिन्दुस्तान में उस वक्त यह रिवाज हुआ करता था अगर किसी राजा–महाराजा ने अपने लड़की की शादी करनी है तो आम निमंत्रण दिया जाता था जिसे स्वयंवर रचना कहा जाता था। लड़की जिसे चाहे उसके गले में वरमाला पहनाती थी; उसी को शादी माना जाता था।

वैसा ही स्वयंवर द्रौपदी के पिता ने रचाया। वहाँ नीचे एक तेल से भरा कढ़ाहा रखा और उसके ऊपर ऊँची जगह एक गोल घूमने वाली मछली रखी जो बिल्कुल नहीं ठहरती थी। शर्त यह रखी कि जो आदमी नीचे तेल में देखकर ऊपर देखे बिना उस मछली की आँख में तीर मारेगा वही द्रौपदी को शादी करके ले जा सकता है।

आपको पता है कि जो आदमी एकाग्रचित्त होता है वही तीरंदाजी में सही निशाना लगा सकता है। जिसका मन हिलता–डुलता है वह सही निशाना नहीं लगा सकता। उस स्वयंवर में सिर्फ़ अर्जुन ही कामयाब हुआ जो उस वक्त सन्यासी के भेष में घूम रहा था।

अगर एक राजा की लड़की की शादी किसी गरीब लड़के से हो जाए तो सखियाँ–सहेलियाँ ताने–मेहणे तो देती ही है। वे सब कहने लगी, ''तेरी शादी एक वैरागी आदमी के साथ हुई है। यह अच्छा नहीं हुआ।'' द्रौपदी अंदर के राज़ से वाकिफ थी। द्रौपदी ने कहा, ''आप जो कहती हैं वह अपनी जगह ठीक है लेकिन इस तरह तेज घूमने वाली मछली की आँख में तीर छेदना किसी एकाग्रचित्त आदमी का ही काम है। हो सकता है यह किसी वक्त संसार का विजेता साबित हो जाए। यह तो वक्त ही बताएगा।'' जब महाभारत का युद्ध हुआ अर्जुन ही विजेता साबित हुआ था।

सन्तमत में हमारी जितनी ज़्यादा एकाग्रता होगी हम उतना ही अपने आपको गुरु–परमात्मा के नज़दीक पाएंगे। शब्द को अच्छी तरह सुन सकेंगे और प्रकाश को ज़्यादा से ज़्यादा देख सकेंगे।

मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मुझे मेरे गुरु ने जो कहा मैं वह कर सका। मेरी अपनी कोई ताकत नहीं थी। यह गुफा मैंने अपनी खुशी से नहीं बनाई थी यह उनकी दया से ही बनी थी। जब आपने मुझे इस गुफा के अंदर दाखिल किया और मेरी आँखों के ऊपर हाथ रखते हुए कहा, ''बाहर नहीं देखना अंदर देखना है।''

तब मैंने आपके आगे एक ही विनती की थी, ''मेरी लाज़ आपके हाथ में है, आपने मेरी लाज़ रखनी है।'' आपने कहा, ''मैं खुद ही ज़रूरत के मुताबिक आता रहूँगा।'' यह आपकी दया थी। सतगुरु अभूल होते हैं यह मेरा अपना तज़ुर्बा है। आप बिमारी के दिनों में भी अंदरूनी और बाहरी तौर पर हमेशा इस गरीब आत्मा की संभाल करते रहे, इसे महफ़ूज रखा। यह आपकी खास दया थी महिमा थी जो बयान से बाहर है।

***

55

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

सतगुरु का नाम रोशन करें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 2 जनवरी 1988

हाँ भई, परमात्मा सावन–कृपाल ने अपनी बड़ी दया–मेहर करके हमें दस दिन के कार्यक्रम का मौका दिया। मैंने दस दिन आपको इसी बात को समझाने पर ज़ोर दिया कि पवित्रता हमारे रूहानी जीवन में कितनी ज़रूरी है। अगर हम वैसी ही पवित्रता रखें तो दुनियावी जीवन में भी हमें इसकी बहुत ज़रूरत है, इसकी बहुत महानता है। जो विषय–विकारों भरा जीवन नहीं जीते उनका ही मन शान्त रह सकता है। हम दुनिया में ख्याल को जितना ज़्यादा फैलाते हैं उतना ही हमारा मन अशान्त हो जाता है, हम शब्द से, तीसरे तिल से; गुरु के प्यार से उतना ही दूर चले जाते हैं।

प्यारेयो, मेरे गुरुदेव परमात्मा कृपाल ने मेरे बारे में कहा था, ''इसमें से महक आएगी यह चन्दन की तरह महकेगा। वह महक सात समुंद्र पार कर जाएगी।'' उस समय काफी प्रेमी बैठे थे। मैं यही कहता हूँ कि सतसंगी में से महक आनी चाहिए। दूसरा इन्सान उस पर तभी मस्त हो सकता है उससे तभी फायदा उठा सकता है, जब वह सोचे कि इसमें नाम की खुशबू है। मैं भी इस खुशबू को प्राप्त करूँ। यह अच्छा जीवन जी रहा है वह भी आपकी नकल करेगा और वह भी अच्छा जीवन जिएगा।

सन्तमत का मकसद दुनिया में सबसे ज़्यादा अच्छे बन्दे पैदा करना होता है ताकि वे परमात्मा की भक्ति कर सकें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु, पीर नहीं उड़ा करते उनके सेवक ही उन्हें उड़ाया करते हैं, उनका नाम रोशन करते हैं।'' आप यह भी कहा करते थे, ''सन्तों की इज़्ज़त उनके सेवकों के हाथ में होती है।''

माड़ा कुत्ता खसमें गाली।

अगर कुत्ता अच्छा है तो लोग उसके मालिक की बड़ाई करते हैं। इसी तरह सन्तों के सेवक जितने ज़्यादा अच्छे होंगे ज़्यादा प्यारे होंगे ज़्यादा शान्त होंगे उतनी ही उन सन्तों की इस संसार मंडल पर ज़्यादा महिमा होगी प्रशंसा होगी। सन्त हमें उतनी ही ज़्यादा खुशी दे सकेंगे और हमारे ऊपर नाम की ज़्यादा बख्शिश कर सकेंगे।

सतसंगियों को सबसे पहले यह आदत डाल लेनी चाहिए कि बातचीत करते हुए, चलते-फिरते भी हमें अपनी दोनों आँखों के दरम्यान तीसरे तिल पर अपनी सुरत को टिका कर रखना है। जब हमारी आत्मा को तीसरे तिल पर टिकने की आदत हो जाती है तो जितनी भी जंजीरे इसे नीचे खींचती हैं वे एक-एक करके टूटनी शुरू हो जाती हैं और हम सूक्ष्म मंडल में पहुँच जाते हैं जिसका करता-धरता ज्योत निरंजन है। ऊपर वाले कारण और ब्रह्म मंडल का शब्द आ रहा होता है। आत्मा आसानी से उस शब्द को पकड़कर ब्रह्म के मंडल कारण मंडल में पहुँच जाती है।

हमारा मन हमें स्थूल मंडल में जितना परेशान करता है धोखा देता है उतना सूक्ष्म मण्डल में धोखा नहीं देता। जितना सूक्ष्म मण्डल में धोखा देता है हम पर हावी होता है उतना कारण मंडल में जाकर हावी नहीं होता। मन के जितने भी छल-कपट हैं जब हम कारण मंडल के शिखर पर पहुँच जाते हैं तो सब पीछे रह जाते है हमारी आत्मा इसके पँजे से आज़ाद हो जाती है।

हर सतसंगी को वक्त की कद्र करनी चाहिए क्योंकि समुंद्र की लहर दूसरी लहर का इन्तज़ार नहीं करती। इसी तरह मौत किसी का इन्तज़ार नहीं करती। सतसंगियों को बहुत सुंदर मौका मिला है। इन्सानी जामें में शब्द–नाम मिला है गुरु मिला है, हमें हमारी रहनुमाई करने वाला गाईड मिला है। हमारा फर्ज़ बनता है कि हमारे गुरु ने अपनी सिमरन की, शब्द–नाम की उँगली हमारे हाथ में दी है हम उसे छोड़ें नहीं, उसे पकड़े रखें।

प्यारेयो, आप ऐसा न सोचें कि जब हम बुराई करते हैं तो हमें कोई नहीं देखता। आपका गुरु स्वरूप आपके अंदर है। सतसंगी को विश्वास होना चाहिए कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ मेरा गुरु मुझे देख रहा है सिर्फ वह पर्दे के पीछे खामोश है। काल कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता फौरन अंदर ही गुरु को जानकारी देता है कि देख, तेरा सेवक नाम लेकर क्या कर रहा है, तूने इसे नाम दिया है? इसकी करतूत तो देख लेकिन सतगुरु फिर भी दया के पुंज होते हैं बड़े भरोसे वाले होते हैं उनमें बड़ा सब्र होता है वे फिर भी कहते हैं, ''मैं इसे सुधारूंगा तू और मौका दे।''

प्यारेयो, हमारी वजह से गुरु के लिए परेशानियाँ खड़ी होती हैं। हमें हमेशा ही पवित्र जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए। अगर पाँच साल का छोटा सा बच्चा किसी खेत की रखवाली के लिए बैठा हो तो हममें यह हिम्मत नहीं पड़ती कि हम वहाँ से कोई फल तोड़ लें। वह परमात्मा स्वरूप गुरु हमारे अंदर मौजूद होता है; हम कौन–कौन से बुरे कर्म नहीं कर बैठते! क्या हममें उस पाँच साल के बच्चे जितना भी गुरु का डर नहीं?

सन्त–महात्मा हमें इस संसार में किसी समाज से तोड़ने के लिए नहीं आते, हमें बुजदिल बनाने के लिए नहीं आते बल्कि वे तो

यह कहते हैं कि आप अच्छे इन्सान बनें। हम अच्छे इन्सान तभी बन सकते हैं जब हम अपनी कुल के प्रति भी वफादार हों। कोई हमें यह न कहे कि ये फलाँ कुल के अंदर पैदा हुआ है, इनके बड़े भी ऐसे ही होंगे। हमें समाज के प्रति भी मजबूत होना चाहिए कि इनके समाज में अच्छे सन्त पैदा हुए हैं तभी इनका जीवन ऐसा है, इनके दिल में गुरु की तड़प पैदा हुई और इन्होंने नामदान प्राप्त किया।

सन्त कहते हैं कि हमें कभी भी अपने देश के प्रति बुरा कर्म नहीं करना चाहिए, हमारे अंदर देश–भक्ति होनी चाहिए। सन्त हमें हमेशा दुनिया के फर्ज़ और दुनिया में जीने का तरीका भी बताते हैं कि हमने कैसे दुनिया में जीते हुए रूहानी जीवन भी बनाना है।

हाँ भई, इस जगह के बारे में आप सब बहुत कुछ सुन चुके हैं और पढ़ चुके हैं कि किस तरह दयालु कृपाल ने अपनी ही दया करके यह जगह बनाई। यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है आपने खुद ही इसे यहाँ बिठाया, इसकी रखवाली की और इस पर रहमत की। वह रहमत ज़ुबान से बयान नहीं की जा सकती। बेशक आप करोड़ों ग्रंथ भी क्यों न लिख लें फिर भी वह महिमा वह रहमत बयान नहीं की जा सकती।

किसी पेड़ की अच्छाई का पता उसका फल खाने से लगता है। उसी तरह जिन्होंने गुरु का हुक्म माना होता है उन्हें ही गुरु के हुक्म का स्वाद आता है। दयालु कृपाल ने जिन्हें नाम दिया है उन सबको मुक्त करना है क्योंकि उन्होंने जिम्मेदारी ली है वे अपने दरबार में उनका इंतज़ार करते हैं लेकिन बहादुरी उन्हीं की है जिन्होंने जीते जी गुरु की आज्ञा का पालन किया, जीते जी अपने गुरु के बताए हुए काम को पूरा कर सके।

***

56

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

उद्यम करें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 1 अक्टूबर 1988

मैं अपने गुरु परमपिता कृपाल सिंह जी का धन्यवादी हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर अपनी दया दृष्टि डाली। सन्तों का सदा यही संदेश रहा है कि आएं, हमारे साथ चलें और सच्चाई को खुद अपनी आँखों से देखें। वे हमें यह भी कहते हैं कि आप प्यार के समुंद्र में डुबकी लगाकर प्यार का मोती खुद ही निकालें।

प्यारयो, हमें पता ही है कि आप दुनिया में बगैर कठिनाई के कोई भी कारोबार नहीं कर सकते और उसमें कामयाबी प्राप्त नहीं कर सकते। अगर हम समुंद्र में से मोती प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें गहरे समुंद्र में डुबकी लगानी पड़ती है।

महात्मा इस संसार में आकर यही कहते हैं कि आएं, हमारे साथ चलें लेकिन उनके साथ जाने वाले बहुत कम लोग मिलते हैं। जब उनको बहुत कम लोग मिलते हैं तो महात्मा हमें आम लोगों की तरह इस मंडल की बातें बताकर दलीलबाजी से समझाना शुरू करते हैं। वे हमें ऐसी बातें बताते हैं जो आम लोगों को आसानी से समझ में आ सकें।

महात्मा अपनी सूक्ष्म बुद्धि से हम दुनिया में फँसे हुए लोगों को जागृत करके हमें शब्द–नाम के रास्ते पर लगा देते हैं और हमारी खोज शुरू हो जाती है। महात्मा हमें जिस रास्ते पर डालते हैं वह

रास्ता बनावटी नहीं होता, कुदरती होता है। हम उस रास्ते को न कम कर सकते हैं न बढ़ा सकते हैं न टेढ़ा-मेढ़ा कर सकते हैं। वह रास्ता उतना ही पुराना है जितना पुराना परमात्मा है।

हमें पता है कि टीचर की अपनी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं और विद्यार्थी की अपनी होती हैं इसी तरह शिष्य की भी कोई जिम्मेदारी होती है। शिष्य को वही जिम्मेदारी सौंपी जाती है जिसे वह आसानी से निभा सके। गुरु अपनी जिम्मेदारी से कभी कोताही नहीं करते, आलस नहीं करते। अगर विद्यार्थी अपनी जिम्मेदारी न निभाए और टीचर से ही कहे कि आप स्कूल में भी बैठें, मेरी किताब के पाठ भी याद करें और मुझे पास होने की डिग्री भी दे दें। आप सोचकर देखें, क्या ऐसा विद्यार्थी कामयाब होने की उम्मीद कर सकता है?

शिष्य की ड्यूटी लगाई जाती है कि विषय-विकारों में नहीं फँसना, अपने ख्यालों को पवित्र करना है। पवित्र ख्यालों का प्रतिबिंब आपके मन पर पड़ेगा जिससे मन साफ होगा, यह जितनी जल्दी अपने घर पहुँचेगा; उतनी ही जल्दी आत्मा को इससे छुटकारा मिलेगा।

हमें बड़ी-बड़ी झीलों के किनारे जाने का मौका मिलता है। वहाँ हम देखते हैं कि चारों तरफ़ पेड़ लगे होते हैं। जिस वक्त झील में लहरें उठती है या पानी साफ नहीं होता तब हम कुछ भी नहीं देख सकते। जबकि पेड़ भी वहाँ मौजूद होते हैं और पानी भी मौजूद होता है फिर हम क्यों नहीं देख सकते? क्योंकि वह पानी ठहरा हुआ नहीं, साफ नहीं अगर वह पानी ठहर जाता है साफ होता है तो हम उस झील में पेड़ों की परछाई अच्छी तरह देख सकते हैं।

इसी तरह जब हमारे मन के अंदर विषय-विकारों और दुनिया की लहरें उठनी बंद हो जाती हैं, हमारा मन शान्त हो जाता है

तब हमारी आत्मा का शीशा साफ हो जाता है फिर हम आसानी से परमात्मा को देख सकते हैं। परमात्मा के साथ बात कर सकते हैं क्योंकि वह परमात्मा हमारे अंदर ही मौजूद है।

मेरे गुरुदेव ने पच्चीस साल दुनिया के कोने–कोने में जाकर होका दिया, लोगों को समझाया, ''परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं इन्सान का बनना मुश्किल है। भगवान इन्सान की खोज में रहते हैं कि उन्हें कोई इन्सान मिले।''

प्यारेयो, उनका यह वाक् सच्चा था। मैं जिस धरती पर बैठा था, उस धरती पर आम इन्सान नहीं आता था। आज आप यहाँ जो हरी–भरी ज़मीनें देख रहे हैं उस वक्त नहीं थीं। यहाँ पानी का कोई साधन नहीं था। सड़कों के साधन नहीं थे। यह सब कुछ बहुत जल्दी हुआ है। वे खुद ही चलकर यहाँ आए थे। उन्होंने इस गरीब पर दया करके अपनी याद में बिठाया। उन्होंने कहा कि खुद अंदर जाकर सच्चाई को अपनी आँखों से देखो।

मैं आशा करता हूँ आप लोग भी यहाँ से यही प्रेरणा लेकर जाएं कि वापिस घर जाकर ज़्यादा से ज़्यादा भजन–अभ्यास करेंगे। अपने जीवन को सच्चा–सुच्चा और ऊँचा बनाएंगे।

***

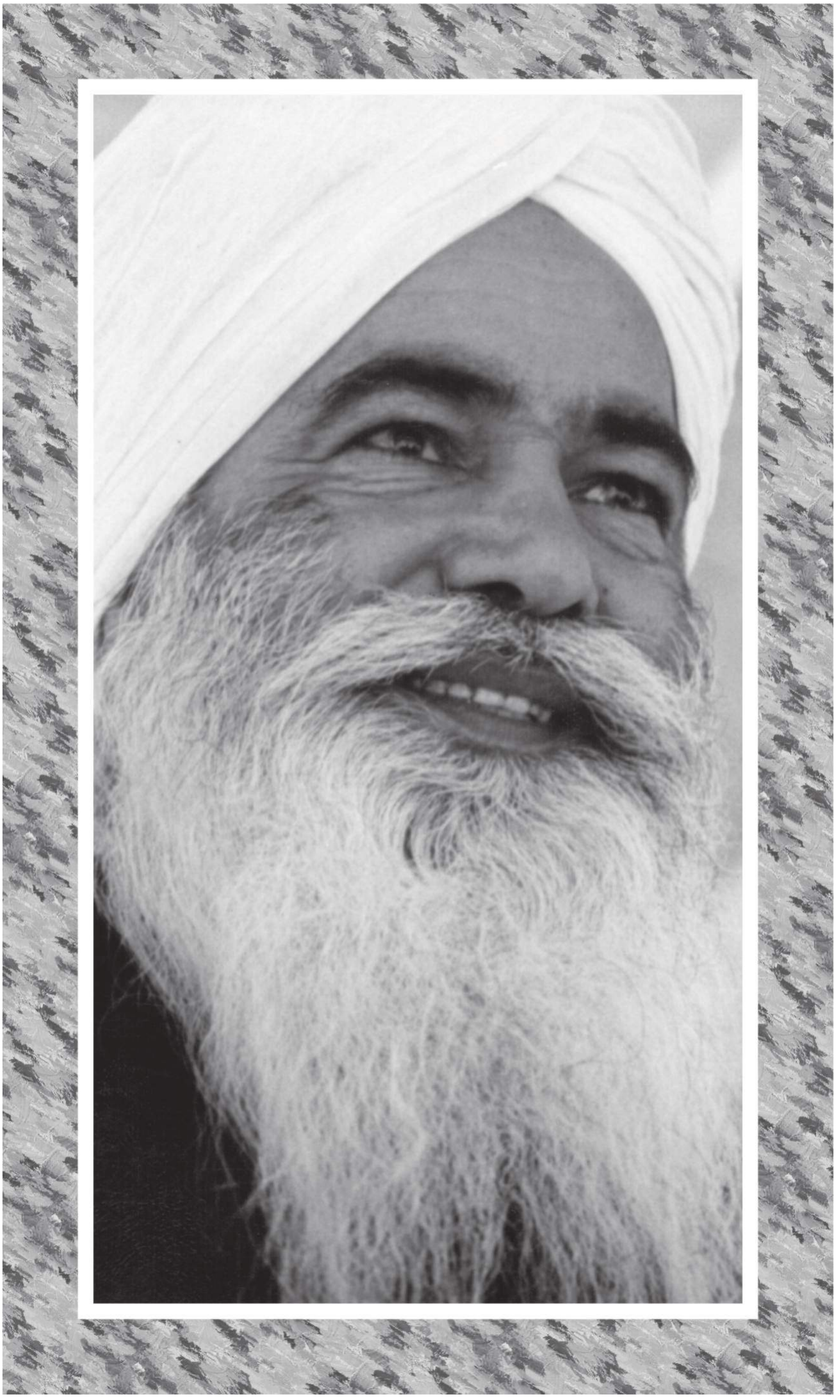

57

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

नया साल – नया मनुष्य जन्म

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 1 जनवरी 1990

हुज़ूर सावन और कृपाल के नाम में आप सबको नये साल की शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि यह नया साल आप सबके लिए खुशियाँ लेकर आए और आप नये साल में ज़्यादा से ज़्यादा भजन–सिमरन कर सकें।

आज के दिन हिन्दुस्तान में बहुत सारे समाज सुबह तीन बजे दरिया, तालाब या नहर पर जाकर स्नान करने को बहुत ही पुण्य समझते हैं। आज के दिन काफी लोग अपनी–अपनी बोली में प्रभु को भी याद करते हैं लेकिन हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हमें उनके साथ जुड़ने का मौका बख़्शा गया है।

जब से इन्सान बना है तब से यह परम्परा चली आ रही है कि प्रभु हमारे अंदर है। आप उस तीर्थ में जाकर स्नान करें जहाँ जन्मों–जन्मों की मैल उतरती है। वह तीर्थ हमारे शरीर के अंदर दसवें द्वार में है। सन्त हमेशा उस तीर्थ की महिमा गाते हैं। जब हम अपनी आत्मा के ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार देते हैं तब आत्मा वहाँ स्नान करती है। सन्त–महात्माओं ने वहाँ के ही स्नान का महत्व बताया है लेकिन हम बाहर रीति–रिवाज में लग गए हैं। वही शिष्य है, वही सन्त है जो सुबह उठकर दसवें द्वार में पहुँचकर स्नान करे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु सतगुरु का जो सिख अखाए, सो भलके उठ हर नाम ध्यावे।
उधम करे भलके परभाती, स्नान करे अमृतसर नहावे।।

जिस जगह का महात्मा ने अपनी बानी में ज़िक्र किया है वहाँ हम पढ़–पढ़ाई से, दुनिया के किसी कर्मकांड या रीति–रिवाज से नहीं पहुँच सकते। पढ़–पढ़ाई, कर्मकांड और रीति–रिवाज से सिर्फ ज़ुबानी जमाखर्च होता है इससे ज़्यादा और कुछ नहीं होता।

कुछ लोग कहते हैं कि फलाने तीर्थ पर काले कौवे सफेद बनकर निकलते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, बाहर किसी पानी में यह ताकत नहीं कि काले कौवे को सफेद कर दे। कबीर साहब कहते हैं चाहे आप काले कम्बल पर सौ मण साबुन लगा लें काला कम्बल उजला नहीं हो सकता। मनमुख को काला कम्बल या कौवा कहा गया है। कौवे की खुराक गंदगी है और हंस की खुराक मोती हैं। गुरुमुख की खुराक नाम का जपना प्रभु से जुड़ना है। जो गुरुमुख के संपर्क में आता है वे उसको भी प्रभु के साथ जोड़ते हैं।

ऋषि–मुनियों ने मेहनत की, कमाई की पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में गए। उन्होंने जो कुछ अपने अंदर देखा उसे धर्म पुस्तकों में दर्ज कर दिया। जिस तरह बाहर तीन नदियाँ गंगा, यमुना और सरस्वती इकट्ठी होती हैं। जहाँ इनका संगम होता है वहाँ स्नान करने को लोग बहुत पवित्र समझते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

तीन नदी त्रिकुटी मांही।

आप पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड में जाएं आपको ये तीनों नदियाँ अंदर भी मिलेंगी। इसमें स्नान करने से आपकी जन्मों–जन्मों से सोई हुई आत्मा जाग पड़ेगी पवित्र हो जाएगी। मनमुख की गति छोड़कर गुरुमुख की गति को प्राप्त करने की कोशिश करेगी। गुरु अमरदेव जी ने अंदर सच्चा अमृतसर देखकर अपनी बानी में लिखा:

सच्चा अमृतसर काया माहे मन भीवे पाहे सो पाहे हे।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं,''आपके अंदर जो अमृतसर है आप उसमें जाकर स्नान करें।'' बाहर जो अमृतसर है हम उसकी बहुत इज़्ज़त करते हैं। गुरु रामदास जी ने इसकी नींव डाली थी और इसे पाँचवें गुरु अर्जुनदेव जी ने पूरा किया था।

बहुत सोचने की बात है कि जब गुरु रामदास जी महाराज इसकी नींव रखने लगे तब उन्होंने मिस्त्री से कहा, ''प्यारेया, हम यहाँ दसवें द्वार के कमल की शक्ल का मंदिर बनाएंगे ताकि लोगों के दिलों में यह चाव पैदा हो कि हम अंदर के कमल में जाकर स्नान करें और आत्मा के जन्म–जन्मांतर के बुरे कर्म धुल जाएं; लोगों के अंदर उत्साह पैदा होगा। वह मिस्त्री कभी अंदर नहीं गया था। वह किस तरह दसवें द्वार के कमल की नकल बना सकता था? मिस्त्री ने कहा, ''मैं मजबूर हूँ मैंने वह कमल देखा ही नहीं।'' गुरु रामदास जी ने मिस्त्री को भजन में बिठाया, अपनी तवज़्जों दी और उसकी सुरत को अंदर ले गए।

किसी चीज़ को अंदर देखकर बाहर उसकी नकल बना लेनी आसान होती है। गुरु रामदास जी ने तवज़्जो देकर मिस्त्री की सुरत उतारी और उससे पूछा, ''क्यों भई अब तो बना लेगा?'' मिस्त्री ने कहा, ''महाराज जी मुझे वहीं रहने दें।'' गुरु रामदास जी ने कहा, ''पहले तू बाहर बना फिर तुझे इसी जगह ले आएंगे।''

प्यारयो, हम सुबह–शाम या जब भी वक्त मिल जाए महात्माओं की बानी पढ़ते हैं। जो कुछ उन महात्माओं ने अपनी ज़िंदगी में किया था और वे जो उपदेश लिखकर गए है अगर हम उस तरह अमल करेंगे तो कामयाब हो जाएंगे लेकिन हम ऐसा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

हम न ब्याहे तो कैसे साहे।

पढ़ना–पढ़ाना इस तरह है जैसे खुद तो शादी न करें और सारी ज़िंदगी लोगों की शादी के गीत गाते रहें। हम महात्माओं की कमाई का ज़िक्र तो करते हैं लेकिन खुद कमाई करने के लिए तैयार नहीं होते। किसी महात्मा की बात करते रहें कि उन्होंने ज़िंदगी में बहुत कमाई की, हम तो उनका ही सहारा लेकर बैठे हैं।

प्यारयो, महात्मा हमारे लिए धर्म ग्रंथों में जो हिदायतें देकर गए हैं हमारा भी फर्ज बनता है कि हम उन हिदायतों पर चलें। जैसे उन्होंने अपने गुरुओं के पास जाकर नामदान प्राप्त किया, मेहनत की हम भी उसी तरह करें तो कामयाब हो सकते हैं।

हम अपने शुभचिंतकों, रिश्तेदारों और यारों–दोस्तों को हर बार नये साल की शुभकामनाएं देते हैं। अगर कोई दूर रहता है तो हम उसको पत्रों के ज़रिए लिखकर भेज देते हैं कि आपको नया साल मुबारक हो। सन्त–महात्मा जब भी इस संसार में आते हैं वे बहुत प्यार से अपनी आत्माओं को, अपने बच्चों को संदेश देते हैं कि यह आपका नया जन्म है। वे हमें यही मुबारक संदेश देते हैं कि पिछले सालों में आपने सुरत–शब्द का अभ्यास नहीं किया। वह आप अब करें और इस ज़िंदगी को सफल बना लें।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपनी आत्माओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि मनुष्य जन्म आपको एक नया जामा मिला है।

माघ मज्जन संग साधुआ धूड़ी कर स्नान।
हर का नाम ध्याए सो सबना लोक निदान।
जन्म कर्म मल उतरे अन्ते जाए गुमान।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने दुनिया को बंदर की तरह नचा रखा है। दिन–रात लोभ का कुत्ता भौंक रहा है। सच्चे मार्ग शब्द–नाम की कमाई करने से ये सारे डाकू शान्त हो जाएंगे। फिर क्या होगा? *उस्तत करे जहान।* जहान को भी अच्छा लगता है क्योंकि जो सारी दुनिया

को अपनी समझता है भगवान भी उसे अपना ही समझता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो।

जब हम भजन–सिमरन करते हैं तो किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे होते, यह तो हम अपने ऊपर ही दया कर रहे होते हैं। जो अपने ऊपर दया करता है वह दूसरों पर भी दया कर सकता है।

महाराज कृपाल सिंह जी ने हमें डायरी* रखने की हिदायत दी कि आप हर महीने अपना लेखा–जोखा करें कि आपने इस महीने में कितने पाप किए? किसी की कितनी निन्दा की? किसी के पैसे का कितना नुकसान किया या फायदा किया? कितना भजन–सिमरन किया? हम महीने के शुरू में अंदर क्या देखते थे और महीने के अन्त में जाकर हमने आगे तरक्की की या नीचे गए?

मैं आप सबको मुबारक देते हुए यही कहूँगा कि आप लोग अपना जीवन उस डायरी के मुताबिक ही बना लें। रोज़ाना डायरी* को बहुत ईमानदारी से गुरु को सामने रखकर भरें, मन का कोई लिहाज न करें। जो गलती एक दिन हो जाती है उसे दूसरे दिन न दोहराया जाए। आप साल भर का लेखा–जोखा बनाएं कि हमने इस साल में भजन–सिमरन में कितनी तरक्की की या हम कितना नीचे गए? नीचे गए तो क्यों गए? तरक्की की तो किस कारण हम ज़्यादा भजन–सिमरन करके अंदर तरक्की कर सके।

प्रभु ने अपनी खास दया करके हम जीवों को सब योनियों से ऊपर चौरासी लाख योनियों का सरदार इन्सान की ऊँची योनि दी है। गुरु ने हमें अपनी बहुत भारी दया करके नाम का तोहफा दिया है। अब हमारा फर्ज़ बनता है कि हम इस जीवन को पवित्र बनाएं शब्द–नाम की कमाई करें।

***

* डायरी का नमूना पन्ना नं 557

58

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

प्रकाश और शब्द धुन को प्रकट करें

सन्त बानी आश्रम, 16 पी. एस. राजस्थान – 6 जनवरी 1990

हाँ भई, उस प्रभु ने बड़े ही ढ़ंग से इन्सानी जामे की रचना की है। हम जो कुछ बाहर आँखों से देख रहे हैं प्रभु ने वह सूक्ष्म रूप में भी रखा हुआ है। महात्मा पीपा कहते हैं:

जो ब्रह्मंडे सो ही पिन्डे जो खोजे सो पावै।
पीपा परम व परम तत्त्व सतगुरु होए लिखावै।।

यह सूक्ष्म चीज़ें हमारे शरीर के अंदर हैं। परम तत्त्व की खोज में हमने इस स्थूल जामें से सूक्ष्म, सूक्ष्म से कारण और कारण से आगे जाना है। हम उस महान सतगुरु की मदद के बगैर अपने आप कुछ नहीं कर सकते।

जब वह महान कलाकार प्रभु, माता के पेट में हमारी रचना करता है तब माता को भी मालूम नहीं होता कि वह कब अपनी महान कलाकारी कर गया। वह प्रभु बच्चे के अंग बनाता है, उसकी रोज़ी–रोटी का इंतज़ाम करता है। यह तो वही जानता है कि इसे औरत के जामे में लाना है या मर्द के जामे में लाना है या इसकी शक्ल बिगाड़कर ही पैदा करना है।

गुरु रामदास जी महाराज बताते हैं कि आज तक सन्तों की साईंस तक कोई नहीं पहुँच सका। बेशक आज साईंस का युग है इसमें कमाल के तरीकों का आविष्कार किया गया है। आप कहते हैं देखो भई, प्रभु ने पाँच तत्त्वों का इन्सान पैदा किया है। इस

मुकाबले न कोई चार तत्त्वों और न ही छह तत्त्वों का इन्सान बना सकेगा। अगर एक भी तत्त्व की कमी हो तो हमें रोग लग जाता है। अगर किसी तत्त्व की बढ़ोतरी हो तो शरीर बिगड़ जाता है। सारे तत्त्व– हवा, आग, पानी, आकाश और मिट्टी एक–दूसरे के विरोधी हैं। ये सारे तत्त्व शब्द–नाम की ताकत के सहारे मिलकर रहते हैं।

अगर हम अंधेरी रात में रास्ता भूल जाते हैं तो हम रोशनी या आवाज़ की तलाश करते हैं। अगर हमें उस वक्त कोई आवाज़ सुनाई देती है तो हम उस आवाज़ के पीछे–पीछे जाते हैं कि यह आवाज़ किस बस्ती या शहर से आ रही है। हमें उस जगह पहुँचाने वाली ताकत वह एक आवाज़ है।

अगर ज़मीन ऊँची–नीची है उस समय किसी रोशनी का प्रबंध जैसे टोर्च वगैरहा हो तो हम झाड़ियों में नहीं फँसते, किसी खड्डे में नहीं गिरते और आसानी से उस रास्ते को तय कर लेते हैं। किस चीज़ ने हमारे लिए यह आसान किया? हम भटके हुओं को किस चीज़ ने मंजिल पर पहुँचाया? वह आवाज़ थी, वह रोशनी थी। इसी तरह उस महान कलाकार ने हमारे अंदर प्रकाश भी रखा है और अपनी महान आवाज़ भी रखी है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अंतर जोत निरंतर बानी।

आप सबके अंदर राम–नाम की ज्योति जल रही है। शब्द की धुनात्मक आवाज़ गूंज रही है। जिसका ज़िक्र हर महात्मा ने किया है। मुसलमानों की पवित्र किताब में आता है कि वह बाँग आसमान से आ रही है। वह कलमा लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। हिन्दु महात्माओं ने उसे आकाश वाणी, राम नाम, राम धुन या दिव्य धुनि कहकर बयान किया हैं।

प्यारेयो, आज जो अच्छे डॉक्टर, फिलोसफर, इंजीनियर, जज या वकील अपनी अच्छी ज़िंदगी बसर कर रहे हैं, वे अपने आप डॉक्टर, इंजीनियर, जज या वकील नहीं बने थे। उन्होंने भी अपने उस्तादों का कहना माना तभी वे कामयाब हुए। विद्या की ताकत हर एक के दिमाग में मौजूद होती है लेकिन जो बच्चा स्कूल जाता है उस्तादों का कहना मानता है वह कामयाब हो जाता है। विद्या तो बाकियों के अंदर भी है लेकिन वह सोई हुई आती है और सोई हुई ही चली जाती है।

हमें यह भी पता है कि डॉक्टर, वकील या जज के अंदर उनके उस्तादों ने कुछ रगड़कर नहीं डाला, कुछ घोलकर नहीं पिलाया। उनके अंदर तब्दीली इसलिए आई क्योंकि उन्होंने उस्तादों की सोहबत की और मेहनत की। इसी तरह सन्त–महात्मा हमारा कोई धर्म नहीं बदलते और हमें कुछ रगड़कर–घोलकर नहीं पिलाते। प्रभु ने सब कुछ पहले से ही हमारे अंदर मौजूद रखा होता है। हम सन्त–महात्माओं की संगत में जाकर इस चीज़ को हासिल कर लेते हैं। आमतौर पर हमें तो दुनिया की भी जानकारी नहीं होती।

हमें जो संसार अंदर दिखता ही नहीं उसके रास्ते में काल ने ऐसे कुरले बनाए हुए है जिन्हें हम पार नहीं कर सकते। यह सिर्फ उस महान गुरु की ही ताकत होती है कि वह हमें बिना किसी मुआवजे के अंदर ले जाकर प्रभु के आगे खड़ा कर देता है कि यह तेरा बच्चा है, भूल गया था भूल बख्शवाने के लिए आया है।

आप जो अंडरग्राउंड मकान ज़मीन के नीचे बनाई हुई गुफा देखने के लिए जा रहे हैं उसके बारे में आपने बहुत कुछ पढ़ा और सुना है। मैं आपको इतना ही बताऊँगा कि यह जगह मैंने अपनी मर्ज़ी से नहीं बनाई थी। उस महान गुरु की मेहरबानी हुई उसी के

हुक्म से यह जगह बनी। मेरे गुरुदेव मेरी आँखें बाहर संसार की तरफ़ से बंद करके अंदर की तरफ़ खोलकर गए।

मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मैं उनका हुक्म मान सका, उनकी दया को प्राप्त कर सका। उनकी महान दया आज भी है। बहुत सारे प्रेमी गुफा में जाते हैं। कई प्रेमियों ने अपना तज़ुर्बा बताया कि उनका शब्द कई साल से बंद था गुफा में जाते ही उनका शब्द खुल गया। शब्द की आवाज़ शुरू हो गई।

हाँ भई, मैं आशा करता हूँ कि अभ्यास से पहले मैं जो रोज़ाना पाँच पवित्र नाम बोलता हूँ उससे मेरा मतलब इतना ही होता है कि जब आप घरों में भी अभ्यास में बैठें सबसे पहले अपने पाँच पवित्र नाम याद करें। ऐसा न हो कि अभ्यास में बैठते ही आपका मन आपको ये पाँचों पवित्र नाम भुला दे।

***

59

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा कार्यक्रम के आखिर में दिया गया संदेश

नाम एक अनमोल रत्न है

मुंबई – 14 जनवरी 1993

गुरुदेव परमात्मा कृपाल का धन्यवाद करते हैं। जिन्होंने सबसे पहले हमें नाम की अनमोल दात बख़्शी इन्सान का जामा दिया, यह उनकी ही दया है। सब सन्तों ने नाम को अमोलक कहकर बयान किया है। गुरु रामदास जी भी कहते हैं:

नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुरु पास ।
सतगुरु सेवा लगया कढ़ रतन देवे प्रकाश ।।

मैं सदा ही कहता आया हूँ कि परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है जो हमारे साथ जाएगी। यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाशक है। परमात्मा के दरबार में सच्ची इज़्ज़त की दाता है। जब तक हम नाम रूपी सन्तों के पास नहीं जाते तब तक हम इस अमोलक धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते।

परमात्मा के भक्त परमात्मा से बढ़कर होते हैं। बेशक वे परमात्मा से बड़े नहीं होते उसके शरीक भी नहीं होते लेकिन उसके प्यारे पुत्र ज़रूर बन जाते हैं। प्यारा पुत्र अपने पिता से प्यार में जो चाहे करवा सकता है।

प्यारयो, कई प्रेमियों ने भजन–अभ्यास में अच्छा अंदरूनी अनुभव बताया यह सुनकर मुझे खुशी हुई। कई प्रेमियों ने यह भी बताया कि हम खुष्क आए हैं लेकिन जब उनसे कहा गया कि इस मौके से फायदा उठाएं उन्होंने कहना मानकर भजन–अभ्यास किया।

मैं उन प्रेमियों पर भी खुश हूँ। उनकी आत्मा को जिस चीज़ की भूख थी वह परमात्मा कृपाल ने पूरी की। मैं उनकी क्या महिमा वर्णन करूं:

तिल तिल दा अपराधी तेरा रती रती दा चोर ।
पल पल दा मैं गुन्ही भरया बख्शी अवगुण मोर।।

आप हमें संसार में नम्रता और प्यार सिखाने के लिए आए। आप प्यार का समुंद्र थे, मैं प्यार का पुजारी था। आपके चरणों में बैठकर मुझे जो प्यार मिला मैं वही प्यार संसार में बाँट रहा हूँ।

मैंने आप लोगों के आगे रोज़ सहजो बाई की बानी पर सतसंग किए हैं। सहजो बाई ने अपने गुरु चरणदास जी के चरणों में बैठकर जो दया प्राप्त की थी वही उन्होंने हम लोगों को अपनी लेखनियों द्वारा समझाने की कोशिश की। सहजो बाई ने बताया कि गुरु और परमेश्वर एक हैं। गुरु हमें भगवान से मिलवाते हैं।

भगवान तो पहले भी हमारे शरीर में समाया हुआ होता है। उसके अंदर होते हुए भी पता नहीं हम कितनी बार जन्में। कितनी बार हम किसी के पति बने कितनी बार किसी की पत्नी बनें कितने बच्चे पैदा किए और कितने परिवार बसाकर चले गए। भगवान अंदर होते हुए भी चोर को चोरी करने से नहीं रोकता और किसी को कोई बुरा कर्म करने से नहीं रोकता। जब गुरु आते हैं वे नाम का दीपक देकर हमारे अंदर छिपे हुए भगवान से हमें मिलवा देते हैं।

गुरु समझाते हैं जिस तरह मेहंदी के पत्तो के अंदर रंग समाया हुआ है फूल के अंदर खुशबू छिपी हुई है और पत्थर के अंदर अग्नि छिपी हुई है उसी तरह से परमात्मा तेरे अंदर ज्योत रूप नाद रूप होकर विराजमान है।

मेरा सबके लिए यही संदेश है कि परमात्मा कृपाल ने हमें इस कार्यक्रम में बैठने का मौका दिया यह उन्हीं की दया है। आपने

अपने देश में जाकर इस पवित्र यात्रा को याद रखना है ताकि आपको प्रेरणा मिलती रहे कि हमने भजन–सिमरन करना है।

मैं हर एक सतसंगी को डायरी (नमूना पन्ना नं. 557) रखने की सलाह देता हूँ कि डायरी ज़रूर रखनी है। अमेरिका की कहावत है किसी पेड़ का फल खाने के बाद ही उसकी मिठास का पता चलता है। उसी तरह भक्ति करने पर ही भक्ति करने के फायदों का पता चलता है। मैं हमेशा कहता हूँ कि सन्तमत कोई परियों की कहानी नहीं, यह सच्चाई पर कायम है।

यह एक सच्चाई है कि परमात्मा हर एक के अंदर है। वह अंदर से ही मिलता है और रास्ता भी अंदर ही है। चाहे अब तक कोई भी सन्त–महात्मा इस संसार में आए वे जीवों को इसी रास्ते पर डालकर ले जाते हैं। गुरु रामदास जी महाराज ने कहते हैं:

सतगुरु सेवा लगया कढ रतन देवे प्रकाश ।।

सतगुरु उसे नाम का रत्न देते हैं जो रोज़–रोज़ अभ्यास करके अपनी आत्मा और मन को साफ रखता है। आप सबने अपने घर वापिस जाकर भजन–सिमरन करना है; यही सेवा है।

जहाँ आपके शब्द रूप गुरु अंदर मदद करने के लिए बैठे होते हैं वहाँ दूसरी तरफ़ काल भी आपके अंदर मौजूद होता है। जो लोग भजन नहीं करते काल अपने तरीके से उन्हें बहका देता है। काल का सबसे बड़ा तरीका यह है कि जब कोई अभ्यास करता है तो उसे गिराने के लिए काल कुछ लोगों के अंदर बैठकर उसकी प्रशंसा करने में लगा देता है कि यह बहुत अच्छा अभ्यासी है इसके जैसा तो कोई सतसंगी है ही नहीं। वह बेचारा उन लोगों की मान–बड़ाई में आ जाता है। लोगों की बड़ाई की वजह से उस पर कालिख चढ़ जाती है, वह जो कुछ अंदर देखता है सुनता है वह बंद हो जाता है।

अगर हमने अच्छी कमीज, पेन्ट–कोट सिलवाकर पहना है और कोई प्रशंसा करता है कि तेरे कपड़े बहुत अच्छे लगते हैं। समझदार आदमी कहेगा, ''हाँ भई, यह दर्जी का कमाल है जिसने इन कपड़ों को सिला है।'' लेकिन मन हमें यह कहने नहीं देता हम भूल जाते हैं हम सोचते हैं कि ये कपड़े मैंने पहने हैं मुझ पर ही जँचते हैं।

प्यारेयो, पहने हुए अच्छे कपड़ों का श्रेय दर्जी को जाता है। इसी तरह अगर कोई हमें अच्छा कहता है तो वह सारी अच्छाई उस गुरु की है जो शब्द–रूप होकर हमारे अंदर बैठे हैं।

आप हमारे गुरुदेव की तरफ़ देखें, आप कुल मालिक होते हुए भी किस तरह छिपकर रहे। आप आज भी हमारी मदद कर रहे हैं। अगर उस समय कोई आपका गुणगान करता तो आप कहते कि ये सब कुछ महाराज सावन सिंह जी की ही दया है।

जिन प्रेमियों को हुज़ूर कृपाल के चरणों मे बैठने का और नाम का अमृत पीने का मौका मिला है वे जानते हैं कि आपके अंदर अपने गुरु के लिए कितनी याद थी, कितनी नम्रता थी और आप अपने गुरुदेव से कितना प्यार–मौहब्बत करते थे। अगर किसी ने जरा सा भी कह दिया कि इस कपड़े को महाराज सावन ने हाथ लगाया है तो आप उस कपड़े को अपने सिर से लगा लेते थे। आप उनका लिखा हुआ नम्रता भरा भजन पढ़ते हैं:

मैत्थों चंगियां जुत्तियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पावां फेरियां।
हाय छेती आवीं यमां ने घेरी आं, दुखड़ी सावन दीदार दी आं।।

आप कहते हैं, ''हे सतगुरु, मुझसे तो अच्छी आपकी जूतियाँ हैं क्योंकि ये जूतियां भगवान के पैरों से लगी फिरती हैं।'' कबीर साहब ने कहा है:

सुपने हु बरड़ाई के जे मुख निखसे नाम ।
ता के पग की पनही मेरे तन को चाम ।।

आप कहते हैं कि जो नाम की कमाई करता है अगर नींद में बड़बड़ाते हुए उसके मुँह से परमात्मा का नाम निकलता है तो मैं अपने तन के चमड़े की जूती बनाकर उसके पैरों में पेश करने के लिए तैयार हूँ। मेरा आपको यह सब बताने का यही भाव है कि उन्होंने हमारे ऊपर दया-मेहर करके अपनी भक्ति का, अपनी याद में बैठने का मौका दिया है।

हमने सदा आपके इस वचन को भी याद रखना है, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं हज़ार काम छोड़कर भजन-अभ्यास में बैठ जाएं। तब तक अपने तन को अन्न की खुराक न दें जब तक आत्मा को खुराक न दे लें।'' हम खाना न खाए तो हमारा तन कमज़ोर हो जाता है लेकिन हमें आत्मा के बारे में पता नहीं कि आत्मा भी जन्मों-जन्मों से भूखी है कमज़ोर है। आत्मा की खुराक शब्द-नाम की कमाई है। सन्तों को संगत अपने प्राणों से भी ज़्यादा प्यारी होती है। गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा है:

सुखी वसे मोरो परिवारा सेवक सिख सभै करतारा।

सतगुरु सदा ही मालिक के आगे अरदास करते हैं कि मेरी संगत मेरा परिवार सुखी रहे। सन्तों का परिवार सन्तों की संगत होती है। मैं आख़िर में आप सबकी वापसी यात्रा की शुभकामना करता हूँ। यह भी आशा करता हूँ कि आप अपने घरों में जाकर सतसंग का कार्यक्रम ज़ारी रखेंगे और शब्द-नाम की कमाई करेंगे।

***

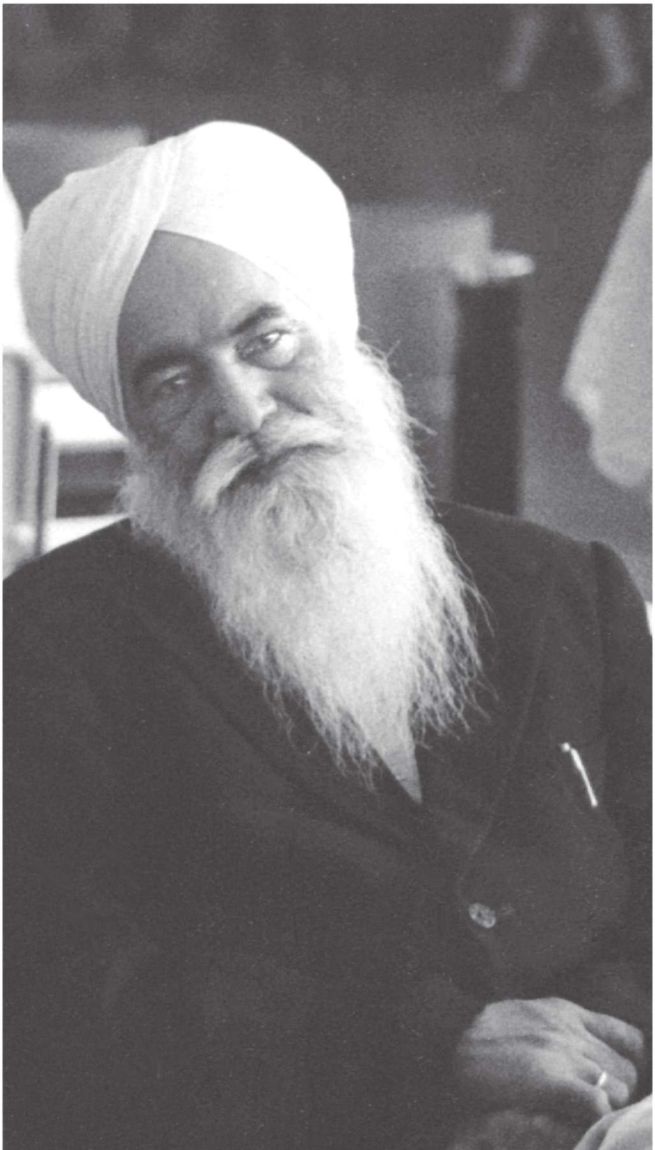

60

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को दिया गया संदेश

सतगुरु की संगत

फ्रांस – 10 जून 1994

अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। आप सबको पता ही है कि यहाँ पर कई भाषाओं के प्रेमी इकट्ठे हुए हैं। अगर हम सारी भाषाओं में सतसंग का अनुवाद एक ही वक्त बोलेंगे तो सतसंग का प्यारा माहौल नहीं बनेगा। यहाँ सतसंग दो भाषाओं में होगा। आशा करते हैं कि ग्रुप लीडर सतसंग के बाद अपनी–अपनी भाषा में प्रेमियों को समझा देंगे।

जो प्रेमी मुंबई के कार्यक्रम में जाते हैं उन्हें पता है कि वहाँ पर आठ भाषाओं के प्रेमी इकट्ठे होते हैं लेकिन सतसंग सिर्फ पंजाबी भाषा में ही होता है। बाद में ग्रुप लीडर अपने ग्रुप को अपनी भाषा में समझा देते हैं। जिन्हें जो भूख होती है जिस आत्मा को प्यास लगी है हम जिसकी याद में बैठे हैं वह हमारी प्यास ज़रूर बुझाता है।

ग्रुप में जो प्रेमी हिन्दुस्तान जाते हैं उन्हें पता है कि कई ऐसी प्रेमी आत्माएँ ग्रुप में इकट्ठी हो जाती हैं जिस दिन बातचीत का दिन होता है तो प्रेमी कह देते हैं कि हमारा कोई सवाल नहीं है, आप हमें एक घन्टा दर्शन ही कर लेने दें। कबीर साहब कहते हैं:

साधु का निरख आँख और माथा सत का नूर रहे तिन साथा।

कबीर साहब ने कहा था कि साधु की आँख और माथा देखने वाली चीज़ें हैं क्योंकि सच का नूर सदा उसके साथ रहता है। जिनकी आत्मा एकाग्र हो जाती है और जिनका मन टिक जाता है उनके मन और आत्मा की प्यास बुझ जाती है। गुरु नानकदेव जी महाराज ने भी कहा है :

जाँकी होय भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी।

हम जैसा ख्याल जैसी श्रद्धा बनाकर बैठते हैं और जैसा हमारा बर्तन होता है हमें उसी तरह का रूप नज़र आता है। सन्तों का स्वरूप एक शीशे की तरह होता है। हम हँसकर देखते हैं तो हँसता हुआ नज़र आता है अगर हम खुश होकर देखते हैं तो खुश नज़र आता है। अगर हम उदास होकर देखते हैं तो उदास नज़र आता है। इसमें शीशे का कसूर नहीं होता कसूर सिर्फ हमारा ही होता है।

***

61

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

साधु की महिमा

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी (सुखमनी साहब की सातवीं अष्टपदी)

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ। जो जो कहै सु मुकता होइ ।।
सुनि मीता नानुक बिनवंता। साध जना की अचरज कथा ।।

परमात्मा अगम है अगाध है। हम उसकी महिमा बयान नहीं कर सकते। किसी भी देश का रहने वाला किसी भी धर्म को मानने वाला परमात्मा को याद कर सकता है; मुक्ति प्राप्त कर सकता है। किसी खास धर्म या जाति को भक्ति करके मुक्ति प्राप्त करने की सहुलियत नहीं है। कोई भी इन्सान परमात्मा की भक्ति करके उसे प्राप्त कर सकता है चाहे वह ऊँची या छोटी जाति वाला हो, हिन्दुस्तानी हो या अमेरिकन हो।

आप सुखमनी साहब की इस अष्टपदी में साधु की महिमा बयान करते हैं। जिस तरह परमात्मा अवर्णनीय है उसकी शोभा बयान नहीं की जा सकती। उसी तरह उसके प्यारे सन्त की शोभा अवर्णनीय है वह भी बयान नहीं की जा सकती।

साध कै संगि मुख ऊजल होत।।
साधसंगि मलु सगली खोत।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाने से हमारा दिल पवित्र हो जाता है। आत्मा पर जन्मों–जन्मों से लगी मैल उतर जाती है।'' अपने पापों की मैल उतारने के लिए दुनिया गंगा या किसी और

सरोवर में स्नान करती है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं नदियों और तालाबों का पानी हमारे शरीर की मैल ही उतार सकता है लेकिन साध–संगत हमारे पापों की मैल उतार देती है। कबीर साहब कहते हैं:

साध मिले ऐह सब टले काल जाल जम छोट।
सीस नंवाया भैं पए सिर पापां दी खोट।।

साध कै संगि मिटै अभिमानु।।
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनि।।

साधु के पास जाने से हमारे अंदर का अहंकार खत्म हो जाता है, हमारे अंदर नूर और प्रकाश पैदा हो जाता है।

साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा।।
साधसंगि सभु होत निबेरा।।

आमतौर पर हमारे दिल में यह ख्याल होता है कि परमात्मा किसी चर्च, सोने के मन्दिर, पहाड़ की चोटी पर या समुंद्र की तह में बैठा है। जब हम यह सब छोड़कर किसी साधु के पास जाते हैं वह साधु परमात्मा को हमारे शरीर के अंदर ही दिखा देता है। साधु की संगत से हमारे पापों के बोझ का भी निबटारा हो जाता है।

साध कै संगि पाए नाम रतन ।।
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु।।

आप कहते हैं, ''साधु के पास जाकर हमें 'नाम–रत्न' मिलता है। यह 'नाम–रत्न' दुनिया की किसी धन–दौलत से नहीं मिलता। साधु के पास पहुँचकर हम सारे यत्न छोड़कर परमात्मा से मिलने की कोशिश में लग जाते हैं।''

साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी।।
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी।।

आप कहते हैं कि साधु की महिमा बयान नहीं की जा सकती। दुनिया के पास ऐसा कोई थर्मामीटर नहीं है जिससे यह समझा जा सके कि साधु की पहुँच कहाँ तक है? साधु की शोभा परमात्मा के अंदर समाई हुई है। तुलसी साहब कहते हैं:

जे कोई कहे सन्त को चीन्हा तुलसी हाथ कान पे दीन्हा।

अगर दुनिया साधु की महिमा को समझ सकती तो क्या लोग क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाते? क्या गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाते या उनके सिर में गर्म रेत डालते? बुल्लेशाह ने कहा है:

बुल्लया साडा उत्थे वासा जित्थे बहुते अन्ने।
ना साडी कोई कद्र पछाने ना सानू कोई मन्ने।।

साधु कै संगि अगोचरु मिलै।।
साध कै संगि सदा परफुलै।।

आप कहते हैं, ''साधु के पास जाकर हमें वह वस्तु मिलती है जिसे ये चमड़े की आँखें नहीं देख सकती। साधु की संगत में हमेशा फायदा ही फायदा है।''

साधु कै संगि आवहि बसि पंचा।।
साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत करने से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे बस में आ जाते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

मन मूसा पिंगल पया पी पारा हरिनाम।

साधसंगि होइ सभ की रेन।।
साध कै संगि मनोहर बैन।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हमारा मन विनम्र हो जाता है। हमारी भाषा में अमृत आ जाता है, यह मीठी हो जाती है।''

साध कै संगि न कतहू धावै।।
साधसंगि असथिति मनु पावै।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत लेखे में है। साधु की संगत करने से हिरन की तरह भटकने वाले मन में ठहराव आ जाता है।''

साध कै संगि माइआ ते भिंन।।
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में आकर शराबी, शराब और कबाबी, कबाब छोड़ देता है। हम बुरे कर्म छोड़कर कसम ले लेते हैं कि फिर ऐसा कर्म नहीं करेंगे। साधु के पास जाने से परमात्मा हमारे ऊपर खुश होता है कि यह जीव साधु की संगत में जाकर भक्ति करेगा, परमात्मा को याद करेगा।''

साधसंगि दुसमन सभि मीत।।
साधू कै संगि महा पुनीत।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत करने से हमें दुश्मन भी दोस्त दिखने लग जाते हैं। हमें हर जगह परमात्मा ही नज़र आता है। साधु की संगत बहुत पवित्र होती है।''

साधसंगि किस सिउ नही बैरु।।
साध कै संगि न बीगा पैरु।।

आप कहते हैं, ''साधु निर्वैर होते हैं। वे हमें किसी से बैर करने के लिए नहीं कहते। वे हमसे मालिक की भक्ति करवाने के लिए संसार में आते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

कोई आवे भाव से कोई आवे अभाव।
सन्त दोहा को पोसते भाव ना गिने अभाव।।

साध कै संगि नाही को मंदा।।
साधसंगि जाने परमानंदा।।

आप कहते हैं, ''साधु का संग करना कोई बुरा काम नहीं; साधु की संगत से ही परमात्मा हमें जानता है।'' रामायण में लिखा है अगर कोई साधु की संगत के बिना राम की भक्ति करता है तो राम उसे ठुकरा देते हैं।

साध कै संगि नाही हउ तापु।।
साध कै संगि तजै सभु आपु।।

हमें जो अहंकार की बीमारी लगी हुई है वह साधु की संगत में जाकर 'नाम' की कमाई करने से ही खत्म हो सकती है।

आप जानै साध बडाई।।
नानक साध प्रभू बनि आई।।

आप कहते हैं, ''दुनिया साधु की महानता को नहीं समझ सकती। साधु खुद अपनी महानता जानते हैं। हम तो साधु को पवित्र इन्सान ही कह सकते हैं लेकिन उनकी महिमा को नहीं समझ सकते क्योंकि परमात्मा खुद साधु रूप में संसार से जीवों को लेने के लिए आता है।''

साध कै संगि न कबहू धावै।।
साध कै संगि सदा सुखु पावै।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत भूल से भी नहीं छोड़नी चाहिए। साधु की संगत में सुख ही सुख है।''

साधसंगि बसतु अगोचर लहै।।
साधू कै संगि अजरु सहै।।

साध कै संगि बसै थानि ऊचै।।
साधू कै संगि महलि पहूचै।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाने का यह फायदा है कि साधु हमारा इश्क सचखंड का बनाते हैं। हमारी आत्मा जहाँ से बिछुड़कर आई थी फिर अपने महल सचखंड पहुँच जाती है।''

साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम।।
साध कै संगि केवल पारब्रहम।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हम सब धर्मों को अपना धर्म समझते हैं। हमारा सब धर्मों से प्यार हो जाता है।'' हम जानते हैं कि सन्तों का हर जाति–धर्म से प्यार होता है। वे हर जाति–धर्म को अपना समझते हैं।

साध कै संगि पाए नाम निधान।।
नानक साधु कै कुरबान।।

हमें साधु से सबसे बड़ी वस्तु नाम मिलता है जिसने इस दुनिया की रचना की है। गुरु नानक साहब कहते हैं,''मैं सदा ही ऐसे साधु पर कुर्बान जाता हूँ जिन्होंने मेरे हृदय में नाम बसा दिया।''

साध कै संगि सभ कुल उधारै।।
साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हम तर जाते हैं। हमारी कुल तर जाती है। हमारे सब यार–दोस्त तर जाते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।

साधू कै संगि सो धनु पावे।।
जिसु धन ते सभु को वरसावै।।

आप कहते हैं, ''हमें साधु से नाम का धन मिलता है। नाम का धन छोटा धन नहीं है।'' कबीर साहब कहते हैं:

कहत कबीर निर्धन है सोई जाके हिरदे नाम ना होई।

साधसंगि धरम राइ करे सेवा।।
साध कै संगि सोभा सुरदेवा।।

आप कहते हैं, ''जब हम साधु के साथ स्वर्गों में से जाते हैं तो धर्मराज कहता है कि यह अच्छा जीव है। इसने साधु का कहना माना। नाम की कमाई की। धर्मराज उसकी सेवा करता है। देवताओं का शिरोमणि देवता इन्द्र भी सतसंगी की जय-जयकार करता है।''

साधू कै संगि पाप पलाइन।।
साधसंगि अंम्रित गुन गाइन।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत से हमारे सारे पापों का नाश हो जाता है।'' कबीर साहब कहते हैं:

जब ही नाम हिरदे धरयो भयो पाप को नास।

साध कै संगि स्त्रब थान गंमि।।
नानक साध कै संगि सफल जनंम।।

आप कहते हैं, ''साधु की संगत में जाकर हमें सब स्थान प्यारे लगते हैं। हमारे दिल में सबके लिए इज़्ज़त हो जाती है। साधु की संगत करने से हमारा जन्म सफल हो जाता है।'' गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

बिन साधु जे जीवणा ते तो बिरथा रूप।

साध कै संगि नही कछु घाल।।
दरसनु भेटत होत निहाल।।

आप कहते हैं, ''जैसे मन्दिरों में जाकर हमें धूप–सामग्री जलानी पड़ती है घण्टे बजाने पड़ते हैं लेकिन साधु के पास जाने के लिए हमें किसी आडम्बर की ज़रूरत नहीं पड़ती। सिर्फ साधु का दर्शन ही हमारी ज़िंदगी के लिए काफी है। उससे ही हमारा उद्धार हो जाता है।''

साध कै संगि कलूखत हरै।।
साध कै संगि नरक परहरै।।

साधु के पास जाने से काल का दायरा खत्म हो जाता है, नर्कों का डर भी खत्म हो जाता है। जब राजा जनक शरीर छोड़कर अपने धाम को जाने लगे तब रास्ते में नर्कों में जीवों की चीख–पुकार सुनकर उन्होंने धर्मराज से पूछा, ''ये जीव क्यों कुरला रहे है?'' धर्मराज ने कहा, ''इन जीवों नें संसार में बहुत पाप और अत्याचार किए हैं, जिसकी इन्हें सज़ा दी जा रही है।'' राजा जनक ने कहा, ''इन्हें छोड़ दो।'' धर्मराज ने कहा,''अगर कोई इनका हरजाना दें तो मैं उन्हें छोड़ दूंगा।''

राजा जनक ने कहा,''मैं एक तरफ़ अपना सिमरन रखता हूँ तुम दूसरी तरफ जीवों को रख दो। जितने जीव मेरे सिमरन के बराबर आ जाएं तुम उन्हें छोड़ देना।'' राजा जनक ने एक घड़ी का सिमरन रखा धर्मराज ने सारे जीवों को दूसरी तरफ रखा फिर भी सिमरन का पलड़ा भारी हुआ। राजा जनक ने नर्कों के सारे कुण्ड खाली कर दिये। महात्मा कहते हैं:

धन धन राजा जनक है जिन सिमरन कियो विवेक।
एक घड़ी के सिमरने पापी तरे अनेक।।

साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला।।
साधसंगि बिछुरत हरि मेला।।

आप कहते हैं, ''यहाँ भी साधु की संगत सुखदाई है। आगे चलकर भी साधु का संग सुखदाई है। साधु हमें बुरे कर्मों से हटाकर नाम जपने के लिए प्रेरित करते हैं।''

जो इछै सोई फलु पावै।।
साध कै संगि न बिरथा जावै।।

हमारी जो भी इच्छा है साधु उसे पूरी करते हैं। शर्त यह है कि हम साधु का कहना मानें। साधु के कहे मुताबिक अपना जीवन ढालें, नाम जपें, पवित्र बनें। साधु की संगत कभी बेकार नहीं जाती।

पारब्रहमु साध रिध बसै।।
नानक उधरै साध सुनि रसै।।

परमात्मा साधुओं के अंदर बसता है। साधुओं की संगत में जाकर जीव का कल्याण होता है। कबीर साहब कहते हैं:

मन मेरा पंखी भया उड़कर चढ़या आकास।
स्वर्ग लोक खाली पया साहब सन्तन पास।।

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ।।
साधसंगि हरि के गुन गाउ।।

हमने साधु की संगत में जाकर उस शब्द को सुनना है जो सचखंड से उठकर हमारे मस्तक में धुनकारे दे रहा है।

साध कै संगि न मन ते बिसरै।।
साधसंगि सरपर निसतरै।।

ऐसा नहीं कि जब तक साधु की संगत में रहे उनके दर्शनों में मग्न रहे और जब दुनिया में आए तो उनकी संगत को भूल गए। हमें साधु संग को भूलना नहीं, साधु स्वरूप को दिल में बिठा लेना है। उसे साँस-साँस के साथ याद करना है।

साध कै संगि लगै प्रभु मीठा।।
साधू कै संगि घटि घटि डीठा।।

हम जिस परमात्मा को दूर समझते थे साधु के पास जाकर वह परमात्मा हमें इतना प्यारा इतना मीठा लगता है कि हम उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। हम साधु की संगत में जाकर ही जान सके कि वह परमात्मा हर घट में समाया हुआ है। पशु,पक्षी, इन्सान, हैवान सबके अंदर एक ही परमात्मा है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

दूजा होये सो अवरो कहिए।

हे परमात्मा, तूने सबको बनाया है सब में तू ही बैठा है।

साधसंगि भए आगिआकारी।।
साधसंगि गति भई हमारी।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''साधु की संगत करके हमें हुक्म मानने की आदत पड़ जाती है। हम जान जाते हैं कि परमात्मा का भजन करना ज़रूरी है। साधु संगत में ही हम अनुशासन सीखते हैं। साधु संगत में रहकर जीव जान जाता है कि शराब नहीं पीनी, माँस नहीं खाना, परस्त्री को नहीं भोगना। वह हर किस्म के ऐब छोड़ देता है। अपने सतगुरु की आज्ञा का पालन करता है।''

साध कै संगि मिटे सभि रोग।।
नानक साध भेटे संजोग।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''साधु संगत करने से हमारे जन्मों-जन्मों के रोग खत्म हो जाते हैं लेकिन पूरे साधु की सोहबत तभी मिलती है जब परमात्मा अपना संयोग लिख दे। जिस तरह हम गरीबी-अमीरी, सुख-दुःख, बीमारी-तन्दरुस्ती अपनी

किस्मत में लिखवाकर लाए हैं, इसी तरह अगर हमारी किस्मत में साधु का संग नहीं लिखा तो चाहे साधु हमारे घर में ही क्यों न पैदा हो जाए, हमारे नज़दीक ही रहने लग जाए लेकिन हमें उस पर ऐतबार ही नहीं आएगा।''

साध की महिमा बेद न जानहि।।
जेता सुनहि तेता बखिआनहि।।

आप कहते हैं, ''वेद साधु की महिमा बयान नहीं कर सकते। वेद ब्रह्म तक त्रिकुटी तक ही बयान करते हैं। सन्त चौथे पद से आते हैं। जिस तरह नीचे खड़ा आदमी छत पर खड़े आदमी को नहीं देख सकता, उसी तरह वेद सन्तों की महिमा बयान नहीं करते क्योंकि उनकी पहुँच चौथे पद तक नहीं होती।''

साध की उपमा तिहु गुण ते दुरि।।
साध की उपमा रही भरपूरि।।

जब हम रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण से थोड़ा ऊपर जाते हैं तभी हमें साधु की महिमा का पता चलता है। साधु की महिमा सदा भरपूर होती है।

साध की सोभा का नाही अंत।।
साध की सोभा सदा बेअंत।।

आप कहते हैं, ''हम साधु की महिमा का अन्त नहीं पा सकते साधु की शोभा बेअन्त हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

तू सुलतान कहाँ हो मियाँ तेरी कवन वड़ियाई

अगर हम तुझे सुलतान या बादशाह कह दें तो उससे तुम्हारी महिमा बयान नहीं होती।

साध की सोभा ऊच ते ऊची।।

साध की सोभा मूच ते मूची।।
साध की सोभा साध बनि आई।।
नानक साध प्रभ भेदु न भाई।।

आप कहते हैं, ''साधु की शोभा साधु ही जानते हैं। साधु और परमात्मा में कोई फर्क नहीं है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हर का सेवक सो हर जेहा भेद ना जाणों मानस देहा।
ज्यों जल तरंग उठे बहु भाँती मिल सलले सलल समाऐंदा।।

इस अष्टपदी में गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने साधु की महिमा को बड़े प्यार से बयान किया है। हमें भी चाहिए साधु की संगत से फायदा उठाएं, अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

भाग – छह

सतगुरु के मुख्य संदेश

''जो तुम्हारे अंतर में है उस पर निर्भर होना ही फायदेमंद है। अगर आप सोचते हैं कि वह दूर है तो वह दूर ही होगा, उसे पास आने में समय लगेगा। अगर आप मानें कि वह पास ही है तो वह उसी समय आ जाएगा। इसलिए आप औरों पर निर्भर न हों, सबकी मदद हो रही है। वह कभी भी आपसे जुदा नहीं है, यह उसका वायदा है कि जब तक संसार है मैं तुम्हें कभी भी छोड़कर नहीं जाऊंगा।''

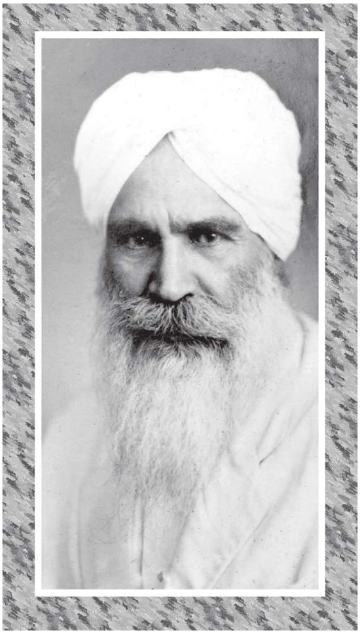

– परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज
14 अगस्त 1974

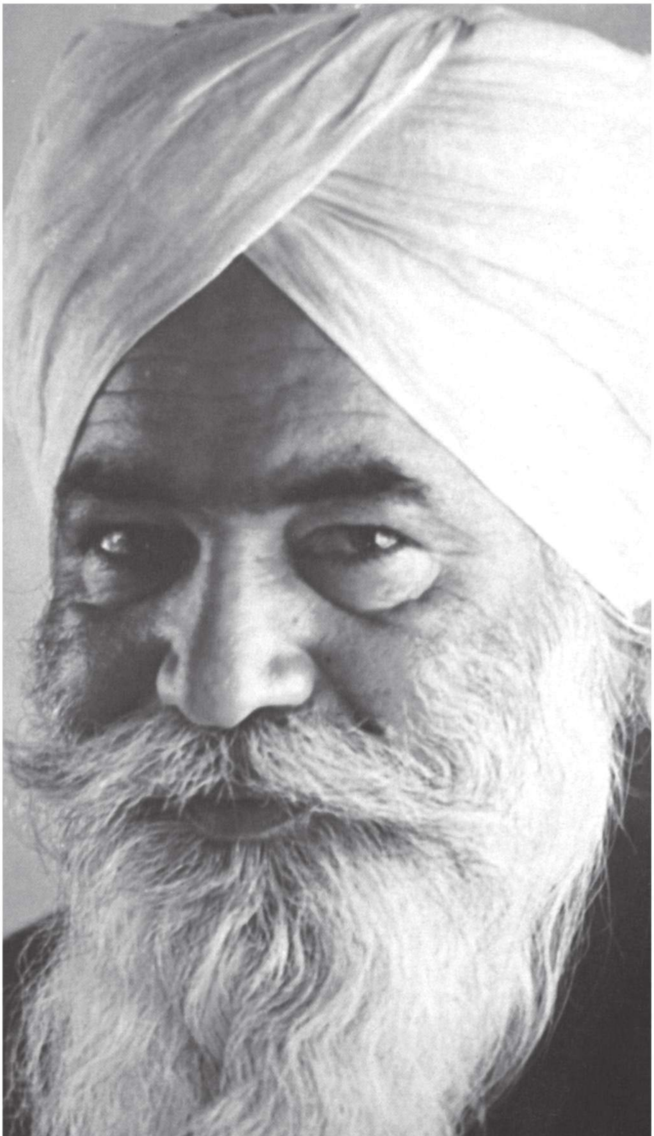

62

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक खास संदेश

मेरे दिल के जज़्बे को समझें

मुंबई 6 जनवरी 1997

सच्चे पातशाह हुज़ूर सावन–कृपाल के प्यारे बच्चों,

नये साल की खुशी के मौके पर मेरे महान सतगुरु के पवित्र नाम और उनकी सच्ची–सुच्ची याद में आप सबको मेरी तरफ़ से बहुत–बहुत शुभकामनाएं और बधाई। मैं चाहता हूँ कि नया साल आपके लिए खुशियों भरा हो और आप सदा प्रगति के पथ पर रहें।

प्यारेयो, सब ऋषियों–मुनियों और पीर–पैगम्बरों ने अपने समय के अनुसार अपनी–अपनी भाषा और शब्दों में हमें सावधान किया है कि पता नहीं मौत का बाज़ कब और कहाँ आकर हम पर झपट्टा मारे। मौत का बाज़ छोटा–बड़ा, स्त्री–पुरुष, अमीर–गरीब, गोरा–काला नहीं देखता। यह टलता नहीं किसी का लिहाज नहीं करता, किसी से डरता नहीं किसी के साथ रियायत नहीं करता। यह वक्त का बड़ा पक्का और पाबंद है; निश्चित समय पर आकर मुँह दिखाता है। यह रोते–धोते, चीखते–चिल्लाते हुए हमारी जान को कुर्क करके अपने साथ ले जाता है। गुरु बानी में आता है:

राणा राओ न को रहे, रंक न तुंग फ़क़ीर।
वारी आपो आपनी, कोऐ न बान्धे धीर।।

परमपिता कृपाल अपने सतसंगों में मौत का ज़िक्र करते हुए उर्दू का यह शेर पढ़ा करते थे:

अगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।।

हम जीव मौत को भूले बैठे हैं और मौत को नजरअंदाज करके आने वाली सदियों का सामान बना रहे हैं जबकि हम नहीं जानते कि अगला साँस आएगा या नहीं!

सच्चे पातशाह सावन कहा करते थे, ''यह आश्चर्यजनक बात है कि हम अपने रिश्तेदार, साथी–सम्बंधी, दोस्तों–मित्रों को अपने कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में अग्नि के हवाले कर आते हैं लेकिन हमारे इस मश्करे मन ने कभी हमें यह महसूस नहीं होने दिया कि ऐसा दिन हम पर भी आएगा और हमें इस दुनिया के भरे बाजार को अचानक छोड़कर जाना पड़ेगा। वह मौका हमारे ध्यान में नहीं।'' गुरुबानी का फरमान है:

कहाँ सो भाई मीत है, देख नैन पसार।
इक चाले इन चालसी सब कोई अपनी वार।।

सूफ़ी सन्त फ़रीद साहब कहते हैं, ''मौत के वक्त जान टूटती है हड्डियाँ कड़–कड़ करती हैं:

जिन्द निमाणी कडिये हड्डां कू कड़काए।

कबीर साहब अपनी बानी में हमें समझाते हैं:

तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।
आध घड़ी कोऊ न राखत, घर ते देत निकार।।

घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी।
जब ऐह हंस तजी यह काया, प्रेत–प्रेत कर भागी।।

भक्त नामदेव जी ने इस मौके का चित्र इस तरह खींचा है:

मेरी मेरी कौरव करते, दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र झुले थे, देही गिरज न खाई।
सरब सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई।
कहाँ भयो दर बांधे हाथी, खिन्न में हुई पराई।।

सन्तों की बानी बड़ी साफ होती है, यह वहम और भ्रम नहीं रहने देती। गुरु नानक साहब कहते हैं:

मौत न महूर्त पुछिया पुच्छी तिथि न वार।
इकनी लदेया इक लद चले इनकी बधे भार।।

यह मत समझें कि मौत पंडित से तिथि–वार पूछकर आएगी या महूर्त निकलवाकर आएगी कि कौन सा समय अच्छा है?

नौं जिना सुलतान खान हुन्दे डिढे खेह।
नानक उठि चलिया सब कुड़े टुटे नेह।।

आप यह न सोचें, मौत गरीबों को ही आती है राजा–महाराजाओं का लिहाज करती है। मौत का डंक सबके लिए एक बराबर है।

प्यारे बच्चों, मैं आपको खुशी और उत्साह के साथ नये साल की शुभकामनाएं देता हूँ। साथ ही आपको ज़्यादा ज़ोरदार शब्दों में अपनी दिली भावना और प्यार के साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि आप लोग होश करें, समझदारी से काम लें मोह–माया और अज्ञानता की गहरी नींद से उठें; सच्चाई को समझें। मौत को सच और जीने को झूठ जानकर उस धन को इकट्ठा करें जो अंत समय में आपके काम आए और इस संसार से जाते वक्त हमारी सहायता करे।

सब सन्तों ने इस मनुष्य जामें की बड़ी उपमा बताई है क्योंकि इस देह में रहते हुए ही हम परमात्मा से मिल सकते हैं बाकी योनियों को यह रियायत नहीं है। कबीर साहब कहते हैं:

जिस देही को सिमरे देव सो देही भज हर की सेव।
भजो गोबिंद भूल मत जाओ मानस जन्म का ऐही लाहो।।

गुरु अर्जुनदेव जी ने कहा है:

लख चौरासी जून सवाई मानस को प्रभ दी वडियाई।
इस पौड़ी ते जो नर चूके सो आए जाए दु:ख पायेदां।।

एक जगह गुरु साहब ने इन शब्दों को इस तरह बयान किया है:

भई प्राप्त मानुष देहुरिया गोविंद मिलन की एह तेरी बरिया।
अवर काज तेरे किते ना काम मिल साध संगत भज केवल नाम।।

प्यारे बच्चों, मैं आपको यह सब कुछ सदा ही सतसंग में बताता रहा हूँ लेकिन आज इसलिए ज़ोरदार शब्दों में दोहरा रहा हूँ ताकि आप इसे समझें और इस पर अमल करना शुरू कर दें।

प्यारेयो, मेरे दिल के जज़्बे को समझें मेरे दिल की भावना की कद्र करें, मेरे लफ्ज़ों को अपने जीवन का अंग बनाएं। अपना ज़्यादा से ज़्यादा समय अभ्यास में लगाएं ताकि मुझे आराम मिले। मेरे महान गुरु ने मुझे जो ड्यूटी दी है उस ड्यूटी को निभाने में आप मेरी मदद करें ताकि मेरा भार हल्का हो और आप भी उन दोनों महान हस्तियों की खुशी और दया प्राप्त करें।

प्यारेयो, यह समय फिर नहीं आएगा और आप इस समय को आँखें मल-मलकर रोऐंगे पछताएंगे। मैं आपको कैसे समझाऊं! आप मेरे दिल से निकली हुई पुकार और विनती को सुनें। मेरी बात को समझें और आज से ही इसी वक्त से मजबूत होकर भजन-सिमरन में लग जाएं।

अगर हमारी कमाई नेक होगी, जीवन साफ-सुथरा होगा गुरु पर भरोसा होगा तो अभ्यास बड़ी जल्दी रंग लाएगा। आओ! आज से ही हल्ला बोलें, गुरु के दरबार की तरफ़ आगे बढ़ें। गुरु की खुशी प्राप्त करें और अपना लोक-परलोक सुहेला करें।

आपके जोड़े झाड़ने वाला

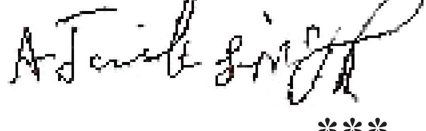

***

63

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सतसंग का एक भाग

गुरु सदा जीवित रहते हैं

सैन्बोर्नटन, अमेरिका 8 जुलाई 1980

जब गुरु कहते हैं कि यही समय है, भक्ति करो, भजन करो, उनके कहने के अनुसार हम उस वक्त का फायदा नहीं उठाते, ऐसा सोचते हैं कि बाद में भजन करेंगे। लेकिन जब सतगुरु इस संसार से चले जाते हैं फिर हम रोते पछताते हैं कि गुरु तो चले गए।

कमाई वाले महात्मा हमें समझाते हैं कि गुरु कभी नहीं मरते वे सदा के लिए जीवित हैं। जो प्रेमी गुरु की देह को पकड़ते हैं उनके किए हमेशा पछतावा रहता है, क्योंकि गुरु देह नहीं होते शब्द–रूप होते हैं। जो ऐसा कहते हैं कि गुरु मर गए उन्हें अदालत में खड़ा करो कि आपने मरने वाला गुरु क्यों किया? क्योंकि गुरु मरते नहीं वे सदा के लिए जीवित हैं।

बेशक शिष्य को नाम देकर गुरु शरीर छोड़ जाए, उस शिष्य के लिए गुरु सदा ही जीवित है। सतगुरु मरते नहीं सिर्फ शरीर बदलते हैं। फर्क इतना होता है कि शिष्य गुरु के स्थूल शरीर के दर्शनों से खाली रह जाते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

सतगुरु मेरा सदा सदा ना आवे ना जाए।
वो अविनाशी पुरुष है हरदम रहा समाए।।

जिस सतगुरु से हमें नाम मिला है, हमें उनका ध्यान नहीं बदलना चाहिए। उनके उत्तराधिकारी के सतसंग में जाना चाहिए।

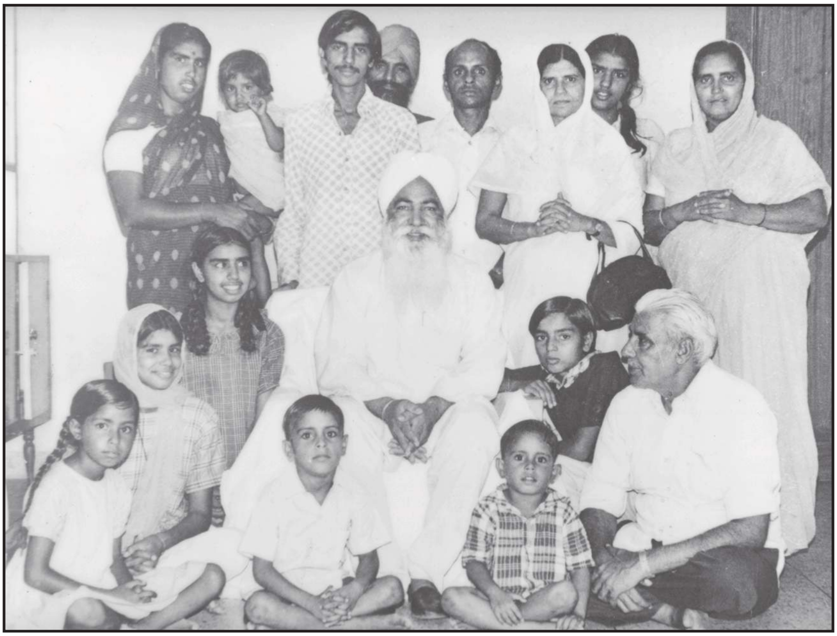

अगर हमारे अंदर भजन–अभ्यास की कोई रुकावट है तो उनके उत्तराधिकारी को बताकर उनसे फायदा उठा सकते हैं।

एक माली बीज़ बीज़ता है और दूसरा माली आकर उन्हें पानी देता है। उसी तरह एक महात्मा जीवों को नामदान देते हैं और दूसरे महात्मा आकर सतसंग का पानी देकर उन्हें हरा–भरा बना देते हैं। नये शिष्य जीवित महापुरुष ही बना सकते हैं लेकिन जिन्होंने गुरु के देह को सारी ज़िंदगी पकड़ा होता है वे बेचारे परेशान रहते हैं क्योंकि गुरु देह नहीं। कबीर साहब कहते है:

गुरु करेया है देह का सतगुरु चीन्हा नाहीं।
लख चौरासी धार में फिर फिर गोते खाएं।।

***

64

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक खास संदेश

सच्चाई पर अडिग रहें

16 पी. एस. राजस्थान सितम्बर 1986

मैं जो कुछ बोल रहा हूँ अपने गुरु सावन–कृपाल की दया से बोल रहा हूँ। जमाना बहुत खतरनाक है मन दुनिया में भटक चुके हैं। सब नाम की कमाई करने के चोर हैं लेकिन गुरु बनने के लिए सब होशियार हैं। मैंने काफी प्रेमियों को नामदान दिया है। मेरे गुरुदेव ने मुझे जो मिशन चलाने के लिए कहा था मैंने वह मिशन ईमानदारी से और सच्चे दिल से चलाया है।

मुझे अंदर से मेरे गुरुदेव का यह हुक्म नहीं कि फलाने दिन फलाने समय इस संसार से जाना है। सन्त ऐसे चमत्कार नहीं दिखाते, गुड़ियों का खेल नहीं करते। मैं काफी महीनों से यह सब बोलने के लिए सोच रहा था। जब मेरे गुरु सावन–कृपाल ने भी चोले छोड़े तब कई पार्टियाँ बनी। लोग जायदादों के लिए कोर्ट में गए। उस समय लोगों को हँसने का मौका मिला कि पूरे गुरु के शिष्य आपस में लड़ते–झगड़ते हैं। मेरे गुरु कृपाल ने कहा था कि कोर्ट में न जाएं यह आपके फायदे में होगा।

मैं हमेशा ही इशारों के मुताबिक अपने सेवकों को बताता रहा हूँ लेकिन अफ़सोस, किसी ने भी इस तरफ़ तवज़्जो नहीं दी। ज़िंदगी ज़्यादा से ज़्यादा बेआराम बन गई। यह मशीन नहीं जो दबादब काम करती जाए। आखिर इसकी भी कोई लिमिट होती है। मैं यह सब कुछ अपने गुरुदेव के हुक्म से बोल रहा हूँ कि कोई

आदमी झूठी गुरुआई न करे और न ही कोई सतसंगी झूठे के पीछे लगे। एक-एक गलती का हिसाब देना पड़ता है।

सन्तों की बानियों से पता चलता है जैसा कि मैं बहुत से सतसंगों में कह चुका हूँ कि झूठे गुरु और झूठे शिष्यों को भी ज़्यादा से ज़्यादा सज़ा मिलती है। सुन्दर दास के महाराज कृपाल के साथ जो अनुभव हुए थे उसे मिस्टर ओबराय ने किताब में लिखा है। हर कोई वह किताब पढ़कर देख सकता है। सन्तों की लेखनियाँ डराने के लिए नहीं होती और न ही वे हमें लालच देते हैं।

संगत के अंदर बीज़ नाश नहीं होता, मुझे समझने वाले भी हैं। यहाँ आश्रम में मेरे बच्चों ने, लाला फैमिली ने बहुत सेवा की है जिसकी मैं कद्र करता हूँ। मैंने लाला को पिता बनाकर उसके साथ प्यार किया पर अफसोस! मैंने लाला को तीस साल कहा लेकिन उसने कोशिश नहीं की। हुज़ूर कृपाल कहा करते थे, ''प्यार दो तरफ़ा होता है, एक तरफ़ा नहीं होता। भँवरा लाट के साथ प्यार करता है लेकिन लाट को पता नहीं होता। जब भँवरा लाट के ऊपर आता है तो लाट उसे जला देती है।

मैं अपने बच्चों की ज़्यादा से ज़्यादा कद्र करता हूँ। गुरमेल, बलवन्त और बलवन्त का छोटा बच्चा सुखपाल इन्होंने मुझे सदा प्यार दिया। सन्तों का उसूल है अगर परमात्मा ने किसी की अमानत रखी होती है कि तू गुरुआई का काम करेगा तो सन्त उसे ज़रूर देते हैं। आप पृथ्वी की कहानी पढ़कर देख सकते हैं। बानी में आता है गुरु रामदास जी पृथ्वी से कहते हैं, ''पुत्र, तू बाप के साथ क्यों झगड़ता है? बड़ों के साथ झगड़ना अच्छा नहीं होता।''

मैं इतना कुछ इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि बाद में लोग जायदाद के लिए झगड़ते हैं जोकि ठीक नहीं होता। जो इतना कुछ

बनाकर चला जाता है अगर वह साथ लेकर नहीं जाता तो पिछले वारिस कौन सी आशा लगाते हैं? काल कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता, हमारे मन को भटकाता है; आपस में लड़वाता है।

मैंने अपनी इस ज़मीन एक मुरब्बे को सरकार के घर जाकर कायदे–कानून के मुताबिक अपने बच्चों के नाम लिख दिया है ताकि बाद में इन्हें कोई परेशान न करे। ये बच्चे इस जायदाद के भूखे नहीं लेकिन मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ देखा है। बाद में जो लोग खुद भटके होते हैं वे दूसरे लोगों को भी भटका देते हैं।

मैंने अपने गुरु की दया से अपनी ज़िंदगी बड़े ही प्यार भरे ढंग से व्यतीत की है। मैंने सारी ज़िंदगी किसी के साथ लड़ने–झगड़ने की कोशिश नहीं की। मैंने अपने शरीर के किसी अंग से बुराई का काम नहीं लिया बेशक मेरी ज़िंदगी में कई तोहमतें लगी लेकिन मैंने उन तोहमतों को गुरु प्यार में स्वीकार किया। मेरे दिल में हमेशा यही रहा कि सच सच है, सच पर खड़े रहो। यही मेरे गुरु कृपाल का वाक है। मेरे दिल के अंदर कभी भी किसी से बदला लेने की भावना पैदा नहीं हुई।

मैं अपने बच्चों को यही कहकर खुश हूँ कि किसी से पूजा लेकर न खाएं। इनके पास अपनी गुजर के लिए जायदाद है। अपना कमाएँ और खाएं। सतसंग बड़े शौक से सिर्फ आश्रम के अंदर ही चला सकते हैं। अगर यह बच्चे मेरे हैं मेरे बने हैं तो मुझे बिल्कुल रोएँ नहीं क्योंकि मैं कोई बुराई करके नहीं जा रहा। ये मुझे तन–मन से बहुत प्यारे हैं। अगर कोई ये कहे कि मुझे बुलाया नहीं इस संस्कार में शरीक नहीं किया यह इनके बस का खेल नहीं। मैंने खुद ही इनके आगे विनती की है और आशा करता हूँ कि ये ज़रूर इस पर पहरा देंगे।

सन्त संसार में कभी भी अपनी मढ़ियाँ बनवाने के लिए नहीं आते। मेरी इन्हें खास हिदायत है कि मेरी कोई जगह न बनाएँ। सन्त किसी जगह से बंधे हुए नहीं होते। वे शब्द में से आते हैं और शब्द में जाकर ही समा जाते हैं। ऊँचे भाग्य हों तभी ऐसे सन्त मिलते हैं। मेरा हमेशा यह रहा अगर भूतों की तरह फिर इस संसार में चक्कर लगाने हैं तो सन्तों से नाम लेने का क्या फायदा?

मैं संगत के आगे यही प्रार्थना करता हूँ कि मैं छिपकर नहीं रहा न ही मेरे गुरु ने मुझे छिपने दिया। नाम ज़िंदगी का बीमा होता है। मैंने हर किसी को खुले दिल से रूहानी दौलत दी। पश्चिम से संगत आई तो उन्हें यही कहा कि कृपाल की मौज देने के लिए पैदा हुई है। प्यारेयो ले जाओ। मुझे खुशी है कि उन लोगों ने रुहानियत की बहुत कद्र की।

जिन प्रेमियों ने मुझे सहयोग दिया रसल पर्किन्स, नोरमा फ्रेज़र, बग्गा फैमिली, डा. मोलिना, डान मेकन और भी बहुत से प्रेमियों ने मुझे इन्सान नहीं परमात्मा रूप समझा। मैं सबकी सिफारिश अपने गुरु के आगे करूँगा। वह बखशिंद है, दयालु है।

यह सब मैंने किसी को परेशान करने के लिए नहीं बोला। मेरी राख को मेरे खेत के अंदर ही भस्मी बनाकर डाल दें और मेरा बाकी सामान नहर में बहा दें। कोई भी जगह बनाने की कोशिश न करें। अगर यह समझते हैं कि इसे अच्छे तरीके से दफनाया जाए या कोई जगह बनाई जाए शायद इसका कुछ बढ़ जाएगा, ऐसा नहीं किया तो शायद घट जाएगा। कबीर साहब ने कहा था:

जे मृतक को चन्दन चढ़ाए तो मृतक से क्या फल पाए।
जे मृतक को बिष्टा में रलाएँ तो मृतक का क्या घट जाए।।

मैं बचपन से सदा ही इस बात को लेकर चला:

मरना भला परदेस का जहाँ ना कोई माई बाप।
ना रोए ना पिटिए ना कोई भया उदास।।

आज सितम्बर की 5 तारीख है रात का टाईम तकरीबन 9 बजे हैं। मैं फिर से कहता हूँ कि जो संगत में मज़बूत रहेंगे उनकी ज़्यादा से ज़्यादा संभाल की जाएगी अगर मेरे बाद पार्टियों में बँट गए तो कबीर साहब का वाक् है:

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक ना लग्गी ज्यों बाँस बजाईऐ फूंक।।

मैंने जो कुछ बोला है पूर्व या पश्चिम सब प्रेमियों के लिए एक ही वचन है कि सब मजबूत रहें क्योंकि मेरे सेवक हर जगह फैले हुए हैं। मेरे गुरु ने मुझसे जितनी साधना करवाई है अगर आपको कोई इस किस्म की साधना वाला मिले तो आप बड़ी खुशी से उससे फायदा उठाएँ। उस हालत में मैं भी आपकी मदद करने के लिए तैयार हूँ। झूठे के पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद न करें।

सावन से पूछा कि दुनिया ने बहुत सारी पार्टियाँ बना रखी हैं? सावन ने कहा, ''अभी तो बहुत थोड़ी पार्टियाँ हैं वक्त आएगा कोई शिष्य बनने के लिए तैयार नहीं होगा। सब अपने आपको गुरु साबित करेंगे कि मैं ही सच्चा हूँ।''

मैं सरकारी कागजों के अलावा प्रेम-प्यार से यह एक किस्म की वसीयत भी बोलकर जा रहा हूँ जो सदा संगत में सनद रहेगी। सारी संगत को बहुत प्यार, शुभकामनाएँ।

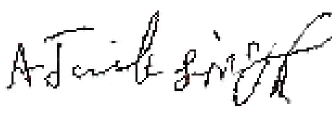

***

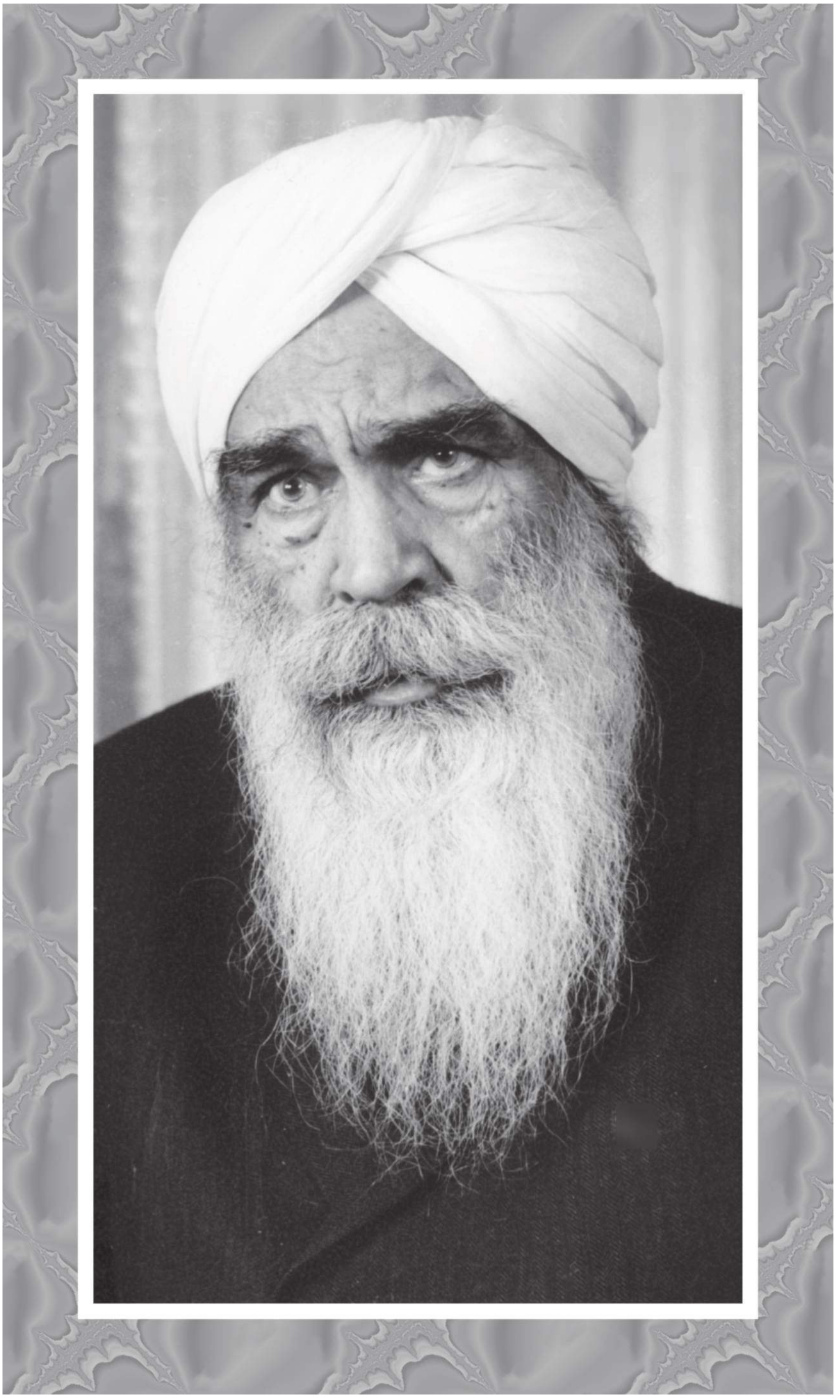

डायरी का नमूना

महाराज कृपाल सिंह जी ने प्रेमियों को डायरी लिखने की हिदायत दी कि आप रोज़–रोज़ अपने अच्छे और बुरे कर्मों का लेखा–जोखा करें और उन्हें डायरी में दर्ज करें। नीचे उस डायरी का नमूना दिया गया है:

तारीख : --/--/----

निरीक्षण	त्रुटियाँ	टिप्पणी
अहिंसा:	विचारों में :	
	शब्दों में :	
	कार्य में :	
सच्चाई:	झूठ :	
	छल–कपट :	
	ढोंग :	
	धोखेबाजी :	
	ग़ैरक़ानूनी कमाई :	
पवित्रता:	विचारों में :	
	शब्दों में :	
	कार्य में :	
नम्रता:	ज्ञान का घमंड :	
	पैसे का गरूर :	
	हुकूमत का नशा :	
निस्वार्थ सेवा:	तन की सेवा :	
	धन की सेवा :	
आहार:		
भजन–सिमरन: (लगाया हुआ समय)	सिमरन–प्रकाश :	
	भजन–धुन :	
	कुल मिलाकर समय :	

डायरी का शेष भाग अगले पन्ने पर

तारीख : --/--/----

निरीक्षण	टिप्पणी
विषय विकारों से कितने दूर रहे:	
अंदरूनी प्रकाश का अनुभव :	
अंदरूनी धुन सुनने का अनुभव:	
भजन–अभ्यास में कोई कठिनाई :	